खैर, डोमोंका बाजा आ तो गया किन्तु मुँहसे सहनाअी बजानेवालोंको भी वह सुनाअी पडा, अिसमें संदेह है। कारण, व्याहके चारो दिन आँधी-पानीका अैसा जोर रहा, जैसा न कभी किसीने देखा, न सुना था। व्याहके मंडपपर छाअे गअे नारियलके पत्तोंके हेडे[१] छह-छह बार बाँधनेपर भी न टिक सके, और आखिरमें रहे-सहे मंडपके बाँस ही पर सौभाग्यसे विवाहका मुहूर्त पूरा हुआ जो रातका नहीं दिनका था। व्याहके बाद भोज था। पर अैसी मूसलधार वर्षामें अपना घर और खेतीका कामकाज छोडकर व्याह देखनेके लिअे कौन आता?

मय्याकी लडकीका संबंध कोडीके कोदंडराम अैतालके लडकेसे तय हुआ था। पारोतीका व्याह कैसे हुआ—पार्वतीको ही पारोती कहते हैं, यह कोदंडरामके मुखसे ही सुनने योग्य था। वे कहा करते कि हमारे मुन्नाके व्याहमें देवलोकका ही बाजा लाया गया था। ज्येष्ठ मासमें अैताल कोदंड-राम विवाहके लिअे क्यों तैयार हुअे अिसका भी अेक रहस्य था। अैताल कोदंडराम गाँवके पुरोहित थे। अुनकी जजमानी कोअी चालीस-पचास घरकी थी। सबको न्यौता देना तो जरूरी ही था। चैत-वैसाखमें व्याह होता, सबको न्यौता दिया जाता, और यदि सब जजमान पूरे परिवारके साथ आते, तो बरात क्या पूरी फौज हो जाती। अपने पुरोहितजीके सम्मानके विचारसे अगर सबके सब आ जाते तो समधीका क्या होता? लडकीवालोंकी बात छोड भी दें, तो भी समावर्तन, आरती, अक्षत आदिमें तो दिवाला ही निकल जाता। फिर अपनी तरफसे दिअे जानेवाले भोजोंमें भी यदि अुसी प्रकार सब आते, तो क्या कम कष्ट होता? यही सब सोच-समझकर विवाह-मुहूर्त रोपाअीके दिनोंमें रखा गया, अगर कोअी यह पूछे, "अैसा क्यों किया?" तो अिसके अुत्तरके लिअे अैताल कोदंडरामजीकी जिह्वापर ज्योतिष और पंचांगके कअी कारण नाच रहे थे।

अैताल कोदंडरामने जैसा सोचा था, वैसा ही हुआ। जेठ लगते ही वर्षा प्रारम्भ हो गअी। नट्ठीके दिन आ गअे, धानकी रोपाअी होने लगी। कब वर्षा रुकेगी, कहकर गाँववाले आस्मानकी ओर देखने लगे। वर्षा बंद

---

१ नारियलके बुने हुअे पत्ते।

होनेका कोअी लक्षण नही दिखाअी देता था। मूसलधार वर्षा हो रही हो तब घरका काम-काज छोडकर भला कौन अंतालके मुन्नेके व्याहमें जाय ? किन्तु घरवाले क्या करे ? अुनको तो जाना ही था। अंताल कोदडराम, अुनके घरवाले, वर्षामें भीगनेवाले चार कहार, गीत गानेके लिअे दो-चार अडोस-पडोसकी सुवासिनियाँ, अितने लोग ही कुछ सामान और कुछ ताडपत्रके छाते लेकर बडी शानसे बरातमें गअे। आतिशबाजीके गुब्बारो और गरनल आदिका सब प्रबन्ध भगवान अिद्रने ही कर दिया था।

वर्षामें ही बरात निकली और वर्षामें ही लडकीवालोंके घर पहुँची। दोनो घरोके बीचमें कुछ कोसोका, रास्ता था, जिसे पार करनेमें दो पहर लगे। समुद्रके किनारेपर, धानके खेतोमें, फिसलनसे भरी मेंडपर, समुद्री हवासे मुकाबला करते हुअे, ताडपत्रके छाते लेकर चलना कोअी मजाक नही। कभी पहने हुअे कपडोको सँभालना पडता तो कभी छातेको। हाथमें पकडा हुआ छाता बार-बार अुड जाता। खुद अंताल कोदडरामके हाथके छातेमें, जब वे समधीके घर पहुँचे, केवल तीलियाँ शेष रह गअी थी। ओह, कैसी भीषण वर्षा थी! कितनी भयानक! अिस प्रकारकी आँधी और वर्षामे चलनेवाले बरातियोमेंसे, जिन्होने धोती ओढ रखी थी, अुनके हाथ, पैर, चेहरा, छाती वगैरह भीग गअे थे, और पीठ गरम थी।

जब वर्षा हो रही थी, अुस समय पुकारनेपर भी अेक दूसरेकी आवाज सुनाअी पडना कठिन था। जो दस-पद्रह कदमपर खडा था वह भी नही दिखता था। बरात ले जाना तो जहाँ-तहाँ भागते हुअे मेढकोको अिकट्ठा करना जैसा काम था अिसीलिअे लडकेवालोंके बजन्तरी बरातसे पहले ही गिरते-पडते लडकीवालोंके बरामदेमें आ खडे हुअे थे। बरातमें बरसाती और कपडेका छाता लगानेवाले सफेद-पोशोमें कोअी भी नही आया था। व्याहमें न आनेवाले सब-के-सब "अगर वर्षा नही हुअी, तो आरती, अक्षतमें आअेंगे" कहकर चुप हो गअे।

अंताल कोदडराम जो बरात लाअे थे, अुसके स्वागत-सत्कारका महान् कार्य लडकीवालेके आँगनमें हुआ। वैसे तो यह सब सामनेवाले खेतमें होना चाहिअे था, पर क्या करे ? जिस खेतमें कीचड और पानी भरा हो, जहाँ

वर्षा और आंधी चल रही हो, वहां यह सब कैसे होता ? आंगनका भी विचित्र हाल था ? मंडवा अुडकर आंगन खेत बन गया था। अुसीमें बरातका शानदार स्वागत हुआ फिर बराती तीन तल्लेवाले छोटे मकानके बरामदेपर चढे। जितना बडा बरामदा था, अुतने ही बराती थे, तो भी बरामदेका आधा भाग मंडपसे घिर गया था। शेष आने-जानेवालोंके पैरके पानीसे कीचडमें सना था। अुसीमें चटाअी, पाट आदि रखकर बरातियोको बिठाया गया। वर्षासे भीगे दूल्हाको भी व्याह-मंडपमें विवाहकी हवनाग्निकी अूष्मा नहीं मिल सकी। हवनाग्निसे अुठनेवाला वह धुआं, हवा और वह मूसलधार वर्षा, यही अुस व्याहका वाद्य, गीत और मंत्रघोष था। व्याहके बादका भोज बैठकर हुआ या खडे-खडे, अिसे केवल भगवान ही जानता है।

व्याहके चार दिन अैसे ही बीते। लडकीवालोंके घर होनेवाला समस्त अुत्सव पानीमें ही हुआ। बरातमें आअे हुअे आधेसे अधिक लोग आखिरी दिनतक नहीं टिके। चौथे दिन दूल्हा अपनी नव-परिणीता पत्नीको साथ लेकर घरकी ओर चला, क्या अिसके लिअे वर्षा रुकेगी ? आखिर पालकी ढोनेवाले चार कहार और दूल्हाके माता-पिता बरातमें रह गअे थे। अैताल कोदण्डरामकी घर-भरनी[१] और मूसलधार वर्षाके ताण्डवमें होड-सी लगी थी।

वैसे देखा जाय, तो लडकेवालेके घरमें भी वर्षाकी कमी नहीं थी। अुसके घरसे थोडी ही दूरपर नदीमुख[२] था। पश्चिममें समुद्र, दक्षिणमें नदी और समुद्रका संगम तथा पूर्वमें नदीका प्रवाह था। अुस साल वहांके समुद्रमें बडा तूफान आया था। जब मणूरमें अैताल कोदण्डरामके मुन्नेका व्याह हो रहा था, यहां नारियलके बागमें आठ-दस नारियलके पेड "समुद्रास्तृप्यतु" हो गअे थे। अैताल कोदण्डराम कभी-कभी कहा करते "अिस तरहका समुद्रका अुन्माद मेरे दादा-परदादाने भी नहीं देखा था।"

नअी बहू घर आनेका आनन्द, बरातकी वापसी, आरती-अक्षतादिमें घरमें लोगोके आनेका अुत्साह, अिन सबपर समुद्रके अुन्मादने पानी फेर

---

१ बिदाअी

२ नदी जहाँ समुद्रमें मिलती वहाँसे अुसी सीधमें जहाँ तक नदीका बहाव होता है, अुस सारे प्रदेशको नदीमुख कहते हैं।

दिया था। सालमें हजार नारियल देनेवाले पेड अेक ही दिनमें समुद्रमें समा गअे।

ये सब बाते अब बहुत पुरानी हो गअी। जब कभी याद आती तो अैसा लगता जैसे सपना हो। विवाहकी बातोंके स्मरण और आजके बीच अेक जमाना गुजर गया। पारोतीने अपना पन्द्रह वर्षका दाम्पत्य-जीवन बिता दिया। अुसका विवाह हुअे अब करीब तीन साल हुअे थे, तब बूढे नारायण मय्याने अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दी थी। सास ब्याहके दिनोंमें भी जीवित नही थी। अैताल कोदडराम भी ब्याहके पाँच वर्ष पूरे होते-होते देवलोक सिधार गअे। अब वही घरकी मालकिन थी, वही गृहस्वामिनी। अब आप पूछेंगे घरमें कौन-कौन हैं? घरमें केवल तीन जीव हैं। अुनमेंसे अेकका नाम अुसे नही लेना चाहिअे, वह है अुसका पति और अैताल कोदडरामका अिकलौता बेटा—राम अैताल, दूसरी है अैतालकी अनाथ बहन, बाल-विधवा सरसोती, तीसरी वह खुद। अिन्हे छोड घरमें और कोअी नही था।

घरमें अुसके दिन कैसे कटते अिसकी अुसे चिंता नही। अैतालराम गाँवके पुरोहित है। आमतौरपर अुनका दिनका खाना किसी न किसी यजमानके घर होता। पौरोहित्यके मिष्ठान्नसे तृप्त अैतालजी करीब चार बजे शामको घर आते। आते समय खाली हाथ आनेका रिवाज नही। कभी थोडा चावल, कभी नारियल और कभी साग-सब्जी लानेका नियम-सा हो गया था। सब सामान अेक जगह रखकर हाथ-पैर धोते और फिर लीप-पोतकर पोछी हुअी ठडी-ठडी जमीनपर लेट जाते। अिस प्रकार घटे-दो-घटे खुर्राटे भरनेके बाद, अुठकर गाँवके समाचार लेने जाते, तो लौटने तक अेक पहर रात बीत जाती। जिस दिन दोपहरका खाना डटकर होता अुस दिन, बाहर जाते समय ही "पारोती, आज रातको नही खाअूँगा" कहकर जाते। चूँकि सरसोती बाल-विधवा है, अिसलिअे वह हमेशा अेक ही बार खाती। अुसका दूसरी बार खाना धर्म-विरुद्ध है। रातके समय थोडा चूडा पानीमें भिगोकर खा लेती। अैसेमें "यदि सभी अेक बार खाते है, तो मुझे क्या पडी" कहकर वह रसोअीघरकी ओर देखती तक नही। हाँ, कभी-कभी सुबहके चावल पानीमें अुबालकर पतला भात बनाकर खा लिया जाता।

खैर, अिस प्रकार जब शाम होती, वह हाथमें माला लेकर "राम-राम" जपती और बैठी-बैठी सो जाती।

रातको जब अैतालराम घर आते तब कभी पारोनी जगती रहती और कभी सोअी रहती। जब नीदमें होती, तब जानती तक नही कि 'वे' अुसके पतिदेव कब कितनी रात बीते आअे। कारण पूछना अुचित नही। जब हाथमें माला लेकर राम नाम जपती तो झपकियाँ लेने लगती। जरा पडी कि नीद आगअी। अुसके पडोसी शूद्र हैं, अिससे यद्यपि अुसके मडि-मैंलिग अर्थात् धर्मावर्म तथा शुद्धाशुद्धि-विवेकमें कअी अुलझने पैदा होती, फिर भी अुनके मुर्गोंके कारण बडा अुपकार होता। जब वे ब्राह्म-मुहूर्तमें कुकड़ूँ-कूँ करते, तो दोनो अुठ बैठती। पार्वती जूठे बर्तन बाहर डालकर माँजने लगती। जूठे बर्तन माँजनेके बाद, सध्या, पूजा-अर्चाके सब बर्तनोको राख दिखानी पडती। अिसके बाद झाड़ू लगाना, घरमें गोमयकापण्मार्जन[1] करना, रसोअी घरका लीपना-पोतना आदि नित्यका गृह-कार्य करनेके बाद कही जरा सुस्तानेको मिलता। तब तक पौ फटती। सुबह होते घरको लीपा जाता। गोठेकी गाय अवकच्यके (चावलका माड, चावल धोया हुआ पानी आदि) लिअे रभाने लगती। पहले दिन दोपहरके अवकच्यमें थोडासा, घास-भूसा, अुसके सामने रखकर अुसकी सेवा करनेके अुपलक्ष्यमें जब वे दूध दुहने बैठते तो आधा-पौन सेर दूध दे देती। अिसीपर दुधारू गाय कहकर अुसका मान भी होता। अगर वह न होती तो नैवेद्यके लिअे गायका दूध कहाँसे मिलता ? त्योहार-अुत्सवके दिनोमें पचामृतके लिअे दही और घी कहाँसे आता ? गायका दूध दुहनेके बाद अुसको और अुसके साथ दूसरी बूढी गाय अेव बछडोको चरनेके लिअे चरा-गाहकी ओर भगानेपर छुट्टी मिलती। अुनको छोडते ही फौरन गोबर अुठाकर कुछ अुपले पाथ लिअे, बस प्रात कालके गृहकृत्यसे छुट्टी मिल जाती।

अिसके बाद कोअी आअे या न आअे पारोती खेतीके कामपर चली जाती। बाहरी काम और खेतीका काम दोनो अेक ही हैं। वर्षाकालमें काम

---

१ रोज सूर्योदयसे पूर्व पानीमें थोडा गायका गोबर डालकर घरको लीपा जाता।

अेक ढगसे करना पडता, दूसरे दिनोमें दूसरे ढगसे। अैतालके यहाँ अीधनका महान कष्ट है। घरके आसपास काजू, कटहल, आम आदिके पत्ते समयसे पहले ही झाडकर लाने पडते, नही तो दूसरे ले जाते। अुन्हे गोठमें विछाना पडता नही तो खाद कैसे होती ?

साल भरके बाहरी कामोमें लकडी लानेका काम सवसे कठिन था, परन्तु वही सवसे जरूरी भी था। वर्षा-ऋतुकी कठिनाअी तो राम ही जानता था। गीली लकडी जब गीले पत्तोसे जलानी पडती, तो घरभरमें धुँआ भर जाता, और आंखोमें आंसू भर-भर आते। अिस धुंअेमे पारोतीकी आँखें टेसूके फूलकी तरह खिलती, तो अुनमें कभी अनतकी सफेदी नही आती। कभी किसी साल जब वर्षा-कालमें वरुणदेवकी कृपा होती, तो अेक दिनमें छह महीनेका काम वन जाता, किन्तु वह जरा कठिन ही था। आखिर गाँवमें वह अकेले ही घर-गृहस्थी लेकर तो नही रहती।

अैतालरामका घर नदीमुखसे अुत्तरकी ओर है। वहाँ पानीमें अुतरना मौतको न्योता देना है। वर्षा-ऋतुमें तो नदी जगलके बडे-वडे पेड वहुत दूर-दूरसे वहाकर ले आती। लेकिन अुन्हे पकड लाना कोअी आसान काम नही। अुन्हे लानेके लिअे नदीमुख छोडकर अुत्तरकी ओर जाना पडता, करीब दो-ढाअी मील दूर। चाहे जैसी वर्षा हो, सुबह पौ फटनेसे पहले ही समुद्रके किनारे खडे होनेसे पता चलता कि वरुणदेव क्या-क्या भेंट लाअे हैं। कभी वृक्षकी वडी डाल आती, तो कभी अुसका तना। कभी-कभी तो वरुणदेव कही "सहमूले विनश्यति" जड-मूलसे अुखाडा हुआ वृक्षराज ही ले आते। जरासी वृक्षकी डाली देखते ही पानीमें कूदना पडता। पहाड-सी लहरोपर चढ-अुतरकर अुनपर अधिकार करना पडता। दाँव बैठ जाय तो अिसमें शक नहीं कि वह किनारेपर आ लगता, किन्तु तब दस-पन्द्रह लोग चीलकी तरह झपटकर "मेरा है, मेरा है" कहने लगते। अिसलिअे पानीमें कूदकर जिन्हे पकडना आता, अुन्हीको कुछ लकडी मिलती। अिस काममें पारोतीसे सरसोती चतुर हैं। वह बडे-बडे मर्दोंके भी कान काटती। अैसे कामोंके लिअे अैतालराम भी जाते। जब तीनो डट जाते, तो महीनेका काम चार दिनमें वन जाता।

अेक दिन वडा मजा हुआ। याद आते हँसी आती है। तीनों अुठकर समुद्रके किनारे गअे। पहलेसे ही दस-बीस लोग वहाँ पहुँच चुके थे। अगस्ति नदीमें वडी वाढ आअी थी। वाढमें लकडी अधिक आती। आँधी और वर्षाकी मार भी वैसी ही थी। अैसी हालतमें समुद्रमें सब घुटने तकके पानीमें खडे थे। सबकी दृष्टि सामनेकी ओर गड-सी गअी। वरुणदेव क्या भेंट लाते हैं—सब यही देख रहे थे। करीब सौ गजकी दूरीपर अेक काला तना-सा तैर रहा था। अैतालराम कूद पडे। तरंगोको चीरकर आगे वढे और अुसपर हाथ रखकर आधा घंटा तक वडे साहसके साथ पहाड-सी लहरोंसे संघर्ष करते हुअे अपने विशाल शिकारको किनारेपर लाअे। अुसका वजन देखकर आशा थी कि दस-पचास वोझ लकडी अवश्य मिलेगी, पर जब वह किनारे लगा तो सब लोग पेट पकड-पकडकर हँसने लगे। वह विशाल पेडका तना नही, वल्कि अेक मोटे ताजे भैंसेकी लाश थी। लोगोंके साथ पारोती भी हँसी। अुससे रहा नही गया। अैतालराम वहाँ तो अेक शब्द भी नही बोला, गूँगेकी तरह सब पी गया, परन्तु घरपर आकर अुसने अपना जो नरसिंह अवतार दिखाया अुसे यादकर तीन महीने तक पारोती अपना वरामदा आँसुओंसे धोती रही।

अैसा था अुनके लकडी लानेका खेल। अेक-दो वार तो पारोती और सरसोती दोनोंने साथ-साथ जल-समाधि लेनेका प्रयत्न किया। अैसे समय अैतालराम अुन्हे समुद्रसे पकड लाअे। फिर भी मौतसे डरकर अपना कर्तव्य-कर्म थोडे ही छोडा जा सकता है! अिसी प्रकार कमाअी हुअी काष्ठान्न-सम्पत्ति—तने, पेड, डालियो, आदिको समय-समयपर लाकर अुसे धूपमें सुखाना पडता। चातुर्मासमें तो धूप ही क्या? फिर भी सूर्य भगवान जो कुछ धूप देते, अुसको भला कैसे व्यर्थ जाने दिया जाय! धूप निकलते ही सबको धूपमें फैलाना और आसमानमें वादल आते ही अंदर रखना पडता। खैर, गर्मीके दिनोंमें अुसकी अुतनी चिंता नही होती। काष्ठ भी अुतने नहीं होते, परन्तु वर्षा-ऋतुसे भगवान ही वचाअे। कष्ट कहकर नही समझाअे जा सकते। फिर कहे भी किससे? सबका तो वही रोना। अुन दिनो तो लकडीके छोटे-मोटे टुकडे चूल्हेपर फैलाकर सुखाने पडते। जेठ-आषाढमें धूप भी तो नही मिलती, तब लकडी कैसे सूखती? गीली लकडीपर ही गुजारा करना पडता।

मणूर हो या कोडी, जहाँ जगल नही, वहाँ अैसी गीली लकडी लाकर ही आग जलानी पडती। गाँवकी स्त्रियोकी आँखें देखकर ही कोअी कह सकता कि किसके घर लकडी है, किसके घर नही। अिसीलिअे अपने बचपनमें नारायण मय्या कहा करता कि "पारोतीके लिअे यह प्रदेश अच्छा नही। अुसका विवाह पूरबकी ओर करेंगे। कम-से-कम लकडीका सुख तो मिलेगा।" अुस बेचारेका खयाल था कि पारोतीका पति कही बडर्से या वेलूरमें पैदा हुआ होगा। पर नमकीन पानीका जो ऋणानुबध था, वह कैसे टूटता? अुसका व्याह मणूरसे वेलूरमें न होकर कोडीमें हुआ।

क्या केवल लकडी जमा करनेसे ही गृहस्थी चलती है? क्या घरका यही अेक काम है? खाना बनाना भी तो है! शूद्रोंके घर तो मछली-बछली खाकर भी काम चल सकता था पर यह तो ब्राह्मणका घर है। ब्राह्मणके घर जनमनेपर साग-सब्जी खाते-खाते ही मरना पडता है। ब्रह्माने ब्राह्मण कहकर जो नसीबमें लिखा वह सब भोगना ही पडता है। जब ब्राह्मण बने हैं, तो साग-सब्जी अुगानी पडेगी। अैतालरामके चालीस-पचास घर यजमानोंके हैं। चावल और नारियलकी कोअी कमी नही, मन चाहे मिल जाते। कभी-कभी साग-सब्जी भी मिलती, परन्तु कैसा है वह कद्दू? युगादिसे वर्षा-ऋतुके अन्त तक कद्दू-कद्दू-कद्दू! घरकी छत और शहतीर हर कही कद्दू बँधे रहते। कद्दू खा-खाकर जी भर जाता। अिसीलिअे अुनके घरके पश्चिममें जो अेक-दो बीघा खेत है, अुसमें कुलथी काटनेके दूसरे दिन ही ठूंठ अुखाडकर खेतोमें चारो ओर मेंड बाँधनी होती और अुसपर काँटे डालकर अगर चारो ओरसे ठीक किलेबन्दी न की जाती तो अुसमें अुगी साग-सब्जी कैसे बचती? यह सारा काम पारोती और सरसोतीको करना पडता। अिसमें अिन दोनोकी घुडदौड-सी लगती। सरसोती तो अैसा काम करनेमें अपना सानी नही रखती।

जब अेक बार बागकी किलेबन्दी हो गअी तो फिर अुसमें बीज बोना, रोपे आनेपर ठीक रोपाअी करना, कीडोसे बचानेके लिअे राख और मिट्टी डालना आदि काम तो बने ही रहते। वही बागके पास अेक पानीकी गढअी या बावडी है। अुससे पानी लाकर बागकी सिंचाअी करनी पडती। यह सब

काम आमतौरपर शामके समय होता। कभी-कभी पूर्णिमा-अमावसको अैतालजी भी पारोती-सरसोतीकी मददमें डट जाते तो आश्चर्यकी कोअी बात न होती।

प्रात काल अैतालजीको समय नही मिलता। जब वे सुबह अुषाकालमें अुठकर मुखमार्जन करने लगते तो दाँत माँजनेके लिअे सोलह आमके पत्ते लाते, जो सब-के-सब दाँतोको मलते-मलते घिस जाते। अुन्हे दूर फेंककर 'ओ ओ ओ 'कर जीभ और गला साफ कर लेते, तब धीरे-धीरे सामनेके तालाबमें नहानेको अुतरते। तलाबमें अुतरनेके बाद नाक पकडकर, कानमें अुंगली देकर पूर्वाभिमुख हो बार-बार डुबकियाँ लगानेके बाद बदन मलनेका समारभ प्रारभ होता। साथ ही "शुक्लाबरधर विष्णु शशिवर्णं चतुर्भुजम्"से "आकाशात् पतित तोय यथा गच्छति सागरं" तकका पाठ चलता। जब भूलते तब पुन "हरि ओम्"से गरजते-तरजते प्रारभ करते और फिर समाप्त करते। यही कार्य धार्मिक-नित्यकर्मका आवश्यक और अनिवार्य अग था। फिर वही तालाबमें खडे-खडे सध्या-अर्घ्य, और ब्रह्मयज्ञादिमे निवृत्त होकर अेक सौ आठ गायत्री, अुतना ही अष्टाक्षरी, अुतना ही पचाक्षरी जाप करनेके बाद घुटनो तककी गीली धोती पहने वे देवघरकी ओर जाते। अितनेमें सूर्योदय होता। अिस बीच झाडना, पण्मार्जन, लीपना-पोतना, बागवानी, देवपूजाके अुपकरणादिको[1] राख लगाकर धोनेमे निवृत्त होकर गृहिणीको जल्दी-जल्दी स्नान करना पड़ता। अिसके बाद समयपर नैवेद्यके लिअे चावल धो देना भी अनिवार्य था। अैतालजीके घरके देवोका हाजमा जरा अच्छा ही था। अुनके लिअे चावल पकानेकी अवश्यकता नही पडती। अच्छी तरह धो दिया बस सब ठीक। फिर अुनकी ओरसे कोअी शिकायत नही।

देवकार्य समाप्त होते ही, अैतालजी अपना पुरोहिताअीका बाना पहनकर बाहर निकल पडते। घुटनो तककी धोती, वैसी ही अेक छोटी-सी धोतीका अुपरना, सिरमें हरे रगकी पगडी, गलेमें रुद्राक्षकी माला, हाथमें अेक लबी डडीका ताडपत्रोंसे बना छाता, यही था अैतालरामका पुरोहिती वेष। जिस दिन अैतालजीका पौरोहित्य-कार्य रहता, वह दिन पारोतीका जरा मुखसे

१ पूजामें काम आनेवाले ताँबेके बर्तन।

बीतता। रसोओीकी गडबड नही। जब चावल पके तब खा लिया। किन्तु जिस दिन पौरोहित्य-कार्य नहीं रहता, देवोकी पूजा समाप्त होते ही अैतालजीके लिअे चावल पके मिलने चाहिअे। अितनी जल्दी रसोअी करनेमें बेचारी गृहिणीके हाथ-पैर फूल जाते और फेफडेकी धौंकनी बन जाती। अिसपर भी, सिलबट्टेकी कट-कट सुनकर ही "आज कैसी यह महा-रसोअी है, भअी!" तथा छोकनेका धुँआ लगते ही पाट और पत्ता रखकर अैतालराम चौकेमें बैठ जाते। अितनेपर भी अगर जरा-सी देरी होती तो "कल दोपहर खाया तो क्या अगले सप्ताह तक भूख नही लगेगी, अैसा जान पडता है?" कहकर लाल-लाल आँखोसे घूरने लगते। अैसे समयपर सरसोती भाभीकी मददको दौडती। अुसके सामने भैयाकी आवाज अुतनी तीव्र नही रहती। "खाना तैयार नही हुआ", सुनते ही वह कहती— "भैया! जरा बागमें देखो तो, लगता है कोअी गाय घुस आअी है।" कहकर अुन्हे किसी न किसी काममें लगा देती।

जैसे-तैसे दोपहरका खाना समाप्त होते ही पुन घरका काम और बाहरका काम। जब गृहस्थी ही करनी है, तो क्या है और क्या नही। आखिर ससार चलाना है। जरा अुतरी हुअी धूप देखकर गाय-भैंसको चराया जा सकता है। तालाबका कीचड लाकर अपने छोटेसे बागको अच्छी खाद दी जा सकती है। अिसके बाद भी पासवाले खेतमें धानके रोपोमें बावडीका पानी दे सकते है। करनेवालेके लिअे कामकी क्या कमी?

अितना होनेतक शाम हो जाती। चरनेके लिअे छोडे गअे जानवर गोठमे आते। बछडेके पीनेके पहले ही थोडा-सा दूध दुह लेना आवश्यक था। अशुचितामें ही जानवरोको अवकच्य देना अच्छा है। नहाकर शुचि होनेके बाद तो देवघरमें जाकर "शुभ करोति कल्याण आरोग्य धन-सम्पदा।" कहकर समअी (दीवट) पर दीपक जलाना ठीक लगता। अिसके बाद "रातको क्या पकाअें" की समस्या सामने आती।

यह सब पारोतीके जीवनका जो सामान्य नित्य-कर्म था, वही सरसोतीका भी। पारोती व्याह और फलशोभन[1]के बाद जबसे अपने पीहर

१ गर्भाधान-सस्कार।

रहने लगी, तबसे यह सब अुसके जीवनकी साँस बन गया। यही अुसके दिलकी धडकन थी। ब्याहके बाद वह अपने पिताके घर गअी तो भी अुसे अितना ही काम करना पड़ा। फर्क अितना ही था कि यहाँ किसीकी भाभी और पत्नी बनकर करना पडता, तो वहाँ पुत्री बनकर। यहाँ ननदके साथ काम करना पडता, वहाँ पिताके साथ। घरमें काम करते समय भी अैतालजी आते, पर यह जरूरी नही था कि वे कामका कभी निरीक्षण-परीक्षण करते, या अुसमें हस्तक्षेप हो। पारोती जानती है कि "वे जो करते हैं वही बहुत है।"

ये सारी पुरानी बाते है। आज पार्वती नालेके पास आकर खडी रही। नालेमें वर्षाका पानी चढा हुआ था, अिसलिअे दूर खडी देखती रही। अुसके साथ अुसकी ननद छाया-सी खडी थी। वर्षाका जोर था। पानीकी बूंदे गुलेलसे छूटे ककडकी तरह बदनपर आकर टकराती थी। बदनमें भीगे कपडे चिपके थे। चिपके कपड़ोसे अन्यान्य अवयव झाँकते थे। पर दोनो ठडमें हाथ बाँधकर खडी थी, अेक दूसरेका मुंह ताकते हुअे। बहुत समय तक दोनों अेक दूसरेसे नही बोलीं। वाणी मूक थी, परन्तु आँखोंके जरिअे हृदय बोलता था। आखिर सरसोती कहने लगी, "आओ पारोती!" पारोती मानो अुत्तरस्वरूप पूछती, "यह क्या बात है? क्या बचे हुअे धानके रोपोको सडाकर मिट्टीमें मिलाकर ही यह वर्षा रुकेगी? यह बाढ कब अुतरेगी?" अिस वर्ष जैसी वर्षा हो रही है, कहते है, पिछले परिधावी सवत्सरमें कभी नही हुअी। वैसे तो हर साल अुनके घरके सामनेवाले मैदानमें पानी आता। नदीका मुहाना सामीप होनेसे पानी जितना जल्दी चढता, अुससे जल्दी अुतर जाता, परन्तु ज्येष्ठमें अैसा पानी कभी नही चढा था। कभी-कभी रोपाअी होनेके बाद पानी चढकर अुतरता, परन्तु अबकी तो रोपाअी होनेके प्रथम ही अितना पानी आ गया। अिसका क्या करे? खेत सब नाले बन गअे हैं। दोनोमें पानीका अेक-सा बहाव है। मेंडें डूब गअी है। पानीका अेक छोर खेतोकी मेंडको डुबो रहा है, दूसरा छोर गाँवके बडे रास्तेको। अब अिस नालेको तैरकर पार करना तो दूर रहा, नाव डालना भी कोअी खेल नही, कैसा प्रबल बहाव है पानीका! अुसी दिन अैतालरामको नाला पार

कर अुस पारके गाँवमें पौरोहित्यके लिअे जाना था। तीन-तीन बार अुन्होंने नालेके किनारेपर खडे रहकर "मैं आज नहीं जाअूँगा, क्या मैं अिस बाढमें डूब मरूँ?" कहा। पर क्या करे? अुस दिन नागप्पा होल्लका प्रथम वार्षिक श्राद्ध था। श्राद्ध करानेवाले अैतालजी ही अगर वहाँ नहीं पहुँचे तो श्राद्ध होगा कैसे? क्या वर्ष-श्राद्ध आगे बढाओ जा सकती है? यह कैसे होगा? पारोतीने अपने पतिको कर्तव्यका ज्ञान कराते हुअे कहा—"यह कैसे होगा? होल्ल नागप्पाका आत्मा आकर क्या भूखी लौट जाअेगी? सालमें अेक दिन तो बेचारेको भोजन मिलता है।"

पत्नीके ज्ञानोपदेशसे अैतालजीने जरा धैर्य बाँधा। जहाँ कहीं जो धैर्य था वह सब बटोरकर अुन्होंने कहा—"नालेमें अुतरता हूँ।" और सिरपर बँधी पगडीपर अुपरना लपेट लिया। सन्ध्योपासन और पूजाके अुपकरण भी सिरपर रख लिअे। जैसे अुत्सवमें मूर्तिपर रजतछत्र रहते हैं, वैसे ही बडे डंडेवाला ताडपत्रका छाता पकडकर वे नालेमें अुतरे। पतिको अिस प्रकार नालेमें अुतरता देख भयसे पत्नीका शरीर काँपने लगा, वर्षामें भी गला सूखने लगा। करीब सौ डेढ सौ गज बढने तक केवल घुटने तक ही पानी था। आगे नागफनीके काँटोंकी पंक्ति थी। पारोती सोचने लगी—"नागफनीके काँटोंके जँगलमें कहीं राह तो नहीं भूल जाअेंगे।" अैतालजी पेडोंके पत्ते देखते-देखते आगे बढे। अुनको लक्ष्य बनाकर ही नालेमें आगे बढनेका सही तरीका था। अुस ओर कदम बढाते समय वे अेक-अेक कदमके लिअे आठ-आठ बार सोचते और आखिर "शालिग्राम नरसिंह भगवानकी जो अिच्छा है, वही होगा।" कहकर आगे पैर रखते। धीरे-धीरे नदीका पानी घुटनोंसे कमर तक बढ़ा। कमरसे पेट डूबा। अुसके बाद छाती और गला। अेक दो बार पानी नाकमें भी गया। तब वे चिन्तामें पडे, पैर रुके, क्षणभर खडे रहकर तैरनेकी चेष्टा-सी की। अुस छातेने ही अुनको नदीके मुहानेकी ओर न ढकेलकर नदीकी ओर घसीटा। अगर जरा नीचेकी ओर फिसलते, तो हगारकट्टेके बंदरगाह या मुहानेको पारकर तोन्से तक पहुँच जाते "वरुणदेवके सामने भला आदमीकी क्या चल सकती है।"

अैतालजी तैरनेमें अुस्ताद तो नही थे, परन्तु तैरना जानते थे। लेकिन अगर तैरने लगें, तो अिमी साल तीस रुपये देकर खरीदा हुआ शाल नमकीन पानीमें भीगकर मिट्टी हो जाय। अगर वह सड गया तो होल्ल नागप्पाके वच्चे खरीद कर देनेवाले तो थे नही। खैर, अिधर-अुधर कर जरा तैरने लगे। नाला पार करनेकी जगह दिखाअी दी। जमीनका आधार मिला। पर सामने जहाँ-तहाँ नागफनीके काँटे दीख पडते थे। अुन काँटोमें फँसकर कही हाथ-पैरमें खरोच लगनेसे मुसीबतमें न पडना पडे, अिसीलिअे वदन सिकोडकर चारो ओर देखकर अुन्होने पैर आगे वढाया। आखिर सही राम्ता मिला। सोचा जरा नीचे आ गया। और कुछ अुत्तरकी ओर खिसककर सही रास्ता पकडा। "धत् तेरेकी अैमे नाले हजारो पार कर डालेंगे।" मन-ही-मन फूलकर कुप्पा हो और अैसा कहते हुअे अुन्होंने किनारेपर पैर रखा। पर "शाम तक अैसा ही पानी चढा रहा तो ?" मनमें जरा आशंका हुअी। "रातको घर नही जाअेंग और क्या ?" यह निश्चय कर आगे कदम वढाया।

अुनके नाला पारकर खेतोमें पैर रखनेतक दूसरे किनारेपर पारोती और सरमोती "राम-राम! शिव-शिव!!" करती कलेजा थामे खडी रही। वे दोनो आँखोमें प्राण लाकर अैतालजीकी गति-विधिका निरीक्षण करती थी। खैर, अुन दोनोने सारी शक्ति लगाकर चीखते हुअे कहा—"अगर पानी अैसा ही रहा तो वही रहो।" पर आँधी और वर्षाकी गर्जनामें भला अुनकी आवाज वहाँ तक कैसे पहुँचती? फिर आगे जानेके वाद पीछे मुडकर देखना अैतालजीकी आदत नही थी?

: २ :

अैतालरामके आँखोमे ओझल होने तक अुसकी वहन सरमोती आँखोमें प्राण लाकर देखती रही। फिर अुसका जी अुकताया। वह घरकी ओर जा निकली, किन्तु पुकारनेपर भी पारोती नही आओी। तव तक वह वहाँ वैसी-की-वैसी खडी रही। अपने पतिके वापस लौट आनेकी चिन्ता नही, वरन अुसे अपनी जीविकाकी चिन्ता सता रही थी। सोचती थी अगर वाढ कुछ दिन अैसी ही रही तो अिस साल क्या खाअेंगे ? यही अुसकी चिन्ताका विषय था। समार चलानेकी फिक्र अिस घरमें जैसी अिन दो महिलाओंको है, वैसी अैतालजीको नही। वे तो अल्प-सतुष्ट है। जितना मिलता अुतनेमें किसी तरह गुजर करनेवाले। पौरोहित्यकीके कारण वे खेती-वारीकी तरफ़ विशेष ध्यान नही देते।

अुसकी पत्नी पार्वती, पहलेसे ही पारोती कहलाती है। अुस घरका सारा कामकाज अपना समझना अुसके लिअे अत्यन्त स्वाभाविक है, विशेषतया जव वर्षाअृतु आती तो जहाँ-तहाँ फैले हुअे पानीके वुलवुलोंमें अुसे अपने जीवनका पूरा अितिहास दिखता। व्याहके समयसे ही वर्षा और वर्षाअृतु अुसके हृदयपर अपना सिक्का जमाअे हुअे हैं। व्याहके क्षणसे लेकर अपने गृहजीवनके प्रत्येक क्षणका स्मरण अुसे अिसीमे होता। अुसे अपने जीवनका अुतार वर्षाकी अिन वूंदोमें दिखाअी पडता। कभी-कभी तो वह अेक-अेक वात याद कर सोचती– "मनुष्य योनिमें पैदा होनेसे क्या लाभ ?" आज भी अुसकी आँखोके सामने यही प्रश्न अुपस्थित था। दिन-रात श्रम किया, खेतीकी फसल काटी, अिस सवमें अितना समय जाता कि

भगवानका नाम लेना भी सभव न था। किसी तरह लिया भी तो क्या ? मन अुसमें थोडे ही लगता ? जवान राम-राम कहती, पर मन और कुछ। अिससे क्या सुख मिलता ? यही वैराग्य अुसके मानसिक नैराश्यका परिणाम था, अन्य महिलाओकी तरह माँ बननेकी आशा-आकाक्षा सफल न होनेके कारण "क्या मै अिस ससारमें आकर वाँझ ही मर जाअूँगी ?" अिस प्रकारके विचार भी अुसके मनमें अुठते थे। अुसे अपना जीवन दूभर मालूम होता।

घरमें अपनी जैसी दुख-सुखमें सम्मिलित होनेवाली सरसोतीके लिअे अुसके मनमें वहुत आदर है, अुसके लिअे मान है, पर भला अुसपर वात्सल्य और प्यार कैसे अुँडेला जा सकता ? "वैसे" वह किसे प्यार करे ? नैवेद्यके लिअे दूध देनेवाली काली गोपी गायसे वह जितना प्यारसे वोल लेती, वही कौन कम था ! अुसके वछडेको जितना प्यार करती, अुसको जितना खेलाती, अुसे गोदमें लेकर, अुसकी पीठपर, पेटपर, गलेमें जितना थपथपाती, अुसके जितने चुम्बन लेती, अुतना कम ही लगता। कभी-कभी अेकातमें अुस गोपी गायसे जोर-जोरसे वाते करनेका भी अवसर आता। अैसी वाते करते समय "यह किससे वाते करती है ?" अिस विचारसे अैतालजीके आकर देखनेके प्रसग भी कम नहीं आते। अैसे समय अैतालजी कहा करते—"अिसे वातचीत करनेके लिअे दूसरे आदमियोंकी आवश्यकता नहीं। वस, गाय काफी है, दीवार काफी है।" यह विनोद या मजाक नही, वल्कि अुसकी मूर्खतापर कटाक्ष था।

गोपी गायने अव तक पाँच वछडे दिअे। अुन सवको अुसने अपने हाथसे खिला-पिलाकर वडा किया। अुनसे गोठ भर जाअेगा, अिस डरसे आखिर अुन्हे किसी न किसीको दे डाला। गोपीने छठवाँ वछडा दिया, जो अव डेढ सालका हुआ। अव तक अुसको पाला-पोसा। गोपी अभी गाभिन नही। फिर भी आशा है दो-तीन वछडे और देगी, परन्तु अिस वछडेका क्या करे ? अैतालजीको तो गाडी हाँकनी नही ? गोपीका दुर्भाग्य है कि वह वछियाँ देनेकी आदत नही रख सकी। अैतालजीको कभी भी साल भरसे अधिक वछडेको घरमें रखनेका अुत्साह नही रहा। अिस वार वछडा डेढ

सालतक रख लिया, यही अुनकी वडी अुदारता कहनी चाहिअे। अपनी पत्नीका मन वहलाने या दिलकी वात करनेके लिअे घरमें कोअी जीव तो होना ही चाहिअे, अिसीलिअे अिस वछडेको नही हटाया था। भला अैसा कितने दिन चल सकता था? अभी दो दिन पहले अुनका अेक आसामी सूरप्पा आया था। अुसने भी कहा था–"अगर अिसे चार रुपअेमें दें तो मै ले लूँगा।" अिसीलिअे अैतालजीने पूछा–"पारोती! वछडा सूरको दे डालें? तेरी गोपी गाय तो वछिया देती ही नही, वेकार अिन वछडोको पाल-पोसकर क्या करेंगे? हमें वैलगाडी तो चलाना नही। आखिर वह सूर भी तो अपना ही आदमी है? फिर हलमें जोतनेके लिअे भैंसा तो कल अुसीके पाससे आअेगा?" जिस दिन अुसने पारोतीसे यह पूछा अुसी दिन शामको सूरप्पा भी आया, और अुसे वछडा वेंच दिया गया।

गोपीके छठवाँ वछडा पैदा हुआ, जो वेंच दिया गया। सुरप्पाको अिसी जोडीका दूसरा वछडा ढूँढने तक, अिसे खिला-पिलाके पालनेमें क्या सुख-सतोष था? अुसका सुख तो अुसे जल्दी-से-जल्दी जोतनेमें है। अगले तीन वर्षोमें अिसकी जोडी छह वार दूसरोके हाथ लगकर ओझल हो जाअेगी। ओझल हो जानेका अर्थ सहज ही किसी-न-किसी वीमारीका शिकार हो जाना है। गोपीका छठवाँ वछडा वेंचते समय अुसके पाँच वछडोका अितिहास याद आअे विना नही रह सकता। ब्रह्माने जो कुछ अुसके नसीवमें लिखा है, अुसे कौन टाल सकता है? यही सोचकर वछडेको अपने ही पेटके वच्चेकी भाँति दरवाजेके वाहर ले जाकर "जाओ भाअी!" कहकर पारोतीने विदा किया। अुसे विदा करते समय अुसकी आँखें दो-चार वूँद आँसू वहाना नही भूली।

आज अैतालजीको पौरोहित्यके कामके लिअे नाला पारकर दूसरे गाँव भेजना पडा था, अिसलिअे पारोतीके मनमें वडा कष्ट हो रहा था। घरमें वोलनेके लिअे गोपीका वछडा भी नही था। अिसी गरमीमें अुसे सुरप्पा ले गया, अतअेव ओठोपर ताला लगाकर ननद-भौजाअी दोनो घरके काम-काजमें लगी रही। पारोती चूल्हेमें गीली लकडी लगाकर फूँक-फूँककर

रसोअीकी तैयारी कर रही थी, तो सरसोती कोअी काम न होनेसे दोपहरका अवकच्य पका रही थी। रसोअीघरमें गीली लकडीका धुंआ भरा था। चूल्हेमें गीले पत्ते डालनेसे सरसोतीको खांसी आ रही थी। चूल्हा सुलगानेका काम छोडकर "जब अग्निदेवको दया आअेगी तब चूल्हेपर रखी चीजें अपने आप पकेगी" यह सोचकर दोनो बाहर बरामदेमें आअी। दोनो थक गअी थीं और चूल्हा सुलगानेके लिअे फूंक-फूंक तथा खांस-खांसकर दोनोंके फेफडे खाली हो गअे थे। बरामदेमें आकर जरा हाथ-पैर लबे कर दोनो सो गअी, तथा सोते-सोते वैराग्यका राग अलापने लगीं।

"पता नहीं पहली अेकादशी कब है"—सरसोती कहने लगी, "जल्दी आती तो भागवतकी कथा सुननेको मिलती। गतवर्ष कहांतक कही थी? अक्रूर श्रीकृष्णको धनुपयज्ञमें ले जाने आया था, वहीतक ना? अिस साल वहींसे प्रारभ हो तो अच्छा होगा। यह देखो न अुस असुर कसकी दुष्टता? अपनी बहनके ही बच्चोंकी हत्या कर डाली। अुसका मन कितना क्रूर था?"

"वह सब भगवानकी माया है।" पारोती कहने लगी "नही तो जो चाहते है अुनको सतान-सुख न देकर, जो नही चाहते, अुनके घरोमें सारे ससार भरके बच्चे क्यो पैदा कर देता?"

यह बात पारोतीके मुँहसे महज ढँगमे निकली थी। बात कहनेके बाद अुसका अर्थ ध्यानमें आया। अुस अर्थकी आडमें अुसे अपना निष्फल दापत्य-जीवन भी दृष्टिगत हुआ। अुस दृष्टिमें गोपी गायके छह-छह बछडोकी जीवन-कहानीकी भी झलक मिली। साथ-साथ पतिका "अिसे बछिया देनेकी आदत नहीं" वाक्यका भी स्मरण हो आया। पतिके अुस वाक्यको अुसने अपने अूपर घटित करके देखा। "मेरे न बच्ची हे, न बच्चा। अगर मुझे अिसका अितना दुख है, तो अुन्हे कितना दुख होता होगा? आखिर, मरनेके बाद मुंहमें थोडा-सा जल डालनेवाला भी तो चाहिअे?"

कितनी अुग्र और हृदयको जलानेवाली है यह चिन्ता? "अुन्हे कमी किस बातकी है? खाने-पीनेके लिअे बहुत है, जमीन है, मकान है, सब-कुछ है। गरीब हो जानेपर भी मांगकर खानेकी जरूरत नही। पर यह सब कबतक? मरनेके क्षणतक। वह क्षण आनेपर अपनी सतानसे चम्मचभर

गगाजल मुँहमें पानेका भी भाग्य नही !" यह विचार आते ही अुसकी आँखोंमे ही चार चम्मच पानी वह निकला। यह बात क्या सरसोतीसे छिपी रह सकती थी ? कभी-कभी अिसी तरह पारोतीका दिल मसलकर आँखोंसे वह चलता, अिसका ज्ञान सरसोतीको अच्छी तरह था। यह सब देख-देख, पारोतीको सात्वना देते-देते वह थक गअी थी। अुसने कहा— "भाभी, तू ग्रामदेवीके मदिरमें महीनेमें छै बार जाती है। प्रत्येक सक्रातिको 'आणेगुड्ड' जाकर गणपतिका दर्शन भी करती है, अैसा कौनसा व्रत है, जो तूने अिन दिनो नही किया ? अश्वत्थनारायणकी तो अितनी परिक्रमाअें की, कि सबका योग काशीयात्रासे भी अधिक होगा। यह सब बेकार जा रहा है, अिसका क्या किया जाय ? अुसी परमेश्वरकी अिच्छा कहना चाहिअे। फिर अपनी कोखसे ही बच्चा पैदा हो अिसकी जिद क्यो ? कोअी अच्छा-सा बच्चा गोद क्यो न ले ले ? जो अपने हाथमें नही अुसके लिअे चिन्ता न कर जो अपने हाथमें है अुसीपर सन्तोष करना क्या बुरा है ?"

"मेरी पारोती भाभी आज नही कल गर्भवती माता होगी," यह आशा रखनेवाली सरसोतीनें निराश होकर आखिर यह मार्ग बताया। जब पारोतीके कानोमें यह बात पडी, तो अुसे भी लगा कि "ठीक तो कहती है, यह मुझे पहिले ही क्यो नही सूझा ?" गोदका बच्चा भी घरमें आअेगा तो वह "मेरी माँ और मेरा बाप" कहकर मरनेके बाद मुँहमें थोडा-सा जल तो डालेगा, पितृतर्पण तो करेगा।

अिस नअे विचारसे पारोतीके मनका दुख जरा हलका हुआ। अेक पखवारेसे जिस सूर्यका दर्शन नही हुआ था, अुसकी किरणोंसे आँगन प्रकाशित हो अुठा और दोनो सोती हुअी नारियाँ अुठ बैठी। अन्दरकी लकडी जरा धूपमें डाले। पन्द्रह दिनके बाद सूर्य भगवान्ने आज अितनी कृपा तो की है ? जितनी सूखें अुतनी ही सही। यह कहकर दोनो झटपट अपने-अपने काममें लग गअीं। दोनोंने जल्दी-जल्दी से अटारीपर लकडी, पत्ते, तिनके, कूडा जो सूखा कुछ गीला होकर पडा था, अुस सबको ला-लाकर धूपमें डाल दिया। अिस पखवारेकी सतत निरतर मूसलधार वर्षासे सब अीधन अितना गीला हो गया था कि रोज चूल्हा जलाना तो क्या, यज्ञ

करना भी कठिन हो गया था। अैसे समय आअी हुअी धूपका लाभ अुठानेसे भला कौन चूकता ?

अदरसे अीघन बाहर लाकर सुखानेका काम समाप्त हुआ। सरसोती आँगनमें ही खडी-खडी कुछ भूली-भूली-सी सोच रही थी। पारोतीने कहा—"नहाने जावो, तेरे पीछे मैं भी आ रही हूँ।" पर स्नानघरमें जानेका जी नही चाहता था। धूप निकलने पर कोअी खास काम करना चाहिअे, यह कअी दिनसे अुसने सोच रखा था, परन्तु अब स्मरण नहीं आ रहा था। अिसीसे अुसके पैर भी नही अुठ रहे थे। "वह क्या काम है ?", "वह कैसा है ?" पूछते-पूछते पारोती थक गअी, आखिर पासवाले तालाब पर नहाने चल दी। पानीमें तीन-तीन बार डुबकियाँ लगा स्नान पूरा कर जल्दी-जल्दी घर आअी "काम और स्नानके समारंभमें अगर चूल्हेपर रखे चावल जल गये, तो क्या होगा ?" यह कहते हुअे वह भीतर आयी तो देखा अब भी सरसोती आँगनमें ही खडी है।

अुसे आया हुआ जानकर सरसोतीने पारोतीसे कहा—"अटारी पर रखे पापड, बडी, आदिमें वर्षासे सीलन आअे बिना न रहेगी ? सबको अुतारकर धूपमें न डाल दिया जाय ?"

"हाँ, जो बात अब तक मैं भूल रही थी, वह यही तो थी।" यह कहते हुअे जल्दी-जल्दी नहाने जाते हुअे बोली—"तुमसे अटारीपर चढा नही जाअेगा और मैं नहानेके प्रथम अुनको छू नही सकती। अैसी हालतमें जल्दी-जल्दी अेक डुबकी लगाकर आती हूँ।"

अैसा कहती वह नहानेके लिअे दौड पडी।

अुसके स्नान करके आनेपर रसोअीघरसे बाहर आकर पारोतीने कहा—"सरसोती ! अेक काम बडा खराब हुआ।"

"वह क्या है ?"—सरसोतीने पूछा तो पारोतीने कहा—"भात बहुत ज्यादा पककर सन गया है। देखा तो अुसमें पानी ही नही था। अुसे तू कैसे खाअेगी ? भात अच्छा पकने पर भी तू जरा-सा खाती है, फिर आज · · · "

"पर अेक दिन खराब खानेसे क्या मैं मर जाअूँगी ?" बीचमें ही सरमोतीने कहा और अटारी पर चढ गअी। भाभीकी मददसे अुसने पापड, वडी, मुँगोरी आदिके बडे-बडे वर्तन नीचे अुतारे। पन्द्रह दिनकी वर्षाकी सीलसे पापड और वडीमें दाढी-मूँछें निकल आअी थीं। वर्तनोंको हटा-हटा कर जब बाहर बरामदेमें लाया गया, तो फिरसे आसमानमें बादल छा गये। "हाय राम!" पारोतीने कहा "अिस वर्षाको भी क्या सूझी है! पन्द्रह दिनसे सीले हुअे पापड सूखनेके लिअे नीचे अुतारे तो फिर बादल आ गये। सरमोती! आ जल्दी अीधन अुठा ले, नहीं तो जो कुछ सूखा है वह सब बेकार हो जाअेगा।"

सरमोतीने कहा— "तुम चुप रहो। वह सूखा ही कहाँ है? और गीला होनेपर भी अिससे ज्यादा गीला क्या होगा? शामको अुठा लेंगे, मुझे तो अिन पापडोंकी फिक्र है। जल्दी खा-पीकर चूल्हा लीप-पोत ले, तो कमसे-कम सौ-दो-सौ पापड सूख ही जाअेंगे।"

दोनों खानेका निश्चयकर अन्दर जाने लगीं तो गोठमें गोपीका "अम्बा! अम्बा!" शब्द सुनाअी पडा। वर्षाके कारण सप्ताह भरसे गोपी गाय गोठसे बाहर नहीं हुअी थी। आसमानमें जरा धूप आअी देखकर बेचारीने सोचा, "अब मुझे कोअी बाहर छोडेगा?" पर जब अुसने जाना कि घरवाले अपने-अपने काममें लगे हैं और मुझे भूल गअे हैं, तो अुसने पुकार लगाअी। गोपी गाय कितना ही धीरे क्यों न बोले, पारोती अवश्य सुनती। अुसकी पुकार सुनकर पारोतीने कहा—"शायद अपने बछडेको पुकार रही होगी।" पारोती अुल्टे पैरसे गोठमें गअी। गोपी पगहीं खींच-खींचकर चीख रही थी। पारोतीने अुसके गलेकी रस्सी खोली। बस, फिर क्या था, गोपी बछडेकी तरह अुछलकर चौकडी भरती हुअी बाहर आँगनमें गअी। वर्षा रुकते ही खुले पैर घूमना अुसको आनन्ददायक जान पड रहा था। आँगनमें अुसके आते ही बादलोंसे घिरे आसमानमें हवा चली और वह साफ हो गया। सूर्यकी तिरछी किरणें आग बरसाने लगीं।

"खाना खानेके बाद बाहर जाना, भला!" कहकर पारोतीने गोपीको फिरसे अेक पेडकी छायामें बाँध दिया। अुसके सामने रसोअीघरकी

होन्ने-तेलकी अिस विवेचनामें सूर्यास्त हो गया। अुसने अपने अिस विचारमें अेकाध पहर तो विताया ही होगा कि अेकाअेक अूपर देखा-"गोपी! बस कर अब अपना चरना, अे केपी! चपी! चलो, तुम सब घर चलो!" कह अुन सबको बुलाने लगी। वे सब आअी भी। अुन सबको हाँककर पारोती घरकी ओर ले चली। गोठमें जाकर अुन सबको यथास्थान बाँधकर बोली—"सरसोती! देखा तुमने मेरा यह भुलक्कडपन? होन्ने मैंने गोविन्द तेलीको अब तक नही दिये। शायद मेरे पागल मनने अैसे सोचा होगा कि अिस साल बिना तेलके ही चिराग जलेगे।" आँगनमें सुखाये हुअे पापडोकी दाढी-मूँछें पोछते हुअे सरसोतीने कहा— "तुम भूल गअी तो क्या हुआ? मैंने कबके गोविन्द तेलीको बुला कर दे दिये हैं। अगर पिछले दिनो जगलमें जाती तो ढेरो फल मिल जाते, घडा भर तेल और आ जाता, पर क्या करे अिस प्रलयकर वर्षामें न कही जाना हो सकता था, न कुछ किया जा सकता था। मैं अुस तरफ गअी ही नही।"

दोनो घरके आँगनमें आअी। "सरसोती! देख करीब बडे घडे भर होन्नेके फल मैं वहाँ चुनकर ढेर बनाकर रख आअी हूँ। यह टोकरी ले जाकर अभी लाती हूँ,"—पारोतीने कहा।

"पापड मुँगोडीका मेरा काम खतम हुआ, मैं अबतक अुस तरफ गअी नही, आज हो आती हूँ। आते समय होन्ने-फल भी ले आअूँगी। भगवानकी दयासे आज खूब धूप निकली है। लकडी अभी पूरी तरह नही सूखी, परन्तु पत्तो-बत्तोका जलावन अच्छा सूख गया है। लकडीके लिअे अभी अेक धूप और चाहिअे। कल धूप निकली तो बडा अच्छा होगा,"—सरसोतीने कहा।

पारोतीके मनमें आया— "कल धूप आअे या न आअे। चार दिन आँखोसे पानी आना तो दूर हुआ। नहीं तो बाहर आसमानसे वर्षा होती है, तो अदर आँखोसे!" यह सोचती-सोचती वह सुखाया हुआ सब अीधन या जलावन अुठाने लगी और सरसोती टोकरी लेकर होन्नेके फल लाने घरके पीछे जगलकी ओर चल दी।

स[illegible]काकर गोठकी अटारी पर रखने तक अँधेरा हो गया था। [illegible] वकच्य आदि सुबह पका लिया गया था। अुसीमें

थोडा भूसा मिलाकर वह जानवरोंके सामने रख आओी। पारोती घरके काममें लगी थी, अुधर सरसोती जगलके मैदानकी हरियाली देखकर वडी खुश थी। अुसने सोचा—"पारोतीने होन्नेके फल जमा कर रखे हैं, अब मेरा क्या काम ?, मैं ये सूखे पत्ते-वत्ते और जलावन वटोर लूं, तो वडा काम हो जाय ? और पेडकी चार-छह टहनियाँ तोडकर अेक वुहारी वना वह सूखे-पत्ते, सूखे तिनके आदि वटोरने लगी। तीन वोझ जलावन अिकट्ठा हो जानेपर वह वडी प्रसन्न हुअी। घरसे लाअी हुअी टोकरीमें होन्नेके-फल भरकर लें गअी और अुन्हे वरामदेमें डाल दिया। फिर वहाँसे रस्सीका जाल लाकर जगलमें सूखे पत्तोंका जलावन भरने लगी। दवाकर, दवोचकर भरे हुअे तीन वोझ हाँ, अपनी कल्पनानुसार ठीक तीन वोझ, अुठाकर घर लाकर पटक दिअे।

"पारोती! देखा? अितना-सा जलावन सडकर मिट्टीमें मिल जाने-वाला था।"—घरपर आते ही सरसोतीने पारोतीको जलावन दिखाकर कहा।

पर पारोतीको शामको वरामदेमें दीवट रखते और देवघरमें समअी जलाते समय अुन्ही होन्नेके-फलो और होन्ने-तेलकी चिन्ता थी, वोली—"सर-सोती! तूने होन्ने-फल तेलीको दे दिअे हैं न?"

"हाँ, दे दिअे हैं।"

"पर अुनके तेलका क्या हुआ, मुझे याद नही।"

"तेल वह छुट्टी पाते ही ला देगा, भाभी!" सरसोतीने कहा, "मैने अपना काम कर दिया। अब तेलकी जरूरत होगी तो अुसे याद दिलानी होगी। गोविन्द तेलीके घर तेल रहा तो क्या, हमारे घर रहा तो क्या?"

"अैसा नही सरसोती, घरमें खर्चके लिअे चाहिअे अुतना तो है?"

"आधा घडेसे ज्यादा ही है। कमसे कम पन्द्रह दिन तो चलेगा। और भाभी, अिस आँधी तथा वर्षाके दिनोंमें भला तीन-तीन चिराग जलानेका क्या काम? घरमें मोती थोडे ही वरसनेवाले हैं?"

पारोतीका दिल जरा हल्का हुआ। होन्ने-[illegible] वंधी समस्या हल हुअी। वह तो अभी-अभी गोपीका दूध दुहकर अ[illegible]यी [illegible] देन[illegible] दीप

जलाया जा चुका था। भला दिन भरकी अशुचिता विना नहाअे कैसे दूर होती ? स्नान करना अनिवार्य था। दोनो पासवाले तालावमें नहाने गअी। आसमानपर पूरा अँधेरा अव तक नही छाया था। हवामें भी जरा गरमी थी। ठढे पानीमें नहानेपर अेक प्रकारका आनन्द ही आ रहा था। दोनो शरीर मलती-मलती गले भर पानीमें खडी-खडी वतियाने लगी— रातमें रसोअी वनाअें या नही, यही अुनकी वातोका विषय था। "तुझे तो खाना है ही नही" पारोतीने कहा, "मुझे भी कुछ भूख नही, दोपहरका भात खराव था शायद अिसीलिअे अैसा लग रहा है।"

"अिस प्रकार अुपवास-तपस्या करनेसे ही तो सूखी ककडी वन गअी है," सरसोतीने वीचमें ही वात काटकर कहा, "तेरे तो वे वहाँ भूखें नही हे। मजेमें हलवा और खीर अुडा रहे होगे। तू यहाँ पतला भात भी नही खा पाती। वनानेका आलस है, तो दोपहरका भात ही थोडा क्यो नही रख छोडा ? अुसीपर थोडा तेल और नमक डालकर खा लेती, घरमें अमियोका अच्छा अचार तो रखा ही है।"

जिस दिन रामअैताल वाहर खाने जाते, अुस दिन आमतौरपर पारोती अैसा ही करती। पर अिस समय वर्षाऋतु थी। "सरसोती ! अिन दिनो सुवहका भात खानेसे गलेको पकडता है, अगर गरमीके दिन होते तो अच्छा लगता।" पारोतीने कहा।

सरसोतीको यह सच जान पडा। अुसे अपने वचपनकी याद आअी। जवसे अुसका सिंदूर पुँछ गया था, अुसका रातका खाना छूट गया था। अिससे वासी भातकी याद मिट-सी गअी थी। वासी भातके सस्कार भी कुछ पुँछसे गअे थे। अिस वातचीतने अुन्हे ताजा कर दिया।

"आग लगे तेरे अिस आलस्यको ! मालूम होता है तू थक गअी है, धीरे-धीरे नहाकर भगवानका नाम जप। मैं तव तक वनाअे देती हूँ रसोअी। दोपहरका साभार होगा न ?" कह सरसोती झट-पट स्नान कर किनारे पर आ खडी हो गअी।

"नहीं सरसोती !" मना करनेवाली पारोती मना करती ही रही। सुवहका साभार नही है, और तू जानती है मुझे आम कितना पसन्द है।

कच्चा आम और कद्दू डालकर साभार बनाया था। कुछ अच्छा लगा, थोडा ज्यादा ही खाया, तबसे पेटमें थोडा-थोडा दर्द-सा हो रहा है? मैं कबसे सोच रही थी कि यह दर्द क्यों हो रहा है। अब समझी, दोपहर मैंने कच्चे आम खाअे, वे अब मुझे खा रहे हैं।"

पारोती अपनी बाते कहती गअी। पर सुननेवाली सरसोती वहाँ कहाँ? वह रसोअीघरमें पहुँच चुकी थी। चूल्हा फूंककर चावल धोनेमें लगी थी। पारोती जब किनारेपर आकर बदन पोछनेके लिअे सूखे कपडे तलाश कर रही थी, तब सरसोती चावलके साथ कौन-सा व्यंजन बनाअें, विषयपर विचार करनेमें सलग्न थी। आँगनमें ही पारोती चीखकर बोली—"गोज्जू, रायता, भरता, कुछ मत करो, अचार है, मैं देती हूँ।"

"यह क्या सूझा है तुझे?"—सरसोतीने कहा। "अुबले आमका अचार पडा है। अभी अुस"अमृतबानका मुंह भी नही खोला है।" अिसी साल बैसाखमें अुसने अुबले आमका आचार डाला था। और यह भी सच था कि अब तक अुस बडे अमृतबानका मुंह भी नही खोला गया था। "सरसोती! क्या अुनसे पहले मुझे स्वाद लेना होगा?"—पारोतीने कहा।

सरसोती बोली—"चूल्हेमें डालो तुम अपने अुस शास्त्रको! पता नही अुन्होने अब तक कितने घरके अुबले आमोका स्वाद चखा होगा। क्या कच्चे आमका गोज्जू बना लूं?"

"अच्छा" कह पारोतीने अपनी स्वीकृति दे दी। फिर अुसे सुबहके आमोकी याद आअी। सुबह जो आम खाअे थे, वे तो अब तक अुसे खा रहे थे। अब फिर वही खानेपर अुष्णता बढेगी। अधिक कष्ट होगा। "नही सरसोती! सुबहके आम अब तक मुझे खा रहे हैं। अगर कुछ भला-बुरा हुआ तो?"

सरसोतीकी समझमें नही आया कि क्या करे, अुसको भ्रम-सा हुआ। "आखिर मैं भी क्या करूँ? केवल अचार खाना ही तेरे नसीबमें बदा है।" सरसोतीने कहा। मैंने कितनी बार भैयासे कहा—"तेरी गोपी सूखकर अब, बूढ़ी हो गअी। अेक तीन-चार सेर दूध देनेवाली भैंस ले आओ। घरमें थोडा छाछ भी तो होने लगेगा। अुनको क्या जहाँ जाते हैं खानेको मिलता

है, दूध-दही मिलता है। यहाँ घरमें भाभी सूखकर कॉटा वनी जाती है।" सरसोतीका स्वकथन पारोतीने सुन लिया। अिसके कारण अुसके पतिदेव पर आरोप होना शायद अुसे अच्छा नही लगा।

"तू अुनको क्यो दोष देती है, सरसोती? मुझे छाछ पीकर क्या स्वर्ग जाना है?" अुसकी विचार-धारा छाछसे सतानकी ओर वहकर आँखोंसे टपकने लगी। सरसोतीने अिस प्रकारकी वातोमें भाभीकी राय लेना वेकार जानकर कुछ मुगोरियाँ तल ली, दो पापड भी सेक लिअे। पारोतीके जाप करते-करते चूल्हेपर रखा हुआ पानी भी गरम हो गया। "ओ नम शिवाय" की माला फेरनेमें ही रसोअी वन गअी। "भाभी! पत्ता रख लो", सरसोतीने कहा। पारोती अपनी ननदकी करुणा, ममता और प्यारके लिअे मूक कृतज्ञता प्रकट करते-करते खाने वैठ गयी। पत्ता रखकर भात परोस लिया। देखा ननदने तीन-तीन पापड सेक डाले। अुसने अेक पापड़ तोडा। वायें हाथपर डेढ पापड, अुसपर तली हुअी चार-छै मुगोरियाँ और दाहिने हाथमें गिलास भर पानी लेकर पारोती रसोअीघरसे वाहर आअी।

सरसोती जहाँ जाप करने वैठी थी, वहाँ चिराग नही था। पारोतीकी आहट पाकर सरसोतीने पूछा—"क्या खानेका अभी मुहूर्त नही आया?"

"और सरसोती! तीन-तीन पापड कैसे खाये जाअेंगे? मुझे क्या भूत लगा है? लो अेक पापड तो खालो।"—पारोतीने अुत्तर देते हुअे कहा। वह सव सामान सामने वैसे ही रखकर चली गअी। सरसोतीका जप पूरा होनेतक वेचारे पापडोको अपनी मुगोरियोंके साथ वैसे वैठा रहना पडा। सरसोती रोज रातको अेक हजार अेक सौ आठ शिव-पचाक्षरीका जप करनेके प्रथम नही सोती थी। भाभीके पापडोंके लिअे क्या यह व्रत भग किया जा सकता था। अुसका जप समाप्त होनेतक पारोती खाना खा चुकी थी। वह रसोअीघर लीप-पोतकर वाहर आअी। आते समय रसोअीघरका चिराग साथ लाअी, अिसलिअे अच्छा हुआ; नही तो पापड पर पैर पड जाता?

"अव तक पापड नही खाया।"—भाभीने पूछा।

"जप समाप्त होनेके वाद खाअूँगी, यह सोचकर रख छोडा है।"—सरसोतीने अुत्तर दिया। जप पूरा हुआ। फिर सरसोतीने अुस

पापडका हिस्सा किया और आधा पारोतीको खिलाकर ही अपना हिस्सा खाया।

रातकी ठंडी हवा चल रही थी। काले-नीले वादल वडे जोर-शोरसे टकराते-गरजते दौड रहे थे। अुसीमें वालचन्द्र आँख-मिचौनी खेल रहा था। आँगनमें नाचनेवाली जरा-सी चाँदनी देखकर—"वाहर चाँदनी है। अव अिस चिरागकी भला क्या जरूरत!"—कहते हुअे पारोतीने चिराग गुल कर दिया। खम्भोको टेककर आमने-सामने वैठी-वैठी दोनो अिस साल वोअी जानेवाली सब्जीकी वातचीत करने लगी।

"अिस साल रोपाअीका अेक भी रोप नही रहा। यह वेकार वर्षा अैसी पड रही है, जैसे आसमानमें सूराख हो गया हो। अेक भी पौधा नही वचा, सवके सव सडकर गल गअे। अव दुवारा वुआअी करनेको वीज कौन देगा? किसके पास है? अिस साल भिंडीके वीजमें कैसे अंकुर आअे थे?"—पारोती कहने लगी।

—"हाँ, कद्दू अव कितने दिन चलेगे? ज्यादा-से-ज्यादा अेकाध महीना। अव नअे वीज वोकर अुसकी रोपाअी करने तक गणेश-चौथ हो जाअेगी। तव तक क्या खाया-पकाया जाअेगा?"

—"मैं भी यही कहती थी। सब्जी न होनेसे रोज पापड, मुँगौरी, अुवले आम, कच्चे आम, अचार आदि निकालनेपर तो अिन्हे गुस्सा आता है। अगर नारियल डालकर कभी चटनी, कभी भुरता, कभी लासम, कभी पलधा, कभी साँभार आदि वनाअें तो भी कहते हैं, "वस लगी नारियलका दिवाला निकालने। अुस छोटेसे वागमें पेड ही कितने हैं और अुनमें नारियल लगेंगे भी कितने? अिन्हीं नारियलोमें घरका खाना, तेल, त्योहार, अुत्सवादि सव होने चाहिअे।"

—"हाँ! भैयाका अैसा ही अुलटा कारवार है। चटोरी जीभकी लत तो पूरी होनी ही चाहिअे। आजका वनाया व्यंजन कल नही चलता। वाहरसे वे कुछ लाअें या न लाअें, घरमें सव सविधि चलना जरूरी है।"

—पिछले वर्ष, पता नही, हमें कैसी दुर्वुद्धि सूझी। वह निचला खेत हमने वैसा ही छोड दिया। वैसे ही छोड देनेकी जगह थोडा-सा तिल भी वो

देते तो घडा दो घडा तेल मिल जाता। अुस समय वे अिन्कार करने लगे। अब गोलेका तेल खर्च न होगा तो क्या? अब चीखने-चिल्लाने, डाँटने-डूँटनेसे क्या मिलता है?"

अैसे ही बतियाते दिन भरकी थकानसे दोनोको झपकियाँ आने लगी। झपकियाँ आते-आते आवाज भी धीमी पडने लगी। अब न पारोतीकी बात सरसोती सुन सकती थी, न सरसोतीकी पारोती। बैठे-बैठे वहीं दोनो जरा लेट-सी गअी, और लेटे-लेटे नीद भी आ गअी। अितनेमें अैतालराम आअे। अर्लाखेटमें आते ही अुन्होने अपने नित्य-नियमानुसार "साँब सदाशिव! साँब सदाशिव!!" की रट लगाअी। आँगनमें आते ही धप-धप पैर पटककर धूल झाड ली और अपना ताडपत्रका बडा छाता और अूनकी घावली वही बरामदेमें रख दी, फिर पैर धोनेके लिअे तालाबपर गअे। हाथ-पैर धोकर आअे और कहा— "क्या नीद आ गअी? क्या चिराग भी नही जलाते बनता?" पारोती झट जग पडी। "सरसोती, लगता है वे आ गअे।" कहकर चिराग जलाने रसोअीघरमें पहुँची।

"अिस अँधेरेमें नाला पारकर क्यो आअे? बाढसे भी क्या मजाक किया जाता है?"—कहते हुअे सरसोतीने अपने भैयाको जरा डाँटा।

—"अरी कहाँका अँधेरा और कहाँकी रात? दूध-सी चाँदनी छिटक रही है। साथमें थे कल्याणके सुब्राय। आज बाजारका दिन था न? कल्याणके सुब्राय बाजारके लिअे कुदापुर गअे थे। आते समय किलेके बाजारमें भेंट हो गअी। दोनो हाथ हिलाते चल पडे। पानी तो अुतना नही अुतरा था, सुबहकी तरह ही था। ज्वारका पानी भी आया होगा जो अब सुबहको अुतरेगा। वर्षा रुके दो पहर तो हो ही गअे। अुतरेगा पानी अवश्य अुतरेगा!"

—"क्या कहा? पानी बहुत था?"

—"पानी होगा, होना चाहिअे। यह सब किसने हाथ डालकर देखा है। मेरा सारा ध्यान सुब्रायकी बातोपर था। सरसोती, वह सुब्रायकी छोटी बहन है न। देखो अुसका अैराडमें ब्याह किया गया, और वह अब वैधव्यके कारण अपने भाअीके घरमें है। अुसकी बच्चीका नाम क्या है?

कहाँ है वह बच्ची ? यही है या अैराडमें ? जब अितनी-सी थी, कुछ याद है। कहते हैं, अुसका व्याह हुआ है।"

—"क्या कहा ? वह अितनी-सी है। अुस सावित्रीकी अुम्रका दसवाँ साल है। अिसी आनेवाले दसहरेको दस वर्स पूरे होकर ग्यारहवाँ आरम्भ होगा। अभी व्याह नही करेगे तो क्या जवानी फूटनेके[1] बाद करेगे। पर लडकी क्या है, सोना है। अुसकी नाक कितनी सुन्दर है! आँखें कैसी मदभरी है! बेचारीका बाप बचपनमें ही मर गया। फिर भी माँ और नानाने मिलकर किसी तरह पाल-पोसकर बडा किया। अुसीका व्याह है न ? अच्छा हुआ। भगवान भला करे अुसका। पर लडका कहाँका ? "लडका !" राम अैताल सिर खुजलाने लगे, "मुन्नायने बनाया तो था पर मैं भूल गया!"

"हाँ। अेक तुम और दूसरी तुम्हारी भूल दोनोको क्या कहूँ ?" चिराग लेकर आअी हुअी पारोती बोली। अैतालरामने अुसकी मजाक अुडाते हुअे जवाब दिया— "तुम औरतोको क्या, सारे ससार भरकी बाते याद रखनेकी आदत है ? हम पुरुषोको " कहते-कहते अुसे लडकेका घर याद आ गया, " देखा अब याद आया। तुम्हारी सावित्रीको पारपल्ली लच्यमय्याके लडकेको देना तय हुआ है। पारपल्ली लच्यमय्याका अिकलौता लडका है, और अिसकी यह अेकलौती लडकी। लच्यमय्याका बेटा कुछ अैसा-वैसा नही। दस खडी धानकी जमीन है। अिसलिअे खाने-पीनेकी कमी नही। पारपल्ली गाँवमें लडकी देनेपर खाने-पीनेकी कमी हो ही नही सकती। वहाँकी मिट्टी ही अैसी है। कैसा ही अकाल क्यो न पडे, कितना ही सूखा क्यो न हो, कुलथीकी दाल और कुलफीके सागका अकाल नही होता।"

व्याहका विचार करते-करते अैतालरामकी स्मरण-शक्ति अेकाअेक आनेवाले कलकी बातोकी ओर अग्रसर हुअी। "हाँ, सरसोती, तू और पारोती सो जा। मैं अपने सूरके पास हो आता हूँ।" अैतालराम कहने लगे "अगर कल अुस खेतका पानी अुतरा तो अुसे जोतनेको कह दूँगा। अुसके खेत तो हमारे खेतसे भी निचले हैं न! अिससे हमारे खेतोंके पहले अुसके खेतोका पानी नही अुतरेगा। अगर वह हमारा खेत जोत देगा, तो रोपाअी किसी प्रकार

१ प्रथम रजोदर्शन

कर ही ली जाअेगी। अुसके बाद गाँववालोंकी बारी आअेगी। सबके सब रोपाअीमें लग गअे, तो भला हमें कौन पूछेगा?"

सूरका घर वहाँसे आधा-पौन मील दूर था। रातोरात अुसे आदेश देनेके लिअे अैतालराम चल पड़ें। अुनको चलते देख सरसोतीने सोचा— "अब भैयाके सिरपर पागलपन सवार हुआ।" अुसने पूछा—"भैया, क्या बौरा गअे हो? अिस मध्यरात्रिमें जाकर सूरको किसलिअे जगाअेंगे? यह वही सूर है जो शामको सूर्यास्त होते ही शराब पीकर सोया, तो सुबह सूर्योदयके बाद ही अुठेगा। और तुम अब जाकर कहोगे भी तो क्या अुसे सुबह तक बात याद रहेगी। सुबह होते ही मैं जाअूँगी। अुसकी घरवालीसे कहूँगी, तो थोडा बासी भात खिलाकर अुसे हलमें जोत देगी।"

अच्छा, तुम्हारी बात ही ठीक है।

सबने बिस्तरा पकडा। रातको बीच नींदमें पारोतीको लगा, जैसे अुसपर कुछ रेंग रहा है, कुछ दौड रहा है। वह जगी। कपडा झाडा। पास ही गोअे अपने पतिदेवकी याद आअी। अुस यादके साथ ही अुसे याद आअी दोपहरको सरसोतीके साथ हुअी किसीको गोद लेनेकी बात। अिसे पतिसे कहनेके लिअे अुसने करवट बदली तो देखती है कि अैतालराम वहाँ हैं ही नही। "अरे, वे कहाँ गअे?" यह विचार कर ही रही थी कि आँगनमें अुनके पैरकी आहट सुनाअी पडी। पारोती वैसी ही आँखें मलती बिस्तरेपर बैठी रही। अैताल्राम आअे। पत्नीको बिस्तरेपर बैठी देखा,—"क्या अभी तुम्हे नींद नही आअी? आजका काम कलपर छोडना ठीक न समझकर अभी सूरके घर हो आया। सुबह पानी अुतरेगा, आकर खेत जोत दूँगा, यह अुसने मजूर कर लिया है।" फिर बोले—"सूर कहता था, कल-परसो किसी न किसीकी बेगार लगी रहेगी। मेरा अपना काम कब होगा?"

जब अैतालराम आकर सोअे, तो अुनको रातभर अेक ही सपना आता रहा—"गाँवके सब खेतोंकी रोपाअी हो गअी। पर हमारे खेत वैसे ही पडे हैं। अुनपर काम करनेके लिअे कोअी मजूर ही नही मिला।" अिसी विचारमें वे जाग पडे। जगते ही सोचा—"शका रखना अच्छा नहीं।" और सूरके घरकी ओर भागे। अैतालरामको आँगनमें देखते ही कुत्ता भूँकने

लगा। अुसके भूंकनेसे मुहल्लेके सब लोग जग गये, "दुत् कुत्ता! चुप!" और "अरे सूरा! अितना पुकारनेपर भी नहीं सुनाअी देता?"—यह आवाज बारी-बारीसे चल रही थी, फिर भी सूरसे कोअी अुत्तर नहीं मिला। आखिर "कुत्ता जितना जागरूक है अुतना भी तू नहीं।"—अैसा कहते हुअे अपने घरकी ओर लौट पडे।

सूरको अपना सन्देश देकर खुद नींद भरी आंखोंसे घूमते-गिरते अैताल घर आअे, तो "हे साव शिवा!" कहकर बिस्तरपर लेटे। अैतालराम जब थक जाते हैं या कुछ थोडे निरुत्साहित-से होते हैं, तब "साव शिवा" पुकारनेकी अुनकी आदत-सी पड गअी थी। अिसलिअे पारोतीने जरा धीरेसे—"आज थके हुअे हैं क्या?" पूछा। बस, अैतालने आंखें तरेर ली—"अब तेरी पूछ-ताछ शुरू हो गअी।"—अैताल गरजे, "थका क्या, मांदा क्या? आंखोंमें नींद नहीं आअी है। खाना भी बहुत देरसे खाया था। हूँ जा सो जा।"

किसीको गोद लेनेकी बात करनेका अुसका विचार वैसा ही रह गया। वही प्रस्ताव अुसके मनमें था, वही जबान पर था, पर "यह समय ठीक नहीं" पारोतीको सोचना पडा। "सोती हूँ" कहकर पुन जरा पड़ी, और नींदने आ घेरा। वह तो मानो पारोतीकी अभिन्न सहेली थी, अिसने बुलाया और वह आअी।

अिधर अैतालरामकी नाक बोल रही थी, अुधर दीवारपर लगाअे ताडके पत्ते बोल रहे थे। मानो दोनोंमें स्पर्धा चल रही हो। अिनसे भी बढकर समुद्र गरज रहा था। अैतालरामकी नाकका स्वर दीवारके ताड-पत्रका भर-भर और समुद्रकी गर्जना, सब मिल-मिलाकर अेक सुन्दर पच-वाद्य बना रहे थे।

: ३ :

अैतालरामका ज्योतिष ठीक निकला। दूसरे दिन सुवह अुनके खेतोसे पानी अुतर गया था, वाढ आधेसे अधिक कम थी। सवेरे-सवेरे सरसोती अुठी। अुठते ही नालेकी ओर गअी। अुसने अपनी आँखोंसे देखा, पानी अुतर गया है। वह वहाँसे सीधे सूरके घर पहुँची। अुसकी पुकारपर सूरकी घरवाली अुठी। "कौन है"–पूछती हुअी बाहर आअी। "सरसोतम्मा !" सरसोतीको देखते ही वह बोली। "क्यो कष्ट किया ?" किन्तु अुसके पूछने करने तक सरसोतीने अपनी सारी वाते कह डाली। "अच्छा ! ये ब्राह्मण लोग कोअी वात पकडते है, तो शैतानकी तरह पकडते है !" सरसोतीकी सब वाते सुनते ही सूरकी घरवाली बोल अुठी। वह अैसा क्यो बोल रही है, यह सरसोतीके समझमें नही आया। अितनेमें सूरकी घरवालीने अुसका सदेह दूर करते हुअे कहा— "आपके भैया रातमें ही आकर कह गअे थे ! अुसके वाद अेक नीद भी नही आअी होगी कि आप आअी। खेत जोतना है सुवह होनेके वाद और रातसे ही आपकी दौड-धूप चल रही है।"

भैया द्वारा की गअी रातकी दिग्विजयकी वात वह नही जाननी थी। अुसे हँसी आअी। "जितना कोसना है, कोस ले मेरी रानी ! पर सूर आकर खेत जोत जाअे ! फिर साल भर तुम्हारा नाम भी नही लेगे !"—कहकर घर चली आअी।

खैर, सूरप्पा अपनी जवानका पक्का निकला। अपने वचनके अनुसार सूर्योदयसे ही आकर खेत जोतना आरम्भ कर दिया। ठडी, हवा, तूफान, पानी आदिके बीच अुसका हल चलता रहा। अूपरके खेतमें जाकर धानके रोपे ढोनेका काम धीमा था। सूरकी घरवालीको छोडकर कोअी दूसरा मजदूर

नही मिला, परन्तु अिन मव बातोमे अैतालराम डरनेवाले नही थे । वे अपनी पत्नी और बहनके माथ जुट गअे। तीनो स्त्रियोने वर्षामें भीगते हुअे धानके रोपे अुखाडे । अुनकी गड्डियाँ बनाअी। और "अिसमें क्या रखा है?"—कहते हुअे अुन सबको ढोकर खेतमें ले आअे । मनमें आ गया तो अैसा कोअी काम नही, जो रामअैतालमे न हो सके । अुखाडे हुअे सब रोपोकी दुबारा रोपाअी भी अुसी दिन शाम तक हो गअी ।

जेठके पहले विशाल झील-से दिखाअी देनेवाले पश्चिमीय मैदान अब रोपाअीके बाद हरे-हरे दिखाअी देते थे। अैतालरामके घरके सामनेवाली रेतीली टेकरीपर खडे होनेसे पूर्व और पश्चिम दोनो ओर हरा ही हरा दिखाअी देता था। पश्चिमकी ओर देखें, तो नित्य-परिचित वह नीला-काला गरजनेवाला समुद्र अूपर अनत हाथ अुठाकर नृत्य करता था और अुसके किनारेपर खिल-खिलाकर हँसनेवाली लहरे, अुनपर आनेवाला वह शुभ्र झाग तथा मोतियोकी तरह अुछलनेवाला तुषार, सब अपूर्व था। अिसपर पृथ्वीकी विशालता दिखानेवाले दूर-दूरतक फैले हुअे लहलहाते खेत थे । जब जरा हवा चलती, तो सारे खेत, अुसमें झूमनेवाले हरे-भरे रोपे, क्षण भरके लिअे समुद्रकी लहरोको मात कर देते ।

अिस साल वर्षाने आते-आते यद्यपि आतक-सा फैला दिया, तो भी बादमें प्रत्येक नक्षत्रके दिनोमें किसानोकी अिच्छानुकूल ही पानी बरसा । अितना ही नही, बाढका पानी भी अत्यत लाभप्रद सिद्ध हुआ । अिस साल अैसे लोग भी थे जिन्होने पिछले कअी वर्षोसे तीन-तीन चार-चार गुना अधिक लकडी जमा की थी, परन्तु अैतालका घर नदीमुखके पास था, अिसलिअे अत्यन्त साहस करके आगे जाना पडता था। अुसमें अुतना साहस भी नही बन पडता था, परन्तु जो जरा नदीमुखसे दूर थे, अुन्होने लकडीसे न केवल अपना घर भर लिया, बल्कि अुसे बेंचा भी । बहकर आअे हुअे बडे-बडे तने वही समुद्र-तटकी रेतीमें दबा दिअे गअे और फिर बिना किसीसे कहे-सुने चुपचाप बेंच दिअे गअे । सरसोती-पारोतीका अैसे व्यापारसे कोअी वास्ता नही था। अुनको तो जलानेके लिअे भरपूर जलावन ही मिल गया तो बहुत, वह अुनको मिला भी । अब वे प्रथम अेकादशीकी प्रतीक्षा करने लगी ।

वह भी आओी । गाँवमें कहीं भागवत और कहीं रामायणका पाठ होने लगा। कथा कहनेवालोंने भी अुनकी अिच्छानुसार अक्रूर द्वारा कृष्णको ले जानेके बादसे कथा आरम्भ की । आषाढ, श्रावण आदि महीनें कैसे बीते यह पता ही नहीं लगा ।

भाद्रपदका महीना आया और गणेशचतुर्थी, ऋषि-पंचमी तथा अनन्त-चतुर्दशी आदिके अुत्सवोंमें वह भी बीत गया । पितृपक्षमें अैतालरामने कअी यजमानोंके घरके अनाथ पितरोंके मुँहमें पानी पहुँचाया । अिस प्रकार पितृपक्ष भी समाप्त हुआ । अब खेतीमें हरियाली नहीं थी, वह सोनेकी तरह चमक रही थी । पत्तियोंकी हरियालीमें धानकी स्वर्णिमा फूट पडी थी । अब तक खेतोंमें सरल-सीधे खडे झूमनेवाले धानके पौधे अब शर-शैया पर पडे भीष्मकी तरह लेट गअे थे । लोहारके घर हँसियोंमें दाँत रखे जाने लगे और आसमानमें बादल गरजने लगे । बिजली कडकने लगी। घरसे खेतोंमें जाने तक धूप थी । किसान खेतमें पहुँचे, अुन्होंने थानोंमें हँसिया लगाया कि आसमानके काले-नीले बादलोंने आ घेरा । वे अेक दूसरेसे टकराअे, गरजे, बिजली कडकी और दिनके समय रातका दृश्य अुपस्थित हो गया । समुद्रसे पूर्वी घाटों तक आसमानके अन्तरालमें बिजलीकी लताअें बढ चली । आँखोंके सामने कडक-कडककर नाचनेवाली बिजलीको देखकर अैसा लगता था कि यहाँ पडी, वहाँ पडी । किसीके घरपर पडी, किसीके बागपर पडी । अुस दिन सरसोती और पारोती दोनों मिलकर अपनी खेतीकी फसल काट रही थी । अेक हाथसे धानके पौधे पकड कर दूसरे हाथसे हँसिया लगाया ही था कि करीब दो-सौ गजके फासलेपर बिजली गिरी । अुनके शरीरका अणु-अणु काँप अुठा । हाथसे हँसिया गिर पडा । जब शरीरमें कुछ जान आने लगी, तो डरसे सरसोतीकी जबान "मृत्युंजय ! मृत्युंजय !!"–कहने लगी । अुसने पारोतीसे भी "मृत्युंजय कहो, वही रक्षा करनेवाला है !"–कहा । पारोतीनें भी अुसीका अनुकरण किया । अुन्होंने जरा मुडकर देखा कि टेकरी पर पाँच-सात होन्नेके पेड अँगारोंकी तरह खडे-खडे जल रहे है ! जैसे ही अुन्होंने यह दृश्य देखा, दोनों खेतसे घर भागी । खेतमें खडे रहनेका धैर्य कहाँ था ? किसी तरह घर पहुँची । घरमें जानेसे क्या बिजलीसे रक्षा होगी ? अुन्होंने हाथके हँसिया, रस्सी आदिको अेक कोनेमें फेंक

दिया और अेक जगह बैठकर "मृत्युजय" का जाप करना प्रारम्भ कर दिया।

बस, यही आकाशके खेलका अन्तिम दिन था। अुसके बाद धूप ही धूप थी। अब तक स्वर्ण-वर्णसे चमकनेवाले सारे विशाल खेत फिर काले-काले दीखने लगे। निचले खेतोंमेंसे ओ ओ ओ राग सुनाअी देता था। सूरके बैल धानकी बालियाँ कुचलते थे। आँगनमें सूरकी घरवाली सरसोती-पारोती सिरमें अेक कपडा बाँधकर वहीपर रखे हुअे धानके पौधे धान पीटने-वाली चौकीपर पीट रही थी। और बार-बार "ओ लछमी दौडी आ" कहकर अुत्साहसे चीखती थी। सच पूछा जाय तो वर्षाके प्रारम्भमें सबने सोचा था—"सारा खेत सड जायगा अिस साल", पर अिस साल फसल सबसे अच्छी रही। धानका ढेर देखकर अुनका रोम-रोम प्रसन्नतासे खिल अुठा। सरसोती कहती—"अिस साल पन्द्रह-बीस खडी धान ज्यादा हुआ है।" पारोतीने सिर हिलाकर स्वीकृति देते हुअे कहा—"होगा!"

"मुँहकटी कही की!"—अैतालरामने गरजकर कहा। "पन्द्रह-बीस खडी क्यो? अेक दो कणज[१] ही अधिक!" अुनके मनमें भी आया था कि ये औरते ठीक कह रही है, पर औरतोकी तरह मूर्ख थोडे ही थे? अुन्होंने तौलनेके लिअे लाअी गअी पावली लकडी आदि साधन वैसे ही अन्दर रखवाअे। दीवालीके बाद घरकी औरतोको बाहर गअी जानकर घरमें अपने सिवाय कोअी नही, अिसका निश्चय होनेपर दरवाजा बन्द करके तौलनेका काम करना पडा। वे थक गअे! अिस साल पन्द्रह-बीस नही, ठीक पच्चीस खडी धान ज्यादा था। जब पारोती-सरसोती घर आअी, तब तक अुनका नापना-तौलना खतम हो गया था, "क्यो, पिछले साल ही जितना तो हुआ?"—सरसोतीने पूछा, और "तुम्हारी बकवासके कारण तीन खडी कम ही रहा!"—अैतालरामने जवाब दिया।

किन्तु सरसोती अुसकी बहन ठहरी। अुसने भी अैतालरामकी गैर-हाजिरीमें पारोतीके साथ धानको दुबारा तौलकर अपना गणित सच करानेका निश्चय कर लिया। "अरे भैया! घरके लोगोंसे भी धोखा!"—सरसोतीने

१ धान रखनेके लिअे बेंतकी चटाअीका गोल-सा कमरा।

कहा। "पूछती हूँ! काम करने, खेतमें तपने-खपनेके लिअे हम थी, और धान कितना हुआ अिसका हमें पता नही! भाभीने गट्ठर बाँधते समय ही कहा था, अिस साल कम-से-कम तीन सौ गड्डियाँ ज्यादा है। पर भैया!"

"ज्यादा है, अिसका पता लगा, तो क्यो हम सबके सामने बकें। हमें.. ...."

"हमें क्या अितनी भी अकल नही?"—सरसोतीने कहा—"और फसल घरमें आते ही हम क्या गाँव भरमें डुग्गी पीटने जाअेगी?"

"कुछ भी हो, हमें अब पता लगाना है?"

"अिस साल पुवाल भी है और धान भी। देशमें भैंसे आअी, तो अेक भैंस लेलेगे।"

"मेरे लिअे तू भैंसकी बात मत कर! मुझे अब दूध-घी खाकर मोटी नही होना है।"

"वे भी दूध-घी खाअेंगे, तो बीमार नही पडेंगे? अितनी सपत्ति है न। अगर खाया भी नही, तो किस कामकी?"—सरसोतीने कहा।

अिस साल केवल अैतालरामके घर ही धान अधिक नही हुआ था, समूचे गाँवमें अुत्साह था। सबकी फसल अच्छी थी। वर्षा समाप्त होनेके पन्द्रह दिन बाद तक सब जगह "लछमी दौडी आ" की पुकार सुनाअी देती रही। सबके आँगनमें धान पीटने, धान तौलने, मुंडा, पुवाल और पूला बाँधने का काम चल रहा था। लोगोका "मेरी चौकीपर धान ज़्यादह आअेगा!" का गाना सार्थक हुआ। अिस सालकी दीवालीमें सबके घर नया अुत्साह था, नया आनद था। चार खडीवाला आसामी भी अिस साल खड (बटाअी) देनेमें पीछे नही रहेगा यह जमीदारोने सोचा। किन्तु, गाँवके अैताल, सुब्राय, सूर, कूर कोअी भी हो, "अिस साल फसल कैसी आअी" यह पूछनेपर कहते—"रुपअेमें बारह आना आअी! अगर पहले पन्द्रह दिन वर्षा अधिक न होती तो अठारह आने आ सकती थी!" बाढ दुनिया भरका कीचड, कूडा लाकर अिनके खेतोमें मुफ्तका खाद डाल गअी, अिसीलिअे अिस साल अितनी अच्छी फसल हुअी, यह किसीके दिमागमें नही था। सभी अुस बाढको कोस रहे थे। वह न आती तो अठारह आने होती, बीस आने होती!

वर्षा समाप्त हुअी । समुद्रकी गर्जना, जो फसल कटाअीके दिनोंमें थी, अब कुछ कम हुअी । अब समुद्रकी आवाज मानो कहती थी, "वर्षा बहुत दूर है !" अैतालराम अब भी अपना कटा हुआ नारियलका बाग देखने जाते थे। अिस साल कोअी पेड नही गिरा था। अितना ही नही, अिस साल अुनके कटे बागको नअी मिट्टी मिली थी। अुनके सामने करीब तीन अेकड जमीन बन गअी थीं। नदीमुख दक्षिणकी ओर घूम गया था, अिस साल अुसकी वक्र-दृष्टि विरुद्ध दिशामें हुअी । कहते हैं कअी घर भी समुद्रमें नही-नही, नदीमुखकी आहुति पडे थे। अैतालराम कहते थे— "अिस नदी-मुखको अेक साल भी बिना आहुति लिअे चैन नही पडता।" अपने बागमें खडे-खडे, दूर आधे-पूरे कटे बागकी ओर देखकर अैतालरामने पूछा—"किसका बाग है वह ?" आखिर अदाज लगाते। "ओहो ! विट्टप्पानायकका बाग होगा !" और दूसरा बाग किसका हो सकता है ? "हाँ ! वह बाग होगा सुदर शानभागका ! तब तो ठीक है !"—कहकर अुनकी सवारी घर पहुँची। घरपर आते ही सरसोतीको बुलाकर कहा—"सरसोती ! मैंने कल कहा था न, अुस ओर किसीका तीन-चार अेकड नारियलका बाग कट गया। अुसमेंसे अेक विट्टप्पनायकका है और दूसरा है सुदर शानभागका !"

"अरेरे ! कितने धनपर पानी फिर गया बेचारेका !"—सरसोतीने कहा।

"तुझे पागलपन लगा है !"—अैतालरामने कहा। "कितने लोगोंकी गर्दन मरोडकर कमाया धन था। खासकर सुदर शानभागने तो अबतक बयालीस सेरका मुडा[1] बाँधा ही नही। कभी अुनचालीस सेर तो कभी चालीस सेर। अिससे बडा अेक भी मुडा अुसने किसीको नही दिया। मुफ्तका आया हुआ पैसा व्यर्थ गया !"

यह सुनकर सरसोतीको गुस्सा आ गया—"तुम्हे क्या ? पच्चीस खडी धान ज्यादा आया है न, अिसीलिअे आँखें आसमानपर चढी है ! दूसरोका बाग गया, तो कहते है मुफ्तका आया हुआ धन था। दस साल पहले जब

१ वहाँ धान या चावल बोरेमें रखनेका रिवाज नहीं था। घासमें डालकर अुसको रस्सी और बेंतसे कद्दूकी तरह बाँधकर रखते हैं। अेक मुडेमें करीब आधा बोरी अनाज होता है।

अपना वाग गया था, अुसके लिअे तुमने क्या मेहनत की थी ? वह मुफ्तका आया हुआ धन न था ? किस-किसके घरकी दक्षिणा " —आदि कहकर वह वहाँसे चली गअी ।

अैतालरामको अुनकी छोटी वहनने यह अच्छा कोडा लगाया । अुनसे जवाव नहीं वन पडा । जवान तालूसे सट गअी । वहनकी वात याद करके मन टीसने लगा । "अिस साल पच्चीस खडी अनाज अधिक होनेकी वातका अिसे कैसे पता चला !" शायद अिसने नापा होगा ! अरेरे, मेरी वातपर अव अिसका विश्वास नही रहा ! फिर भी मुँह खोलनेका साहस नही हुआ और अपने आप "अिस घर वैठी नानीको हजार घरकी चिंता" गुनगुनाते तालावपर स्नान करने चल दिअे । अुस दिन अुन्होंने जो जाप किया, अुसकी सीमा नही । पानीमें कितनी ही देरतक डुवकियाँ लगाते रहे । देवपूजामें जा वैठे, कव घटी वजाअी, कव नही, यह भी अुनको भान नही रहा । नैवेद्य और आरतीमें घंटी वजाअी या नही, अुनको कुछ भी पता नही ! यह सव करके वाहर आअे । पारोतीने भात परोसकर तैयार किया । "मैं अभी-अभी मणूर हो आता हूँ, तुम सव खालो !"—कहकर चल पडे । "पत्ता रखा है ! परोस दिया है ! खाकर गअे तो . !"—पारोती कहती ही रही । "पन्द्रह खडी धान खर्च हो लेने दो, अुसके वाद आता हूँ !"—कहकर वे हाथ हिलाते चले गअे ।

यह नरसिंहावतार देखनेके लिअे सरसोती घरमें नही थी । वह गोठमें गअी थी । वहाँ अेक वूढी गाय अपनी ससार-यात्रा समाप्त करनेकी तैयारी कर रही थी । सरसोती गायके सामने वैठी आँसू वहा रही थी । पारोतीने गोठमें आकर "अुनको क्या हुआ है आज ?" —पूछते-पूछते यहाँ दूसरा ही दृश्य देखा । दौडती हुअी अुस गायके पास पहुँची । अुसकी, केम्पी दम तोड रही थी । पारोतीकी भी आँखें भर आअी । अुसने अपनी गोपी और दूसरी गायको देखकर "तुम क्यो खडी हो यहाँ ? चलो अव शामको आना ?" —कहकर अुन्हे जगलकी ओर भगाया ! पर वे वार-वार अदर ही आती नजर आअी । तव गोठका दरवाजा वद कर दिया गया ।

"भैया, कहाँ गअे ?"—सरसोतीने पूछा ।

—"गुस्सेमें आकर चले गअे हे। पच्चीस खडीकी बात कहकर परोसा हुआ पत्ता वैसे ही छोडकर चले गअे! किसपर गुस्सा आया अुन्हे?"

"चाहे जिसपर हो!"—सरसोतीने कहा—"गरीबोंका गुस्सा पेटपर! अुनके अिस अवतारसे क्या मै डरती हूँ? कही भी रहूँ, अपनी जिन्दगी गुजार लूंगी।"

सरसोती वहाँसे अुठी। "तुम अदर जाओ"—सरसोतीने पारोतीसे कहा। "मरी गायको क्या अुठाया जा सकता है? अुसका यहाँके दाना-पानीका ऋण समाप्त हुआ। तभी तो वह मरी! डोमसे आनेके लिअे कहती हूँ।" वह डोमोंके मुहल्लेकी ओर चली गअी। अुसके पीछे ही अेक डोम और अेक डोमिन आअे। गोठका दरवाजा खोला गया। केपी गायकी लाश अुठी। ननद और भाभी गोठके दरवाजेपर खडी रहकर केपी गायके अन्तिम दर्शन कर रही थी। अुनके पास ही गोपी और चपी अपना गला अुठाअे खडी थी। वे शायद अपनी सहेलीकी यह अन्तिम यात्रा देख रही थी!

आँसू बहाती हुअी पारोती अपनी गोपीको ढाढस दिलाती बोली—"अन्दर आओ अब! आज तुम्हारा दाना-चारा नही हुआ। अभी लाअे देती हूँ।" वह अन्दर गअी। दाना-चाराके बदले अुसने अुन दोनो गायोंके सामने अपने लिअे बनाया भात आदि ही डाल दिया। अुन गायोंने भी आश्चर्यसे अुसको सूंघ लिया, पर कुछ देर तक खाया नही! सरसोती और पारोती खोअी-खोअी-सी तालावपर गअी, चार-आठ डुबकियाँ लगाकर घर आअी। दोनो बरामदेपर बैठी-बैठी "राम-राम! शिव-शिव!!" करने लगी। सरसोतीने कहा—"जिस घरको वे नही चाहते, वह मुझे भी नही चाहिअे!" पर पारोती चुप रही। वह अेक शब्द भी नही बोली।

सध्या सयय, अन्धेरा होते-होते रामअैताल घर आअे। वे अब तक सुबहके क्रोधसे जल रहे थे। किसीसे कुछ भी नही बोले। वैसे ही आँगनमें कुछ समय अिधरसे अुधर टहलते रहे। कुछ समयके बाद गोठके सामने गअे। गोठमें केपी गायको नही देखा। अपने आप बडबडाने लगे, "कोअी भी नही चाहता अिस घरको! अितना अँधेरा हो गया, घरके सब जानवर आअे या नही अिसे कौन देखता है और सब बातोंमें बेखबर होनेपर भी बाते

करनेमें सव अेक हैं ।" गोठके आगे पीछे चक्कर लगाकर चारो ओर देखा । कही केपी गायकी आनेकी आहट नही मिली । सीधे तालावके पास जाकर वडे जोर-शोरसे केपीको वुलाने लगे । "केपी आ. आ ! आ... केपी !" अैतालराम अपनी केपीको पुकारनेमें लगे थे । घरमें कही कार्य-व्यस्त पारोतीको पता लग गया कि पतिदेव आअे हैं तो वह वाहर आअी । पतिका केपीको वुलाना सुना । सरसोतीने वही अपने कमरेके दरवाजेसे कहा—"केपी भी आती है और दूसरी भी !" सवके सव गुस्सेसे आग ववूला हो रहे थे । "अैसे समय कम-से-कम मुझे तो शात रहना चाहिअे" अिस विचारसे पारोती शात भावसे, पतिके पास गअी और वोली—"केपी नही है अव ! क्यो पुकारते हो अुसको !" "केपी नही है अव, क्यों पुकारते हो अुसको !" अपनी पत्नीके ही वाक्यको अेक वार अैतालने दुहराअे । अुनको कोअी भी वात कहनेको नही सूझती थी ।

"नही ! वह दोपहरको मर गअी"—पारोतीने कहा । "कलसे अुसने न घास खाया, न पानी पिया । मैंने रातको सव कहा था न तुमसे !"

"क्या कहा था तूने ! " वह अर्वस्वगतसे वोले, "केपी मर गअी ! ... अुसको मार डाला ! . अैसे ही अेक-अेककर सव चल वसे तो अच्छा होगा ! यहाँ तो आजकल अिज्जतके साथ जिन्दगी वसर करना भी कठिन है !"

पारोती अुनकी किसी वातका अर्थ नही समझी, पर अुसको अितना पता था कि सुवहसे क्रोवमें हैं जिसका कारण वह नही जानती थी । कोअी वात पूछनेका अुसे साहस भी नही होता था । क्योकि अुसको लगता था, पूछनेसे गुस्सा दस-गुना न भडक अुठे ! अिसीलिअे वह मौन थी । सरसोती भी मौन थी । पारोतीने अकेले घरका सव काम किया । वह गोठमें जाकर गोपीको दुहने लगी । पर गोपीको दूव नही अुतरा । "कैसे अुतरेगा ?" पारोतीने कहा, "मौत सवको समान है ।" खाली वर्तन लेकर लौट आअी ।

पतिका मुर्झाया हुआ चेहरा देखकर अुन्होने सुवहसे कुछ नही खाया है, यह वह जान गअी । पतिदेवकी तरह वह भी भूखी थी । तो भी शाँत भावसे, भूख सहकर वह पतिके पास गअी । "खाना वना है, वैठो तो मैं परोस दूं !" पर अैतालराम वोले—"खाना-वाना क्या अिस शासनमें !"

पारोती अपना कर्तव्य जानती थी। अुसने केलेका अच्छासा पत्ता धोकर अुसे रखा, सामने पाट रखा, पानीका लोटा और प्याला रखा, फिर चावल, सांभार, भुज्जी, पापड और मुंगोडी वगैरह परोस दी। अंतालराम आकर पाट पर बैठे। आज खानेमें मन नही लग रहा था। विमनस्य भावसे खाना खाने लगे। बहुत देर तक पाटपर बैठे रहे। खानेमें भी खूब समय लगाया। परिणाम-स्वरूप पारोतीको दुबारा रसोअी बनानी पडी! पारोतीको भी खूब भूख लगी थी। अिसीलिअे दुबारा रसोअी बनी। सरसोतीने भी सुबहसे नही खाया था। वह रसोअी तैयार होते ही सरसोतीके सामने आअी। "सरसोती! दोपहरसे नही खाया। आओ, अब तो खालो मेरी बहन!"—पारोतीका गला भर आया। आँखें बरसने लगी। सरसोती भाभीके प्यारको जानती थी अुसके आग्रहकी अवहेलना नही कर सकी और बिना अिन्कार किअे बोले—"तुम खालो! मेरा न अिस घरकी किसी बातसे वास्ता, न खानेसे!"

आगे क्या हुआ कोअी नही जानता। पर रामअंतालकी नाक बोलने लगी। अुनके 'गोर्र-गोर्रर्र'के सामने भला दूसरी कौन-सी बात सुनाअी देगी? फिर भी आजका अुनका नरसिंहरूप ही न्यारा था! वे ठीक आधी रातको जगे। जग कर देखते-है चिराग जल रहा है। "यह क्या होगा?" वे सोचने लगे। यद्यपि दिनभरके अनुभव अुन्हे पीडित कर रहे थे, किन्तु अब नीदमें शांत हो गअे थे। अेक नन्हे बच्चेकी तरह अबोध, सरल और नम्र हो गअे थे। अेक-अेक बातपर सोचने लगे—"अब तक कितनी रात गअी होगी! अब तक चिराग क्यो जल रहा है?" आखिर कोअी भी बात ठीक तरहसे समझमें नही आअी। अिसीलिअे अुन्होने पुकारा—"पारोती!" पारोती बेचारी अर्ध-निद्रावस्थासे ही अुठकर पतिदेवके निकट आअी।

"अब तक चिराग क्यो जल रहा है?"

पारोती मौन!

"कितनी रात हुअी होगी?"

"पता नही कितनी!"—पारोतीने कहा।

"क्या अब तक खाया नही गया?"

"नही !"

"भोजन करनेमें अितनी देर !"

—"मै अकेली कैसी खाअूं ? सरसोतीने दोपहरसे नही खाया। तुमने क्या कहा अुसको ? कहती है 'न मुझे अिस घरसे कोअी वास्ता, न खानेसे। यहांके अन्न और पानीका ऋृणानुवध (भाग्य) टूट गया !' तुम भी सुवह खानेके पहले चले गअे केपी भी !"

अैतालरामको धीरे-धीरे ज्ञानोदय होने लगा ! भूख शात हो चुकी थी। नीद भी पूरी हो चुकी थी। गुस्सा भी शात था। अपनी कही वात, वहनका प्रत्युत्तर, अुसके वाद अपनी गैरहाजिरीमें केपीकी मौत। घर भर भूखा ! अेक-अेक वात अुनके सामने आअी।

—"तूने भी खाना नही खाया ?"

—"तुम जब परोसा हुआ खाना छोड गअे तो भला मै कैसे खा सकती थी ?"

अैतालराम अेका-अेक जितने चढे थे अुससे अधिक अुतरे। "पारोती !" अेकने अगर कुछ गलती की, अेकने अगर कोअी बुरी वात की तो क्या सवको अैसा करना था ? कहाँ है मेरी सरसी ! अगर वही अिस घरसे वास्ता नही रखेगी, अगर वही अिस घरको नहीं देखेगी, तो मै गांवमें जाकर कैसे वैदिक कर्म करूँगा ? यह कहते-कहते अपनी सरसोतीके पास गअे। शायद सरसोतीने ये सब वाते सोते-सोते सुन ली थी। अुसपर भी अिन वातोका प्रभाव पडा था।

—"सरसोती अुठ, खाना खा ! तेरे रामने वेवकूफीसे कुछ कह दिया अिसीलिअे क्या तुझे गुस्सा आया ? मेरा दुर्दैव है !"—अैतालरामकी आँखें वोलने लगी।

सरसोती अुठी। "जाओ सो जाओ अव !"—अुसने कहा।

"तुम्हारे खानेके पहले !"

"नहीं हम खा लेगी !"—सरसोतीने कहा, "तुम जाकर सो जाओ अव ! सुवहकी सव वाते भूल जाओ !"

अैतालराम जाकर सो गअे। कअी वर्षोंसे सरसोतीका रातका खाना छूट गया था। आज वह भाअी और भाभीके लिअे मध्यरात्रिके बाद खाने बैठी। खाना हुआ, अुसके बाद सब सो गअे।

सुबह हुअी। पश्चिमकी ओर सुन्दर काले बादल फैले थे। प्रात-कालकी सूर्य-रश्मियोंने आसमानमें सुन्दर अिंद्र-धनुष सजा दिया था। बाल-सूर्यकी स्वर्ण-किरणें नारियल, होन्ने, आम, काजू आदि वृक्षोंके धोअे हुअे पत्तोंको चूम रही थी। अुस दिन प्रकृति-बाला, मानो नहा-धोकर नअे कपडे पहन आअी थी। सब लोग कलकी कडवी बात भूल गअे थे। नअी सृष्टिकी तरह नया जीवन था।

अैतालराम अत्यंत अुत्साहसे अपना बाग देख आनेके लिअे सुबह ही सुबह अुठकर चल दिअे। नदीमुखके पास जाकर कटे हुअे बाग न देखकर आज दीवी आदिसे हगार-कट्टे आने-जानेवाले जहाज देखने लगे। अितनी दूरसे ही "निश्चय दीवीके ही पोत है" कह अुन्हे पहचान गअे। और "हूँ, दीवीमे पोत आने लगे अब, चार-आठ पोत ज्यादह आअेंगे, तो धानका भाव बढेगा।" अैसा गुनगुनाते हुअे अपने बागमें आकर "अिस साल हमारे बागमें जाअी मिट्टीमें कम-से-कम सौ-सवा सौ नारियलके पेड लग जाअेंगे। हाँ, अिसी कृष्णाष्टमीको क्यो न लगाअें!" आदि सोचने लगे।

आने-जानेवाले जहाज, मचवे, पोत, पालकी नावे आदि देखकर हगारकट्टे बंदरगाहका भविष्य बतानेकी अैतालरामको आदत-सी पड गअी थी। "ओह, यह जहाज है, यह मचवा है, यह पोत है" आदि वे बहुत दूरसे देखकर बताते थे। वैसे ही "यह दीवीका है, वह सिद्दी लोगोका, और यह कोचीसे आनेवाला है" भी कह देते। अिन्ही सब कल्पनाओंके साथ वे अपने बागसे घरके आँगन तक आअे और आँगनमें आनेके बाद "अिस साल अरबिस्तानके सिद्दियोंके मचवे नही आअें, कोटेश्वरके त्योहारको कितने दिन है? तब तक अिन सिद्दिओंका खजूर आअेगा या नही? भगवान् जाने! अगर तब तक खजूर नही आअेगा तो और अरबिस्तानके सिद्दी अगर खजूर नही लाअेंगे तो फिर खजूर कौन लाअेगा?" आदि सोचते-विचारते घरमें पैर रखा।

घरमें आते ही पिछले दिनकी बातें भूलकर सरसोतीको–"अरे सरसोती, कहाँ गअी है तू ! आज बदरगाहपर करीब दस-पन्द्रह दीवीके पोत आअे हें। पोत भर-भरकर नारियल, रस्सी वगैरह लाअे है। अब तो नारियलके दाम गिरनेके लक्षण दीखते है !" आदि कहने लगे।

"नारियलके दाम गिरे तो हमारा क्या जाता है ?"—सरसोतीने कहा। "हमारे घरमें बिकनेके लिअे नारियल हें ही कहाँ ? क्या कहा ? दीवीके पोत आअे हें न, तब तो धानका भाव खूब बढ़ेगा !"

"क्या भाव ?"—कहते हुअे बाजारमें धानका भाव क्या है, अैतालराम यह बताने लगे। "कल तक चार चवन्नियाँ थी। अब दीवीके पोत आअे देखकर, अैसा लगता है, कम-से-कम छह चवन्नियाँ अवश्य होंगी !" अितना कहते-कहते ही वे तालावपर चले गअे।

दोपहरका खाना हुआ। सब आराम करने लगे। कल-परसो दूसरी फसलका काम है। कुलथी और तिल बो सकते हें। सूर अपने आप आकर खेत जोत गया। सरसोतीने अपने भैयासे दो नअी बाते कहनेकी सोची थी। अुसके सामने दो प्रश्न थे। अेक किसी लडकेको गोद लेनेका, तो दूसरा अेक भेंस खरीदनेका। दोनोका साथ कहना ठीक नही था। दोनोंमें कौन-सी बात कहूँ, वह यही सोच रही थी। धानका भाव बढा, तो भेंसकी बात कहनेसे वे मान जाअेंगे, नही तो कोअी फायदा नही। वे तो कहेगें भेंस कम-से-कम तीस-चालीस रुपयेकी आअेगी और हमारे यहाँ ब्याजपर तो रुपये चलते नही। अिसलिअे अिस समय गोद लेनेका प्रश्न अुठाना ही अच्छा है, यही निश्चय कर वह अुठी।

आज अैतालराम अपने बरामदेपर शानसे पैर फैलाकर प्राकृतिक दृश्य देख रहे थे। सरोसतीने यही समय अच्छा समझा। वह भैयाके पास आअी।

"भैया, क्या सोचा है ?"—बोली।

"किस सम्बन्धमें ?"

"अैसी अेक बात कहती हूँ, जो मुझे नही कहनी चाहिअे !"—सरसोतीने प्रस्तावना करते हुअे कहा, "सुनना हो तो सुनो, नही तो अिस कानसे सुनकर अुस कानसे निकाल देना !"

"आखिर वात क्या है ? वात कहनेसे पहले कैसे समझूं !"

"जिन्दगीका क्या ठिकाना ?"—मरमोतीने कहा, "अगर कल हमने आँखें मूंद ली, तो मरनेके वाद हमारे मुंहमे पानी कौन डालेगा ? तुम्हारे पास जो है और जो कुछ सालाना आमदनी है, अुसे देखकर क्या कोअी अपना वच्चा गोद नही देगा ?"

यह वात मरसोतीके मुंहमे निकलेगी अैमी आगा अैतालरामने कभी नही की थी। मरसोतीने जव यह प्रस्ताव किया, पारोती भी धीरे-धीरे अन्दरसे वाहर आकर दीवालसे सटकर खडी हो गअी थी और पतिदेव क्या कहते हैं, यह सुननेको अत्सुक थी।

"सरसोती !"—अैतालराम धीरे-धीरे वोलने लगे, "तुझे क्या पागलपन सूझा है यह आज, किसीके घरसे कौवेका वच्चा लाकर अपने घरमें कोयलका-वच्चा कैसे वनाया जा सकता है ? वह भला कभी वन सकता है ? मैंने अव तक न जाने कितने अुपनयन और दत्तक सस्कार किअे। सव जगह अेक ही रोना है, सरसोती ! वच्चोके गुण स्वभाव नही मिलते। आखिर दिल टूट ही जाता है। अगर अपने ही कुनवेका कोअी होता, नो दूसरी वात थी।"

—"तो क्या विना कुछ सोचे ही रहोगे ? अैसे कितने दिन ।"

"अगर भगवानने नसीवमें लिखा है, तो हमारे घरमें ही दिया जलेगा !"—अैतालरामने वीचमें ही कहा।

"मगर तुमने ही कहा था न कि मेरी जन्मपत्रीमें ... ही नही"—आखिर अव तक खडी-खडी सुननेवाली पारोतीने

"तुम्हारी जन्मपत्रीमें न हो तो क्या हुआ ?"—... हा, "ब्रह्माने मेरे तीन वच्चोका योग लिखा है, वह कैसे झूठ हो

आगे अुनको अिस विपयमें वोलनेको कुछ सूझा ही ... लेके चुप रह गअे। फिर सरसोतीसे "अिस साल खेतमें क्या व... कर अैतालरामने नअी वात छेड दी।

—वहाँ फिरसे सुग्गी[1] फसल वोओगे तो अेक भी वाल नही आनेकी। पिछले साल भी तो यही हुआ था ? वोओे हुअेमें तीन चौथाओी, पता नहीं, किन-किन लोगोंके घरके मुर्गोंके मुँहमें गया ? अिन शूद्रोंकी दुनियामें रहकर सुग्गी वोनेका कोओी लाभ नही।

पिछले साल हमने जहाँ सेम वोओी थी, अुसीमें अिस साल घान वोअें। दोनोको मिलकर घुस्स डाले और अूपर काँटे वोकर वन्द कर दें। वाकी जगहपर कुलथी और तिल वो दें। दाने न आनेपर भी पर्याप्त जलावन मिल ही जाअेगा।

वस, दूसरे दिन ही सेम और सुग्गीके खेतोंके चारो ओर घुस्सके लिअे मिट्टी डालना शुरू हुआ। चारो ओर मिट्टी डालकर घुस्स वना दिया गया, अुसपर काँटोकी वाड डाल दी गओी। अैतालराम सकुटुव-सपरिवार घुस्स डालनेके काममें लग गअे। फिर भी, अितने वडे खेतके चारो ओर मिट्टीके वडे-वडे ढेले रखकर अुसपर मिट्टी पोतनेमें तीन दिन लगे। अुसके वाद अुसपर दुनिया भरके काँटोंके पेड काट-काटकर लगाअे गअे। दोनों ओरसे वाँसके टुकडे लगाकर अुन्हे वाँधा गया। अिस प्रकार मजवूत किलेवदी कर कही धान तो कही अुडद और कही कुलथी वोओी गओी। वहुत देर तक विचार-विनिमय कर "तिल न वोनेका" प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। अैताल-रामने तिलके विरोधमें कहा—"मुझे तिलका तेल पसन्द नही। जलानेके लिअे होन्नेका तेल पर्याप्त है। कभी किसी दिन चित्रान्न किया तो अुसके लिअे किसी घरसे पावभर तिलका तेल माँग लेगे। जलावनके लिअे कुलथी और अुडदके भूसेसे अधिक तिलके पेड क्या काम आअेंगे ?" आखिर सरमोतीने "घरमें होना चाहिअे"—कहकर कुछ सेम भी वोली।

कुलथी, सेम, अुडद आदिके वढते समय भी वोये खेतोकी मेड करनी पडती है, नही तो पडोसी गाँववाले अीर्ष्या-मत्सरसे अपने जानवरोको दूसरोंके खेतमें छोड देते है।

---

१ समुद्र किनारेके कन्नड प्रान्तोंमें कार्त्तिकमें दूसरी फसल वोते हैं। वह होलीके समय काटी जाती है। होलीको "सुग्गी हव्वा" कहते हैं, अिसलिअे अिस दूसरी फसलको सुग्गी।

फसलके खेतोमें क्षण-क्षण आते-जाते समय बिताना पडता था। सरसोतीको अब हाथमें लकडी लेकर नगे-सिर घूमे बिना चैन ही नही पडती। किसी खेतमें किसीका अेक छोटा-सा बछडा भी आया कि बस अुसे कोस भर दूर भगानेपर ही दम लेती।

अिस साल अेक बातमें अैतालरामका दैव अुल्टा पडा। धानका दाम तो बढा किन्तु सुग्गी हाथमें आने तक शूद्रोके मुर्गोके हमलेसे बचानेमें अुनको अपना पसीना बहाते-बहाते सूख जाना पडा। वे समझ गअे कि सेमके खेतोमें धान बोकर भारी भूल की। पानीका तालाब अूपर था जहाँ वे हर साल धान बोते थे। अिस साल धानका खेत बदल गया, सेमके खेत और अुसमें पानी सीचते समय पसीना सीचना पडा। तालाबका पानी खेतोमें पहुँचते-पहुँचते करीब तीन सौ डोल तो जमीन पी जाती। अितनी दूर तक पानी ले जानेके रास्तेमें दूसरोंके खेत भी नही थे।

अितने साल वे घोटनीसे सिंचाअी करते थे, पर अिस साल यह नही चलनेको था। अिस साल तो रहँट लगाना पडा। अैतालराम कनस्टर लाअे। पारोती बैठी-बैठी रस्सी बटने लगी। बाँस लाकर अुसे चीरा गया। अुसको अेक दूसरेसे बाँधकर अुसका बडा चक्र बनाया गया। दूसरे दिन भाअी-बहनने गढा खोदा, नाली खोदी, और अिस प्रकार नअे रहँटकी तैयारी हुअी।

पारोती दूसरे रोज सुबह गोपी और चपीको जगलमें ले गअी। अुधर भाअी-बहन तालाबपर आकर पहलवानकी तरह रहँटका चक्र पकड कर खडे हो गअे। दोनो अुस ग्रामोद्योगी रहँटको घुमाने ही नही, नीचे-अूपर अुठानेमें अेक दूसरेसे होड लगाने लगे। अुस रोज दोपहरको कामपर गअे तो समाप्त करनेमें पहर भर रात बीत गअी। अैतालरामकी भुजाओ, हाथो, हथेली सबमें फोडेकी तरह दर्द हो रहा था। पानी खेतोमें पहुँचा या नही, यह जाननेको दोनो बार-बार खेतो तक देख आअे थे, पर पानी कैसे खेत तक पहुँचे, अभी-अभी खोदी हुअी सब नालियोने पानी सोख लिया था।

रातको "कुछ भी हो घोटनीसे रहँट भला"—कहकर भाअी-बहनने चाहे जितनी बहस की हो दूसरे रोज सुबह अैतालराम "हाथसे कुछ भी करते

नही वनता"—कहकर हाथमें तेलकी मालिश करा रहे थे। अेक दिन छोड दूसरे दिन पानी डालनेके वजाय सप्ताहमें दो वार पानी डालनेका नया प्रस्ताव स्वीकृत किया गया। भाओीमें यह काम करनेकी शक्ति नहीं थी, यह वहनके ध्यानमें आ गया था। वे तो कोओी न कोओी वहानाकर आज पारपल्लि,कलमणूर और परसो सालिग्राम जाकर पानी सीचनेके अिम महायुद्धसे जान वचाने लगे। अव पारोतीने अुनकी जगह ले ली। सूरके नन्हे बच्चेसे वोली—"तुम गोपी-चंपीको यही चरा लोगे, तो तुम्हे खानेको कुछ पापड-चूडा दूंगी।" अुसने भी व्राह्मणोंके घरका पापड़ खानेकी लालचसे पारोतीका काम करना कवूल किया।

थकनेपर भी भाभी और ननदने अुस रहँटकी सेवा औरोंके हाथोमें नही दी। औरोको मजदूरी देकर काम करवानेसे भला क्या लाभ?

खैर, मकर-सक्राति आओी। सुग्गीके खेत सोना वन गओे। कुलथीकी कटाओी भी हुओी। सेमका साग भी वनने लगा। और अैतालराम "वडा अच्छा वना है"—कहकर खाने लगे। किन्तु अेक-दो दिनके वाद स्वाद कम हो गया। अव अुसका क्या अुपयोग? छीलकर सुखाया जाने लगा।

अिस साल घरमें जरा अधिक खुशी रही। धानका भाव अच्छा आया। कओी वार पाँच चवन्नीमें माँगा गया धान मकर-सक्रातिके वाद छह चवन्नीमें दिया गया। दीवीके लोग मुँह माँगे दाम देकर धान खरीद ले गओे। कुलथीका भाव भी अच्छा आया। कुलथी थोडी-सी खाने और थोडी-सी वीजके लिअे रखकर शेष सव वेंच डाली गओी। अुडदकी फसल विशेष नही आओी। अिसलिअे अुसे घर-खर्चके लिअे रख लिया गया।

अिस साल अैतालरामने केवल खेतोंसे कम-से-कम सौ रुपओे कमाओे, अैसा सूरप्पाका अन्दाज है। अिसलिअे अेक खडी भी वाकी नहीं रखा। कुछ भी हो, अैतालरामके जीवनमें यह साल वडा अच्छा रहा। सरसोतीने "भैंस खरीदनेका" प्रस्ताव सामने रखा, किन्तु "अितने दिन विना छाछ खाकर जैसे दिन काटे, वैसे अव भैंसका दही खाकर क्या करना? घरमें गाय है ही! गोठमें गाय होनेमें जो शान है वह भला काली भैंस वाँधनेमें कहाँ?" —कहकर अैतालरामने अपना वेदान्त सुना दिया! और यह सव प्रवचन सुनकर सरसोती "मुझे छाछसे क्या!"—कहकर चुप हो गओी।

: ४ :

मकर-सक्राति बीत गओी। शालिग्रामके मेलेमें सरसोती और पारोती गअी थी। मन्दिरमें नारियल-केले रखते समय सरसोतीने अिस साल जो ज्यादा फसल हुअी, अुसका कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया। "अगले साल भी अच्छी फसल हो"—यह प्रार्थना भी अुसने की। मेला समाप्त होनेके अेक महीने बाद अैतालके घरमें खेतका काम भी समाप्त हो गया। कुलथी और अुडद अुखडनेसे जगह खाली हो गअी थी। अब थोडा-सा बागवानीका काम रह गया था। धूप तेज होती जाती थी। शामको रोज बागमें पानी डाला जाता था, किन्तु दूसरे दिन सुबह पेड-पौधे सूखे हुअे पाअे जाते। गांवकी मिट्टी प्यासी थी। "अगर अैसी ही गरमी रही, मिट्टीकी प्यास अैसी ही बनी रही, तो क्या अन्त तक तालावका पानी सिंचाअीको पर्याप्त होगा ?"—सरसोतीके मनमें रह-रहकर यही बात अुठती थी। अुसका यह सदेह देखकर पारोतीने कअी बार कहा—"सरसोती, तू क्या पागल हुअी है ? होलीके महीनेसे ही तू क्यो अितनी चिन्ता कर रही है ? रोपके लिअे धान बोनेमें अभी अेक महीनेसे ज्यादाका समय है। अिस बीच भगवानकी दया हुअी तो क्या अेक-दो बार भी पानी नही बरसेगा ? फिर युगादिके समय पानी बरसनेका नियम भी तो है।"

ननद-भौजाअी बागके सब सफेद कुम्हडे घर ढो लाअी। अुन सबको रस्सीसे बांधकर घरमें जहां-तहां कतारमें खभे और धन्नीसे ल्टका दिया गया, फिर भी सौ से अधिक कुम्हडे बच रहे। अिन्हे क्या करे ? वैसे ही जहां-तहां जमीनपर पटक देना सरसोतीको अच्छा नही लगा। किसीको बेंच दिया तो ? अगर वह सब कुंदापुरके बाजारमें ले जाअे जायें, तो अच्छे दाम आअेंगे ? पर चार कोस दूर कैसे ले जाअे जायें ?

अुसने सूरको बुलाकर अुससे बात की। सूरने पता नही क्यो सारी बातें गोविंदमेनियासे कह दी। कहते है कि वह अगले शनिवारको कुंदापुर जानेवाला था। अुसके द्वारा सब कुम्हडोको कुंदापुर पहुँचानेका प्रबंध किया गया। "अिन कुम्हडोनेके बदले दाम देनेकी जरूरत नही। आते समय चार मन रतालू ला देंगे तो ठीक होगा।"—अैसा तय हुआ। अगले रविवारको गोविन्दमेनिया समयपर बाजारसे वापस आया। अुसने "चार मन रतालू नहीं, तीन मन मिले"—कहकर तीन मन रतालू रख दिअे।

रतालू आनेपर अुनका पापड बनाना भी अनिवार्य था। अुडद आदिके भी पापड बनाने थे। बागसे आअे हुअे कुम्हडोका भी कुछ करना था। अुडदके साथ मिलाकर अुनकी बडियाँ बनानी थी। रोपके धान बोने तक अचार डालनेका भी प्रबध करना है। कटहल भी आ गअे थे। अुनके भी पापड बनाने थे। स्त्री-साम्राज्यके सामने यही मुख्य समस्याअें रहती हैं। मकर-सक्रातिके बादसे रामअैतालके लिअे आअे दिन किसीके घर ब्याह, किसीके घर अुपनयन, किसीके घर गृह-प्रवेश, किसीके घर शाति और किसीके घर समाराधना-अुत्सव बना ही रहता। वे तो अिन्ही शुभ-मगल कार्योमें लगे थे। दोपहरका सूर्य माथेपर आनेके बाद भी अुनके पैरोमें धूप नही लगती। जजमानोंके घरमें जहाँ कहीं काम होता, सुबह ही सुबह जा पहुँचते। रातके खानेका अुन्हें खास विचार नही रहता। हाँ, बीच-बीचमें जजमानोके घर भोजनके साथ नाश्ता-पानी भी हो जाता और पहर भर रात बीतने पर ही अैतालराम अपने घर आते।

फाल्गुन मास भर पारोती-सरसोतीने मिलकर पापड-बडियोका काम पूरा किया। भला अकेले दो जीवोंसे अुडद बोने, दाल पीसने, मिर्चे कूटने आदिका काम कैसे होता? फिर घरमें केवल यही काम तो था नही? रोजका काम भी तो था। दूधके दर्शन न होनेपर भी गायकी सेवा-टहलका काम न रुकता। अिस सब झमेलेमें अचार डालनेका काम रह गया। अैतालके बागमें तो आमके पेड थे नही, किन्तु कहीं ना कहीसे अमियोका प्रबध तो करना ही था। अिस साल असमय आसमानमें बादल छा गअे, अिमसे आसपासकी पचकोशीमें भी आम नही रहे। पर अगर अचार नही डाला गया, तो वर्षा-

ऋतुमें क्या खाअेंगे ? अिस साल गरमीके दिनोंमें भी अचार नही रहा, अिसलिअे कभी कुछ, कभी कुछ बनाकर दिन काटे गअे, किन्तु वर्षाऋतुमें काम कैसे चल सकता था।

सरसोती गभीरतासे विचार करने लगी। अेक दिन अैसे ही बातचीत करते सूर वहाँ आ पहुँचा। अुससे भी बातचीतके सिलसिलेमें सरसोतीने कहा— "सूरा ! अिस साल अचारकी बडी तगी है।"

सूरने हँसते हुअे कहा— "ब्राह्मणोकी जीभ भी बडी तेज होती है। हम सब क्या अचार खाकर ही जीते है।"

अितनेमें पारोती आगे आकर बोली— "यह सब ठीक है सूर, पर जब कभी सूर पानी माँगता है और बिना अचारके पानी दिया जाता है, तो सूरकी सूरत भी मुर्झाअे बिना नही रहती !"

"वह तो है ही !" —सूरने कहा, "थोडा-सा अचार मिल जाअे, तो आध सेर चावलका भात खाया जा सकता है। पर अिस साल क्या किसीको अमियाँ देखनेको मिली है। शिवरात्रि तक तो अिस साल ठड पडी ही नही। अिसी साल मै मकर-सक्रातिको पूरबकी ओर गया तो वहाँ ठड अितनी तीव्र थी कि दो-दो कंबल ओढनेपर भी दाँत बजते थे। अुस समय हमारे यहाँ तो गर्मी थी। आसमान पर बादल घिरे रहते थे। बादल ज्यादा होनेसे ही यहाँके आमके सब फूल झड गअे।"

"तो पूरबकी ओर भी कही अमियाँ नही मिलेगी ?"—सरसोतीने कहा, "वहाँ पर भी क्या अमियोका अकाल पडा है ? अेक जगह अकाल होता है तो दूसरी जगह सुकाल होता ही है। वहाँ तो जहाँ देखो, वहाँ आमके बगीचे ही दिखलाअी पडते है। किन्तु वहाँसे अमियाँ घर आवे तो कैसे ? तीन कोस कौन जाअे-आअे ?"

सरसोतीको अपने ससुरालके बगीचोमें लगे असख्य आमके पेडोका स्मरण हो आया। मनपरसे विकृतिका परदा हट-सा गया, सोचा अगर वहाँ जाअें तो चाहे जितनी अमियाँ ला सकते हैं। आखिर वह सूर और अुसकी घरवालीको समझा-बुझा, खानेकी कणकीका प्रलोभन दे, अुन्हे साथ ले

निकल पडी। सूर्योदयके समय अुनकी यह टुकडी वारकूरमें पहुँच गअी। वहाँसे अीशान्यकी ओर दो कोस आगे जाकर तीनो पहाडीपर पहुँचे। मामूली कल्पना और यात्रा व्यर्थ नही गअी। दोनोने अेक लम्बे वाँससे खूब अमियाँ गिराअी। पेड विना मालिकके थे। तीनोने मिलकर करीव तीन वोझ अमियाँ वाँध लीं।

अितना सव करनेमें सूर्य माथेपर आ चुका था। सिरपर वोझ रखकर, पसीना बहाते, दम तोडते, "ब्राह्मणोका घर कहाँ है ?"—पूछते-पूछते चल दिअे : धूप और थकानकी मारसे सीधी पगडडी छोडकर अिधर-अुधर भटक गअे। और घूम-फिर कर पुन वहीं आ गअे, जहाँ अमियाँ वटोरी थी। अुस स्थानको छोड जरा पश्चिमकी ओर चलकर किसी तरह वे अेक घरपर जा पहुँचे। किसी अपरिचितको सुपरिचित-सा वनाकर अुसके आँगनमें अपना वोझ अुतारा। घरवालोंसे अेक लोटा माँगा। कुँअेंसे पानी खीचा। हाथ-पैर मुँह धोअे। पीनेका पानी लाअे तो घरवालोने अिनका लाल-लाल मुँह देखकर दयासे थोडा-सा गुड ला दिया।

सरसोतीने पानी पिया। "सूरा, पहले थोडा-सा गुड खाकर पानी पी। थोडा-सा चूडा लाअी हूँ। थोडा चूडा भिगोकर खा लेनेसे खाना खाने जैसी ही शक्ति आ जाती है।"—यह अुपदेश देकर अुसने खुद भी चूडा भिगोकर पानी पिया। अुसके बाद वही मँडवा पडे हुअे आँगनमें लेटकर थोडी नींद ली। जव आँखें खुली तो घवडाअी हुअी सरसोतीने, "सूर, ओ सूर, अुठो ! शाम हो गअी ! चाँदनी भी नही है !"—कहकर सूर और अुसकी घरवालीको जगाया। फिर वोझ सिरपर अुठा लिया, और तीनो चलने लगे। पैर जमीन पर रखना मुश्किल था। सिरपर वोझ, तपी हुअी जमीन, थका शरीर, मील भी योजनके समान दूर लगता था। शरीरका रोम-रोम थककर चूर था। चलते-चलते जहाँ छाया मिलती वही रुकते-बैठते, जहाँ पानी मिलता वहाँ पानी पीते-पिलाते, अिस प्रकार किसी तरह सूर्यास्त तक सास्थावी पहुँचे। घर अभी कोस भर था। असह्य थकानसे पिसे हुअे सूरने हँसकर कहा—"सरसोती माँ ! लो अव हमारा ही अचार वन गया"—यह सुनकर सवको, हँसी आ गअी। सरसोतीने दिलासा देते हुअे कहा—"सूर ! अेक छोटी-सी

हँडियामें तेरे लिअे भी अचार बना दूँगी। खाकर देखेगा तो अगले साल मेरे कहनेसे पहले तू ही अमियाँ खोजने निकलेगा।"

यह सुनकर सूरको हँसी आ गअी। "अगले साल जिन्दा रहे तब ना!"—अुसने कहा।

जब सरसोतीने अुसे झिडककर "अैसा अशुभ क्यो बोलता है?"—पूछा तो अुसकी घरवालीने कहा—"क्या करे मालकिन, खानेके लिअे चावल कहाँसे लाअें? क्या केवल अचार खानेसे पेट भरेगा? वर्षाके दिनोमें तो कभी कटहलके बीज और कभी रतालू खाकरही दिन बिताने पडते हैं। अैसे समय आपका अचार किस काम आअेगा?"

"अिस साल भी क्या यही हालत है?"—सरसोतीने पूछा, "तूने तो दो खडी चावलका खेत जोता था। अिस साल और सालोसे तीन-तीन गुना अधिक धान पैदा हुआ है न?"

सूरने अपने खेत और फसलका हिसाब बताकर, "खड-खटाअी देनेके बाद गरीबोंके लिअे केवल पुवाल ही बचता है"—कहा, और सरसोतीने "अिस ओर खड बहुत ज्यादा है,"—स्वीकार किया।

अिसी प्रकार बात-चीत करते तीनो वहाँसे रवाना हुअे। घर पहुँचने तक पहर भर रात बीत गअी थी। घर पहुँचकर सिरपरसे बोझा अुतारनेके बाद अुन्हे लगा, जैसे—"जान बची!" सरसोतीने भी जरा गला हिलाकर कहा—"पारोती! सबसे पहले सूर और अुसकी घरवालीको गुड और पानी दो। बेचारोंको न अमियाँ चाहिअे, न अचार!" फिर वह अपने आप मुस्कराकर बोली—"अुन्हे ही क्या, मेरा भी यही हाल है।"

श्रमिकोका शैत्योपचार हुआ। सूर अपनी घरवालीके साथ अपने घर गया। सरसोतीने "अभी क्या भैया नही आअे?"—आदि कहते घरकी पूछ-ताछ शुरू की, और "वे कब आते हैं कौन जाने! जाते समय कुछ कहे-सुने तो समझें? आअे तो क्या, गअे तो क्या?"—कह पारोतीने अपनी नाराजी प्रकट की और "भैया तो औरतोको कूडेसे भी गअी-बीती समझते हैं। नही तो जाते समय "मै कहाँ जा रहा हूँ, क्यो जा रहा हूँ,"आदि कहकर

जानेमें क्या अुनकी आवरू-अिज्जत डूब जाती है !"—कहकर वहनने भी भाभीकी थोडी-सी भर्त्सना कर ली।

"सरसोती, तू नहाने जा।"—पारोतीने कहा, "देख तो यह भैंसे जैसा वोझ ढोकर सारा शरीर थककर जिन्दा लाश वन गया है। कहे तो थोडा-सा पानी गरम कर दूं? गरम पानीसे नहानेपर थके हुअे शरीरको आराम मालूम होता है। नहाकर चार वडे खा ले। तू शायद वहाँ कहीं खा आअेगी अिसीलिअे मैंने थोडा-सा ही अुडद पीसा, अुसमें कुछ अरवीके पत्ते काटकर डाले और तवेपर चट्टी-वडे वनाअे। पता नही तुझे अच्छे लगते या नहीं!"

"अच्छे नही लगेंगे तो क्या? तवेमें ठीक तेल डालकर सेंकनेपर चट्टी-वडे खानेमें वडे अच्छे लगते हैं।" फिर सरसोतीने पूछा, "क्या तुमने खाना खा लिया?"

"मेरा मन नही लगा। मैंने आज रसोअी नही वनाअी। तेरे लिअे दो-तीन चट्टी-वडे तल लिअे और अपने लिअे अेक-दो। साथ-साथ खाअेंगी यह सोचकर अव तक तेरी राह देखती रही।"—पारोतीने कहा, "सौ पचाक्षरीका जाप भी हुआ, अेक छोटी-सी नींद भी हो गअी! तू हाथ-पैर धो ले। चूल्हेपर पानी रखा है, जरा आग जलाती हूँ, चुटकी वजाते पानी गरम हो जाअेगा।"

"गरम पानी नहीं चाहिअे, मेरी भाभी रानी!"—सरसोतीने कहा, "सुवहसे धूपमें तपकर पहले ही खून गरम हो गया है। जरा ठडे पानीसे नहा लूंगी, तो अच्छा होगा!"

"दिनभर शरीर पसीजता रहा। अैसी हालतमें ठडे पानीमें डूवेगी तो ठड लग जाअेगी। जुकाम हो जाअेगा। गरम पानी नही तो गुनगुने पानीसे ही नहा ले!"—यह कह पारोती कर-दीप ले गुसलखानेमें गअी, अुसके पीछे-पीछे सरसोती भी। पारोतीने धीरे-धीरे चूल्हेमें सूखे पत्तोका जलावन भरकर आग लगाअी और वही पास वैठे-वैठे सरसोतीने अपना अमिया-पुराण प्रारभ कर दिया, "आज हम लोग कम-से-कम आठ कोस चले होंगे। यह पता है भाभी कि धूप कैसी थी? यहाँ हम पश्चिमी लोग, 'अमियाँ नही है, अमियाँ नही है' कहकर रोते हैं, तो वहाँ अुन्हें वन्दर भी नहीं

सूंघते। अैसी अमियोकी ओर देखकर अैसा लगता है मानो अुनके भारसे पेड टूट पडेगा।"

"पूरवके गांव ही अैसे है। वहांकी जमीन ही अैसी है। वहांकी मिट्टीमें शक्ति है। आम, कटहल, केला कुछ भी लगाओ, कितना अच्छा फल देते है! अगर बन्दरोका अुपद्रव न हो, तो पूरवके गांव स्वर्ग है!"

"लगूरोका सामना तो कर सकते है, लेकिन अुस जूडी-बुखारका सामना भला कौन करे? सालमें छह महीने जूडी-बुखारसे बिस्तर पकडना पडता है। बुखारका स्मरण होनेपर मनमें आता है कि मै क्यो अिन जली अमियोके लिअे वहां गअी?"—सरसोतीने कहा।

पारोतीने कहा— "तू भी पागल है। बीमारी और सकटके लिअे क्या पूरब, क्या पश्चिम? ब्रह्माने जब माथेपर बुखारसे तडफना लिख दिया, तो कही जानेसे कोअी कैसे बचेगा?"

अिस प्रकारकी गप्पोमें पानी गुनगुना होनेकी जगह अुबलने लगा। देखनेके लिअे अुसमें हाथ डुबोया। "अरी मां! बातो-बातोमें पानी अुबलने लगा, अिसका पता ही नही चला। अब भला अिसे ठडा करनेके लिअे तालाब से पानी कौन लावे?"—कह पारोतीने नअी समस्या खडी कर दी। "गरम हुआ तो गरम! अिससे क्या शरीर जल जाअेगा?"—कहकर सरसोती स्नान करने चल दी। पहला पानीका लोटा बदनपर डालते ही सरसोती भी "अरी मां!"—कहकर चिल्ला अुठी। पारोती दौडी और दो घडे ठडा पानी डालकर अुसे नहाने लायक बनाया।

नहानेके समय भी बाते चलती रही। नहाकर दोनो रसोअीघरकी ओर गअी। नित्य-नियमानुसार सरसोतीने "ओम नम शिवाय!" का अेक सौ आठ बार जप किया। फिर दोनोने अुडद डालकर बने घुंअियांके पत्तोके चट्टी-बडोकी खबर लेनी शुरू की। अुन्हे खत्म करते-करते सरसोतीने कहा—"भाभी, पता नही ये क्यो अितने स्वादिष्ट हैं? अितने बडे खा जानेपर भी मालूम होता है, पेटका कोअी भी कोना नही भरा।" पारोती खाकर डकार ले रही थी, जिसे दबानेके लिअे पानी पीते-पीते अुसने हँसकर "तूने दोपहरको भी कुछ नही खाया। मै भी कैसी पगली हूँ! गिनकर

चार चट्टी वडे वनाअे !" कहती-कहती खडी हो गअी और हडवड-हडवडकर अदरसे थोडा चूडा ले आअी। अुसे धोया। अुसमें नमक, मसाला, और थोडा नारियल कसकर डाला। फिर पूछा—"अिसमें दो हरी मिर्चें डालूं या थोडा-सा अचारका रस ?"

"अरी पुण्यातमा !"—सरसोतीने वाहरी सकोचसे कहा, "मैं क्या भीम हूँ, कि यह सव खा जाअूँगी ?" तो भी अुसने पारोतीका लाया सारा चूडा अचारका रस डालकर अुदरसात् कर लिया। अचारके तीखेपनसे अुसकी आँखो और नाकसे गगा-यमुना वहने लगी।

फलाहारका पुण्यपर्व समाप्त हुआ। सोनेकी वारी आअी, लेकिन क्या करे अमियोकी टोकरियाँ आँखोंके सामनेसे हटती ही नही थी। अुन्हे तलावपर ले जाकर धोया। वहाँसे लाकर कपडेसे पोछकर सूखनेके लिअे वरामदेमें फैला दिया। वे छोटी-छोटी अमियाँ वैसी ही टोकरियोमें पडी रहती तो वासीपनकी वू आअे विना कैसे रहती। जरा साहस और अुत्साहसे काम लेनेपर अभी अुनका अचार वनाया जा सकता था, किन्तु क्या करे, थकान अुनके साहस और अुत्साहपर पानी डाल रही थी। दोनो धीरे-धीरे अपनी-अपनी चटाअी फैलाकर सो गअी। जमीनपर शरीर डालते ही सरसोतीकी आँखोमें नीद समा गअी। पर पारोतीको तो अेक प्रश्नका समाधान कर लेना था। अुसने अपनी शका समाधान करनेके लिअे पूछा—"अचारके लिअे नमक वाजारसे लाया जाय या समुद्रका पानी अुवालकर चोरी-चोरी नमक वना लिया जाय ?" सरसोतीको तो नीद लग चुकी थी। आखिर "वेचारी कितनी थक गअी होगी"—कहकर पारोती भी अुसके प्रति दयार्द्र हो सो गअी।

दूसरे दिन अचार डालनेका काम था। "वेकार दूकानसे नमक क्यो लिया जाअे ? यही समुद्रका पानी अुवालकर वना लेगे।" पहले तो दोनोने यही तै किया, पर अमियाँ तो आँखोंके सामने पडी थीं। अतअेव समुद्रका पानी लाकर, अुसे अुवालना और नमक वनाना, फिर अुसका अचार डालना ठीक नही जँचा। अिसीलिअे दूकानसे नमक लाकर अचार डालनेका निश्चय किया गया। अमियोमें नमक डालकर रख देनेके वाद सरसोतीकी वर्षा-

ऋतुकी चिन्ता आधी हो गअी। अब तो अुनमें मिर्च-मसाला डालनेकी ही फिक्र रह गअी थी।

\+ + + +

गरमी बढने लगी। युगादि पर्व आनेतक दोपहरके समय जमीन जलकर भट्टी बनने लगी। चैत समाप्त होकर वैसाख आनेपर क्या पूछना? आकाश धूपसे जलता हुआ सुबहसे शामतक राख-सा हो जाता। अुसपर वैसे ही जले हुअे राखके रगके बादल घिर आते! क्या घरमें क्या बाहर, कही भी जाओ शरीरसे पसीनेकी वर्षा होती थी। रातके समय समुद्रके किनारे, घरके पिछवाडे रेतकी टेकरीपर सोनेसे ठडी-ठडी हवा लगनेसे जरा नीद आती। घरके चारो ओर रेतीला मैदान था, भला वहाँ गरमीके दिनोमें दिन कैसे काटे जा सकते थे?

पारोती और सरसोतीको तो अिस भयानक गरमीमें दूसरी ही चिंता होने लगी। धानके रोपोकी क्यारियोकी अब क्या दशा होगी? अिस साल खेतमें जो पानी डाला था वह कम ही था। अब तालावका पानी सूख जानेसे लाभ केवल मछली पकडनेवालोको ही है। वर्षाकी राह देखते-देखते हरी क्यारियाँ पीली पडने लगी। सरसोती दिनमें चार बार अुन क्यारियोको देखने जाती और आकर कहती—"क्या करे अिस गरमीको। अिस गरमीसे तो सारा गाँव भट्टी-सा ज़ल रहा है। जल-भुनकर राख हो रहा है! अिस साल वर्षा आनेपर सादे धान बोने पडेंगे। लेकिन हैं कहाँ? होते तो भी काम चल जाता!"

अैसे समयमें रामअैतालको अेकाअेक घरकी मरम्मत और सुधारकी सूझी। अुस दिन कही समाराघना, शाति, श्राद्ध वगैरह न होनेसे वे भोजन करके घरके ही बरामदेमें ठडी जमीनपर गरमीको कोसते-कोसते सो गअे। भोजनके नशेमें थोडी-सी नीद भी आ गअी। अेक घटा सोनेके बाद जम्हुहाअी लेते घरकी छतकी ओर देखने लगे। फिर "सरसोती!" सरसोतीको बुलाकर कहने लगे—"यह अितनी-सी छत है तो क्या, नही रही तो क्या! घरमें नारियलके मडलो[1]की तो कमी है नही, अगर कुछ कम हुअे, तो माँगे भी मिल सकते है। आँगन भरमें मँडवा डालकर जमीनको अच्छी बना दें।"

---

१ नरियलके पत्तोंकी लम्बी डाली।

सरसोती भी अधजगी-सी थी। वह भी जमुहाओ लेते-लेते बोलने लगी—"भैया! तुम्हे तो दूसरा काम नही। घरमें क्या व्याह है या और कुछ जो सारे आँगन-भर मडवा डालनेकी सोच रहे हो? तुम्हें तो अेक न अेक बात सूझती ही रहती है।" तब तक रामअैतालने जम्हाओ ली। अुसको रोकनेके लिअे खुले हुअे मुँहके सामने चुटकियाँ बजाओ। कमरमें अेक गमछा बाँधकर वैसा ही दूसरा गमछा सिरमें लपेट लिया और धूपमें ही घरके आगे-पीछे टहलने लगे। अुस धधकती धूपसे अैतालरामके रोम-रोमसे पसीनेके मोती निकलने लगे, तो भी अुन्होने घर और बागके कोन-कोनेमें जाकर, कहींसे खभे, कहींसे बाँस, कहींसे बाँबू ला-लाकर ढेर कर दिअे।

सरसोतीने कहा—"भैयाकी बात मुंहसे निकली कि हाथमें आओ। यह सब क्यो?" वगैरह पूछनेका साहस कर ही रही थी कि रामअैतालने कहा—"सरसोती, यो ही हर बातमें सवाल-जवाब मत किया कर। जा अनन्नासके पेड काटकर ला दे!" सरसोती भला भैयाकी सुग्रीवाज्ञाका अुल्लघन कैसे करती? परम आज्ञाकारिणीकी भाँति भाभी और ननद दोनो हाथमें हँसिया और रस्सी लेकर अुसी धूपमें बाहर चल पडी। घटा भर दिन रहते जब वे घर आओ, तो देखा आँगनमें केवल बाँस, रस्सी, नारियलके मडल आदिका ढेर ही नही, बल्कि जगह-जगहपर सब्बलसे खोदकर कुछ खभे भी गाड दिअे गअे हैं। खभा गाडनेके लिअे और भी खोदाओ चल रही थी।

शामके वक्त समुद्री हवा बहने लगी। रात होने आओ। "अगर तालावमें कुछ पानी आया हो तो जरा धानके खेतोमें पानी डाल आअूँ। तुम जरा चूल्हा जलाकर चावल रख दो। पारोतीको भी साथ ले जाती हूँ!"—कहकर सरसोती चल पडी। अुसके पीछे-पीछे पारोती भी थी। अैतालराम कुछ गुनगुनाते हुअे अपने काममें लगे रहे। आकाशमें चाँदनी छिटक रही थी। अुसी प्रकाशमें वे खभे गाडते, अुनपर बल्ले बाँधते और बाँस तथा बाँबू डालते रहे। बीच-बीचमें रसोओीघरको भी देख जाते। अुधर भाभी और ननदको खेतमें पानी देते पहर भर रात हो गओ। वे वहीं, तालाबमें अेक डुबकी लगा थकानसे चूर-चूर हो लौटने लगी तो चावल जलनेकी गध आने लगी। अुनके

रसोअीघर पहुँचने तक आधेसे अधिक चावल जल चुके थे, बाकी भी खाने-लायक नही रहे गअे थे। यह सब देखते ही सरसोतीकी आँखें लाल हो गअी, "आज शैतान सवार हुआ है अिनपर ! कहते हैं आँगनमें मडवा डालना है। देखो ना भात कैसा जलकर खाक हो गया ?"—सरसोतीने झल्लाकर कहा।

अैतालराम भी तालाबपर जाकर स्नान कर आअे, मानो थकावट दूर करनेके लिअे ही कह रहे थ–"ओ नम शिवाय ! ओ नम शिवाय !!"आवाज धीरे-धीरे कम होती गअी। फिर लम्बी साँस लेकर गुनगुनाअे–"ओ नम शिवाय !" और पुन अेकाअेक आवाज अूँची करके वही खडे रहे। अिसी समय जरा-सी हवा चली और चावलकी गध सीधी अुनकी नाकमें जा पहुँची। फिर क्या था ? दौडते-भागते रसोअीघरके दरवाजेपरसे ही "आज वलिका अन्न तो नही पका रही हो? जले भातकी बदवूसे नाक सड रही है !" चिल्लाते-चिल्लाते अदर घुसे। सामने पारोती जवान सँभाले चुप खडी रही, पर यह चिल्लाहट सरसोती सुन चुकी थी। अुसने आकर कहा—"जरा-सा भात देखनेको कहा, तो अनसुनी कर दी। भात जला तो कोअी क्या करे ? हमारे आनेके पहले ही तो भातकी खीर बन गअी थी। अब खाना भर बाकी है।"

अितना कहकर ही वह नही रुकी, "हाँ ! मँडवेकी सनकमें भला हमारी बाते कानमें कैसे घुसे ?" वह और भी वाक-बाण छोडती गअी। "भातका जलना कैसे समझें ! समयका जाना कैसे समझें ! तुम्हें तो मँडवा चाहिअे था ! सरकार आती होगी तुम्हारी घरकी जमाबन्दीका काम देखने ! बेचारी भाभी तीन दिन पैरके दर्दके मारे तडफती रही, फिर भी अुनको खेत सीचनेके लिअे जाना पडा। और, तुम ? यहाँ मँडवा डाल रहे हो।" बहनके अिस गर्जन-तर्जनको सुनकर अैतालराम मानो चौंक पड़े और चुपचाप अेक खभा पकडकर—"रामा-रामा ! हरि-हरि !!" जप करने लगे।

सरसोतीने दूसरी बार चावल पकाया। अचारका अुबला आम निकाला। खर-खर और भर-भर नारियल कस दिया। अेक दो लाल मिर्च गरम राखमें भून ली। थोडा नमक, गुड और भुनी मिर्चें सबको अच्छी तरह मसलकर अुसमें अचारके अुबले आमके टुकडे मिला दिये, तथा अूपरसे

नारियलका कस डाल दिया। सबको मिलाकर आमका गोज्जु बन गया। दो-चार पापड़ भून लिअे। मुगोडी भी तल ली। केलेका पत्ता रखा, पाट रखा और "आओ खालो!" कहकर भाभीको बुलाया। अंतालराम नन्हें बच्चोंकी तरह चुपचाप भोजन करके अुठ गअे। अब तकका आवेश अुतर गया था। नींद बिस्तरेपर बुला रही थी। शरीर थका था। वही पडी तकिया लेकर ठडी जमीनपर लेट गअे, तबतक नींद भी "मैं आअी, मैं आअी" कहकर आँखोंसे चिपक गअी।

आँगनमें नारियलके डठो (मडलो) का ढेर पडा था। मँडवेपर डालनेके लिअे अुनको बुनना जरूरी था। घरमें औरतोका खाना समाप्त हुआ। रसोअीघरके कामसे छुट्टी पाकर वे बाहर आअी। कितना ही सोचनेपर भी अंतालरामके अिस मडवा-प्रकरणका अर्थ नही ज्ञात हुआ। फिर भी वे दोनो अेक-अेक डठलो (मडल) को लेकर अुसको बुनने बैठ गअीं। अेक ओर काम करती जाती, दूसरी ओर झपकियाँ लेती जातीं। नींद, थकान और अुदासीसे चूर-चूर थी, फिर भी अेक ख्याल अुनके हृदयमें गुदगुदी पैदा कर रहा था। "शायद राम किसी मुन्नेको गोद लेनेकी सोच रहा होगा। यह सब अुसीकी तैयारी है!"—सरसोतीने अपने अिस ख्यालको भाभीसे कहा। पारोती दूसरी कोअी भी बात सोच न सकी, अिसीलिअे वह भी "यही होगा"—कहकर अपने मनमें प्रसन्न हुअी।

सुबह-सुबह अंतालराम खाँसते-खाँसते अुठे। अुठते ही "कराग्रे वसते लक्ष्मी करमूले सरस्वती" कहकर अुस अँधेरेमें ही अुन्होने अपना हाथ देखनेकी विधि कर डाली। अुसके बाद "समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमडले" कहते हुअे अुठे और गजेन्द्र-मोक्षका अुदय राग गाते हुअे बाहर आअे। बाहर आकर वे जमीनपर पडे हुअे नारियलके डठोंको बुनना चाहते थे, तो देखा कि वे पहलेसे ही बुने हुअे मँडवेपर चढनेको तैयार है। "पर अितने डठलोसे क्या होगा?" सोचकर अुसी क्षण आस-पासके रैयतोको बुलाने चल पडे। अुस समय आकाशमें स्वर्णकिरणे फूटने जा रही थी! फिर भी आपने रैयतोंके घरके सामने जाकर—"अरे सूर! अरे काला! हावली!" पुकार-पुकार कर कहा, "कहीसे अेक-अेक बोझ मँडलोंके हेडे ला दो। तुमको खूब

पान-सुपारी खिलाअूंगा। मडलोकी जगह मडले लौटा दूंगा या तुम कहोगे तो अनाज दे दूंगा। जैसे भी हो लाओ, घरके सामने अेक अच्छा मँडवा डालना है।" कहते-कहते अैसा लगा मानो डुग्गी पीटते चले गअे।

अुनमें दो-अेक पूरे शैतान थे! अुन्होंने पूछना शुरू किया—"मडलोके हेडे क्यों? मँडवा किसलिअे? क्या कोअी समारावना होगी। हाँ ब्राह्मणोंके घरकी पायस सुडकनेको मिलेगी! मालूम होता है ब्रह्माने अिस साल हमारे नसीबमें अैतालरामके घरका पायस लिखा है।"

अैतालरामने भी हँसते-हँसते कहा—"शूद्रके बच्चोंकी आदत ही वैसी है। मँडवा कहते ही ब्राह्मणोंके घरकी पायसके लिअे अुनके मुँहमें पानी आने लगता है!" आकाशमें लाली चढ चुकी थी, जब अैतालराम अपने घरमें घुसे। सूर्योदयके बाद पहर भर समय बीता होगा। आठ-दस बोझ मँडलोके हेडे आकर आँगनमें पड गअे। अुनको लानेवालोंमें से ही अेक-दो को अूपर चढाकर नारियलके मँडलोके हेडे अुसपर डलवा दिअे। अब वह लग्न-(ब्याह) घरका-सा सुन्दर मँडवा दीखने लगा। अिस खुशीमें अपने काममें सहायक कालूको सम्मानित करने तथा अुपचार दिखानेके लिअे रामने अपनी पत्नीको बुलाकर कहा—"कालूको लोटाभर पानी और थोडा-सा अचार दे दे।"

"कालू! तुझे गुड चाहिअे या अचार?"—पारोतीने पूछा।

"गुड तो कहीं भी मिल जाता है, पर ब्राह्मणोंके घरका अचार खाअे बहुत दिन हो गअे!"—कालूने जवाब देते हुअे कहा, "आपके घरके अचारका जैसा स्वाद तो अिस कोटके चौदह गाँवोंमें किसीके घर नहीं मिलता।"

पारोतीने जो नया अचार डाला था, अुसीमेंसे दो-चार अमियाँ निकाल अेक केलेके पत्तेपर धर साथमें पानीसे भरा लोटा लाकर रख दिया। कालूने भी शैतानकी तरह सारा लोटा भर पानी गलेके नीचे अुतार लिया और "अम्मा! पानी क्या है अमृत है! और थोडा पानी डाल दीजिअे अिसमें!... अिस गर्मीके दिनमें बिना खाअे रहा जा सकता है, पर बिना पानीके नहीं।" कहकर और थोडा पानी माँगा। फिर अचार साफ करते-करते दूसरा लोटा भी चढा लिया। और फिर "अम्मा! और दो-चार अमिया दे दो। दोपहरको आपका नाम लेकर अुससे भात खा लूंगा!"—कहा।

"तीन दिन तक नहीं आ सकूँगा कह गये हैं न ?"—पारोतीने पूछा। और "साथमें कोअी व्याहकी पुरोहिताअी करनी होगी। पर क्या कहे भैयाको, औरते तो अिनके लिअे कूडेसे भी निकृष्ट हैं ! आँगन लीप-पोतकर आअीना बनानेके लिअे हम है, पर कुछ पूछने-कहनेके लिअे हमारी जरूरत नहीं !" विचारते-विचारते सरसोती बहुत अुदास हो गअी।

अब आराम लेनेकी फुरसत कहाँ ? केवल तीन दिनका समय था, तब तक आँगनको आअीना बना देना था। अुसके लिअे बहुत-सी लाल मिट्टीकी जरूरत थी, वह कहाँसे आअे ? और अुसपर मलनेके लिअे कौन-कौनसी पत्तियाँ लानी होगी ? काम करनेके लिअे किसको साथ ले, किसको न ले ? अिन बातोपर विचार कर फौरन काममें लग जाना पडा।

: ५ :

सरसोतीपर आँगनका आअीना बनानेका भार था, पर पारोती क्या करती ? पतिदेवने अुसे चुपचाप सोनेकी आज्ञा दे तो दी थी, पर वह कैसे खाली बैठे ? अैसा करना कहाँ तक शक्य था, और कहाँ तक अुचित भी ? आँगनको जब आअीना बनानेको कह गये हैं तब कोअी विवाह या अुपनयन जैसा शुभ काय तो होगा ही। फिर तो अुस शुभकार्यके अनुसार ही पापड-बडी आदि बनाने चहिअे। रोजमर्राके पापड और बडियाँ क्या अिस प्रकारके शुभकार्यमें काम आअेंगे ? अिसी चिन्तामें बेचारी परेशान थी। अुसने सलाह लेनेके लिअे बडी अुत्सुकतासे सरसोतीको पुकारा—"सरसोती! अरी सरसोती!" —पारोतीने पूछा, "कितना अुडद धूपमें डालूं ? चूडा कूटनेके लिअे कितना धान बाहर निकालूं ?"

सरसोती अिसका अुत्तर भला क्या देती ? वह क्या जाने कितने लोग खानेको आअेंगे ? क्या जाने कितनी पगत बैठेगी ? वह यह भी नही जानती थी कि कौन-सा शुभकार्य है ? अुसने कहा—"तुझे क्या पडी है! जितना कहा, अुतना काम कर दिया!"

"कितना ही बुरा क्यो न लगता हो, घरका काम तो करना ही चाहिअे।" पारोतीने कहा।

तब दूसरा रास्ता क्या था ? दोनोने सोचा—अिस आँगनमें कितने लोग बैठकर खा सकते हैं। पर कितने दिनोतक भोज होता रहेगा, यह कौन जाने! किस बातके लिअे यह सब हो रहा है जब यही पता नही, तो कोअी जाने तो क्या जाने! सोचनेपर भी कोअी निष्कर्ष नही निकला। आखिर ठहरा—हजारके लगभग पत्तले पडेंगी।

सब काम भला घरकी दो औरतोंसे कैसे होता ? पडोसके अुपाध्यायके घरकी अम्माको बुलानेका निश्चय हुआ । अुसे बुला तो ले, और वह क्षण-भरमें कूट-पीसके रख देगी, पर अगर वह पूछे कि क्या है ? यह सब किस कामकी तैयारी है ? तो क्या जवाब देंगे—सरसोतीने अपनी शका पेश की ।

पारोतीकी सूरत मुरझा गअी अुसे लगा— "पड़ोसके लोगोको बुलाकर घरमें हमारी क्या कीमत है, यह दिखानेका ही यह रास्ता हो सकता है ?"

सरसोतीकी शांति भंग हो गअी, वह सोचने लगी— "अपने घरमें ही हमारी यह कीमत !" भाअीको खूब कोसकर फिर भाभीसे बोली—"तुझे दूसरा काम नही । दुनिया भरकी जिम्मेदारी सिरपर लेना ही तेरी जिन्दगी है । वे तो जाते समय कह गअे—'अुसे थकाना नही । चुपचाप सोने देना ।' पर तू कहाँ सुनती है ? अगर पापड, वडी, मुँगोडी सब करने होते तो कह न जाते ? तू जाकर चुपचाप सो जा । वे जाते समय कह गअे थे—'आँगनको आअीना बना देना ।' मैंने 'हाँ' कहा । बनाती हूँ आँगनको आअीना ! बस, हमें और सब बातोंसे क्या मतलब ! अगर पापड-वापडकी जरूरत होती, तो कह गअे होते मुँह खोलकर ! शायद यह सब तै करनेको बहुत दिन होंगे ! कभी कुछ होनेवाला है यह समझकर अुन्होंने यह हनुमानकी पूँछ शुरू की होगी ! कुछ भी हो आखिर तीन दिनमें आअूँगा कहकर गअे हैं । आअेंगे, आनेके बाद कहेंगे, कहनेके बाद कर देंगे !" अितना सब बोलनेपर भी अुसका मन नही माना, अुसका गुस्सा शात नही हुआ । "औरत होकर पैदा हुअी हैं, हमारे लिअे सर्वत्र अपमान ही अपमान है !" यह विचार अुसके दिलमें तीर-सा चुभ गया था ।

तीन दिनमें सरसोती, सूर और अुनकी घरवालीको लेकर आँगनको आअीना बनानेके लिअे आँगनमें मिट्टी लगाती रही । कामके बीचमें ही न जाने क्यो मनमें अेक टेढी-सी बात आ गअी । "पारोती !" सरसोतीने अुसे बुलाकर कहा—"न जाने क्यो आज घरकी बहुत याद आ रही है । सालिग्रामके रथोत्सवके दिनोंमें ही जाना चाहिअे था । वहाँ गअे तीन वर्षसे अूपर हो गअे । वे मेरे खानेके लिअे चावल भेज देते हैं, मेरा अुनके घरका मुँह तक न

देखना अच्छी बात नही। अेक-दो दिनके लिअे मैं वहाँ हो आती हूँ। जबसे भैया गअे हैं, मुझे अुस घरकी याद सता रही है।"

तीन दिन तक जैसे-तैसे कर आँगनका काम पूरा हुआ। सूरकी घर-वालीने आँगनमें मिट्टी लगानेका काम किया। पर्याप्त सूख जानेके बाद सूरकी बहू, कालूकी घरवाली आदिने नरम पत्थरोंसे जमीनको रगड-रगडकर अच्छी तरहसे चिकनी और चमकीली बना दिया। आँगनका काम पूरा होते ही सरसोतीने सोचा अब अपना काम हो गया।

शाम होनेमें अभी पहर भरकी देरी थी कि सबने अपना काम खतम करके छोड दिया। देह टूटनेके कारण जरा अँगडाअी ले जम्हाअी आनेवाले मुँहके सामने चुटकी बजाती सरसोती नहानेके लिअे तालाबकी ओर गअी। नहाकर आते ही विशेष अवसरोपर पहननेकी अपनी रेशमी साडी पहनकर पारोतीको बुलाकर कहा— "तू क्यो-क्या की बात मुझसे न पूछ। भैयाका कहा सब काम मैंने कर दिया। वे रातको घर आअेंगे। अुनके आनेके बाद मैं यहाँसे घर जाना पसद नही करती। अुनके पुराणको सुननसे तो मेरे मनको शाति होनेवाली नही। अब मैं चली। घर हो आती हूँ, अेक बार। जितनी जल्दी हो सकेगा अुतनी जल्दी आअूँगी। अुससे पहले आनेकी जरूरत हो तो बुला भेजना।" यह कह वह नीचे अुतरी। यह सुन और देखकर पारोतीके होठ काँप अुठे। शरीरपर भी जरा रोमाच हो आया फिर भी अुसने हिम्मत करके पूछा ही—"सरसोती! मुझे लगता है तू अुनपर गुस्सा होकर जा रही है। अैसा क्रोध भला क्यो करती है? अेक बार स्त्री-जातिमें पैदा होनेके बाद फिर हमें किसीके घरमें क्या मिलेगा? तू अपने पतिके घरमें जाकर भी क्या सुख पाअेगी? वे अब आते ही होगे। अुनके आनेके बाद जाना। आनेके बाद भी अगर वे मँडवा और आँगनकी तैयारीके बारेमें नही कहेगे तो तू जब चाहे चली जाना।"

अिसका अुत्तर भी कुछ गरम ही मिला। सरसोतीने अपना दुखोद्वेगको रोकनेके लिअे अूपरके दाँतोंसे निचले होठको दबाके कहा—"तू चुप रह पारोती, मेरा किसीसे कोअी नाता नही। बापने जब व्याह कर दिया था तभी अिस घरका ऋणानुबध टूट गया था। भैयापर विश्वास करके मैं यहाँ आअी,

पर अुनके घरके दानोपर भार होनेके लिअे नहीं। मेरे पतिदेवके मरनेके वाद ससुरने कभी 'यहाँ न रहो' अैसा नहीं कहा। मेरे लिअे जो चावल यहाँ भेज रहे हैं वह मेरे कहनेसे नही भेजते। यही सोचकर में अपने भाअीके घर आअी कि—वच्चे नही, कोअी नही, क्यो किसके लिअे वहाँ पड़ी रहूँ। आखिर कुछ भी हो, अपना ही भाअी है! अेक ही खूनके कलेजेके दो टुकडे हैं। अिसके लिअे में कूडा वनी। हमें घरमें कुत्तोकी तरह काम करना चाहिअे, किन्तु घरमें यह मँडवा किसलिअे वना? आँगन क्यो तैयार हुआ? यह जानना हो तो जाकर पड़ोसके लोगोंसे पूछें! यही है अपनापन! यही है भाअी-वहनका नाता!" ये सब बाते आज सरसोनीके मुँहसे नदी-प्रवाहकी भाँति निकल पडी। अव अुसे रोककर कुछ कहनेका साहस पारोतीको भी नही हुआ। सरसोती हाथ हिलाती चल पडी। पारोती भी अुसके पीछे-पीछे चल दी। दोनो ननद-भौजाअी जैसे रोज वागमें पानी सींचने जाती थीं, वैसी ही चलीं। देखनेवालोने यही समझा होगा।

सामनेवाला खेत आया और गया। कुम्हडेकी वाडी आअी और चली गअी। धान रोपी क्यारियाँ आअी। अुन्हें तीन दिनसे पानी नहीं मिला था। पारोतीको अुन धानके पूँजोको देखकर यह वात याद आ गअी। अुसने कहा— "सरसोती! धानके पूँजे सव प्यासे है। अुनको परसो ही पानी देना चाहिअे था। कल भी नही दिया!"

सरसोतीने पारोतीकी वात सुनकर भी अनसुनी कर दी और पीछे मुडकर देखनेके पहले ही वोली—"मेरा कुल-गोत्र दूसरा है और अिस वागके मालिकका दूसरा। अुसके घरके पानीका ऋण जितने दिन था, अुतने दिन रही। अव तो निकल पडी हूँ!" वह चलती गअी। पारोती छायाकी तरह साथ थी। नालेका किनारा आया, नालेमें अुतार था। अुसका पानी समुद्रकी ओर भाग रहा था। पारोती देख रही थी। सरसोती अुस पानीमें अुतरी और क्षण भरमें अुस पार पहुँच भी गअी। पानी पार होनेपर क्षण भरके लिअे अुसने पीछे देखकर कहा— "पारोती! सारा ऋणानुवन्ध है देख! तू अैसे क्यो खडी है? घर जा!" और वह आगे वढ़ी।

पारोती पत्थर बनी खडी रही। आँसू बहानेवाली आँखें और आँसुओंसे भीगे गाल न होते तो सचमुच वह पत्थरकी मूर्ति ही जँचती। न जाने कितने समय तक वह अिर्द-गिर्दके वृक्षोंकी ओटमें खडी रही। आखिर अुसके मुँहसे निकला—"गअी!" फिर हाथमें चुभे अेक छोटेसे काँटेकी नोक नाखूनोंमे पकडकर खीचने लगी। अुसका मन शुद्ध आकाशकी तरह था। अेक ओर अस्ताचलपर पहुँचकर डूबनेवाले सूर्य और दूसरी ओर चमकनेवाले चाँद-तारे तथा अिस अंधकारसे घिरे प्रकाश और प्रकाशसे घिरे अंधकारमें, अुसका मन रेगिस्तानकी तरह फैला हुआ था।

पश्चिमके आकाशमें लालिमा आकर कालिमा छाने लगी। मनुष्योंके शरीर छायाकी तरह दीखने लगे। घरपर न लौटे हुअे अेक बछडेको ढूँढती हुअी कालूकी घरवाली पोम्मि वहाँसे गुजर रही थी। वह वृक्षोंमें अेकाकार खडी अपनी पारोतम्माको देखकर बोली—"मालकिन! क्या सोच रही हैं? सरसोतम्माको देखते खडी है? वे शायद घास लेने गअी होंगी!" पर वहाँ सुने कौन? पोम्मिको देखे कौन? पोम्मिको कुछ अचरज हुआ। वह जरा और आगे बढी। अुसके मनमें आया "शायद मालकिन नही है!" अुसने आगे जाकर देखा तो विश्वास हुआ कि मालकिन ही हैं! भीगे हुअे गाल चमकते दीख पडे। वह घबडाकर बोली—"मालकिन, क्या सोच रही हैं? यह दुख कैसा? यहाँ आकर आँसू बहाना! आपको क्या हुआ है? घर छोडकर अिस समय यहाँ . ?"

पारोतीका ध्यान भंग हुआ। अेकाअेक नीदमेंसे जागती-सी विमनस्क भावसे बोली—"आँ!" अब अुसको पिछली अेक-अेक घटना याद आने लगी, "देर हुअी, अब जाती हूँ घर" कहकर वह घरकी ओर लौटी। पीछे मुडकर देखा तो पोम्मी। "कौन, पोम्मी! कालूकी घरवाली? क्यो आअी यहाँ?"—अुससे पूछा।

"घरका अेक बछडा अभी नहीं लौटा। अुसे खोजते यहाँ आअी। न जाने आप यहाँ किस सोचमें खडी हैं, यह देखकर आपसे बाते की, पर आपको मेरी पहचान भी नही रही!"—पोम्मीने कहा।

"तूने क्या मुझसे बातें की?"

"हाँ मालकिन ! न जाने क्यों, जान पडता है आप किसी गहरे सोच-विचारमें लीन हैं ।"

आगे क्या बोलना चाहिये यह बेचारीको नही सूझा । अपने बछडेकी बात भी भूल गअी । फिर बोली—"घर चले मालकिन ! रात हो गअी है । चाँदनी भी देरसे फैलेगी । रास्तेमें कोअी सरकनेवाला जीव-जन्तु न हो ।"

"तू अपने घर जा । अपना बछडा खोज, मैं भी अब अपने घर जाती हूँ । हाँ, रात हो गअी !"

"बछडा अब क्या मिलेगा ? आअेगा रातको या कल सबेरे । चले, घर चले ।"—पोम्मीने कहा । पारोती घरकी ओर चली । अुसके पीछे-पीछे पोम्मी भी चली । पर मालकिन कुछ भी नही बोली और रैतानीने भी अुससे कोअी बात नही की । पारोतीको अपने घरके आँगनमें गअी देखकर पोम्मी अपने घर चली गअी ।

पारोती अपने घरमें पहुँच गअी । अुसने अपने पीछे-पीछे पोम्मीका आना-जाना भी न जाना । वह बेसुध-सी आअी और चिराग जलाकर हाथमें माला ले "ओं नमः शिवाय !" जपने बैठ गअी, किन्तु रोजकी तरह आज मन्त्र भी मुँहसे नहीं निकलता था । पहले क्षण भर मुँहसे कुछ निकला, फिर खाली होठ हिलते रहे । अँगुलियाँ मालाकी मणियाँ गिराती-अुठाती रहीं और होठोंका हिलना भी रुक गया, केवल मालाकी मणियाँ ही सरकती रहीं । अब वह कार्य भी रुक गया । मालाने मौन धारण कर लिया । वह कुछ क्षण वैसी ही जडवत् बैठी रही, लेकिन दीप-शिखापर स्थिर अुसकी आँखें आँसुओंकी माला गूँथनेमें सलग्न थीं । गाल भीग गअे थे ।

अँतालरामके घरके आँगनमें मटमैली चाँदनी छिटक रही थी । चाँदकी चाँदनीको बादलोंने मटियाली बना दिया था । चन्द्रमा आकाशमें अवकच्च पिअे भैंसके पडवेकी तरह आगे जाअें या न जाअें, शायद अिसी सोच-विचारमें पडा था । वह आकाशके तीसरे भागमें था । अगर अेक भाग आगे बढता तो बेचारा अपनी जगह पहुँच जाता । पर वह शायद विचार कर रहा था, कि अितनी दौड-धूप क्यों करे ? अगर यहीं खडा गाल बजाता रहे, तो किसीका क्या बिगडेगा ? मुझपर ही निर्भर रहकर तो दुनियाका कारो-

वार नहीं चलता। जिस दिन मैं आकाशमें नही आता, अुस दिन भी दुनियाका काम चलता है ? अिस ससारमें अगर सूर्य पुरुष है तो मैं स्त्री हूँ, विना पति के पत्नीका ससारका चलना कठिन है, पर विना पत्नीके कोअी हर्ज नही। शायद पारोतीका दुख देखकर चांद भी कुछ अैसा ही सोच रहा था !

रथके पहियोमें फँसे प्राणियोकी तरह चन्द्रमाकी यात्रा भी आगे वढी। हलके-हलके वादलोके पर्देमेंसे खिसककर वह धीरे-धीरे पश्चिमकी ओर छिपने जा रहा था। अुसका सारा काम अनजाने प्रवाहमें वहनेवाली लकडीकी तरह अत्यत जड भावसे हो रहा था। आखिर वह टिमटिमाता दीपक वन गया और फिर विना स्नेहके नानीके घरके दीपकी तरह वही आसमानमें वुझ गया।

दीपक वुझ गया ! पारोतीके सामनेवाला दीप भी विना तेलके वुझ गया। जली वातीका धुवाँ अुठनेपर भी अुसकी वदवू पारोतीकी नाक तक नही पहुँची। वह अेकाअेक नीदसे जगी-सी "ओह ! चिराग वुझ गया !" वोलकर वही वैठ गअी। दीप वुझ गया। तेल-वाती डालकर अुसे फिर जलाना चाहिअे, रातका भोजन पकाना चाहिअे आदि अेक भी वात अुसे नही सूझी। "वुझा तो वुझ जाअे, वाहर चांदनी तो है!"—कहकर वह वैसे ही वैठी रही। आकाशका वह दीप घरके दीपसे पहले ही वुझ चुका है, यह अुसके मनमें ही नही आया। वह वैसी ही अुदास सो गअी। सोते समय दीवटके लगनेपर भी अुसे जरा दूर अुठाकर रखनेका विचार नही कर सकी। अुसी समय वाहरके अलीखेटमें अैतालरामकी आवाज सुनाअी दी। "ओ शीन ! तव तो सुवह आवोगे ना ? देखो हमारे घरमें अेक भी आदमी नही हैं, यह तो तुम जानते ही हो। घरमें है अेक घरवाली और अेक वहिन हैं। अुनसे भला कितना काम होगा ? अिसीलिअे मैंने कहा, कि अगले आठ दिन तक अपनेको ही हमारे घरका मालिक समझकर तुम्हें सव कुछ करना है।" वे अपने पड़ोसी सीन मैय्याको वुलाकर यह कह रहे थे। दोनो साथ-साथ आअे थे। अैतालरामको घरके पास छोडकर सीन मैय्या अपने घर जा रहा था। अैतालराम तालावपर गअे, पैर धोअे। फिर दूर चले गअे। सीन मय्याको वुलाकर फिर अगले दिनके वारेमें सव वाते कहने लगे और सीनने भी जाते-जाते कहा—"हाँ भाअी ! मुझे क्या तुम्हारे घर आनेमें कोअी

"पर अैताल, मैं पूछता हूँ आपको अितनी अुम्र बीत जानेपर व्याहकी कैसे सूझी ? जब पहली बीबीसे बच्चे नही हुअे तभी ना......?"

"अरे मेरी डाढी-मूंछ क्या अभी सफ़ेद हुअी है ?" बीचमें ही बात काटकर अैतालजीने पूछा, "अब भी मैं अपने दांतोंसे गन्ना चूसता हूँ। वस्तुत मेरी कोअी अिच्छा नहीं थी, पर हमारी सरमोती चार-पांच सालसे किसी बच्चेको गोद लेनेका आग्रह कर रही है। तुम्ही बताओ किसीके घरका जंगली पेड लाकर अपने घरका चन्दनका पेड कैसे बनाया जा सकता है ? कुछ भी हो जगली पेड तो जगली ही है, और बागका पेड बागका ही। मरते समय मुँहमें गगाजल डालनेवाला अपना बच्चा हो तो दूसरी बात। गोद लिअे बच्चेसे मिलनेवाला स्वर्ग अैसा-वैसा ही होता है। यही सब सोचकर । हाँ, अभी अुसकी अुम्र चालीस-बयालीससे ज्यादा नही हैं, अिसीलिअे "

"अैतालजी! आप तो पागल है, पागल! हमारे हँदकट्टेके हनुमत अैतालके तीसरे व्याहके समय अुनकी अुम्र पचपन सालकी थी! पर तीसरी बीबीसे तीन बच्चे हैं! अभी-अभी तो अेक-दो अगले दांत गिरे हैं। नही तो दांतोंमे चावलका बोरा अुठानेकी ताकत थी अुस बूढेमें।"

"हनुमत अैताल भी हमारे ही खानदानके है। पर मैं क्या अुनके समान हो सकता हूँ ? हनुमत अैताल जितना खाते हैं, अुसमे आधा खाना भी मुझसे नही खाया जाता।"

"पर अैतालजी! आपकी पारोती अिसके लिअे कैसे तैयार हुअी ?"

"अरे शीन! हमारे घरकी बात ही अैसी है। तू नही जान सकता। हमारे घरमें अेक मालिक है। पति अेक कहता है पत्नी दूसरा करती है, यह हमारे घरमें नही चलता। पदुमकेरेके परमैयाकी तरह मियाँ-बीवीके दिनभर लड़ने-भिड़ने और घरकी बातोंकी डुग्गी पीटनेका रिवाज हमारे यहाँ नहीं है। अिन सब बातोंमें, मैं कहता हूँ, हमारी पारोती अिस युगकी सीता है! पर भगवानने अुसके जीवनमें सतान-सुख नही लिखा, यही अेक दुख है, नही तो मुझे किस बातकी कमी है, तू ही बता कल तू ही देखेगा लडकीके घर आनेपर वह अपनी लडकीसे भी अधिक प्यारसे अुसका सब कुछ करती है या नहीं!"

"अच्छा चले भाअी ! नही तो हमारी बातोंमें ही सुबह हो जाअेगी। मुझे अब याद आया कल सुबह धानके खेतोंमें पानी देना है। आज तुम्हारी दुम पकडकर सब भूल गया। सुबह अुठकर नही सोचूँगा तो ठीक नही होगा।"

"शीन ! देख भाअी, खेतमें पानी डालनेके बहाने कल रह न जाना। मुझे केवल तेरा ही भरोसा है ! ढेरो काम हैं।"

"भाअी, तुम अुसकी चिन्ता मत करो। मै सुबह सूर्योदयके साथ ही तुम्हारे दरवाजेपर दिखाअी दूंगा। तुम रातको ही सोच रखना, किस-किसको बुलाना है। कुदापुरसे क्या-क्या लाना है ? सब याद कर लेना। सब कुछ कर देंगे। घबराओ नही।"—कहते हुअे शीनमय्या अपने घरकी ओर चल दिया, और अैतालराम तालाबके किनारेपर ही सध्यावदन करने बैठ गअे।

आँगनमें खडी-खडी पारोती यह सब सुन रही थी। अैतालकी बातोको सुनकर अेक नया ससार अुसकी आँखोंके सामने खिच गया। अुसने पहले सोचा—ये दोनो किसी दूसरेका रिश्ता ठीक कर आपसमें बात कर रहे हैं। पर आखिरमें वह समझ गअी, कि मेरे लिअे अेक सौत आ रही है।

वह मनके सकल्प-विकल्पोंमें डूबने-अुतराने लगी। फिर, यह लडकी कोटी है या शिवल्लीकी यह नया विचार अुसके मनमें आया, "अिनको क्या कोअी शुद्ध कोटीकी लडकी नही मिलती थी ? वैदिक होकर न करने योग्य काम ये क्यो कर रहे हैं ?" वह अिसी विचारमें झूलती रही। "क्या अैसा करना अुचित होगा ?" अिसपरसे अुसने सोचा—"क्या कहा अुन्होंनें 'सरसोती रातभरमें सब कुछ कर डालेगी !' अरेरे ! मैंने सरसोतीकी बात मानकर न अुडद सूखनेके लिअे डाले न चूडेके लिअे धान निकाला !" वह बहुत चिन्तित होने लगी। अितनेमें सरसोतीका घर छोडकर चला जाना स्मरण हो आया। "घरमें जो यह नया झमेला खडा हुआ है, भला अुनसे कैसे कहूँगी ?" यह और अेक नअी समस्या अुसके सामने आअी। वह घबराअी हुअी आँगनमें अेक खम्भेकी तरह खडी थी, पर अुसका मन आषाढ़के समुद्रकी तरह अशात हो अुठा था। सचमुच अुसके कानोंने महसूस किया कि

आषाढ मासकी अमावस्याके ज्वारकी तरह समुद्र अुछल रहा है। अैतालराम अपना सन्ध्या-जाप समाप्त कर अुसके सामने आ खड़े हुअे। पर अुसे होश कहाँ ?

वे भी जरा विचलितसे हुअे, किन्तु कुछ ही क्षणमें अपने प्रसन्न हृदयको मजबूत करके पूछा–"कौन, पारोती ? मालूम होता है हमारी सब बातें सुननेको खड़ी थी ! औरतोंका काम ही है ! पुरुष कब क्या बोलते हैं, यह सब कान लगाकर सुनना ही औरतोंका धर्म है ! कब जायगी तेरी यह छिपकली-सी बुद्धि !" अिस प्रकार अुसे डरा-धमकाकर वे आगे बढे कि "अरे !" कहकर अुछल पड़े। अुनको लगा जैसे पैरके नीचे साँप है। घबराकर अुन्होंने पैर अुठाया तो दूसरे पैरने भी वही महसूस किया। वे हँसे। "अरे, हमारा आँगन अितना अच्छा, अितना चिकना बन गया है ! पता नही किन पत्तोंसे मला गया है। जमीन अच्छी ठंडी हो गअी।" अिस प्रकार प्रसन्न मनसे वे घरके अन्दर गअे।

आँगनमें यह सब काम देख अुनके मनमें नया अुत्साह आया और अन्दर जाकर कहा—"सरसोती, तू सचमुच देवी है। आँगन बड़ा अच्छा बना है !" फिर सोनेके लिअे चटाअी बिछा दी। अुसपर तकिया रखते हुअे अैताल बोले—"सरसोती, आँगन बनानेमें पता नही तुझे कितना कष्ट हुआ होगा। जाने दे तू तो अब नींदमें होगी ! सो जा !" कहते अपने आप अुसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने लगे।

सरसोतीकी बात तो अुन्होंने कही, पर बेचारे नही जानते थे कि वह अब घरमें नही है। पारोतीके मनमें आया, "अब मुझे सब बातें कहनी चाहिअे।" पति जहाँ सोअे थे वह वहाँ आअी। अुसकी आहट पाकर अैतालराम 'कौन है तू ! बरामदेपर अेक चिराग भी नही रखा गया तुझसे।"–कहकर गरमाअे। यह सुनकर बेचारी पारोती दौड़कर चिराग लाने अन्दर जाने लगी, तो अैतालराम बोले— "जब मैं चटाअी बिछाकर सो गया, तब चिरागका क्या काम ? तुम्हारे लिअे तो सब कुछ भोजनके समयका अचार ही है।"

अुदास हो पारोती लौटी। अुसने चिराग अेक ओर रखा। बेचारी वहीं अेक खंभेसे सटकर आँसू बहाने लगी। "ओह ! मालूम होता है, मैंने

अभी जो कुछ कहा, वह तेरे मनमें चुभ गया। पुरुषोंकी बाते छिपकर सुनना तेरी भूल नही है, पर तुझे कुछ कहना मेरी भूल है। अिस घरमें अेक कहे तो कम होता है, दो कहे तो ज्यादा। अब क्या करूँ मै ?"— कहते-कहते अैताल गरजे। पारोतीने कहा— "मैने अिसके लिअे कुछ नही कहा !"

"तू किसीके लिअे कुछ भी नही कहती मेरी देवी ! रास्ता चलकर थक गया हूँ। आँखोपर नींद लदी है और सुबह जल्दी भी अुठना है, हजारो काम है, पर तुझे क्या ? "

अैतालरामकी अिन अूलजलूल बातोसे पारोती भी तन गअी। अुसे बिना कारण पतिका अिस तरह बोलना पसद नही आया। अुसने भी जरा तेज आवाजमें कहा–"मेरा कुछ नही जाता। तुमने अपनी बहनका नाम लिया और पापड-मुँगोडीकी बात कही अिसीलिअे कुछ कहना चाहा !"

वह अुमी तार-स्वरमें बोलने लगे— "हमसे नही होगा यही न ? जाने दो। कहीसे कराके लाअेंगे, जा सो जा !"

"पता नही तुम हमें क्या समझ रहे हो। अिसीलिअे यह सब बिना सिर-पैरकी बकवास हो रही है। आज दिनभर तुम्हारे आँगनका काम करके शाम होते-होते वह अपनी ससुराल चली गअी। 'जरूरत हो तो बुला लेना' कहकर गअी है !" यह सोचकर कि यहाँ रहनेसे दूसरा महाभारत होगा। पारोती घरके अन्दर चली गअी।

अब अैतालराम घबडाअे। अुन्होने सोचा घरमें कोअी आँधी अुठी होगी जिससे चिढकर सरसोती चली गअी। बिना अुमके कलका कोअी काम नही होगा, यह भी वे जानते थे। घबडाकर वे अपनी चटाअीपर अुठ बैठे और अपनी पत्नीको बुलाया—"ओ जी ! मैने कहा जरा " पर वह नही आअी। "तुम सबको बाँधकर मैं कैसे ब्याह करूँ ?" कहते हुअे स्वय अुठकर पारोतीके पास गअे। "यो ही आधी बात कहकर मुझे तग मत कर ! तेरे 'द' कहनेपर दही भात समझनेकी बुद्धि मुझमें नही है। वह क्यो गअी ? क्या हुआ अुसको ? घरमें क्या तू लडी ? मेरे अेक दिन घरमें न रहनेपर घरकी क्या हालत होती है, अिसका पता लग गया !"

"मैंने कोअी झगडा-वगडा नही किया। . चाहे कुछ भी हो, दोषी तो हमी हैं। तुम अपनेमें भले, पापी मैं। हुआ न सब।"

"पर हुआ क्या, यह कहेगी या नही?"

"हुआ क्या? कुछ भी नहीं।"—पारोतीने कहा, "तुमने तो मँडवा बनाया। आँगन बनानेकी बात कही। पर यह सब क्यो? अिसके सम्बन्धमें कुछ भी नही कहा। घरमें गवोकी तरह काम करनेके लिअे हैं हम। हमें क्यो-किसलिअे कहने-सुननेकी आवश्यकता नहीं? अिन्ही सब बातोसे नाराज होकर वह चली गअी। जाते समय अैसे गअी कि आनेका लक्षण नहीं दीखता। तीन दिन-रात वह नहीं सोअी, दिन-रात आँगनका काम। कहती थी मैं तो घरमें कूडा हूँ। अिस घरमें मेरा कुछ भी अधिकार नही।" कहकर पारोती चली गअी।

बस बात समाप्त हुअी। अब पारोतीने सरसोतीका रोना आगे बढाया। पर अैतालरामको अुस ओर ध्यान देनेका समय कहाँ? अुस क्षण क्या करना चाहिअे यही अुनकी समझमें नही आया। अुनको अैसा लगा मानों बिना बहनके अपना सारा ससार टूट जाअेगा। अगर सरसोती घर छोडकर चली गअी, अैसा गाँवके लोगोको पता चला, तो गजब हो जाअेगा।'

बार-बार मनमें यही विचार अुमड रहा था, कि अुधर धीरे-धीरे पारोतीका सिसकना भी कानोमें आया। "तू भी अैसा पचवाद्य करने लगी, तो मैं क्या करूँगा। अुसके जानेका दुख मुझे क्या कम है, अिसीलिअे क्या तू भी रो रही है?"—कहकर अैताल अपनी चटाअीपर आ बैठे। वहाँपर भी बैठनेकी अिच्छा नहीं हुअी। "आग लगे अिस ससारको।" कहकर घरके पिछवाडे गअे। अधेरेमें ही कुछ नारियलके डठलोको अिकट्ठा कर अुसकी मशाल बाँधने लगे। जब मशाल बाँधकर तैयार हो गअी तो पारोतीके पास आकर, "मैं सरसोतीके पास जाता हूँ। कृपाकर तब तकके लिअे तो तू अपना बाजा बद कर। सब मिलकर मेरी नाक काटनेका काम मत करो।" यह कह अुसी रातको घरसे निकल पडे।

अैतालराम कदम बढाअे चले जा रहे थे। वे मशाल पकडे हाथको जोर-जोरसे हिलाते हुअे आधा दौडते, आधा चलते अपनी बहनके घरका रास्ता नाप रहे थे।

पतिके आधी रातको घर छोडकर निकलनेके बाद पारोती अपना दुख दबाकर बैठी रही। अब ये जाकर क्या कहेंगे? सरसोती क्या जवाब देगी? अगर गरम हुअे, और अुसने भी जिद्द पकड ली तो अिस जनमका सम्बन्ध टूटा! पता नही कैसा क्या होगा।.. ..यही सोचते-सोचते कुछ समय बैठी रही। बैठे-बैठे अुसका मन अुकता गया। रातके समय अिस प्रकार अकेले बैठे रहना भी आसान नही था।

"अब मैं क्या कर सकती हूँ! जो भगवानके मनमें है, वही होगा!" मनको अिस वैराग्यसे समझाकर चिराग गुलकर वही चटाअीपर लेट गअी। बहुत समय तक वैसे ही करवटें बदलती रही, फिर भी मुअी नीद नही आअी।

अुधर अैतालराम खेतपर-खेत पार करते हुअे चले जा रहे थे। दो-अेक घंटेमें तीन कोस चले गअे। रास्तेभर भूँकनेवाले कुत्तोको कोसते, धमकाते बाकूर गाँवमें जा वहाँसे पहाड चढकर जगलमें घुसे और आखिर सरसोतीके घरके पास पहुँचे। अुनके पैरकी आहट पा कुत्तोने जोर-जोरसे भूँकना शुरू किया। "अिन कुत्तोके सिरपर मौत नाच रही है!" कह कोसते हुअे, जहाँ-तहाँके पत्थर अुठा अुनको डराते-धमकाते आखिर द्वारपर पहुँच घरकी साँकल खटखटाअी। घरके किसी आदमीने दरवाजा खोल दिया। "कौन आअे? क्यो आअे?" समझनेके लिअे घरवालोकी अेक खासी सभा जम गअी। अैतालरामने अपनी बातोमें नमक-मिर्च लगाकर चिकनी-चुपडी बातें शुरू की। "अपने ब्याहका न्योता देने मुझे अिस रातको यहाँ आना पडा। मुझे पूरा विश्वास है, आप सब आअेंगे ही।"

धीरे-धीरे सबसे छुट्टी पा अकेलेमें सरसोतीसे रो-धोकर अुसे बहका-मनाकर अुसके साथ घरके लिअे रातको ही रास्ता पकडा। रास्तेभर अैताल-रामने मानो बोलनेका ठेका ही ले लिया था और सरसोतीको अेक बार भी मुँह खोलनेकी जरूरत ही नही पडी। अब तक किसीसे कोअी बात किअे

बिना लडकीवालोंसे बातें करनेके लिअे जानेमें जो भूल-चूक हुअी थी, जो अपराध हुआ था, अुसका समाधान करनेको बहुत कुछ अेक महाभारत-सा रचकर अुन्होंने अपनी बहनको समझाया। अुसमेंसे कितना सरसोतीके पल्ले पडा, कितना नही, वही जाने और अुसका भगवान। किन्तु अेक समाधान अुसे मिला और वह था "अेक बार तो भैयाका घमण्ड मैंने चूर कर दिया !"

घरके पास पहुँचने तक सूरके घरका मुर्गा बोल अुठा। सरसोतीने पीछे फिरकर देखा, तो आकाशमें पूरबकी ओर जरा-जरा सोना फूट रहा था। दोनोंने तालाबमें आकर हाथ-पैर धो लिअे। अैतालने कहा—"आज चलते-चलते थक गया, क्षणभर नींद आती तो अच्छा होता।" जवाबमें बहनने "तुम सो जाओ, मैं सब देखती हूँ ?"—कहकर भाअीको निश्चिन्त कर दिया।

"अिस अँधेरेमें तू क्या करेगी ?"—भाअीने पूछा।

"अँधेरा कहाँ अब ? मुर्गा तो बोला, सुना नही ? और देखो वहाँ पूरबकी ओर सोना फैल रहा है आकाशमें। घरमें क्या-क्या काम है, यह देखती हूँ !"

पारोनी अेकाअेक जाग पडी। सरसोतीकी आवाज सुनकर अुसका हृदय-सागर हजारों गुना अधिक खुशीसे लहराने लगा। "आखिर भगवानने हाथ नही छोडा !" अुसने मन-ही-मन भगवानको प्रणाम किया और जल्दी-जल्दी बिछौनेसे अुठकर अपनी सरसोतीका स्वागत करने बाहर आअी। पर, पहले दिनकी रातवाली बात याद आ गअी। पतिने कहा था—"पुरुषोंकी बातें नही सुननी चाहिअे !" बेचारी झटपट फिर अपने बिस्तरेपर जाकर लेट गअी। सरसोतीने वहाँ जाकर जब, "भाभी अब तक सोअी है ?"—पूछा, तब फिर जगी।

: ६ :

अिन पन्द्रह दिनोंमें अैतालरामका घर धर्मशाला बन गया था। बाजार, पूरी हाट! आने-जानेवालोंका हंगामा। खाकर डकार जानेवालोंका मजा। स्त्रियोंका आमोद-प्रमोद। बच्चोंका शोरगुल। अिन सबसे कान फूटे जाते थे। अिस समारंभके लिअे घरका मालिक तो शीन मय्या ही था। जैसा अुसने अुस दिन रातको वचन दिया था सुबह ही अैतालके घरपर आ गया था। शीन मय्याकी आवाजके बारेमें कहते हैं कि अेक बार अुसने अपना गला खोला कि "गर्भ निर्भेद हुआ!" अुसकी धर्मपत्नी भी अुसके साथ पधारी थीं। वे धीरे भी बोलतीं तो भी तीन सौ गज तक सुनाअी देता। अुनकी तो समुद्रके गर्जनकी तरह बोलनेकी आदत थी!

अैताल दुलहा है तो क्या हुआ? ब्याह होना था चार ही दिन बाद। अब हितू-मित्रोंके घर जाकर न्योता कौन देगा? दूरकी जगहोंमें सीन अथवा किसीको भेज सकते थे, किन्तु जो लोग निकटतम हैं, जिनके घर आअे दिन जजमानी करने जाना पडता है, वहाँ भला दूसरोंको कैसे भेजें? दुलहा होनेपर भी जाना तो पडेगा ही। घरमें दूसरा कोअी पुरुष नहीं था, अिसलिअे शीन मय्याको ही मालिककी गद्दीपर बैठा दिया गया था, परन्तु बाहर वह कैसे मालिकी चलाअे? अपने अूपर आनेवाला दायित्व तो स्वयं ही निभाना पडेगा। यह बात सच है कि आँगन और मँडवेकी सजावटको देख-कर कुछ लोगोंके मनमें विवाहका शक हुआ था, परन्तु अुस रातके शीन मय्या और अैतालरामके बीचकी बातचीतने तो सुबह होते-होते "अैतालका ब्याह है!" यह सूचना हवामें मिलकर पश्चिमसे पूर्व तक पूरे गाँवमें फैला दी। आज अैतालरामने हाथमें मंत्राक्षत लेकर अैतालरामके अपने अिष्ट-मित्रोंके घरके दरवाजेपर पहुँचते ही अुनके कुछ कहनेके पहले वे कहने लगते—

"अच्छा जरूर आअेंगे ! पर समय क्या है ?" अिस प्रकार केवल समय बतलाना ही अैतालरामके हिस्सेमें रह गया था। आखिर अैतालराम अपना कर्तव्य पालन करनेके लिअे निकले। जहां जाते वहां अुनका अिसी प्रकार स्वागत होता। यद्यपि वहां अधिक गप मारनेकी जरूरत नही थी तो भी अपना ही शक स्वयं दूर करते हुअे कहते— "क्या करें मेरी कोअी अिच्छा नही थी। पर कहते है 'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति' अिसीलिअे मेरी बहन सरसोतीने आग्रह किया। पारोती भी जिद पकड़े थी। मजबूर होकर .. "वगैरह-वगैरह खूब नमक-मिर्च लगा-लगाकर अपने व्याहका कारण बतलाते। पूरबके पडुमुन्नूरवाले अत्यंत दूर होनेसे वे मानो नजदीकके ही हैं, अैसे भावसे कहते—"वे भी कोटि ब्राह्मण ही हैं। शिवल्लि नही हैं। हां, शिवल्लिके गांवमें, अुनके समाजमें रहते हैं, बस, अितना ही। अुनके घर आपने नहीं देखे। अितने धर्म-कर्म और अितनी शुचिताका आचार-विचार है कि क्या कहे। और भगवानने भी खूब दिया है। नारियल, होन्नेके पेड, आम, कटहल, काजू सब कुछ भरपूर है। किसी बातकी कमी नहीं ! देखनेको पूरबका पडुमुन्नूर ! पर हर प्रकारकी सहूलियत।"

अनेक घरोंमें जहां वे न्योता देने जाते, कुछ बूढे भी मिलनेवाले थे। अुन्हे पहले व्याहका स्मरण भी था। वे कहते—"अरे रामू ! तेरे बाप कोदडरामने तो तेरा पहला व्याह जेठमें रोपाअीके दिनोंमें किया था। अुस वर्षकी झडियोंने तो हमें व्याहमें जाने ही नही दिया, और अब तू हम बूढ़ोंको दूर रख बडपांडेश्वर और पडुमुन्नूर जा निकला !"

"छी छी !"—अैतालराम कहते, "आपको क्या दूर है ! यहां नावमें बैठे तो अेक ही हवामें नाव तोन्से पहुँचती है। वहांसे केवल दो-चार खेत पार किअे कि गांव आया। दूर-दूरके बहानेसे. . ।" आदि आग्रहोपचार चलते, और बडे-बूढे भी "हां, नावका प्रबन्ध करोगे न !" पूछकर न्योता स्वीकार कर लेते।

अुस दिन सुबहसे शामतक न्योता देते-दिवाते पूरी भू-प्रदक्षिणा कर सूर्यास्तके समय वे घर लौटे। अुनके घरसे निकलते ही तीन मय्या चार-छह खाली बोरे कंधोंपर डालकर कुंदापुर पहुँच गया। कुंदापुरमें शनिवारकी

हाटकर शकरकंद, अिमली, मिर्च, ममाला वगैरह सामान लेकर आधी रातके समयतक हँगारकट्टे वदरगाहपर पहुँचा। वहाँसे सब सामान नावपर लादकर सुवह ही कोडि आ पहुँचे। कोडिके किनारेपर नाव लगते ही जोर-शोरसे "ओ सूर! अरे कालू!"—कहकर अुन्होंने अपने-अपने घरोंमें सोअे आसामियोंको वेगारमें पकडकर सब सामान मंडवेमें पहुँचाया और तबतक आकाशमें प्रकाश-रेखा दीखने लगी। "अब क्या सोनेका समय है? क्षण भर सोनेसे भी क्या मिलेगा?" —कहकर शीनमय्याने घरवालोंको जगाकर अपनी गप्पाष्टक शुरू कर दी। पहिले सबके सामने बाजारका वर्णन हुआ। अुसके बाद मैंने अैसी-अैसी चीजें खरीदी जो बाजारमें अेक-अेक रुपया देनेपर भी नही मिलती थी और मैंने अुन्हे आठ-आठ आनेमें खरीदी—कहकर अुन चीजोंका प्रदर्शन किया। अुसके बाद कुंदापुरमें जिस गाडीपर सामान लादा गया, अुस गाडी और अुसके बैलोंका वर्णन हुआ। फिर हँगारकट्टे बन्दरगाह पर अेक भी नाव नही थी, अुसने कैसे चीख-चिल्लाकर नाववालोंको बुलाया, अिसका साभिनय वृत्तान्त कह सुनाया। अुसके बाद "कहाँ-कहाँ न्योता दे आअे। मुझे कहाँ जाना होगा?" आदि पूछकर सुबह जाकर दोपहरको खानेके समयमें मैं आ जाअूँगा, कहकर जानेकी तैयारीमें लग गअे।

अपनी नींद खोअे शीन मय्याने सरसोतीको जगाकर कहा—"सर-सोतम्मा! पापड, मुंगोडी आदिकी याद है न आपको? कमसे कम हमें अेक हजार पापड चाहिअे। अक्सर लडकेवालोंका खर्च कम होता है। अेक समा-वर्तन और अेक आरती-अक्षत अिन दो भोजोंमें भी कमसे कम छह-सात सौ पत्तले पडती हैं। ब्याह दूर हुआ है अिस विचारसे वहाँ तक कोअी नही जाअेगा, पर घर तक तो आअेंगे ही। दो बडे भोज और बाकी रोजके भोजोंमें भी अैतालके सबवी और जजमान अवश्य आअेंगे।"

सरसोतम्माने "चूडा और अुडदका आटा तैयार है, अब पापड बेलनेमें क्या देर लगेगी? वह तो अेक दिनमें कर डालूँगी।"—कहकर आश्वासन दिया।

शीन मय्याने "तुम्हारी बहन तो ।"

"शीन मय्या! भैयासे जरा पूछो तो गहनोंका क्या किया? अगर हमने पूछा तो कह देंगे— औरतोंको क्या पडी है? हर बातमें वे अपनी ही

चलाना चाहती हैं। तो भी लडकीवाले चाहे जितने गहने दें, हमें तो हाथके कगन, गलेके मगलसूत्रके साथ अेक हार, और करनफूल, अितना तो ले ही जाना चाहिअे, नही तो देखने और सुननेवाले क्या कहेगे ?" यह कहकर सरमोतीनें शीनमय्यामे अपनी वकालत करनेको कहा।

"हाँ !" कह शीनमय्याने भी अच्छी तरह वकालत प्रारम्भ की—"यह सब बातें हम पुरुषोंके दिमागमें जल्दी नहीं आती। अँतालजी ! खाली हाथ जाना हमारी मान-मर्यादाके लिअे शोभा नही देगा ! कमसे कम, जैसा कि सरमोती कहती है, अुतने गहने तो ले ही जाना चाहिअे ! अिस सबघमें क्या सोचा तुमने ?"

"अरे ! मै क्या जैसा सरसोती सोचती है अुतना बुद्धू थोडे ही हूँ ? कल जब न्यौता देने गया था, अपने गुडा सोनारको बुलाकर सोना दिलाकर आया। अुसने सब गहने परसो शाम तक ला देनेका वायदा किया है !" कहते हुअे अँतालरामने अपनी मुस्तैदीका परिचय दिया।

"हमारे भैया तो घरकी औरतोको कूडा समझते है, कूडा ! वह जो कुछ करेगे-कहेगे औरतोंसे छिपाकर ही !" सरसोतीने भाअीपर ताना कसा।

"तू अैसा न कह सरसोती ! मै तुझसे छिपाकर भला कुछ कर सकता हूँ ! पर क्या करूँ ? कहने-सुननेके लिअे समय ही कहाँ था ? तुझको लाया और तुरन्त नहाकर न्योता देने निकल पडा। अब तू ही बता अिन सब बातोके लिअे समय कहाँ था ? तुझे तो कौन बात मुख्य है, कौन गौण, यह सोचना नहीं आता, अिसके लिअे मै क्या करूँ ?"

"अच्छा जाने दो, पर अिसका क्या किया तुमने ?"—सरसोतीने कहा।

"किसका ?"

"तेरी पारोती जाअेगी या नही तेरे ब्याहमें ?"

अँतालरामने कहा—"कैसी बाते करती है तू सरसोती ! तू समझती है कि मै अुसे प्यार नहीं करता, अिसलिअे मै यह दूसरा ब्याह कर रहा हूँ ! अगर भगवानने कही अेक बच्चा दिया, तो मरनेके बाद अुसको भी अेक पिंड मिलेगा और मुझे भी, बस अिसी आशासे मै ब्याह कर रहा हूँ ! मैंने..."

"अरे ! मैं वैसा नही कहती ! अगर अुसको व्याहमें जाना है, तो क्या वह अैसी ही ल्काकी पार्वती-सी जाअेगी ? अुसके हाथ-कानोमें भी कुछ होना चाहिअे ना। आखिर व्याहके अुपलक्ष्यमें अुसके लिअे कुछ गहने बनवाओगे या नही ? बोलो तो, अिन पन्द्रह वर्षोंमें तुमने अुसको क्या दिया है ? व्याहमें जानेवाली तुम्हारी पहली पत्नीको अिस प्रकार देखकर लोग क्या कहेंगे ? अिसका भी विचार किया है तुमने ?"

"सरसोती, अुसको गहने नही पहनाने चाहिअे, यह तो मैंने स्वप्नमें भी नही सोचा। किन्तु अब अिसके लिअे समय कहाँ है ? व्याहके अेक-दो दिन रह गअे हैं, तू ही बता अब क्या किया-कराया जा सकता है ? व्याहके बाद बनवाअेंगे गहने . . ।"

"यह ठीक है ! . . यह ठीक है ! खास करके दुलहिनको पहनानेके गहने बनवा लिअे गअे तो बाकी तो जब चाहे तब बनवाअे जा सकते हैं !" —शीन मय्याने कहा।

"और चाहे जब बनवाअे जायँ या न भी बनवाअे जायँ तो भी अुसका कुछ नही। भाभीने अब तक कभी गहनोंके लिअे मुँह नही खोला। आज भी अुनने कुछ नहीं कहा। पर हमें तो सोचना चाहिअे ! लोग क्या कहेंगे ?"

"अिसमें क्या है सरसोती ! विवाहके दिनोंके लिअे होल्लके घरसे जितने कहो अुतने गहने ले आ सकता हूँ !"

"हूँ, नअे गहने कौन हैं और पुराने कौन यह जाननेके लिअे लोगोंके आँखें नही है क्या !"

अैतालराम सरसोतीके सामने वाद-विवादमें भला क्या जीतते। अपनी नअी ससुरालमें शान दिखानेके अतिरिक्त और किसी काममें कुछ खर्च करनेको वे तैयार नहीं थे। वे मन ही मन जानते थे कि पारोतीके लिअे गहनोंकी कोअी कीमत नही। अुसके लिअे गहने मिले तो भी खुशी, नही मिले तो भी रंज नही। पर यह कहनेका अुनमें साहस नहीं था। क्योंकि वे जानते थे कि अगर सरसोतीने हाथ हटा लिया, तो यह खेल आधा भी नही हो पाअेगा। अिसीलिअे अुसने शीन मय्याकी ओर देखा। शीन मय्याको अैसी

बातोंमें बडा रस आता था। वह अपनी वकालत दिखलानेके लिअे कहने लगा—"अैतालजी ! अैसा करो ! आज ही होल्लेके घर जाकर जो चाहे सो गहने ले आओ और गुडा सोनारको देकर अुससे कहो कि अुन्हें अच्छी तरह चमका दे।"

"मँगनीके गहने कल तो वापिस करने ही होंगे ?"—सरसोतीने पूछा।

शीन मय्याने झट जवाब दिया—"व्याहके बाद तो वर्षा शुरू हो जाअेगी, अुस समय गुडा सोनारके पास कोअी काम-धाम नहीं होता, वह बेकार ही रहता है। तब थोडी-सी मजदूरी देकर नअे गहने पिटवा लेंगे और क्या ? मैंने जो कहा, वह व्याहके दो दिन रह जानेके कारण ही, बस !"

"अिन सियार पंडितोंके सामने बोलनेमें मैं क्या टिकूँगी !" कहकर वह बेचारी मौन हो गअी।

सरसोती जब अपने कामके लिअे अन्दर चली गअी, तो शीन मय्याने कहा—"अैतालजी, अब सवेरा हो गया, चलिअे आमके[१] पत्तोंकी सेवा करें। मुँह हाथ धोकर अेक बार ठंडा-ठंडा मूँगका[२] रस पी लिया तो दिन भर चाहे जितना काम लीजिअे।"

अैतालरामने हँसते हुअे कहा—"शीना ! कुछ भी हो, व्याहके चार दिन तू मुझे छोडकर, कहीं मत जा। मेरी छाया बन जा, छाया। तुझे मूँगका रस मिले, मूँगका रस पी ले, दही-चूडा मिले तो वही खा ले।"

सरसोतीका मुँह बन्द कर अुसपर आनेवाले आक्षेपोंको दूर करनेसे अैताल मैयापर बहुत खुश था। अुसने व्याहके दिनोंमें अुसीको अपने मंत्रिपदके लिअे सबसे योग्य समझा।

दही-चूडेका नाम सुनते ही शीन मय्या अुछल पडा। शीन मय्याने कहा—"रातको भोजन नहीं हुआ, अब दही-चूडा ही होने दो। पानी पीकर रात बिताअी है, अब थोडा दही-चूडा खाकर पेट भर ले, फिर दम-

---

१ दक्षिणमें ब्राह्मण आम या काजूके पत्तोंसे दातून करते हैं।

२ ब्राह्मणोंके घर कलेवाके लिअे भिगोअे हुअे कच्चे मूँगको पीसकर अुसमें गुड़ और छोटी अिलायची डालकर शरबत बनाते हैं।

ग्यारह बजे मूंगका रस पी लेंगे। गर्मीके दिनोंमें मूंगका रस तो अमृतसे भी अधिक मधुर होता है।" और वह अुठकर मुखमार्जनके लिअे चल पडा।

तीन दिन तक दिन रात तपने-खपनेपर चौथे दिन व्याहकी तैयारी हुअी। अुसी दिन शामको व्याहका मुहूर्त और समावर्तनका समय था। राम-अैताले नअे दुलहा बने थे, लाल-लाल चौडी किनारीकी बडी लम्बी धोती, कंधेपर वैसी ही जरीकी चादर, सिरमें पगडी, हाथमें सोनेके कडे, कानोंमें बाली और गलेमें कंठा, भस्म-रंजित भाल, ताम्बूल-रंजित अधर और हाथमें ताडपत्रका पंखा लिअे खडे थे। घरकी खिडकीमेंसे पारोती टकटकी लगाकर देख रही थी। देखनेमें जो कुछ अुसके मनपर बीत रही थी, अुसे पारोतीका हृदय ही जान सकता था।

अुसे बीस साल पुरानी अपने व्याहकी बात याद आअी—अैसे ही कपडोंको पहनकर अिससे भी अधिक तरुण और सुन्दर पुरुषके रूपमें बीस साल पहिले ये अुससे व्याह करने आअे थे। अुस समय वर्षाका हँगामा था। आंधी और वर्षाने प्रलयका दृश्य खडा कर दिया था। अैसे ही समय पालकीमें बैठकर अुसके घर आअे थे। अुस समयकी प्रत्येक बात अुसे याद आने लगी। वर्षामें खडे रहनेके लिअे जगह नहीं थी। वह अुस अपरिचित युवकके पास बैठी थी। अुसने आँखें चुराकर, दूसरोंकी आँखें बचाकर धीरे-धीरे अपने भावी पतिका मुँह देखा था। अुसके बाद वह अपनी ससुराल आअी। अुसके बाद प्रतिवर्ष, प्रतिदिन माँ बननेके लिअे तडफनेवाले मनका चित्र! अुसकी आँखोंके सामनेसे अेक-अेक कर पर्दा हटता गया। क्षण भर पूर्व वह बीस साल पहिलेके स्मृति-लोकमें थी, वहाँसे धीरे-धीरे वर्तमानकी ओर आने लगी। जैसे पानीमें डुबकी लगाया हुआ मनुष्य धीरे-धीरे पानीपर आता है, वैसे ही वह वर्तमानकी ओर बढने लगी। अुसके जीवनमें हँसीकी जगह आँसुओंने ले ली। प्रतिवर्ष, प्रतिदिन माँ बननेकी तडप आखिर अुसके हृदयमें "मैं बाँझ हूँ" की कसकमें बदल गअी। आज किस बातकी प्रसन्नता? किस बातकी शांति? अब तो अेक सौत आअेगी। घरमें सौत आनेका क्या आनन्द? अुससे घरमें कितना क्लेश, कितना कलह होगा? मैं चाहे जितना सहा करूँ, पर क्या वह मेरी अुम्र और बुजुर्गीका सम्मान करेगी? और

जरूरत पडती ? आरती-अक्षत आदिके भोजमें अिस बातको याद रखना ।" यह सुनकर किसीने कुछ भी नही कहा । पर सरसोतीसे नहीं रहा गया, "हाँ मय्याजी ! आनेवालोकी जबान जलाकर पेट मारना ही है तो अुनको बुलाया ही क्यो ?" शीनने भी हँसते हुअे कहा—"सरसोतम्मा ! वैसे शानसे खाकर डकार लेना हो तो महानवमीको अुडवीके राजांगणके भोजमें जाना चाहिअे ।"

अब शीनके सामने बरात चलानेका अुत्साह था । वह कैसे निकलेगी ? मंडवेमें कमसे कम सौ आदमी तो थे ही । अुन सबको दो कोसकी यात्रा करानी चाहिअे न । अुन सबकी अिच्छा समुद्र किनारे परसे नदीमुख पारकर तोन्से जानेकी थी, पर शीन मय्याके मनमें यह कैसे आता । अुसकी अिच्छा थी घरवाले, बरातके प्रमुखके नाते स्वय अुसे, दूल्हा और सभ्रात लोगोको बाजेके साथ शानसे नाव द्वारा चलना चाहिअे । हो सका तो घाटपरसे नावे चलेगी । पर व्यवस्था तो केवल चार नावोकी थी । अुनमें चावलके बोरोकी तरह आदमी भरे तो भी साठसे अधिक नही जा सकते थे । फिर आदमियोको चावलका बोरा कैसे बनाया जाय ! अेक नावमें तो बाजेवाले, आतिशबाजीवाले, अुनका सामान, मशालवाले वगैरह बैठेंगे, किंतु हमें भी नावमें चढाकर ब्याहमें ले जाअेंगे अिस आशासे मंडवेमें खडे सौ डेढ सौ लोगोका क्या किया जाय !

शीनने बाहर आकर अेक बार पश्चिमकी ओर देखा, फिर अन्दर आकर कहा—"अैतालजी, शाम हुअी । पैदल जानेवालोंको तो अब चलना चाहिअे । नदीमुखमें नाला पार करनेके लिअे काफी समय लगता है । मेरे आकाश-पाताल अेक करनेपर भी चारसे अधिक नावे नही मिली । हजार कहनेपर भी लाला लोगोने दूसरोको चावल भरनेके लिअे नावे देकर आपके ब्याहमें धोखा दिया !"

फिर बोला—"मै कहता हूँ खास सभ्रात लोग, घरवाले और बाजेवाले नावमें जाअेंगे, बाकी सब नदीमुख पारकर पैदल चले !" अुसकी आवाजने मंडवेमें खडे लोगोको ही क्यो गाँववालोके लिअे भी डुग्गीका काम किया । अब प्रतीक्षासे लाभ न होनेकी आशासे कुछ लोग नदीमुखकी ओर चले तो

कुछ लोगोने "अुतनी दूर कौन जाअेगा", कहकर घरकी राह पकडी। शीननें कुछ लोगोके पास जाकर कानमें "आप नावपर आअेंगे !" कहकर खास न्योता दिया। और कुछ लोग नावमें जगह हो तो जाअेंगे, नही तो घर है ही। अिस भावनासे वही खडे रहे।

सूर्यास्तमें अब आधा-पौन घटा रह गया था। बाजा और आतिशबाजीके साथ बरात चली। सभी नदीके किनारे आअे। फिर क्या था, लोगोकी दौडधूप शुरू हुअी! हर अेक, सबसे पहले नावपर चढनेका प्रयास कर रहा था। हर अेक यही समझता था कि जो पहले जा बैठेगा अुसका अधिकार हो जायगा। परिणाम यह हुआ कि दूल्हेके लिअे भी जगह नही रही। शीनमय्या चकराया। अब किसको अुठावे, किसको बिठावे! सभी सगे-सम्बन्धी थे। सब न्योता पाकर आअे थे। क्या करे! वह अिसी विचारमें परेशान था। आखिर धीरे-धीरे अंतालरामने कहा—"शीना! नावोको जाने दो अब। हम सब धीरे-धीरे नदीमुख पारकर पैदल ही चले!!", दुल्हेके मुँहसे यह सुनकर नावमें बैठे हुअे लोगोका चेहरा अुतर गया। सबके सब नावमेंसे अुतरे। अब शीनमय्याकी आवाज खुली। अुसने हुक्म दिया "अेकमें बाजे, आतिशबाजीवाले, मशालवाले, खजाना तथा अन्य सामान रहेगा, दूसरेमें सभ्रात लोग, तीसरेमें देवियाँ और चौथेमें, जगह जैसी होगी वैसे काम चला लेगे।"

आखिर सब किसी न किसी तरह बैठे। कुछ लोगोको "अिस नावमें बैठे तो नदीके साथ ब्याह हो जाअेगा" का डर था। किसीका अैसा कहना शीनके कानोंमें भी पडा। "क्या कभी हमारे गाँववालोकी जीभपर अशुभ छोड शुभ बाते नही चढेंगी!" —शीनमय्याने कहा।

फिर भी कुछ लोग डरसे अपने आप नावसे अुतरकर कहने लगे–'हम पैदल चलकर आ रहे है!"

अुस ओर सूर्य डूबा और अिस ओर बरात निकली। बाजे बजने लगे। नाव हिली और चलने लगी। आतिशबाजोने अपना काम शुरू किया। अंतालरामकी बरात देखनेके लिअे लोग जहाँ-तहाँ खडे थे। किनारे परके

गाँवोके लोग नदीपर खडे थे। अुस अँधेरेसे लिपटे अुजालेमें, अगर दूल्हा जवान लगे तो, तो कोअी आश्चर्यकी बात नहीं।

क्षणभरमें नाव हँगारकट्टे घाटपर आ पहुँची। जैसे-जैसे बदरघाट नजदीक आता गया वैसे ही वैसे शीनमय्याकी आवाज तेज होती गअी। "अैतालजी, जरा तेल खर्च हो जाय तो भी कोअी चिन्ता नहीं, यहीसे मशाले जलाअेंगे! घाटपरके अमीर भी देखें हमारी बरात!"—कहकर रौबसे अुसने मशालचियोको मशाले जलानेकी आज्ञा दी और आतिशबाजोको अपना कर्तव दिखानेको कहा। अुसने आकाश-बाण छोडे। फिर वह बजनियोको "तुम्हारा क्या गला सूख गया है!" कह ललकारता हुआ गरजा। शीनमय्याके अितना सब करनेसे क्या नावका रास्ता बदलता? नावका रास्ता घाटसे नजदीकका नहीं था। अिसके लिअे शीनमय्या क्या करता। हाँ, अुसे तो अपना चौधरीपन दिखलानेमें ही खुशी थी।

नावोंके तोन्सेके पास आते-आते शीनमय्याने प्रत्येक नावपर चार-चार मशाले जलानेकी आज्ञा दी। मशाले जली। सचमुच मशालोंके प्रकाशका पानीमें डूबकर अन्दर जाना, बड़ा ही रमणीय दृश्य था। अुसपर भी अत्यन्त खारा पानी और गर्मीके दिन। जरा पानी हिला कि क्षारके लाखो अणु चमकने लगे। नावका रास्ता प्रकाशकी किरणोमें चमकता था। बराती पुरुषोंने पान चबाना प्रारम्भ किया और स्त्रियोने गाना। सामान देखनेवालोंके लिअे कोअी काम नही था। अुनकी आँखें मशालें जलाकर चलनेवाली नावोपर थी। वे सोच रहे थे कि अगर नावोपर ये ब्राह्मण न होते, तो मछली पकडने के लिअे कितना अच्छा समय था। वह देखो, मछलियाँ कैसी पंक्तियोमें नाचती आ रही हैं। अुन्हें तो अपने शिकारकी पडी थी।

जैसे-जैसे तोन्सेका किनारा नजदीक आता गया, वैसे-ही वैसे बरातका अुत्साह भी बढता गया। "अैतालजी! अैसी बरात यदि चार कोसतक नावपर ही चली, तो भी कोअी हर्ज नहीं!" किसीने कहा। आखिर सब नावसे अुतरे। पहलेसे पहुँचे बराती, पहिलेसे लडकीवालोंके घर जाना अनुचित मानकर वहीं खेतकी मेंडपर अँधियारेमें बैठे, पान चबाते रहे। सब वहीं अिकट्ठे हुअे। मशालें जो पहिले चार थीं अब पचास हो गअी। रातने

अब अेक फौजका रूप ले लिया। छत्रध्वज आदिमे सजी बरात आगे चलने लगी। दुलहेको पालकीमें बैठाया था। बरातमे सबसे आगे शीनमय्याकी सवारी थी, अुसमे आगे खजाना! शीनके कमरमें अेक अंगुल मोटा चाँदीकी करधनी तथा किसीसे माँगकर लाअी सोनेकी साँकल भी थी। अिन महावैभवोंके साथ आगे बढनेवाले अैतालरामको अेक जमानेमें वर्षाके कारण पहिले व्याहमें न मिली यह राज-सी शान अब बुढापेमें मिली, अिसका अुन्हे बडा आनन्द हुआ।

पहर भर रात बीत गअी थी, जब अैतालरामकी बरात पड्मुन्नूर गाँवमें प्रविष्ठ हुअी। बरात लडकीवालोंके घरके सामने खेतमें जा खडी हुअी। स्वागतके लिअे लडकीवाले आगे आअे। मानो दो युद्धरत सेनाअें आमने-सामने खडी हो, अिसी भावसे दोनोके बजनिहाँ, आतिशबाज आदिने अपने-अपने कौशलका प्रदर्शन प्रारम्भ किया। दोनोंके बजनियोने अपना-अपना सींगा, तुरही, ढोल आदि जोर-जोरसे बजाया। आवाज जरा कम पडते ही स्त्रियोने गला फाड-फाडकर दुलहाअियाँ गाअी। साथ-साथ आतिशबाजोंने अपने तोप, बाण, पुष्प-वल्लियाँ और गुब्बारोंसे समा बाँध दिया। जब कन्या पक्षवाले अैतालरामका स्वागत कर अुन्हे अन्दर ले जाने लगे, अुस समय तो अैतालजीको पूर्ण यौवनका आनन्द आ रहा था। लडकीवालोंके माँडवेमें पैर रखते समय शीनमय्याके हाथमें रजतमुष्टिकायुत बेंत भी था!

व्याहके मँडवेमें बैठनेवालोने कभी यह महसूस नही किया कि यह दूसरा व्याह है। सुन्दर झालो और कमानोसे सजा हुआ मँडवा, सुनहरी-रूपहली पन्नियो और लालहरे कागजोसे चमकता वर-वधुओका मडप था, अिसमें अेक ओर बैठी हुअी थी, ब्राह्मणोकी सभा और दूसरी ओर गाँवके सम्भ्रात गृहस्थ। वर-वधूके मडपके पास थी स्त्री-सभा और बाहरसे मँडवेमें बाँधे नारियलके डठलोंके हेडोको हटाकर देखनेवाले शूद्रोकी शूद्र-सभा!— दिव्य शोभा थी।

वरको भी बडी प्रसन्नता हुअी। शीनमय्या भी प्रसन्न हुआ। जरा-जरा असतोष था लडकीकी माँको, किन्तु अब वह भी जाता रहा। अैताल-

रामको घरमें पैर-पर-पैर रखकर बैठे-बैठे खाते रहनेके लिअे भी पर्याप्त जमीन-जायदाद है, अिसका पूरा भरोसा होनेपर ही यह रिश्ता तै किया गया था, किन्तु वरकी अुम्र हो गअी है, और घरमें भी दूसरी सौत है, मांको अिसका दुख होना स्वाभाविक था। पर अैतालरामका दुल्हा बनकर युवकोको भी शरमानेवाला बैठनेका ढग, कन्यादान स्वीकार करते समय दिखाअी देनेवाला अुनका आत्म-विश्वास और खुद पारोतीका व्याहके प्रत्येक काममें अगुवापन लिअे कामका ढग, आत्मीयताके साथ हिलमिलकर सब करते रहनेकी पद्धति, आदि देखकर लडकीकी मां भी प्रसन्न हो गअी। जब पारोतीने वर-पक्षसे लाअे हुअे गहने अन्दर ले जाकर स्वय अपनी भावी सौत सत्यभामाका जिस प्यार और वात्सल्यसे श्रृंगार किया, वह दृश्य देखकर तो मांकी आंखोंमें भी कृतज्ञताके आंसू आअे बिना नही रहे। अुसके हृदयके सब सदेह वही समाप्त हो गअे।

किन्तु अेक बातकी चिंता सरसोतीको थी। वह बात यह थी कि पारोतीके लिअे अुस रोज नअे गहने नही आअे थे। अितना ही नही, कुछ कारणोंसे होल्लेके घरके गहने भी नही आ सके। अिस बातसे वह अप्रसन्न थी। तब सरसोतीको ही "तू क्या बच्ची है अब! तुझे अब क्या चाहिअे यह शान-शौकत ?"— कहकर अुसे पारोतीको आश्वासन देना पडा।

अैतालराम वैसे बडे कजूस थे। पर अुन्होने अिस समय अपनी शक्तिसे अधिक हाथ ढीला छोड दिया था। साथ ही शीना जैसा मत्री होनेपर तो हाथ ढीला होना स्वाभाविक ही था। अपने पुरोहितके सम्मानके लिअे सभी जजमान और सगे-सबधी विवाह-मडपमें आअे थे। रेशमी किनारकी साडियां तथा दूसरी साडियां, "खण" वगैरह वरपक्षकी ओरसे काफी दिअे गअे। कही किसी प्रकारसे भी असतोषकी गुजाअिश नही थी और वरपक्षने वर-दक्षिणाके बारेमें भी कुछ नही कहा।

व्याहके बाद चार दिनतक यद्यपि लडकीवालोंने पडुमन्नूरमें ही बरातियोका ठहरानेका प्रबन्ध किया था, फिर भी शीनमय्याने रोज कोडिसे यहां आनेका प्रबन्ध किया। अुसने न आने-जानेके श्रमकी पर्वाह की, न रुपअे-पैसे की। व्याहके दो दिन बादसे सुबह-शाम दो-दो नावें दौडवाअीं। सभी

गण्यमान्य बरातियोके लिअे नियमित रूपमे नावोका अच्छा प्रबन्ध किया गया। बरातका कोअी काम न होनेपर भी बरातका समय दिनका होनेसे सभी नावे हँगारकट्टेके घाटपर रुककर ही जाती थी। तीसरे दिन दूध-घीके दिनकी बरात जिसने देखी, वे कहते हैं व्याहकी बरातसे यह दुगनी शानसे चल रही थी। अँधेरी रातमे बरातकी शान बढानेका रहस्य शीनमय्याको मालूम हो चुका था। अुस रोज अुसने प्रातःकालसे ही ताड और मांडके सूखे पत्ते और मडल निकलवाकर अुसकी मशाले बँधवाअी और रातको आने-जानेवालोंके हाथमें, अेक-अेक मशाल दिलाकर पचास आदमियो द्वारा पाँच सौ आदमियोकी बरातका दृश्य खडा कर दिया। सचमुच अुस दिन बरातने तो समा बाँध दिया। गाँववाले कहते, हमने कभी अैसी बरात नही देखी।

चौथे दिन भी बरात अिसी तरह चली। लडकीवालोने अुस दिन भोजमें लड्डू और पूरण पूडीका प्रबन्ध किया था। बरातके बुजुर्ग व्यवस्थापक शीनप्पा मैयाका सम्मान ही और था। लडकीवालेने अपने नौकरोंको हिदायत दे रखी थी कि जब "शीनप्पा मय्याजी कहें कि प्यास लगी है, तो अुनको दो कच्चे नारियल तराशकर दिअे जाअें।" नौकर भी अपने स्वामीका आदेश अक्षरश: पालन करते थे।

व्याहके सारे समारोहमें सिर्फ अेक ही कलककी बात होने जा रही थी। चौथे रोज अक्षत-समारम्भ समाप्त होनेपर शामकी सभामें "शीनप्पा मय्याजी" बेहोश हो गअे। वह बोलते-बोलते पान खा रहे थे। शायद सुपारी लगी होगी, अथवा पानमें कुछ होगा। अेकाअेक अुनको चक्कर आया और बेहोश हो गअे। बस फिर क्या था, दुलहेसे लेकर सबके सब वहाँ दौड पडे।

सभवत पानकी गीली सुपारी ही लगी होगी। 'शीनप्पा मय्याजी' अपनी सेवा करनेके लिअे आनेवालोको देखकर भयानक वेदनाका अनुभव दर्शा रहे थे। अिस प्रकार अुनने अनायास प्राप्त सेवाओंको साभार और सानन्द स्वीकार किया। अितनेमें सरसोती वहाँ आअी। अुसने करुण स्वरमें

: ७ :

आखिर लड़की मैंतालके घर आअी। घरकी औरतोमें "लडकी शिवल्ली या अर्धशिवल्ली कुलसे आअी है" अिस विचारसे बड़ी अुदासी छाअी थी। सरसोती आचार-विचार और "मडिमैलिगे" की शौचा-शौचकी बातोमें बड़ी कट्टर थी। अुसे यह सुधारवादी व्याह अच्छा नही लगा।

व्याहके बाद छह मास तक सत्यभामा यहाँ रही। अुसके आचार-विचार और चाल-ढालको देखकर सरसोतीकी अप्रसन्नता दूर होती गअी। शिवल्लीकी बस्तीमें पली होनेपर भी वह सपूर्णतया कोटि लोगोकी तरह है, अुसे अिस बातका पूरा विश्वास हो गया। अब वह सामान्य रूपसे अुस घरमें रहने लायक है, यह बात भी अुसके मनमें पक्की हो गअी।

पहिले तो घरका सारा काम पारोती ही करती, परन्तु सत्यभामा बिना बुलाअे ही जाकर अुसकी सहायता करती। पारोतीके अिन्कार करनेपर भी हँसकर प्यारसे "नहीं जीजी मै ही कर दूंगी" कहकर पारोतीका, यानी घरका काम करने लगती। प्रथम अेक-दो महीनोमें ही अुसने बर्तन मांजना, झाडू लगाना, लीपना-पोतना जैसे फुटकर काम अपने ही हाथमें ले लिअे। कभी-कभी सुबह कुछ समय घरके गाय-बछडोको घरके पासके जगलमें भी चरा लाती। पर अेक काममें अुसने अब तक हाथ नही लगाया था और वह थी रसोअी। अिसका अर्थ यह नही कि अुसे रसोअी बनाना नही आता था। व्याहके बाद चौथे रोज बरात लौटते समय शिवल्लीवालोकी रसोअीके सम्बन्धमें बात चली थी, अुसकी जो आलोचना हुअी थी, अुसे अुसने सुना था। "शिवल्लीवालोंकी रसोअी मीठी-मीठी होती है", यही अुसके पतिराजकी भी सम्मति थी, जो अुसे मालूम थी। अिसीलिअे वह रसोअी करनेमें जरा

सकोच करती थी। रसोअीके नारियल कसना और पीसना जैसे फुटकर काम करनेपर भी अब तक अुसने रसोअीमें हाथ नही लगाया था। पारोतीने भी अुससे अिसके लिअे नही कहा।

अेक दिन शीनप्पा मैय्याजी वहाँ आअे। आते ही पूछा—"अैतालजी! अब आपकी सत्या कैसी रसोअी बनाती है? अब भी पडुमुन्नुर ही है या कोडिको पहुँची है?" तब अैतालरामने "अुसे आअे छह महीने होते है, पर आज तक अुसके हाथकी रसोअी नही खाअी!"—कहते हुअे, "सत्या!" अैतालरामने सत्यभामाको बुलाया और "देखो आज तुझे ही नलपाक बनाना है। आज हमारे ब्याहके यजमान भी आअे है!"—कहकर शीनप्पा-मैय्याजी को न्यौता दे डाला। यह सुनकर सत्यभामाको जरा धक्का-सा लगा और "मै नही करूंगी"—कहती-कहती मुर्झाती-मुस्कराती घरके अन्दर भागी। "देखो!" पतिकी यह पुकार सुनकर वही रुककर धीरे-धीरे बिल्ली-की चालसे दो-अेक कदम आगे आअी, फिर अपने अचलके अेक छोरको हाथमे पकड, अुसे धीरे-धीरे दाँतोसे चबाती वही जरा दुबककर, यह सुननेके लिअे अुत्सुक खडी रही कि पतिराज आगे क्या कहते है। "अब तक पारोतीके हाथके पत्था, पलघा खाकर जी भर गया, देख! आज तेरे हाथका नलपाक बनेगा।"—अैतालरामने कहा और सत्यभामा जरा हँसकर, जरा लजाकर भीतर भाग गअी।

दोपहरके भोजनमें अैतालराम और अुसकी बगलमें शीनप्पा दोनो सत्याके हाथका नलपाक खाने बैठे। शीनप्पाको तो हर बातमें अविश्वास था। वह चौकेपर आनेसे पहले बाडीमें जाकर चार हरी मिर्चें टेंटमें दबाकर बैठा। अुसकी बारीक धोतीमें मिर्चें मुँह निकालकर झाँक रही थी। सत्यभामाने अुन्हे देख लिया। अुसने मन ही मन "अय्यो! शीनप्पा!" कहकर डरके मारे गुडकी ओर देखा तक नही। परोसनेके पहले ही सत्यभामाकी ओरसे सरसोतीने देख लिया और "भाभी! अितने पर भी अिस शीनाको हमपर अविश्वास है न! आते समय टेंटमें हरी मिर्चें दबाकर आया है।" कहकर "अिसके लिअे अब क्या करे!" बस दो-दो मिर्चें सब चीजोमें अधिक डालकर अुसने भोजन परोसा। शीनप्पाने जबानपर

और क्या ? अिससे क्या बनता-बिगडता है।" अितनी सब बाते हुअीं। तीनो धूपमें धीरे-धीरे बतियाने नदीके किनारे पहुँचे। खेतोमें कीचड और खाद डालनेका काम अब तक पूरा नही हुआ था। नदीका कीचड ला करके डालना था। अुसे धूपसे सुखाकर ही खेतोमें डालना चाहिअे। अिन सब कामोंके लिअे लोगोको मजदूरी देकर काम करानेसे काम कैसे चलेगा, अिसलिअे खुद काम करने निकले थे।

नदीके बीचमें नाव रक्खी थी। वही पर बडा बाँस गडा था, अुसको अपनी नावसे बाँधकर तीनो अुसमें कीचड भरने लगे। तीनोके हाथमें अेक-अेक तसला था। अुसे लेकर डूबना, अुसमें कीचड भरकर अूपर आना, अुसे नावमें डालकर पुन डूबना, और फिर कीचड भरना, यह काम आसान था न सुखद। हाथ-मुँह सब कीचडसे सन गअे थे। पानीमें डूबनेपर धुल भी जाते थे, परन्तु फिर कीचड लग जाता था। अगर पानी जरा गहरा हुआ तो डूबना भी कठिन और डूबनेके बाद अपनेको बचाकर कीचड लेकर अूपर अुठना भी कठिन। खूब श्वास रोकना पडता। अैसे समय आँखें भी तो नही खोली जा सकती थी।

दोपहरके समय हिम्मत करके तीनोने आधी नाव कीचडसे भरी। अितनेमें ही अिस महान कार्यमें विघ्न अुपस्थित हो गया। दूरके खेतोंमें किसीने अुन्हे पुकारा,—"अैतालजी ! अैतालजी !" पुकारनेवाला चिल्ला-चिल्लाकर बोलता था। आज अुन्होने नाव जरा गहरे पानीमें बाँधी थी। अिससे ठीक तरह पैर भी नही जमते थे। ठीक तरहसे खडे रहकर पीछे देखना भी सरल न था। "कौन बुला रहा है !" हाथसे नाव पकड पैर मारकर जरा गर्दन घुमाकर देखना पड़ा। बुलानेवाले और अिनके बीच नागफनीके काँटोकी पक्ति थी, अिसलिअे बुलानेवालेका मुँह नही दिखाअी देता था। तब "कौन पुकारते हैं। यही आ जाअिअे ! हम कीचड़ निकाल रहे हैं। यहीं !"—कहकर वह स्वय चिल्लाया।

आवाज वहाँ तक गअी। पुकारनेवालेको भी सुनाअी पडी। वह अिसी ओर आया। अुस समय कौपीनधारी अैतालराम अपने कीचडसने भव्य शरीरको लेकर नावके पिछले सिरेपर बैठा था। पारोती-सरसोती मशीनकी

तरह काममें जुटी थी। अिसी समय बीस-पच्चीस सालका यह युवक वहाँ आ खडा हुआ। "ओ...रामअैतालजी!" वह चिल्लाया। "जी!" अैतालरामने भी आवाज दी, किन्तु परिचय न होनेसे अुनकी ओर ताकता ही रहा। "ओह, ये तो नावपर हैं। मालूम होता है, मेरा परिचय नही है अिनको!" अैसा सोचकर "आया! आया!" कहते वह पानीमें कूदा और तैरकर नावके पास आ गया। नावपर चढ़ा। "कब...सत्या...क्या..कहा?" जैसी प्रश्नावली प्रारंभ हुअी।

अैतालकी बातोंपर ध्यान जानेसे पहिले आनेवाले तरुणकी दृष्टि अुनके रूप और कार्यपर गअी। आनेवाला युवक अैतालका साला था। वह भी किसान ही था, पर अुसकी किसानी अिस प्रकारकी नहीं थी। जो खेत थे वे खण्ड-बँटाअी पर दिअे जाते थे और आअे हुअे अनाजसे मजेसे गुजर-बसर होती थी। अुसे यह कुछ विचित्र-सा लगा। अुसने सुना था अैताल अच्छे आसामी हैं। 'अैतालका अपने घरकी स्त्रियोंके साथ अिस प्रकार कीचडमें डूबना अुसे अच्छा नही लगा, कुछ बुरा ही लगा। अुसे आश्चर्य भी हुआ आखिर अुसके मनमें आया—अेक दिन मेरी बहिनको भी यह काम करना पडेगा। अुसके मनमें यह विचार कुछ चुभ-सा गया।

जिस समय अुसका मन अिस विचारसे अुद्वेलित हो रहा था, अुसी समय अैतालराम अपनी पारोती-सरसोतीको नावपर चढाकर किनारेकी ओर चल दिअे। "चलो, घर चलें!"—अैतालरामने अपने सालेकी ओर देखकर कहा, "यहाँ खडे रहकर क्या करेंगे? अच्छा सत्या कैसी है?"

"अच्छी है।"—अुसने कहा।

"जच्चा-बच्चा दोनों अच्छे हैं ना!"—पारोतीने पूछा।

"जी!"

"लडका या लडकी?"—सरसोतीने पूछा।

"बस अैतालराम वही नक्षत्र देखने लगे। नक्षत्र-वक्षत्र रहने दो अपना। घरमें आअे-हुअेका मुँह मीठा कराओगे या नहीं? यही रहने दो नाव। रातको अुतारेंगे कीचड। चाँदनी तो है!"—सरसोतीने कहा।

सालेको आगे कर अैतालराम घरकी ओर चले। पीछे-पीछे घरकी औरतें थी। घर पहुँचने तक अपना यह रूप देखकर सालेके सामने अुनको जरा भी लज्जा नहीं लगी—"भअी, वहाँ रखी हुअी रंगीन चटाअी बिछाकर थोडा बैठो। मैं तालावमें डुबकियाँ लगाकर आता हूँ। घरमें अैसे ही जाना अशुभ है।" साला घरके बरामदेपर गया और वही अेक खमेसे टिककर बैठ गया। अिधर-अुधर आँखें दौडाअी, वहाँ न कोअी रंग था न रंगीन चटाअी! बेचारा वैसे ही जमीनपर बैठा रहा।

सबसे पहले सरसोती दो डुबकियाँ लगाकर शरीर धोकर दौडती हुअी आअी। "अरे! चटाअी भी नही मिली!" कहकर अन्दर भागी। वहाँसे अेक रंगीन चटाअी लाकर बिछाअी और अुसपर अभ्यागतको बैठाया। फिर रसोअीघरमें जाकर चूल्हेमें आग जलाअी। तबतक अैतालराम भी आ पहुँचे। धोती बदलकर ललाटमें भस्म लगा ली। नाकमें कुछ सुँघनी भरकर डिबिया सालेके सामने बढाअी और मुस्कराकर बोले—"जान पडता है तुम नहीं सूँघते!" डिबिया सालेके सामने रखनेका अर्थ यह था कि अुनकी रोजकी डिबिया सूखे बेलकी होती थी, और अुसमें रहती थी तमाखूकी ठेप, किन्तु आजकी डिबिया वह थी जो व्याहके समय शोनमय्या कुदापुरसे लाया था। वह चाँदीकी और सुन्दर भी थी। अुसने आखिर अिसे अेक अलकार समझ कर रंगीन चटाअीपर वैसे ही रखा रहने दिया।

"प्रसूतीमें क्या कष्ट हुआ? जच्चा-बच्चा कैसे है?" आदि पूछते-पूछते सरसोतीने पैर धोनेके लिअे पानी ला दिया। अुसके बाद अेक गिलासमें थोडा-सा छाछ और अेक तश्तरीमें अभी कुछ दिन पूर्व सीमतमें बनाअे पापड, मुँगोडी, बडी तलकर रख दिअे। अुसके पीछे ही अुत्साहके साथ पारोती आअी। "बच्चा बापको पडा या माँको?"—अुसने पूछा।

अैतालने—"अभी कैसे पता चलेगा? अभी तो लाल-लाल बन्दरका-सा बच्चा होगा!"

"बन्दरके बच्चे-सा नही होगा! बडा होगा। सत्याको देखकर ही लगता था बच्चा बडा होगा! और वह पेहलौठी का बच्चा है। बन्दरके बच्चे-सा छोटा कैसे होगा?"—सरसोतीने कहा।

"बच्चा लाल-लाल है और खूब बडा है। सिरपर खूब बाल है। पड़ा किसको है यह मैं नही जानता ! मुझे अुसका रूप अपना-सा ही लगता है !"—सालेने मुस्कराकर कहा।

पापड-मुंगोडीके साथ वैसी ही चटपटी बाते होने लगी। क्षण भर पारोतीके मनमें अेक तूफान आया। वह अुठकर रसोअीघरमें गअी। वहाँ अँधेरेमें बैठकर "आखिर मेरे नसीबमें तो संतान-सुख नही बदा था।"—कहकर कुछ आँसू बहाअे। अुसके बाद पता नहीं किस विचारने अुसे सांत्वना दी। मनौतीके अनुसार लडका ही हुआ यह सोचकर कल ही अपनी मनौती पूरी करनेके ख्यालसे वह बाहर आअी। बाहर आनेपर अुसके मनमें और अेक विचार आया, "अरे ! मैंने सत्याके बारेमें कुछ भी नही पूछा !" अिसीलिअे अुसने दुबारा जहाँ सत्याका भाअी बैठा था वहाँ आकर पूछा—"सत्याको कोअी विषम पीडा तो नहीं हुअी ?"

"हुअी होगी !"—अुस युवकने जवाब दिया। स्त्री राज्यमें पूछे गअे प्रश्नोका अुत्तर कैसे दिया जाता है, यह वह नहीं जानता था। अुसने अपनी कल्पनासे ही जवाब दे डाला।

शाम हुअी। अुसने धीरे-धीरे "पिताजीने रातको ही आनेको कहा था। घरमें कोअी नहीं है।"—कहकर जानेका प्रस्ताव रखा। पर भला अैतालराम अुसको अैसे कैसे छोडते ? "अैसा शुभ समाचार लानेवालोको खीर खिलानेके पहिले कही वापस भेजा जाता है ? अैसे जानेका क्या अर्थ ? सुबह मैं भी साथ चलूँगा ! अैसा कौन काम पडा है !" —कहकर अुसने अपने सालेके प्रस्तावका विरोध किया।

"पर, गअे बिना दूसरी गति नही। जाना अनिवार्य है। घरमें काम "

"अरे ! प्रसूतिमें भला पुरुषोका क्या काम !"—अैतालरामने कहा, "मै समझता हूँ। हाँ, कल चले चलेंगे, साथ ही साथ !"

अिससे आगे बोलनेकी सालेकी अब क्या मजाल थी ? मजबूर होकर रातको वही रहना पड़ा। पारोती भागती हुअी सीनमय्याके घर गअी,

और सेर भर अरहरकी दाल अुधार माँगकर दौडती हुअी आअी। रातको अरहरकी दालके साभारके साथ घुअियाँके पत्तोंके पकौड़े बने। साथ ही पापड और बडी तलना भी वह नही भूली। अैसे समयपर चूडेकी खीर करना ठीक समझकर वह भी राँधी गअी। "अिलायची-विलायची डालकर खीर खूब बढिया बनी।"—खीर मुँहमें डालते ही जब अैतालरामने यह कहा, तो साला बेचारा क्या करता? मजबूर होकर अुसको भी कहना पडा—"अच्छी बनी है।" पारोतीने "अिन गर्मियोके दिनोमें चूडेकी खीर ही अधिक स्वास्थकर होती है।"—कहकर अपने कार्यका समर्थन किया। चूडेकी खीर, पकौडे वगैरह खाकर सालेका पेट दोपहरमें देखो नावकी तरह भारी हो गया। भोजन समाप्त कर दोनो चटाअीपर विराजमान हो गअे। अब भुने हुअे काजूके साथ बढिया गुड सामने आया। "सालेको जरा अेक तकिया ला दें" यह विचार अैतालरामके मनमें आया ही था कि बस "पडुमुन्नूरसे आअे हैं क्या? बडा अच्छा हुआ!"—कहकर शीना भी वहाँ आ धमका।

"शीना!"—अैतालरामने अुत्सुकतासे कहा, "हमारी सत्याके लड़का हुआ है। लडका होगा या लडकी, अब तक यही विचार मनमें चल रहा था। शालग्रामके नरसिंह भगवानकी कृपासे आखिर लडका ही हुआ।"

"अैसा तुम्ही तो कहते थे न!" अब शीनप्पाने बात आरम्भ की। "तुम्हारी जन्मपत्रीमें तीन लडके लिखे हैं! जन्मपत्रीमें लिखे लडके-लडकी कैसे हो जाते!" तब तक शीनाके सामने पान-सुपारीकी तश्तरी आ गअी। अब पान खावे या काजू, अुसका मन संकल्प-विकल्पमें पड गया। आखिर अुसने काजूके बाद पान खानेका निश्चय किया और "पडुमुन्नूरके लोग क्या काजू नही खाते?"—कहते-कहते क्षण भरमें ही काजुओंकी थाली खाली करके रख दी। अितना सब खाकर अुसने कहा—"अैतालजी! कहते हैं ये काजू बडे अुष्ण होते हैं। पर क्या करें अेक मुँहमें डालनेपर हाथ रोकनेका जी नहीं चाहता।" फिर अुसने सत्याके भाअीकी ओर देखकर "ओ, मालूम होता है ये मेहमान पान भी नही खाते।" कहकर स्वयं पान चबाना प्रारम्भ किया। आखिर तमाखू खानेपर पता नही क्या स्फूर्ति आअी कि अुसने कहा—"कुछ भी हो! हमारे अैतालके घर अेक लडका तो हुआ!"

मेहमान झपकियां लेता हुआ हँसा । पता नही, अैतालको यह कैसा लगा । अुसके मुँहसे कुछ भी नही निकला । तब शीनने कहा, "जिस घरमें बच्चोंकी दौड-धूप नही होती, अुस घरमें अैसा लगता है मानो घर खानेको दौडता हो ! आखिर मरनेपर मुँहमे घूंट भर पानी डालनेके लिअे भी तो लडका चाहिअे ।"

"तुम्हे नीद आ गअी ! अच्छी ठडी-ठडी हवा आ रही हैं। नरम-नरम तकिया है । बस, सिरमें लगाया कि नींद आअी ।"—कहकर अैताल अन्दरसे चटाअी और तकिया ले आया । अुसपर अेक दरी बिछा दी । मेहमान अुसपर सो गया । सोते ही नीद लग गअी ।

अैताल और शीना आमने-सामने बैठकर गप्प हाँकने लगे । दोनोंके बीचमें होन्नेके तेलका अेक दीवट टिमटिमा रहा था । अैतालने अेक बार चिरागको आगे सरकाकर कहा—"अिसमें तेल भी नही डाला क्या ?"

"अरे ! बाहर दूध-सी चाँदनी छिटक रही है, बुझा दो न चिराग !" —कहकर चिराग गुल किया, फिर ससुरालका स्तुति-पाठ करने लगा ।

कितनी राततक यह गप्पाष्टक चली कौन जाने ? आखिर "रात बहुत हो गअी । नीद आ रही है ।" —कहकर शीना अुठा । जब वह आँगनमेंसे अर्लाखेट तक पहुँचा तो रास्तेमें सरसोती और पारोतीसे भेंट हुअी । वे नाले परसे तालाबपर जाकर न जाने क्यो आज चौथी या पाँचवी बार स्नान करके आ रही थी ।

"कौन सरसोतम्मा ! रातमें क्या धानकी क्यारी सींचने गअी थी ?" शीनाने पूछा ।

"नही बाबा ! पडुमुन्नूरसे मेहमान आअे अिससे नावमें भरा कीचड वैसा ही छोड आअी थी, नाव देते समय मोगवीर गोविन्दने कहा था कि नावको कल सुबह कल्याणपुर भेजना है, हमारे काममें कोअी अडचन नहीं होनी चाहिअे । अिसीलिअे जाकर नाव खाली की, धोअी और अुसके घरके सामने बाँध आअी । कीचडका काम था न, हाथ डालनेपर बिना नहाअे कैसे चलता ?"—सरसोतीने कहा ।

शीनाने भी दो-चार सुख-दुखकी बाते अपने घरकी कही। जाते समय जरा सुंघनी चढानेकी सूझी और लौट पडा, "अैतालजी, अभी नीद नही आअी होगी, जरा सुंघनी दो भाअी!" अैतालने आंगनमें आकर अपनी चांदीकी डिबिया अुसके हाथमें दी। शीनाने अेक चुटकी वही चढाअी, और दूसरी चुटकी भरकर कहा—"वडी तेज है। तुम जैसी सुंघनी वनाते हो, वैसी व्यापारी नही वना सकते।"

"वे सुंघनी तो वनाते है, किन्तु जितना चूना डालते है अुतना मक्खन न डालकर सव खराव कर देते है। अुनकी सुंघनी अगर आठ-दस दिन सूंघो तो आंखें चली जायें!"—कहते हुअे अपने मुंह मियांमिट्ठू वनकर अैतालराम अन्दर चले गअे।

दूसरी चुटकी भी घर जाते-जाते शीनाने चढा ली। वादमें अुसको याद आया कि अैतालने अुसके हाथमें चांदीकी डिबिया दी थी। वह मन ही मन गुनगुनाया, "अरे, ये ब्राह्मण देवता अपनी विल्वफलकी डिबिया छोडकर चांदीकी डिबिया कवसे रखने लगे?" वह अिसी विचारमें डूव गया। घर जाकर सोनेके वाद भी रातमें यही स्वप्न देखता रहा। अुसने यह भी देखा कि अैताल अुसकी चांदीकी डिबिया चुरा ले गया है।

रात वीती, सुवह हुआ। घरवाले कभी नाश्ता नही करते, पर आअे हुअे मेहमानको विना नाश्ता कराअे कैसे काम चलता। अुन दिनो काफीका प्रचार नही हुआ था। सरसोतीने वघारा हुआ चूडा वनाया, रातको भिगोअी हुअी मूंग पीसी, अुसमें गुड डाला। चूडेके साथ-साथ ठण्डा-ठण्डा शरवत भी पिलाया। अुस रोज अैताल भी स्नान-सन्ध्यासे जल्दी निपट गअे। पूजाका काम शीनमैय्याके लडकेपर सौंपा और मेहमानके साथ जलपानको वैठ गये। जलपान हुआ। "अव हम तैयार है। महीने भरसे सत्याको देखा भी नही। हमारे घर जमानेसे खेती-वारीका काम होता आया है। वैसे रैयत लोग काफी है, अुनसे भी काम कराया जा सकता है, किन्तु जव वे काम करते है, तो अुनपर नजर रखना जरूरी है। जरा आंख अिधर-अुधर की कि काम अेकके दो करके तहस-नहस कर डाला, या गप्प हांकते वैठे रहे। अेक कौडीका भी काम नही होता। अिसलिअे कितना ही कष्ट क्यो न हो, अपना काम

अपने हाथोसे करना ही अच्छा है ।" कहकर पिछले दिनके कीचड-प्रकरणकी व्याख्या करने लगे ।

"तुम्हारी खेती कितनी खडीकी है ?"—अैतालने सालेसे पूछा ।

"हमारी खेती ! पिताजीसे चला-फिरा नही जाता । सदा-सर्वदा वातका अुपद्रव रहता है, अिसलिअे सारी खेती खडपर अुठा दी है ।"

"घरमें वैठे-वैठे कैसे समय गुजरता है ? पिताजीकी यह हालत है, पर तुम तो जवान हो । जवानीमें, जब कि हाथ-पैर मजबूत हैं, अपनी खेती-बारीका कुछ तो करना चाहिअे ।"—अैतालने कहा ।

"मुझे शानभोगी करनेकी अिच्छा है ।"

"तुम्हारे कुनवेमें क्या शानभोगीका अधिकार है ?"

"हमारे परिवारमें नही, किन्तु हमारे रिश्तेदारोमें है, अगर हम पाँच सौ रुपअे देंगे तो वह हमारा हो जाअेगा ।"

"शानभोगी मिले तो अच्छा । मानका मान और कामका काम । शानभोगी हाथमें लेकर, अपने घरके पश्चिममें जो वडा खेत पडा है, अुसे भी किसी तरह हथिया लो । आज नहीं तो कल, कल नही तो पचास साल वाद अुसकी कीमत आकर रहेगी ।"

अुस युवकको अिस प्रकारका अुपदेश देते अैतालराम पडुमुन्नूर पहुँचे । ससुराल पहुँचते-पहुँचते अैतालने अपने कुमारके कठरवकी गर्जना सुनी । "वच्चा अैसे क्यो चीखता है, वीमार तो नही है ?"—अैतालने पूछा, किन्तु अभी-अभी वाहरसे आअे अुस वेचारे युवकको क्या मालूम ।

मादप्पय्याने अपने दामादका स्वागत किया और वडे अुत्साहसे अपने नातीकी जन्म-कथा सुनाअी । स्नान कराके धोविन वच्चेको अन्दर ला रही थी । विना किसी दया-मयाके अुवले हुअे क्वाथसे, वालकको स्नान कराया गया था, अिससे वह लाल वालक और भी लाल टेसूका फूल वन गया था । गरम पानीकी गरमीसे वेचारा वच्चा साँस लेनेकी फुरसत पानेके लिअे चीख रहा था । "अभी स्नान कराया ।"—अैतालने अपने युवराजको देखकर कहा ।

सरसोतीके अिस अुपदेशने काम किया। अैतालराम अुस बूढे बढअीसे वचनेके लिअे सवेरा होते ही अुठकर पडुमुन्नूर चले गअे। बूढा बढअी जब खाँसते-खाँसते घरपर आया तो सरसोतीने शात भावसे कहा—"हनुमा! अच्छी सोची तुमने, सालमें पचास-साठ कटहल मिलते थे, अुसीको कटवाने आअे हो क्या? हमें तुम्हारी पत्तासी सन्दूक नही चाहिअे। जब नया घर बनवाअेंगे तब बनाअेंगे पत्तासी सन्दूक। अिस पुराने घरमें भला पत्तासी सन्दूककी क्या शोभा?" सरसोतम्माकी बाते सुनकर बूढा हनूम बढअी चुपचाप अुल्टे पैरो लौट गया।

× × ×

नवरात्रके शुरू होते ही सत्या और लक्ष्मीनारायण दोनो घर आ गअे। आने-जानेवाले घरके सभी अुसे "लच्चा!" कहकर ही पुकारते। बच्चेको घर आअे साल भर हुआ। "माँ पर पडा या बापपर", अिस वाद-विवादका निर्णय तब तक नही हो पाया। कुछ लोगोंने तो "चेहरा कोदंड अैतालकी तरह है!"—कहकर अिस बच्चेकी शकल-सूरतकी तुलना अुसके दादासे कर डाली।

सत्याका घरमें पैर रखनेका मुहुर्त अच्छा था, नही तो अितनी बार सरसोतीके आग्रह करनेपर भी भैंस नही लाअी गअी थी। सत्याके आते ही पन्द्रह दिनमें वह आ गअी? "भगवानकी कृपासे अब प्रसूताको दूधके लिअे कष्ट नही होगा।"—अैसा अैतालरामने कहा।

जैसे-जैसे बच्चा बढने लगा, अुसका लाड-प्यार भी बढा। पारोती, सरसोती, माँ, बाप, किसीको अुस बच्चेका जमीनपर रहना अच्छा नही लगता। अैतालके लाड-प्यार और वात्सल्यके अब तक छिपे हुअे नखरे भी अब प्रकट होने लगे, "लच्चाको हवा लग जाअेगी, अुसे धूप लग जाअेगी, जुकाम हो जाअेगा।"—कहकर हर बातमें वे वैद्यक-शास्त्रके सिद्धान्त समझाने लगे।

अैतालको नअी शान सूझ रही थी। जिस दिन पौरोहित्यका काम नही रहता, अुस दिन अैतालरामका दीवानखाना जम जाता। अेक ओर खम्भेसे टेककर सत्याकी गद्दी लगती। लच्चाके कारण सत्या पट्टमहिषी बन गअी

थी, अैसा कहे तो कोअी अतिशयोक्ति न होगी। लच्चाको सोनेकी करधनी मिली थी। अुसको देखकर अैताल बडे गर्वसे "हमारे लच्चाकी करधनी देखकर राजकुमारके मुँहमें भी पानी भर आअेगा!" कहते। जब-तब बुलाअे और बिना बुलाअे अुनके घर आनेवाले शीनसे भी अब यह बात छिपी नही रही। वह अुन दोनोके दरबारमें आकर अुनकी खूब स्तुति-पाठ करता और अुनकी पापड-मुंगोडी अुडानेसे नही चूकता, किन्तु बादमें अुसके मनमें वह आत्मीयता नही रही। अिनका सुख-समाधान देखकर अुसके मनमें डाह होने लगा था। वह कहता था, "गाँवके सभ्रांत लोगोके बच्चोकी कमरमें चाँदीकी करधनी भी नही, फिर दो पैसेकी दक्षिणा माँगनेवाले अिस भिखारीके बच्चेको सोनेकी-करधनीकी क्या जरूरत?"

कभी-कभी जब अैताल "हमारे लच्चाकी करधनी कैसी है" पूछते तो शीना जवाब देता "सोनेकी करधनी है, कैसी क्या है? अुसके अनुरूप है।" और फौरन यह भी कह देता "बच्चेको सोनेकी करधनी पहनाना अच्छा नही, अुसपर नजर रखनी पडती है। बच्चोको सोनेके गहने पहनानेमे अुनकी सुरक्षामें खतरा रहता है।"

"तो यहाँ काबुली पठान थोडे ही रहते हैं!" —कहकर अैताल अुत्तर देता।

: ८ :

अैतालके घर शीनमैय्याका आगमन आजकल बहुत बढ गया था। आते ही सर्वप्रथम लच्चाका क्षेम-समाचार, फिर सत्यभामाकी प्रशसा, अुसके बाद अपने घर-गृहस्थीकी सैकडों कठिनाअियोका पुराण, यह था अुसका यहांका कार्यक्रम। अितने दिनों तक शीनमैय्याकी जबानसे अपनी अेक-दो फुटकर कठिनाअियोका ही जिक्र हुआ था, किंतु अब जब कभी वह मुंह खोलता तो अपनी कठिनाअियोकी ठोस और थोक बाते कहता—"आज चार पायली चावल कम पडा", "शामको सेर भर कुलथीके बिना नही चलेगा", "कल पचास-साठ मडल हेंडोकी जरूरत है।" अिस प्रकारके सैकडो कल्पित प्रसगोकी वह सृष्टि करता। अैतालके ब्याहसे जो अेक रिश्ता और स्नेहपूर्ण बन्धुत्व स्थापित हुआ था, अुसकी वृद्धि अिसी तरह हुअी थी। आअे दिन शीनमैय्याकी अैसी मांगें और अुसकी पूर्ति मामूली बात थी। कभी किसी दिन शामके समय यदि अैतालके हाथमें चार बैंगन देखता, तो अँधेरा होनेतक सत्याके पास आकर "कुलथीका सारम, कटहलके बीजोकी चटनी, कुम्हडोका सांभार, खा-खाकर जी अुकता गया, अेकाध बैंगन हो तो दो ना।" कहकर अुसके पीछे लग जाना और जब तक मांग पूरी नही होती, पीछा नहीं छोडता।

किन्तु अेक बातमें शीनमैय्याकी तारीफ करनी ही पडेगी। अिस प्रकारकी मांग लेकर जब कभी वह आता, सरसोती और पारोतीकी गैर-हाजिरीमें ही आता, क्योंकि वह जानता था कि अैसे समयमें ही सत्याकी स्तुति-स्तोत्र गानेसे अुसका मांगा हुआ वरदान पूरा हो सकता है।

अितनी बार आने-जानेपर भी अुसको अैतालरामकी स्थितिका ठीक अदाजा नही लगा। अुस घरमें पैसा-अधन्नेकी दौड-धूप होनेपर भी चवन्नी-

अठन्नीका नृत्य होता होगा, अैसी कल्पना अुसने कभी नही की। अुसने सोचा था, "न तीनसे कम और न चारसे अधिक अिस ढगसे यह ब्राह्मण किसी तरह अपना ससार चलाता होगा।" किन्तु ब्याहमें अैतालने किसीसे अेक पैसा भी कर्जा न लेते हुअे जिस तरहसे रुपअे फूंके, अुसको देखकर शीनमैय्याको आश्चर्य हुआ, फिर सोचा कि अिस ब्राह्मणने अब तककी अपनी दक्षिणाके सौ डेढ सौ रुपअे कही दबा रखे होगे, सो निकाले। जिस साल ब्याह हुआ, अुस साल अुसके हाथमें अेक पैसा भी नही रहेगा, अुसने अैसे भविष्यका भी अदाज लगाया था, पर जिस दिन पडुमुन्नूरसे सत्याका भाअी आया अैतालने अपनी सुंघनी रखनेकी चांदीकी डिबिया अुसके हाथमें देकर पुन अेक बार अिस दिशामें अुसके विचारोको चचल कर दिया और जब अुसने लच्चाके कमरमें सोनेकी करधनी देखी तब तो अुसका शक और भी बढ गया। सोनेकी करधनी देखकर अुसने अपनी शका-समाधानके लिअे अैतालरामसे सहज ही कहा—"मालूम होता है यह नानाकी दी हुअी है।" किन्तु जब अुसको विश्वास हुआ कि "यह बाबाकी पहनाअी हुअी करधनी है" तो अैतालके सम्बन्धमें अुसके मनमें गौरव अुत्पन्न हुआ। अुसने सोचा, "आसामी तगडा है!" अब अुसने अपनी बुद्धिको अुस ओर दौडाया। "अैतालके पास कितनी रकम होगी?" अुसने अपना गणित आरभ किया। "कोदडरामकी मृत्युको कितने साल हुअे? अुनकी कितने घरोमें जजमानी थी? अिस अवधिमें किसके घरमें ब्याह, जनेअू, शाति आदि शुभ-कार्य हुअे? कौन-कौन मर गअे? सामान्यतया श्राद्धकी कितनी दक्षिणा देते होगे!" सबका हिसाब जोडकर अुसने तय किया "ओहो! अिस हिसाबसे अिस ब्राह्मणके पास कमसे कम हजार-पन्द्रह सौ रुपअे होना चाहिअे। तब तो प्रो नोट लिखवाकर दो-तीन सौ रुपअे मुझे देनेपर अिसके बापका क्या जाअेगा?" वह अिस निर्णयपर पहुँचा और फिर अैतालके घर जाकर नमक, मिर्च तथा मसाला मांगना बिलकुल छोड दिया।

अब रोज दोपहरके भोजनके पश्चात् अुसने अैतालके घर जानेका नियम-सा बना लिया। अैताल और सत्याके गप्प हांकनेका समय देखकर ही वह आता। जब आता तब भला अुसका मुंह कैसे बन्द रहता? "अैताल! तुम्हारी सत्याकी रसोअीका नल-पाक है ही। परसो जो अुसने करेलेका सांभार

बनाया था वैसा साँभार मैंने अपनी जिन्दगीमें कभी नही खाया। पता नहीं, साँभार ही क्या पानी भी छौंक देती तो अमृत बन जाता है।" अित्यादि सत्या-स्तोत्र चलता रहता।

अैतालका दिल भी कभी-कभी अुछल पडता। वे कहते "शीना, पारोती भी काम करनेमें पीछे नही, सरसोती भी कम नही। दोनो रसोअी बनाती हैं। सरसोतीको क्या, रसोअी बनी तो ठीक, अुसके स्वाद-वादकी अुमे चिन्ता नही। सत्याका हाल वैसा नही। अुसकी बनाअी रसोअी छोडनेको जी नही चाहता। सत्याके आनेके बादसे मैं घरमें ठीक तरह खाने लगा हूँ। तुम जानते हो मेरी तो वैदिककी जीभ है। सैकडो घरोमें अच्छी-अच्छी चीजें खाकर आदत बिगड गअी थी। अैसी-वैसी रसोअी खाअी नही जाती, फिर भी सत्याकी रसोअी बडी अच्छी लगती है।" अिस तरह कभी-कभी अैतालका अुछलनेवाला दिल शीनमैय्याके हाथोमें आ जाता।

"यह सच है, यह सच है अुस दिन मुझे भी लगा था : सत्याम्मा! कौन-सा दिन है वह ? देखो न तुमने चनेकी दाल डालकर पायस बनाया था!... हाँ, मैं मरकर भी अुसका स्वाद नही भूलूंगा।" —कहकर शीना अुछलकर अपने हाथमें आअे हुअे अैतालके हृदय पर अपना अधिकार जमा लेता।

अिस प्रकारके सत्या-स्तोत्रका अैतालपर क्या प्रभाव पडता है, अिसका अुसने ठीक अध्ययन कर लिया था। लच्चा अुसको अपने घरके बच्चोसे अधिक प्रिय लगने लगा। कभी-कभी सत्यभामाकी अनुपस्थितिमें किन्तु अुसको सुनाअी दे, वह अैतालसे कहता—"अैताल! पडुमुन्नूरके तुम्हारे सबधियोने कभी खेती-बाडीका काम नहीं किया। अुन्होने कभी सिरपर बोझ नही ढोया। मैं तुम्हारी सत्याकी बात कहता हूँ। अुससे कभी खेतीका काम मत लिया करो। अुसके सिरपर कोअी बोझ मत रखो!" यह सुनकर अैताल गम्भीर भावमे कहता—"शीना! मैं क्या पत्थर हूँ? मुझे जैसे बडे घरकी लडकी लाना आता है, अुसी तरह अुसको सँभालना भी आता है।"

सच पूछा जाय तो जबसे सत्यभामा घरमें आअी, तबसे अैतालके मनमें यही अुधेड-बुन थी कि सत्याको पारोती, सरसोतीकी तरह मिचाअी करने

खाद-घास ढोने, वर्षामें रोपाअी करने, जैसे काममें भेजें या न भेजें। जब बडी पत्नी धूपमें सूखती है, कीचडमें सनती है, तब छोटीको घरमें बिठानेपर लोग क्या कहेंगे? यही सकल्प-विकल्प अुसके मनमें चलते रहते। कअी बार पारोतीका खपना देखकर सत्यभामा स्वय अुसके साथ जाती भी, तब अैतालसे न रोका जाता, न अुसे जाने ही दिया जाता। अैसे समय अुसकी बुद्धि कुशाग्र हो अुठती। वह कहता—"जिसको खेतपर जाना हो जावे, किन्तु अेकको लच्चाके पास रहना ही चाहिअे।" अैसे समय पारोती "सत्या, तू बच्चेके पास बैठी रह, काम तो सदाका है!"—कहकर सत्याको वापस लौटा देती।

सत्याके घरमें आते ही अैताल अुससे गप्प हाँकने बैठ जाता। अुसे देखकर वह दिन पर दिन अधिकाधिक तरुण बनता जाता। अुससे गप्प हाँकनेके लिअे कभी कुछ न कुछ बहाना बनाकर वह खेती-वाडीके कामसे भी जी चुरा जाता। अुसकी यह पक्षपात बुद्धि सरसोतीकी नजरोंमें आ गअी। घरमें जब कपडे आते, तब बडीके लिअे डेढ रुपअेकी साडी लानेपर छोटीके लिअे दो रुपअेकी अवश्य आती। तब सरसोती "भैया! अिसका क्या दाम, और अुसका क्या दाम!" पूछकर अुसको डाँटती भी, परन्तु सत्यभामाके मायकेवालोंके सामने "मैं पैसेवाला हूँ" अिसका प्रदर्शन करनेकी भावनासे पहिली-दूसरीमें पक्षपात बढता ही गया।

कुछ भी हो अिस नअी धारणामें अुत्साहसे अैतालकी वकालत करनेवाला अगर कोअी था, तो शोनमैय्या ही था। सत्याको अिस घरमें आअे दो साल भी नही हुअे कि शीनाने अैतालसे दो सौ रुपयोंकी माँग भी की, आग्रह किया और अैतालने "शीना! कर्जा मौतका फदा है!"—कहकर अुपदेश दिया, परन्तु अुसने पाँच सौकी आवश्यकताका हिसाब बताकर "अगर तुम्हे विश्वास न हो तो दो अच्छे आसामियोंकी जमानत भी देता हूँ।"—कहते-कहते तीन रुपया सैकडा सूदपर कर्ज ले ही लिया।

कर्जा लिअे छह महीने हो गअे, किन्तु जिन कामोंके लिअे कर्ज लेनेका बहाना किया था, अुसमेंसे अेक भी नही हुआ। अुन दिनो कोडी गाँवमें अेक भी खपरैलवाला मकान नही था, सबकी सब घासकी झोपडियाँ थी। समुद्रसे

सीधे आनेवाली हवाके तेज झोकोंसे घरकी खपरैल अुड सकती है, सबकी यही मान्यता थी। बच्चेकी कमरमें सोनेकी करधनी पहनानेवाले रामअैतालको भी घरपर खपरैल डलवानेकी बात नहीं सूझी, परन्तु अैसी स्थितिमें भी शीनाको खपरैलकी छत बनवानेकी धुन सवार हुअी। अैतालकी बरात देखकर अुसे दूसरा व्याह करनेकी भी सूझी, किन्तु अुसकी घरवाली पारोतीकी तरह बावली नहीं थी, वह तो वाग्देवी थी, जो काली बन जाती तो शीनाके कान पकडकर अुठा-बैठा देती। अिसमे अुसने अपनी विवाह-सम्बन्धी महत्वाकाक्षाका रूप ही बदल दिया। अपने घरमें अुत्तराभिमुख अेक बडा फाटक बनवाकर अुसने अेक बरामदा बनानेका निश्चय किया। बरामदेकी नीव, दीवारे सब मिट्टीकी होनेपर भी खभे अुसने कटहलकी लकडीके बनानेका तय किया। अुसके लिअे बूढा हनुम बढअी तो अुसके सामने था ही। अुसको स्थानीय कुम्हारके खपरे पसद नही थे। तीसरे नम्बरके होनेपर भी अुसने मेंगलूरी खपरैल लानेको सोचा। अुसके बाद बागके ताड देखे। अुनमेंसे दो-चार झाड काटेंगे, तो छतके लिअे भरपूर लकडी हो जाअेगी। अिस प्रकार मन ही मन अुसने सारा आयोजन कर डाला।

जिस दिन अैतालके घरमे कर्ज मिलनेका निश्चय हुआ, अुसी दिनसे शीनाने अपनी व्यवस्था करनी शुरू कर दी। वह, अुसकी पत्नी और तीन बच्चे सबने मिलकर, जब समय मिला तब, मिट्टी ढोकर अपने पुराने घरके सामने नअे बरामदेकी नीव डाली। अुन्ही लोगोने मिट्टी पीटकर जमीन कडी की। अब दीवार अुठानेका काम था। अेक ही राजको कामपर बुलाकर अुसीकी सहायतासे सब काम अिन लोगोने किया। बडा फाटक बनाना था। अितना बडा फाटक बनाना आसान काम न था। फाटकका शिरोभाग कटहलकी लकडीका, अुसीके खभे और अुसीके दरवाजे चाहिअे थे। अुसके बागमें कटहलके पेड नहीं थे। अुसने जबसे यह सपना देखना शुरू किया, तबसे अिसी चितामें था कि कटहलका पेड कहाँ मिलेगा, शहतीर कहाँ मिलेगी, कहाँ क्या पडा है—सबपर नजर रखी। कोअी निर्माण-कार्य योही नही होता। अेक दिन वह बारकूर गया था। वहाँ किसीसे बातचीत करते समय अुसको पता चला कि वहाँसे तीन मीलपर किसीके पास कटहलका पेड तैयार

है। बस, अिस खबरके पीछे-पीछे वह अुस गाँवमें पहुँचा। वहाँ पूछ-ताछकर सब बातें तय कर आया। पेडकी कीमत देनेकी अिच्छा नहीं थी। बदलेमें अुसने अपने घरके दस ताड पेड वहाँ तक पहुँचाकर सब प्रबन्ध कर लिया। अब घरके सामने कटहलका बडा तना भी आ पडा।

लकडीका काम किससे करावे? अुस गाँवके मशहूर बढअी दो थे। अेक बूढा हनुम बढअी और दूसरा नागप्पा। बूढ़े बढअीका काम तो मँहगा पडेगा, अिसीलिअे जवान नागप्पाको बुलाना फायदेमन्द होगा। अैसा सोचकर बार-बार अुसके घरपर जा, "सारे कामकी आधी मजूरी अिस साल दूँगा भगवानने चाहा तो आधी अगले साल होलीके दिनोंमें दूँगा।" कहकर अुसको कामके लिअे राजी किया। अिस तरह बरामदेका बडा फाटक खंभे, छत, आदि लकडीका काम पूरा हुआ और अैतालके यहाँसे दो सौ रुपअे हाथपर पडते ही वह हँगारकट्टेकी बन्दरगाह पर गया। वहाँ सभी बडे-बड़े व्यापारियोंसे मिलकर खपरैलका भाव पूछकर देखा। बन्दरगाह पर खडे मचवे और जहाजवालोंसे बातें की। आखिर, "सब बातचीत करके ही तो कीमत तै होती है" जैसे-तैसे "आधा अब और आधा अगले छह महीनेमें" देनेको कहकर खपरैल खरीदी। अब अुसको ढोनेकी समस्या अुपस्थित हुअी। वहीं धक्केपर जो मोगेर थे, अुनके पीछे लगा। बहकाया, समझाया और धमकाकर अुनसे अपना काम निकाल ही लिया। अिस तरह अपना सपना पूरा होनेतक अुसने अुस गाँवके किसी कारीगरको नींद नहीं लेने दी।

फाटकका शिरोभाग तराशते समय बढअीको बडा कष्ट हुआ। "किसीको लगा हुआ भूत तो जरा रुक सकता है, किन्तु शीनप्पा, आपका तकाजा नहीं रुकता।"—नागप्पा बढअीने कहा। अुसने केवल सादा शिरोभाग बताया तो शीनप्पा अुसकी क्यों सुनने लगा? अुसको तो कमल, फूल, तोता, सिंहका मुँह, गणेशजी, बेल-बूटे न जाने और किन-किन बातोंकी जरूरत थी। अैसे काम बार-बार थोडे ही होते हैं। जब बनाना है तो अच्छी तरह बनाना चाहिअे। यह सब सुनकर "अैसे काममें समय, मजदूरी सभी ज्यादा लगेंगे।" बढअीने कहा।

"अैसा कहकर मुझे मत डराओ। मैं विना गाँठवाला कटहलका पेड लाया हूँ। सरासर मक्खनकी तरह तराशा जा सकता है।"—कहकर शीनाने कोहराम मचा दिया।

अेक दिन वाप-वेटोंने छतपर खपरैल छाना शुरू किया। वाप-दादोंका धंधा तो था नहीं, खपरैल ठीक तरह नहीं वैठी तो फिर अुतारा, फिर चढ़ाया, रात भर चढ़ाव-अुतार होकर आखिर काम पूरा हुआ। काम होनेपर "खपरैलका मकान कैसा लगता है" यह देखनेके लिअे मैदानमें अुतरा। खेतोंमें जाकर देखा, नालेके किनारे तक गया। "धुत! रातके समय खपरैलका मकान क्या और घासका क्या, सव अेक-सा ही दीखता है, कल सुवह देखेंगे।" कहकर सो गया। पर नींद किसे आती? सुबह कुल्ला करनेके पहले चारों ओरसे देखा कि खपरैलका घर कैसा लगता है। अुसने अनुभव किया कि धूप पडनेपर फाटककी शान किसी राजमहलसे कम नहीं। वडे प्रसन्न मन घर आया। फिर "सफाअी-वफाअी होनेके वाद तो पारपल्लीके सभ्रात वसुदेवकजीका वँगला भी हमारे वँगलेके सामने फीका पड़ जाअेगा।" मनमें यह निश्चय कर लिया।

सफाअी-वफाअी होनेपर, कोटके वाजारसे घर लौटे हुअे शीनप्पाके युवराजने अेक नअी खवर दी। अुसने कहा, "पिताजी! हमारी खपरैलोंकी छत अुत्तरमें तक्कटसे, दक्षिणमें हंगारकट्टे वंडसालेसे, पूरवमें सास्तानीसे भी दीखती है।" यह सव सुनकर शीनप्पाको अैसा आनन्द हुआ मानो अुसने अश्वमेध-यज्ञ किया हो।

अेक दिन अैताल पुरोहिताअीके कामके लिअे नदीके पूर्वके अेक गाँवमें गया था। वहाँ जानेपर अुसकी अपनी सत्या याद आअी और जल्दी-जल्दी घर लौटा। जव अुसने नाला पार करनेके लिअे नालेमें पैर रखा तो सामने खपरैलके मकानपर दृष्टि पडी। "अरे हमारे गाँवमें किसने अपनी छतपर खपरैल डाली!"— अुसके मनमें विचार आया। अुसको आश्चर्य हुआ। नाला पार करते ही अुसके पैर अुसी तरफ पडे। "किसका वँगला होगा यह?" मनमें अेक ही विचार था, किन्तु धानकी क्यारियोंमें किसीकी गायें चर रही थीं। झट अुनको भगाने चल पडा और अिसीमें पूर्व निश्चित वात भूल गया। गायोंको भगानेके वाद सीधा अपने घर चला गया।

यह सब होनेके बाद अेक दिन पता नही क्यो अैतालको शीनकी याद आअी। "सत्या! जबसे शीन रुपया ले गया, तबसे आज तक अुसने मुँह नही दिखाया, क्या रुपअे नही लौटाअेगा?"—कहकर अैतालने सशय व्यक्त किया। अिसी समय शीन वहाँ पहुँच गया। "अैताल! शीन भाग गया, या है, अैसा सन्देह आपको क्यों हुआ?"—आते ही शीनने पूछा। तब अत्यत चतुराअीसे सत्याने कहा—"शीनप्पा! तुम्हे देखकर ही अिन्होने अैसा कहा था।" अैतालने भी जोरसे हँसकर शीनप्पाका आतिथ्य किया। अैतालके मनमें अपनी सत्याकी व्यवहार-पटुतापर बडा गर्व हुआ। "अैसी पत्नी हो तो खजानेकी ताली भी अुसीके हाथमें दे सकते हैं!"—अैसा विचार अुसके मनमें चमका, किन्तु ताली तो अुसने अपने जनेअूमें ही रहने दी।

शीनसे भी बातचीत करनी थी। अुसने शीनके सवालके जवाबमें कहा, "शीना! तुम ही देखो न! जो दिनमें चार-चार बार आता था, वह आठ दिन तक नही आअे, तो अुसके लिअे क्या कहा जाय!"

शीनाने अपना पुराण-प्रवचन प्रारभ कर दिया। "हमारे घरकी समस्याअें अेक-दो नही हैं। घरके सामनेवाला वह पुराना गोठ गिराकर अेक बरामदा और फाटक बनवानेका प्रबन्ध करना था। नही तो जो हमारा घर देखता, कहता—"शीना! तेरा मकान तो भूतका डेरा है। घरमें चार बच्चे हैं, वर्षामें सोनेके लिअे जगह चाहिअे या नही!" कहकर अुसने प्रस्तावना शुरू कर दी।

"हाँ भाअी! तुमने जब गोठ और बरामदा कहा तो अेक बात याद आअी। दो-चार रोज पहिले कोटके बजारसे आते समय, गाँवमें मैंने अेक खपरैलका मकान देखा, बडा शानदार था। अैसा कौन है बाबा, जिसके पास अितने ज्यादा रुपअे हो गअे हैं। नदीमुखसे जब समुद्री हवाके तेज झोके आअेंगे तब वर्षाकालमें अेक भी खपरैल नही बचेगी।"—अैतालने खपरैलके मकानपर अपनी राय दी।

अब शीनाको बोलना पडा, अपने आप सब बात कहनेके लिअे अुसे सदर्भ की भी जरूरत थी किन्तु मुँह नहीं खुला। अुसने बात बदलनेके लिअे पूछा—"वह सब जाने दो, तुम्हारा लच्चा कहाँ है? अुसको दखेनेके पहले चैन नही।'

वह अितना कहकर ही नहीं रुका, अुसने आगे कहना शुरू किया—"और अेक बातमें आपकी राय लेनी है। मैं अपने सबसे बडे लडकेको बेंगलूर भेजनेकी सोचता हूँ। वहाँ अपने हेर्लेका होटल है। खाना-पीना और चार-चार रुपअे देता है। मैंने अुससे बाते की थीं। अुसने हमारे नरसिंगको भेजनेके लिअे कहा है। मैंने सोचा, थोडा कर्ज भी है, अुस ऋणसे भी मुक्त हो जाअेंगे। फिर जब चार-चार बच्चे हैं, तो सबके सब घरमें बैठकर क्या करेंगे?"

—"तुम्हे क्या पागलपन सवार हुआ है? पता नही किस-किस जातिके लोग वहाँ खानेको आते हैं, अुन सबकी जूठन अुठानेके लिअे ही क्या भगवानने हमें ब्राह्मण बनाया है! हेर्लेको क्या अन्न-विक्रयसे पैसा कमानेपर भी कुछ भला-बुरा नही, अुसको तो बस चाँदीसे मतलब! . "

—अैताल! हेर्लेका होटेल बेंगलूरमें अत्यत प्रसिद्ध होटल है। तिरुपति जाकर आते समय जो वहाँ गअे वे सब यही कहते है। कहते हैं बेंगलूर सिटीमें अिसका खूब मान है और होटलमें केवल ब्राह्मणोको खाना मिलता है। तुम ही कहो घरमें बैठे-बैठे कैसे पेट भरेगा? मेरे पास केवल आठ खडी चावलकी जमीन हैं। अुससे क्या बनेगा? कल मेरी आँखें मुंद जानेके बाद अगर हिस्से हुअे तो हर अेक हिस्सेमें दो खडी चावलका खेत पडेगा। अिससे वे क्या खाअेंगे? ... आपद धर्म अकालमें विश्वामित्रने भी चाडालके घरके मुरदार कुत्तेका मांस खाया था? अभी, ऋषि, महर्षियोकी भी यह हालत है, तब औरोकी क्या? और तुम अन्न-विक्रयकी बात कहते हो, सो पकाया हुआ चावल बेंचना और कच्चा चावल बेंचना अिसमें क्या अन्तर? आखिर हम धान्य अुबालकर कूटा हुआ अुबला चावल बेंचते ही हे न!"

—"तुम्हारी जबान क्या अुस्तरा है। मैंने तो मजाक किया था। तुम अपने लडकेको बेंगलूर भेजो या मैसूर, कही भी रहे, सुखसे रहे, प्रसन्न रहे, यही हमारी कामना है। मुझे अुसका कुछ नही, किन्तु घरसे अितनी दूर कही बीमार पडा, कुछ हुआ, तो वहाँ देखनेवाला कौन? भगवान करे अैसा कुछ न हो, फिर भी बुरा सोचकर भला सोचना चाहिअे। वैसे कोअी बीमारी हुअी तो .यहाँसे शिवमोग्गा पहुँचने तक चार दिन लगते हैं। यह सारी बाते सोच लेनी चाहिअे।"—अैतालने कहा।

"सारा ऋणानुबंध है। वहाँका पानी पीना अगर माथेपर लिखा है, तो वहाँका पानी पीना ही पडेगा और घरके पानीका ऋणानुबंध है तो वह है ही, किन्तु जल्दी वैसा डर नही। हमारी वाग्देवीके भाओीका लडका वहाँ है कुछ हुआ तो वह देख लेगा। सोचा, वहाँ भेजनेके पहिले गलेमें जनेअू डालकर भेजें।"—शीनने अपनी वकालत छेडी।

"अच्छा! तुम्हारे नरसिंहका अुपनयन है। होने दो, वह तो पिछले साल ही होना चाहिअे था, पर पिछले साल गुरु बल नहीं था अिसलिअे रुकना पडा।"

"पिछले वर्ष पैसा भी कहाँ था! अेक खडी चावलका छह चवन्नी भाव था, तब कैसे होता? सरकारका जमीन-महसूल देकर बचेगा तो क्या बचेगा? यह साल जरा तुमने अनुकूल कर दिया। तुम्हारी मददसे घरमें पडे रहनेको अेक बरामदा भी बन गया। अुसीमें अेक होमकर अुसका अुपनयन कर डाले तो वह भी तुम्हारी कृपासे कही मजूरीकर ऋणसे अुऋण हो जायगा। जाने दो, घरमें बहुत काम है। मैं तो अुपनयनका न्यौता देने आया था। आनेवाले सोमवारको अुसका अुपनयन है, नजदीक है, कही दूर जानेका तो है नही। दूसरे पहर तक खाना-वाना हो जायगा। घरसे सबको आना चाहिअे। मुझे तो बडी-बडी बाते करना आता नहीं। जो कुछ है मनमें है।"

"अरे शीना! तू यह सब क्या बकता है! तू नही बुलाता तो भी तेरे घर बाजा सुनकर हम सब दौडे आते! क्या तू पराया है?"

"मैं जानता हूँ। तुममें अितनी आत्मीयता है, अिसीलिअे आते समय अक्षतोकी कटोरी भी नही लाया। वैसे ही कह दिया। तुम सबने आकर आशीर्वाद दिया तो बेचारेका ब्राह्मणत्व सफल होगा।"

अिस प्रकार प्रस्तावनासे अुपसंहार तकका सब पुराण कहकर शीन घर जानेके लिअे अुठ खड़ा हुआ, तभी अुसके ध्यानमें आया अरे! सत्यभामा यहाँ नहीं है। "ओ हो! पडुमुन्नूरकी मालकिन कही नही दीखती!" कहकर अन्दर रसोअीघर तक जा वहाँ अुसने अेक बार अपनी पूरी रामायण सुनाअी और सत्यभामाको न्यौता देकर बाहर आया।

घर जाते समय खेतमें पारोती और सरसोतीसे भेंट हुअी। अुनको भी अेक लम्बा न्योता दिया। और, "सोमवारको घरसे सबको आना है अपना ही घर समझना छोटासा अुपनयन संस्कार है गरीबका न्योता ."—कहते-कहते चला गया।

"अुपनयन है या गृह-प्रवेश?"—सरसोतीने पूछा।

"गृह-प्रवेश क्या?' सब अुसीमें। भूतके डेरेपर चार खपरैल डाली और क्या?"—कहते दौडा।

पारोती-सरसोती हँसती हुअी घर आअी। अैतालने दो सौ रुपये कर्ज दिअे, यह अुनको भी नही मालूम था।

अुपनयनका दिन सोमवार आया। "जल्दी अुठकर शीनके घर चलो, वरातियोंकी तरह वक्तपर जाना अच्छा नही!"—कहकर अैतालने अपना मतव्य प्रकट किया। तब सरसोतीने "सबके अितनी जल्दी जानेसे क्या होगा? सत्या, तुम और बच्चा पहर दिन बीतनेपर आना, मै और पारोती अभी जाती हूँ। वहाँ कोअी काम होगा। व्याहके चार दिन अुन दोनोंने खूब अुपकार किअे हैं।"—कहकर जानेकी तैयारी की। अैतालने भी मन ही मन यह भाँपकर कि "वह अपनी नअी पत्नीके साथ बादशाही ठाठसे जाअेगा।" अपनी 'अनुमति' दे दी। सरसोती नहाने-धोनेसे निपटकर जानेको तैयार हुअी। अुसके पीछे-पीछे पारोती भी। पारोतीने जाते समय अपने पतिको अुपनयनके वटुकी भिक्षामें देनेके लिअे कुछ ले आनेका स्मरण दिलाया, तब अैतालने "मैं क्या वृद्ध हूँ?"—कहकर अुत्तर दिया।

पहर भर दिन चढे अैताल भी सत्या और लच्चाके साथ शीनाके घर जानेके लिअे निकला। शीनाका मकान वहाँसे सौ-दो-सौ गजसे अधिक फासलेपर नहीं था। फिर भी ससुराल जानेकी-सी शान थी। जब बडी शानसे नअी पत्नीके साथ कुछ कदम आगे बढा, ताडोंका बाग पार किया, तो अुसको खपरैलकी छत और बडे फाटकके दर्शन हुअे। फाटकपर लगाअी हुअी आमके पत्तोंकी वन्दनवार बडी सुन्दर मालूम होती थी। यह देखकर अैताल वहीं खेतकी मेंडपर चकित-सा खडा रह गया। "अितना नजदीक होनेपर भी अितने दिन तक यह मेरी नजरोंमें क्यों नही आया?" अुसके

मनमें यही विचार था। तब सत्याने कहा—"ओ! शीनप्पाने तो बडा फाटक ही खडा कर दिया!" दोनो कुछ कदम आगे बढे। फिर सत्या बोली, "आपने क्या कहा, अितने दिन तक मेरी नजरोमें क्यो नही आया? बीचमें ताडका बाग था और हमारे घरके सामने रेतीली टेकरी है न!" कहके सत्याने शका-समाधान किया। "हाँ, कोअी कर्ज दे, तो चाहे जितना बड़ा फाटक खडा कर सकते हैं।"—कहकर अैतालने अुत्तर दिया। अिसी समय लच्चाने अुपनयनके घरका बाजा सुना। बस, अुसने तो "जहाँ पें-पें होता है, वहाँ चलो" की रट लगाअी। दोनो तेजीसे चलने लगे। अैताल अपनी नअी पत्नीके साथ वंदनवारसे सजाअे बडे फाटकके अन्दर गया। अन्दर जाते समय फाटकपर जो नक्काशीका काम था, अुसपर आँखें जमे बिना नहीं रहीं। "हाँ.. बहुत रुपये फूंके होगे!" मन ही मन कहा और जाकर अपनी जगह पर बैठ गया।

पहलेसे आअी हुअी पारोती, सरसोती तो यहाँ आते ही काममें लग गअी थी। लच्चाको गोदमें लेकर सत्यभामा महिलावृन्दमें जा बैठी। सबने मुन्नाके रंग-रूपका वर्णन शुरू किया। पुराने समयकी सुहागिनियोंने "सत्या, तुम अेक गीत गाओ। देखें कैसा गाती हो?"—कहकर आग्रह किया। कुछने अुसके गहनोपर ध्यान देकर पीहरके कौनसे और मायकेके कौनसे हैं, अिसका विश्लेषण करना प्रारभ किया।

औपचारिक रूपसे अैतालने अन्दर जाकर कहा—"शीना! मेरे लिअे क्या काम है? मै तैयार हूँ।" और शीनाने भी वैसे ही "अैतालजी! यहाँ आअे ही कितने लोग हैं? पचास-साठ होगे, अुनका काम ही कितना! हम घरके लोग ही सब कर लेगे। तुम बाहर सभामें बैठो। अिसीमें शोभा है।"—कहकर अुसका सम्मान किया। अैतालने वही बडे दरवाजेके पास अपना आसन जमा दिया। शीनाके छोटेसे बच्चेने ताडपत्रके दो-चार पखे लाकर वहाँ रख दिअे और किसीने बाहरसे आअे हुअे मेहमानोको गुड, अिलायची और काली मिर्च डाला हुआ शरबत ला दिया। अुसको पीकर किसीने कहा—"गर्मीके दिनोमें तो गुड़का शरबत मानो अमृत है। हमारे पार-पल्लीके सम्राट वासुदेवके यहाँ शानके लिअे चीनी और नीबूका शरबत

बनाकर देते हैं, अुस चीनीमें भला क्या जान है। गुडमें जो ताकत है, शीतलता है, वह भला चीनीमें कहाँ ?"

अभ्यागतोमेंसे कुछ लोगोने तो "शीनमय्या तो वड़ा होशियार है कुम्हारका काम आता तो खपरैल भी यही घरमें बना लेता। अितनी सब दौड-धूप और हिम्मत करके वेचारेने अुपनयनके साथ नअे वरामदेका होम भी निपटा लिया। वडा चतुर वुद्धिमान है!"—कहकर अुसकी तारीफ की।

और किसीने "शीनप्पाकी हिम्मत तुमने अभी क्या देखी ? अैतालके व्याहका मुखियापन करना नहीं देखा क्या ? शीनप्पाका रोव देखकर ही पडुमुन्नूर वालोंने तीन सौ कच्चे नारियल अुतारकर ब्रह्म-सभाका स्वागत किया था और कोअी वरातका मुखिया होता तो गुडका पानी पिलाकर ही निपटा देते। मैंने तभी कहा था हजार रुपया मालगुजारी देनेवालोंमें भी शीनमय्या जैसा रोव नही आ सकता।"—कहकर अपनी स्वीकृति दी।

फिर अुमीने कहा—"अिसका सबूत है यह वडा फाटक। विना किसीसे अेक पैसा भी कर्ज लिअे तीन ही महीनेके अन्दर अितना वडा काम कर दिखाना क्या किसीके वूतेकी वात है ? हमारे अिस कोडि गाँवमें अैमा दिलवाला कौन है ?"

—जानेवाले कुछ भी कहे, अैताल मौन था। जव कभी शीनप्पाकी वात शुरू होती, वह गाँवकी कोअी टेढी-मेढी वात अुठाता, फिर भी अुसकी नजर अुम फाटकके शिरोभाग, आदिपर ही जमी रहती।

भोज हुआ। चनेकी दालका अच्छा पूरन भरकर पूरणपूरी वनाअी गअी थी, और वह यथेच्छ परोसी भी गअी। आधी पूरण-पोली खानेपर ही आज अैतालका जी भर गया। शीनमय्याने यह देखकर परोसनेवालेसे "अरे! रामअैतालके पत्तेपर चार पोली परसो, वही तो हमारे धन-कुवेर हैं।" कहकर आग्रह किया। तव "क्यों? क्या ?" कहकर गाँववाले अैतालकी ओर टकटकी लगाकर देखने लगे। परोसनेवालेने अुनके पत्तेपर चार पूरण-पूरी परोसकर अुसपर घी डाला। किन्तु ठीक अेक पूरणपूरी भी अैतालके गलेके नीचे नही अुतरी।

भोज हुआ। कोटके सारे लोगोंने शीनप्पाकी अुस भोजकी मुक्त कंठसे प्रशंसा की। अब मंत्रदाताओंका समय आया। शीनप्पाने वटुकको आगेकर ब्रह्म-सभामें प्रार्थना की "मुन्नाको सन्ध्या और अग्निहोत्र ठीक पाठ होनेपर मैंने वेंगलूर भेजनेका निश्चय किया है, कृपया आप सब अुसको आशीर्वाद दीजिअे।" वटुने वहाँ बैठे बडे-बडे ब्राह्मणोंको चरण छूकर प्रणाम किया। अिन सब समारंभोंमें अैताल "पद्मपत्रमिवाभस" रहे, यह बात शीनमैय्याने ताड ली।

अुपनयनके अुस समारम्भसे निपटकर अैताल अपने घर आया। अुसके मनमें शीनमय्याका वह फाटक और खपरैल चुभ रहा था। शीनमय्याकी अुस शानको नतमस्तक करनेके लिअे अुसके मनमें अेक दुमजिला बँगला बनानेकी बात आअी। शीनमय्या अब भी अुसके घर आता-जाता रहता था। यद्यपि शीनमय्याको कर्ज दिअे छह महीने ही हुअे थे, फिर भी अैतालने अुसे किसी तरह जल्दी वसूल करनेकी बात सोची।

अैतालरामने कोअी बहाना करके जैसे ही रुपयोंके बारेमें पूछना शुरू किया, वैसे ही शीनमय्याने अपनी राम कहानी या पुराण-कथा प्रारम्भ कर दी। "अगर अिस बँगले और फाटककी शेखीके लिअे कर्ज माँग रहा है, अिसका पता होता, तो क्या मैं कर्ज देता ?" यह भी अैतालके मुखसे कअी बार निकला। गाँवके किसी ताड-वृक्षने यह खबर शीनमैय्याको भी दी। शीनमैय्याने भी "कोडिमें अब तक किसीने खपरैल नहीं डाली और मैंने डाल दी, अिसपर अिस भिखमँगे ब्राह्मणके पेटमें आग लगी है"—कहकर जवाब दिया। आगे वह यह भी कहनेसे नहीं चूका "आखिर वैदिककी जाति ही क्या!" यों देखा जाय तो, वह भी स्वयं वैदिक ही था। किन्तु अुसका वैदिकसे मतलब था भिक्षुक, पुरोहिताअी करनेवाला। यह खबर दूसरे किसी ताड-वृक्षने अैतालतक पहुँचा दी। अैताल क्रोधमें जलने लगा। वह कहने लगे "सत्या, देखा तूने ? साँपको दूध पिलानेसे क्या लाभ ? अिस कुत्तेको मैंने कर्ज दिया था। अब कहने लगा है अुसके खपरैलकी शान देखकर मेरे पेटमें आग लगी है!" अगर मेरे मनमें आअे, तो अिसके बाप जैसी खपरैलका मकान बनवानेकी शक्ति मुझमें है। वह क्रोधसे आग बबूला हो गया था।

अिस क्रोध और ताडवसे सरसोती-पारोतीको भी कर्ज देनेकी खबर मिल गअी। अेक दिन शामको सरसोतीने सत्यभामासे धीरे-धीरे "कब कर्जा दिया, कितना दिया ?" सब पूछ लिया। यह सब पूछकर वह चुप नही बैठी। भैयाको सुनाअी दे अितनी जोरसे अुसने ताने मारने शुरू किअे, "पारोती, सहोदरा बहन किसी कामकी नही रही, चार दिनकी आअी जवान पत्नी ही सब कुछ हो गअी है। जाने दो हमें क्या पडी है ?......अुस बीबीकी राय लेकर ही शीनमैय्याको कर्जा दिया गया होगा, तभी तो रोज कहा करता था, "सत्याकी रसोअी अैसी है, सत्याका हाथ वैसा है" अब दिखाया या नही कि हाथ कैसा है। पहले तारीफ करता-करता नहीं थकता था, अब गालियाँ देते-देते नहीं थकता।

अैताल सरसोतीसे द्वद्व-युद्धमें नही जीत सकता था। वह खडा भी नहीं रह सका और बैठे-बैठे बोला—"कहाँ जाअेगा ? ब्रह्मलोक गया तो भी नही छोडूंगा। मेरा नाम अैतालराम है, अैतालराम।"

: ९ :

शीनप्पा और अैतालका वैमनस्य बढता गया। धीरे-धीरे अुनमें परस्पर बातचीत बन्द हो गअी। अैतालराम कहते थे, "पता नही किस-किसके पैसेसे फाटक खडा किया है," और जवाबमें शीनप्पा कहता, "पेट काटकर कौडी-कौडी जमा की है!" दोनो अपने-अपने घरपर बैठे बाते करते और कभी कोअी ताड या माड अिसकी बात अुसको और अुसकी बात अिसको पहुँचाता रहता। अैतालको अब दिअे रुपयोकी फिक्र हुअी। "अिसी अगहनमें सब पैसे दे दो! बेंगलूरमें जाके तुम्हारे लडके फावडोसे पैसे कमानेमें लगे है, तब लिअे हुअे रुपयोके लिअे मुझे क्यो नचाता है?" अैतालने यह कहनेका निश्चय किया।

अुस सालका कोडी-अुत्सव अैतालके जीवनमें बडा महत्व रखता था। कोडी गाँवसे दस मीलपर कोटेश्वर नामक अेक बडा गाँव है। वहाँ कोटि-लिंगेश्वर महादेवका मन्दिर है। कहते है खुद पाडवोने अपनी माँ कुन्तीकी आज्ञासे अिस मन्दिरको बनवाया था। अुस विशाल मन्दिरके सामने अेक बडा तालाब है। मन्दिरमें सालमें अेक बार बडा अुत्सव होता है। अिसीके अिर्द-गिर्दके गाँववालोका मेला लगता है। यह कोडीका अुत्सव दो कारणोंसे अैतालरामके लिअे विशेष महत्व रखता है, अेक तो शीनप्पा, हाँ बाबा अब बडा आदमी हो गया है, शीना कहनेसे कैसे चलेगा! वह अिसी दिन सब रकम बेबाक करनेवाला था। दूसरे घरमें अेक नअी समस्या आ खडी हुअी थी।

अैतालके घरकी हालतसे परिचित होनेपर ही हम अुस समस्याको समझ पाअेंगे। पारोतीका अपना बच्चा नहीं था। अिससे वह सत्याके

लच्चापर अपना सारा प्यार बरसाती थी। साथ-साथ "अिस घरमें मैं सुनीति हूँ और सत्या सुरुचि," यह भाव भी अुसके मनमें बढता गया। अिसमें शक नही अैतालने कभी अुसको कोअी कडवी बात नही कही, किन्तु जबसे सत्या आअी अैतालकी अुसपर प्रेम-वर्षा देखकर अुसके मनमें धीरे-धीरे "यह मेरा अनादर है," यह बात जड पकडने लगी। यही भावना आगे चलकर अुसकी चिन्ताका कारण बनी। किन्तु पारोती अपने जीवनमें अैसे कअी बडे-बडे कष्ट सह चुकी थी, वह अिन मामूली बातोंसे क्यों घबडाती?

लच्चा बढता गया। अुसका तीसरा वर्ष चल रहा था। "मरनेके बाद मेरी सद्गति दिलानेके लिअे जन्मा यह देवदूत है!" अैसी भावना अैतालके मनमें दृढ होती जा रही थी। लच्चा अब चलने लगा था। चलनेमें अुसे खूब आनन्द आता था। अुसने रसोअीघर और आँगन, खेत, बाग, पिछवाडेकी टेंकरी, समुद्रका किनारा और हरी-हरी दूबके कालीनपर घूमनेवाली बडी माँका पीछा करना शुरू किया। रसोअी बनाते समय, घरका काम देखते समय, छोटे बच्चेकी जिद्दसे बचना क्या सरल काम है? यह तो सत्यभामाके अनुकूल ही हुआ। वह अेक बार अपनी बडी माँकी गोदमें चढता, तो रास्ते भर "अवा, बूचो, फू, काका, मुअी, कोको... को" कहता प्यारसे बातें करता जाता। बडी माँ जो-जो काम करती, अुस सबका अनुकरण करता। अिससे लच्चाका बडी माँसे अितना प्यार हो गया कि खाना, नहाना, सोना बिना बडी माँके कुछ भी नहीं होता। प्रथम तो सत्यभामाको लगा, चलो अच्छा हुआ, किन्तु आगे "मेरा बच्चा और अुसपर मेरा अधिकार नहीं!" अिस भावनाने अीर्ष्या पैदा कर दी।

बडी माँ पानी पीते समय थोडा-सा गुड जब अुसके मुँहमें भी डाल देती, तो सत्यभामा " पेटमें कीडे हो गअे तो दाँत खराब हो गअे तो. " कहने लगती। अपने खाते समय बडी माँने थोडा-सा अुसके सामने रखा तो "बेर-अबेर चाहे जो खिलाके अुसका पेट खराब करती हो!" कहकर अपना असंतोष व्यक्त करने लगती। कभी-कभी अपने साथ जब वह लच्चाको बाहर ले जाती तब "ठंडी हवामें बच्चेको घुमाकर बुखार पकड-वाअेगी" कहकर गुनगुनाने लगती। अेक दिन जब वह लच्चाको साथ

लेकर वाहर जा रही थी, तव खुद अैतालने ही "पारोती ! अुसको वाहर क्यो ले जा रही है ? वाहर धूप लग जायगी। हवा लग जायगी।" कहकर वाहर ले जाना वन्द कर दिया।

किन्तु लच्चाको रसोअीघर, आँगन, वरामदेमें मजा नही आता। माँ जव अन्दर ही काम करती, तो वेचारा क्या करता ? अुसने आँख चुराकर गिरते-पडते खेतमें अुतरना शुरू कर दिया। रोते-रोते "वडी माँ !" कहकर पुकारना शुरू किया।

ठडके दिनोमें अेक दिन सुवह-सुवह सरसोती और पारोती कुलथीके खेतमें जाकर ओससे भीगे कुलथीके पेड अुखाडनेमें व्यस्त थी। सुवह होते ही लच्चा अपनी चटाअीपरसे अुठा। अुठते ही वडी माँका दर्शन नही हुआ, अिसलिअे "वडी माँ !" कहके अुसने चीखना शुरू किया। सत्यभामाको क्रोध आया। "अिसने तो अपनेको वडी माँके पास गिरवी रख दिया है !" कहकर अुसे धमकाने लगी। लच्चाका दुख और वढा। अुसने और जोर-जोरसे रोना शुरू किया। "चुप होता है या गला दवाकर मुँह वन्द करूँ ?" माँने अपना रुद्रावतार प्रकट किया। डरकर लच्चा चुप हो गया। वहाँसे अुठकर वाहर आया। तभी पारोती, सरसोतीने अेक-अेक वोझ कुलथीके लाकर आँगनमें पटके। आँगनमें सूर्यकी स्वर्ण-किरणे क्रीडा कर रही थी। वह भी आँगनमें आया। अुसने वाहर जरा दूर, अपनी वडी माँको देखा। चुपचाप अुसके पीछे लग गया। कुलथीके पेडोका दूसरा वोझ अुठाते समय लच्चा वही था। "वडी माँ, मुझे क्यो छोड आअी ?" कहके अुसने सवाल किया। "तू अिस ठडमें वाहर क्यो आया ? चलो, घर चले !" वडी माँ अुसको गोदमें अुठाकर चलने लगी और लच्चाने फूट-फूटकर रोना शुरू कर दिया। अव क्या करे ? पारोतीने सिरपरसे वोझ नीचे पटका और वच्चेको गोदमें लेकर जरा घूमने लगी। "वडी माँ, तू क्या कर रही थी ?" लच्चाका दूसरा प्रश्न था। "कुलथीके पेड अुखाडती थी।" वडी माँने जवाव दिया। "मैं भी अुखाडूंगा !" अुसकी जिद्द शुरू हुअी।

अिस प्रकार अुस दिन लच्चा-पारोती-सवाद समाप्त हुआ। सवादमें वचा हुआ काम सरसोतीको ही करना पडा। किन्तु दुर्दैवसे शामको लच्चाका

वदन गर्म हो गया। शामसे चढा हुआ बुखार तीन दिन तक नही अुतरा। हवा लगनेके अुपचार हुअे, जुकामकी दवा हुअी, किन्तु बुखार नहीं अुतरा। अब पारोती मन ही मन "मैंने आज सुबह क्यो अुसको खेतमें रखा," कहकर पश्चाताप करने लगी। अिसी बहाने सत्यभामाने पारोतीको जी भरकर कोसा। जोरसे कुछ कहनेकी हिम्मत न होनेपर भी वह सुन सके अैसा खूब स्वगत-भाषण किया। किन्तु लच्चा बुखारके नशेमें भी जब कभी पुकारता तो "बडी माँ।" ही पुकारता था। कभी अुसने माँका नाम तक नहीं लिया।

अैताल तीन दिनसे कहीं दूर पूरबके गाँवोमें पुरोहिताअी करने गअे थे। अुन्होने आते ही आँगनसे लच्चाको पुकारा, परन्तु "बाबा।" कहने-वाली वह मृदु-मधुर आवाज नही सुनाअी दी। "हाँ, खेतमें ले गअी होगी।" कहकर अन्दर आअे। अन्दर छोटीसी गद्दीपर लच्चा सोया हुआ था। पास ही माँ आँसू बहा रही थी। अैतालकी आवाज सुनते ही सत्यभामाके आँसूओकी बाढ़ आ गअी। "क्या हुआ?" अैतालने अपनी सत्यासे पूछा। "लच्चा सोया है। तीन दिन हुअे बुखारसे जल रहा है। किसीका बच्चा गया तो किसीको क्या?" कहकर विचित्र-सा अुत्तर दिया।

अैताल सब चीजोको वहीं पटककर वैसे ही अन्दर गअे। लच्चा सो रहा था। अुसके शरीरसे पसीना छूट रहा था। दोनो तरफ पारोती-सरसोती बैठी थीं। भाअीको देखकर सरसोतीने कहा, "अब जरा पसीना आया है। मालूम होता है बुखार अुतरने लगा है।" धीरेसे लच्चा जगा। अुसने "बाबा!" कहा तो अैतालको जरा धैर्य हुआ। "सरसोती! पसीना पोछकर जरा चद्दर ओढा दे?" कहकर अैतालने अपनी बहनसे कहा, "बच्चा अेक चौथाअी भी नही रहा।"

अुसके बाद बहनने बुखारका सारा अितिहास सुनाया। अैतालने सब बाते अनसुनी करके कहा—"कुछ भी हो अेक सौ आठ गायत्री जप किअे डालता हूँ।" और अुठकर कपडे बदलनेके लिअे तलावपर जाकर हाथ-पैर धो आअे। घरमें जाकर धौत वस्त्र पहनकर सध्या-वदन किया। फिर अन्दर देवघरमें गअे। समअीमें दीपक जलाया। "सत्या! लच्चाको अुठा

सरसोती बीचमें नही आती, तो सत्यभामाकी शिकायतोकी डिक्री अुसीके हकमें होती, किन्तु अैताल सरसोतीसे डरते थे। अुसका डर अबतक बना था।

भगवानकी कृपासे अुसी दिन रातको लच्चाका बुखार अुतर गया, चार दिनमें वह घरभरमें दौड-धूप करने लगा। अुसकी जबान सदा-सर्वदा बडी माँका जाप किया करती थी।

पारोती और सत्यभामामें शत्रुता थी—यह नही कह सकते, फिर भी मनमुटाव पैदा होना स्वाभाविक था। दिनभर अुन दोनोमें बस छैसे ज्यादा नहीं और तीनसे कम नही, अितनी ही बाते होती थी। बिना भारी आवश्यकताके वे आपसमें नहीं बोलती। ठडके दिन बीते, गरमीके दिन आअे, वे भी बीते, वर्षाऋतु शुरू हुअी; तबतक लच्चाका प्यार अपनी बडी माँसे जितना बढा, अुससे अधिक बढा बडी और छोटी माँके बीचका विद्वेष। अब लच्चाका चौथा वर्ष चल रहा था। कोटेश्वरका मेला नजदीक था। घरमें सालभरके लिअे कपडे-लत्ते चाहिअे थे, अिन्ही दिनोमें अुन्हे लानेका रिवाज था। शायद नअे कपडे पहनकर अपने गाँवके मेलेमें जानेमें अनुकूलता होती है, यही मानकर यह परम्परा चल पडी थी।

यह सब बातें चल रही थी कि अिसी समय सत्यभामा खाना खाकर वहाँ आ पहुँची। अपने बारेमें ही बातें हो रही हैं यह जानकर जितना सुनना चाहिअे था सुनकर, अपना अस्तित्व दिखानेवाली खाँसी खाँसते हुअे तलावपर चली गअी। अुन दोनोंकी आवाज न सुननेपर सत्या थाली धोकर अंदर गअी।

रसोअीघरका सारा काम समाप्त कर सत्यभामा अँतालके पास आअी, और आँखोंमें पानी भरकर "अिन्होंने 'रा का' रामायण बना डाला। बच्चेको सुबह ठंडमें कुलथीके खेतमें ले गअी जब मैंने 'किसीका बच्चे मरे तो किसीको क्या' कहा, तो अिन्होंने महाभारत मचाया "कहते हुअे नअे महायुद्धकी नींव डाल दी, लच्चाने बडी माँको पुकारा। अुसकी वह पुकार सबने सुनी। पारोतीने मन ही मन कहा, "वह मेरा कौन है? मुझे क्यों पुकारता है?" किन्तु हृदय वहाँ दौडा, अुसके साथ पैर भी दौडे। अुसके पूर्व ही सत्यभामा वहाँ पहुँच चुकी थी। अुसे देखकर पारोती पीछे हटी। "तुझे क्या चाहिअे?"—माँने पूछा। "मैं बडी माँकी गोदमें सोअूँगा।" लच्चाने अपनी अिच्छा प्रकट की।

"मैं पालनेमें सुलाकर गीत गाती हूँ।" माँने लालच दिया।

लच्चाने रोना शुरू किया। सत्यभामाको क्या करना चाहिअे, यह समझमें नहीं आया "जीजी! जरा बच्चेको अपनी गोदमें लो ना!" सत्यभामाने मजबूर होकर पारोतीसे प्रार्थना की। पारोतीका चेहरा जले हुअे बैंगन-सा हो गया था। व्यथा और अपमानके बीच युद्ध हो रहा था। लच्चा अुठकर बडी माँकी गोदमें जानेका प्रयास करने लगा। पारोती बिना अपना कर्तव्य स्थिर किअे ही बच्चेको गोदमें लेकर वहीं पडी रही। अुस दिन वह जितना रोअी, अुतना दूसरा कोअी नहीं रोया होगा। सत्यभामा यह देख नहीं पाअी। अुसको यह अपमान सहन नहीं हुआ। वह अँतालके पास गअी। "पेटमें रखनेके लिअे मैं और रहना है दूसरोंकी गोदमें!" कहते पुन अपना रोना शुरू किया। "सत्या! बच्चोंको क्या? वे ये सब बातें कैसे जाने? तू अिन-सब बातोंके लिअे अैसे रोने लगेगी तो मैं क्या करूँगा? तुम दोनोंके झगडेसे मेरे लिअे यह घर श्मशान हो गया है!" कहते-कहते अुसने अपना वैराग्यका राग अलापना शुरू किया। सचमुच अँतालकी हालत वही थी।

सरसोती बीचमें नही आती, तो सत्यभामाकी शिकायतोकी डिक्री अुसीके हकमें होती, किन्तु अैताल सरसोतीसे डरते थे। अुसका डर अवतक बना था।

भगवानकी कृपासे अुसी दिन रातको लच्चाका बुखार अुतर गया, चार दिनमें वह घरभरमें दौड-धूप करने लगा। अुसकी जबान सदा-सर्वदा बडी मांका जाप किया करती थी।

पारोती और सत्यभामामें शत्रुता थी—यह नही कह सकते, फिर भी मनमुटाव पैदा होना स्वाभाविक था। दिनभर अुन दोनोमें बस छैसे ज्यादा नहीं और तीनसे कम नही, अितनी ही बाते होती थी। विना भारी आवश्यकताके वे आपसमें नहीं बोलती। ठडके दिन बीते, गरमीके दिन आअे, वे भी बीते, वर्षाऋतु शुरू हुअी, तबतक लच्चाका प्यार अपनी बडी मांसे जितना बढ़ा, अुससे अधिक बढा बडी और छोटी मांके बीचका विद्वेष। अब लच्चाका चौथा वर्ष चल रहा था। कोटेश्वरका मेला नजदीक था। घरमें सालभरके लिअे कपडे-लत्ते चाहिअे थे, अिन्ही दिनोंमें अुन्हे लानेका रिवाज था। शायद नअे कपडे पहनकर अपने गांवके मेलेमें जानेमें अनुकूलता होती है, यही मानकर यह परम्परा चल पडी थी।

सत्यभामाने अवतक कोटेश्वरका मेला नही देखा था। अिस साल अुसको मेला देखनेकी अिच्छा हुअी। पर बच्चेको अुठाकर आठ-दस मील जानेकी अुसमें हिम्मत न थी और न अिच्छा। साथ ही मेलेका आनद भी छोडने को जी नही चाहता था। मेलेसे पन्द्रह-दिन पहलेसे ही अुसने "अिस साल कोडी अुत्सवको ले जाते तो अच्छा होता," कहना शुरू किया। अैताल भला सत्याकी बातको कैसे टाल सकते थे? "अगर जाना है तो जल्दी कपडे खरीद लेना चाहिअे!"—अैतालने निश्चय किया।

मेलेसे दो-तीन दिन पहिले अैतालरामने कपडे खरीदे। अपने लिअे अुन्होने दो हच्चडकी धोतियां खरीदी, सरसोतीके लिअे मटियाले किनारेकी दो लाल साडियां, पारोतीके लिअे सफेद किनारेकी दो पालघाटकी साडियां खरीदनेके बाद वे सोचने लगे कि सत्यभामाके लिअे कैसी साडियां खरीदें। सोचते-सोचते अुन्होने दो-चार बार सारा बाजार छान मारा। पालघाटकी साडी खरीद करनेकी अिच्छा नहीं होती थी। अितकलकी साडी खरीदें तो

बहुत कीमती है। क्या करे ? आखिर अुन्होंने सोचा, "रोज घरमें पहननेके लिअे पालघाटकी साडी ही खरीदेंगे और आने-जानेके समय पहननेके लिअे कोर्नाडकी साडी !" फिर भी दाम ज्यादा देने पडते थे। आखिर कुमारपात्यकी रुद्राक्षी किनारेकी अेक साडी खरीद लाअे।

कोडी-अुत्सवका दिन आया। घरके दो आदमी मेलेमें जाअेंगे और दो रहेंगे, यह संभव नही था। सरसोतीने रात रहते ही अुठकर जानवरोंके लिअे अवकच्च आदि गरम कर दिअे। सूरकी घरवालीसे घरकी और जानवरोंकी रखवाली करनेको कह आअी। अितना सब करनेपर भी "दुत्! घर छोडकर सबका बाहर जाना ठीक नहीं !"—कहकर वह स्वयं घरकी रखवालीके लिअे रह गअी। सुबह-सुबह पारोती, सत्यभामा और लच्चाको ले अैताल मेला देखने समुद्रतटके रास्तेसे ही चल पडे। लच्चा कभी अैतालकी गोदमें, कभी सत्यभामाकी गोदमें, तो कभी सत्यभामाकी गोदसे पारोतीकी गोदमें जाता चल रहा था। बच्चेको चढा-अुतारकर पहर भरमें वे कोटेश्वर पहुँचे। कोटेश्वरका वह विशाल जलाशय देखकर लच्चाके दिलकी कली खिल गअी। तालाबकी मछलियाँ देखकर अुसने वहीं रहनेकी जिद की।

कुछ देर वहाँ रहना ही पडा। सबने तालाबमें स्नान किया। मन्दिरमें जाकर कोटेश्वर भगवानको नारियल और केलेकी भेंट चढाअी। अुसके बाद भगवानका "रथारोहण" समारम्भ हुआ। रथारोहण और रथ-यात्राकी भीडमें दब, लोगोंके धक्के खाकर जब सब पूरे थक गअे, तब तीनों लच्चाको लेकर बाजार घूमने निकले। वहाँ लच्चाके लिअे अेक गुड़िया खरीदी गअी। आखिर जब सूर्य सिरपर आया, पेटमें चूहे दंड पेलने लगे, तब सभी प्रसाद पानेके लिअे मन्दिरकी ओर चल पडे। वहीं केरेअेरीमें अैतालके अेक मिलने वाले रहते थे। अैताल अुनके घरपर गअे। मेलेका दिन, सगे-सम्बन्धियों अिष्टमित्रोंके साम्राज्यका दिन, अिसलिअे अुस समय मित्रोंके घरका भोजन भी ब्रह्मभोज-सा बन जाता है।

सभी खानेको बैठे। पारोतीकी अेक सहेली अुनके पास ही बैठी। बहुत सालके बाद दोनों मिली थीं। अुसने पास बैठी सत्यभामाका परिचय पूछा। "यह भी मेरे पतिकी पत्नी है !"—कहकर पारोतीने अुसका परिचय

दिया। अुसकी नजर सत्यभामाकी साडीकी ओर गअी। अुसने धीरेसे पारोतीके कानमें "यह क्यों? तुम तो पालघाटकी साडी पहने हो, और वह रुद्राक्षी किनारेकी!"—कहकर अेक जहरीला तीर छोडा। यह सुनकर वहाँ पारोतीने "कैसी हो साडी पहननेसे मतलब?"—कहकर वैराग्य दिखाया, किंतु खुद समझमें न आनेवाला यह साडी-पक्षपात दूसरेके द्वारा बताअे जानेके बाद अत्यंत दुखद ही हुआ।

दोपहरके भोजनके बाद वे फिर अेक बार मेलेमें भटके। अैतालने सत्यभामाकी आज्ञासे लच्चाको बतासे और कुछ मिठाअियाँ खरीदीं, कुछ चने और मुर्मुरे भी लिअे। नया मटका ले अुसमें सब सामान डाला। पारोतीने भी पतिदेवके दिये आध आनेमें क्या खरीदा जाय, अिसे सोचकर आखिर लच्चाके लिअे दो पैसेके खजूर खरीदे और अुन्हे अपनी साडीमें ही बाँध लिया।

तीसरे पहर अैतालकी यह बरात फिर समुद्रके किनारे आअी। समुद्रका किनारा कुचलते हुअे सभी दक्षिणकी ओर चले। लच्चा मेलेकी थकानसे सो गया था, अिससे वह दूना भारी हो गया था। सत्यभामा अुसको गोदमें लिअे-लिअे पूरी थक गअी थी। अुसने आखिर असह्य पीडासे "अिम रेतीले मैदानपर चलनेसे सीधे रास्ते चलते तो अच्छा होता," कहकर अपनी स्थितिका संकेत किया। अैतालने अुसपर "सीधा रास्ता महा मैला है, दूर तक शूद्रोकी पाँत लगी रहती है। जब वे मेलेमें जाते हैं, तो अुनकी आँखें ही बन्द हो जाती हैं, किन्तु समुद्रकी ओर किसीका अुपद्रव नही।" सत्यभामाने लच्चाका बोझ असह्य होनेकी बात अिस ढंगसे कह ली है, अिसका अैतालको पता ही नही लगा।

पारोतीने सत्यभामाकी हालत जान ली। "बच्चेको अकेली कितनी देर तक गोदमें अुठाअेगी, ला अब मैं ले लूँ!"—कहकर हिम्मतसे अुस बच्चेको अपनी गोदमें ले लिया। सत्यभामाको यही चाहिअे था। तीन-चार मील चलनेपर वह जगा। तब कभी समुद्रकी लहरे देखते हुअे, कभी अुडनेवाले पक्षीसे बाते करते हुअे, वह अपनी बडी माँकी अुँगली पकडकर चलने लगा। वह कभी पैदल चलता था, कभी किसीकी गोदमें चढ जाता था। अिस तरह

जब सब घरमें आअे, तब तक चन्द्रमा अुनके घरके नारियलके पेड जितना अूँचा आकाशमें चढ चुका था।

घरपर आते ही देखा रसोअी अुनकी प्रतीक्षा कर रही थी। सरसोतीने अनावश्यक अुत्साह दिखाते हुअे घरमें अुडद न होनेपर भी कुल्थीका "कडबु" बना रखा था। सबने खूब डटकर खाया। खाना खानेके बाद पारोतीने सरसोतीको मेला-पुराण सुनाना शुरू किया। अुस मेला-पुराणमें सत्यभामाकी रुद्राक्षी किनारेकी साडीका भी अेक अध्याय आया। जब वह अध्याय चल रहा था, अुस समय पारोती अपने आँसुओंका अर्घ्य देनेमें नहीं चूकी।

अैताल किसी तरह कोटेश्वरका मेला देख आअे, किन्तु अुनकी जान अटक रही थी शीनप्पाके पास। शीनप्पाने कोडी-अुत्सवके दिन रुपअे चुकता करनेका वायदा किया था। अुसी दिन अुसको ला देना चाहिअे था। मैं घरमें नहीं था, यही अुसे बहाना मिलेगा। आखिर रातको अुसके घर जानेकी अिच्छा हुअी। सोच-समझकर अुठे और बाहर अर्लाखेट तक पहुँचे थे कि सरसोती मिल गअी। अुसने अुत्सवकी अेक-अेक बात पूछी, मेलेका वर्णन सुना और आखिर बातों-बातोंमें सत्याकी रुद्राक्षी किनारेकी साडीकी बात भी कह डाली। अिससे अैतालके मनमें समुद्र-मथन शुरू हुआ। अिसमें अैतालको अपनी बदनामी जँची। "किसी कामके लिअे निकलनेकी तैयारी हुअी कि कुछ न कुछ अुपद्रव ला देगी सामने!"—कहकर अैताल पुन. अपने बरामदेमें लौट आअे। रात भर वैसे ही चटाअीपर करवटें बदलते रहे। अुन्होंने शीनप्पा द्वारा अपनी पूँजी डुबो दी जानेका सपना देखा।

सुबह हुअी और अैतालरामने तालाबमें दो-चार डुबकियाँ देकर शीनप्पाके घरका रास्ता पकडा। शीनप्पा अेक रास्तेसे घरसे बाहर निकला और अैताल दूसरे रास्तेसे अुसके घरमें घुसे। अैतालने घरमें जब अुसको नहीं देखा, तो अुसकी पत्नीसे पूछा— "शीना कहाँ है?" अुसने अुत्तरमें अेक रामायण ही सुना डाली। "किस प्रकार कर्ज अदा करनेके लिअे अुन्होंने गाँव भरमें प्रयत्न किया, किन्तु कहीं कुछ नहीं मिला। आखिर कितनी ही कठिनाअीसे बेंगलूरसे बडे लडके नरसिंहने कर्ज करके ५० रुपयोंका मनिआर्डर भेजा है।

खूब दौड-धूप कर किसी तरह सूदपर सब अिकट्ठा कर वे तुम्हारे घर गअे है।" आदि खूब मिर्च-मसाला लगाकर कहने लगी। यह सब सुननेका समय किसके पास था? अैतालने पुन दौडते-दौड़ते घरका रास्ता पकडा। दोनो बीच रास्तेमें मिले। शीनप्पाने वही सारी रकम जमीनपर डाल दी। "तुम्हें कहाँ शीनप्पाका विश्वास है। तुम तो यही सोचते होगे कि कम्बख्त सब खा जाअेगा। अब सूदके साथ आ गअी न रकम! न तुम्हारा ऋण चाहिअे, न तुम्हारी बाते!"—कहकर वह वहाँसे चल पडा। अैतालकी आँखें रुपयोपर थी। अुन्होंने प्रत्येक रुपया और प्रत्येक नोट देखकर टेंटमें बाँध लिया, फिर देखते है तो शीनप्पा वहाँ नही। शीनप्पाकी अीमानदारी देखकर प्रसन्नता हुअी, तो अुसपर शक करनेका संकोच भी। "गुस्सा मत करो, कभी कुछ बुरा लगा हो, यदि तुम्हारे लिअे कुछ कह दिया।" कहकर सोच-विचारमें डूब गअे, किन्तु शीनप्पा वहाँ कहाँ था। आखिर अैताल अपने घर आअे। सारे नोटोंको अेक डिबियामें रखा। डिबिया और रुपया दोनो बाँधकर दीवारमें लगी-सदूकचीमें रख दिअे। ताला लगा दिया। स्वभावानुसार झाँककर देखा वहाँ कोअी है तो नहीं। अुनके खजानेकी जानकारी या पता किसीको नहीं था। न सरसोती जानती थी, न पारोती, न अुसकी अपनी सत्या! कअी बार प्रसन्न होकर सारी बात सत्यासे कहनेको सोचता था, किन्तु कहते हैं न कि "स्त्री बुद्धि प्रलयातक है" अिसी सिद्धान्तानुसार वह मौन रहा।

प्रसन्नचित्त घरके बाहर निकलते समय पुन सरसोती मिली। "शीनाके घर हो आअे? रुपये मिले या..।" "न मिलनेसे क्या होता है? वह खाना चाहेगा तो खाने देगा कौन?"—बहनके सवालका बीचमें ही अैसा जवाब देकर अैतालने आत्म-प्रशसा भी कर डाली। तब सरसोतीने कहा—"देखो, अुसने मेरी रकम खा ली कहकर व्यर्थ ही फटना पैदा की न! अिससे भला क्या मिला?"

यद्यपि अैतालने सरसोतीके सामने अुसकी बातोका खयाल नही किया, तो भी वह बात अुसके दिलमें लग गअी, चुभने लगी। अिससे वह पुन अुस रेतीली टीलेपरसे "रामा रामा! हरि हरि!!" करते शीनप्पाके घर गया। वहाँ शीनप्पा नारियलके मडलोंकी चटाअी बुन रहा था। अैतालके दर्शन

होते ही जरा घबडाकर अुसने पूछा— "क्या हिसाबमें कुछ गडबडी हुआी या अेकाध बनावटी रुपया निकल आया ?"

"नही भाआी ! क्यो अितना क्रोध करते हो ? कहीं कभी गलतीसे मैंने कुछ कहा होगा, तुमने भी कुछ कहा होगा। वह सब हम दोनो भूल जायँ। अुन सब बातोको आगे भी क्यो चलाअें ? यही तुमसे कहना चाहता था अितनेमें तुम वहाँसे चले आअे। फिर मैं अिसीलिअे तुम्हारे पास दौडा आया। जब तक मैं सारी बाते तुमसे नही कहता, तब तक वे मेरे दिलमें चुभती रहती।" यह कहकर अंतालने अपना दिल हलका कर लिया। यह सब सुनकर क्षणभरके लिअे शीनप्पा भी खुश हुआ। "जाने दो अंताल, जो हुआ सो हुआ। बीती बातोको याद करनेसे क्या फायदा ?"—कहकर शीनप्पाने अुस प्रकरणको समाप्त कर दिया। अुसके बाद दोनो पहलेकी तरह गप्पोमें लग गअे, कोडी-अुत्सव, वहाँ कितने लोग अिकट्ठे हुअे, घाटपर कैसी-कैसी मिठाअी आअी थी, अगहनमें ही कोटेश्वरके रथमें कहींसे आम लाकर कैसे बाँधे गअे थे, आदिका विश्लेषण हुआ। अिस प्रकार दोनो मित्र क्षणभरके लिअे परस्परका वैर भूल गअे।

× × ×

कमसे कम अुस दिनके लिअे दोनोकी मित्रता हो गअी। अुसके कअी दिनो बाद तक दोनोने यद्यपि पहले जैसा मित्रतापूर्ण व्यवहार नहीं किया, फिर भी शत्रुताका प्रदर्शन नही हुआ। किन्तु अंतालके मनमें जो बडे फाटककी बात चुभी थी, वह नही निकली और वह निकलनेकी भी नहीं थी। जबसे शीनप्पाने वह फाटक बनाया, तबसे वह शीनसे—शीनप्पा, शीनजी बन गया था और गाँवमें आते-जाते समय अुसे अभिवादन भी कुछ अधिक मिलने लगा था। अुसने भी समझ लिया था कि मैं अैसा-वैसा कोअी सामान्य मनुष्य नहीं हूँ। अिससे अंतालके मनमें गुप्त अीर्ष्या जाग्रत थी। अुनके मनमें होता था—"नही.. " पेटभर डटकर खानेसे किसको छह महीने भूखा रहना पडता हो, अैसा शीना हमारे गाँवका अेक प्रमुख व्यक्ति बन गया ! अिस कोडि कन्याण गाँवोमें मैं अंताल कोदडरामका लडका हूँ ! पर मैं बँधी हुअी मूठ बनकर केवल वैदिक ब्राह्मण ही रह गया, और यह ! मुझे भी अिस प्रकारका बडा फाटक बनवाना चाहिअे। अगर मैं चाहूँ तो बडा

बँगला बनवा सकता हूँ। मैं भी अैसा बडा बँगला क्यो न बनवा लूं?" वह यही सोचता था, पर अुसमें धैर्य नहीं था। साहस नही था। अगर वह अपनी दीवारकी सदूकचीमें हाथ डालता तो यह असभव नही था, कठिन भी नहीं था, किन्तु घरवालोके सामने अिस योजनाको कैसे रखे? अगर सत्यभामासे कहे तो अुसे आशा थी कि वह सुनकर खुशीसे अुछलने लगेगी! अमीरोकी लडकी अमीरीके प्रदर्शनसे भला क्यो न प्रसन्न होगी। अगर मैं पारोतीसे पूछूँ तो बावलीकी तरह "मैं क्या जानूँ, किसलिअे आप मुझसे पूछते हैं?"–कहकर चुप बैठी रहेगी। अुसमें अिन सब बातोको समझनेकी शक्ति भी नही है। किन्तु ये सब बाते सरसोतीसे कहना मुश्किल है और नही कहता तो अुससे भी अधिक मुश्किल है। अगर अुससे सब बाते कहे, तो कहेगी—"तुम्हारे हाथमें रुपअे-पैसे ज्यादा आ गअे हैं, तो अुस नालेमें डाल दो। अिस मकानको क्या हुआ है? क्या यह मकान यहाँ रहनेवाले साढे तीन आदमियोके लिअे छोटा पडता है!" और अगर बिना कहे काम कर डालेगे तो सब मया-दया छोड अपनी ससुराल चली जाअेगी। फिर मुझे अिसके लिअे आनेवाले चावलोंसे हाथ धोना पडेगा। अगर वह गअी तो घरकी खेती-बारी भी कौन देखेगा?

महीनो तक यही विचार अुनके मनमें चक्कर काटता रहा। फिर भी साहस कर कोअी निर्णय नहीं कर पाअे। अिसी समय घरमें दूसरी समस्या अुठ खडी हुअी। सत्यभामाने और दुबारा माँ बननेकी तैयारी की। नौ महीने पूरे होने आअे। अुसका अिस समयका प्रसवोत्सव कहाँ हो, यही मुख्य प्रश्न था। सरसोती कहती थी, "अब क्यो पडुमुन्नूर भेजें? हम दो जने हैं। बार-बार वहाँ भेजना अच्छा नही लगता।" पारोतीने तो आँसू बहाते कहा— "जो कुछ करना है। वह सत्याको ही निश्चय करने दो। नहीं तो कल यह ठीक नही हुआ, वह ठीक नही हुआ, कहने लगी तो आफत आअेगी।" और पडुमुमन्नूरसे मादप्पय्याने अपने लडकेको भेजकर बार-बार कहलवाया— "अुसका प्रसव यही पडुमुन्नूरमें ही होने दो। कितनी ही व्यवस्था करनेपर भी यहाँ जैसा आराम कही नहीं मिलेगा।" अैताल किसी कामके लिअे अपनी ससुराल गअे थे, तब भी यह प्रश्न अुनके सामने अुपस्थित हुआ। अैतालने संकोचसे कहा–"बार-बार मायके भेजना अच्छा नही लगता। आपको सतानेकी

भी सीमा होनी चाहिअे।" अिसपर ससुरने कहा—"तुम तो पागल हो, मेरी आठ-आठ बहनें थीं, अुनमें अब कितनी जिन्दा हैं, यह प्रश्न दूसरा है, किन्तु जब तक वे जिन्दा रहीं, सबका प्रसवोत्सव यही हुआ। मेरी माँ ने अपनी लडकियोंको प्रसवके समय कभी अुन्हें ससुरालमें रहने नहीं दिया।" यह सब सुनकर अैतालने कहा—"अच्छा देखेंगे!" अुन्होंने घरमें आकर सत्यभामासे पूछा। अुसने पडुमुन्नूर जाना अधिक पसंद किया।

अब अैतालने पचाग देखना शुरू किया। तिथि, वार नक्षत्रादि देखकर प्रयाणका समय निश्चित किया और ठीक समयपर सत्यभामाको साथ लेकर पडुमुन्नूरके लिअे प्रस्थान किया। लच्चाको चौथा वर्ष चल रहा था। वह तोतेकी तरह बोलने लग गया था। अुसका क्या करें? आखिरी क्षण तक यही चर्चा चलती रही। "मांको प्रसव-कालमें दो-दो बच्चोंको सँभालना श्रम-दायक होगा।"—अैतालका कहना था। "यही रहा तो अच्छा!"— यह सरमोतीकी राय थी। "हम क्यों ले यह जिम्मेदारी?"—यह पारोतीका विचार था। अिन सब अस्पष्ट विचारसे कुपित हो सत्यभामाने "मेरा बच्चा मुझे बोझ नहीं है!" —कहकर अपने स्वाभिमान और क्रोधका प्रदर्शन किया। बस, ननिहाल जानेकी बाते सुनते ही सबसे पहले अुसीने "हम नानाके घर जाते हैं!"—कहकर विदा ली।

सब पडुमुन्नूर पहुँचे। अुनका वहाँ स्वागत भी हुआ। अैताल दुपहरका भोजन कर वहाँसे घर लौटनेके लिअे निकले। जाते समय अुन्होंने लच्चाको "माँके ही पास रहो। नाना भी यही है। तुम्हे बन्दरकी कहानी सुनाअेंगे। काजू खानेको देंगे।"—वगैरह कहकर फुसलानेका प्रयत्न किया। तो वह "न हमें बन्दरकी कहानी चाहिअे, न काजू!" —कहकर कोडी जानेको तैयार हो गया।

"फिर क्या चाहिअे तुझे?"

"बडी माँ!"

अुसे समझाकर सब हार गअे। जितना समझाया गया, अुतनी अुसकी जिद्द बढी। आखिर हारकर अुसको भी साथ लेना पडा। अैताल कभी अुसको गोदमें लेते तो कभी पैदल चलाते, वहाँसे निकले। आखिर लच्चा

बापकी पीठपर मजेसे सो गया। अैताल जब अुसको लेकर घर आअे, तो थककर चूर-चूर थे। अुस दिनसे सत्यभामाके वापस घर आनेतक पारोतीको मानो अेक महान निधि मिल गअी थी। निधि तो थी ही, क्योंकि लच्चाका अपनी बडी माँसे अितना प्रेम था कि वह कहीं नहीं जाने पाती। फिर बडी माँके मनमें छोटी माँका भय था। सत्यभामा घरमें आनेके बाद हम दोनोंके प्रेमको देखकर कितना क्रोध करेगी, परिणामस्वरूप घरमें कितना कलह और क्लेश बढेगा, अिस विचारसे वह घबडा अुठी।

मकर-सक्रांतिके पद्रह दिन बाद ही पडुमन्नूरसे अैतालको अेक शुभ समाचार सुननेको मिला। पूर्णमासीके रोज सत्यभामाका शुभ और सुखद प्रसव हुआ। अिस बार लडकी हुअी। अैतालने सुना हुआ शुभ-समाचार लच्चाको बुलाकर "लच्चा! तेरी अेक नन्ही-सी बहन हुअी है।"—कहते घरमें सुनाया।

लच्चाने "न मुझे न बहन चाहिअ, न कोअी! मुझे तो मेरी बडी माँ चाहिअे।"—कहकर नअी बहनका स्वागत किया। तब बडी माँने "अैसा नहीं कहना चाहिअे, मेरे राजा बेटा! अच्छी सुन्दर बहन आअेगी, तो तुझे अुसके साथ खेलनेको मिलेगा। आँगनमें तुम दोनों चिन्नमणि खेलोगे।" कहकर बहनकी ओर अुसका आकर्षण पैदा करना चाहा। लच्चाने चिन्नमणिकी याद आनेसे बडी माँसे चिन्नमणिकी माँग की। अुसकी जिद्दके सामने झुकी हुअी बडी माँने चिन्नमणि लाकर अुसके साथ खेलना शुरू किया। अुसको अब रसोअी बनाने जाना था। "मैं अब रसोअी बनाने जाती हूँ। खाना खाकर फिर खेलेंगे!"— बडी माँने कहा।

"अच्छा, जा तू मैं अकेला खेलूँगा!"—लच्चाने कहा।

"अिसीलिअे मैंने कहा कि बहन आअेगी तो वह भी तेरे साथ खेलेगी।"

"बहन किसको कहते हैं, बडी माँ!"

लच्चाने पूछा और बडी माँ हँस पडी।

: १० :

अैतालकी खपरैलवाले मकानकी साध वैसी ही अधूरी रह गअी। वे भीतर ही भीतर जलते हुअे चुप थे। सोचने लगे— अगर मकान बनवाया तो भी शीनप्पा यही कहेगा कि अैतालके बच्चेने मेरे मकानकी अीर्ष्यामें अैसा मकान बनवाया। अिसीलिअे कुछ न कुछ अैसा करना चाहिअे कि शीनकी आँखें चौंधिया जाअें। कोडीमें अुनके नारियलके बागके पास ही अैयतु पूजारीका अेक अच्छा बगीचा था। अैतालके छोटे सौ-पचास नारियलोंके बगीचेके सामने वह नन्दनवन-सा दीखता था। हाथ अुठाते ही नारियलके गोने हाथमें आ सकते थे। पहिले भी अेक बार अुनकी नजर अुस बागपर पडी थी। अैयतु पुजारी जब कर्ज माँगनेके लिअे अेक बार अुनके पास आया था, तब अुसने कहा था कि आप कहें तो यह बाग गिरवी रख दूं और कहे तो बेच दूं। किसी तरह मुझे पाँच सौ रुपअे कर्जा दीजिअे। किन्तु तब अैतालको साहस नहीं हुआ। अपने पहले व्याहके वर्ष अुनके बागका काफी बडा हिस्सा "समुद्रास्तृप्यन्तु" हुआ था, अिसका स्मरण अुनको था। अुसके बाद कुछ सालोंसे नदीमुख बदलता जा रहा था और अिस ओर जमीन अधिक बढ रही थी। अिन आठ-दस वर्षोंमें अुत्तर कोडीको हर साल सौ-डेढ सौ गज जमीन मिलती जा रही थी और नदीमुख दक्षिणकी जमीन खाता जा रहा था। अुन्होंने हिसाब लगाया कि अैयतु पूजारीका बाग खरीदा भी तो कमसे कम पचास-साठ साल तक नदीमुखके बदलनेवाले प्रवाहसे कोअी खतरा नहीं। अिसके अतिरिक्त अैयतु पूजारीने नदीके किनारे-किनारे पत्थरोंसे बाँध भी बाँध दिया था। अब अैतालकी अिच्छा अुसे दुबारा बुलानेकी हुअी।

अेक दिन धीरे-धीरे कर्जमें डूबनेवाली अैयतु पूजारीकी करुणाजनक मूर्ति अैतालके सामने आ ही गअी। सुबहका समय था। अैयतु पूजारीके अूँचे शरीरकी छाया अुससे दूनी बनकर अैतालके आँगनमें छा गअी। अुससे बचते हुअे जितनी दूर खडे रह सके, अुतनी दूर खडे रहकर अैतालने पूछा— "अैयतू! तूने अपना बाग किसको दिया?"

—"गाहक मिलनेके पहले भला किसीको कैसे दूँ? शीनप्पा मैय्याने कहा है देखेंगे।"—अैयतूने जबाब दिया।

"शीनमय्याके पास अितनी बडी रकम कहाँसे आअी? वैसे ही शान जमाता है और क्या?"—अैतालने कहा।

"जी नही, कहते है आजकल अुनके दो लड़को और सालेने बेंग-लूरमें अेक बडा होटल खोल रखा है। खूब कमाअी कर रहे हैं!"—अैयतूने अेक नअी खबर दी।

अैतालकी आँखें अब सामनेवाले किनारेके सिकताकण गिनने लगी, क्योंकि शीनमय्याके लडकोंकी अपनी दूकान है, यह अुन्होंने आज ही सुना था। अब तक वे अितना ही जानते थे कि दोनो किसी होटलमें नौकर हैं।

—"कहते हैं दो सौ रुपअेसे अधिक नही दूँगा। अिस भावसे तो अेक पेडके चार रुपअे भी नही पडते। दो वर्षके नारियल ही बेंचे तो अितने दाम आ जाअेंगे।"

—"तेरा कितनेमें देनेका विचार है?"

—"क्या कहूँ मालिक! कमसे कम दो सौ पेड हैं। साल भरमें अकाल पडनेपर भी प्रत्येक पेडसे डेढ-दो सौ नारियल निकलते हैं, माडी अुतारने दिया जाय तो भी मुझे खासी रकम मिलेगी और अिस साल दस पेडोपर नम्बर भी पडे हैं, जिनसे मुझे चालीस रुपअे मिलते हैं।"

"तब तो तेरी आँखें पेडोके पर हैं!"

"अैसा कैसे कहते हैं, मालिक! मैं अनावश्यक अेक भी बात नही कहता। नदीमुखका भय छोड दें, तो अुस बागके कमसे कम अेक हजार रुपअे कहीं नही गअे। अैसी हालतमें कमसे कम छहसौ रुपअे तो मिलने ही चाहिअें।"

अंतालने चारों ओर देखा। "अगर मैंने नहीं लिया तो शीनमय्या निगल जायगा," सोचकर अुन्होंने जैसा कि पहले अेक बार बात हुअी थी, पाँच सौ की बात पेश की। सौदा पट गया। "पैसेका प्रबंध होते ही रजिस्ट्री होने तक यह खबर किसीके कानमें न जाने देना"—कहकर वे चले गअे। पूजारीको अैसा लगा, मानो आकाश ही अुसके हाथमें चला आया हो।

यह बात हुअे दो-अेक महीने हुअे होंगे कि अंताल अुस बागके मालिक बन गअे। फिर भी यह खबर गुप्त ही रखी गअी। न अैयतू पूजारीने किसीसे कुछ कहा, न अंतालने। शीनप्पा अपना गणित करता रहा। अुसने कहींसे दो सौ रुपये जमा किअे। "दो सौ रुपये बयाना देकर बाकी दो सौके लिअे कुछ दिनकी मुद्दत मांग लेंगे।" अैसा विचार कर पूजारीको बुला भेजा। अुसका विश्वास था कोडी और अुसके आस-पासके पंचक्रोशीमें अितनी रकम भी पूजारीको कोअी नहीं देगा। पूजारी आया। शीनप्पाने धीरे-धीरे बात निकाली। तब अुसने अुत्तर दिया—"वह तो अंतालरामको दे दिया है।"

सुनकर अुनको अेक धक्का-सा लगा। फिर अुन्होंने पूछा—"कितनेमें दिया?"

"अंतालको पाँच सौ में दे दिया। अुसमें मुझे नुकसान ही रहा, पर क्या करें? नअे-नअे पेड अुगे थे, देनेको जी नहीं चाहता था, किन्तु रुपयोंकी सख्त जरूरत थी। मैं मजबूर था।"

"अुस बागको छोडकर अब तू कहाँ जायगा?"—शीनप्पाने सहानुभूति दर्शाअी।

"अभी तो अुन्हींका आसामी बनकर अुसी बागमें काम करता हूँ। भगवानकी कृपा हुअी तो माडीकी दूकानकर दूसरा बाग लगाअूँगा। अुस व्यापारमें जो मुनाफा मिलेगा वह अिसमें थोडा ही है।"

"तू तो पागल हो गया है। मैं अुसके छह सौ देनेको तैयार था। रकम हाथमें आनेके पहले बोलना अच्छा नहीं था, अिसलिअे अब तक चुप रहा। अगर तूने वह मुझे दिया होता, तो आँखें मूँदकर छह सौ रुपये मिल गअे होते।"—कहते हुअे पुजारीको प्रलोभन दे घर भेजा।

अब शीनप्पाकी बारी थी। अुन्हे अैतालका यह बाग खरीदना अच्छा नही लगा। "कुछ नही, दो-दो पैसे दक्षिणा माँगकर यह जमीन खरीदने लगा है। अब तो मेरे दो-दो लडके कमा रहे है, अेक दिन मैं सारा गाँव खरीद लूँगा।"--सोचते-सोचते अुसके दिलमें आग भडक अुठी। वहाँ अुसके दो लडको और सालेने मिलकर जो नया 'श्री लक्ष्मी नरसिंह प्रसन्न' चायका होटल खोला था, वह अच्छा चल पडा था। अुसके बडे लडके नरसिंहने लिखा था—"अब तो हमारी दूकानके स्पेशल डोसे खानेके लिअे केगरीसे भी लोग आने लगे है।" अिससे साफ जाहिर था कि व्यापार अच्छा चल निकला है। नरसिंह प्रति मास पचास रुपयोका मनीआर्डर भी भेज देता था। अिस सफलतापर फूलकर शीनप्पाने अब तक तो दो लडकोंको ही बेंगलूर भेजा था, बादमें छोटे बच्चेके गलेमें जनेअू डालकर अुसे भी भेज दिया। शालिग्रामका अुत्सव हो जानेके बाद चौथे लडके आरेटाको भी भेजनेका विचार था। सोचा घरके सब लोग ही दूकानमें काम करेंगे, तो किसीपर अविश्वास करनेकी जरूरत नही रहेगी, बीचमें कही गड़बड नही होगी और मुनाफा भी खूब होगा।

जब हाथमें रुपये खेलते थे तो भला अुन्हे अच्छी जमीनपर डालनेकी क्यो न सूझती? अिसीलिअे गाँवमें जमीनपर कौन कर्जा माँगता है। शीनप्पाने अिसकी खोज-खबर लेनी प्रारंभ की। किसी जमीनका दूसरा ग्राहक है, यह जानते ही बीस-पच्चीस रुपये बढाकर माँगना प्रारम्भ किया और "अिसपर अैतालकी नजर है" अिसकी जरा-सी भी गंध मिलती तो पचास या सौ बढानेमें भी वह आगा-पीछा नही देखता। अुसकी अिस दौड-धूपमे जहाँ-तहाँ पाँच-दस बीघे जमीनके कअी टुकडे अुसके नाम हो गअे। अैतालरामके धानकी क्यारीके अिर्द-गिर्दकी पाँच-दस बीघा जमीन तो अुसने डकार ही ली।

यह सुनकर अैतालराम क्रोधसे लाल हो गअे—"जमीन खरीदनेका भी कोअी नियम चाहिअे या नही? मैंने अपने बागसे लगा हुआ बाग जानकर ही पुजारीका बाग लिया था, नहीं तो भला मैं अुसे क्यो लेने लगा? अिसका तो सब अडबड कारोबार है। अिन डेढ-दो हाथके टुकडोंसे अिसको क्या

अेक दमडीका भी फायदा होगा ? अभी चार रोज पहिले मणूरमें तो केवल पाँच ही बीघा जमीन ली है। जिस जमीनमें ठीक तरहसे हल चलानेकी भी गुजाअिश नही, अुसकी मालगुजारी देनेके सिवाय लाभ क्या होगा ?"

किन्तु शीनप्पा अितना पागल थोडे ही था ? अुसका मन अेक खास प्रकारसे काम कर रहा था। जो जमीन बेंचनेंके लिअे आते वे चार-पाँच खेतोंके ही मालिक होते थे। जिनके पास ज्यादा जमीन थी वे तो अुसे बेंचने नहीं आते थे। अिसलिअे जैसे-जैसे खेत लिअे जाते, वैसे-वैसे लोगोपर प्रभाव पडता। अितना ही नहीं, अेक दूसरा विचार भी काम कर रहा था—अैतालके धानकी क्यारीवाले खेतकी बात देखो। अुनके खेत तो बस दस-अेक खडी धानके ही है। अुनकी तीनो ओर मेरे छोटे-छोटे खेत है। अुनके बीचमें अेक टुकडा किसी दूसरेका है। किसी तरह अुसे खरीदकर अपने खेतमें डाल दूं तो अैतालका खेत अेक द्वीप-सा बन जायगा। तब तो अुन्हे अपना खेत मुझे ही बेंचने पडेंगा। अुस समय सब मिल-मिलाकर मेरा अेक अच्छा खेत हो जायगा। अगर अैसा नही हुआ, तो भी अैतालकी चोटी मेरी मुट्ठीमें रहेगी ? तब मैं कह सकूंगा, "जिसे शीनप्पाका भय नही, अुसे यह गाँव छोड देना चाहिअे।"—अिसी विचारसे वह अपने पंतरे बदल रहा था। जमीनकी खरीद करना और शतरजका खेल दोनों अेक हैं—यही है शीनप्पाका सिद्धान्त।

शीनप्पाका बडा लडका जबसे बेंगलूर गया, अुसके बाद चार-छह सालमें अुसके चारो लडके बेंगलूर पहुँचे। अुसके बडे पेटेवाले होटलने तगरुपेटे और चिक्कपेटेमें भी अपने बच्चे पैदा किये। वहाँ पर भी छोटे-छोटे होटल खुल गअे। भगवानकी कृपासे हर दो सालमें शीनप्पाके अेक बच्चा पैदा होने लगा। अब वह आठ लडकोका बाप था। "भगवानने चाहा तो अगले साल अेक अच्छी लडकी देखकर नरसिंहका ब्याह कर डालेंगे और राम-अैतालके दूसरे ब्याहकी शानको किरकिरा कर देंगे। ब्याहमें बेडिकब, लकापट्ठण, तीर, बलून, गरनल वगैरह जलाकर मणूरसे कोटी तक और समुद्रसे बारकूर तक सारी पृथ्वी हिला देंगे।"—बेचारा अिन्हीं अरमानोंके सहारे जी रहा था।

शीनप्पाके जवानी जमा-खर्चमे ही लोग पागल नही होने थे अुमके हाथमें रुपये खेलते हैं, यह जानकर गरजू लोग अुमके पास दस रुपयेमे लेकर अेक हजार तकका कर्जा मांगने आते। अुमने धनका ढेर नही लगाया। पारपल्लीके सभ्रान्त वासुदेवको सरकारी माल्गुजारी देनेके लिअे रुपयोकी जरूरत पडी और वे शीनप्पाके पास मांगने आअे, तब शीनप्पाने अुनको विना किमी प्रकारकी लिखा-पढी किअे ही पाँच सौ रुपये दे दिअे। अिस वातका अुसे गर्व था। जब अुसको पता चला कि कर्जकी अदायगीमें देर है, तो वडी आतुरता और व्याकुलतासे बार-बार सभ्रान्तके घर जाकर अुसने कागजी खानापूरी करा ली। गाँवके सभ्रान्तके महाजन होनेसे बडा कहलानेमें आश्चर्य क्या? गाँवमें किसी घरके व्याह, जनेअू आदि सभी कार्योंमें शीनप्पा अब सभ्रान्तोकी कतारमें भी अग्रस्थानपर चमकने लगे। और सामान्यत गाँवमें गिनती भी न जाननेवाले शूद्रोको चक्रवृद्धि व्याजपर कर्ज देनेसे गाँवके निम्न श्रेणीके शूद्र वगैरह शीनप्पाजीको झुककर नमस्कार करने लगे।

अेक वार शीनप्पाजी सभ्रातके अेक वावू साहेवके घर व्याहमें गअे थे। अेक सभ्रातकी लडकी पडोसी गाँवके दूसरे सभ्रातके लडकेको व्याही गअी थी। अैसे समय वहाँ शीनप्पाजीका स्वागत कम नही हुआ। दूसरी ओर वैदिकोकी सभामें सामनेकी ओर अैतालराम वैठे थे। सभ्रातोके घरके नियमानुसार सबको चीनी डालकर नीबूका शरवत दिया गया। शीनप्पाजीको चाँदीके प्यालेमें दो-दो वार पूछकर दिया गया और वैदिक रामअैतालको पीतलके गिलासमें अेक वार।

सभ्रातोंके घरके व्याहमें अव तक बलूर नागम्माको वुलाते रहे। अव नागम्मा वुढिया होनेसे नही नाचती, किन्तु फिडल वजाती थी। अुसकी दो जवान लडकियाँ थी। अेकका नाम चन्दू और दूसरीका राजीवी थी। दोनो सुन्दर भरत-नाट्य नाचती थी। नाट्य समाप्त होनेपर गाँवके सभ्रांतोका सम्मान प्रारम्भ हुआ। अेक राजीवीको वुलाकर अुससे सलाम कहलाता, तो दूसरा चन्दूको वुलाकर सलाम अुलटाता। अुस अेक ही सभामें शीनप्पाजीको अठारह वार "शीनप्पाजी महाराजको दौलतजादा हुआ।" दौलतजादा

दिलानेवालोको भुतनी ही "दौलतजादा" लौटानेमे नौ रुपअे खर्च करने पडे। किन्तु केवल अेक ही सलाम पाअे हुअे अैतालरामका मुँह अुस दिन भुने हुअे वेंगन-सा हो गया। वैदिकोको अैसा "दौलतजादा" दिलानेका रिवाज भी नही, पर अपने ही सामने शीनप्पाका अितना सम्मान होना, अुनको अच्छा नही लगा। अिन्ही सव वातोके कारण शीनप्पा अव गाँवमें सम्माननीय व्यक्ति हो गअे थे।

घरमें आते ही अैतालने अपनी सत्यासे कहा, "आजकल शीनाकी आँखें मस्तकपर चढ गअी हैं। हम सव अुसकी आँखोमें नही आते। अुसको अव वेश्याओके सलाम मिलने लगे हैं। आज अुसने नौ रुपयोंका दण्ड भरकर अठारह सलाम करवाअे। वहाँ काफीमें गरम पानी मिलाकर बच्चे पैसे कमाते हैं और यह यहाँ नाचनेवालीके पेट भर रहा है।" सत्याने पतिके साथ सहानुभूति दर्शाअी। अुसको लगा आज पतिराजका मन दुखी हुआ है। सहानुभूति दर्शाकर अुसने कहा, "किसीके रुपअे गअे तो हमें क्या? किन्तु हमारे लिअे यह रास्ता अच्छा नही।"

फिर भी अैताल चुप नहीं रहे। अुन्होने किसी अपने मिलनेवालेके द्वारा वेंगलूरमें यह खवर पहुँचाअी कि "तुम वहाँ पसीना वहाकर पैसे कमाते हो और यहाँ तुम्हारा वाप अुन्हे वुढापेमें वेश्याओको देकर अुसे वरवाद कर रहा है।" यह सुनकर नरसिंह पहले तो घवडाया। आखिर अुसके मामाने अुसे समझाया "किसी भले आदमीने दुश्मनीसे कहलवाया होगा।" तव जाकर वह जरा शात हुआ।

युगादिका समय आया। तीन सालके वाद नरसिंह वेंगलूरसे अेक सप्ताहके लिअे आया। अपने लडकेके मुँहसे वेंगलूरके तीन-तीन होटलोका वैभव सुनकर शीनप्पा वडे खुश हुअे। अुन्होने सोचकर तै किया कि नरसिंहदेवने हमारे घरका भविष्य ही वदल दिया। नरसिंहकी अुम्र अठारह सालकी थी। वह होटलके सभी कामोमें अुत्तीर्ण होकर अव स्वय होटलका मालिक वन गया था और घरपर आया था, अपने मामाका वकील वनकर। अुसने अपने वापसे कहा—"मामाने कहा है, यहाँ खूव कमाअी हो रही है। अुस सपत्तिका कोअी सदुपयोग करना चाहिअे। अच्छी जमीन वगैरह हो,

तो देख लेना !" यह सुनकर शीनप्पाने हँसकर कहा—"वह समझता होगा कि दुनियामें वही अेक अकलमन्द है। तुमने क्या सोचा ? जानते हो मैं तुम्हारे द्वारा भेजी हुअी रकम किसमें डालता हूं ?" और अब तक नरसिंहके भेजे हुअे मनिआर्डरोंको कैसे खर्च किया, अिसका पूरा हिसाब बतला दिया। ये सब बातें अुसने भी सुनी थी, तो भी अुसने कहा—"मामा कहते हैं, सारी रकम अेक ही जमीनपर डालना अच्छा रहता है, नही तो वहाँ थोडा, यहाँ थोडा करनेसे किसीको—खँड-बटाअी पर नही चढाया जा सकता और किसीसे खँड नही आता।" फिर धीरे-धीरे अुसने कहा कि मामाने अपने लिअे भी चार-पाँच हजारकी अच्छी जमीन देखनेको कहा है।

अिससे शीनप्पाजी विचारमें पड गअे। अुनकी खरीदी जमीनसे दूसरोंको परेशान करना संभव था, किन्तु अुसमें कुछ अुत्पन्न होना संभव नही था। दूसरोंको खँडपर अुठाकर आखिर खंडके लिअे झगडना पडता। दूसरी ओर दस-पन्द्रह रुपयोंका जो कर्ज दिया था, डराने-धमकानेसे सूद तो मिल जाता था, किन्तु सभ्रान्तोंको जो बडा-बडा कर्जा दिया गया, अुसका सूद भी वैसे ही पडा था। अिन सब बातोंसे अुन्होंने अपने सालेकी बात मानना ही ठीक समझा। दूसरी बात यह भी थी कि अगर मामाकी सहायता न होती, तो नरसिंहका तीन-तीन दूकानोंका मालिक बनना कैसे संभव था ? आखिर अुन्होंने अपने लडकेसे कहा— "नरसिंह ! तुम्हारा 'पोयट' ही ठीक है। वैसा ही करेंगे।" फिर धीरेसे अुसके ब्याहकी बात अुठाअी, तब नरसिंहने "अब तो मुझे शीघ्र बेंगलूर जाना है, अगले साल देखेंगे!" —कहकर अुस बातको वहीं समाप्त कर दिया।

अिस बार जाते समय अुसने अपने चौथे भाअीको भी साथ ले लिया और पितासे भी कहा—"पिताजी ! मामाने कहा है, रोपाअीका काम हो जानेपर आप भी दो-तीन महीने हमारे साथ बेंगलूरमें ही आकर रहें।" यह सुनकर शीनप्पाजीने अेक नया ही सपना देखना शुरू किया। अब अुन्होंने काशी-यात्राकी-सी शान लिअे बेंगलूर-यात्रा करनेका निश्चय किया।

गर्मी बीतकर वर्षाके दिन प्रारम्भ हुअे। शीनप्पा अब बडी फुर्तीसे खेती-बाडीका काम देखने लगे। वर्षा जरा थमते ही अुन्होंने शिवमोग्गा

जाकर वहांसे बेंगलूरकी रेलपर चढ़नेका सोचा, किन्तु शिवमोग्गा तक कैसे जायँ, यही अेक समस्या थी। अुनके लड़के सब आठ-दस जगह मुकाम करके शिवमोग्गा तक पैदल जाते थे। अुनके लिअे ठीक भी था। अगर शीनप्पा भी वैसे ही पैदल गअे तो अुनकी शानमें बट्टा लगता। अुनके लिअे तो गाड़ीपर जाना ही शोभा देता। वह सभ्रातोके घरसे मिल भी जायगी, किन्तु रास्तेमें जो नदी-नाले है, अुनको किस प्रकार पार किया जाय ? वर्षा और आंधीके थपेडोंमें गाडी आगुंबेकी चढाअी कैसे चढेगी ? गाडी छोड़कर अगर पैदल भी गअे तो पहाड़की जोंके सब खून पी जाअेंगी। अिसी प्रकार अनेक बातें अुनके मनमें आने लगी। अिसका अर्थ यह नही कि अुनमें चलनेकी शक्ति नही थी। वे जानते थे कि अगर चाहूँ तो शिवमोग्गा तक जा सकता हूँ, किन्तु सभ्रातोको भी कर्जा देनेवाले शीनप्पा शिवमोग्गा तक पैदल जायँ, यह सुनकर लोग क्या कहेंगे ? लोग कहेंगे—"लड़के फावड़ोसे पैसे कमाते हैं। हर महीने सौ-सौ रुपअे भेजते हैं। फिर भी अिस बूढेको क्या पागल कुत्तेने काटा है, जो शिवमोग्गा तक पैदल जाता है। सब हँसेंगे।"

गाँववालोंके लिअे अुन दिनों पैदल चलना कोअी खास बात नही थी। नवरात्रमें आठ-आठ सालके बच्चे भी शृंगेरी जाते थे। और नवरात्रमें क्या कभी वर्षा बन्द भी हुअी है ? कुछ साल पहले वहां स्त्रियोंको मुफ्त साडियाँ बाँटी जाती थी, तब औरोंके साथ शीनप्पाकी पत्नी भी पैदल जाकर साड़ी माँग लाअी थीं। यह सब होनेपर भी अुनका मन पैदल जानेको तैयार नही हुआ। अेक दिन जहाज घाटपर सभ्रातोंसे मिलकर खूब विचार-विनिमयकर अुन्होने बेटेको लिखा—"कटाअी तक आना सभव नही। स्वास्थ्य भी कुछ अच्छा नहीं है।" बेंगलूर जानेके लिअे अुनका स्वास्थ्य अच्छा नही था और गाँवमें गाँव-गुंड बनकर अनेक पराक्रम करनेमें कोअी बात न थी। वहाँ आज आअेंगे, कल आअेंगे, कहकर प्रतीक्षा करते-करते बेचारे बच्चे निराश हो गअे। आखिर अुन्होने निराश होकर अेक कार्ड लिखा कि "दीवालीके बाद तो जरूर आना!"

बेंगलूर-यात्रा न होनेसे यद्यपि शीनप्पाको कुछ निराशा हुअी, तो भी चूँकि वहांसे प्रतिमास सौ-पचास रुपये नियमित आते थे, अिसलिअे प्रसन्न

थे। बीचमें अपने सालेके लिअे तीन हजारकी जमीन खरीदनेकी फिक्रमें थे। किसके पास जमीन है, किसके पास नही, किसको बेंचना है, किसको नही, अिसका विचार किअे बिना ही जो मिले अुसीसे बडी शानमे जमीन खरीदनेकी बात करते। "अच्छी जमीन कही हो तो कहना!" कहकर जगह-जगह अपने दूत भेजते। अुनकी बाते सुनकर लोगोने समझ रखा था कि कममे कम दस हजार रुपये तो खर्च ही कर डालेगे।

रोपाअी होकर कटाअी आने तक शीनप्पाजीके जीवनमे अेक और दूसरा बडा प्रसंग आ गया। अुनके सभ्रान्तोके घर अेक व्याहकी तैयारी हुअी। वासुदेव सभ्रान्त अपने अविभक्त कुटुम्बका मुखिया था। पीछे जिस व्याहमें शीनप्पाको अठारह "दौलतजादा" मिले थे, वह अिसी सभ्रान्त वासुदेवकी लडकीका व्याह था। अिस बार भाअीके लड्केका व्याह था। जैसे अपनी लडकीका व्याह किया, वैसी शानसे अपने स्वर्गीय बन्धु राजके लडकेका व्याह करनेकी सभ्रान्त वासुदेवकी अिच्छा नहीं थी, साथ ही साथ परिस्थिति भी वैसी अनुकूल नही थी, अिसमे अुन्होने वर्षा-ऋतुका मुहूर्त ठहराया। लडकीवालोका घर वही पूरबमें दस बारह मीलपर कोक्करणेके पास अेक गाँवमें था। लडकीका बाप बडा अमीर था। अुसके केवल तीन लडकियाँ थी, अिससे अुनकी सपतिका अेक तिहाअी मिलना निश्चित था। अिसी आशासे यह व्याह तै हुआ था। वर्षा-ऋतुके अिस व्याहमें केवल अँगुलीपर गिने जानेवाले लोग जाअेंगे अैसा सोचकर ही सारी व्यवस्था की गअी थी। अुन अँगुलीपर गिने जानेवाले लोगोमें शीनप्पा प्रमुख थे।

समावर्तनके दिन ही बरात जानेका निश्चय हुआ था। चाँदनी रात थी। लोगोने सोचा था अैसा ही आकाश साफ रहा, तो मध्यरात्रि तक नावसे बारह मील तय करके कोक्करणे पहुँच जाअेंगे। गाडीका रास्ता भी ठीक नही था। अिन सब बातोपर विचारकर सबने नदी द्वारा जाना ही अच्छा समझा। केवल अेक चिन्ता थी, शायद हवा या पानी आया, तो कोक्करणे जाना काशी-यात्रासे भी कठिन हो जायगा, अिसीलिअे अुन्होने आणेगुड्डके सिद्धिविनायकको अेक हजार नारियलकी मनौती मानी और अिसी बूतेपर बरात चल पडी।

सभ्रान्तके घरका मुखिया, अुनके पुरोहित, घरकी कुछ महिलाअें, दूल्हा और शीनप्पा जैसे कुछ गण्यमान्य सज्जन बराती बनकर चले। बाजेवालोंको "पैदल चलकर कल आकर मिलो" कहकर छुट्टी दे दी गअी, किन्तु सभ्रान्तोंके घरमें नाचनेवाली कलावतियोंको साथ ले जाना अनिवार्य था। अिसलिअे घरकी कुछ देवियाँ, पुरोहितजी और दूल्हा अेक बडी नाव पर बैठे। सभ्रान्त, शीनप्पा और अैसे दो-चार सज्जनोंके साथ फिडलेची नागम्मा, तबला बजानेवाला सुब्बू और नाचनेवाली राजीवी तथा चद्रू दूसरी नावपर। शामको चौथे पहर नाव चली। थोडी दूर जानेपर हवा अनुकूल देखकर पाल बांध दिया गया।

नाव निरंतर चलने लगी। शामका समय, सूर्य अस्ताचलको जा रहा था। किनारेपर नारियलके वृक्ष धीरे-धीरे अपने मडलोंको हिलाकर अस्ताचलको जानेवाले सूर्य भगवानको प्रणाम कर रहे थे। नाव सुन्दर घोडोंकी चालमें आगे बढ रही थी। थोडी देरमें बाकूर आया। अब केवल पाँच-सात मील चलना शेष था। अैसी ही हवा अनुकूल रही, आसमान साफ रहा, तो पहर भर रात होने तक कोक्करणे पहुँच सकेंगे। सभ्रान्तने "आम्गुड्डे गणपतिकी कृपा" कहकर वहींसे प्रणाम किया। फिडलची नागम्माने भी "भगवान साथ है!" कहा।

नाव आगे जा रही थी। धीरे-धीरे सध्याका स्थान अँधेरा ले रहा था। आसमान साफ था। चाँदने भी दर्शन दिया। चाँदनी छिटकने लगी। नावकी यात्रा मानो स्वप्नका आनन्द दे रही थी। सभ्रान्तने फिडलची नागम्माको बुलाकर कहा—"बाजा है ही। आसमान साफ है। यों ही यहाँ-वहाँकी गप्प लगानेकी जगह जरा फिडल बजती तो अच्छा होता!" "राजीवी गाती भी अच्छा है।" दूसरे रसिकने कहा। बस फिर क्या था? रसिकशिरोमणि शीनप्पाने कहा—"सभ्रान्त वासुदेवकी लडकीके ब्याहमें राजीवीका गाना और नाच देखकर मैं प्रसन्न हो गया था। राजीवीकी यह छोटी बहन भी क्या कम है?" अिस प्रकार रसिकोंने प्रशंसा करनी शुरू की। पानीमें होनेवाले अिस सगीतोत्सवके पक्षमें सबने अपनी राय दी। जब सुननेवाले आतुरतासे सुननेको तैयार हुअे तब सभ्रान्तोंने अपनी सगीता-

भिरुचि दिखाते हुअे यह गाना, वह गाना, कहकर दो-चार गानोका नाम भी ले डाला। शीनप्पाने भी "वह जो गाअेगी सो अच्छा ही गाअेगी!" कहकर प्रोत्साहित किया। सगीत और सगीतकारोंके आकर्षण और प्रोत्साहनमें शीनप्पा सम्भ्रान्तोंसे चार कदम आगे थे। गालपर पडी अेक-दो वर्षाकी बूंदोने अुनके स्वप्नको जगाया। अिनकी नाव पीछे रह गअी थी और अगली नाव अिनकी पुकारसे भी अधिक दूर पहुँच चुकी थी।

"नही! वैसे ही चार बूंदे टपकी, अभी चली जाअेंगी। योही फिडल भिगोनेसे क्या लाभ!"—शीनप्पाने कहा। "मालूम होता है आप लोग पानकी डिबिया भूल आअे है!"—फिडलची नागम्माने कहा। पानकी डिबिया खोली गअी और हवा चल पडी, साथ-साथ भयकर वर्षा भी! "नाव किनारे लगाओ, बीच पानीमें नाव खडी करना अच्छा नहीं। वर्षा थमनेके बाद आगे चलेगे"—सम्भ्रान्तने कहा। अुस हवा और पानीमें सबका स्नान हुआ। संभ्रान्तोको अगली नावकी फिक्र लगी थी। वे जोर-जोरसे पुकारने लगे। वर्षाके ताडवमें नजदीकके लोगोको सुनना मुश्किल था, फिर दूर क्या सुनाअी देता!

किसी तरह नाव किनारे लगी, पर जहाँ लगी थी, वहाँसे अूपर जमीनपर चढना मुश्किल था। किनारेपर घास ही घास थी। नाव घासमें फँस-सी गअी थी। न आगे जा सकती थी, न पीछे। छाता खोलनेपर भी सब भीग गअे थे। नावमें ही तालाब बन गया था। सब ठडसे काँप रहे थे। पर क्या किया जाय? वर्षा रुकनेसे पहले न किनारेपर अुतर सकते थे, न किसीको बुलाकर कुछ सहायता प्राप्त कर सकते थे। शीनप्पाके मनमें रह-रहकर आता था—"मैं बेंगलूर न जाकर अिस बरातमें बुरी तरहसे फँस गया!"

सबने दो क्षणका नरक-वास किया। वह तूफान जैसे आया था वैसे ही चला गया। आसमान फिर साफ हो गया। दूध-सी चाँदनीने पुन नदी-प्रवाहको हँसा दिया "नाव-आगे ले?"—मल्लाहने पूछा। "यहाँ रुककर क्या करेंगे? आगे किसीका घर मिला तो देखेंगे"—सम्भ्रान्तोने कहा।

"कोस भर चलनेके बाद घर मिलेगा, अुसके बाद आधा-अेक कोस गअे कि कोक्करणे आया!"—मल्लाहने कहा।

"जब आणेगुड्डके मिद्धि विनायकने ही धोखा दिया तो दूसरा क्या करेगा ?"—कहते सभ्रान्तोने अगली नावको पुकारनेको कहा। कितना ही पुकारनेपर भी कोअी अुत्तर नही मिला। "बहुत आगे चले गअे होगे।" कहकर मल्लाह चुप हो गअे।

नाव पुन बीच धारामें आगे बढी। वर्षामें भीगे लोगोंने कपडे निचोड़कर पहननेका निश्चय किया। नाचनेवाली कलावतिनियोंके कपडे छोडकर सबके कपडे अगली नावमें ही थे। ठडमें ठिठुरना पड रहा था। शीनप्पा बडे व्याकुल थे, परन्तु अुन्होने तो अिस घटनामें अपना लाभ ही समझा। चाँदनीमें सभ्रान्त वासुदेव अुसके कानमें कुछ कह रहे थे। शीनप्पा धीरे-धीरे बाअी आँखसे चोरी-चोरी चन्द्र और राजीवीका सौन्दर्य निहार रहे थे। मध्यरात्रिके ममय जब नाव कोक्करणीके किनारे लगी, तब वर्षा और ठडके दुख-कष्टको भूलकर वे अेक अपूर्व सुख-स्वप्न देखनेमें तल्लीन थे।

अिन लोगोकी नाव कोक्करणेके बाजारमें पहुँची। लडकीवाले मशाले लेकर स्वागतके लिअे खडे थे। अिनसे पहले ही बरातवालोकी दूसरी नाव वहाँ पहुँच चुकी थी। वह नाव आगे निकल गअी थी, अिसलिअे अुसे हवा-पानीका विशेष प्रसाद नही मिला था और जरा-सी बूँदा-बूँदी होने तक वे किनारे लग गअे थे।

नीचे अुतरते ही शीनप्पाने कहा—"सबका शनि हमपर सवार हुआ।"

"नही, नही! अिसमें किसी अेकके सिरपर बैठा शनि मबको लगा।" —फिडलची नागम्माने कहा। "वह कौन होगा ?"—किसीने कहा। सब अपने अिर्द-गिर्द साथियोको देखकर हँसे। अिस तरह हँसते-बतियाते सब अपने डेरेपर पहुँचे। डेरेपर सबके स्वागतकी तैयारी थी। "अब कुछ गरम-गरम खाकर ठडे-ठडे सो जाअेंगे!"—शीनप्पाने कहा और जवाबमें फिडलची नागम्माने "क्या अिन्ही गीले कपडोसे सो जाअेंगे!"—कहकर मजाक की। "तुम्हारे सामने जीतना मुश्किल है, नागम्मा!"—शीनप्पाने कहा और "मालूम होता है आपने अुनके मुँहमें अपना डेरा लगा दिया है।" —राजीवीने कटाक्ष किया। अिस प्रकार पहली बार ही राजीवीने मुस्करा-कर, आँखें मटकाकर शीनप्पासे बातें की थी। यह सुनकर अुन्होंने आगे क्या

कहे यह न समझकर "माँमे लडकी तेज है" कहा। असपर माँ "आजकलकी लडकियाँ!"—कहकर हँसी।

डेरेपर खाने-पीनेका प्रबन्ध अत्युत्तम था। रात अधिक होनेसे सब अपनी-अपनी जगहपर सो गअे। सभ्रात न जाने क्यो नीद न आनेसे शीनप्पाके साथ वही अेक कमरेमें चले गअे। पानसुपारीकी तश्तरी भी सामने आअी। तबला बजानेवाला सुब्बा तमाखूका टुकडा माँगने आया। तब सभ्रातने धीरेसे "वीडा बनानेवालोके न होनेपर पानमें मजा ही नही आता!"—कहा। अिस प्रकार बुलावा जानेपर भला अवज्ञा कैसे होती? बुलावा मिलते ही नागम्मा अपनी राजीवी-चन्द्रूको साथ लेकर वही आकर बैठ गअी। नागम्माने यहाँ-वहाँकी गप्पोसे और राजीवी-चन्द्रूने शीनप्पा और सभ्रातको वीडा खिलाकर प्रसन्न किया। थोडी देरमें नीद आनेसे नागम्मा वहाँसे चली गअी।

रात बीती। जब सभ्रात और शीनप्पा अुठे, तब पहर भर दिन चढ चुका था। सुबहका नाश्ता अुनकी राह देख रहा था। जल्दी-जल्दी वे अपने नित्य-कर्मसे निपटे। नाश्ता हुआ। शीनप्पाके साथ सभ्रात अपने समधी के घर गअे। वहाँ जाकर मँडवा वगैरह देख आअे। समधीकी ओरसे और चार रोज वही रहनेका न्योता आया। शीनप्पाने "डेरेका प्रबन्ध भी अच्छा है। घर भी बडा सुन्दर है और विशेष दूर भी नही। हमारी कोडीसे पारपल्ली जितना भी नही। फिर भी जिसको चलने-फिरनेमें दिक्कत है, वह यही रहेगा।"—कहकर अपना निर्णय दिया और सभ्रातने भी "यही ठीक है!"—कहकर अपनी अनुमति दी।

शामको गोधूलीके समय विवाहका मुहूर्त था। सभ्रात वासुदेवने कमसे कम शामको वर्षाका अनुग्रह न हो, अिसलिअे पुन अेक बार आने गुड्डके सिद्धि विनायककी मनौती की। अिसमें शक नही कि कल रातको अुसी आने गुड्डके सिद्धि विनायकने बरातके आधे आदमियोको भिगो दिया था, पर क्या करे? अुनको छोडकर और किसकी शरण जाअें? खैर, प्रार्थना सुनकर भगवानको पूरी करनी ही चाहिअे। कन्यादानके समय तक अेक भी बूँद पानी नही बरसा। अुसके बाद क्षण भरमें ही अुसने अपना प्रचड ताडव आरभ किया। अिससे राजीवी-चन्द्रूका बडा नुकसान हुआ।

किसीने "दौलतजादा!" नही कराया। संभ्रात और शीनप्पाके "दौलत जादा" के अुत्साह पर भी पानी फिर गया।

भोजन समाप्त होते ही संभ्रात और शीनप्पा अपने डेरेपर चले गअे। नाचनेवाली कलावतिनियोने तो "व्याह घरके शोरगुलमें हमें नींद नही आअेगी!"—कहकर डेरेका रास्ता पकडा। यद्यपि तय हुआ था कि केवल पुरुषोमें जो चलने-फिरनेके शौकीन है, वे ही डेरेपर जाअेंगे, किन्तु आखिर नागम्मा, राजीवी, चन्दू और त्रिकूट भी वहाँसे चल पडे।

व्याहके चार दिन डेरेपरकी शानका क्या कहना। वहाँका सगीत, नृत्य, पानसुपारी आदिका दृश्य देखकर शक होता था कि व्याह अुस घरमें है या अिस घरमें। कुछ भी हो व्याहके चार दिन बहुत अच्छे बीते। चार दिनका व्याह बडी शान-शौकतसे सम्पन्न हुआ। समधीके घरके स्वागत-स्वागतसे भूखोको सतोष हुआ और चन्दू-राजीवीके मृदु-मधुर स्वर तथा चितवनने मनचलोंको सन्तुष्ट कर दिया। सबके सब प्रसन्न थे। चार दिन बीतनेके बाद घरकी स्त्रियोंके आग्रहपर बरात रातको लौटनेके बजाय दिनके समय लौटनेका निश्चय हुआ। जाते समय वर्षाने जो कुछ गीला कर दिया था, वह सब लौटते समय धूपने सुखा दिया। करीब तीसरे पहर सब घर पहुँचे।

घर लौटनेका यह कार्य सुखद नही रहा। राजीवीको वसूर भेजनेका कार्य अत्यत दुःखद था। रसिकताका नाम भी न जाननेवाले शीनप्पाके हृदयमें अिस प्रकार सुन्दर संस्कार देनेवाली राजीवीके प्रति अत्यत प्रेम, आदर अुत्पन्न हो गया था। अुसने भी चलनेके प्रथम शीनप्पाका "जब कभी कुदापुर आअें तो अिन गरीबोंके घरको अपनी पद-धूलिसे पवित्र करे।" कहकर आग्रह किया। तबसे शीनप्पा "मुझे कुदुपुरमें कब और क्या काम है?" अिस विचारमें पड गअे।

सभ्रातोके घरके व्याहकी खबर सारे गाँवमें फैल गअी। अंतालरामको पिछले व्याहमें न्योता आया था। अिस बार वह क्यों नही आया? अंताल-राम यही सोच रहे थे कि बरात लौटनेका भी समाचार मिल गया। चार-आठ दिनके बाद शीनप्पाके नअे अभियानकी खबर भी अुनको मिली। "अच्छा! आखिर कोडीके हमारे ये सभ्रात पारपल्लीके संभ्रातोंके साढू बने!"—कहकर अुन्होंने जहरीली हँसी हँसी।

: ११ :

अंतालरामके जब लडकी पैदा हुआी, अुस समय लच्चाके तीन साल पूरे होकर चौथे सालका भी आधा हो चुका था। सत्यभामा अपनी बच्चीको लेकर घर आयी। अुसके आनेसे लच्चा पर कोअी प्रभाव नहीं पडा। दिन भर सत्यभामा अुस नन्ही बच्चीकी सेवामें लगी रहती थी, अिससे भी वह निराश नहीं हुआ, क्योंकि वह मांका राजा-बेटा नहीं, बडी मांका लाडला बनकर बढा था। घरपर बहनके आनेके बाद वह दिनमें चार बार मांके पास जाता तो चौदह बार बडी मांके पास। यह भला सत्यभामाको क्यों अच्छा लगता? पर अिसपर विचार करनेवाला कौन? सत्यभामा लच्चाको पास बुलाती, वह जाता। मां पूछती—"लच्चा! तू बहनके साथ नहीं खेलेगा?" वह जवाब देता—"मुझे नहीं चाहिये तेरी बहन!" वह पूछती, "मेरे साथ नहीं खेलेगा?" वह सीधा जवाब देता—"तू मुझे गोदमें ले, अुस बच्चीको ज़मीनपर सुला दे, तो मैं तेरे पास आअूं!" यह काम वह कैसे करती? अगर वह यह काम नहीं कर सकती, तो लच्चा भी क्यों अुसके पास जाने लगा? वह निराश होकर कहती, "दुनिया भरके लोगोंकी गोदमें बढ़नेके लिये ही यह मेरी कोखसे पैदा हुआ!" और अपना दिल मसोस लेती।

घरमें यद्यपि पारोतीके साथ खूब खेलना-बोलना भी चलता तो भी वह अुसपर विशेष प्रेम नहीं दिखाती। बस, घरका आंगन छोडा कि लच्चा-पारोती-नाटक शुरू हुआ। अुनका वह लाड-प्यार सारे जीवनको प्रभावित करता था। मां बननेकी जीवन भरकी व्याकुलता पारोती अब अुस बालकपर बरसा रही थी, मानो अुसकी मां बननेकी भूख शान्त हो गयी हो। सत्यभामा तो

लच्चाकी कहने भरकी माँ थी। यह अवस्था सत्यभामाको दिन-ब-दिन असह्य होती गयी। अैतालरामको तो घरमें बच्चेके साथ खेलते बैठनेका समय ही नहीं था। शामको जब घर आते तो बोलते, खेलते, लाड-प्यार करते। लच्चा सदा-सर्वदा बडी माँके पास ही रहता है, यह अैतालरामने भी देखा, पर मजबूर थे। वे जानते थे कि डराने-धमकानेसे कुछ नहीं बनेगा और धमकायें भी किसे? किन्तु सत्यभामा नित्य-प्रति अुनसे अपना दुखडा रोती, "कल मुन्नी भी बडी होकर यदि बडी माँके पास रहने लगी तो मैं केवल जन्म देनेवाली माँ रह जाअूँगी।"—कहकर आँसू बहाती। अैताल अुसकी वेदनाओंकी गहराअी अनुभव करता, किन्तु कोअी अुपाय अुसके पास नहीं था।

लच्चाको चार वर्ष पूरे होकर पाँचवा लगा। अब अेक मौका छुटकारेका मिला। सत्यभामाने सूचित किया—"अब अुसे विद्याभ्यास कराना चाहिअे। अिसके लिअे अुसे स्कूल भेजा जाय। चाहे तो गाँवके ही स्कूलमें भेजें, किन्तु ननिहालके स्कूलमें पढ़ाअी अच्छी तरह होगी।" अैतालरामकी अिच्छा बच्चेको दूर रखनेकी नहीं थी, अिसलिअे अुन्होंने "अितनी जल्दी क्या पडी है?"—कहकर टाल दिया। रोज-रोज वही बात अुठने लगी। जब बच्चेके पाँच वर्ष पूरे हुअे, तो सरसोतीने कहा—"भैया, अिस नवरात्रकी प्रतिपदाको लच्चाको शकर अय्याके मठमें भेज देना चाहिअे। बच्चेको श्रीगणेश सीखना है न। सुना है, पारपल्लीके सम्भ्रांत वसुदेव अपने बच्चोंको कुदापुर या अुडपी भेजते हैं। अुनके बच्चे वहाँ अंग्रेजी सीखते है। हमें अंग्रेजी-वंग्रेजी नहीं चाहिअे। रामायण, महाभारत, भागवत पढ़ना आ गया तो बस।"

"सरसोती, अितनी जल्दी क्या पडी है? लच्चाको अय्याके मठमें भेज सकते हैं, किन्तु अैय्याका चूँटी काटना, मुर्गा बनाना, गोला-लाठी, यह सब वह कैसे सहेगा? घरमें अब तक हमने अुसको अेक अँगुली भी नहीं लगाअी।"—अैतालने सरसोतीकी सारी बातें सुनकर कहा।

"क्या शकरय्या हमारे बच्चेको भी मारेगा?"

"किसका बच्चा है अिससे अुसे मतलब? अभी-अभी शीनमय्याके आरेटाको गोला-लाठी बनाकर अूपर अुठाते समय गिर जानेसे जो अनर्थ

हुआ, वह तूने नही सुना ? शीनमय्या क्या कम है ? मठ जाकर अुसने शंकरय्यासे कहा, "मैं तुम्हारी टाँग तोड दूँगा।" तब शंकरय्याने अुससे कहा— "अपने बच्चेको तुम्ही पढाओ। कलसे मठमें आना बन्द!" और ओरटाको मठसे भगा दिया। अब अगर पढ़ाना-लिखाना है, तो या तो नाला पारकर सरकारी स्कूलमें भेजना होगा या मणूरके मठमें। अितने छोटे बच्चे भला अितनी दूर कैसे जायेंगे ?"

"तब तो आग लगे अुस मठको। पढना-लिखना सीखकर भी क्या करना है ? यह सब सभ्रातोंके बच्चोंके चोचले हैं। अुसको तुम अपने आठ अष्टक और आन्हिक सिखा दो। परंपरागत पौरोहित्य भी चलना चाहिये न।"

अुस दिन बाते यही तक रही। "नवरात्र आनेमें अभी अेक महीना है, अितनी जल्दी क्या पडी है ?"—कहकर अंतालराम चुप हो गये। बाहरसे अुन्होने अिस प्रकार कुछ न कुछ बहानाकर बात टाल दी, किन्तु अन्दर अुनके दिलमें संकल्प-विकल्प हो रहे थे। वे सोच रहे थे कि मेरा अिकलौता बेटा है, अुसे सरकारी स्कूलमें भेजनेसे क्या लाभ ? कल मेरे बाद वैदिक कर्म कौन करायेगा। खानदानकी पुरोहिताअी कैसे चलेगी ? घरमें ही पुरोहिताअीके लिये आवश्यक बाते सिखा दूँगा तो अुपनयन होते ही मेरे साथ चलकर मेरे काममें हाथ बँटायेगा, अेक प्रख्यात वैदिक विद्वान होगा, किन्तु थोडी देरमें मन बदल जाता। दूसरी ही विचारधारा आकर मनमें अुलझ जाती। पारपल्लीके वासुदेव सँभ्रात घरके लडके अँग्रेजी पढकर वकील बने हैं। हमारे गाँवके लोग चींटीकी तरह कतार लगाकर अुनके घर जाते हैं, अपने रुपये अुँडेलते हैं। कही हमारा लच्चा वकील हो गया तो ? अैसे अनेक अनावश्यक विचार मँडराने लगे। अुसके वैदिक होकर पड़े रहनेमें भी अुनका कोअी खास स्वार्थ नही था, क्योकि अुन्होने देखा था, शीनमय्याके लडके बेंगलूर जाकर रुपये फावडेसे भरकर लाते हैं, जिस कारण गाँवमें शीनमय्याकी जो शान-सम्मान है, वह अुनसे छिपा नही था। शीना तो पारपल्ली सभ्रात वासुदेवके साथ अुठता-बैठता है, आजकल वह हमारे गाँवका सभ्रात-सा बन गया है। मेरा लच्चा भी अिसी तरह अपने बापका नाम क्यो न रोशन करे ? अुसके लडकोने बेंगलूरमें काफीके ग्लास

धोकर पैसे कमाओे, तो मेरा लड़का अंग्रेजी सीखकर वकील होकर पैसा कमाअेगा ! अैतालराम आजकल, अिसी तरहके सपने देखा करते ।

बहुत दिनतक अिस प्रकारके मीठे सपनोंसे वे पागल-से बन गअे । नवरात्र आअी। शकरय्याने अेक दिन अुनके घरमें आकर कहा—"मालूम होता है घरमें कोअी नही है।" सुनकर सरसोतीने बाहर आकर कहा—"भैय्या बाहर गअे हैं, अभी आअेंगे . बैठिअे न ! क्या काम है ? जल ले आअूं ?

शकरय्याने कहा—"नही-नही, मेरे पास अितना समय नही । अपने म को जाना है, कल सरस्वती पूजन है ना ? सोचा तुम्हारे लक्ष्मीनारायणके पाँच साल पूरे हो गअे । विद्यारम करना होगा । कलसे हमारे मठमें भेज देते तो अच्छा होता । यही कहने आया था ।"

"मैंने भी भैयासे यही कहा था, किन्तु, सच है या झूठ मैं नहीं जानती, मैंने सुना है मठका अर्थ है मार, मुर्गा बनना और गोला-लाठी करना । अिन्ही बातोंसे बच्चेको भेजनेकी हिम्मत नहीं होती । हमने तो अभी तक लच्चाके शरीरको हाथ तक नही लगाया । अिसीलिअे पूछा !"—यह कह कर सरसोतीने अपना सदेह प्रकट किया ।

"क्या कहूँ ? जिस गाँवमें बोलनेवालोंका मुंह कौन रोके ? अपना-अपना मुंह और अपनी अपनी बात । यही मणूर गाँवमें अेक गुरु है । वह चाहता है कोडिके बच्चे भी अुसके पास चले जाअें, अिसीलिअे अुसने अैसी खबर फैलाअी होगी ! और क्या ?"—शकरय्याने अपनी सफाअी पेश की ।

"मैंने भी सुनी-सुनाअी बात कही । आँखोंसे थोड़े ही देखा है, आखिर कुछ भी हो, आप हमारे लच्चाको मारे नहीं, अितना ही हम चाहते है ।" —सरसोतीने कहा ।

"वैसे अुसे छुअे बगैर पाठ सिखाना मुझसे नही होता । जब मैं पढ़ता था दिनमें आठ-आठ अिमलीके कमछोका चूर होता था । मैं तो अुसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं मारता, किंतु बिलकुल ही नहीं मारा तो न मठका डर रहेगा, न अुसे पाठ याद होगा । गरम करनेसे पहले कहीं मक्खन पिघलता है ...... ?"

बातें करते-करते सामने आओे गुड़को खा पानी पीकर अुसने फिर पूछा, "क्या भैयासे कहोगी न लच्चाको भेजनेके लिओे? दशहरेके दिन जो पाठारंभ करता है, वह कभी पीछे नहीं रहता।"

"अिन सरकारी स्कूलोंमें दशहरेसे पढनेकी बात नहीं है क्या?"

"सरकारी स्कूलोंमें कुछ भी नहीं है। काकेडमें अेक स्कूल है। वहाँपर तिथिसे कुछ भी नहीं। पूर्णमासी, अमावस्याको भी वहाँ लड़के आते हैं, अष्टमीको भी पढते हैं, जैसे कुदापुरकी मंडी! अुनका तो दिनोंका हिसाब है, क्या लच्चाको वहाँ भेजनेका विचार है? वहाँ तो शूद्रों और ब्राह्मणोंके बच्चे सब अेक ही बेंचपर बैठते हैं। वहाँ सब कुछ टका सेर है।" शंकरय्याने सरकारी स्कूलकी बात कही।

"अैसा है! हमारा लच्चा वहाँ जायगा, तो वह भी शूद्रोंके साथ बैठेगा?"

"हाँ, यही सरकारी हिसाब है! मैं अपने मठमें ब्राह्मण छोड़ दूसरी जातिके बच्चोंको आने ही नहीं देता। अभी चार दिन हुओे नाले पारके नागप्पा शेट्टीने कहा—"अय्या! मेरे बच्चेको भी चार प्रसंग सिखा दो तो बड़ा अुपकार होगा।" मैंने साफ कह दिया—"सिखानेवाले भले ही सिखाओें, मैं तो ब्राह्मणोंके सिवा और किसी जातिके बच्चोंको नहीं सिखाता।"

"सरकारके अैसे नियम नहीं है, क्या?"

"सरकारने और दस साल अिसी तरह चलाया, तो कल हल चलानेवाला कोओी नहीं मिलेगा। ब्राह्मणोंको ही चलाना पड़ेगा!"

अितना कहकर शंकरय्या मठ जानेका समय होनेसे "भैयासे सब कह डालना!"—कहकर चल दिया। दस घर जाकर, यहाँ-वहाँ गप्प हाँकते हुओे अुसको मठ जाना था। अुसके अपने घरमें जगह नहीं थी, अिसीलिओे अुसी गाँवके अेक सज्जनके घरके धान कूटनेके आँगनमें अपना बड़ा भारी मठ चलाता था। अुस मठमें बच्चोंकी संख्या न कभी तीनसे कम हुओी, न छहसे ज्यादह, फिर भी कन्याण, कोडि, पडुकेरे अिन तीन गाँवोंका वह अेकमात्र द्रोणाचार्य था। आजकलके बच्चोंको यदि शंकरय्या सिखाते हैं, तो अुसके

बडोको अिनके पिता नारायण अय्या सिखाते थे। कहते हैं, नारायण अय्याकी जवानपर अडतालीस प्रसग (भागवत, नाटक, काव्य, कथाअें आदि) नृत्य करते थे। अिस मठमें चार-आठ साल वीत जानेपर लडके दस-बारह प्रसग सीखे विना नही रहते थे। अिसके अलावा थोडा-सा हिसाव-किताव, चिट्ठी-पत्री लिखना, दस्तावेज लिख देना, ताडपत्र-लिखना—यह सव सिखा दिया जाता था। स्कूलोकी तरह यहाँ स्लेट और पेन्सिलसे लिख-लिखाकर सरस्वतीकी जाति नही विगाडी जाती थी।

शकरय्याको अुतने प्रसग नही आते थे, तो भी सामान्यत जो प्रसग प्रचलित हैं, अुनमेंसे मीनाक्षी-कल्याण कृष्णार्जुन-युद्ध, अिन्द्रकील आदिमें किसी प्रकारकी कमी नही थी। साथ ही शकरय्याका हाथ मृदगपर खूब जमा हुआ था। जव रामायण, महाभारत, भागवतादिका अर्थ करते तो वडी ही मधुर भाषामें कहते। और चूँकि अुनकी आवाज वडी मधुर थी अिसलिअे किसी भी ताल मृदग, भागवत नाटयमें, विना अुनके मृदग वजता ही नही था। पर अुनमें अेक महान दोष भी था, जिसे गाँवके लोग स्वीकार करते थे। वह था "अुनका मारका हाथ मृदगके हाथसे अधिक जोर-दार होना।" अिसपर किसी वच्चेके वापने अुनके सामने यदि कुछ आलोचना की तो "मेरे वापने मुझे कितना मारा आप क्या जाने? वच्चोकी पूजा करनेसे विद्या नही आती। जिसकी पीठ नरम होती है अुसीपर सरस्वती प्रसन्न होती है।"–कहकर अुपदेश देते। अिसपर कोअी क्या कहता? फिर भी कोअी-कोअी कहते— "अैय्या! हम यह नहीं कहते कि वच्चोंको विल-कुल मारना ही नही चाहिअे, किन्तु तुम तो अितना मारते हो कि वेचारे डरके मारे तुम्हारे मठमें आनेका नाम तक नही लेते और दिनभर होन्ने-वृक्षपर ही अपना घर वनाअे रहते हैं।" अिसके लिअे भी अैय्याके पास जवाव था। वे कहते– "घरवाले भी मेरी तरह पीठ गरम करे, तो होन्ने-पेडपर अपना घर वनानेकी वात ही क्या, वच्चे होन्ने-पेडके पास भी न जाअें। वच्चोंको मुँह नही लगाना चाहिअे। जव वचपनमें मार खाअेंगे, तो वडे होकर हलवा खा सकेगें।" अिसके वाद कोअी क्या कहता? जिस साल मठमें पाठ-शालामें छह वच्चे आते, अुस साल छह मुडे चावल और जिस साल चार वच्चे

आते चार मुडे चावलसे अुन्हे अपने गुरुपनका समाधान कर लेना पडता। साथमें थोडी साग-सब्जी भी आती, फिर बिना थोडी खेती-बारी किअे शकरय्याकी गृहस्थीका चलना कठिन ही था।

शकरय्याका प्रवचन सुननेके बाद सरसोतीके मनमें सरकारी स्कूलके बारेमें अेक प्रकारकी घृणा-सी हो गयी। ब्राह्मणोके कुलमें पैदा होकर भला सरकारी स्कूलमें जाना कहाँ तक ठीक होगा, यही विचार अुसके मनमें चक्कर काट रहा था।

रातको खाना खा लेनेके बाद सरसोतीने अैतालके पास जाकर कहा— "भैया! आज शकरय्या आअे थे।" अुनसे स्वाभाविक रूपसे लच्चाके भविष्यके बारेमें जो बाते हुअी, अुनपर खूब विचार करनेके बाद अैतालरामने अपना गम्भीर निर्णय सुनाया—"मुझे लगता है शकरय्याकी मारसे डर कर हमारा लच्चा चार दिन भी अुस मठमें नही जाअेगा और अुसकी तालमृदगसे बच्चोका जीवन चलनेका नही। मैं वैदिक हूँ, चालीस-पचास घरका पुरोहित हूँ। फिर भी समाजमें मेरा क्या मान है यह तुम देखती हो, और चार पैसे कमानेका जरिया होते ही शीनमय्याकी क्या अिज्जत हो रही है, वह भी तुम्हारे सामने है।"

"तब अुन्हीकी तरह लच्चाको काफीकी कटोरियाँ धोनेके लिअे किसी होटलमें भेजनेका विचार तो नही कर रहे हो?"

"दुत्! रोटी बेंचनेका पैसा मैं नही चाहता। घर बैठे-बैठे सौ डेढ सौ बोरी चावल आता है, यही बैठे खाया जा सकता है। जज़मानीके चालीस-पचास घर हैं। अुसको किसी बातकी कमी नही है।"—अैतालने कहा।

यह सब सुनकर पारोतीको आश्चर्य हुआ। हमारे यहाँ सौ डेढ सौ बोरी चावल आता है, यह बात अभी अुसके कानमें पडी। पति अिस गाँवके बडे अमीर हैं, अिस बातका भान अुसे अब हुआ। अिसके सिवाय पतिके हाथमें नगद रकम भी खूब है, यह भी अुसने सुना था। किन्तु कितनी है, कहाँ है, अिसका अुस बेचारीको क्या पता? अैसे ही कभी कुछ पूछा तो "औरतोको अुन सब बातोंसे क्या वास्ता?" कहकर चुप कर देते।

भाअीके विचारका अूहा-पोह देखकर सरसोतीने पूछा— "भैया। शीनप्पाकी शान लेकर हमें क्या करना है? अुसके बडप्पनसे हमें क्या वास्ता। लच्चाको घरमें ही कुछ सिखाकर तैयार करनेका विचार किया है क्या?"

अितनेमें सत्यभामा भी आ गअी। अुसके मनमें क्या है, अुसने क्या-क्या सोचा था, अिसका किसीको पता न था। सत्यभामाको अपने पतिके बारेमें पारोतीसे अधिक जानकारी थी। अपने बापके मुँहसे अुसने यह भी सुना था कि ये यदि दो-दो पैसेकी दक्षिणा माँगने, चार-चार मील पैदल दौडनेको छोडकर घरपर बैठते तो गाँवके सभ्रांत कहला सकते थे। अब नवरात्र था। लच्चाको दशहरेके दिन शकरय्याके मठमें ले जाकर बलि देनेके लिअे सब जुटे हैं, अिसी विचारसे वह परेशान थी। अगर अुसको घरमें ही रख लिया, तो अपनी बडी माँके साथ गौवें चरानेके सिवा और किसी कामका नहीं रह जायगा। सत्याका यही दृढ विश्वास था। अपनेसे दूर जायगा, अिसका भी दुख था। अिन सब बातोंसे परेशान होकर वह भी अिस चर्चामें शामिल हुअी।—"आखिर सब कुछ अिन्हींको क्यों तय करने दें? जन्म देनेवाली मेरा भी कुछ अधिकार है या नहीं?" यह अभिमान भी अुसके भीतर सिर अुठा रहा था। "अुसके नानाकी भी राय ली जाती तो अच्छा होता, वे कभी गलत राय नहीं देंगे। जो कुछ कहेंगे अपने नातीकी भलाअीकी ही कहेंगे।" कहकर अुसने विचारोंको नअी दिशा दी। नानाके घरकी बात आते ही सरसोतीके मनमें आया "अिसे हमपर विश्वास नहीं।" अिसीलिअे वह "अुन्हींसे पूछ लो। बडा होनेपर भी शायद अुन्हींको राह दिखानी पडे।" कहकर चली गअी।

बस, वह सभा यहीं समाप्त हुअी। किन्तु रातको सोते-सोते पति-पत्नीने विचार-विनिमय किया। अंतालने अपनी सत्यासे कहा— "अगर वह वकील होता, तहसीलदार होता या और कोअी सरकारी नौकरी करता तो अच्छा होता। अुसमें जो शान-मान है, वह भला अिस वैदिकीमें कहाँ है? अिसलिअे न शकरय्याका मठ चाहिअे, न घरपर अध्ययन, सरकारी स्कूल ही अच्छा है।" माँ-बापका निश्चय यही हुआ। पड्डुमुन्नूरके ननिहालसे सरकारी स्कूल नजदीक है, नाना लच्चाको अपने पास ही रख लेंगे। अगर वह यहीं रहा तो किसी कामका नहीं रहेगा। कहकर विचार दृढ करा दिया गया।

वर्षाकी बहार अुतर गअी । मछली पकडनेकी नावे पानीमें अुतरी । महालय अमावस्याका समुद्र-स्नान भी बीत गया । अपने नसीबमें वार्षिक अेक मुंडा चावल लिखा है या नही यह देखनेके लिअे शकरय्या बार-बार वहाँ आते-जाते रहते । "कुछ भी हो आखिर दशहरेके रोज तो मठमें भेजना चाहिअे ना !" कहकर आग्रह किया । सरसोतीने अिसपर बोलना ही छोड दिया । "क्या अैताल अपने बच्चेको कारकडके सरकारी स्कूलमें भेजते हैं ? अबतक संभ्रातोंके बच्चे सरकारी स्कूलोंमें भेजे जाते थे । अब वैदिकोंने भी अुनकी दुम पकड ली !" कहकर शकरय्याने कोसना शुरू किया ।

"अय्या ! यह सब हम क्या जाने ? जिन्होंने जन्मा है वे ही जानें !" कहकर सरसोतीने कम-से-कम अपने लिअे यह बात यही खतम कर दी ।

अैताल नवरात्रके दिनोंमें ही अेक दिन ससुराल गअे । वहाँ मादप्प-य्याने अुनका स्वागत करते हुअे पूछा—"मालूम होता है, हमारा घर आपके लिअे पुराना हो गया । जबसे सुब्बीका जन्म हुआ, तबसे न तुम आअे, न सत्या !"

अिसपर अैतालने कहा—"सत्या कहती है बच्चेको अब स्कूलमें भेजना चाहिअे, मैं आपकी राय लेने आया हूँ । आपसे पूछे बिना भला हम कोअी बात कैसे तय कर सकते हैं ।"

सत्यभामाके बापने हँसते हुअे कहा—"अब तुम्हारी आँखें खुलीं । लक्ष्मीनारायणके विद्यारंभकी बात चली है क्या ? मैं समझता था जब अपनी लड़की दे दी तब भला अुसपर हमारा क्या अधिकार ? अब न सत्या हमारी है, न अुसका लच्चा ! अिसके लिअे कौन हम बूढोंकी राय लेगा ?" अिस प्रकार विनोद-व्यंग्य कसनेके बाद श्वसुरने दामादसे कहा—"आजकल अँग्रेजी राज है । जिसे अँग्रेजीके चार अक्षर आते हैं अुसका समाजमें जो मान है, वह भला आपके अष्टोत्तरी और संहिता कहनेवालोंका कहाँ ?"

बातें हुअीं, निर्णय भी हो गया । नानाने अपनी बुजुर्गीके अधिकारके साथ कहा—"लच्चाको अब ननिहालमें ही रहने दो । हमारा लडका तो अब बडा हो गया है । अुसको गाँवकी शानभागी भी मिल गअी है । बुढापेमें मन लगानेके लिअे अेक बच्चा चाहिअे । नानीकी भी यही अिच्छा है । वह

पाँचवी श्रेणी तक यहीं रहेगा। स्कूल भी ज्यादा दूर नहीं। अगर कोडिम रहा, तो रोज नाला पारकर स्कूल जाना पडेगा। छोटे बच्चोंको नाला पार कराके भेजना, अच्छी बात नहीं।"

अँताल बडे खुश हुअे। अुन्होंने कहा—"लच्चाको थोडी-सी अँग्रेजी आने लगी तो बडा अच्छा होगा। फिर अुसे हमारी तरह मिट्टीमें सननेकी जरूरत नहीं रहेगी।"

"यही तो मैंने कहा था। बुद्धि ज्यादा होनेसे, शायद कही बुद्धिकी बदहजमी न हो जाय, अिसी डरसे हमारे लडकेने पढना आवेसे ही छोड दिया, नही तो अब तक वकील बन गया होता। अब भी अुसको जो अँग्रेजी आती है, वह पर्याप्त है। अभी तहसीलदार साहब आये थे, अुसीने जाकर अुनसे बाते कीं, और शानभागी मिल गयी!" मादप्पय्याने ये सारी बाते, सविस्तर अपने दामादसे कही। सत्याके भाअीने तहसीलदारसे अँग्रेजीमें बातें कीं, यह सुनकर खुशीसे वे अितने अुछले कि स्वर्ग दो ही अँगुल रह गया। आनन्द और आश्चर्यके साथ अुन्होंने पूछा— "क्या? स्यालने तहसीलदार साहबसे अँग्रेजीमें बातें की?"

आखिर वैसा ही करनेका तय हुआ, किन्तु "लच्चाकी भी राय जाननी चाहिअे। अुसकी तो सदा-सर्वदा बडी माँ की दुम पकडनेकी आदत पड गयी है। सब छोडकर लच्चा ननिहालमें कैसे रहेगा? कौन जाने! सत्याके प्रसवके दिनोंमें आपने देखा है न!" अँतालने कहा।

"बच्चोंकी बात, चार दिनमें सब भूल जाते हैं! यहाँ नानी जो है।" मादप्पय्याने कहा।

अुस दिन अँताल घर लौटते समय खुशीसे अुछल रहे थे। मानो स्वत वही लच्चा होकर तहसीलदार बन गये हो। नदीमुख पार करते समय रग-बिरंगे बादल आसमानमें नृत्य कर रहे थे। हँसनेवाली लहरोंकी नोकें सूर्य किरणोंमें तलवारकी तरह चमककर अदृश्य हो रही थीं। नदी-प्रवाह आनंदातिरेकसे फुदकते हुअे समुद्रराजका चुंबन कर रहा था। यह सब देखते, आकाशमें अपना महल बनाते हुअे अँतालराम आगे बढे। नाव किनारेपर

लगी। नाववालेने जब कहा, "अैतालजी ! यह कोडी आ गअी !" तभी वे अपने स्वप्न-साम्राज्यसे बाहर निकले। "अरे! हम कितनी जल्दी आ गअे !", कहकर हँसते हुअे नीचे अुतरे। जैसे वे हँसते वैसे ही समुद्रकी तरगें हँस रही थी। अिस प्रकार अुत्साहित-आनदित अैतालजी घरकी ओर चले।

जैसे-जैसे घर समीप आ रहा था, सत्याको याद करते "अुसके लिअे मै अेक शुभ समाचार लाया हूँ," कहनेकी भावना अुनके रोम-रोमको पुलकित कर रही थी। साथ ही सरसोतीके साथ भी मुठभेड होनी थी। यह भी डर था कही हमारे लच्चा साहब ही सारी योजनापर पानी न फेर दें। लच्चाके लिअे वडी मांकी विरह-व्यथा असह्य होगी। पहले शनिवार-रविवारको घर लाना होगा अित्यादि वातोका भी विचार अुनके मनमें आता था। सम्पूर्ण विचारोका निर्णय होनेके पहले ही घरका आंगन आ गया। पानीसे भरा तालाव चार ही छह हाथपर था। वहांके मेंढक "टर्र ! टर्र !" कर अपना सगीत सुना रहे थे। अुनके स्वरके होडमें अैतालराम "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वर" कह रहे थे। अुनकी मत्रध्वनि मेढकोंकी सगीत-लहरियोके साथ घरमें सुनाअी दी। घरमेंसे लच्चा चीख अुठा "पिताजी !" अुस हलकी चादनीमें अपने राजकुमारके साथ सत्यभामा पतिराजके दर्शन करने वही आ अुपस्थित हुअी। अुसको अपने पतिदेवका निर्णय सुननेकी जल्दी थी। अैतालको "ओं तत्सवितुर्वेरण्य" के वीच-वीच अपनी महिषीके सवालोका जवाव भी देना पडता था। आखिर पतिराजकी सव वाते सुनकर अपनी विजयकी खुशीमें सत्याका हृदय नाच अुठा। अुसने लच्चाको गोदमें अुठाकर प्यार करते हुअे कहा—"मेरे लच्चा राजा ! तुम स्कूल जाओगे न ! पढ-लिखकर वडे वनोगे।" कहकर दो-चार चुम्मे ले लिअे।

घरमें सवका खाना-पीना समाप्त हुआ। लच्चाने वडी मांको विस्तरा विछानेकी आज्ञा दी। वडी मां अुसको सुलाकर अदरका काम कर आअी। सरसोती पारोतीने नित्य-नियमानुसार अुसके अिर्द-गिर्द लेटकर विश्रांति ली। धीरे-धीरे सरसोतीने पारोतीसे पूछा—"पारोती ! तुझे मालूम है लच्चाके ननिहालसे क्या समाचार आया है ?"

पारोतीने कहा—"मुझे क्या मालूम ? वह सरकारी स्कूलमें गया या शकरय्याके मठमें, मेरा क्या आता-जाता है ? मेरे लिअे दोनों अेक हैं। हाँ, अगर सरकारी स्कूलमें गया, तो रोज दो बार ज्यादा नहाना पड़ेगा।" तब तक सोअे हुअे लच्चाने कहा— "बड़ी माँ ! माँ कहती है मैं स्कूलमें जाकर बड़ा बनूँगा ! क्या यह सच है बड़ी माँ ? वह स्कूल कहाँ है ?" "हट् पाजी !" बड़ी माँने अेक हलका-सा चपत अुसके गुलाबी गालोंपर जमाकर सरसोतीसे कहा—"अिस चोरको अभी नींद नहीं आ रही है।"

बस वह जो चाहती थी वह मिल गया, किन्तु अुस विषयपर लच्चाके सामने बातचीत करना ठीक न था। वह चुप हो गअी। अिसे नींद आनेके बाद हम भी सो जाअेंगी, अिस विचारसे सरसोती और पारोती भी वहीं सो गअीं।

नवरात्रका चौथा दिन बीतकर पाँचवा दिन आया। शकरय्या और अेक बार अंतालको ढूँढते वहाँ आअे। अुन्होंने अंतालके स्नान कर पुरोहिताअीके कामके लिअे जानेसे पहिले ही अुनको घरमें पकड़नेकी सोचा। आखिर सालाना अेक मुडी चावलकी प्राप्तिका सवाल था। "अंतालजी, दशहरेके रोज तुम्हारा लक्ष्मीनारायण हमारे मठमें आअेगा न !"—अुन्होंने पूछ ही डाला। अब कोअी बहाना किअे बिना आगे ढकेलनेका समय नहीं रह गया था।

अुन्होंने कहा—"शंकरय्या ! आप आअे, अच्छा किया, किन्तु मैं अिस विषयमें अुसके नानासे पूछे बिना कुछ नहीं कर सकता था। अिसीलिअे तुम्हें कुछ न कुछ निश्चित अुत्तर देनेके लिअे ही मैं कल वहाँ गया था। अुन्होंने आग्रह करके कहा—"लच्चाको तुम पड्मुन्नूर ही भेज दो ! हमारी घरवाली भी यही चाहती है !"

"वहाँ कोअी अच्छा मठ है क्या ?"

"वहीं पासमें सरकारी स्कूल है। अुनका अुसे थोडा अंग्रेजी सिखानेका विचार है !"

"अरे ! अिस अंग्रेजीकी माया तुम वैदिकोंपर भी चल गअी ! अंतालजी, मैं कहता हूँ, चाहे तुम अुसे अपने ही घरमें सिखाओ, अपनी ही वैदिकी सिखाओ,

अिसमें मेरा कुछ कहना नही, किन्तु अुस जले सरकारी स्कूलमें मत भेजो। पता नही किस-किस जातिके लडके अुस स्कूलमें आते हैं। अुन सबके साथ तुम्हारा लडका कैसे बैठेगा ? यही हमारे कार्कडके स्कूलमें जाके देखो न ! कहते है कोअी नया शिक्षक आया है, पता नही किस जातिका है! वैदिकोके बच्चोंने अुसके हाथकी मार खाअी तो तुम्ही कहो, क्या रहा ? आगे क्या होगा ? कहाँ जाकर रुकेगा यह पतन !"

वहीं दूर खडी सरसोती सब सुन रही थी। वह आगे नही आअी। अुसकी अिच्छा भी नही थी।

"यह सब बिना जाने ही अुसके नानाने यह निश्चय किया होगा ? वैसे अुनकी बातसे भला हम कैसे अिन्कार करे ? अुन्होने कुछ सोचा ही होगा। वहाँके सब मास्टर ब्राह्मण ही होंगे। यहाँ दूसरी जातिके मास्टर आअे, अिसीलिअे ना गाँवका स्कूल मैंने छोडा ? और कहते हैं वहाँके स्कूलमें ब्राह्मणोंके बच्चे अलग बैठते हैं। और अुस स्कूलमें लडके तुम्हारे मठकी तरह जमीनपर नही बैठते। ये सारी बाते लच्चाके नानाने कही हैं !"—यह कह अैतालने शकरय्याकी बातको काट दिया।

"हाँ !...अैतालजी ! क्या समझते हो, अुस स्कूलकी तरह अेक लंबी चारपाअी लाके डाल देना तो मुझसे नही हो सकता ! चारपाअीपर बैठकर तमाशा देखनेके लिअे ही क्या वह दशावतार नाटक है ? यह सब क्या मै अपने फायदेके लिअे कर रहा हूँ ? अपने आगे ही क्या हो रहा है, यह आपके ध्यानमें नही आता, यही आश्चर्य है मुझे।"

"शकरय्या ! अभी हमारी सत्याको बाअीसवाँ साल चलता है। अगर भगवानने चाहा तो और अेक बच्चा होगा। वह मेरे बाद पुरोहिताअीका काम करेगा।"

"तब तो लक्ष्मीनारायण वकील होगा ?"

अैतालने कहा—"यह तो भगवानपर निर्भर है। जैसा भगवान करेगा वैसा होगा। हमें अच्छा सोचकर ही चलना चाहिअे। आखिर गाँववालोमें श्राद्धका ब्राह्मण कहलानेमें क्या धरा है आजकल ?" आगे बात बढानेकी अिच्छा न होनेसे अैताल दूसरे कामका बहाना करके चले गअे।

शंकरय्या निराश होकर घरकी ओर चले। वही सरसोतीको देखा तो "देखी तुमने अपने भैयाकी बातें ? वैदिक लोगोने भी अँग्रेजीके नामपर अपनी जाति और नीतिको तिलांजलि दे दी"... कहने लगे।

सरसोतीने अपनी अुदसीनता दिखाते हुअे कहा—"हम क्या जाने ! जिसको जो अच्छा लगता है वह करता है !" और वहाँसे चल दी।

शंकरय्या अत्यंत निराश होकर वहाँसे लौटे। लौटते समय "मुझे भी चार लम्बी-लम्बी चारपाअियाँ (बेंच) लाकर सब जातिके लडकोंकी खिचडी पकाना सीखना चाहिअे था। शेट्टी हो तो शेट्टी, भट्ट हो तो भट्ट ! सबको मिलाकर सब गोल करना था।" जैसे निराशाके अुद्गार निकालते हुअे जा रहे थे। आखिर "नारायणय्याके जमानेमें खडीभर लडके आते थे। अब केवल छह लडके लेकर बैठना मुश्किल है। अिन ब्राह्मणोंपर भरोसा रखनेसे काम नही चलेगा।"—कहकर पछताते-बतियाते घर चले।

नवरात्र बीता। अैतालोके घर नवरात्रोकी दूसरी पूजा नही होती। मूला नक्षत्रको पुस्तक-पूजा ही अुनके कुलका कुलाचार है। अिस मूल नक्षत्रके प्रारंभमें सत्यभामाके आग्रहसे वे अुसे पडुमुन्नूर ले गअे। लच्छा मीठी बातोंसे ननिहालके खाने-खेलनेके प्रलोभनसे जानेको तैयार हुआ। चलते समय वह अपनी बडी मांके पास जाकर "बडी माँ ! मैं नानाके घर जाता हूँ।" कहने लगा। बडी माँकी आँखोंमें आँसू भर आअे। "बडी माँ क्यों रोती है ?" अुसने पूछा। "अरे, मैं कहाँ रोती हूँ ?"—कहकर अुसने आँखें पोंछ डालीं।

"अच्छा ! बडी माँ मैं जल्दी नानाके घरसे आ जाअूँगा। तुमको लड्डू लाअूँगा।"—कहकर वह भागा। अुसने आँसू बहाते गोदमें अुठा अुसका मुँह चूम लिया।

अपनी बडी मांका बिलखना देखकर अुसने "तुम्हें बुरा लगता है, मैं नहीं जाता। तुम्हारे पास ही रहता हूँ !"—कहा।

अुसके अिस निश्चयसे हम सबको बहुत निष्ठुर होना पडेगा, घरमें बडी कलह मचेगी, यह सरसोती-पारोती जानती थीं, अिसलिअे अुन्होंने अुसको खूब

समझाकर ननिहाल जानेको अुत्साहित किया। जाते समय लच्चाने पितासे "बाबूजी! कल मुझे घर ले आनेको आओगे न?" पूछकर अुनसे "हाँ" कहला ली।

दशहरेका दिन आया। अैतालने कोडीसे पड्मुन्नूरको प्रस्थान किया। दशहरेके दिन अुसे जल्दी नहलाकर प्रातःकाल स्वतः ही शास्त्रोक्त रीतिसे विद्यारम्भ कराया। अुसके बाद शिवपकको बुलाकर अुनसे स्लेट और पेन्सिलकी दीक्षा दिलवाअी। काफी समय तक लच्चा अपनी पेन्सिलसे स्लेटपर चित्र-विचित्र रेखाअे खीचता रहा। यह देखकर बाप और नानाको बडा आनन्द हुआ। दूसरे रोज मास्टर दासप्पय्या अुसको स्कूल लिवाने आअे। "लच्चा! घूमने चलो। वहाँ स्कूलमें खेलनेके लिअे खूब बच्चे आते है।" कहकर अुसको स्कूल ले गअे। बाप भी बच्चेके साथ स्कूल गया। स्कूलमें कुरसी, मेज, बेंच, बोर्ड, दीवार पर चार्ट वगैरह देखकर अैतालको विश्वास हो गया कि जो लडके यहाँ पढते हैं, वह जरूर मुन्सिफ होते है।

आधा घण्टा बैठकर "अ, आ" लिखते हुअे लच्चाने अपने बापसे कहा, "चलो, अब बडी माँके पास चले!" अैतालने वही और कुछ समय बितानेको अुत्साहित किया, पर वह नही माना। आखिर अुन्हें झुकना पडा। अुसको लेकर नानाके घर आअे। जिस दिन अैताल अपने लडकेसे छिपकर घर चले आअे; अुस दिन रातको लच्चाने रो-रोकर सिरपर आसमान अुठा लिया। बडी माँ पास नही है यह अेक महान दुःख तो था ही, साथ ही बाप छोडकर चला गया यह दूसरा दुःख भी असह्य था। दूसरे दिन भी अुसे दासप्पाके साथ स्कूल जाना पडा। सप्ताहके भीतर सत्यभामाने भी अुसकी आँख बचाकर कोडीका रास्ता पकडा। "माँ और बाप दोनो धोखा देकर चले गअे" लच्चाके बाल हृदयमें यह बात चुभ गअी। स्कूलमें जाकर 'अ-आ' लिखना और बीच-बीचमें बडी माँका नाम लेकर रोना, अुसकी नअी दिनचर्या शुरू हुअी। यहाँ वह अिस नअे बधनमें पडा था। अुसने अिस दुखसे अकेला रोना भी सीख लिया। यही अुसकी नित्यकी जीवनचर्या-सी हो गअी।

अेक दिन अुसने अपनी बडी माँको ढूंढनेके लिअे बिना किसीको कुछ कहे-सुने स्कूलसे प्रस्थान कर दिया। बडी माँको खोजते-खोजते अिस विशाल

विश्वमें वह खुद खो गया। शामतक नाना, नानी, मामा, मास्टर सबके लिअे बडी परेशानी रही। आखिर दिन भर परेशान करनेके बाद बडी मांको ढूंढने गअे लक्ष्मीनारायण हाथ लगे।

लाख प्रयत्न करनेपर भी नाना-नानी अुसको शात नहीं कर सके। अुन्होने नया विचार किया। मास्टर दासप्पा रहनेवाले थे मूल्कीके। अुनका घर दूर था। अिसलिअे, किसी तरह दिन काटना पडता था। वे दोपहरके समय दूसरे शिष्योंके घर बारान्न कर लिया करते थे और रातको खानेके लिअे अुडपी जाते थे। अेक दिन मादप्पय्याने दासप्पाको बुलाकर कहा—"मास्टरजी! हमारे लच्चाको देखते हुअे हमारे घरमें ही दोनो समय भोजन कर यही रह जािअे तो अच्छा!" अिससे दासप्पाको आरामका आराम मिला और मानका मान! अुन्हे मानो अेक ससुराल ही मिल गअी। अब अुन्होने दिन-रात लच्चा-पुराण कहना प्रारम्भ किया। जब कभी घर आते "मादप्पय्याजी! हमारे स्कूलमें आपके लच्चाकी जोडका दूसरा लडका नही है। आज अुसने पचाससे सौ तक चढता पहाडा, हिसाब और सौसे पचास तक अुतरता पहाड़ा दोनो अेक दिनमें सीख लिअे। अिसी प्रकार किसी दिन "कुत्तेका पाठ" तो किसी दिन "गांवका पाठ" अुसको कितनी जल्दी कठस्थ हो गया!"—बताते। मुखपर अुनकी यह स्तुति चाहे जैसी हो, लच्चाको अेक सहृदय शिक्षक मिला, अिसमें शक नहीं। यद्यपि सुबहसे शाम तक और लडकोंके हाथपर अेक-अेक बेंत पड़ जाता था, किन्तु लच्चापर आंख भी नही अुठती थी।

लच्चा जब घर आता था, नानी अपना सब प्यार अुसपर अुंडेल देती। कुछ भी हो, अिन तीन-चार महीनोमें वह नअे जीवनसे अभ्यस्त हो गया। अपने पुराने स्वप्नोंको भूल गया। नानाके घरकी पकौडी, अुपमा, लड्डू आदिके सामने वह धीरे-धीरे बडी मांको भी भूलने लगा और अन्तमें नानीका नाती हो गया। कभी अैताल ससुराल आते और घर चलनेकी बात करते तो नानीके कहनेपर "नहीं" कहना भी सीख गया। अिस प्रकार वह पूरी ननिहालका लाडला लडका बन गया।

: १२ :

बच्चाका कोडी छोडकर पड्मुन्नूर जाकर पढना कोडीमें पर्याप्त आलोचनाका विषय हो गया था। शकरय्याने लोगोमें जहर फैलाना शुरू किया। अुसकी पुष्टि शीनप्पाने की। शीनप्पाजी पुष्टिसे "अैतालजीको अब वैदिकी छोडना ही बाकी रह गया था। पहिले तो शिवल्लीकी लडकी व्याहकर लाअे, अब लडकेको अुस भ्रष्ट स्कूलमें भेज रहे हैं।" शकरय्याने प्रचार करना प्रारम्भ किया। सरसोतीको अिस प्रकारके भ्रष्ट स्कूलमें लडकेका पढना अच्छा नहीं लगता था, किन्तु अुसने "जिनका बच्चा है, वही जाने" सोचकर विचार करना छोड दिया। अिस बारेमें वह बिलकुल मौन रही।

अिस बीचमें लच्चाने अपनी प्राअिमरी शिक्षा समाप्त कर ली। पहिलेके तीन-चार महीनोमें अुसकी हालत पानीसे निकली मछली-सी थी। आगे धीरे-धीरे नानीका वात्सल्य, नानाकी कहानियाँ, दासप्पा मास्टरका प्रोत्साहन, अुसके लिअे अन्य लडकोसे अलग ढँगसे किअे जानेवाले बर्ताव आदिसे पडमुन्नूरको ही अुसने अपना घर मान लिया। छुट्टीके दिनोमें वह घर आता था। सालमें दो-चार बार, अेक-दो सप्ताहके लिअे आअे बच्चेका खूब लाड-प्यार होता था। कभी-कभी बडी माँका प्यार अुसके मनमें "अब यही रह जाअूँ" की आकाक्षा पैदा करता, किन्तु जब छुट्टी समाप्त होनेपर स्कूल खुल जाने का ख्याल तथा मित्रोकी याद आती तो वह अपने बापसे कह अुठता— "अब मुझे ननिहाल ले चलो।"

चार-पाँच सालमें पडुमुन्नूरकी पढाअी खतमकर वह अब फिर छुट्टियोमें घर आया। "अितना सब होनेपर लडकेको अब आगे क्या कराना

है ?" अैतालके मनमें यही विचार दौड रहा था। क्या करना चाहिअे यह अुसकी समझमें नहीं आता था। नानाकी ओरसे बार-बार "बच्चेको खेतीके काममें डालनेकी जरूरत नही है। अगर आपसे नहीं होता तो मैं ही अुसका सारा खर्चा बर्दाश्त करूंगा और अुसे हाअीस्कूल भेजूंगा!" अैसे अुत्साहप्रद सन्देश आते थे। अुन दिनो कुन्दापुर, अुडपी, मंगलूर आदिके अंग्रेजी स्कूल अमीरोके बच्चोको अपनी तरफ खीच रहे थ। सबके सब अुन दिनों, वकीली, तहसीलदारी, मुन्सिफी आदिकी आशासे अपने बच्चोको वहां पढानेके लिअे आतुर थे।

अैतालके लिअे अुभय-सकट था। अुनकी हालत सरौतेमें फँसी सुपारी-की-सी थी। लच्चा दस सालका हो गया था। अुसका अुपनयन सस्कार होना आवश्यक था। सुब्बीके भी सात वर्ष पूरे हो चुके थे। अभी वह "अष्टवर्षात् भवेद् गौरी" के हिसाबसे गौरीका पद प्राप्त कर रही थी। जन्मपत्रके भविष्यके अनुसार सत्यभामा तीसरी सन्तानकी कोअी तैयारी नही दिखा रही थी, अिसलिअे सरसोती "भैया! लच्चाने अब तक जो सीखा वही बहुत है। पडुमुन्नूरके लोग पागलपनसे अंग्रेजी-विग्रेजी पढनेकी बोलते हैं, अिसलिअे तुम भी पागलपन मत करो। अपनी वशानुगत पुरोहिताअी कैसे छोड सकते हैं? वैसा करनेपर यजमानोकी क्या गति होगी? अुनके घरमें कभी श्राद्ध हुआ, ब्याह हुआ, और कुछ हुआ तो कौन जाअेगा?"—वगैरह कहकर डाँटती थी। लेकिन सत्यभामा मौन रहती। यह भी सच है कि अैताल-रामसे वशानुगत पुरोहिताअी अैसे कैसे छोडी जा सकती थी? यह विचार अुनको भी परेशान कर रहा था। साथ ही वे अितना बडा अपमान कैसे भूल सकते थे कि सम्भ्रान्त वासुदेवके घरके ब्याहमें कोक्करणे जानेके लिअे शीनमय्याको न्यौता दिया जाअे, किन्तु अैतालको नही। "वैदिक वृत्तिका मान नही है। सामने सब 'अैतालजी-अैतालजी' कहकर प्रणाम करते हैं, किन्तु पीछे सब दक्षिणा मांगनेवाला भिखमगा कहते हैं।" यह सोचते ही अुनके हृदयमें कांटा-सा चुभता था। शीनमय्या और शकरय्या जो अुनका मजाक अुडाते थे, अुन लोगोंके सामने अपने बडप्पनका वैभव दिखानेकी अीर्ष्या रात-दिन अुन्हें सताती रहती थी।

बहनके सवालोंका अुनके पास कोअी अुत्तर नही था। अुत्तरके

अभावमें वे कहते "अिन सब बातोंके लिअे अब क्या करना है ? सबसे पहिले लडकेका जनेअू करना चाहिअे !" घरमें वही अेक बच्चा है, अुसका जनेअू शानसे हो, अिसमें सबका अेक मत था। वैषाख आते ही लच्चाके अुपनयनकी तैयारी होने लगी। अंतालके व्याहमें जैसा मण्डवा बनाया गया था, वैसे ही मण्डवेने सारा आँगन घेर लिया। अिस बार अुन्होंने सहायताके लिअे शीनमैय्याको नही बुलाया बल्कि शीनमय्याका नाम सुनतें ही नाक-भौं सिकोडनेवाले सुब्राय अुपाध्यायको बुलाया। वही अिस समारम्भके मुखिया थे। आमन्त्रण देनेके लिअे वे स्वय जाकर हर जगह न्यौता दे आअे। शीनमय्याके घर खासतौरसे जाकर अत्यन्त आत्मीयता दर्शाते हुअे "अवश्य आअिअेगा, कोअी बहानाकर घरमें न रह जाअिअेगा।" कहकर आग्रहपूर्वक न्योता दिया। साथ ही साथ पड्डुमुन्नूरके मादप्पय्याने भी अुपनयनके चार रोज अपने दामादके घरमें ही निवास करनेका निश्चय किया। अिस बीचमें अुपनयनवाले बटुका अुल्लास अवर्णनीय था। बडी माँ, माँ, बापू, नाना, नानी सबका आदर अुसीको मिल रहा था। जनेअू तो अत्यन्त शानसे हुआ। पड्डुमुन्नूरवालोंके आग्रहसे अुडपीके माल अफसर स्वयम् पधारे थे। गर्मीकी छुट्टियोंमें अंतालके अेक रिश्तेदार वकील नागप्पय्या भी वहाँ आअे थे। जनेअूके दिन अम्बोडे, पूरनपूरी जैसे दो-दो पकवान बने थे। सरसोतीने सबसे दो-दो बार पूछकर आग्रह करनेकी आज्ञा दी थी। शीनमय्याकी मुखियागिरीमें भैयाके व्याहमें भोजके समय जो गडबडी हुअी थी, वह अब तक अुसके दिलमें चुभ रही थी।

अिस बार आनेवाले मेहमानोका आगत-स्वागत और मान-सम्मान भी अपूर्व हुआ। सुब्राय भी मृदु भाषणमें शीनमय्यासे कम नही थे। वकील साहब और माल अफसरकी खूब आवभगत हुअी। सम्भ्रान्तके पास शीनमय्याके तीन-तीन सोनेकी अँगूठियाँ और कमरमें सोनेका कटिभूषण पहनकर बैठनेपर भी सुब्राय अुपाध्यायने अुनसे अेक भी बात नही की। हाँ, अंतालने स्वय दो-दो बार आकर "सब ठीक है न ! अपना ही घर समझें !" कहकर आदर किया। पड्डुमुन्नूरके मादप्पय्या तो अुनको पहिलेसे जानते थे, अिससे अुन्होंने सम्मानके साथ शीनप्पाकी पूछताछ की किन्तु शीनप्पाको अपनी कोटिके सम्भ्रान्त वासुदेवके वहाँ न आनेसे अेक प्रकारका असन्तोष रहा। वे क्यो

नही आओे अिसकी वात भी आखिर जाते-जाते छेड दी। "सम्भवतः, अुन्होने कोक्करणेके व्याहमें जो न्यौता नहीं दिया था, अुसीका यह बदला होगा।"—दूसरे किसी सज्जनने कहा। अथवा "अिनके वुलानेपर भी अुन्होने मैं दक्षिणा मांगनेवालोंके घर थोडे ही जाता हूँ।" कहकर अपनी शान दिखाओी होगी।

खैर, जनेअू हुआ। घर आओे हुओे माल अफसर और कुन्दापुरसे आओे वकील अपने-अपने घर चले गओे। अिन्ही दो-चार दिनोंमें पडुमुन्नूरवाले भी जानेको थे। "जानेसे पहले लच्चाकी पढाओीके वारेमें कुछ तय करके जाओो!"—सत्यभामाने वापसे कहा।

मादप्पय्याने कहा—"मुझे जो कहना है वह मैंने पहले ही कह दिया है, किन्तु लच्चाके वारेमें दासप्पा मास्टर क्या कहते हैं, वह जाननेकी वात है। वे कहते हैं—अव तक अितना प्रतिभाशाली लडका मेरे स्कूलमें नहीं आया। अुसकी यह सारी प्रतिभा क्या शान्ति होम करनेमें ही खर्च करनी है? अव व्याह, श्राद्धमें दक्षिणा मांगनेके दिन नहीं रहे। वकील, तहसील-दार, मुन्सिफ वननेमें जो शान, मान और लाभ है, वह क्या अिन वातोंमें है। आठ-दस साल अंग्रेजी पढ गया तो फिर हर साल पांच-पांच वखार अन्नके खेत खरीदेगा। अिस वैदिकी-पुरोहिताओीकी दुम पकडकर चलनेसे तो कलको कुत्ता भी नहीं पूछेगा!"

सरसोती अव भी नहीं मानती थी। "तुम मान-मर्यादाकी वात करते हो, वह सव ठीक है, किन्तु कल रामके वाद पुरोहिताओी कौन करेगा?"

मादप्पय्याने कहा—"अगर किसीने नही किया तो क्या विगडेगा? गाँवमें क्या और वैदिक नही हैं? वे करेंगे!"

तव वैतालने अपनी वहनको समझाते हुओे कहा—"सरसोती, मेरी जन्मपत्रीमें तीन वच्चोंका योग लिखा है! अिस घरमें क्या और वच्चे नही होंगे?"

"हाँ! अव तीन नहीं तीस वच्चे होंगे तुम्हारे! पचास वर्षकी अुम्र हो गओी और कहते हैं अिस घरमें और वच्चे होंगे, मेरी जन्मपत्रीमें तीन-

बच्चे लिखे हैं ! मुझे क्या ? और अिस अंग्रेजी-वंग्रेजी पढानेमें ढेरो रुपअे खर्च होंगे, अुन्हे कहाँसे लाओगे ? "

"आज अेक ढेर लगाओ तो कल चार ढेर पाओगे। यह तो सब मछलीके काँटेमें लगे आमिष-सा है। पानीमें काँटा डालनेसे डरोगे तो मछली हाथ नही लगेगी !"—अैतालने कहा।

"तुम रुपयोकी चिन्ता मत करो ! भगवानकी दयासे मेरे नातीके लिअे जितना खर्च चाहिअे अुतना खर्च करनेकी शक्ति आज मुझमें है। मेरे लडकेने आधा पढ़कर छोड दिया। अगर अिसने आखिर तक पूरा किया तो दोनो घरका मान बढ़ेगा। आज तुम्हारे घरमें जो वकील साहब आअे थे, कही भी जानेपर अुनका कितना मान होता है ! यही देखो न, वह अिसी छुट्टीमें घर आअे थे, अभी लौट भी नही पाअे कि जहाँ जाते, वही न्योता और भोज। सब लोग अुनको अपने घर बुलाकर भोजन करानेमें अपनेको कृत्यकृत्य समझते !"—बच्चेके नानाने अपना अभिप्राय प्रकट किया।

घरके सब पुरुष अिस प्रकार लच्चाके भावी वैभवकी बात करने लगे, तो सरसोती यह कहकर चुप हो गअी "मैं औरत जात क्या जानूं अिसे ? जब सरकारी स्कूलमें भेजा तभी मैं जान गअी कि आगे क्या होगा ! तुम सबकी जब अंग्रेजीपर आशा लगी है तो मुझे क्या करना है ? "

जनेअूमें आअे हुअे मादप्पय्या वापिस लौट गअे। अुनके जानेके बाद सरसोतीने और अेक बार अपने भैयासे कहा, "भैया, लच्चाको आगे सिखानेका निश्चय किया तो वैसा ही हो, अुसमें मेरी कोअी आपत्ति नहीं, पर अेक बात मेरी भी सुनो, अुसको नानाके ऋणमें मत बधने दो। अुन्होने कहा मैं खर्च दे दूंगा, यह अुनकी अुदारता है, पर अपने बच्चेके खर्चाके लिअे अुनका मुँह ताकना ठीक नही। कल शीनमय्या जैसे लोग कहेंगे श्वसुरसे माँगकर अपने बच्चेको पढाया।"

पर अैतालने कहा—"सरसोती ! तूने मुझे क्या समझा है ? अुन्होने कहा, अिसलिअे मैं अपने बच्चेको अुनके ऋणमें बाँधूंगा ? अिसीलिअे तो मैंने अुसे कुन्दापुर भेजनेका विचार किया है।"

"पर खर्चेका क्या करोगे ?"

"पगली ! तूने समझा है, मेरे पास पाँच-सात हजार रुपअे भी नहीं हैं ?" अैतालरामने बडी शानसे बात कही। अुसने "भैयाके पास अितनी बडी रकम है" यह आज ही अुनके मुँहसे सुना। "अुन्होंने स्वय जब पाँच-सात हजार रुपअेकी बात कही है, तो अुससे आधे तो होंगे ही।" अैसा अुसने मान लिया। "कहाँ ? कैसे ?" आदिका पता न देनेपर भी अैतालने जो कहा, अुससे दूना पैसा तो था ही !

लच्चाकी गर्मीकी छुट्टी जल्दी खतम हो गअी। अब अुसके अँग्रेजी पढानेकी बाते होने लगी। वह अत्यन्त प्रसन्न था। वह तो कोडीके अपने अडोस-पडोसके मित्रोंसे ही आत्म-स्तुति करता चलता था। कभी-कभी वह शीनप्पाके घर भी जाता था। अुसका पाँचवाँ बच्चा भी अिसीकी अुम्रका था। दोनों समवयस्क होनेसे होन्नेके जगलमें जाकर खेलते रहते थे। बीच-बीचमें बापके पास बैठकर कण्ठस्थ किअे सन्ध्या, अग्निकार्य, ब्रह्मयज्ञादि मन्त्रोंकी होड भी चलती। शीनप्पाके पाँचवे बच्चेका नाम ओरटा था। अुसका स्वभाव मानो अपने नामको सार्थक करता था। और अुससे भी अधिक थी अपनी नानीका नाती बने लच्चाकी होड। ओरटाको मन्त्रोंमें हारनेपर भी पहाडोंमें जीतनेका अभिमान था। कोडीके अय्याके मठमें पढनेवाले लडकोंकी जबानपर तो पहाडे नाचते रहते थे ! अैसी हालतमें भला लच्चा जीत कैसे सकता था ?

अेक दिन नित्य-नियमानुसार खेल-कूद, दौड-धूप, कथा-कहानी और मन्त्र-स्पर्धा सब होनेके बाद लच्चाने "मैं अँग्रेजी पढनेके लिअे अुडपी या कुन्दापुर जाअूँगा !" कहकर शान दिखाना शुरू किया। अिससे ओरटाके अभिमानको चोट-सी लगी। अुसने भी बडी शानसे जवाब दिया—"मैं अगले महीनेमें भैयाके साथ बेंगलूर जाअूँगा।" बातें करनेके लिअे दोनों अपने-अपने घरके अखाडेमें तैयार हुअे थे। अब अेक दूसरेको मात देनेके लिअे अुन्होंने वहाँके दाँव-पेंच शुरू कर दिअे। "वैदिकोंके बच्चोकी जबान अँग्रेजी नही पकडेगी !" ओरटाका निर्णय था। "कौन कहता है यह ?"—लच्चाने अुसपर आक्रमण किया।

"मेरा बाप कहता है। अँग्रेजी कोअी श्राद्धके मन्त्र थोडे ही है! वे कहते हैं कि अमुक वकालत पढने गया, दस बार 'फेल' हो लौट आया और घरमें आकर हुरी रि करते हल जोत रहा है!" ओरटाने अपनी जानकारी दी।

"वह होगा तेरा जैसा! किसी अैय्याके मठसे गया होगा अँग्रेजी स्कूलमें। अिसीलिअे तो मैं सरकारी स्कूलमें पढता रहा!"—लच्चाने कहा।

"सरकारी स्कूलोमें जानेवालोकी जाति भी रहती है! हमारे गुरुजी कहते हैं वहाँ सब जातिके लोग अेक ही जगह बैठते हैं!"

"अरे मालूम है, बेंगलूरमें दुनिया भरके लोगोका जूठन अुठानेवाले तुम लोगोकी खूब जाति है!"

धीरे-धीरे बात मुँहसे हाथो तक आअी। लच्चा-ओरटाका मुष्टि युद्ध शुरू हुआ। दोनोने "खुट्टी" कर दी। अेक दूसरेसे न बोलनेकी प्रतिज्ञा हुअी। बस अुस रोज शाम तक वही होन्नेके बीज अुठाते-करते दोनो अकेले खेलने लगे। अितनेमें समुद्रमें अेक अग्निबोट और अुसका धुंवा-सा दीखने लगा। लच्चा चीख अुठा "अरे! ओरटा! देख वह अग्निबोट! कहते हैं विलायतसे आता है।"

ओरटा अुसके साथ दौडता हुआ समुद्र किनारे गया। "वह विलायतसे नहीं बम्बअीसे आता है!"—कहकर अुसने "हर महीने अैसे अेक-दो अग्निबोट आते हैं। अुन्हे देखकर हम अैसे ही दौडकर आते हैं।" आदि कहकर अपना अनुभव बताया। "रातके समय बोट नहीं दिखाअी देता, पर अुसके दिअे दिखाअी देते हैं!"—यह भी कहा। अिस प्रकार घर आते समय फिरसे अुनमें बडी दोस्ती हो गअी। आते समय लच्चाने कहा—"मैं शायद कल पड्डुमुन्नूर जाअूँगा!" जबाबमें ओरटाने भी "भैयाके आते ही मैं भी बेंगलूर चला जाअूँगा।"—कहा। अिस प्रकार दोनो अेक दूसरेसे बिदा हुअे।

अेक-दो दिनमें लच्चा पड्डुमुन्नूर गया। अुसका नाना लच्चाके पढ़नेके बारेमें दासप्पासे पूछकर सारी बाते तय करनेवाला था। अेक दिन अैंताल भी अपनी ससुराल गअे। अुस दिन बुजुर्गोंकी पार्लमेन्ट बैठी।

दासप्पा मास्टरने कहा—"अुडपी ही पढनेके लिअे अच्छी जगह है। रोज घर आ सकते हैं। दोपहरका खाना मठमें होगा। किसीके होटलमें रहनेकी जरूरत नही और खर्चा भी कुछ नहीं लगेगा।" अिसपर "मास्टर साहबकी बातपर भला में क्या कह सकता हूं।" कहकर मादप्पय्याने अपनी अनुमति दी। "अच्छा!" कहकर अैतालराम अपने घर लौट गअे।

अुनके मनमें अेक ही बातका डर था, सरसोती लच्चाके अिस तरह ननिहालमें रहनेपर क्या कहेगी? ससुरके कारण अपने अूपर खर्चाका बोझ कम पडेगा, यह सतोष भी था। अुन्होने घरपर आते ही अुस रोज रातको कहा—"सब लोग कहते है अुडपीमें पढना ही अच्छा है, कुन्दापूरमें बहुत खर्च पडेगा।" "कही हो, हमें क्या?" सत्यभामाने कहा और सरसोती नाक-भौं सिकोडकर वहांसे चली गअी। दूसरे रोज अुसने अपने भाअीको बुलाकर कहा—"बच्चोका दूसरोकी रोटीपर पालन-पोषण करना अच्छा नही होता। तुम्हारा तो लच्चा अिकलौता वेटा है। वह अपने नानाको अपना जानेगा, तुम्हे नही! वह तुम्हारा नाम भी भूल जाअेगा!" सरसोतीके अिन शब्दोसे अुनका चित्त चचल हो अुठा, अुन्हे बहनकी बातका विरोध करनेको हिम्मत नही हुअी। कभी-कभी अुनके मनमें आता था, कही मेरा वेटा मुझसे दूर तो नही चला जाअेगा! किन्तु अपने ससुरकी बातका विरोध भी नही कर सकते थे। सत्यभामाकी रायका सदा-सर्वदा पडुमुन्नूरवालोकी रायसे मिलना स्वाभाविक था। अुससे कहनेपर अुसने कहा "कुन्दापुर रहनेमें मेरा विरोध नही है, किन्तु वहाँ कुछ बीमार-शुमार हुआ तो देखनेवाला कौन है? यहाँ तो रोज रातको अपने ननिहाल आता रहेगा। केवल दोपहरके समय जरा दूर रहेगा।"

अिसी युक्तिसे अैतालने पुन अेक बार अपनी बहनको समझानेको सोचा—"कुन्दापुरमें पता नही किसके होटलका भात खाना होगा! अगर कहीं बीमार पड गया तो वहां कौन देखेगा! तब तो वहाँसे यहाँ बुला लानेके सिवा दूसरा चारा न होगा। जब तक बडा नही हो जाता, अपना भला बुरा समझने लायक नहीं होता, तब तक तो अुसका अुडपीमें रहना ही अच्छा होगा, अैसा लगता है। रोज बच्चेको तेल लगाकर कौन नहलाअेगा?

सप्ताहमें अेक बार तो अभ्यन्जन होना ही चाहिअे ! यह सब शक्ति अभी अुसमें कहाँ है ? अुसको होटलमें रखकर दिन भर यहाँ अुसीकी चिन्तामें बैठे रहना पडेगा न ! " कहकर अुन्होंने सरसोतीका समाधान किया। ये सारी बाते अैसी थी, कि अुसे माननी ही पडी।

"भैया ! तुम्हारा कहना ही ठीक है। अिस अुम्रमें अुसके पास किसी अपने आदमीका रहना ही अच्छा है !"—सरसोतीने कहा, किन्तु शुरूमें सरकारी स्कूलमें भेजकर गलती की यह बात अुसके मनमें चुभती ही रही।

अब लच्चाके बारेमें कोअी बात नही होती थी। अुसका पडुमुन्नूर रहकर रोज अुडपी पढने जाना तै-सा हो गया।

स्कूल प्रारम्भ होते ही वह अब अँग्रेजी पढनेके लिअे हाअीस्कूलमें जाने लगा। पहिले दिन दासप्पा अुसके साथ हाअीस्कूल गअे थे। लच्चा अुडपीके लिअे नया नही था। वह छोटे स्कूलमें पढते समय भी पर्याय, रथोत्सव, लक्षदीपोत्सव वगैरहमें अुडपी जाता-आता था। पहलेसे ही अुडपीके बाजार, मन्दिर वगैरह अुसको वहाँ जानेके लिअे ललचा रहे थे। अब तो वह सब रोज देखनेको मिलेगा, अिस विचारसे वह खुश हुआ। सुबह अुठकर स्नान करता, अुसके बाद मनमें आया तो जरा पुस्तक लेकर बैठ जाता। अितनेमें खाना तैयार होता, भोजन होते ही वह किताबोका बस्ता लटकाकर अुडपीके लिअे प्रस्थान कर देता। घरसे अुडपी जानेके लिअे चार मील चलना पडता। प्रारम्भमें चार मील चलनेमें वह थक जाता। जब कुछ आदत हो गअी, और रास्तेमें कुछ दोस्त भी मिलने लगे तो चलनेका भी अेक सस्कार पड गया। दोपहरकी छुट्टीमें नाना द्वारा निश्चित किअे गअे होटलमें जाके खाना खा लेता। अुसके बाद पाँच बजे छुट्टी हो जाती। छुट्टी होते ही और साथियोंसे मिलकर नाचते-कूदते ननिहाल पहुँच जाता। वहाँ पहुँचते ही राह देखती नानी "आया मेरा राजा बेटा !" कहकर अुसका स्वागत करती। फिर भला अुसको किस बातकी चिन्ता? घर आते ही नानी अुसको कुछ-न-कुछ खिला देती।

दिनकी तरह महीने बीतने लगे। यह नया जीवन अुसको बहुत ही पसद आया। बाजारके लोगोकी चतुराअी और बातचीत देखकर अुसने भी

वह सीख ली। हर अेकको न आनेवाली अंग्रेजी भाषा पढनेका अुसको अभिमान भी था। जब कभी रास्तेमें किसी गाँववालेको देख लेता, तो जरूर अपने किसी दोस्तसे अंग्रेजीमें बोलने लग जाता। जब दो-तीन महीनेमें अेक बार घर जाता, तो अपने बाप और बडी माँके सामने अंग्रेजी बोलकर दिखाता था। अुसे सुनकर अैताल फूलकर कुप्पा हो जाते। अब अपना लडका चार सालमें वकालत करने लग जाअेगा अुनका अैसा विश्वास-सा हो गया। लच्चाको किसी-न-किसी तरह शीनप्पाके ओरटाको अपने अंग्रेजी विद्याका प्रदर्शन करनेकी तीव्र लालसा थी, पर क्या करे, जब वह गाँवमें आया तो ओरटा बेंगलूर जा चुका था।

आगे लच्चाको छुट्टीके दिनोंमें घर जानेकी अुत्सुकता नहीं रही, बल्कि छुट्टीके दिनोंमें भी अुसे अुडपी जाकर बाजारमें भटकनेकी अिच्छा होने लगी। किसीने पूछा "छुट्टीके दिनोंमें वहाँ जाकर क्या करोगे?" तो वह मोटी-मोटी किताबें दिखाकर कहता—"अब पहिलेकी तरह नहीं है, बहुत पढना पडता है।" सरसोतीको अुसका छुट्टीके दिनोंमें भी पडुमुन्नूर, अुडपी जाकर अपना समय बिताना अच्छा नहीं लगता था। वह बार-बार कहती, "अब अुसको अपना गाँव अच्छा नहीं लग रहा है, घरके बारेमें भी अपनापन नहीं रहा।" किन्तु "बहुत पढनेको होगा।" कहकर अैताल अुसकी वकालत करते। सरसोतीको यह मन्जूर नहीं था। वह कहती थी "तुम कुछ भी कहो। अुसको अब अपने घरसे प्यार नहीं रहा। घरका खाना अुसको अच्छा नहीं लगता। घरमें कोअी भी चीज खानेको दे दी, तो कहता है—"यह अच्छी नहीं। अिसमें कोअी स्वाद नहीं। वहाँ खूब चटपटी चीजें खानेको मिलती होंगी।" अिसपर अैताल "यह सब रहने दो।" कहकर नाराजगी प्रकट करते। अेक दिन सरसोतीने खाते समय अिशारा करके कहा—"आज अिस साँभारको क्या हुआ है? घारी[1] तो अुसीके लिअे बनाअी थी न। तुम अितना सब खा गअे, पर अुसने हाथ भी नहीं लगाया। यह सब क्यों? हमें ननिहालकी तरह खाना पकाना नहीं आता।" अुसी दिन सत्यभामाने अपने बच्चेके लिअे चावल पीसकर प्यारसे चकली और

१ अुडद और चनेकी दाल पीसकर बनाया गया अेक प्रकारका बडा॥

कडवोले बनाअे थे, पर लच्चाने अुनको मुंह क्या हाथ भी नही लगाया। अिससे वह भी परेशान थी। वह भी आजके दिन लडकेको डांटनेमें अुन लोगोंके साथ हो गअी। भोजनके समय बापके सामने सब बाते हुअी, तो वह कैसे सहन करता? अब वह बच्चा थोडे ही था! अुसकी आँखें चिनगारियाँ अुगलने लगीं। परोसा हुआ खाना वैसा ही छोडकर बाहर चला गया। यह देखकर अैतालको भी क्रोध आया। अुन्होने कहा–"घरवालोने दो बातें कहीं तो तुम दो अँगुलके बच्चेको गुस्सा आ गया। मान-मर्यादामें बट्टा लग गया। तेरे अिस बर्तावसे घरवाले क्या सोचेगे?" पर वह पुन: खाने नहीं आया। अुन सबके द्वारा बनाअी हुअी चीजोको अुसने हाथ नही लगाया।

किसी तरह अुसने दो-चार दिन बिताअे। अुसके बाद अेक दिन "मुझे बहुत पढना है!" कहकर ननिहाल चल दिया। तबसे वह छुट्टीके दिनोंमें घर आनेके लिअे अुत्साह नहीं दिखाता था।

अिसी तरह पाँच साल बीते। लच्चा अब थर्ड फार्ममें पढ़ता था। अेक दिन अैताल अुडपी गअे थे। स्कूल ढूंढकर वहाँ गअे। केवल लडकेको देखनेके लिअे आअे थे। आते समय अुन्होने पूछा—"माँको देखनेकी अिच्छा नहीं होती? सुना है अभी-अभी आठ दिनकी छुट्टी हुअी थी!"

फौरन अुत्तर भी मिल गया–"छुट्टी हुअी थी, किन्तु छुट्टीके सिरपर परीक्षा भी तो थी!"

"जाने दो, गरमीकी छुट्टियोमें अब कितने दिन है?" बापने पूछा।

"अभी पन्द्रह दिन है"—कहकर लडकेने अुत्तर दिया। बापने जब "अिस छुट्टीमें जरूर घर आओ" कहा, तो अुसने अूपरी मनसे "जी!" कह दिया। "भगवानने चाहा तो तेरी छोटी बहनका ब्याह अिन्ही दिनोमें होगा!" कह, अुसको समझा-बुझाकर अैताल घर आअे।

गरमीकी छुट्टी आअी। लच्चाको अब पडुमुन्नूरसे घर जानेके सिवा चारा नही था। अुडपीसे आते समय अैतालने अपने ससुरसे कहा था–"लच्चाको अिस छुट्टीमें घर भेज दीजिअेगा। अुसको तो घरकी याद ही भूल गअी है!" अिसमें शक नही, बात जरा कठोर थी। पर कहनेके सिवाय

कोअी दूसरा चारा नही था। अैतालजीके बाल सफेद हो गअे थे। अुम्र पचासके क़रीब हो गअी थी। लडकेके साथ कुछ दिन बितानेकी अभिलाषाका तीव्र होना स्वाभाविक था। मुन्नीके भी बारह साल पूरे हो गअे थे, अिसलिअे तुरन्त अुसका व्याह करना जरूरी था। अब देर करना सम्भव नही था। अब तक मुन्नी ही घरमें सबके प्रेमका सहारा थी। अिसलिअे लच्चाका दूर रहना वे सह सकते थे। अब अुसका व्याह कर देना था। मुन्नी अपनी ससुराल जाअेगी, तब घर काटने दौडेगा। अैतालकी जन्मपत्रिकामें लिखे तीन बच्चे सत्य होनेवाले नहीं थे। अिससे घरकी खानदानी पुरोहिताअीका भी प्रश्न था। अिन सब बातोंसे लच्चाका दूर रहना अुनको खटकता था।

छुट्टी हुअी। सप्ताह भर लच्चा अपने घर नहीं गया। नानाने तीन-चार बार कहा, पर रोज अुडपी जाना, अपने समवयस्क साथियोंके साथ खेलना, बाजारमें भटकना यही अुसका बडा काम था। अुसको लगता कि कोडीमें रहना बनवास-सा होगा जिसके लिअे वह तैयार नहीं था।

यहाँ अैताल अपने लच्चाकी प्रतीक्षा करते-करते थक गअे। बीचमें अुन्हे कुछ रोज समय नही था।"मुन्नी भैंस-सी बढ गअी है,हथिनी-सी दीखती है, मालूम होता है, अंग्रेज अैताल जवानी फूटनेपर ही अुसका व्याह करेंगे।" अिस प्रकारकी आलोचना करनेवालोंमें शीनप्पा सबसे आगे थे। अुन्होंने अपने दो लडकोंका व्याहकर यश-सम्पादन किया था। अुन व्याहोंमें अुन्होंने नाचनेके लिअे नागवेणीका पचायतन बुलानेका विचार किया था, सम्भ्रान्त वासुदेवने भी वही राय दी थी। पर अपने बडे लडकेसे डरते थे। प्रति मास सौ रुपअेका मनिआर्डर भेजकर बापको गाँवका मुखिया बनानेवाले लडकेसे न डरे तो भला कैसे चलेगा? अिसके अतिरिक्त वे अेक बार बेंगलूरकी यात्रा भी कर आअे थे। वहाँ अुपार्जित अपने लडकेका वैभव देखकर वह नही समझ पा रहे थे कि मैं जमीनपर हूँ या जमीन मुझपर है। शीनप्पा अब भी अैतालकी आलोचना किया करते थे। अुस आलोचनासे अैतालको दुख क्यों न होता? यह भी अेक बात थी। किसीने अैतालको सुझाया था—"तुम अपनी मुन्नीका व्याह शीनप्पाके दूसरे लडकेसे कर दो।

सरसोतीने फौरन अुसका अनुमोदन किया। किन्तु "हम अुनका रिश्ता तो दूर, अुनकी हवा भी नही चाहते !" कहकर अैतालने अवहेलना कर दी। यह वात शीनप्पाके कानो तक पहुँची और अुन्होंने भी "अिस अँग्रेज-कृस्तानकी लडकी व्याहूँगा, क्या मै पागल हो गया हूँ" कहकर चार जनोंके सामने अुपहास किया। अैतालके लिअे अपने लडकेको अँग्रेजी पढानेकी वात अुपहासास्पद हो गअी थी। सुब्बीका व्याह न ोना और अुसका वढ जाना, अुनके लिअे अेक-अेक दिन अेक-अेक युग-सा वननेका कारण हो रहा था। सत्यभामा भी प्रति दिन गाँववालोकी वाते सुनकर वडी दुखी होती थी। अेक दिन अुसने कहा--"अगर आप हमारे पिताजीसे कहे, तो वे कही न कही कुछ प्रवन्ध अवश्य कर देंगे !" अिन वातोको सुनकर सरसोतीने अेक दिन अपने भैयाके कानमें कहा "भैया ! जव तुमने पडुमुन्नूरका रिश्ता किया, तभीसे तुमको गाँववाले अर्धशिवल्ली तीन चौथाअी शिवल्ली कहकर चिढ़ाते हैं। फिरसे तुम पडुमुन्नूरवालोसे वाते करोगे, तो पता नही क्या-क्या कहेगे !" अिन वातोको सुनकर वे भी जरा सोचमें पड गअे। अपने व्याहकी आलोचनाने अुन्हे खूव दुखी कर दिया था। अुन्होने सिर खुजाते हुअे कहा--"सरसोती ! क्या किया जाअे, अव तक सैकडो जन्मपत्रियाँ देख डाली। हमारे गोत्रसे मिलनेवाला कोअी गोत्र ही नही दीखता और शिवल्ली अर्धशिवल्ली कहकर नाक-भौं सिकोडनेवाले भी कम नही है, साथ ही सुब्बीका नक्षत्र अैसा पडा है जिसे देख सब डरते हैं। कहते हैं अुसमें लडकेकी माँको वुरा लिखा हुआ है। विना माँ-वापका लडका हो, जन्मपत्री भी मिलनी चाहिअे, और घरमें खाने-पीनेको भी कुछ ोना चाहिअे, ये सव वाते कहाँ मिलेगी ?"

अिसपर सरसोतीने अेक खास वात वताअी--"भैया, दो-तीन सौके गहने चढानेकी वात मुँह खोलकर कहनेसे जन्मपत्रियाँ आने लगेंगी !" अैतालराम "चमडी जानेपर भी दमडी न जाअे" का सिद्धान्त माननेवाले थे। अिसी डरसे लोग आगा-पीछा करते थे। सरसोतीने फिर कहा--"हमारे मन्दर्तिके घरमें ही तीन लडके व्याहनेको हैं। किसीसे तो सुब्बीकी पत्रिका मिलेगी।"

सरसोतीकी बात अुनके मनमें आयी। अब सत्यभामाकी राय लेना बाकी था। अुसी दिन रातको अुन्होंने सत्यभामासे यह बात कही,—"जगह जरा दूर है, किन्तु मन्दर्तिके वेंकप्पय्याके तीन लडके हैं। तीनों लडके देखने-सुननेमें अच्छे हैं। करीब दो-सौ मुडोकी सम्पत्ति है, खाने-पीनेकी कोअी दिक्कत नही। लडकोकी माँ तो नहीं है, लेकिन घर अच्छा और परिचयका है।" यह सुनकर सत्यभामाने कहा—"न मुझे अुनकी जानकारी है, न परिचय। अगर आपको पसद है तो मुझे भी पसन्द है। दूसरी बात यह है कि जब गले तक आ गया है, तो जहाँ हो सके, जैसे हो सके, अुतारना ही अच्छा है।" सुब्बी गाँववालोकी बातें सुन-सुनकर गली जाती। आखिर बेचारीके नसीबमे जो है, वही तो पाअेगी!

दूसरे दिन पुन सुब्बीकी बात चली। पारोतीने अपनी सम्मति देते हुअे धीरेसे कहा—"मन्दर्तिका गाँव अच्छा है। सभी पूरबके गाँव अेकसे हैं। भगवानका प्रसाद, देख ले। वहाँसे अगर अनुकूल अुत्तर आया तो काम हो गया। जाकर बात कर आअिये। हर क्षण गाली देने और कोसनेवाले अिस गाँवमें मुझे कोअी रिश्ता अच्छा नही लगता।" अिसपर—"हाँ जीजी! भगवानका प्रसाद देख ले। अुन्होंने हाँ कर दी, तो सारी बात अुन्हीपर रहेगी!" कहकर सत्यभामाने भी अपनी अनुकूलता प्रकट की।

अैतालने "आज अच्छा दिन नही" कहकर टाल दिया। आजकी बात कलपर गअी। कल आया। अैताल सुबह अुठकर स्नान-सन्ध्यासे निवृत्त हो घरके भगवानकी शरण गअे। सत्यभामा भी स्नानकर अपना मडि पहनकर पास जा हाथ जोडे खडी रही। सुब्बी भी वहाँ आअी। अैतालने भगवानकी आरती अुतारकर "मेरा मान अपने हाथमें रखना हो तो रख, नहीं तो तेरी अिच्छा!" कहते हुअे प्रसाद अुठाया, बस अुत्साहसे चीख अुठे "शुभ!" अुस दिन खुशीसे सरसोतीके रोम-रोम खिल अुठे।

"आज ही पत्रिका—जन्मपत्री—लाता हूँ!"—कहकर अैतालने जल्दी रसोअी बनानेकी आज्ञा दी। रसोअी बनी, खाना हुआ। पचाग देखकर विष-घटिकाओंको टालते हुअे अैतालराम प्राचीन कालके हरे शालसे कमर बाँधकर वरान्वेषणके लिअे चल पडे। जलती धूप, तपी हुअी जमीन

भी, पर अैतालरामको अिसकी पर्वाह नही थी। "भगवानका प्रसाद मिला है। काम होना अनिवार्य है।" वे दत्तचित्त होकर वाकूरकी ओर चल पडे। शाम तक मन्दर्तिके अपने रिश्तेदारोंके घर जा पहुँचे। मन्दर्तिके वेकप्पय्याने तो अुनका दरवाजेपर ही स्वागत किया। वे रास्ते भर सब शुभ शकुन देखते गअे थे। वेकप्पय्याने अुनका आदरपूर्वक स्वागतकर पूछा—"सरसोती तो अच्छी है न!" अुनके छोटे भाअीसे सरसोतीका व्याह हुआ था। व्याहके दो साल भी नही हुअे थे कि सरसोतीका सिन्दूर पुछ गया। अिससे वह दुखी हुअी और अपने भाअीके घर रहने लगी। दो-तीन सालमें अेक बार वह अपनी ससुराल आकर कुछ दिन रह जाती थी। जब कभी सरसोती वहाँ जाती, तो अवश्य अपने प्रेमका सम्बन्ध छोड आती। अब भी वेंकप्पय्या अुसको भूले नही थे। अुनका प्रेम अुसपर अगाध था।

अुनकी अुम्र साठसे कम नही थी। अुनके अेक या दो नही तीन व्याह हुअे थे। दूसरी पत्नीसे दो लडकियाँ, तीसरीसे तीन लडके थे। सबसे बडे लडकेका अब बीसवाँ साल चल रहा था, और बाकी अेक-अेक सालके छोटे थे। जब वेंकप्पय्याने पूछा—"सरसोती अच्छी है न?" तो अैतालने हँसकर कहा "अुसीके कहनेसे मैं आपके पास आया हूँ।"

"अुसको यहाँ न आअे तीन-चार व हो गअे। कहिअे कि दो-चार दिनके लिअे आ जाअे!"—वेंकप्पय्याने अपनी अनुज-वधूके पास सन्देश भेजा। अैतालने भी अुत्तरमें सरसोती-पुराण पढा। रातका भोजन समाप्त हुआ। तब अुन्होंने अपने आनेका कारण बतलाया। सुनकर वेंकप्पय्याने कहा—"अैतालजी, मेरा भी बुढापा आ गया। अब मुझसे पहलेकी तरह दौड-धूप नही होती। मरनेसे पहिले बडे लडकेका व्याह देखनेकी बडी अिच्छा है! खैर, सारा ऋणानुबन्ध है। वहूका मुँह देखनेका नसीब होगा तो व्याह हो जाअेगा!"

अपने तीन लडकोमें दो लडकोकी पत्रिका अुन्होने अैतालके सामने रख दी। अैतालने खूब सोचकर, गणना करके कहा—"पहिले लडकेका ग्रह-योग मध्यम है, और दूसरेका अुत्तम! अिसपर आप जैसा कहे वही!"

"कुछ भी हो, बडेका ब्याह् करनेके पहिले छोटेका करना अच्छा नहीं होगा !"—वेंकप्पय्याने अपना निर्णय सुनाया।

अैतालको सब अेक-सा था। अैतालने कहा—"मुझे अैसा लगता है, हम दोनोके घरका सम्बन्ध अैसे ही बनाअे रखना भगवानकी अिच्छा है।" और अुसी दिन रातको अिसी वैशाखमें ब्याह् करनेका तय कर डाला। दूसरे दिन वायुवेगसे अैताल अपने घर आअे। घरम अुस दिन अपूर्व आनन्द था। सरसोतीने सुब्बीको बुलाकर "सोनेका-सा घर है मेरी बच्ची ! वहाँ जाना और यहाँ रहना दोनों अेक-सा है। वह ससुराल-सा लगेगा भी नही !" सत्यभामा भी बडी खुश नजर आती थी।

अैतालने दिन निश्चित करते हुअे कहा—"अभी अिसको प्रकट कर देना अच्छा नही। कही शीनप्पा या शकरैय्या जाकर विघ्न न डाल आअें !"

अैतालराम जिस समय अुत्साहसे नाच रहे थे, अुसी समय बुखारने घर दबाया। बुखार तेज था। अैतालराम जैसे दौड-धूप और बातचीतमें तेज थे, वैसा बीमारी सहन करनेमें नही थे। शरीर जरासा गरम होते ही कहने लगते "बुखारसे शरीर जल रहा है !" अब क्या था। रात भर हा-हाकार मचा रहा। अिसी बीचमें अुनको लच्चाकी भी याद आने लगी। "छुट्टी होनेपर भी वह हम लोगोको अैसा तरसा रहा है न ! अुसने क्या समझा है ? हम अुसके कोअी नहीं हें ? क्या अुसको देखनेकी हमारी अिच्छा नहीं है ? आजकलके बच्चे भी !" बुखारके साथ यह मानसिक ज्वर भी जलाने लगा। दूसरे ही दिन सरसोतीने सूरको पड्मुन्नूर दौडाया। रातको लच्चा अपना छोटासा मुँह बनाकर घर आया। आते ही अैतालने पूछा "तेरी छुट्टी हुअे कितने दिन हुअे ?"

"अेक ही सप्ताह !"—लच्चाने अुत्तर दिया।

"अेक सप्ताह हो जानेपर भी तू यहाँ नहीं आया ! अब क्यो आया ? मेरे मरनेके बाद आना था !"—कहते-कहते अैतालरामने अपने लच्चेका खूब स्वागत किया। लच्चाने अब तक अपने बापके मुँहसे अैसी बाते नहीं सुनी थी। आज अुसका अभिमान चूर-चूर हो गया। वह अेक बच्चेकी तरह घरके कोनेमें बैठकर रोने लगा। रातको खानेको नहीं आया। सरसोती

पारोती अुसे मनाकर थक गअी। अुलटे घडेपर पानी डालना-सा सब व्यर्थ गया।

दूसरे दिन अैंताल अपना विस्तर छोडकर अुठे। यह वुखार आया कैसे? शायद पूरवके पानीसे आया, नही शायद धूपमें चलकर पानी पीनेसे आया। वुखार कैसे आया, क्यो आया, अिसका विचार होने तक अुतर भी गया। वुखार नहीं था पर वुखारकी दुम कमजोरी अब भी थी। फिर वे दौड-धूप करने लगे। "लच्चा कहाँ गया?" जब अुन्होंने लच्चाको वुलाया तो वह अपना मुँह लटकाअे अुनके सामने आ खडा हुआ।

—"जन्म देनेवाले माँ-वापको नही भूलना चाहिअे!"—वापने अुसको अुपदेश देना शुरू किया। और सरसोतीने आकर "चार दिन आअे हुअे वच्चेको अैसा क्यो तग करते हो। कल तुमने अैसी बाते कही, कि वेचारा रात भर रोता रहा। खाया तक नही!" कहते हुअे लच्चाकी वकालत की तथा अुसे अन्दर ले गअी।

"अिस तरहसे वकालत करनेपर ही तो यह विगड गया है। अेक साल होनेको आया, अेक क्षण भी अिसे मेरे पास आकर चार वाते कहने-सुननेकी अिच्छा नही हुअी। तव यह मेरे लिअे किस कामका?"—अैंतालने अपना रुद्ररूप दिखलाया।

लच्चाने और अेक बार आँखोसे आँसू वरसाना शुरू किया और सरसोतीने वाहर आकर "जाने दो अव! अेक ही वात कितनी वार कहोगे?"—कहते हुअे अपने भैयाको डाँटा।

खैर, किसी तरह पिता-पुत्र-सग्राम शान्त हुआ। अैंतालने वुखार अुतरते ही सुव्राय अुपाध्यायको वुलाकर लडकीके व्याहकी वात कही। सुव्राय अुपाध्याय अैंतालके घरमें रहकर व्याहकी तैयारी करने लगे। मण्डवा, वाजार, गहने वगैरह वातोंके लिअे दौड-धूप शुरू हुअी। सत्यभामा अेक बार अपने मायके हो आअी। वहाँ मादप्पय्याने अुससे मन्दर्तिके रिश्तेकी वात सुनी, तो कहा—"वेटी वह वुखार—मलेरिया— का गाँव है न!", तव

सत्यभामाने भी "जैसा नसीबमें लिखा है होना है" कहकर प्रारब्धका सहारा लिया।

व्याहका घर था, अंताल दौड-धूपमें लगे थे। लच्चाको जरा आराम मिला। अंताल जब घरमें रहते, तो वह किसी-न-किसी बहाने यहाँ-वहाँ खिसककर अपनी जान बचा लेता। अुनके सामने वह दीनता और नम्रताकी मूर्ति बन जाता। कभी-कभी सोचता "पड्मुन्नूर चला जाअूँ।" किन्तु बहनका व्याह सिरपर था। कैसे जाता?

अेक बार अंतालने अुससे कहा—"लच्चा आज मेरे साथ कुन्दापुर चल। आज वहाँ बाजारका दिन है। यहाँ घरमें मन्दिरकी मूर्ति बनकर बैठनेसे क्या होगा? चल मेरे साथ!" अुसे 'ना' कहनेका साहस नहीं हुआ। अपने बापके साथ चल पडा। दिन भर वहाँ अुनके साथ नगे पैर जलती धूपमें भटकना पडा। वहाँसे किसी तरह बुद्धू बनकर घर लौटा। आने-जानेके श्रमसे पैरमें दर्द होनेकी बात कहकर तीन दिन तक पैरमें तेल-मालिशका अुपचार कराता रहा। अिस प्रकार व्याहके दिनोंमें भी बाहरसे आअी बरातके मेहमानोंकी तरह वह घरमें ही रहा।

"अंतालने, अँग्रेजी सीखकर लडके अैसे बुद्धू बनते हैं, यह मैं नहीं जानता था" —कहकर सन्तोष कर लिया। और क्या करते? लच्चा कभी-कभी अपनी अिच्छासे किसी काममें हाथ लगानेका प्रयत्न नहीं करता हो, अैसा भी नहीं था। वह अपने विचारसे किसी न किसी काममें लग जाता तो "यह ठीक नहीं हुआ, तू नहीं जानता" कहकर फटकारा भी जाता। आखिर अेक दिन पापड बनानेवाली स्त्रियोंकी सहायता करने गया। अुसने छोटे पापड बनानेका प्रयास किया, तो चकला-बेलनको आटेसे सानकर रख दिया। चकला-बेलनमें लगा आटा छुडानेके लिअे और दो स्त्रियोंको आधा घण्टा मेहनत करनी पडी। पहिले अुसको "बेटा! तीन चार हजार पापड बेलना है जरासी मदद कर दो।" कहकर माँने बुलाया था। अिसीलिअे बेचारा काममें लगा था। फिर माँने ही अुसको बेलन दिखाकर भगा दिया।

वह दिन-रात पड्मुन्नूर चले जानेकी बात सोचा करता। घरमें समय बिताना अुसके लिअे कठिन था। जब वह छोटा था, तब जिस होनेके

जंगलमें ओरटाके साथ खेलता था, अुसीमें अकेला बैठने लगा। वहाँ बैठकर अुकताता तो समुद्रके किनारे जाकर वहाँके रंग-बिरंगे चिप्पी, शंख, समुद्रकी चीजें चुनता। अुसमें मन न लगता तो वहीं रेतीमें सुरंग लगाना, समुद्रकी लहरें गिनना, किनारेपर गीली रेतीमें अँगुलीसे चित्र-कलाका अभ्यास करना आदि काम तो थे ही। वह समुद्रकी लहरें गिनते-गिनते सोचा करता—"जीवनमें कभी न आनेवाली यह परीक्षा अकस्मात् अब कैसे आ गअी!" कभी अिन परीक्षाओंसे अुसका पाला नहीं पड़ा था। बिना अभ्यासके वह परीक्षा कैसे दे सकता था? यही दुःख अुसके अन्तःकरणको जला रहा था। वह घरमें अपने बापको अेक कुलीसे भी कठिन परिश्रम करता देखता था। सोचता था "ये लोग चार पैसा बचानेके लिअे अैसा हलका काम करते हैं!" अैतालराम अुससे स्नेह चाहते थे, सहयोग चाहते थे, किन्तु अुसके मनमें अैसी बातें आती थीं, जिनसे प्रेम और सहयोगके स्थानपर अुपेक्षायुक्त तिरस्कार पनप अुठता था।

अुसको अभी कुन्दापुर बाजारकी बात याद आअी। वहाँ अैतालने अेक बोझ पहाड़ी मिरचें अपने सिर लाद ली। बाप सिरपर बोझ अुठाकर आगे-आगे चल रहा था और वह अुनकी दुम बनकर पीछे-पीछे। ये सब बातें अुसको याद आअीं। "क्या बापके पास गाड़ीवालेको देनेके लिअे दो-चार आने भी नहीं!" अिससे अुसके मनमें अेक प्रकारका तिरस्कार पैदा हुआ। अिसी प्रकार अेकके बाद अेक अनेक विचार अुसके मनमें आते। अिस समय अज्ञात भावसे अुसकी अँगुलियाँ समुद्रके कूलपर अस्तव्यस्त लकीरें खींचती थीं और समुद्रकी लहरें अुन लकीरोंको पोंछ देती थीं। फिर अँगुलियाँ वैसी ही लकीरें खींचतीं और समुद्रकी लहरें पुनः पोंछ देतीं। मानो दोनोंमें होड़ चल रही हो। जब अँधेरा होनेसे अुसे अपनी लिखी लकीरें नहीं दिखने लगीं तब अेक आह भरकर कह अुठता—"हाँ! रात हुअी, अब अुस जेलखानेमें लौटना है!" और घरके लिअे रवाना हो जाता।

खैर, जैसे-जैसे ब्याहके दिन नजदीक आते, वह पल-पल गिनने लगा। घरमें रहना अुसको भारी हो गया था।

: १३ :

सुब्बीके व्याहके दिन आये। अुससे दस-पन्द्रह दिन पहले नानीके साथ लच्चाके नाना अैतालके घर पहुनाअी करने आ गये। यद्यपि अुन्होंने भी सुब्बीके लिये चार-आठ जगहे देख रखी थीं, फिर भी अिस सम्बन्धके बारेमें अुनके मनमें कोअी असन्तोष नहीं था, अुन्हें भी जगह पसन्द थी। अुस खानदानसे सम्भवत पडुमुन्नूरवालोका भी कोअी नाता-रिश्ता निकल आया था। आखिर सुब्बी अपने ही खानदानमें रही। अिस अुत्साहमें नाना-नानी खुद ब्याहके सब काममें आगे थे। अिससे अैतालका काम हलका हो गया था, किन्तु अनके वतमान सचिव सुब्राय अुपाध्यायको यह सम्बन्ध अुतना पसन्द नहीं आया। अुन्होंने अिसे अपने अधिकारमें हस्तक्षेप समझा। फिर भी बुजुर्गोंका मान तो करना ही चाहिये था। अत्यन्त शानसे व्याहका समारम्भ हुआ। सरसोतीके लिये सुब्बीका अपने ही घरमें जाना अभूतपूर्व प्रसन्नताकी बात थी।

व्याहके दिनोंमें लच्चा कहाँ गया यह जानना भी अेक कठिन काम था। बाप और नानाके "हमारा लच्चा अंग्रेजी पढ रहा है, भगवानकी कृपासे और दो-चार सालमें बी अे पासकर वकालत करने लगेगा।" अैसी कामना रखनेपर भी वह अुनके पास आनेके लिये राजी नहीं था, अथवा पास आनेपर भी पूरे गूँगेका अवतार बन जाता था। अैतालको यह अत्यन्त असह्य हो अुठता था। कभी-कभी वे निराश होकर कहते थे—"लच्चा, तू अब अंग्रेजी सीख रहा है, घरमें आनेवालोंके साथ भी तुझे दो बाते करना नहीं आता, तो तेरी अंग्रेजी किस कामकी?" लच्चा व्याहके अिस झमेलेसे अलग हो या तो होन्नेके जगलमें अपना डेरा डाल देता, नहीं तो समुद्रका विशाल किनारा पकडता। व्याहके समय घरमें क्या अेक-दो काम होते ही हैं,

अुन सब अनन्त कामों और बातोंमें अैतालको दूसरोंकी ही सहायता मांगनेके लिअे बाध्य होना पडता। "यह कैसी अंग्रेजी पढाअी भाअी! जिससे घरमें आअे-गअेको घूंटभर पानी भी नहीं दिया जा सके? आखिर यह घर किसका है?"—कहकर वे परेशान होते थे। अेक बार किसी तरह गलतीसे लच्चा अुनके सामने आ गया। बापने अुससे कहा—"लच्चा! पान-सुपारी ले आ।" कहा, तो बिना चूनेके पान सुपारीकी तश्तरी लाकर रख दी। कभी किसीको पानी पिलानेको कहा, तो बिना गुडके पानीका लोटा ले आता। लोटेके साथ गिलास लानेको भी भूल जाता। तब बाप कहता—"अंग्रेजी सीखे हुअे बच्चे किसी कामके नहीं होते!" लच्चाको देखकर अुनकी भी यह धारणा और भी दृढ हो गअी थी।

ब्याह समाप्त हुआ। आअे हुअे मेहमान चले गअे। बापके आग्रहसे लच्चा बरातके साथ सुब्बीकी ससुराल गया। वहां भी दूसरे लडकोंसे वह अलग ही रहा। अुन लडकोंमें मिल-जुलकर खेलना तो दूर, बोलनेको भी वह तैयार नहीं था। बडोंमें भी वह नहीं बैठता था। आखिर वह वहांसे घर आया। अैतालको अब ब्याहके कामसे छुट्टी मिली थी। मादप्पय्या भी घरमें ही थे। अैतालने निराश होकर अपने श्वसुरसे कहा—"मुझे अिस लच्चाकी फिकर बनी रहती है।"

"अुसकी क्या फिकर है तुमको? क्या बीमार है?" ससुरने पूछा।

"बीमारी क्या? अच्छी रसोअी बनाओ तो डटकर खा जाअेगा। किन्तु यह अैसा निकम्मा होगा, अैसी मुझे कल्पना नहीं थी। अिससे कोअी भी काम नहीं बनता। कहा तो समझमें नहीं आता, अैसे लडकोंको अंग्रेजी सिखाकर क्या कीजिअेगा?"—अैतालरामने कहा।

"तुम यहां जो देखते हो अुसीसे यह सब कहते हो। अुसकी नानीसे पूछकर देखो। अुसकी जबानका मुकाबिला करनेवाली जबान किसीके पास है ही नहीं! कहती है बडा तेज लडका है। पता नहीं क्यों, शायद यहां रहना कम होनेसे, वह यहां आते ही मुंह दुर्बल-सा हो जाता है।" नानाने नातीकी वकालत की।

अितनेमें सुब्राय अुपाध्याय वहां आ गअे। अुनके हाथमें कागजोंका अेक बण्डल था। "भाअी व्याह तो शानसे हुआ। अगर अुस दिन अुस भिखारी शीनप्पाके घरसे व्याहकी बरात नही निकलती तो जितने आअे अुससे दूने लोग आ जाते।"

"आग लगे अुनकी बरातको! और मुहूर्त क्या नही थे, कि अुसने सुब्बीके व्याहके दिन ही अपने लडकेका व्याह रखा? सभ्रात वासुदेवके घरकी लडकी लानेका अभिमान था न! अुसके कारण आनेवाले कुछ लोग नही आ पाअे। रोज यहाँ सौ-सौ लोगोका खाना बाहर फेंकना पडा। फिर भी अच्छा हुआ, गरीबो-मगतोंका नसीब अच्छा था, अुन बेचारोको चार रोज अच्छा खाना तो मिला!"—अैतालरामने कहा।

"जाने दो! तुम्हारा लच्चा कहाँ गया?"

"किसी होन्नेके पेडपर अपना डेरा डाला होगा! अुमीकी बात हो रही थी अभी। वह अितना निकम्मा होगा, अैसा मैंने नही सोचा था। बडी-बडी आशाअें बाँधी थीं मैंने। आखिर खोटा पैसा निकला!"

"क्या कहते हो तुम! लच्चा और निकम्मा? पागल हुअे हो तुम पागल!"

अब मादप्पय्याको भी जरा अुत्साह आया। अुन्होने मुंहके पानको थूककर बैठते हुअे कहा—"सुब्राय! यहाँ वह चुपचाप बैठा रहता है, यही देखकर राम निराश हो गअे है।"

"वह अैसा ही है। अध भर गगरी छलकत जाअे! भरा हुआ घडा कभी नही बोलता। तुम्हे पता है मै अुसे क्यों ढूंढने आया हूँ? अिसके लिअे!" कहकर अुसने अपनी बगलमें छिपा कागजोंका पुलिन्दा सामने पटककर फिर अुसपर लगी धूल झाडते हुअे कहा—"अुससे यह पुराना रिकार्ड पढवा लेना है!"

"हाँ। यही बाकी रह गया था। रिकार्ड पढ़ेगा! पता नही वह किस राजाके समयकी अँग्रेजी है। वह छुअी-मुअी यह रिकार्ड क्या खाक पढेगा!" बापने निराश होकर कहा।

"ये कैसे रिकार्ड है भाअी!"—मादप्पय्याने पूछा।

"यह देखिअे, अिसका अैसा है पीछे किसी रिकार्डमें हमारे घरके पासवाले वह जो दो खेत हैं न, घरके देवताके थे, अैसी बात लिखी है। अर्थात् अिसका कोअी ठीक प्रमाण नही है। अब अुस खेतको शीना निगल बैठा है। अभी-अभी चार दिन पहिले आपके नातीसे मैंने जरा रिकार्ड पढ़वाअे थे। अुन्हें पूरा-पूरा पढकर साफ-साफ अर्थ भी बतला देगा, तो अिनमें कोअी आवश्यक प्रमाण मिल जाअेगा, यही सोचकर मैं यह सब ले आया हूं!"—सुब्रायने अपना सारा महाभारत सुनाया।

"क्या अुसने यह सब पढकर सुना दिया था? तीसरे फार्ममें पढने-वाले लडकेके लिअे यह बहुत है। हमारे दासप्पा मास्टरकी अँग्रेजी भी कुछ कम नही है। फिर भी वह रिकार्ड-अुकार्ड नही पढ़ सकते।"—नानाने नातीकी वकालत की।

पर अैतालको अिसपर विश्वास नही हुआ। अुन्होने कहा—"जाने दो, तुम अपने वकीलको ढूँढकर अपना काम करो। हमारा सूरा कहता है, वह दिन भर या तो होन्नेके पेडपर रहता है या समुद्रके किनारे। अिस गरमीकी धूपमें अुसे वही ठण्ड लगती होगी। अब! कही जाकर बैठा होगा। घरमें जब जगह नही, तो क्या करे बेचारा!"

"अच्छा तो जाकर देखता हूँ। भाभी, मै कहता हूँ, तुम्हारा लच्चा वकील ही बनने लायक है। मैं जब अुसकी योग्यता देखता हूं, तो मुझे लगता है, अगर मैने अपने किट्टूको पेटके धन्धेमें लगानेके बजाय कहीं अँग्रेजी स्कूलमें भेजा होता, तो कितना अच्छा होता? पर क्या करे? पैसे कहाँसे लाता!"—यह कहते हुअे सुब्राय अपने कामके लिअे समुद्रकी ओर चल पडे।

अिसके बाद काफी समय तक अैतालरामको अपने लच्चाकी चिन्ता सताती रही। "शीनमय्याके लडकोंने बेंगलूरमें होटल खोलकर, बापका नाम रोशन किया। पता नही यह क्या करता है।" यह चिन्ता अुन्होने अपने श्वसुरसे व्यक्त की, तब मादप्पय्याने अुनको समझाते हुअे कहा, "अभी बच्चा है! अुम्र ही क्या है अुसकी? तुमने कभी किसी बातपर अुसे डराया-धमकाया होगा, तभी वह तुम्हारे सामने मुंह खोलते घबडाता है।"

येही बातें हो रही थीं कि घण्टे भरमें सुब्राय अुपाध्याय वहाँ आ धमके। अुसने आगनसे ही अपनी बात कहते हुअे कहा—"भाभी! मैंने कहा था न! तुम्हारा लच्चा सामान्य लडका नही। हमारे कुन्दापुरके वकीलसे चार हाथ आगे ही है। वे लच्चा-स्तोत्रका पाठ करते हुअे अन्दर आअे, तब खुशीसे अुछल रहे थे। लच्चाने अुनके सारे रिकार्ड पढ दिअे, असिसे सौ गुना अधिक अुत्साह अुन्हे अपने खेतके बारेमें प्राप्त नअे ज्ञानसे हुआ। आकर बैठते ही अुन्होंने कहा—"मादप्पय्याजी! क्या कहूँ मैं, यह जो पुराना फैसला है, वह अितना पुराना हो गया है कि अुसके अक्षर भी सब मिट-से गअे हैं। फिर भी लच्चा कहता है, अिसीमें तुम्हारे लिअे जरूरी प्रमाण है। वह कहता है सम्भ्रात वासुदेव और हमारे पिताजीमें जो झगडा हुआ था, अुसमें मगलूर अदालतका दिया हुआ फैसला है जिसमें लिखा है कि हमारे नालेसे लगा हुआ फील्ड (खेत) हमारे घरके देवताके नाम है। तुम्हारे लच्चाने मुझे समझाया कि फील्डका अर्थ खेत होता है। अब क्या है, कल ही कुन्दापुर जाकर वहाँके वकीलसे अिस शीनाके बच्चेको अेक रजिस्टरी नोटिस दिलवाता हूँ।"

मादप्पय्याने सारे रिकार्ड सुब्रायसे अपने हाथमें ले लिअे। अैताल भी वहीं थे। अुन लोगोंमें वह मिटे हुअे अक्षरोंका जजमेण्ट (फैसला) क्या कहता? आखिर सुब्राय "कुछ भी हो लच्चाका दिमाग दिमाग है!" कहकर हाथ हिलाते हुअे घर चले गअे।

अैतालको अुसपर यकीन नहीं हुआ। अुन्होंने भी लच्चाको अपनी कसौटीपर कसनेका निश्चय किया।

रातको लच्चा खा-पीकर अभी बिस्तरपर पडा ही था कि "लच्चा! जरा यहाँ आ तो!" कहकर बापने अुसको अपने पास बुलाया। लच्चाने नींदका स्वागत किया था। नानाने वहीं आकर अुसको अुठाया। वह मजबूर था। नानाके साथ वहाँ गया। दोनोंने जिस रिकार्डके सम्बन्धमें अुनको पूरी जानकारी थी अुसे अुसके हाथमें देकर कहा—"बेटा अिसमें क्या है, जरा पढकर सुना तो! यह नागय्य शेट्टीके नम्बरोंका ही रिकार्ड है न!" लच्चाने अुसको अंग्रेजीको मन ही मन गुनगुनाते हुअे अुसका साराश

सुनाया। बस अब क्या था, अैताल खुश हो गअे। अुन्होंने "भगवानकी कृपा, अिसका पढ़ना-लिखना तो सार्थक होने दो। मैं नहीं कहता कि अिसको खेतमें हल चलाना चाहिअे।"—कहकर प्यारसे बेटेकी पीठ थपथपाअी। नानाने भी "अगर बच्चे हो तो अैसे होने चाहिअे। पन्द्रह सालकी अुम्रमें यह बुद्धि साधारण बात नहीं।"—कहकर अुसकी तारीफ़ की।

लच्चा जाकर सो गया। फिर भी ससुर-दामादमें अुसीके बारेमें बातें होती रहीं। लच्चाके कान अुन्हींकी बातें सुन रहे थे। अैतालने "अब लच्चाका शिक्षण कुन्दापुरमें ही होना अच्छा है। वहाँकी हवा अच्छी है, गाँव भी अच्छा है, मैं भी कभी-कभी वहाँ आता-जाता रहता हूँ। सुना है कुन्दापुर और अुडपीके बीच टाँगे भी चलने लगेंगे।"

मादप्पय्याने "छोटे बच्चोंको दूर अकेला नहीं रखना चाहिअे। और अभी जेठ लगनेमें पन्द्रह–बीस दिन हैं, जेठ लगनेपर ही तो स्कूल खुलेंगे। तभी देखेंगे।"—कहकर अुस समय बात टाल दी।

दूसरे दिन ही मादप्पय्या अपनी पत्नीके साथ पडुमुन्नूरके लिअे रवाना हो गअे। जाते समय अुन्होंने लच्चाको साथ ले जानेकी बात कही। पर पारोती और सत्यभामाने "घर आया हुआ है, चार दिन रहने दें", कहकर अुसको रोक लिया।

सुब्राय अुपाध्यायने कुन्दापुर जानेसे पहिले मंगलूर अदालतके जजमेण्ट (फ़ैसला) की खबर जोर-शोरसे गाँव भरमें फैला दी। साथ-साथ अुसने "अैतालरामके लच्चाके लिअे अँग्रेजी पढ़ना क्या पानी पीना है! बेटे हों तो अैसे होना चाहिअे!" कहकर गाँव भरमें लच्चाके नामका खूब प्रचार किया। अिससे अदालतके लिअे दौड़-धूप करनेवाले अदालती लोग अब अैतालके लच्चाका दर्शन करने लगे। जो आता वही अैतालसे पूछता "भाअी! तुम्हारा लच्चा कहाँ है? यह रिकार्ड जरा पढ़ देता तो बड़ा ही अुपकार होता!"

लिख-पढ़कर अुसके वकील होनेकी आशा अभीसे पूरी होने लगी, अिसलिअे अैतालराम खुशीसे फूले नहीं समाते थे। शीनप्पाने भी अपने घरके रिकार्ड दूसरोंके हाथमें देकर पढ़वा लिअे। अुनको खुद वहाँ जानेमें

शरम आती थी, अिसलिअे किसीके हाथ अेक-दो कागज भेजवाकर पढवा लिया करते। कुछ दिनोंके बाद अुनको कुछ खास रिकार्डोंको खुद दिखाकर सुननेकी अिच्छा हुअी। तब अुन्होंने अेक नया नाटक रचा।

अेक दिन होन्ने-जगलमें खेलनेवाले लच्चाको पकडकर "क्यों भाअी! पडुमुन्नूरमें रहनेवाले अब हमें भूल गअे क्या?"—कहकर अुसको अपने घर ले गअे। जाते समय "यह तुम जानते हो कि तुम्हारा साथी ओरटा बेंगलूर गया है। अब अुसके छोटे भाअीको भी वही भेज दिया है। तुम्हारी बहनके ब्याहमें मैं तुम्हारे घर नही आ सका क्योंकि अुसी दिन मेरे लडकेका भी ब्याह था। तुम्हारे घर आनेकी बडी अिच्छा थी, किन्तु मजबूर था।"—कहकर अुसको बहकाया। घर पहुँचते ही लच्चाके सामने बेंगलूरसे आअी मिठाअी आ गअी। लच्चाको अुसे खानेमें बडा मजा आया और शीनप्पाका भी रिकार्ड पढवा लेनेका अुद्देश्य पूरा हुआ। अिस प्रकार अब दो-चार बार लच्चा वहाँ हो आया। यह बात अैतालरामके कानोमें भी पहुँची। "लच्चा, यो ही जिस किसीके घर जाना अच्छा नहीं। शीनमय्या और हमारे घरमें नही पटती।"—कहकर सब बाते अुसे सुनाअी। किन्तु वहाँ अुसका जो आदर होता था अुसे लच्चा भूल नही सका।

स्कूल शुरू होनेमें सप्ताह भर रह गया था। पडुमुन्नूरसे बुलावा आया। लच्चा जानेके लिअे तैयार हो गया।

पुन घरवालोंकी पार्लमेण्ट बैठी। अैताल बडे विचारमें पडे थे। अगर अुसको ननिहालमें रखा तो वह अपना नही रहेगा अैसा अनुभव अुन्हें हो चुका था, किन्तु अंग्रेजीकी पढाअी खर्चीली थी। अुडपीमें रखनेसे थोडा बहुत बोझ नानाके सिरपर पडनेसे अुनके लिअे वह हलका हो जाता था। फिर भी अुन्होने और अेक बार घरवालोकी राय लेनेकी सोची। अुन्होंने पहिले सत्यभामासे पूछा—"सत्या क्या करूँ? तेरे पिताजीने अब भी अुसको अुडपीके लिअे बुलाया है।" अिसपर सत्यभामाने भी "मैं क्या कहूँ? आखिर अुसकी तो अिस घर और माँ-बापसे माया-ममता टूट-सी गअी है, अुसे देखकर न जाने क्यो ।" कहा। सरसोतीने कहा—"मुझे जो कुछ कहना था मैं कह चुकी हूँ। अब तुम्हें जो करना है वह तुम करो। अगर

तुम मुझसे पूछते हो, तो मैं कहती हूँ अुसका अुडपी रहना मुझको बिलकुल पसन्द नही, और अैसे कितने दिनो वह ननिहालमें पडा रहेगा ? अिसकी भी सीमा है या नही ?"

अैतालने आखिर लच्चाकी राय लेनेका विचार कर सरसोतीसे कहा--"अुससे पूछो, देखें वह क्या कहता है ?"

कुन्दापुरके बारेमें लच्चाने भी सुन रखा था। वहाँसे आअे हुअे अेक-दो अुसके सहपाठी भी थे। अुसके मनमें आया कि अेक-दो साल वहाँ रहकर देखें, अिसके बाद दूसरे वर्षण अुसी अुडपीमें रहनेका मन हुआ। "कुन्दापुर हो तो, कुन्दापुर, अुडपी हो तो अुडपी।"—अुसने कहा। अैताल कुन्दापुरके पक्षपाती थे। "अगर चलनेमें अुसको तकलीफ होती हो तो टाँगे चलने लगेंगे। यहाँसे शालग्राम तक पैदल जाअेगा और वहाँसे टाँगेपर। अगर वह अुडपीमें रहा तो-हमारे हाथमें नही रहेगा।" अैतालने यही निर्णय किया। "किन्तु वहाँ भोजनका क्या प्रबन्ध किया जाअे ? किसके होटलमें। कुन्दापुरमें जो होटल है, वह सब कोटेश्वरवालोके है. कोडीवालोका कोअी होटल है ही नहीं।" अैतालराम अिसी विचारमें थे, कि सुब्राय अुपाध्याय वहाँ आ पहुँचे। अैतालने अुनका मजाक अुडाते हुअे कहा--"कहो भाअी, आज क्या रिकार्ड ले आअे ? किसी नन्दूरायके जमानेमें लिखा हुआ अिस नदीमुखसे जानेवाला सारा-का-सारा पानी तुम्हारा ही तो था। अैसा कोअी रिकार्ड निकाला है कि नही ! अगर अैसा कुछ हो तो वह हमारे लच्चा पण्डितको दिखा लो।"

"क्या मुझपर अिन रिकार्डोंका पागलपन सवार है ? कुछ भी हो शीनाके बच्चेको अेक रजिस्ट्री नोटिस दिला आया हूँ। यह सब तुम्हारे लच्चाकी ही बुद्धिका खेल है। और अेक बात तुमसे पूछनी थी, अिसीलिअे अिस वक्त आया। हमारा किट्टू अब कुन्दापुरके तहसीलदारके घर रसोअी बना रहा है न ! अुस तहसीलदारकी बदली कारकलको हो गअी है। अुसको कारकल भेजनेको जी नहीं करता, और कुछ लोग कहते है, "वह अच्छी रसोअी बनाता है। अुसे वहाँ अेक होटल कर लेने दो, आजकल वह कोटीवालोके रहनेके लिअे अेक भी होटल नही। कोटेश्वरका वह सत्वहीन

लच्चाके सोनेपर भी दूसरे सब ताश खलनेमें लगे रहते। लच्चा, अुसके मित्र जनार्दन, रामन्ना, नरसिंह, सबके सब वडे गप्पी थे। अेकसे अेक वढकर गप्प पहलवान। गोटकी पत्नीके हाथके अुस सुन्दर नलपाककी वात छोड दी जाअे, तो वह सभी स्कूलके शिक्षकोका अुद्धार करनेमें ही अपने गप्पोंका कौशल दिखलाते थे। अिन सारी वातोमें लच्चाको वडा रस आता था, किन्तु ननिहालमें लाडसे अच्छे-अच्छे पदार्थ खानेवाली अुसकी जीभ गोटके होटलका साभारका पानी, सारम् और पलघासे अुकता गअी। "आ मेरे राजा वेटा। ले अितना-सा खा ले!" कहनेवाली वडी माँ या नानी वहाँ नही थी। वहाँ अुसके लिअे किसीका लाड-प्यार नही था। किसीकी सहानुभूति नहीं थी।

अिसलिअे पन्द्रह रोजके अन्दर ही शनिवार-रविवारको वह पडुमुन्नूर अवश्य जाता। वहाँ अपनी रामकहानी कहकर थोडा अचार, कुछ पापड, थोडा घी, जैसा सामान ले आता किन्तु करे क्या? अगर सबमें वाँटकर खाअे तो अेक ही दिनमें खतम हो जाअे। अकेला खाना अच्छा नहीं लगता। किसी तरह घी अपने पास रखकर अुसने अपना काम निकाल लिया। पापड मित्रोने खाकर खतम कर दिअे। अुनके मित्रोमें नरसिंह ही अुसका समवयस्क था और था मिर्च-से भी तेज। अिसका घी देखते ही "क्या वदबू है! कौन है भाअी यह चरबीका घी खानेवाला" कहकर नाको दम कर देता और लच्चा "देख खाकर, चरवी है या घी, वदवू है या खुशवू!"—कहकर चम्मच भर घी अुसकी पत्तलपर डाल देता। नरसिंहसे सीखकर औरोने भी कभी धमकाकर, कभी फुसलाकर, कभी चिढाकर अुसका घी लूटना प्रारम्भ किया। हर पन्द्रहवें दिन कभी कोडी और कभी पडुमुन्नूरसे आनेवाले प्रसादका अिस प्रकार लुट जाना अुसको अच्छा नही लगता। किन्तु क्या करे, खानेकी लालसा भी नहीं छूटती थी।

घरसे लाअे हुअे कृष्णाष्टमीके लड्डू, चकली आदिको वचाकर सन्दूकमें रखना कठिन था, अुससे ज्यादा कठिन था अुन सबमे वचाकर खाना। फिर भी अुसकी जवानकी खुजली नहीं जाती थी। रातको सोनेके वाद कम्बलके अन्दर अुसका मुँह हिलने लगता। अिस प्रकार तीन-चार महीनेके अन्दर

अिस होटलमें कुछ भी खाना अुसके लिअे असम्भव हो गया। सन्दूकमें रखी चीजें भी अुडने लगी। आखिर यह सब असह्य होनेसे गोटका होटल ही अुसने छोड दिया।

तब तक सुब्राय अुपाध्यायके किट्टूने अपना होटल प्रारम्भ कर दिया था। किट्टू ही अिस होटलका सर्वेसर्वा था। होटल क्या था अेक छोटी-सी झोपडी थी, अेक छोटा-सा बरामदा, अेक-दो कमरे, अेक रसोअीघर, बस अितनी-सी जगह, अुसीमें लच्चाने भी अपना ससार बना लिया। बेचारे सुब्राय अुपाध्यायका किट्टू अपना ही आदमी है, यह समझकर वह अिस होटलमें आया था, किट्टू अुपाध्यायको तो कछूका सारम्, कटहलके बीजकी तरकारी, घुअियांकी हुलि, और घुअियांके पत्तोका पलवाके अतिरिक्त और कुछ बनाना ही नही आता! फिर भी अेक-दो महीने वही अकेला विद्यार्थी था, अपने घर या ननिहालसे आअे प्रसादको खानेमें कोअी खास दिक्कत नहीं होती थी, किन्तु वह सुख अधिक दिनो तक नही रहा। गोटके होटलके अुसके पुराने दोस्त भी यही आ गअे। "लच्चणणा! तू यहाँ क्यो आया, अिसका रहस्य हम समझ गअे!" अुन सब भूतोके पुन आ चिपटनेसे वह भी पुन अुदास हो गया, किन्तु शतरज और ताश खेलनेके लिअे सुभीता हो गया, यह सोचकर कुछ खुश भी हुआ। अपने होटलमें जब कभी काम नही रहता तो गोट स्वय भी ताश खेलने आ बैठता। किन्तु किट्टू अुपाध्यायको वह खेल आता ही नही था। अुसने अिनके साथ खेलना तो दूर रहा, अैतालरामको बुलाकर पूछा—"तुमने क्या ताश खेलनेके लिअे अपने बच्चेको रखा है?" यह सुनकर अैतालरामने लच्चाको बुरी तरहसे डाँटा और पुन ताश-शतरज न छूनेकी प्रतिज्ञा करा ली।

अिसके बाद लच्चाका बाजारमें घूमना शुरू हुआ जो बढता ही गया। यो ही बाजारमें घूमनेसे क्या मिलता है? जब वह बाजार जाता, तो देखता कि सब बडे-बडे लडके वाल कामतकी काफी-दूकानमें जाकर काफी पीते है, अनेक प्रकारकी चीजें खाते हैं। अिस प्रकार काफीकी दूकानमें जाकर खाना अुन दिनों बडप्पन और सभ्यताका लक्षण माना जाता था। अेक बार अेक दोस्तने अुसको ले जाकर होटलमें खानेकी दीक्षा दी। अिसके

बाद घरसे चीजें लाकर अिन भूतोंको खिला खुद भूखों रहनेसे अुसने होटलमें खाना ही अच्छा समझा । किट्टू अुपाध्याय अन्य होटलवालोंकी तरह नहीं था । खाना पकाते समय कुछ कजूसी करनेपर भी वह अपने होटलमें रहने-वालोको घरका लड़का मान अुनपर अधिकार भी जताता था, साथ-साथ अपनापन भी । अिससे अुसने लच्चाको अिस नअे अभियानको भी अैताल-रामके कानो तक पहुँचा दिया । जब लच्चा घरमें आया, सरसोतीने आँसू बहाते हुअे कहा—"कुछ भी हो लच्चा, तेरा अुन कोकणियोंके हाथका खाना अच्छा नही था । क्या तू अिसी प्रकार अपनी जाति खो देगा ?" अिससे लच्चाके अूपर बुआको शान्त करनेका भार आ पड़ा । वह मार खा सकता था, डाँट खा सकता था, पर अुसके लिअे बुआके बहाअे हुअे आँसू असह्य थे । "नही बुआ" कहकर अुसने सरसोतीको शान्त किया । पर अैतालने तो रुद्र रूप धारण कर लिया था ।

लच्चाको यह जीवन असह्य होने लगा । अुसने किट्टूका होटल छोड़ देनेका सोच लिया । किन्तु अैसे करनेपर नरसिंह आदि मित्रोंका सम्बन्ध छूटनेका भय था । किट्टूके कानमें भी भनक पडी । अुसने पुन. अिसकी खबर अैतालको दी—"मै अिसको बुरी बातोंसे रोकता हूँ, अुसपर नजर रखता हूँ, अिसलिअे लच्चा मेरा होटल छोड़कर दूसरी जगह जानेका विचार कर रहा है ।" अिसपर अैतालने खूब सोच-विचारकर अुसपर किसी-न-किसीकी नजर होनी ही चाहिअे अिस खयालसे "तुम्हें किट्टूके होटलमें ही रहना होगा । खाने-करनेके लिअे हम घरसे कुछ-न-कुछ बनाकर भेज दिया करेंगे । बचपनमें हम सब तुम्हारी तरह खा-पीकर नहीं बढ़े हैं ।"—कहकर लच्चाको डाँट दिया ।

अब लच्चाको दोनो ओरसे मुसीबत थी । अुसकी हालत सरोतेमें फँसी सुपारीकी-सी थी । जबानकी खुजली नहीं जाती थी । काफीकी दूकानोंमें जानेकी मनाअी थी । किट्टूके मुँहसे बचना चाहा, तो और अधिक फँस गया । अब अुसने होटलमें न जाकर वहाँसे असोडे, वोंडा वगैरह मगाकर खाना शुरू किया । घरवालोंके पूछनेपर भगवानसे लेकर घरकी चम्पी गाय तककी शपथ खाकर अुसने सच्ची बात कही "मै कभी किसी होटलमें नहीं जाता ।"

किन्तु अिसमें भी कम खतरा और कठिनाअी नही थी। अिस प्रकार मँगवानेमें औरोंकी सहायताकी अपेक्षा रहती। सबके लिअे पैसे कहाँसे आअें? यह नअी समस्या थी। बाप पन्द्रह बार हिसाब करके जो कुछ देता था, अुसकी पाअी-पाअीका हिसाब पूछता। खानेके लिअे तो किट्टूके हाथमें ही पैसा देता। ननिहालमें जैसे अुसके हाथमें पैसे आते थे वैसे यहाँ नही आते थे। अिस असह्य जीवनसे तो अुडपीमेंही रहना अच्छा होता—वह यही सोचने लगा।

रामअैतालको पढाअीमें कितने रुपअे लगते हैं यह अब समझमें आने लगा। अेक-अेक पैसा अुनको रुपया-सा लगता था। सत्याकी लम्बी वकालतके बाद लच्चाकी माँग पूरी होती थी। अैसी हालतमें पुस्तकोंके लिअे दिअे रुपयोसे पूरी पुस्तके भी नही आती थी। स्कूलकी फीसके पैसे तो समयपर वहाँ देने ही पडते थे। अैसी हालतमें अुसने अपने नानाकी शरण ली। लाडले नातीको नाना और नानी जब कभी वह माँगता दो-चार रुपअे दे देते। लच्चाका अिससे अपने बापके प्रति असन्तोष बढ़ने लगा। अुसको याद आया, अेक बार शीनप्पाने कहा था— "अैतालराम चमडी जानेपर भी दमडी न छोडनेवाला चिक्कू जीव है।" अपने बापके बारेमें जो आदर था, वह सम्पूर्ण रूपसे मिट गया। कुछ भी हो, अुसको अपने अिस अर्थ-सकटपर विजय प्राप्त करनेमें अपूर्व प्रसन्नता हुअी।

अिस प्रकार कुन्दापुरमें छह-सात महीने बीते। वह किसी छुट्टीमें घर आया था, जब कि अुसने घरवालोको नोटिस दे दिया—"अगर मैं अिस साल फेल हुआ, तो मुझपर जिम्मेदारी नही। किट्टूके होटलमें दिन भर आने-जानेवालोंकी गडबड चलती रहती है। वहाँ किताब खोलकर पढ़ना असम्भव है। अैसी हालतमें बिना अभ्यास किअे मैं पास कैसे होअूंगा!"

अैतालको पुन अपने सुपुत्रकी चिन्ता करनी पडी। पुन किट्टूके पास दौडते गअे। होटलमें सब प्रकारके लोग आते हैं। दो-चार लडकोंसे भला होटल कैसे चलेगा? वहाँ बाजारके लोग भी खाने आते थे। सबके मुँह बन्द करे भी तो कैसे? और होटलमें दूसरी जगह भी नहीं थी। आखिर सोच-

समझकर अैतालने अुससे कहा—"भाअी ! अेक-दो अच्छे लडकोंके साथ अेक कमरा लेकर रहो ! महीनेमें आठ-बारह आने किराया देना पडा, तो कोअी बात नही। फेल होकर साल भर खर्च की हुअी सारी रकमपर पानी फेरनेसे यही अच्छा है !"

बाप अुपदेश देकर घर गया। अिसमें किट्टूने अपनी पराजय समझी। फिर भी अुसको लगा कि अेक बला टली। लच्चाकी दृष्टिसे खानेको कोअी होटल क्यों न हो सब अेक-सा था। स्वतन्त्र कमरा लेकर रहनेसे प्राप्त होनेवाली स्वतन्त्रतासे अुसे अेक नया आह्लाद मिल रहा था। अब काफी होटलकी पकौडी आँवोडेका रास्ता भी खुल गया था। ताश खेलनेसे भी कोअी नही रोकनेवाला था। नरसिंह, जन्ना और श्रीनिवास तीनों पुराने पापी थे।

वर्षान्तकी छुट्टीके दिन आअे। साल भर ताश खेलकर बिताया गया था। अब दिन-रात किताबोंके कीडे बने। परीक्षाके दिनोंमें तो नींदसे लच्चाकी आँखें शराबीकी आँखें बनी जा रही थी। परीक्षामें पास होनेपर लच्चाने कुन्देश्वरको नारियल और पाँच केलोंकी मनौती भी कर डाली।

कुछ भी हो अेक नारियल और पाँच केलेकी रिश्वतकी आशामें भगवानने कृपा की और वह जूनमें चौथे फार्ममें चढाया गया। यह सुनकर अैतालकी सारी व्यथा दूर हो गअी।

: १४ :

अब लच्चाका पैर मैट्रिककी ओर बढने लगा। पूरे तीन सालका प्रवास था। तीन साल कैसे बिताअे जाअें ? मित्रोंकी सहायता, कामतके काफी क्लबकी चटपटी चीजें, ताश और शतरजका खेल तथा कुन्दापुरका सैर-सपाटा, अितनी पूंजीके सहारे मैट्रिकका बिजनेस तीन साल तक किसी न किसी तरह चल निकलेगा, अैसा समझकर लच्चाने सतोष कर लिया। बापके डरसे अुसने यह छुट्टी किसी तरह अपने ही गाँवमें बिताअी। बीच-बीचमें ननिहालका "ट्रिप" भी कर आता था। आखिर भगवानकी कृपासे यह छुट्टी पिछले सालकी छुट्टीकी तरह वनवास नही रही। फिर भी न जाने क्यो सरसोती अकेली ही कहा करती "मालूम होता है लच्चाको कुन्दापुरका पानी माफिक नहीं, लडका ताडकी तरह अूंचा बढता जाता है पर मोटा नहीं होता !" अिसपर अुसका समाधान करते हुअे पारोती कहती "सरसोती ! होटलका खाना खाकर भी भला कोअी मोटा हुआ है ?"

पारोती अब बडी-बूढ़ी-सी लगने लगी थी। दुनिया भरकी चिन्ताओके कारण अब अुसके बाल भी पक गअे थे। जब लच्चा आता तो पहिलेकी तरह बोलती, किन्तु अब लच्चाका प्रेम सबकी ओरसे मुँह मोडकर अुदासीन-सा हो गया था। सत्यभामा दो बच्चोकी माँ होकर भी दोनोंसे दूर रह घरके काम-काजमें जुटी रहती। अैतालकी भी अुम्र काफी हो गअी थी। पारोती, पूरी तरह थक-सी गअी थी। अुम्र अधिक हो जानेपर भी सरसोतीमें अुत्साह था, स्फूर्ति थी, अुसकी कार्य-शक्ति भी ज्योंकी त्यो बनी हुअी थी। घरका सभी काम अपने हाथसे करती, परन्तु कामका विशेष बोझ सत्यभामा पर ही था, क्योकि बुढापेने अब तक अुसपर अपना पजा नहीं जमाया था।

फिर भी सरसोतीके लिअे घरके काम-काज कम न थे। वह भी भगवानसे कहती "यह ससार कब तक चलाना पडेगा ?" जीवनमें स्फूर्ति देनेको कोअी बच्चे भी पासमें नही थे। जो थे वे बडे हो गअे थे। जब कभी सुब्बी मायके आती, तो अुसके साथ थोडी-सी माया-ममता बिखेरकर वह अपने मातृ-वात्सल्यकी पूर्ति कर लेती, नहीं तो वह भी औरो जैसी ही थी।

लच्चा जब अिस बार मअीकी छुट्टीमें घर आया, तो सरसोतीने अपने भाअीसे कहा "भैया लच्चाका सत्रहवाँ साल है अिसका व्याह कर डालो। तुम्हारे बाल पक गअे हैं। जैसे सुब्बीकी जिम्मेदारी खतम कर दी, वैसे ही अिसकी भी पूरी कर दो।" अुसने धीरे-धीरे लच्चासे भी अिस बातपर विचार-विमर्ष किया। लच्चाने यद्यपि बाहरसे अुदासीनता दिखलाअी फिर भी अुसके मनमें था—"मै भी क्यो न अपने मित्रोकी तरह मर्द बनूँ !" किन्तु दो-दो व्याहकर पासकी शेष रकमको खतम करनेकी अैतालकी अिच्छा नहीं थी, अुसको तो पढाअीका खर्च भी भारी बोझ-सा लग रहा था।

आखिर बिना व्याह हुअे ही लच्चाने कुन्दापुरमें प्रवेश किया। बाप चाहता था कि किसी तरह चौथी कक्षासे छठवी कक्षा "मैट्रिक" तककी तीन सालकी सीमा पार कर ले और लडका चाहता था किसी तरह हँसी-खुशी आमोद-प्रमोदसे दिन कट जाअें! किसी भी प्रकारके आमोद-प्रमोदके लिअे पैसेकी अत्यन्त आवश्यकता होती है। अुसे कैसे प्राप्त किया जाअे, यह मुख्य समस्या थी। हर महीने यह फीस देनी है, वह फीस देनी है, यह पुस्तक खरीदनी है, अितनी कापी चाहिअे, अुसकी सूची आती रहती। घरपर आकर किसी-न-किसी बहानेसे अपनी बुआके द्वारा बापसे बात बना अुसकी रुपअे-पैसेकी लूट-खसोट चलती ही रहती, और जब-तब अपनी हजार आवश्यकताअें बताकर नानासे भी वह रुपअे अैंठ ले जाता।

अेक बार अैताल जब पडुमुन्नूर गअे थे, मादप्पय्याने कहा "पिछले शनिवारको लच्चा यहाँ आया था, कहता था वहाँ होटलका खाना अुसको ठीक नहीं लगता। लडका सूखकर काँटा हो गया है। जाते समय सेर भर घी ले गया है!"

"पता नहीं यह कैसी अँग्रेजी पढाअी है! प्रत्येक महीनेमें खाना, किताब,

कागज, कापी कहकर बाहर-पन्द्रह रुपअे खर्च होते हैं। नही मालूम पढाअी पूरी होने तक कितना खर्च होगा!" अैतालने अपनी बात कही।

तब मादप्पय्याने अपने दामादसे पूछा "तो तुम भी अुसे पैसे दे रहे हो! कागज, पेन्सिल, पुस्तक, कापी वगैरहके लिअे तो मैं यहाँसे भी पैसे देता रहता हूँ!" यह सुनकर अैतालको धक्का-सा लगा। "आप क्यों देते हैं! चिरागके तेलसे लेकर नाअी तकके लिअे सब पैसा पिछले सालसे मैं दे रहा हूँ!" अैतालने कहा। लडका अिस प्रकार दोनों ओरसे लूट मचा रहा है, यह अुन्होंने सपनेमें भी नही सोचा था। ननिहालवालोंको भी कुछ आश्चर्य हुआ। "पिताजी तो अेक दमडी भी नहीं देते!" कहकर वह नानासे पैसा माँग लेता था। अैतालकी बातें सुनकर मादप्पय्या घबडाअे। अुन्होंने मन-ही-मन "अितने पैसे किस बातपर बरबाद करता होगा? कही काफी-दूकानमें तो नही जाने लगा? कहीं अवारा लडकोंसे मिलकर अपना दरबार तो नहीं लगा रहा है?" अुन्होंने अिस प्रकार सोचना शुरू किया। आखिर अुन्होंने दामादसे कहा--"तुम अुसे अेक पैसा भी मत दो। मैं अुसे पुस्तके कापी वगैरहके लिअे दासप्पय्या मास्टरसे पूछकर जितना चाहिअे अुतना देता हूँ। केवल खाने-पीनेके लिअे जो कुछ लगे वह तुम देते रहो!"

"यह भी तो मैं गाँवके किट्टू अुपाध्यायके बापके पास, .आप जानते हैं अुसे वह सुब्बीके व्याहमें आया था . अुसी सुब्राय अुपाध्यायके हाथमें देता हूँ।" अैतालने अपना ढग बतलाया।

अब अैतालको अपने लड़केके बारेमें बहुत फ़िक्र होने लगी। वे घरपर आअे। आते ही सुब्राय अुपाध्यायके पास पहुँचे। सुब्राय अुपाध्याय अपने लडकेके पास जानेकी तैयारीमें था। अुसके द्वारा "अिस शनिवार जरूर घर आनेका सदेशा लच्चाके पास भेजवाया। सुनकर लच्चा कुछ घबडाया, और "शनिवारको मैं कैसे आ सकता हूँ, मासिक परीक्षा जो है!" कहकर टाल दिया। अुस महीनेमें काफी-क्लबका कर्जा काफी सिरपर चढ़ा था। पैसेकी अत्यन्त जरूरत थी। हाथ तग था। अतअेव वह सीधा पड्डुमुन्नूर गया। वहाँ अुसने "परीक्षाके लिअे अितने रुपयोंकी जरूरत है" कहकर नानीके

सामने अपनी समस्या रखी। मादप्पय्याने पहली बार नातीको डाँटा। "अपने बापसे भी पैसे माँगता है और झूठ कहकर मुझसे भी लेता है!" नानासे अैसा सुनकर अुसके मुँहमें दही जम गया, और अेक कोनेमें जाकर आठ-आठ आँसू रोने लगा। घण्टो तक आँसुओंसे गाल धो लेनेके बाद नानाने अुसे अुपदेश देना प्रारम्भ किया। तब अुसने "अगर आप मुझपर विश्वास ही नहीं करते तो क्यों पढाते है! मैं कलसे स्कूल नही जाता!" कह ब्रह्मास्त्र छोडा। यह सुनकर नानी वकालत करने लगीं "तुम कुछ भी कहो, राम कुछ भी कहें, लच्चाने पैसेका अपव्यय नहीं किया। दूध-घी लेकर खाया होगा। बापसे ज्यादा पैसे माँगनेके डरसे थोडे वहाँसे और थोडे यहाँसे लिअे होगे!" लच्चाने फूट-फूटकर रोते हुअे बापकी शिकायत की, कुन्दापुरके खर्चका सविस्तर हिसाब बताया और आखिर आँसुओंके बलपर नाना-नानीपर विजय प्राप्त कर ली।

चौथी श्रेणीका अिम्तहान हुआ। लच्चाकी गतिविधिमें कोअी खास रोक-टोक नही हुअी। हाँ, बापसे मिलनेवाली रकम रुकी। नानाने भी जरा हाथ सिकोड लिया। अिस समय काफी-क्लबके बीस-पच्चीस रुपयोका कर्जदार बनकर घर आया। अगले सालकी किताबोंकी कीमतके साथ अिस हिसाबको भी जोडकर वह चुप हो गया।

अुस वर्ष गर्मीके दिनोंमें अैतालके जीवनमें खूब चढाव-अुतार आये। अेक ओर स्वप्नमें भी न सोचा हुआ लाभ, तो दूसरी ओर वैसे ही नुकसान। सरसोतीने कहा "अिस साल गर्मीमें लच्चाका व्याह कर ही डालना चाहिअे।" अिसपर सत्यभामाने भी "आप जैसे कहते है अुससे तो मुझे लगता है लडका गलत रास्तेपर जा रहा है!" कहकर अिसकी पुष्टि की। किन्तु अैतालने "कहीं भी जन्मपत्री ठीक नहीं मिलती" कहकर अिस प्रश्नको टाल दिया। अुन दिनो अुनकी आँखें अेक अच्छी जमीनपर गडी थीं। पूरबकी ओर नालेके अुस पार अेक अच्छी जमीन बिकनेवाली थी। मालिक अुसे किसीके पास गिरवी रखनेको भी तैयार था। अैतालको "दो हजारमें सत्तर-अस्सी मूडी चावल देनेवाली जमीन छोडनेकी अुनकी अिच्छा नहीं हो रही थी।" अुन्होने अपने खजानेका अन्दाज लगाया। अपने कर्जदारोंसे "मुझे पैसेकी बडी जरूरत है!" कहकर तकाजा भी शुरू किया और आखिर जमीन

खरीदनेका निश्चय कर ही लिया। अेक दिन धूपमें ही भाओी और वहन जाकर जमीन देख भी आअे। साथमें लच्चा भी था।

अुस दिन रातका खाना समाप्त होनेके वाद घरकी पार्लमेण्ट वैठी। सरसोतीने कहा "अैसी जमीन फिर मिलनेवाली नही और जमीनपर लगाअी रकम कभी व्यर्थ नही जाती।" फिर खरीद करे या गिरवी रख ले अिसपर वहस चली। खरीदनेके लिअे तीन हजार रुपया देनेकी जरूरत थी, और गिरवी रखनेमें दो हजार ही देने पडते। अैताल हमेशा कम दामोंमें होनेवाला काम करनेको तैयार रहते थे। वे गिरवी रख लेनेकी वात कह रहे थे। सरसोतीने अिसका विरोध किया। अुसका कहना था "यह गलत है। आज गिरवी रखेंगे कल छुडा लेंगे। शीनमय्या ही कल पूरी रकम देकर अपने नाम जमीन लिखवा ले तो क्या होगा!" अैसा काम करते समय पहिले ही सब पक्का कर लेना अच्छा होता है। जव सरसोतीने शीनमय्याकी वात अुठाअी तो अुसपर ध्यान देना जरूरी हो गया।

"जाने दो, तीन हजार रुपये देकर खरीद लेना ही अच्छा है!" अैतालने सरसोतीकी वात स्वीकार कर ली।

शीनमय्याके सामने वे कभी दवनेको तैयार नहीं थे। कभी भी अुससे धोखा होनेकी सम्भावना हो सकती है, अिसलिअे आजसे ही चौकन्ना रहना चाहिअे। अुसी सप्ताहमें जमीन खरीद ली गअी और रजिस्ट्री भी हो गअी। कुछ दिनो तक कोडी गाँवमें चर्चाका वही सबसे वडा विषय था। यह सुनकर शीनमय्याने कहना शुरू किया "अुस वुद्धने अैतालको तीन हजारमें सोना अुगलनेवाली जमीन दे डाली, मै तो अुस जमीनके लिअे आँखें मूँदकर चार हजार रुपये हाथपर रख देता!"

जिस दिन जमीन खरीदनेका निश्चय किया गया अुसी दिन रातको लच्चा भी वही वरामदेमें सोया हुआ था। यह सब सुनकर अुसे अैसा लगा "मेरे पिताजी आशावेताल हैं।" अुसने कभी सपनेमें भी नही सोचा था कि वे जो दो हजार तीन हजारकी बातें करते हैं, अुतनी वडी रकम अुनके हाथमें हो सकती है। अपने पिताके वारेमें, अिस प्रकार सोच ही रहा था कि अैतालने जाकर सरसोतीसे कहा "सरसोती! अभी दोपहरको रजिस्ट्री

करा आया, तीन हजार रुपये दिये, साथ ही सरकारी कामोंमें और भी पच्चीस रुपये खर्च हुअे हैं।" लच्चाके लिअे यह अविश्वसनीय सत्य था। अुसने अपने ननिहालकी शान देखी थी, फिर भी अिस प्रकार हजार-हजार रुपअे निकालनेमें अुसका नाना भी पीछे रह जाता था। वहाँ हजारोंकी बातें कभी नहीं होती थीं। अुसने अितना बडा सौदा कभी नहीं देखा था। अिससे अुसके मनमें अपने बापके बारेमें अेक प्रकारके अभिमानके साथ तिरस्कार भी जग अुठा। "अितना ढेरों रुपअे रखकर भी यह आदमी अिस तरह पेट बांधकर क्यों रहता है! यह जीवन भी कैसा जीवन है? मैं अिनका अिकलौता बेटा होनेपर भी जब कभी दस-पाँच रुपअे माँगता हूँ, तो अिनकी आँखें लाल हो जाती हैं।" अिन विचारोंसे अुसका मन टूट-सा गया। बापके प्रति अेक प्रकारका तिरस्कार अुत्पन्न हुआ। साथ-ही-साथ हम गरीब नहीं हैं, यह जानकर आनन्द भी हुआ, किन्तु बापकी अमीरीका अेक छोटा-सा अंश भी अुसकी छोटी-सी जेबमें कैसे आअे, अुसे यह विचार सताने लगा। अिस विचारने अुसे अेक नया काम दे दिया। अुसने अपने बापपर नजर रखना शुरू किया। अन्दर बाहर जाते समय बापको वह ध्यानसे देखने लगा, किन्तु अुसे खजानेका पता नहीं लगा। वह सोचता था, घरमें न कहीं पेटी है, न ट्रंक, अितनी बडी रकम रखते कहाँ हैं। अुसके दिमागमें कुछ भी नहीं आता था। अितना ही नहीं अुसने अनुभव किया था कि बापको ठीक तरहसे गिनना भी नहीं आता।

अैतालको जमीन लिअे सप्ताह भर नहीं हुआ कि सुब्बी गर्भवती होकर अपने मायके आअी तो अुसका स्वागत होना भी स्वाभाविक था। घरमें अैताल, माँ, बडी माँ, सरसोती सभी सुब्बीका लाड-प्यार करने लगे। सभी नातीका मुँह देखनेकी साध रखते थे। अुसकी छोटी-मोटी सभी अिच्छाओंकी पूर्ति की जाने लगी, अुसकी कदर होने लगी। बस, सुब्बीके मुँहसे निकला और सबने वह काम कर डाला। अैसी हालतमें लच्चाके मनमें सुब्बीके प्रति अीर्ष्या शुरू हुअी। अुसके मनमें आया "लडकोंके क्या जीभ ही नहीं होती? अुनकी क्या कुछ खाने-पीनेकी अिच्छा ही नहीं होती?" अुसकी क्षुद्रता घरकी स्त्रियोंमें व्यक्त होने लगी। तैयार की

हुअी चीज-वस्तु पहिले सुब्बीको दी जाती, यह देखकर अुसे जलन होती। कभी-कभी अुसके सामने कुछ परोसने आते तो वह कह अुठता "हम लडकोंके लिअे तो कद्दूका सार ही काफी है!" दिमागका जहर जबानपर आने लगा। जब कभी सत्या यह सुन लेती तो कहती थी "बेटे! यह सब तूने कहाँ सीखा?" यह टुच्चापन तुझमें कैसे आया?" अिन बातोंसे वह और भडक अुठता, आगमें तेल-सा पड जाता!

अैतालको भी नातीका मुंह देखनेकी अपूर्व लालसा थी। जिस दिन सुख-प्रसवके साथ सुब्बीके बच्चा पैदा हुआ, अुस दिन घरके प्रत्येक व्यक्तिने आणे गुड्डेके सिद्धविनायककी खूब स्तुति की। प्रश्न अुठा सुब्बीकी ससुराल कौन जाअे? लच्चाको भेजनेके विचारसे अैतालने कहा "लच्चा जब तू पैदा हुआ था तो तेरे मामा खबर लेकर आअे थे। अब तू ही मन्दर्त्ति जाकर अपने जीजाजीको यह शुभ समाचार दे।"

"मैं वहाँका रास्ता नही जानता!"

"सूराको साथ लेकर जा, वह रास्ता जानता है।"

"मुझसे अितना नही चला जाअेगा!"

"जो कुन्दापुरसे पडमुन्नूर चला जाता है, अुससे यहाँसे मन्दर्त्ति तक चला नही जाअेगा?"

"मैं सीधे रास्तेपर चल सकता हूँ, पर मुझसे पहाडपर चलना नही होता!" बाप-बेटेमें यह प्रथम संघर्ष था। अिसपर सत्यभामाने चिढ़कर कहा, "सुब्बीकी आशा-अिच्छाओंके दिनमें ही अिसको देख चुकी हूँ। यह क्या अुसके काम आअेगा? सुब्बीके नामसे नाक-भौं सिकोड़नेवाला यह क्या अुसकी खुशीमें शरीक होगा!"

अिसपर सरसोतीने शान्त भावसे कहा—"भैय्या! अच्छी खबर देनेके लिअे बडोंका जाना ही अच्छा होता है। तुम यहीं रहो। प्रसूताको कभी कुछ सुविधा-असुविधा हो, अिसलिअे घरमें किसी मर्दको रहना ही चाहिअे! मैं ही हो आती हूँ!" और वह भैय्याकी राय जाने बिना ही चल पडी।

अब अैताल जिद् पर आ गअे। "लच्चा! मन्दत्तिको तू नहीं जा सकता तो पडुमुन्नूर जाकर अपने ननिहालमें खबर दे आ। तेरी नानी अपनी नतनीके बच्चेको देखनेके लिअे लालाअित होगी!" जैसे अैतालने यह बात कही, वैसे ही सत्यभामाने गुस्सेमें कहा—"क्या जरूरत है? वहां सूराको भेज देंगे। अिसे अैसा ही पडा रहने दो!"

"अगर यह नहीं जाता तो दोपहरका खाना मत दो!" बापने कहा। यह सुनकर लच्चा मुर्झा गया। अुसकी आंखें लाल हो गअी। "मैं बिना खाअे मर नहीं जाअूंगा!" कहकर वह वहांसे खिसक गया। "अब यह क्या करता है देखें" सोचकर अैतालने जिद पकडी, किन्तु वह खानेके लिअे नहीं आया। पारोतीने कहा—"ननिहाल गया होगा। अब अुसपर अेक कौडीका भी भरोसा नहीं करना चाहिअे। हमें समझना चाहिअे कि किसी भूलसे वह हमारे घरमें पैदा हुआ। सूराको पडुमुन्नूर भेज देंगे!" यह कहते हुअे सूराको पडुमुन्नूर भेजनेके लिअे अैताल चले गअे।

सूरा अुसी रोज शामको लौट आया। आते ही अुसने कहा—"छोटे मालिक वहां बरामदेमें बैठे थे। मैंने जाकर जब सारी बात बताअी तो बडे मालिकने बडे खुश होकर पूछा—"कब सुन्नीके बच्चा हुआ? क्या हुआ है लडका या लडकी? बडी मां घरमें बीमार हैं, अिसलिअे चार-आठ रोजमें देखने आअेंगे।"

"लच्चाने वहां जाकर भी घरकी यह खबर नहीं कही देखा तुमने!" अैतालको असीम दुख हुआ। वे बडे अुद्विग्न हुअे। साथ ही सासकी बीमारीकी खबर सुनकर रातको ही वहां जानेको तैयार हो गअे, किंतु अपने दामादके आने तक, घरमें ही रह जाना पडा। रातको दामादके साथ सरमोनी भी आ गअी। दामादका स्वागत कर, अैतालने कहा—"वहां पडुमुन्नूरमें सत्याकी मांका स्वास्थ्य खराब है। सूराने अभी आकर कहा मैं अेक बार जाकर जरा देख आता हूं, अभी मैंने सत्यासे कुछ नहीं कहा है।" और पडुमुन्नूर चल पडे।

सस्तेमें जमीन खरीदनेका अुत्साह, नाती होनेका अुससे भी बडा अुत्साह, अिन सबपर पानी फेरनेवाला दृश्य वहां अुपस्थित था। वहां सत्याकी मां मृत्यु-

शय्यापर आखिरी घड़ियाँ गिन रही थी। अुसकी आयु साठसे अधिक हो चुकी थी। बुढ़ापा! और अुसमें तीव्र वातज्वर, वह तड़फ रही थी। अुसका तड़फना अत्यन्त करुणाजनक था। वह मृत्युके मुखमें थी, मृत्यु अपने दाँतोंसे अुसे धीरे-धीरे पीस रही थी। अुसका सारा शरीर मृत्युकी ओर घसीटा जा रहा था, किन्तु मन संसारमें चिपटा था। अुसे अब भी जीनेकी आशा थी, आशा नहीं अुसे अिसके लिअे हठ भी था। दामादको घर आया देखकर अुसने कहा—"रामा, तू आया!" अिसके बाद रामको पास बुलाकर कहा—"रामा! क्या अब मैं अच्छी नहीं हूँगी? ..रामा, सुब्बीके बच्चेका मुँह देखनेकी लालसा है रे! .अुसके बाद मरती तो कोअी बात नहीं!" वह बार-बार यही रट लगाअे थी। अुसके मुँहसे शब्द भी ठीक नहीं निकलते थे।

रामअैताल अुसे धीरज बँधाने लगे। "आप चिन्ता न करे? आपको कुछ नहीं होगा! आप देख लेगी। चार दिनोंमें सुब्बी यहीं आ जाअेगी। अुसे भी अपनी नानीको देखनेकी बड़ी लालसा है!" राम अैतालने कहा।

"अुस बच्चेका मुँह देखनेके लिअे भगवानको मुझे जिन्दा ही रखना चाहिअे! अिसीलिअे अुसने मुझे अब तक जिन्दा रखा है! वह दयालु है, नहीं तो मैं पिछले वर्ष ही मर जाती!"

बुढ़ियाने नातीका मुँह देखनेकी जिद की। अिस समय भगवानके नामका जाप छोड़कर अुसने बच्चेका ही जाप शुरू किया। अैताल अुसी दिनसे कोडी और पड्डुमुन्नूरके बीच दौड़-धूप करने लगे। जब बाप पड्डुमुन्नूर आता तो लच्चा कहीं अदृश्य हो जाता, और प्रसंग भी कुछ विचित्र-सा था, अिसलिअे अैताल अपने बेटेके बारेमें चुप रहे। कभी-कभी अैतालके साथ सत्यभामा भी माँके पास आती जाती। आखिर सत्याकी माँने अेक दिन पूछा—"मेरी अेक साध पूरी होनेके पहिले मुझे अैसे ही मार डालोगे? क्या मैं अेक बार ..अेक ही बार.. सुब्बीके बच्चेको गोदमें लिअे बिना ही मर जाअूँगी? अब.. क्या.... मैं अेक दो दिन जीअूँगी!" वह बच्चेकी तरह रोने लगी। अुसके सामने बैठे मादप्पय्या और अैताल किंकर्तव्यमूढ़-से रह गअे। अब क्या किया जाअे। अिसमें शक नहीं कि वह बुढ़िया अब अेक

दो दिनकी ही मेहमान थी, किन्तु अुस नवजात शिशु और वुढ़ियाकी भेंट कैसे हो ? नदी पार करके चार पाँच मीलकी यात्रा कौन करे ! वह चार दिनका वच्चा था और मृत्युके मुँहमें बैठी यह वुढिया ! किन्तु मादप्पय्याकी हिम्मत भी अद्भुत थी। अुसने अपने लडकेको वुलाकर कहा—"बेटा ! डोली मगवा लो, आखिर मरते समय कोअी लालसा रखे मरना अच्छा नहीं !"

शामके समय जव सूर्यकी किरणें छिपीं तो मादप्पय्याका जुलूस निकला। वुढ़ियाको डोलीमें सुलाकर कोडी ले जाना महान साहसका काम था ! दामाद भी साथ था, रास्तेमें भी कही कुछ होनेका डर था। किन्तु अपनी नतनीके वच्चेको देखनेके अुत्साहमें वह हँसी अुस समय अुसकी आँखोंमें खेलनेवाली चमक, अुसके जीवनकी अन्तिम निधि थी, अन्तिम सौन्दर्य था। अन्धकार होते-होते वुढियाकी डोली सुब्बीके पास अुतारी गअी। पास ही सुब्बीका नवजात शिशु था, अुसने वुढियाके सामने वही रखे चिरागके प्रकाशमें अपनी सुन्दर आँखें खोलीं। "जरा गोदमें दो !" कह वुढियाने हाथ फैलाअे। सत्याने अुस नन्हेसे वच्चेको वुढ़ियाकी गोदमें दे दिया ! वुढिया अुस वच्चेको अुतने ही कुतूहल और अुत्सुकतासे देखने लगी जितने कुतूहल और अुत्सुकतासे वच्चा वुढियाको देख रहा था। वहाँ खडे सवकी आँखें मोती वरसाने लगी। आखिर वुढियाने कहा—"अव मेरी लालसा पूरी हुअी !" अिसके वाद क्षण भर अपनी आँखें मूंदकर पुन खोली, फिर थकावटके स्वर में कहा "यहाँ नही। अव वहाँ चलो !" फिर अुसने मादप्पय्याको अिशारा करते हुअे कहा—"मुझे ले चलो !"

यह वरात लौटी ! डोली किसी तरह पड्डुमुन्नूरके अपने मकानमें पहुँची। वुढियाको डोलीसे अुठाकर विस्तरपर सुला दिया गया। अुमी समय वुढियाने लम्वी-लम्वी साँसे भरना शुरू किया। जीवनकी अूष्मा समाप्त होने लगी और आखिर वह चिराग वुझ गया। मादप्पय्याका वुढापा अेक ही क्षणमें सौ गुना वढ गया, अैतालराम वच्चा वन गअे। अुस दिन सभी वुढियाके विछौनेके पास थे, किन्तु लच्चाका चेहरा कहीं भी नजर नहीं आया।

सुब्बीको जव पता चला कि नानी अव नही रहीं, तो अिसे अपना

दुर्दैव कहकर खूब रोअी। सरसोतीने "बेटी! तेरे बच्चेको देखकर ही अुसकी अन्तिम अिच्छा पूरी हुअी" कहकर अुसे सान्त्वना दी।

रामअैताल अपने नातीका नामकरण-संस्कार कर सासका अन्त्येष्टि-संस्कार करने गअे। अेककी खुशी दूसरेके दुखमें डूब गअी। हँसकर अुछलने-वाले समुद्रकी तरंगका आनन्दोल्लास जिस प्रकार चौगुने वेगसे गिरकर समुद्रकी तहमें डूब जाता है, अुसी प्रकार अैतालका अुल्लास अुछलकर अथाह दुखमें विलीन हो गया। दिन रात अुनका मन "सत्याके पिता अकेले ही अब कैसे दिन बिताअेंगे" अिसी विचारमें डूबने लगा। साथ ही अपना विचार भी अुनको डराने लगा। मेरी आयु भी साठसे अधिक हो गअी है! अपने बारेमें जब विचार आने लगा, तब लच्चाका विचार आना स्वाभा-विक था। "वह कहाँ हैं?" अुन्होने पूछा और पारोतीने "वही ननि-हालमें होगा! बेचारेको अब नानाके दुखमें अुनके पास रहने दो! बुढापेमें जो आकाश सिरपर टूट पडा है, अुसमें वही अुनका आधार होगा!" तब अैतालको नानीकी मृत्युके समय अुसका मुँह दिखाअी न पडनेकी याद आअी। "जो नानीका आधार नही हो सका वह नानाका क्या होगा? कृतघ्न कुत्ता है वह!" अैतालने कहा। पारोतीने अुनके दुखाअे, कुचले हृदयको सान्त्वना देनेका बहुत प्रयास किया। पर व्यर्थ।

अिसी समय सरसोतीने आकर कहा—'भैय्या! कुछ भी हो लच्चाका ब्याह कर डालो! हमारी जिन्दगीका भी क्या भरोसा!"

"तू तो पागल है, सरसोती! क्या सारा संसार हमसे ही चलता है! अिस गर्मीमें ब्याहका नाम मत लो!"—अैतालने कहा। बहुत दिनोंके बाद आखिर अेक दिन लच्चा घर आया। स्कूल शुरू होनेमें अब सप्ताह भर रह गया था। कमसे कम अगले वर्षकी पुस्तके आदिके लिअे बापसे पैसा माँगनेके लिअे तो अुनके सामने आना अनिवार्य था। फिर भी राम अैतालको नही मालूम हुआ कि वह घरमें है। आखिर अपना अस्तित्व सिद्ध करनेके लिअे वह बार-बार शीनप्पाके घर जाने-आने लगा। शीनप्पा भी आजकल जरा तन गया था। वह अैतालको अपना दुश्मन समझ रहा था। जबसे अैतालने नालेके पूरबकी जमीन तीन हजारमें खरीदी, तबसे शीनप्पाकी गर्मी बढ़

गअी थी, जिसे शान्त करनेके लिअे अैतालके घरके पासकी धानकी क्यारीके चारो ओरवाला सारा खेत अुसने अपने नाम करा लिया था। बहुत दिनोंसे वह अिस प्रयत्नमें लगा था। तीन सालसे कीचड डालनेके बहाने अुसने अपने खेतको हाथ भर अूंचा अुठा लिया था। अैतालको अनुभव हुआ कि हमारी धानकी क्यारीके अिर्द-गिर्द यह भीमचक्र लग गया है। अुनको अपनी क्यारीमें जानेका रास्ता मिलना भी मुश्किल-सा हो गया। चारो तरफसे खेतके अूंचे होनेसे वर्षा ऋतुमें अुनकी क्यारीने तालावका रूप धारण कर लिया, जिससे बोया हुआ सारा धान सड गया। अब देखें "यह अैतालका बच्चा क्या करता है! अिसे अदालतमें नही घमीटा तो मेरा नाम शीनप्पा नहीं! नहीं तो आकर मेरा पैर पकडे!"—कहकर शीनप्पाने अैतालको चुनौती दी। अपनी क्यारीके बचावके लिअे अैतालको अदालतका मुंह देखना पडा। अुनका अभिमान भी अैसी चोट खाकर चुप बैठनेवाला नहीं था। अुन्होने कहा—"हाअीकोर्ट तक जाअूंगा!" पर यह कोअी बडी बात नहीं थी। मना करनेपर भी लच्चाका शीनप्पाके घर जाना अैतालके लिअे असह्य था!

धीरे-धीरे जूनका महीना लगा। लच्चा स्कूल गया। भगवानकी कृपासे अिस साल भी वह पास हो गया "अुमको स्कूल-विस्कूल कुछ नहीं चाहिअे, यही खाते-पीते पडे रहने दो!"—अैतालने अेक बार यही कहना चाहा पर सरयाने कहा—"आप पागल तो नही हो गअे हैं! यहां वह योही थोडे पडा रहेगा? हम सबको जीना मुश्किल कर देगा!!" सरसोतीने अिसपर अपना ब्रह्मज्ञान लगाया "भैय्या! ब्रह्माने जिसके माथेपर जो लिख दिया अुसे वही मिलता है, तुम्हें अपना जो कर्तव्य करना है, करो। जो भरना है भरो। जो होनेवाला है, वह होकर रहेगा। तुम्हारे चिन्ता करनेसे क्या वह रुक सकता है!" अिस साल लच्चाकी पढाअी जारी रही।

अिस प्रकार बिना किसी चिन्ताके लच्चा स्कूलमें जाने लगा। साथ ही अब अैतालको बार-बार कुन्दापुरकी यात्रा करनी पड़ती थी, क्योंकि धानकी क्यारीके नुकसानके लिअे शीनप्पाके साथ मुकदमा चल रहा था। मुकदमेमें जानेके लिअे जहां शीनप्पा गांवमें नअी शुरू हुअी टांगा सर्विसमें पैसे बरबाद कर रहा था, वहां अैताल पैदल ही जाते-आते थे।

अब लच्चा पाँचवे स्टेन्डर्ड (नवम कक्षा) में पढ रहा था। अेक साल बाद मैट्रिकमें जानेवाला था। अिस साल भी वह किट्टू अुपाध्यायका होटल छोडना चाहता था, किन्तु दूसरा होटल ही नही था। और अिन दो-तीन सालोंमें वह होटल बढ़ भी गया था। किट्टूने अब बडा मकान किराअे पर ले लिया था। अुसे आमदनी थी, अिसलिअे किटटूने अंतालसे कहा—"अब आपका लच्चा जहाँ-तहाँ रहकर क्यो पढे? घर बडा अच्छा है, कोठे पर अच्छी जगह है, यहीं रहने दीजिअे। मेरी भी अुसपर नजर रहे तो अच्छा! आप वहाँ जो किराया देते थे अुससे आधा ही मुझे दे दीजिअे।" अंतालने तुरन्त लच्चाको अपना हुक्म सुनाया "अब तुम किट्टूके कोठेपर रहा करो।" और लच्चा भी "अब किट्टूके छतपर ही हमारा दफ्तर आ गया!" कहकर वहाँ जाके रहने लगा। किट्टूकी आँख बचाकर लच्चाके पुराने दोस्त भी वहीं आने लगे।

न केवल किट्टू अुपाध्यायके होटलकी वृद्धि हुअी, बल्कि अब वह सपत्नीक वहीं रहने लगा जिससे कद्दूका सारम् और कटहलके बीजका पलाव भी अच्छा स्वादिष्ट बनने लगा। मासिक अेक रुपया अधिक देनेवालोके लिअे दही और घीका भी खास प्रबन्ध हुआ। साथ ही "पता नही तुम कहाँ किस जातिके काफी-क्लबमें जाकर क्या-क्या खा आते हो, मैं यहीं अेक काफी होटल भी किअे देता हूँ, तुम सब यही खा लिया करो" कहकर वह अपना नया प्रोपेगण्डा भी करने लगा। धीरे-धीरे बेंगलूरसे आअे अेक मित्रके साथ अुसने काफी-क्लब भी खोल दी। अुन दिनो कोकणियोकी दूकानमें जाकर डूबनेवाले कोटी ब्राह्मण्यकी रक्षाका महान् कार्य किट्टू अुपाध्यायने किया।

साल भर यह होटल चला। लच्चा भी किट्टूके आश्रयदाताओंमेंसे अेक था, किन्तु अपना सम्पूर्ण कामका वहीं करनेसे शायद सारी बाते पिताजीके कानो तक पहुँच जाअें, अिस विचारसे और स्थानोपर भी अुसने अपना जाना आना जारी रखा। यह अेक साल किट्टू अुपाध्यायके लिअे तलवारकी धारपर चलना था। कहना जितना कठिन था छिपाना अुससे भी अधिक कठिन था, "कहो तो माँ मरे न कहो तो बाप कुत्ता खाअे" वाली कहावत चरितार्थ हो रही थी।

अब किट्टूका होटल ही लच्चाका कार्य-क्षेत्र बना, वहांका वह कोठा ही अुसका दरबार था। पढना-लिखना गौण था, खेल-कूद और हँसी-मजाक ही अुसका मुख्य विषय था। अिसका अर्थ यह नही कि वह पढता ही नही था। अुसका समवयस्क नरसिंह, अुसमे दो वर्ष बडा जनार्दन आदि भी अुससे अधिक नहीं पढते थे। अन्य सब लडकोंमें ही वह अेक था, किन्तु अब अुसका मन किताबोंसे अधिक शिकारकी ओर जाता था। अुसकी चर्चामें लडकोका नाम अुतना न ीं आता, जितना कि स्कूलमें आनेवाली अेक दो लडकियोंका। दिन भर अुन्हीकी ओर ध्यान रहता, मनमें अुन्हींके विचार आते, स्कूलमें या बाहर जहां कही मौका मिलता, आँखें अुन्हीको खोजतीं। लच्चाके मित्रोंमें जन्ना सबसे बडा था और वही अिन सबमें आगे भी था। अुसकी बातोंमें अश्लील व्यंग्य छोड और कुछ नही रहता। यही अुनका मनोविनोद था और यही मनोरंजन। जन्नाने अेक दो बार लच्चाको "यहां आ और वहां चले" कहकर देखा, किन्तु लच्चाको साहस नही हुआ। साथमें शरम भी थी। कुछ भी हो वह लज्जाशील था। जन्नाका प्रोत्साहन, प्रेरणा काम नहीं आया। वैसे तो वह जन्नाके सामने अुसका मजाक अुडाता, किन्तु अन्दर ही अन्दर अुसकी जैसी हिम्मतका अपनेमें अभाव पाकर दुखी होता।

अिन मित्रोंमें यदि कोअी अुसका अत्यन्त आत्मीय था तो नरसिंह। दोनोकी मित्रतामें अैसा कोअी रहस्य नहीं था। अुनमें सम्पूर्णतया अभिन्नता थी। "अगर कोअी सहायता करेगा, तो वही करेगा"—यह सोच लच्चाने अुसको काफी पिलाना प्रारम्भ किया। काफीका कप देखते ही नरसिंह सब कुछ करनेको तैयार था। लच्चाका वही डाकिया बना।

अुनके स्कूलमें अेक बहुत ही सुन्दर लडकी आती थी। अुसका नाम सजीवी था। लच्चा अुसपर आसक्त था। अुसके आने-जानेके रास्तेपर दोनो मित्र घूमने लगे। आँखोंसे बाते भी चलाअीं। सजीवीने भी तिरस्कार नही किया। नरसिंह लच्चाका डाकिया बना। पत्र आने-जाने लगे। सजीवीके घरवाले देखनेमें कुलीन थे, गरीबीमें अुनको अिस नअी अुपवृत्तिका आधार-सा मिला। अेक दिन शामको सजीवीने लच्चाको अपने घर बुलाया, लच्चा वहां गया। अुस दिन नरसिंह बाहर रास्तेपर प्रतीक्षा करते-करते थक अकेला ही होटल लौटा। रातको खानेके समय भी लच्चा होटलमें नहीं पहुंचा,

जिससे किट्टू भी अुसपर बिगडा । आखिर बहुत देरसे आये हुअे "गणितके मास्टरने घरपर बुलाया था, अुन्हींके पास अितनी देर हो गअी !"— कहकर किट्टू अुपाध्यायसे जान बचाअी ।

अब लच्चाकी प्रेम-लीला प्रारम्भ हुअी । नित्यप्रति रातको भोजन समाप्त होते ही दोनो सबकी आँखें बचाकर निशाचरी करने चल देते । यह सब जो कुछ चलता था, जन्नाकी आँख बचाकर चलता । अुसके लिअे अेक बहाना मिल गया । सजीवीके घरसे भी आगे जरा दूरीपर अुनके अेक शिक्षक रहते थे । रातके समय अुनके यहाँ ट्यूशनके लिअे जानेका बहाना बनाया । अैतालने "लडका जब अितनी मेहनत करता है, तो तीन-चार रुपअे और खर्च हो जानेमें भी कोअी हर्ज नही ।" कहकर अुसकी मदद की ।

अिस नअे खेलसे अब लच्चाका हाथ तग रहने लगा । साथ ही नरसिंहका प्रबन्ध भी अुसीको करना पडता था । ननिहाल जाकर जो सच-झूठ गढता, वह भी बेकार जाने लगा । अेक बार लच्चाने किट्टूके होटलमें ही अेक भारी कोलाहल मचा दिया । अेक दिन अुसने घोषणा कर दी—"मैं स्नानघरमें गलेकी जजीर भूल आया था, जाकर देखता हूँ तो वह वहाँ नही है !" अिस जजीरने दो-तीन महीने तक अुनकी प्रणय-लीलाका अच्छा प्रबन्ध कर दिया । अिसपर अैतालने लच्चाको खूब फटकारा । बेचारा किट्टू अुपाध्याय भी अपने होटलके नामपर बट्टा लगनेसे खूब रोया ।

आजकल रातके समय बेचारा जन्ना अकेला अेकान्तमें तपस्या करता और लच्चा और नरसिंह जो टयूशनके बहाने बाहर रहते क्षण भर अपने शिक्षकके घर बैठ आते और सजीवीसे प्रणय-पुस्तकका अभ्यास कर घर लौटते । अब यह नित्य-नियम-सा हो गया था । दिनपर दिन अुनके लौटनेका समय बढता गया ।

जन्नाको शक हुआ । अुसके मनकी जिज्ञासा जगी । अेक दिन अुसने अिनका पीछा किया । चोरी पकडी गअी । दूसरे दिन अुसने दोनोंकी पोल खोल दी । लच्चाका मुँह भुने हुअे बैंगन-सा बन गया । तीनोंमें सधि हुअी, अेक दूसरेका सम्मान करनेकी कसम खाअी गअी । अब दोके तीन बने और सबकी

आनेका अुपक्रम किया। अब अुसमें नया साहस पैदा हुआ। अुसने नअी चाल चली। यदि वह स्नानघरमें जलजाके जानेके पहले जाता तो आते समय वहाँ चार-आठ आने छोड़ आता। जब वह नहाने जाती, तो यह भी वहाँ पहुँचता और मुस्कराकर कहता "यहाँ मेरे पैसे रह गअे थे, ओह! तुमने आपने अुठाअे हैं, कोअी बात नहीं," और लौट आता। कुछ दिनों अिसीका रिहर्सल हुआ। साथ-साथ अुसने जलजाके हाथकी रसोअीकी खूब प्रशंसा करनी शुरू की। जन्ना भी अिस प्रशंसामें अुसका साथ देता। अिस प्रकार समवयस्क जलजा और लच्चामें मित्रता स्थापित हो गअी फिर दो तरुणोंकी मित्रता सुन्दर प्रणयमें बदल गअी।

अब लच्चा मैट्रिकमें था। अन्तिम वर्ष था। जन्ना भी फेल होकर अुसका सहपाठी बना। अब भी रामअैताल अपने लच्चाके बारेमें अुदासीन थे। यहाँ किट्टू अुपाध्यायके होटलकी हालत दिनोदिन बिगड़ती गअी। काफी—होटलकी भागीदारी नहीं निभ सकी, आखिर अुसे बन्द करना पड़ा। अब किट्टू दिन भर भोजनालयमें ही रहने लगा। जलजादेवी केवल होटलकी अन्नपूर्णा रह गअी। अुसके मालिकपनेकी सारी व्यवस्था अब किट्टू अुपाध्यायके हाथमें आनेसे वही असली मैनेजर बन गया। अिस नअे परिवर्तनसे लच्चा—जन्नाकी प्रणयलीलामें रंगमें भंग हुआ। अब अुन्होंने किसी-न-किसी बहाने दिनमें पन्द्रह बार रसोअीघरमें जाना-आना शुरू किया। अिनका स्वागत करनेके लिअे मुस्कुराती हुअी जलजादेवी सदैव तैयार रहती। यह सब देखकर किट्टू अुपाध्यायका दिल जलने लगा। अुसकी अीर्ष्या तीव्र हो गअी। अुसने मौके बेमौके अपनी पत्नीकी भर्त्सना शुरू की। पति-पत्नीमें कलह प्रारम्भ हो गया। परिणामस्वरूप अब जलजादेवीने छिपा कारोबार शुरू किया।

किट्टू अुपाध्याय बेचारा बड़ी मुश्किलमें पड़ गया। जलजाकी रीति-नीति अुनके लिअे असह्य थी। अुसे काबूमें लानेके लिअे लच्चाको अलग करना जरूरी था। जब कभी अैतालराम वहाँ आते, वह कहता "आपका लच्चा अब हमारी बात नहीं मानता। अुसकी शान, आना-जाना, अमीरी ढंग, हमसे देखा नहीं जाता। अुसके कारण और लड़के खराब हो रहे हैं। अुसका कोअी दूसरा प्रबन्ध कीजिअे!" बेचारा अपना दुखड़ा

दिल खोलकर नही रो सकता था, और कहता भी तो किस मुंहसे ? अुसकी हालत वडी नाजुक थी ।

किट्टू अुपाध्यायकी बाते सुनकर अैतालरामको बडा दुख होता, वे भी विवश थे । कहते "भाअी ! तुम्हारे पास है अिसलिअे अितना भी सुनता है, अगर दूसरे किसी होटलमें होता तो, पता नही कितना खराब हो जाता । अितने दिन निभाअे तो अेक साल और सही ! अिस साल वह मैट्रिक हो जाअेगा, वस खतम हुअी यह विद्या ।"

यह सुनकर वेचारे किट्टूको चुप हो जाना पडता । अैतालरामकी बुजुर्गी और अुनकी प्रतिष्ठा किट्टूका मुंह बन्द कर देती । पर अन्दर ही अन्दर वह जल-भुनकर रह जाता ।

किट्टूने "तुम्हारे खानेका अुधार बाकी है" कहकर जन्नाको अपने होटलसे भगा दिया । अुसने सोचा था, जन्नाको भगानेसे लच्चा चुप हो जाअेगा, किन्तु जन्नाके जानेसे जलजाक्षीका स्त्रीत्व अुग्र हो गया । अुसने अव अपने पतिपर ही मौके बेमौके हमला करना शुरू किया । पति-पत्नीका कलह बढ़ता गया । बीबीको लाअे दो सालमें ही घरकी आबरू बाजारमें लुट जानेके विचारसे वह परेशान रहने लगा । बार-बार पति-पत्नीके मन टूटने और पुन सधानमें ही दिन बीतने लगे । अुनके गृह-जीवनकी अन्तर्वेदनाने दोनोके जीवनको दुखी बना दिया ।

किट्टू अुपाध्याय भी आखिर मनुष्य था । अुसमें भी सभी मनुष्योचित भाव थे । जलजाक्षीके प्रेमपर अुसीका अेकाधिकार होना चाहिअे । अपना अधिकार नष्ट होनेपर अुसके प्रेमने कामका रूप धारण कर वदला लेना चाहा । पर खुले आम अपनी पत्नीसे झगडनेसे होटल बन्द करनेकी नौबत आती, होटल बन्द करना पडता तो अुसको पुन किसीके घर रसोअिया बनकर वर्तन मांजना पडता ! और ये सारी बाते अगर बापके कानो तक गअी तो शायद अुसे दूसरा ब्याह भी करना पडता । अिससे होटलका लाभ भी खतम हो जाता । आखिर वर्तमान स्थितिमें सुखी रहनेके लिअे अुसने भी जलजाक्षीका रास्ता पकडा । अिन सबके बीचमें लच्चाकी मैट्रिककी शिक्षा अजगरकी गतिसे चलती रही । अब अुसके और जलजाक्षीके बीच न जन्ना था, न कुछ हद तक किट्टू अुपाध्याय ।

: १५ :

लच्चा आनेवाली भिखार छुट्टीके सम्बन्धमें सोच ही रहा था कि वह सिरपर आ गअी। मैट्रिक परीक्षाके खतम हो जानेसे अिस साल छुट्टी भी अप्रैलमें ही शुरू हुअी और लच्चाको मन मारकर कोडी आना पडा। अब वह कोडीके अज्ञातवाससे मुक्ति पानेका विचार करने लगा। कोडी छोडकर पड्डुमुन्नूर गया, तो वहाँ भी कोअी सुख नहीं था। वहाँ नानाका बुढापा अुनका शरीर खा रहा था। दिन, घण्टे, निमिष गिननेवाले नानासे अब कोअी स्वार्थ नहीं था। क्या करे? आखिर वह अिन दो निर्जीव गाँवोंके बीच दौड-धूप करने लगा। कभी-कभी अिन दोनोंके बीचसे भागकर जलजाक्षीका दर्शन करने कुन्दापुर भी हो आता था। अुसका वियोग बडा कष्टकर था, किन्तु अिन दिनो स्कूल और अदालतकी छुट्टी थी, कुन्दापुरके होटलमें ग्राहक नहीं आते थे, अिसलिअे किट्टू अुपाध्याय भी अपने होटलकी छुट्टी कर कोडी आ गया था। अुसके साथ जलजाक्षीका भी कोडी आना स्वाभाविक था। प्रेयसीके पडोसमें होनेका अुसे अपूर्व आनन्द था। अेक दिन किसी बहाने सुब्राय अुपाध्यायके घर जाकर अुसने अपने अस्तित्वका भान कराया।

"अिस साल भी लच्चाका ब्याह नहीं करोगे?" कहकर सरसोती अैतालसे आग्रह करने लगी। अिन्हीं दिनोंमें सुब्राय अुपाध्यायकी पत्नीने आकर सरसोतीके कानमें कुछ कहा। सरसोतीको धक्का-सा लगा। वह कुछ घबडाअी, अुसको बहुत दुख हुआ। अेक दिन शामका समय था, रात धीरे-धीरे दिनको निगल रही थी, चारो ओर अन्धेरा छा रहा था, सरसोती घरकी गौओंको चराकर लौट रही थी, अुसने देखा लच्चा पासवाले काजूके

बागसे चोरकी तरह बाहर निकला। "लच्चा वहाँ क्या कर रहा था ?" सरसोतीने अपनी धुधली दृष्टिसे देखकर कहा। जरा ध्यानपूर्वक देखा तो वहाँसे अेक दूसरा प्राणी खिसकता दिखाअी पडा, अुस पगडण्डीके अुस पार ही सुन्नाय अुपाध्यायका घर था, अिससे सरसोतीने मनमें समझ लिया कि वह खिसकनेवाला प्राणी जलजाक्षी ही है।

यह सब देखकर अुसका रोम-रोम क्रोधसे लाल हो गया। फिर भी वह गूँगेकी तरह वहाँसे चली आअी। पता नही लच्चाने भी अुसे देखा या नही, किन्तु बाहरसे वह अैसा रहा मानो कुछ हुआ ही नहीं। अुस दिन अैताल अपनी पुरोहिताअीसे पहर भर रात बीते घर आअे। जब वे तालाबपर हाथ-पैर धोकर आ रहे थे, अलीखेटमें ही सरसोती खडी थी। "यहाँ क्यो खडी है ?" अैतालने पूछा, और सरसोतीकी आँखोमें आँसू बहने लगे। अुसने जो कुछ देखा, सुना था, सब सुनाकर कहा--"दो सालसे अुसका सूखा हुआ चेहरा, नाचनेवाली दृष्टि देखकर ही मै समझ गअी थी, कि वह गलत रास्तेपर पड गया है। अिसीलिअे मै बार-बार अुसके ब्याहकी बात कहती थी। भैया ! जो हुआ सो हुआ। अुससे दो समझदारीकी बाते कहो, सुनना हो तो सुनेगा नही तो अुसकी अपनी मर्जी ! तुम अुसका ब्याह कर डालो। अगर मेरी बात मानकर पहिले ही अुसका ब्याह कर देते, तो शायद यह सब न होता !"

अैतालराम शान्त भावसे अन्दर जाकर सन्ध्या करने बैठे। जब तक सन्ध्या जाप आदि न हो गया, अेक अक्षर भी नहीं बोले। जाप समाप्त होते ही अुन्होने पुकारा "लच्चा !" वह सो गया था, किन्तु अुसे नीद नही आअी थी, फिर भी वह नही अुठा। "लच्चा !" अैतालराम पुन गरजे।

"अिस घरमें सोना भी हराम है !"—कहते हुअे लच्चा बापके सामने आया। अुसको सामने देखते ही अैतालराम गरज पडे। "तूने किट्टूकी आबरू-अिज्जत मिट्टीमें मिलाअी ! अुसके बापके कहनेपर भी मैंने अुसका विश्वास नहीं किया। मुझे सब पता चल गया है। अरे ! मुझसे क्यो नही कहा कि मेरा ब्याह कर दो ! तेरे और जलजाक्षीके प्रेमकी बात गाँववालोके कान तक पहुँच गअी तो तेरी अिज्जत क्या रहेगी ?

"वुआसे माफी माँग लूँगा, पर वापूके सामने नहीं जाअूँगा ।"

"तेरे वापू कुछ पत्थर नहीं। मैं अुनको जानती हूँ। अगर तू ठीक रहा, तो वे शान्त हो जायेंगे। वच्चेके हाथके पिण्ड पानेके लिअे दूसरा व्याह करनेवाले क्या तेरे दुश्मन हो सकते हैं?" पारोती दौड़ती हुअी जाकर सरमोतीको वुला लाअी।

"मुझसे भूल हुअी!"—सरसोतीको देखकर अुसने सिर झुकाके कहा।

"जो हुआ सो हुआ। आगे अैसी वातें नहीं करे तो वहुत है!"—सरसोतीने कहा।

"अच्छा!"

"अगर भगवानने चाहा तो जल्दी ही कोअी अच्छी लड़की देखकर तेरा व्याह कर देंगे!"

"अच्छा!"

"देखो वेटा! शीनमय्याके लड़कोंने फावड़ेसे पैसे कमाकर कैसे अपने वाप और खानदानका नाम रोशन किया! कोडोके अैतालका वेटा अिस तरहसे अपने खानदानका नाम डुवोअे यह क्या अच्छी वात है?"—वड़ी माँ और वुआने रास्तेमें अुसको अुपदेश देना शुरू किया।

क्षण भरमें गाँवको हिलाकर शान्त होनेवाली आँधीकी तरह अैताल-रामके घरकी यह आँधी जैसे आअी थी वैसे ही शान्त हो गअी। अैतालकी यद्यपि लच्चासे वोलनेकी अिच्छा नहीं हुअी, फिर भी वह "जाने दो! अेक अच्छी लड़की देखकर अिसका व्याह किअे देता हूँ! शायद लड़कीके नसीवसे यह सुधर जाअे!" कहकर वधू खोजके काममें लग गअे। सरसोतीने अेक दिन भाअीको वुलाकर कहा—भैय्या! "जरा देखना। आजकलके लड़के व्याहके पहिले लड़कीको देखनेकी वात कहते हैं। पत्रिका देखते समय जरा रंग-रूप भी देख लेना, नहीं तो फिर वही कुत्तेकी दुम!"

सुन्नीके लिअे वरान्वेषण करनेमें जैसे अैतालने गर्मीके दिनोंमें दौड़-धूप की थी, वैसे ही लच्चाके लिअे वह ढूँढनेमें दौड़-धूप करने लगे। जगह-जगहसे पत्रिका मगवाने लगे। लोगोंको भी जब पता चला कि अैताल अपने लड़केका

ब्याह करना चाहते हैं, और लडका अँग्रेजी पढा-लिखा है, तो वे अपनी लडकीके बारेमें दूत भेजने लगे। अैतालकी दो शर्तें थी—१ पत्रिका ठीक मिलनी चाहिअे। और २ लच्चाको मजूर होना चाहिअे। यहाँकी तरह पडुमुन्नूरके नानाने भी लडकी देखनेकी मुहीम शुरू की। अिसी बीचमें अैताल अपने लडकेके भविष्यपर विचार करने लगे। मैट्रिक तो हुआ। आगे क्या? कुन्दापुरमें गुमास्तेगिरी करे या क्या करे? सरसोती कहती "जितना पढ़ा, वही बहुत है। आगे घरकी पुरोहिताअीका क्या होगा? तुम्हारे बाद अुसे कौन देखेगा? क्या तुम अपने साथ अिसको भी ले जाना चाहते हो?"

अैताल कहते थे—"मै क्या-क्या सोचूँ? मुझे अैसा लगता है कि अिसने अगर तीन पैसेमें सब कुछ न बेच डाला तो भाग्य समझो!" लडका अँग्रेजी पढकर घरका नाम रोशन करेगा, अुनकी जो अैसी महत्वाकाक्षा थी, वह समाप्त हो चुकी थी। फिर भी मैट्रिक तो हुआ ही है, वही समाप्त न कर आगे कुछ बढ़े तो अच्छा है। यही सोच रहे थे कि अुन्होने सुना कि अैरोडीके वकील वासुदेव गाँवमें आअे है। अैरोडीके यह वकील अैतालके जजमान थे। नाला पार करते ही कोडीसे पूरबमें जो गाँव पडता था, वही अैरोडी है। अैतालके घरके अुत्तर टीलेपर खडे रहनेपर सामने नारियलके बागमेंसे जो खपरैलका मकान दीखता है, वही वासुदेव वकीलका घर है। वकील साहब मगलूरमें वकालत करते है। और हर साल केवल मअीकी छुट्टियोमें घरपर आते है। घरका सारा कारोबार अुनका छोटा भाअी देख लेता है। वैसे तो अुनका अच्छा खानदान है। घरकी अच्छी सम्पत्ति है। गाँववाले अुनकी अच्छी अिज्जत करते हैं। कभी किसीको कुछ करना हो तो वह वकील साहबकी सलाह लेनेके लिअे अुनके पास जाते है। वकील साहब भी बडे प्यारसे गाँववालोंको नेक सलाह देते हैं। जब वह मगलूर जिला केन्द्रमें वकालत करते हैं, तो अुडपी–कुन्दापुरके वकीलोसे अूँचे दर्जेके तो हुअे ही! अिसलिअे अैतालराम "शिव शिवा! राम रामा!" करते वहाँ पहुँचे।

वकील साहबको भी अैतालरामके प्रति दिलमें बडा मान है। अुनपर श्रद्धा है। पुरोहितको देखते ही अुन्होने स्वय अपने हाथसे रगीन चटाअी बिछाअी और बडे आदरसे अुनका स्वागत किया।

अैतालरामने अपने आनेका कारण बताया। "हमारे लल्लाने अिस साल मैट्रिकका अिम्तहान दिया है। कहता है, पास हो जाअूँगा। अुसके लिअे आगे क्या किया जाअे! गाँवमें बिठलाकर क्या करेंगे? अिसीलिअे मैं आपके पास आया। बिना आपकी राय जाने कुछ करनेकी हिम्मत नहीं होती।"

वकील साहब अच्छी तरह जानते थे कि अैतालरामका हाथ तंग नहीं है। अुनके पास लडकेकी पढाअीके लिअे पर्याप्त धन है। अुन्होंने कहा—"बी अे क्यों नहीं कराते? अथवा डाक्टरी ही पढाओ!"

"डाक्टरी!" अैतालरामने आश्चर्यसे कहा।

"हाँ! आप तो वैदिक ब्राह्मण हैं! मुर्दा नहीं चीर सकते!"—वकीलने हँसकर कहा।

"आप भी बडा तमाशा करते हैं! वह बात छोड दीजिअे। और कोअी हो तो बताअिअे!"—अैतालने कहा। तब वकील साहबने अुनको सारी बातें समझाते हुअे कहा—"हमारे जमानेमें मैट्रिक होते ही छोटी-मोटी वकालत की जा सकती थी। अब अैसा नहीं होता। बी अे, अेल-अेल बी. करना पडता है। अिसके लिअे पहिले दो साल पढकर अेफ अे करना पडता है। अुसके बाद अगली बात सोची जाअेगी!"

"अच्छा! अैसा!"—अैताल अपना सिर हिलाने लगे।

तब धीरेसे वकील साहबने कहा—"हाँ! यह सब अैसा है, पर जिसको पढना है, वह क्या कहता है, यह भी तो देखना है?"

"अुससे क्या पूछेंगे? अुसको भला अितनी बुद्धि कहाँसे आअी?"

"बुद्धि हो या न हो! पढना बापको नहीं, लडकेको है न!"

"हाँ, आपने यह ठीक कहा!"

"अेक दिन आप अुसको यहाँ ले आअिअे। आपका लडका अँग्रेजी पढता है न! देखें .. देहाती अँग्रेजी पढता है या शहरी अँग्रेजी!"—वकील साहबने हँसते हुअे कहा।

"अच्छा !" अैताल दोपहरको वही भोजनकर घूप जरा शान्त होनेके बाद कोडी चले आअे।

अैतालके चले जानेपर वकील साहबके छोटे भाअीने कहा—"भैया ! तुम अपनी नागवेणीके लिअे दुनिया भरमें लडका ढूंढ रहे हो, अगर पत्रिका मिलती है, तो अैतालके घरमें ही क्यो न देखो ? अैताल अपने मुंहसे यह बात कभी नही कहेगे। वे सोचेगे—'ये बडे घरके लोग हमारे घर क्यो लडकी देने लगे !' पर अैताल कोअी सामान्य आसामी नही है। कोडीकी जितनी जमीन है, या तो अिनके नामपर चढ़ी है, या शीनप्पाके नाम !"

"अच्छा ! अितना मजबूत आदमी है ? मं नहीं जानता था !"

"हमारे गाँवमें ही अिनकी जितनी जमीन है, अुसीकी सौसे अधिक मालगुजारी देते होगे। अिसके अलावा कोडीमें भी दो-ढाअी सौ देते हैं। अिसके अतिरिक्त हाथमें कमसे कम दस-बारह हजारकी रोकड होगी ! कहते हैं अिनके बापके मरते समय ही अितनी नकद रकम थी। कमरेमें लपेटे हुअे गमछेको देखकर अिनकी कीमत न करना !"—वकील साहबके छोटे भाअीने कहा।

यह सब सुनकर वकील साहबने सोचा अपनी लडकीकी पत्रिका अगर अैतालरामके लडकेसे मिल गअी. तो बडा अच्छा होगा। वकील साहबके चार लडके हैं और दो लडकियाँ। बडी लडकी व्याहके लिअे तैयार थी। अुसका नाम था नागवेणी। नागवेणीका अब बारहवाँ वर्ष चल रहा था। अगर अभी व्याह नही करेंगे तो कब करेगे ? यद्यपि अब वह मगलूर जा बसे थे, तो भी रिश्तेके लिअे गाँवकी ओर ही देखना पडता था।

दूसरे दिन, जैसा कि अैतालने वादा किया था, सुबह-सुबह लच्चाको साथ लेकर आअे। लच्चा अपने बापके पीछे पीछे था। गरमीके दिनोंमें भी अुसने अपना अिस्तिरी किया हुआ शर्ट, कोट वगैरह पहन रखा था, साथ ही 'वाटर प्रुफका छाता' भी बडी शानसे अुसके हाथमें था।

जैसे ही अैताल अुनके आँगनमें आअे, वकील साहबके छोटे भाअी नारायणमैय्याने "बाप-बेटे दोनो पधारे क्या ?"—कहकर हँसते हुअे स्वागत

किया। दोनोंको आदरपूर्वक बिठाकर नारायणमैयाने कहा–" भाभी साहब यही नया बाग देखने गअे हैं। अिस साल ही करीब सौ सवा सौ नारियल लगाअे हैं। अिसलिअे जरा.... ."

"कोअी बात नहीं! मुझे भी आज कहीं कोअी काम नहीं। अुनके आने तक मैं आरामसे बैठूंगा।"—अैतालने कहा।

अितनेमें हँसते खेलते तीन-चार बच्चे बाहर दौड आअे। अुन्होंने सारा घर सिरपर अुठा रखा था! बीचो-बीच काली साडी पहने नागवेणी अपनी छोटी बहन कृष्णवेणी और छोटे भाअियोंको गुदगुदाती अुछल रही थी। वैसे तो नागवेणीकी आयु बारह सालसे अधिक नहीं थी, पर खाते-पीते सुखसे पली थी। खिलनेवाली गुलाबकी कली-सी सुन्दर और भरा हुआ शरीर था। खेलते-खेलते अकस्मात सब बाहर आ गअे। वे नहीं जानते थे कि बाहर मेहमान आअे हैं। निस्संकोच क्रीडाके आनन्दमें किलोलें करते हुअे बच्चोंके साथ वह किशोरी अुछलते हुअे हृदयके साथ बाहर आअी तो डाँट पडी। चचाने डाँटकर कहा—" अन्दर आँगन तुम्हें क्या कम है, कि बाहर भी आ गअे? जाओ अन्दर!!" जैसे खिले हुअे सब बाहर आअे थे वैसे ही मुर्झाकर अन्दर चले गअे। जैसे बिजली क्षण भरमें अपना रूप दिखाकर विलीन हो जाती है, वैसा ही हुआ। अेक बार अुठकर लच्चाकी आँखें झुक गअीं।

"सब हमारे भाअी साहबके बच्चे हैं! चार दिनके लिअे यहाँ आये हैं। बस चार दिनमें सब घर सिरपर अुठा लेते हैं!"—नारायण मैय्याने कहा।

"अच्छा!"—अैताल हँसे। कुछ देर रुककर अुन्होंने पूछा—"वह लडकी क्या आपकी है?"

"ना! ना!! मेरी लडकी तो अभी छह-सात सालकी है। यह बडी है। भाअी साहबकी बडी लडकी नागवेणी! आपने अुसको अभी ठीकसे नहीं देखा होगा।"—नारायणमैय्याने कहा।

आँखोंके साथ लच्चाका मन भी अुस लडकीकी ओर गया। अिन सब बातोंसे अुसके मनमें अेक नया ही विचार आने लगा। अिस नअे विचारसे

अुसके चेहरेपर नया लावण्य प्रकट हुआ, होठोंमें मुस्कराहट दौड गअी। अुसका चेहरा खिल अुठा। नारायणमैय्याने अैतालको जलपानका आग्रह किया "क्या बनवाअूं ? काफ़ी या मूंगका शरबत ?"

जैसे ही नारायणमैय्याने पूछा अैतालने कहा—"काफी ! वह सब आजकलके लडकोंके चोचले हैं। अगर हम अेक बार काफी पी ले तो गर्मी हो जाती है। अैसा लगता है पेटमें आग जल रही है। मैं कुछ भी नहीं लूंगा !"

"वाह ! यह कैसे होगा ? आपके लिअे ठण्डा-ठण्डा मूंगका शरबत बनवाता हूं ! यह आपका लच्चा तो आजकलका अंग्रेजी पढा-लिखा लडका है न ! अिसके लिअे काफी ही अच्छी होगी।" यह कहते हुअे नारायण मैय्या अन्दर गअे।

बाप-बेटा बाहर बैठे रहे। अिस बीच न बापने बेटेका मुंह देखा, न बेटेने बापका। जैसे अेक दूसरेको जानते ही न हो। अिस तरह कुछ क्षण बीते कि वकील साहब आ गअे। आते ही अुन्होने कहा—"मालूम होता है यही आपका पुत्र-रत्न है। कुन्दापुरमें पढते हैं ना !"

अितनेमें अन्दरसे मूंगका शरबत, काफी और कुछ तले पापड आ गअे। वकील साहब भी अिन मेहमानोंके साथ जलपानमें सम्मिलित हुअे। जलपान करते हुअे वकील साहबने कहा—"अब पुराना जमाना चला गया, नया जमाना आ रहा है। अगर आप प्रमाण चाहते हैं, तो मैं आपके पुत्र-रत्नको पर्याप्त समझता हूं। अिसने तो काफी पीना शुरू कर दिया है, और मेरा भी बिना काफीके नहीं चलता !"

जवाबमें अैतालरामने कहा—"आप तो वकील है, आपका पीना अुचित है। और वहांकी शहरी हवामें शायद अुसकी जरूरत भी होगी, किन्तु हम गांवके लोगोको अुसकी जरूरत ही क्या ? लेकिन बेंगलूरकी हवामें जाकर शीनमय्या जैसे बूढे भी जब गांवमें आकर काफी पीने लगे, तब क्या कहें ?" बातोंका प्रवाह अब शीनमय्याकी ओर मुडा। वहांसे अुनके लडकोंकी आयकी भी बात हुअी। अुसी प्रकार होटलसे अमीर बने हुअे और चार लोगोंकी बातें चली। आखिर वकील साहबने विनोदमें ही

कहा—"वकालत सीखकर आपसमें झगडा कराकर मुकदमा लानेवालोंकी राह देखते बैठनेसे यह काम ही अच्छा है।"

"हाँ! आप ठीक कहते है! अभी दो साल पहले छोटी-सी झोपडी लेकर सुब्राय अुपाध्यायके किट्टूने कुन्दापुरमें ही अेक होटल शुरू किया था, और अिस साल सुब्रार्य अुपाध्याय अपने घरपर खपरैल डाल रहा है।"—अैतालने कहा।

"अच्छा! अब कुन्दापुरमें कोटी ब्राह्मणोका होटल है?"—वकील साहबने जातिका अभिमान दिखलाते पूछा।

खैर, बातचीतमें दोपहर हो गअी। अैतालराम और लच्चासे भोजनका आग्रह हुआ। दोनों दोपहरके भोजनके लिअे वही ठहर गअे। आखिर अैतालने अपने आनेकी बात अुठाते हुअे कहा—"हाँ वकील साहब! आपने आगेके बारेमें कुछ भी नही कहा!" तब वकील साहब लच्चासे बोलने लगे, पर वह मौन रहा! हर प्रश्नपर अुसका अेक ही अुत्तर था—वह पूरा गूँगेका अवतार बन गया। वकील साहबने पहचान लिया कि यह बापके सामने बोलनेमें सकोच कर रहा है। अुन्होने अँग्रेजीमें पूछा—"यू आर अिन द मैट्रीक्यूलेशन क्लास" फौरन अुत्तर मिला—"यस् सर"। बस फिर क्या था? अब सब बातें अँग्रेजीमें होने लगी। खानेके समय भी वह वकील साहबसे 'यस्-नो' कहकर बाते करता रहा। लच्चा बडी आफतमें पडा था। यहाँ आते ही अेक बार बिजलीकी तरह चमककर गअी हुअी वह ......ओं . ...नागवेणी भी नजर नहीं आ रही थी और अपने पास ही बैठे हुअे अुसके समवयस्क सदाशिवसे भी बोलनेकी फुरसत नहीं थी। वकील साहब अेक-पर-अेक प्रश्न पूछकर अुसके नाकों दम कर रहे थे।

भोजनके बाद कुछ समय वह अुनकी आँखोंसे ओझल हो गया। अुसी समय घरमें आअे हुअे अिस अँग्रेजीवाले मेहमानकी राह देखनेवाले सदाशिवने अुसको पकडा। वह दोनों "यस्-यस्" करते हुअे माडीपर गअे। वकील साहब अैतालके साथ बाते करने लगे। वकील साहबने कहा—"लडका तेज है। अँग्रेजी अच्छी बोलता है अगर वह चाहता है तो अेफ अे. करा दीजिअे।"

यह सुनकर अैतालने आगेकी खर्चेकी बात पूछी। कहाँ रखना होगा? कैसे रखना होगा? होटलका क्या प्रवन्ध होगा? अैतालने सारी बाते पूछ लीं। "यहाँसे जानेपर भी यह सब तै कर लिया जा सकता है। आप मासिक तीसेक रुपअे खर्च कर सकेंगे या नही?" प्रश्न सुनकर अैतालने अपनी गरीबी नहीं दिखलाअी।

बातो-बातोमें वकील साहबने कहा—"अैतालजी! अगर आप अपने पुत्रकी पत्रिका भेज देते, तो अच्छा होता, अथवा आप ही हमारी नागवेणीकी पत्रिका ले जाते तो! हाँ . . . वही अच्छा होगा। आप हमारी नागवेणीकी पत्रिका ले जाअिअे!"

सुनकर अैतालरामका मुँह बन्द हो गया। अुसकी समझमें नही आया कि क्या कहे! "क्यों, आप कुछ भी नहीं बोल रहे है?"—वकील साहबने मुस्कराते हुअे पूछा। "हम जैसे वैदिकोंके घर ."

"वह सब पुराने जमानेकी बाते है, अैतालजी! आजकल अंग्रेजी आती है तो काफी है! आपके लडकेमे हमारी लडकीकी कुण्डली मिले, तो क्या आप अिन्कार करेंगे?"—वकील साहबने पूछा।

"यह आप क्या कह रहे है?"—अैतालने अत्यन्त खुश होकर कहा। बातो बातोमें शामका समय हुआ। "लच्चा कहाँ गया?" खोज हुअी तो सदाशिवके साथ अंग्रेजी छाँटते हुअे वह नीचे अुतर आया। अेक-दो घण्टेकी मित्रता अुन्हे युगोके सम्बन्ध-सी लगी थी। घर जाते समय लच्चाने सदाशिवसे पूछा—"अब हमारे घर कब आओगे?"

अन दोनोकी बातें देखकर वकील साहबने कहा—"अैतालजी! देखा आपने! ये दोनो अंग्रेज मिल गअे! यह हमारा सबसे बडा लडका सदाशिव है। यह भी अिस साल मैट्रिकमें बैठा है, अिसीलिअे देखते ही दोनोकी अितनी दोस्ती हो गअी।"

अैतालने नागवेणीकी पत्रिका साथमें ले ली। घर जाते ही रातको अपने धुंधले चिरागके पास बैठकर गणना करने लगे। आखिर न जाने क्या-

क्या गणना करके खुशीसे अुछलते हुअे बोले— "अिस लडकीके लिअे यही लडका ! जब वकीलने ही कबूल किया है तो क्या रहा ? लडकेने तो लडकीको देख ही लिया है। कल अुससे पूछकर बात आगे बढ़ाअेंगे।"

अुसी दिन रातको अुन्होने घरवालोसे अिसका जिक्र करते हुअे कहा— "अगर भगवानने चाहा तो अिसी साल यह भी जिम्मेदारी सिरपरसे अुतर जाअेगी। पढाअी आगे बढानेकी दृष्टिसे भी रहनेके लिअे अेक अच्छी जगह मिल गअी। बुढापेमें अुसकी चिन्तामें मरनेकी बात नही रहेगी।"

अुधर जब लच्चा "मुझे वहाँ ब्याहके सम्बन्धमें ही ले गअे थे। यदि पत्रिका नहीं मिली तो क्या होगा?" — अिस विचारमें परेशान था। सरसोतीने लच्चाका मन जाननेके लिअे कहा— "लच्चा ! आज तू जहाँ गया था, वहाँकी लडकीसे अगर तेरे ब्याहकी बात चले तो अिन्कार तो नही करेगा ! कुल, नाम, अिज्जत, धन किसी भी दृष्टिसे हमारी जातिमें अिससे अच्छा घर नहीं मिलेगा।"

यह सुनकर लच्चाने भी सिर झुकाकर कहा, "बुआ ! आपकी बातको कभी मैंने अिन्कार किया है?"

यह सुनकर अुसने मन-ही-मन कहा–"मालूम होता है अब अिसके भले दिन आ गअे हैं।"

दूसरे दिन दोपहरको भैंतालने मुहूर्त देख तथा दोनो पत्रिकाअें साथ ले भैंरोडीके लिअे प्रस्थान कर दिया। "मैं भी आअूँ क्या?"—लच्चाके मनमें यह पूछनेकी अिच्छा अुठी, पर "बापू क्या कहेंगे" के डरसे जबतक बापू आँखोंसे ओझल नही हुअे, वह पूरबकी ओर मुँह करके टकटकी लगाअे देखता रहा।

भैंताल भैंरोडीसे शामको लौटे। आते ही आँगनमें पैरकी धूल झाडते हुअे बोले— "सत्या ! कहते हैं न, जब भगवान चाहता है, तो काम अपने आप हो जाता है, यह झूठ नहीं !"

"क्या हुआ?"— सुननेके लिअे सत्या, सरसोती, पारोती सब वहाँ आ गअी। केवल लच्चा नहीं आया। वह कही हो, अुसके कान यही थे।

"वकील साहब कहते हैं छुट्टी खतम होनेतक ब्याह हो जाना चाहिअे और अुन्होने कहा है कि दामादकी पढाअी आदिका सारा दायित्व अबसे मुझपर ही रहा !"—अैतालने घरवालोंको यह शुभ-समाचार सुनाया।

दूसरे ही दिन पड्डुमुन्नूर समाचार भेजा गया। वहांके बूढोने भी सारी बाते सुनीं। नाना बडे खुश हुअे। साथ ही अुन्होने कहलवा भेजा "अब मेरी अुम्र काफी बीत चुकी है। अगर वह मगलूर गया तो पता नही अुसके लौटनेतक मैं रहूँगा या नही। अुसको चार दिनके लिअे यहाँ भेज दो !" नानाका सन्देश आते ही लच्चा अुनके पास चला गया। अब अैतालका घर पुन अेक बार ब्याहका घर बना। आंगनमें मांडव, पापड, बडी आदिकी तैयारी शुरू हुअी। पुन अेक बार सुब्राय अुपाध्याय अैतालरामके प्रधान आमात्य होकर आअे। पारोती, सरसोती और सत्या दिन-रात काममें पचने लगी। ब्याहकी यह खबर पचक्रोशीके चौदह गांवोमें फैल गअी। केवल अैतालके लडकेके ब्याहमें अितनी शान नही हो सकती थी, किन्तु यह केवल अैतालके लडकेका ब्याह नही था, बल्कि मगलूरके वकीलकी लडकीका ब्याह था, अैरोडीके अमीरके घरका ब्याह था। कोअी सामान्य बात नहीं थी। अगर अैसी खबर सारे अिलाकेमें नही फैलेगी, तो भला दूसरी क्या फैलेगी ?

यह खबर सुनकर गांवके कुछ लोगोने अिसे मजाक समझा। यह खबर सुनकर कुछ लोग प्रसन्न हुअे, तो कुछ लोग बडे दुखी भी हुअे। कुछ लोगोके दिलोंमें अीर्ष्या जाग अुठी। किसीने कहा, "अैतालने अंग्रेज होकर भी पा लिया !" किसीने कहा, "जाति खोकर भी सुख पा लिया !" और शीनप्पाने कहा, "मगलूरके वकील साहबको अिस दक्षिणा पातु करनेवाले भिखमगेको लडकी देनेकी क्या सूझी ?" वासुदेवजी मगलूरके अेक प्रसिद्ध वकील है। अैतालके साथ जो मुकदमा चला था, अुसमें कुन्दापूर कोर्टमें शीनप्पा हार गअे थे। अब मगलूर कोर्टमें अपील करना था। अुसमें वह वासुदेवजीको अपना वकील बनानेका विचार कर रहे थे, अिसी समय शीनप्पाने यह खबर सुनी। यह सम्बन्ध अुन्होने अपने लिअे अशुभ समझा। फिर भी अेक दिन सारा रिकार्ड बगलमें दबाकर वकील साहबके घर गअे। अुन्होने बहाना तो मुकदमेका किया था, किन्तु वहाँपर माण्डवा,मण्डप आदिकी

गया, अलग-अलग प्रकारके सुगन्धित द्रव्य लगाओे गओे, वार-बार पूछकर चाँदीके लोटोमें निम्बू और चीनीका शरवत दिया गया। मेहमानोके स्वागतमें, गाँवके मुखिया नारायणमय्या स्वयं खडे थे। आपके अिस स्वागत-समारम्भके व्यवस्थापक भी वे स्वयं थे, अैसी हालतमें भला कौन-सी भूल-चूक हो सकती थी ?

देवियोने "मिथिलापुरीके जनकराज" का स्मरण दिलाते हुअे मंगल-गीत गाना प्रारम्भ किया ही था, कि सब-के-सब क्षणभर ठमक गओे, मेघ गर्जना और बिजलीकी गडगडाहटने अुन कुल ललनाओंके कोकिल कण्ठ और वैदिकोंके वेदमन्त्रोको क्षणभरके लिओे रोक दिया। लग्नमण्डपके धुअेंने मण्डवेकी अगरबत्तियोके सुगन्धित धुअेंको ग्रस लिया। "यह क्या हुआ ?" नारायणमैयाने वाहर आकर देखा। सारा आसमान काले-काले वादलोसे घिर गया था, लगातार विजली चमक रही थी। सभामें बैठे अैतालने कहा—"भगवानको यही मंजूर है ?" अुन्होने आणे गुड्डिके सिद्धिविनायककी मनौती की। नारायणमैयाने आकर अैतालके कानमें कहा—"आप दक्षिणा देना शुरू कीजिओे। आसमानमें वादल छाओे हैं। लग्नमण्डपपर छत है। विधि-विधानमें कोअी विघ्न नही होगा, व्याहमें आओे हुअे वैदिकोको दक्षिणा देकर अुनका आशीर्वाद लीजिओे, कहीं विना दक्षिणाके अुनको न जाना पडे।" मण्डपमें मन्त्र भी वायुवेगसे अुडने लगे। जब वकील साहबने अपनी नागवेणीको अंत पटके सामने खडा किया, तब बूंदें टप-टप पडनेकी आवाज कानमें आअी। नागवेणीने लच्चाके गलेमें माला पहनाअी। लच्चाने भी अुत्साहसे नागवेणीके गलेमें माला डाल दी।

अैतालने हाथमें चाँदीकी थाली लेकर दक्षिणा देना प्रारम्भ किया। अुसी समय लग्नमण्डपमें भी कन्यादानका जल छोडा हुआ देखकर अैताल-रामको सन्तोष हुआ। अुन्होने गाँवके रिवाजके अनुसार ब्राह्मणोको ढाअी आने दक्षिणा न देकर प्रति घरके लिओे पूरे तीन आनेके हिसाबसे दक्षिणा दी। अितना ही नही जिस घरसे कोअी नही आया था, अुस घरके लिओे भी सम्मानपूर्वक पान-सुपारीके साथ दक्षिणा भिजवा दी। खास-खास घरके ब्राह्मणोको चार-चार आने भी दक्षिणा दी गअी। अिधर व्याहमें आओे हुओे वैदिक खुशीसे "अैतालने अुदारतामें वडे-वडे गृहस्थोको भी लज्जित कर

दिया है"—कहकर अुनकी प्रशसा कर रहे थे, अुधर वर्षाने विवाहके सुन्दर सभागृहको खेत बना दिया था। "लग्न-मण्डप" में निर्विघ्नतापूर्वक सब धर्म-विधि समाप्त हो गअी। आअे हुअे अभ्यागत बरामदे, दीवानखाने, कोठे, गोठे, जहाँ कहीं, सीग समानेकी जगह मिली, वहाँ घण्टा भर सिकुडकर काँपते रहे।

सरसोती यद्यपि पूरी भीग गअी थी, किन्तु पारोतीके पास खडी-खडी अपने लच्चाका विवाह-समारम्भ देखते हुअे नही थकी। अुसने वही खडे-खडे हँसते हुअे पारोतीसे कहा—"सरसोती! मालूम होता है भैयाके लिअे विवाहमें पानी आनेका योग बहुत लिखा है।" पारोतीको अपने विवाहकी स्मृति ताजी हो आअी। "भगवानने तब भी अिसी तरह चलाया और अब भी वही बात।"—पारोतीने कहा।

लच्चा नागवेणीके साथ जब सभास्थानपर आने लगा, तो वर्षा सम्पूर्ण रूपसे रुक गअी थी। पुन सभा भरी। जब अैताल अपने साथियोके साथ कोडी लौट रहे थे तो आसमान साफ हो गया था। चन्द्रमा बरात देखकर हँस रहा था।

ब्याहके चार दिन अत्यन्त आनन्दमें बिताकर नवदम्पति अैरोडीसे कोडी आअे। अुस दिनका सौन्दर्य अपूर्व था। अैतालका घर सजाया हुआ था। आँगन भरमें मण्डवेको ताड, माड, आम, केले आदिके पत्तोसे सजाया गया था। बाहर केलेके खम्भोपर मेहराब बना था।

नवदम्पति अैतालके घरके सामने आ खडे हुअे। सत्यभामाने अुनको कुंकुम-जल दिखलाया। पति-पत्नी अन्दर आअे। पारोती नव-वधूको घरके वास्तु-द्वारपर ले गअी। द्वारको बाअी ओर चावलसे भरी पायली रखी थी। नव-वधूने धीरेसे अपने बाअें पैरसे पायलीको ठोकर मारी। दरवाजेके अन्दरका सारा कमरा चावलसे भर गया। नव वधूने "वर-भरनी" की। गृहप्रवेश हुआ। अिस खुशीमें सबका मुँह मीठा किया गया।

विवाहके बाद पिता-पुत्र प्यारसे बोलने लगे। विवाहके अुत्साहमें दोनो पुरानी बाते भूल-से गअे। अब छुट्टी समाप्त होनेके दिन आअे। लच्चा अब कालेजमें पढ़नेके लिअे जानेवाला था। अुसके जानेमें अभी सप्ताह भरकी

देरी थी, तब तक वह क्या करे ? वह घरमे नाले और नालेसे घर तक आने-जानेमें समय बिताता था। अुसके नाना मादप्पय्या अपने नातीके ब्याहमें बुढापेके कारण नही आ पाअे थे, अिसलिअे वह अेक बार नागवेणीको साथ लेकर नानाके पास हो आया। अबतक लच्चाने नागवेणीके साथ बोलनेका जो-जो प्रयत्न किया था, वह सब व्यर्थ गया। वह तो लज्जासे सिमिटी-सिमिटी रहती थी। वह हमेशा गांवकी अन्य स्त्रियोंके साथ ही रहती थी और जब कभी पतिके पास आती तो आरती अक्षतादिमें सबके सामने तभी वे अेक दूसरेको तिरछी नजरसे देख लेते। लच्चाको तो अुससे बोलनेकी अत्यन्त तीव्र अिच्छा थी, किन्तु वह सदा सर्वदा गूंगी बनी रहती। अुससे बाते करनेके लिअे लच्चाको अेकान्त मिलता ही नही था, कोअी न कोअी अुनके बीचमें आ जाता और नही तो साला सदाशिव तो था ही! कहीं लच्चाने जरा सधि साध ली कि वह आ धमका!

ननिहालका प्रवास अुसके लिअे बडा अनुकूल रहा। वह स्वय अपनी पत्नीको नावपर बिठाकर तोन्सेकी ओर चला। घर लौटनेतक खूब बाते कर सकता था, कोअी रोकनेवाला नही था। जब नाव नदीमें घुसी वह नागवेणीकी ओर देखकर हँस पडा। नागवेणी भी अपने पतिकी ओर देखकर मुस्करा दी।

"क्या तू गूंगी है?"—लच्चाका अपनी पत्नीसे यह पहला प्रश्न था!

"और तुम?"—अुसने धीरेसे प्रत्युत्तर दिया।

तोन्सेके किनारेपर नाव लगनेतक वह भी बडी बातूनी बन गअी थी। अुसको भी पतिसे बोलनेकी बडी अिच्छा थी, पर सबके सामने अुसकी जीभ तालूसे सट जाती थी।

नानाके घरमें भी लच्चाका खूब स्वागत हुआ। नव-वधू नागवेणी भी मादप्पय्याका खूब प्रेम-पात्र बनी। "तेरी नानीके नसीबमें यह देखनेको नहीं लिखा था"—कहकर मादप्पय्याने अपनी पत्नीके स्मरणमें कुछ आंसू भी गिराअे। नानाके आग्रहके बहाने प्राप्त स्वातन्त्र्यका अुपभोग करते हुअे दोनो चार दिन वही रहे। अैतालने अुन दोनोको "पाडयान्न"[1] के लिअे बुलवा भेजा, तो वहांसे चलना अनिवार्य हो गया। दोनो कोडी लौट आअे। पुन दोनोंके मुंहमें ताला पड गया।

---

[1] विवाहके बाद आनेवाली प्रथम प्रतिपदाकी पूजा

फिर भी जब "पाडयान्न" के लिअे आअे हुअे लोग अपने-अपने घर चले गअे तो अेक दिन लच्चा नागवेणीके साथ समुद्रके किनारे जानेके लिअे तैयार हुआ। अुसने सदाशिवको समुद्र किनारे ले जानेका बहाना किया। सालेको समुद्र किनारे घूमने नही ले जाअेगा, तो और किसे ले जाअेगा? धीरेसे अुसने "अपनी बहनको भी बुला लो!" अैसा सदाशिवके कानमें कह दिया। लच्चाका दौत्य-कार्य सिद्ध हुआ। नागवेणी अपने भाअीके साथ हँसती-बोलती हुअी समुद्र किनारे गअी। लच्चा पहलेसे ही वहाँ तैयार था। लच्चा द्वारा कुछ मीठी प्रतीक्षा होनेके बाद भाअी-बहन वहाँ पहुँचे। अुन्होने खूब हवाखोरी की। लच्चाने सारा काम चुपचाप किया था, किन्तु क्या कोडीवालोकी आखें नहीं थी? समुद्र किनारेकी हवाके साथ सारी बाते अैतालके घर पहुँची। घरपर आते ही सरसोतीने कहा—"बेटा! ब्याह हुअे चार दिन भी नही बीते और अिस तरह बीबीको बाँधकर गाँवभरमें भटकने लगे लोग क्या कहेगें?" अैताल चिल्ला अुठे—"आजकलके बच्चे ही अैसे निर्लज्ज है! पारोती हमारे घरमें आअी, तो मैं सालभरतक अुससे बोला भी नही था!"

आँधी और वर्षा शुरू हुअी, तपी हुअी जमीन ठण्डी हो गअी। हवा भी ठण्डी हुअी। वकील अपने बीबी-बच्चोके साथ मगलूर जानेकी तैयारी करने लगे। अैरोडीसे सदाशिव आया। अुसने कहा— "पिताजीने कहा है, अपने लक्ष्मीनारायणको भी हमारे साथ ही भेज दीजिअे।" लच्चा अिसी शुभ समयकी प्रतीक्षामें था। अुसी दिन अैतालराम सदाशिवके साथ अपने समधीसे भेंट करने अैरोडीके लिअे चल पडे। वहाँ जानेके बाद निश्चय हुआ कि लच्चा वकील साहबके घरमें रहकर ही अेफ् अे तक पढ़ेगा, आगेका विचार फिर किया जाअेगा। अब अैतालको जरा शान्ति हुअी मानो अुसके सिरपरसे अेक बडा बोझ अुतर गया। वह तो बच्चा है, अुसमें कोअी बुद्धि नही। अब आप ही अुसके माता-पिता हैं। अगर कुछ गलती हुअी तो आप अुसे कान पकडकर चार अच्छी बाते " अैताल अपनी बाते कह रहे थे, कि बीचमें ही वकील साहब हँसते हुअे बोले—"अैतालजी! आप क्यो चिन्ता करते है? क्या मुझे अपनी लडकीकी फिक्र न ी है?"

सुनकर न जाने क्यों अंतालका चेहरा मुर्झा-सा गया। अुन्होंने मन-ही-मन भगवानकी मनौती करते कहा—"पता नहीं यह लडका मेरा मान रखता है या . ... ।" अुनके मनमें अेकाअेक डर-सा पैदा हुआ।

खैर, लच्चा पुन अेक वार पडुमुन्नूर हो आया। अिस वार मादप्पय्याने अत्यन्त प्यारसे अुसको छातीसे चिपकाकर कहा—"लच्चा! अच्छे घरमें सम्बन्ध हुआ है। अव तू वच्चा नहीं है। तू वडा हो गया है, और तेरा खानदान भी वडा खानदान है। अब अपना वचपन छोडकर, घरका नाम रोशन करना। पता नहीं जव तू लौटकर आअेगा, तव मैं रहूँगा या नहीं।"

लच्चा अपने नाना, पिता, माँ, वडी माँ, वुआ आदिसे अुपदेश लेकर विदा हुआ। वह मगलूर गया और वर्षा भी तेज होती गअी। दिनरात विना किसी प्रकारके विरामके समुद्रकी गर्जना कानके परदे फाडने लगी। झूम-झूमकर गाँवके नारियलके पेडोंका तो सारा तना नरम हो गया! नदी-मुख न जाने कहाँ-कहाँसे लाल-लाल पानी ला-लाकर समुद्रमें अुडेलने लगा। अुसी वर्षामें मादप्पय्याने विस्तरा पकडा और जैसा कि अुन्होंने लच्चाको विदा करते समय कहा था, वही हुआ। अुनके वात-कफ विकार वढते गअे, अेक दिन ज्वर आया और अुसी ज्वरमें अुन्होने अपनी जीवन-लीला समाप्त कर दी। जव अुन्होने शरीर छोडा अुनके पास सत्या, राम, सुव्वी, अुसका पति और नन्हा-सा वच्चा था। मादप्पय्याका लडका तो वच्चेकी तरह किंकर्तव्यविमूढ-सा हो गया।

जैसे ही लच्चा कॉलिजमें जाने लगा, सप्ताहके भीतर ही अुसको नानाकी मृत्युका समाचार मिला। अुसने कहा—"अब मेरा और पडुमुन्नूरका ऋणानुवन्ध टूट गया! मैं जानता हूँ मामाका मुझसे कितना स्नेह है!"

अिसके वाद महीना भर हुआ होगा, कि अंतालका और अेक पत्र आया। अुसमें लिखा था—'वेटा! तेरी वडी माँने विस्तरा पकड लिया है, वह तुझे देखना चाहती है, नवरात्रोंकी छुट्टियोंमें आ सको तो आ जाना! हालत अितनी चिन्ताजनक नहीं है कि अिसके लिअे तू तुरन्त वहाँसे चला आअे!"

अुस क्षण वह वडी माँके प्यारके स्मरणसे रो पडा। अुसके हृदयमें वडी माँका

जो प्यार था अुसने क्षण भरके लिअे अुसे पुन बच्चा बना दिया। अिसके दो तीन दिन बाद अुसको फौरन गाँव लौटना पडा। घरसे तार आया था। जबतक वह गाडी, नाव, ताँगाकर घर पहुँचा, तबतक पारोतीके जीवनका अन्तकाल नजदीक आ पहुँचा था।

मृत्युके अुस क्षणमें स्वय अैताल, सरसोती, सत्यभामा सब अुसकी सेवामें तत्पर थे। जीवनभर अुन्होंने जो-जो कटुवाक्य कहे थे, सब याद कर करके अैताल रो रहे थे। पुन॰पुन वह कहते थे–"पारोती! पता नहीं मेरे द्वारा तुझे क्या क्या कष्ट मिले हैं !" अत्यन्त अशक्त होनेपर भी अुसको आखिरतक सुध रही थी। वह शान्त थी और अपने पतिको शान्त करते हुअे कहती रही–"अगर आप सत्याको नही लाते, तो मेरा श्राद्ध कौन करता? मरनेके बाद मुँहमें घूँट भर जल कौन डालता? आपको अैसी बातें नही करनी चाहिअे!" आखिरमें अुसने पूछा—"लच्चा आया क्या?"

"आअेगा अभी!"—अैतालने कहा।

"मुँहमें थोडा गगाजल डालूँ? जरा शक्ति हो तो भगवानका नाम ले!"—सरसोतीने कहा।

अब अुसने सरसोतीको देखना शुरू किया। अेक दुधमुँहे बच्चेकी तरह वह सरसोतीकी ओर टकटकी लगाकर देखने लगी। आखिर अुसने कहा–"मैं भगवान का ना म लेती हूँ। मे री जी भमें ताकत न ही रही तो तू का नमें ले!"

न जाने क्यों अुसके चेहरेपर अब भी नाचती हुअी आशाकी छाया थी। अुसकी आत्मा किसी आशा-आकाक्षाके धागोमें अुलझी-सी थी। पछी पिंजरा छोडनेके लिअे तडपता था और पिंजरा पछीको पकड रहा था।

"क्या चाहती है?"—सरसोतीने पूछा—"कौनसी आशा रही है?"

"को अी आ शा नही!"—पारोतीने कहा।

"लच्चाको देखनेकी आशा है?"

"न ही!"—अुसने अपने पतिकी ओर देखा, अुसके ओठ हिले। अुसकी वाणीसे आवाज नही निकलती थी। अैताल अपने कान अुसके

ओठोंतक ले गअे। वह बडी कठिनाअीसे कह रही थी—"मे   रा सिर.
अ   प.. नी गो   दमें ले लो !"

अंतालने पद्मासन मारा। पारोतीका सिर अपनी जांघपर रख . ..। सत्यभामाने महसूस किया, "मेरे कारण अिसकी आत्माको कितने कष्ट हुअे होंगे कितनी मूक वेदनाअें सहनी पडी होगी। मृत्युके दर्शनके समय लोग सारी बुराअियां भूल जाते हैं !" वह आठ-आठ आंसू रोने लगी। अुन आंसुओंमें अुसके हृदयका सारा कल्मष धुलकर निकल रहा था।

अब पारोतीकी वाणीकी शक्ति क्षीण हो गअी थी। सांस तेज चल रही थी। अंतालने "नारायण ! नारायण !!' कहना शुरू किया। सरसोतीने अुसके मुंहमें गंगाजल डाला। अुसने अपने पतिका मुंह देखा। अुसके चेहरेपर अेक प्रकारकी अपूर्व शान्ति थी। अुसके ओठ खिलनेवाली कलीकी तरह मुस्कराअे ! अुसमें अपूर्व तृप्तिकी आभा थी, मानो वह कहती थी--"मेरी सारी अिच्छाओंकी पूर्ति हो गअी है, मुझे और क्या चाहिअे ! "

क्षण भर भी वह मुस्कान नहीं टिक सकी। घरवालोंके तीव्र शोका-वेगमें वह डूब गअी। क्षण भरमें घरका प्रत्येक पत्थर भी सिसक अुठा। सरसोतीके मुंहसे आवाज भी नहीं निकली। वह मूक रुदन था। औरोंकी आंखें रो रही थीं और अुसका हृदय रो रहा था। शायद अुसकी आत्मा कह रही थी—"मेरे रहनेकी भी अब क्या जरूरत है ?"

अडोस-पडोसके लोग दौडते आअे। हरअेकका हृदय कह रहा था "पुण्यात्मा है ! " वहां पेडपर कुल्हाडी पड रही थी और यहां मंगलूरसे दौडता हुआ लच्चा आ पहुंचा। जब अुसने घरमें पैर रखा, घरवालोंका रोना सुनकर "जीते जी देखना मेरे नसीबमें नहीं था !"—कहकर वह रो पडा।

तेरह दिन लच्चा दुखकी प्रतिमूर्ति बना रहा। जीवनभर अुसको किसी दुखने अैसा नहीं जलाया था। आंगनमें, तालाबपर, कुलथीके खेतमें, धानकी क्यारियोंमें, होन्नेके जंगलमें, घरके बागमें, घरमें, गोठेमें, जहां कहीं वह गया, वहांके अणु-अणुमें बडी मांको समाअी हुअी देखा। प्रत्येक अणुसे अुसको बडी मांकी सुगन्ध आती थी।

: १६ :

लच्चा अब मंगलूरमें आकर अेफ् अे में पढ रहा है। वह अब अपनेको बडा समझता है, वह बच्चा नही रहा, अिसलिअे अगर अुसको कोअी लच्चा कहता, तो गुस्सा आता। अुसका आग्रह है कि लोग अुसको लक्ष्मीनारायण ही कहें, किन्तु अुसके सालेने "लच्चा" कहनेका अपना अधिकार नही छोडा।

लच्चाको ससुरालकी आवभगत बडी प्रिय है। सदाशिव भी कुछ कम रसिक नही। वह भी अच्छा वाग्वीर है। वह जब बोलने लगता, अुसका बोलना बिना आदि-अन्त चलता रहता। अुसके विनोदका भी आदि-अन्त नही। वह दिनभर मजाक करता रहता। जबतक सदाशिवका मजाक लच्चाको नही चुभता तबतक वह सुनाता रहता और जब जरा चुभता तो लच्चा शेरकी तरह सदाशिवपर टूट पडता। जबसे सदाशिवको अिस रहस्यका पता चला, वह भी समय देखकर अुसको चिढ़ाता, और लच्चाके खूब चिढते ही चुपचाप अपनी बहनसे कहता—"नागवेणी तुझे लच्चा बाहर बुला रहा है!" नागवेणी बाहर आकर कहती— "सुना, तुमने मुझे बुलाया है!" और हँसते-मुस्कराते बोलने लगती, तब गुस्सेमें लाल बना हुआ लच्चाका चेहरा पीला होने लगता और सदाशिवको हँसनेका और मौका मिल जाता।

नागवेणीका सहवास अुसको बडा प्रिय लगता था। वह सोचा करता था, "मैं श्वसुरके घरपर हूँ, वे बडे प्रसिद्ध वकील हैं। जैसे मैं किट्टू अुपाध्यायके होटलमें रहा, वैसे यहाँ रहना अुनकी शानके लिअे ठीक नही।" जो भी हो अुनका ध्यान तो रखना ही पडता था। अुसकी ओर दुर्लक्ष्य नही किया जा सकता था। अिच्छा हो या न हो ससुरालका दामाद होनेसे अुसको

भीगी बिल्लीकी तरह रहना पडता। कुन्दापुरमें जैसे "मन-पूत समाचरेत्" कहकर रात-दिन ताश, गप, भ्रमण आदि निशाचरी करनेको मिलती थी अुन सबके लिअे वहाँ गुंजाअिश नही थी। यह सब अुसके लिअे पहिले कुछ समय असह्य-सा लगा। अुसके मनमें यह भी आया कि क्यों अिन लोगोंके अहसानमें रहें! अपने होटलमें ही रहूँ, वही अच्छा है! किन्तु वह नागवेणीका सहवास नही छोड सकता था। फिर वह अपनी बुद्धिमत्ता किसको दिखाता? सदाशिव और लच्चा अेक ही क्लासमें पढते थे। सदाशिव लच्चासे कम होशियार नही था। किन्तु नागवेणी अभी प्रथम श्रेणीमें पढती थी, अपनी बातोंको पूछनेके लिअे वह अपने पतिदेवके ही पास आती, और वह बडा मास्टर साहब बनकर अुसे पढाता। किसी दिन अगर वह कुछ पूछने नही आती, तो वह स्वयं अुसके पास जाकर कहता—"आजकी पढाअीका क्या हुआ? क्या कुछ पूछना नही है?" हाँ! यह सब कुछ जो होता था सदाशिवसे छुपाकर होता था। अगर वह सुनता तो कह देता—"नागवेणी तेरे पतिराजको क्या आता है, जो अुसके पास जाकर पूछती है? मेरे पास आ, मैं पढाता हूँ!"

दो सालतक वह पिंजडेके पक्षीकी तरह रहा। ससुराल अुसके लिअे अेक प्रकारका जेल था! जब कभी किसी होटलकी ओर देखता, तो वहाँकी चटपटी चीजें अुसे बुलाती। जेबमें हाथ डालता, तो अन्दर पैर रखनेकी हिम्मत नहीं पडती। किसी झूठे बहानेसे ससुरसे पैसे माँगना भी असम्भव था, क्योंकि सदाशिव अुसके साथ रहता था और किसी बातके लिअे जितने रुपयोंकी आवश्यकता होती अुतने बिना माँगे ही मिल जाते थे।

लच्चाकी दो सालकी पढाअी समाप्त हुअी। अब वह कोडी जानेकी तैयारी करने लगा। अुसने नागवेणीसे पूछा—"चलोगी?" अुसने कहा—"हाँ! पर पिताजीसे पूछ लीजिअे!" वकील साहबसे पूछनेकी हिम्मत नही पडती थी। क्या पूछें, और कैसे पूछें? अुनको छुट्टियोंमें गाँव जाना ही था। अैसी हालतमें लच्चाको अपनी बीबीको साथ ले जानेकी क्या अुतावली पडी थी! अिसी अुधेड-बुनमें अपना मुँह बनाकर अेक कोनेमें जा बैठा। देखकर नागवेणीको भी बुरा लगा। अुसीने धीरेसे अपने बापसे पूछा—"बापू! पता नही आप गाँव कब चलेंगे, क्या मैं भी अुन्हींके साथ जाअूँ?"

बापने कहा—"मै जल्दी जानेवाला हूँ। तू मेरे ही साथ चलना !"

नागवणीके मनमें आया था कि पूछें—"क्यो ?" पर अिसकी जरूरत ही नही पडी। अुन्होने कहा—"देखो बेटी ! तेरे ससुरालवाले हमारी तरह नही हैं। वे पुराने ख्यालातके लोग हैं। छुट्टीके दिनोमें घरमें फलशोभन हो लेनेके बाद ही तेरा ससुराल जाना ठीक है !"

नागवेणीको भी यह बात ठीक लगी। अभी अुसकी जवानी फूटी थी। फलशोभन नहीं हुआ था। वह चुप हो गअी। पर लच्चा जाते समय "तुझे अपना बाप ही अच्छा लगता है, मैं नही।"—कहकर अुसे रुलाकर ही रहा ! अिससे अुसे बहुत बुरा लगा। वह रोअी भी। अुसने फौरन अपने पतिको सविस्तर पत्र भी लिख डाला।

खैर, सप्ताह बाद वकील साहब अपने परिवारके साथ गाँव चले आअे। लच्चा यहाँपर अपने दिन कही किसी कमरे या होन्नेके जंगलमें अकेलेमें बिता लेता था। जैसे ही अुसने सुना, वकील साहब आ गअे। वह खुश होकर फौरन अुनके घर दौडा ! नागवेणीसे सारी बाते सदाशिवने सुन रखी थी। लच्चाको देखते ही अुसने "क्यों भगवन् ! गुस्सा अुतर गया क्या ?"—कहकर ही अुसका स्वागत किया।

छुट्टीके दिनोमें ही अेफ अे का परिणाम निकला। सदाशिव पहिले दर्जेमें और लच्चा दूसरे दर्जेमें अुत्तीर्ण हुअे। यह समाचार कोठी भी पहुँचा। अैताल बडे प्रसन्न हुअे। सुनते ही वकील साहबके पास पहुँचे। वकील साहबने बडे प्रेमसे अुनका स्वागत किया—"यह सारी आपकी कृपा है ! आपकी लडकीका हाथ पकडा, अिसीका यह फल है।" अैतालने वकील साहबके सामने कृतज्ञता प्रकट की। लच्चा भी वहीं था। सारी बाते अुसको अच्छी लगनेवाली नही थी, फिर भी अुसको न तो बापके ही सामने बोलनेकी हिम्मत थी, न वकील साहबके ही सामने। चुपचाप वहाँसे चल दिया। अुसके जाते ही अुसके फलशोभनकी बात हुअी। अैतालने भी अपनी सम्मति दर्शाते हुअे कहा—"अिसी छुट्टीमें होने दो। पता नही पढनेके लिअे कल कहाँ जाना हो। आजकलके बच्चे हैं, सयमका नाम तक नही जानते ! अच्छा है। गलत रास्ता पकडनेके पहले अेक रास्तेपर लगा देना ही अच्छा है !"

छुट्टीमें लच्चा खुशीसे फूला नही समाता था। नालेके दोनो ओर आता-जाता था। सरसोतीने अेक दिन अुससे कहा—"लच्चा! नागवेणीको यहाँ क्यों नही लाता? तुम दोनोको खुश देखकर हमें भी खुशी होगी!"

"हाँ! पर वह बडे वकीलकी लडकी है। वहाँ खाने-पीनेमें किसी चीजकी कमी नही। यहाँ आते ही आप अुसको बर्तन माँजनेमें लगा देंगी और !"—लच्चाने कहा।

यह सुनकर सरसोती हँसी और "अपनी माँसे पूछ पहिले। हमारे घरमें नअी बहूको कैसे रखते हैं यह वही कहेगी! जब वह अिस घरमें आअी, किसीने अुससे कोअी काम करनेको नहीं कहा था। जैसे-जैसे दिन बीतते गअे वह स्वय सब करने लगी! आज तक हमने अुसको कोअी काम करनेको नहीं कहा!" अुसने अपने घरकी परम्परा कह सुनाअी।

अुसने हँसते हुअे फिर कहा—"वहाँ खाने-पीनेको तेरी रानीको क्या-क्या मिलता है, यह सारी बातें तू मुझे बता दे। मैं वह सब करा दूंगी। पर बेटा! तीन सौ साठ दिन लडकीको अपने मायकेमें रखना भी अच्छा नही होता।"

लच्चाको सरसोतीका यह अुपदेश अच्छा नही लगा। अुसने अपने भाअीके जरिअे लच्चाको चार बाते कहलवानेकी सोचकर अुनसे बाते की। अंतालने लच्चासे कुछ नही कहा। जब वह अैरोडी गअे तो वकील साहबसे बोले—"आठ-दस दिनके लिअे अगर आप नागवेणीको कोडी भेज दें तो अच्छा हो!"

लच्चा भी वहीं था। अुसके सामने ही वकील साहबने कहा—"चार-आठ रोज क्यो महीनाभर वही रख लीजिअे। मगलूर जाते समय भेज दीजिअेगा। और अंतालजी! सच बात तो यह है, नागवेणी अब मेरी लडकी नहीं वह आपकी बहू है। अिन सब बातोके लिअे भला हमसे पूछनेकी क्या जरूरत?"

नागवेणीकी भी ससुरालवालोको देखनेकी अिच्छा थी। वह जानना चाहती थी कि ये लोग कैसे है। अुसने कअी बार सुना था कि पुराने ढगके लोग हैं। जैसे बापने कहा, फौरन अपने ससुरके साथ नाला पार करके कोडी आ गअी।

नागवेणीके पीछे लच्चा भी आया। नागवेणीको यहाँ लानेके बारेमें जो हार हुअी यह अुसको अच्छी नहीं लगी। किन्तु, स्वय रामअैतालका हस्तक्षेप होनेसे वह चुप रह गया। ससुरालमें नागवेणीको किसी प्रकारका कष्ट नही हुआ। कभी-कभी वह अुत्साहसे कहा करती थी, "यह काम मैं किअे देती हूँ!" कभी-कभी वह सरसोतीके सामने छोटे-छोटे बच्चोकी तरह जिद करती हुअी कह देती, "आज मैं दही मथूँगी!", "आजका रसोअीघरका लीपना मेरा काम है!"

अेक दिन अुसने सरसोतीसे कहा—"अितने दिन हुअे, अबतक मैंने सुब्बीको देखा भी नहीं। अगर आप अुनको यहाँ बुला ले तो मैं अुनसे बातचीत करती रहूँगी।"

"तुम अपने पतिसे कहो। वही मन्दर्ति जाकर अपनी बहनको बुला लाअेगा।"—सरसोतीने जवाब दिया।

अेक दिन समय देखकर नागवेणीने अपने पतिसे कहा—"मैं आपकी बहनको देखना चाहती थी। क्या अुन्हे देखनेके पहिले ही मगलूर जाना होगा?"

"अुसे क्या देखना है? अुसके भी तुम्हारी तरह दो हाथ हैं, दो कान हैं, दो आँखें हैं!" लच्चा अुत्तर दे रहा था। लेकिन नागवेणी बडी माँ या सरसोती नही थी। शहरकी लडकी थी। और वह भी स्कूल जाने-वाली। अुसने मुस्कराते हुअे जवाब दिया—"जिसकी मेरी जैसी दो आँखें हैं, अुसको मुझे नही देखना चाहिअे!" और अुसने अपने हाथोंसे अपनी आँखें ढँक लीं।

लच्चाको विवश होकर मन्दर्तिके लिअे प्रस्थान करना पडा। अुसको पहाडी रास्तेसे वहाँतक जाना बिलकुल नहीं भाता था। क्या करे? सरसोती या अैतालरामका वहाँ जाना नागवेणीको अच्छा नही लगता था। आखिर वह लच्चाको सताने लगी। धीरे-धीरे सारी बाते अैतालके कानोमें पडी। अुन्होने अेक दिन कहा—"सरसोती! नाववाले गोविन्दसे कह कि कल सुबह पौ फटनेके पहिले ही वह लच्चा और नागवेणीको अपनी नावमें बिठाकर बार-कूर ले जाअे। आगे गोविन्द अुनको मन्दर्ति पहुँचा आअेगा। वही दो-चार दिन

रहकर आते समय लच्चासे कहो– 'जाओ, सुब्बी और बच्चेको यहाँ ले आना !"

दूसरे रोज सुबह लच्चाने चुपचाप नागवेणीके साथ मन्दर्तिके लिअे प्रस्थान किया। वकील साहबके घरमें रहकर अब अुसकी जबान चलना बन्द-सी हो गअी थी, और केवल मगलूर और अैरोडीमें आ जानेपर नाग-वेणीको लेकर जहाँ-तहाँ स्वच्छन्द घूमनेकी खूब अिच्छा थी। नअे-नअे गाँव देखनेकी अिच्छा थी, नअे-नअे परिचय प्राप्त करनेका अुत्साह था। वह लच्चाकी जडता देखकर कहती थी, 'हाँ ! तुमको क्या ? तुमने सब देख लिया। मुझे भी सब देखनेकी अिच्छा होती है !"

प्रातःकालकी वह नदी-यात्रा ! अुसने कभी अैसा सौन्दर्य नही देखा था। प्रकृतिकी अिस रमणीयतासे अुसका हृदय-कमल खिल अुठा। वह मुग्ध हो गअी। अुसने कहा—"मगलूरमें यह सौन्दर्य कहाँ ? अैसे बाग कहाँ ? अैसे छोटे-छोटे द्वीप कहाँ ? ओहो ! कितना सुन्दर !" आज नागवेणीके आनन्द और आश्चर्यका पारावार नही था। अिसी खुशीमें कब बारकूर जा पहुँची, अिसका पता भी नही लगा।

बारकूरमें नाव लगते ही गोविन्द अुनको लेकर मन्दर्तिकी ओर चला। जगलका रास्ता था। वह हरी-भरी वनराजि ! वह सौन्दर्य ! नागवेणी पग-पगपर अेक छोटे बच्चेकी तरह "यह क्या है ?", "यह क्या है ?" पूछती जाती थी। रास्तेभरमें फैले हुअे पुराने जैन मन्दिरो और हिन्दू मन्दिरोंके खण्डहर, ताल और शिलालेख ! सब अुसको अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। गोविन्दने अपना स्थल-पुराण कहना शुरू किया और लच्चाने पतीत्वका अधिकार बताते हुअे—"तुम्हे क्या पडी है अिन सब बातोकी ? अिन खण्डहरोंमें अब क्या धरा है ?"—कहा।

पहर भर समय चढते-चढते पत्नीसहित लच्चा सुब्बीके घर पहुँचा। अुस दिन सुब्बीके आनन्दकी सीमा नहीं थी ! अुसके घरमें मानो अुडपीके पर्याय[1] का ही अुत्सव था। लच्चाका पूर्ववृत्त देख, सुनकर सुब्बी, अुसका

१ अुडपीके यादवपीठके आठ मठ है। अुन आठ मठके सन्यासी बारी-बारीसे साल भर कृष्ण भगवान्‌की पूजा करते है। जब बारी बदलती है अुस अुत्सवको "पर्याय" कहते है।

पति और घरके अन्य सब व्यक्तियोको बिना बुलाअे लच्चाको सपत्नीक आअे देखकर जितना आश्चर्य हुआ अुससे अधिक आनन्द हुआ। नागवेणीको कही भी न प्राप्त हुआ सम्मान और आतिथ्य प्राप्त हुआ। दो-तीन दिनतक दोनोको वही रहना पडा। अुन्ही दिनो मन्दर्तिके मन्दिरमें 'दशावतार'[1] नाटक था। आखिरी खेल होनेवाला था। कहते हैं नागवेणीने कभी बचपनमें अेक बार 'दशावतार' नाटक देखा था, आज अुसे पुन देखनेकी अिच्छा हुअी। अुस दिन रातको अपने पति, ननद और घरवालोंके साथ अुसने बिना पलक मारे रातभर 'दशावतार' नाटक देखा।

पहाड, जगल और कपिराज्य देखकर नागवेणी अत्यन्त प्रसन्न हुअी। वह बार-बार कहती—"यह गाँव भी कितना सुन्दर है?" पाँच-छह दिनतक दोनो वहीं रहे। अुसके बाद कोडीके लिअे रवाना हो गअे। सुब्बी भी अपने चार सालके 'छोट्टू' को लेकर कोडी आअी। सरसोती और सत्या बडी खुश हुअी। अिस खुशीके समय भी वे पारोतीको नही भूली। लच्चाको जब भगवानने अच्छी बुद्धि दी, तब अुसे देखनेके लिअे पारोतीके न होनेपर अुन्होने चार आँसू गिराअे।

मअीकी छुट्टी शीतल मन्द-सुगन्ध हवाकी तरह आअी और चली गअी। सुबह होते ही जून महीना शुरू होनेवाला था। वकील साहब मगलूर जानेकी तैयारी कर रहे थे। लच्चाको पढना था ही। नागवेणीको आगे क्या करना है, यही अेक विचारणीय प्रश्न था।

"और कितने दिन वह बापके घर पडी रहेगी? हममें क्या अुसका खर्चा चलानेकी शक्ति नहीं है? हाँ, जबतक फलशोभन नही हुआ था, तबतक ठीक था, अब वह भी हो गया। लडकीका अधिक दिन बापके पास रहना अच्छा नही।"—अैतालने अपनी राय दी।

लच्चाको भी अब मगलूरमें रहना नही था। वकील साहबने अुसे मद्रास भेजना तय किया था। अैतालने भी अपनी सम्मति दे दी थी।

---

१. भागवत नाट्यकी तरह यह भी यक्षगान नाटक है, किन्तु अिसमें स्वाग भरकर नाचते हैं। अिसको मैदानी नाटक भी कहते हैं।

न जाने क्यो, लडकेको वकील बनानेकी जो अिच्छा नष्ट हो गअी थी, वह अब पुन अैतालजीके हृदयमें जग पडी थी। लच्चा भी भारी वकील बननेके सपने देखने लगा था, किन्तु अुसके मनमें अेक ही चिन्ता थी नागवेणीके लिअे क्या करना है? नागवेणीसे दूर जाना अुसके लिअे महा कठिन लगता था।

अैतालको नागवेणीका मगलूरमें रखना अुतना अच्छा नही लगता था। ओर शायद लच्चाको अुसका कोडीमें रखना। स्वभावत अुसकी अिच्छा नागवेणीको अपने साथ ही रखनेकी थी। आखिर अुसने कहा—'तीसरी श्रेणीतक अुसकी पढाअी होने दें।"

"लडकियोंको अंग्रेजी सीखकर क्या करना है?"—अैतालने कहा।

"अिन दिनोमें नागवेणी अलग नहीं बैठी!"—सरसोतीने आकर नअी बात कही। सरसोतीकी अिस बातसे दोनो कोअी निर्णय नहीं कर पाअे, ओर बात वैसी ही रह गअी।

अेक दिन वकील साहबने अैतालसे कहा—"अगर लडकीको मंगलूर भेज देते तो अच्छा रहता।"

"अच्छा!"—अैतालने चुपचाप अपनी सम्मति दे दी।

बी. अे पढनेके लिअे कालेज खुलनेमें अभी अेक महीनेकी देरी थी। लच्चा चाहता था कि छुट्टी मगलूरमें ही बिताअें। वकील साहबके साथ वह भी मगलूर जानेकी तैयारी करने लगा। जाते समय अुसने अपने बापसे कहा—"बी अे पढनेमें बडा खर्चा लगता है। अैसा न करे जिसमें अेक पैसेके लिअे भी श्वसुरका मुँह देखनेकी नौबत आअे।"

अैतालको छोटोंसे बुद्धि सीखनेकी आदत नही थी। अुन्होंने "बिना पैसेके तेरा पढना नहीं रुकेगा।"—कहकर जवाब दिया। अब भी अपने सम्बन्धमें पिताका गौरवयुक्त भाव देख अुसको दुख हुआ।

अैतालके घरमें जो मेला भरा रहता था, वह कम हो गया। लच्चा नागवेणीके साथ मगलूर चला गया। लच्चाके साथ आअी मुब्बी भी अपने घर मन्दर्ति रवाना हो गअी। यहाँ केवल तीन प्राणी रह गअे थे। अैताल, सरसोती ओर सत्या। "ओह! मालूम होता है अिस घरके लिअे तीनका हिसाब ही लगा हुआ है!"—कहकर सरसोतीने मजाक की।

अैतालरामका भी बुढापा आ गया था। अुनसे पहिलेकी तरह दौड-धूप नही हो सकती थी। अब अुन्होने अपनी दूर-दूरकी पुरोहिताअी छोड दी थी। "अिस अुम्रमें कौन अितनी दूर जाकर मरेगा?" कहने लगे। पर घरपर भी बिना कामके समय नही कटता था। योही बैठे कैसे समय कटेगा? वे कहा करते थे—"सत्या! बिना कामके भी नही रह सकता। काम भी क्या करे? खेतीका काम भी नही होता। अच्छा! मन्दर्ति ही हो आता हूँ।"

यह कहकर वे मन्दर्ति चले जाते थे। वहाँ अिनके समधी भी बूढे थे। दोनो बूढे दीवारके सहारे बैठकर खूब देरतक यहाँ-वहाँकी गप्प मारते रहते। अैतालको नातीको गोदमें लेकर बैठनेमें बडा आनन्द आता। सुब्बीको भी पिताके अपने घरपर आनेकी खुशीमें घरका काम फूलसे भी हलका प्रतीत होता। धीरे-धीरे अैतालका मन्दर्ति आना-जाना बढ़ गया। हर महीनेके कुछ दिन वहीं बीतने लगे। कभी-कभी नाती भी अपने नानाके साथ ननिहाल आ जाता।

अैताल भी कभी-कभी कहा करते, "अब जी कर क्या करना है? भगवानके घरका बुलावा आया तो हम जानेको तैयार है!" किन्तु रह-रहकर अुनके मनमें अेक विचार सताता रहता था। जबसे शीनमय्याने खपरैलका मकान बनवाया था तबसे अुनको भी खपरैलका मकान बनवानेकी धुन सवार थी। आजकल तो गाँवके बहुत-से लोगोने बेंगलूर जाकर पैसे कमाअे और अुन पैसोंसे गाँवमें अच्छे-अच्छे मकान बनवा लिअे। अगर गिनने लगें तो कोडीसे मणूर तक अैसे आठ-दस मकान अवश्य थे। अभी-अभी सुब्राय अुपाध्यायने भी अपने घरपर खपरैल डलवा ली। जब कभी वे अपने गाँवका विचार करते, यही सब बाते अुनके मनमें आती। अपना घासका मकान अुनको काटनेको दौडता था।

जब कभी खपरैलका मकान बनवानेकी बात करते, सरसोती हँसकर कह देती—"हमारे भैयाके सिरपर खपरैलका भूत सवार है! घरपर खपरैल डलवानेसे क्या मकान अमर हो जाअेगा?"

अेक दिन अैसी ही जब खपरैलकी बात आअी तो सरसोतीने कहा—"भैया! खपरैलका मकान बनवानेमें मेरा विरोध है, अैसा मत समझो!

मैं कहती हूँ, तुमने बडा भारी मकान बनवाया, पर अुसमें रहेगा कौन ? क्या कल लच्चा यहाँ आकर रहेगा ? "

वह अिन दिनों सोचा करती थी, भैया अब बूढ़े हुअे। अुनके जीवनका क्या भरोसा ? आखिर मरते समय कोअी आशा अधूरी नहीं रहनी चाहिअे, तभी तो अुन्होंने खपरैलकी बातें कहीं।

बहनकी बातें सुनकर अुन्होंने कहा—"मैं भी जानता हूं, लच्चा यहाँ रहनेका नहीं, किन्तु मरनेसे पहले हम अपना घर देखकर मर सकते हैं। मरनेके बाद भी चार दिनके लिअे जो आअेंगे देखकर कहेंगे—"किसका घर है ? अैतालका घर है! अितना ही काफी है।"

यह सुनकर अुसको विश्वास हो गया कि मकान बनवानेकी भैयाकी अिच्छा कितनी बलवती है। तब अुसने कहा—"तो हर्ज क्या ? कल ही से शुरू करो ना!"

अब दोनोंके बीच नअे मकानकी बातें होने लगीं। सरसोतीने कटहलके पेडको काटनेकी राय देते हुअे बूढ़े बढअीको छोड और किसीको भी बुलानेके लिअे अपनी स्वीकृति दी। अुसने कहा—"अगर नया घर बनवाना ही है तो अच्छा बनवाओ! मजबूत बनवाओ, दुमजिला बनवाओ और अच्छी पत्थरकी नींव डालकर बनवाओ!"

यह सुनकर अैतालरामको शक हुआ कि यह मेरा मजाक तो नहीं अुडा रही है। अुन्होंने अुदास होकर कहा—"सरसोती! तेरे मनमें न हो तो वैसा कह! पर मेरा मजाक मत अुडा!"

यह सुनकर सरसोतीको दुख हुआ—"भैया! मैंने मजाक नहीं किया। मेरे मनमें दूसरे ही विचार आ रहे हैं। तेरे बाद यह सब किसका होगा, यही मैं सोचती हूँ। मुझे लगता है अगर नकद रकम रखी तो लच्चा अुसे बरबाद कर डालेगा। तभी मैंने कहा कि जो है अुसे घरपर लगा दो! कुछ जमीनपर डाल दो या अपनी बहूके लिअे अच्छे गहने बनवा दो। मुन्नीके लिअे भी कुछ गहने बनवा दो। लडकी है तो क्या हुआ, आखिर अिसी घरमें पैदा हुअी है! और जब घर बनवाना ही है, तो अैसा-वैसा क्यों बनवाअें! अच्छा बनवाअें!"

सरसोतीने दिल खोलकर मनकी सारी बाते कहीं ! सुव्वीके गहने बनवानेकी बातपर सत्या भी राजी हो गअी।

सरसोतीकी बातोकी वास्तविकताको अैतालने अनुभव किया। वे अब नअे मकानके काममें दत्त-चित्त होकर लग गअे। साथ-साथ अुन्होने नअी जमीन देखना भी प्रारम्भ कर दिया। वहू और सुव्वीके लिअे पाँच-पाँच सौके गहने भी बने। अुनको भय था कि नकद छोडा तो लच्चा तीन ही दिनमें बरबाद कर डालेगा। अब भी प्रति महीने अुनसे चालीस-पचास रुपयोकी आवश्यकताके पत्र आते रहते थे। अुन्होने कुन्दापुर जाकर अेक वकीलसे "मद्रासमें खर्चके लिअे कितने रुपअे लगते है।"–कहकर पूछताछ की, क्योकि अुनको वही पुराना शक था कि कही अपने ससुरसे और मुझसे दोनो ओरसे तो रुपअे नही लेता।

दो-तीन महीनेके बाद हर महीनेमें अेक बार पैसेके लिअे पत्र आने लगा। पैसे भेजनेमें जरा देर हुअी, तो दो-दो, तीन-तीन पत्र आ जाते। अैताल परेशान हुअे। अुनको तो पढना-लिखना नही आता था। अपने किसी विश्वासी यजमानको पकडकर अपने समधीको मगलूर पत्र लिखवाया। वहाँसे कोअी जवाब न आनेपर अैताल और भी परेशान हुअे। आखिर "जाने दो मुझे जो दण्ड भरना है वह भरता हूँ, आगे अुसका नसीब !" कहकर रुपअे भेज दिअे।

यहाँ अैतालका मन घर बनवानेमें लग गया जिससे चिन्ताअें जरा कम हुअी। दिमागमें घरकी ही बाते आती। घरका नक्शा रोज-रोज बदलता रहता। कभी सोचते घर दुमजिला बनवाअूँ, तो कभी सोचते क्या करना है ! जैसे-जैसे मनमें बात आती, वैसे ही वैसे नक्शा बनता-बिगडता रहता, जैसे-जैसे नक्शा बनता-बिगडता वैसे-वैसे काम भी चलता रहता। यह सब देखकर घरमें बैठे बैठे शीनप्पा अेक-न-अेक जहरीला तीर छोडता "अैताल भी घर बनवाने लगे हैं क्या ? पर कौन रहेगा अुसमें ? आखिर अिनकी लकडियाँ तो श्मशानमें पहुँच गअी है ! लडका तो अंग्रेजी सीखकर अिनके हाथसे निकल गया !"

यह सुनकर अैतालको बडा दुख होता। सरसोती कहती–"शीनमय्याका नसीब ही वैसा है ! तुम अुनकी बाते क्यों मनमें लेते हो ? अुनका स्वभाव ही वैसा है !"

आदिकी सारी बाते थी। "आखिर वह अब हाथसे गया!" कहकर पछताअे। अुनके अुस दुखमें नागवेणीकी मांने भी अपने चार आंसू बहाअे। पर नागवेणी? बेचारी आसमानके तारे गिन रही थी।

शीनमय्यासे कर्ज लिअे गअे पैसोंसे मद्रासमें लच्चा मौज अुडाने लगा। साथ-साथ बेर-अबेर बापको भी चुभनेवाले पत्र लिखनेमें अुसने आगा-पीछा नहीं किया। यह सब बुढापेमें अंतालसे सहा नहीं गया। आखिर अुन्होंने किसी यजमानको पकडकर वकीलको पत्र लिखवाया। अुसमें लिखा था—"मेरे दुर्दैवसे आपकी लडकीकी जिन्दगी बरबाद हो गअी। लच्चाको सुधारनेकी शक्ति मुझमें नहीं थी, क्या आप भी अुसको नही सुधार सकेंगे? खैर, जाने दें, भगवानको जो मजूर है वही होता है। अब अेक बात लिखना चाहता हूं, जो हुआ सो हुआ! अगर आपकी अिच्छा हो तो मेरी बहूको अिस घरमें किसी बातकी कमी नही होगी। जो कुछ मेरी सम्पत्ति है, अुसमें अधिक स्वार्जित है! आखिर बहूको ही लडका समझ लूंगा। क्या आप बुढापेकी यह आशा पूरी करेंगे?"

पत्र करुणाजनक था। अंताल अुनके कुल पुरोहित थे। लच्चाके बारेमें नही किन्तु अंतालरामके बारेमें अुनके मनमें आदर था, सम्मान था। बड़े दिनकी छुट्टियोंमें वकील साहब नागवेणीको साथ ले आअे। अैरोडी पहुंचते ही दूसरे दिन वह लडकीको लेकर कोडी गअे। अंतालने अत्यन्त दुख और लज्जासे आंसू बहाते हुअे अुनका स्वागत किया। अुन्होंने वकील साहबको अपना नया घर दिखाते हुअे कहा—"देखिअे यह नया मकान, यह अूपरी मजिल, यह गोठा, यह दीवानखाना, यह बरामदा, आखिर यह सब किसके लिअे? मेरे दिन अब करीब है!" अुनके मुंहके साथ आंखें भी बोलती थीं। धीरे-धीरे सरसोती और सत्यभामा भी आ गअीं। बहूको देखकर सत्यभामाकी आंखोंमें आंसू भर आअे। नागवेणीने अपनी सासको प्रणाम किया। सत्याने अुनको "आ बेटी!" कहते हुअे अुठाकर गलेसे लगाया।

"आपकी बहू है! अगर आप अपने पास रख लेना चाहते हैं, तो मुझे आपत्ति नही। पर अेक बात कहे देता हूं, अब लच्चाकी आशा करना बेकार है!"—वकील साहबने आंखें पोछते हुअे कहा।

"यही हमारा लड़का है और यही वहू !"—सत्यभामाने कहा।

"जिसके नसीबमें जो लिखा है वह भोगता है!"—अैतालरामने कहा।

आखिर अैतालरामने वकील साहबसे कहा—"देखिअे मेरी जो भी सम्पत्ति है, तीन चौथाअी मेरी अपनी है। वह मैं वहूके नाम लिखे देता हूँ। अगर आप और बहू बुरा न माने तो थोडी-सी सम्पत्ति बेचारी सुब्बीके नाम लिख दूँ। पित्रार्जित सम्पत्तिको नही छूता। लच्चा चाहे तो अुसको बेच खाअे या जो चाहे सो करे!"

दिनभर वकील साहब वही रहे। जब वकील साहब जानेके लिअे निकले, तो नागवेणीने कहा—"पिताजी, मैं चार दिन यही रहती हूँ।" वकील साहब आँसू भरी आँखोंसे लड़कीको ससुराल छोडकर चले गअे।

अब नागवेणी अैतालकी केवल बहू नही लड़का भी थी। पढ़ी-लिखी लड़की थी, अमीर बापकी लड़की थी, फिर भी अुसका विनय अपूर्व था। सरसोती और सत्यभामा अुसको सान्त्वना देती थीं। सरसोती कहती थी, "जो नसीबमें लिखा है वह किसीसे नही बदला जाता! मुझे ही देखो न!"

खैर, नागवेणी भी औरोका दुख देखकर अपना दुख भूलने लगी।

मकर सक्रान्तिके दिन आअे। मकर सक्रान्तिके बाद ही शालिग्रामकी यात्रा है। शालिग्रामका नरसिंह ही अैतालरामका कुलदेव है। अुस यात्रामें अैताल गअे, अुनके साथ सरसोती, सत्या, नागवेणी भी गअी थी। वहाँपर अैतालने "भगवान! तू भी नही अुसको सद्बुद्धि देगा!" कहकर लच्चाके लिअे भगवान्की प्रार्थना की। यही अैतालकी अन्तिम यात्रा थी।

वहाँसे आते ही अैतालको बुखार आने लगा। ज्वर अेक बहाना बना और अैताल कमजोर होने लगे। अुनका शरीर धीरे-धीरे मोमबत्तीकी तरह गलने लगा। अिसी ज्वरमें दो-अेक महीने बीते। अप्रैलका महीना लगा। मद्राससे अपना बी अे का अिम्तिहान देकर लच्चा भी कोडी आया। बिस्तरपर पडे बापको देखने भी घरपर नहीं गया। वह शीनमैयाके घर रहा।

"क्या लच्चाको बुला लाअूं ?"—अेक दिन सरसोतीने पूछा।

अुनके मनमें आता था शीनमैयाके घरपर न रहकर और कहीं रहा होता तो मरते समय विवेककी दो बातें तो कहता! पर अुन्होंने सरसोतीसे कहा—"अुसको देखनेकी अिच्छा नहीं है!" शीनमैयाके घर रहनेसे लच्चाका मुंह देखनेकी भी अुनकी अिच्छा नहीं रही थी।

चैत्र वदी अमावसको अैतालके घर अन्धकार था। सुबह ही सरसोती, सत्या और नागवेणी समुद्र-स्नान कर आअी। आजकल अैतालकी सेवा ही नागवेणीकी जीवन-चर्या है। अैताल दुधमुंहे बच्चा बने थे। अमावसके दिन अैतालको खूब ज्वर चढ आया। बार-बार बेहोश होते। आखिर बहूने आकर पूछा—"क्या अुनको बुला लाअूं ?"

बहूके आँसू देखकर अुनका हृदय पिघल गया, अुन्होंने कहा—"बेटा! तेरे कहनेसे वह थोडे ही आअेगा? तुझसे बडा वह शीना है न बहूं!"

सुनकर नागवेणी चुप हो गअी।

दूर-दूरके गांवोंसे जो अमावसका समुद्र-स्नान करने कोडी आअे थे, अुन्होंने सुना, "अैतालराम बहुत बीमार हैं!" जिसने सुना, वह अुनको देखने आया। सुब्राय अुपाध्याय भी देखने आअे। "आजका दिन बीतना मुश्किल है! अगर आज बच गअे, तो और चार-पाँच साल कुछ भी नहीं होगा!"— सुब्राय अुपाध्यायने कहा। यह खबर आगकी तरह गांवभरमें फैल गअी।

शीनमैयाने भी यह सुना। अुसका मन डांवाडोल हुआ। "अैताल कैसे भी दुष्ट क्यों न हो! मरते समय अुनका मुंह देखना ही चाहिअे। मरते समय क्या दुश्मनी!" वह समुद्रके किनारेपरसे सीधे घर गअे और वहांसे सिर झुकाकर अैतालके घर आअे। जब अैतालको होश आया, तो अुन्होंने देखा पैरोंके पास शीनमैया सिर झुकाकर खडे हैं।

"कौन? शीना!"—अैतालने पूछा।

"जी! शीना!"—शीनमैयाने कहा।

"क्या मेरे मरनेके बाद दुश्मनी छोडकर लच्चाको चार अच्छी बातें सिखाओगे ?"—अैतालने पूछा।

सुनकर शीनमैया बच्चा बन गअे। जीवन भरकी दुश्मनी भूल गअे। "मैंने अबतक जो कुछ कहा भूलकर क्षमा करो राम!"

शीनमैया रोने लगे। पहले वे कैसे ही रहे हो, भविष्यमें कुछ भी हो, पर वर्तमानमें, मृत्युके सामने वह प्रामाणिक ही थे। सालोतक दुश्मनीका जहर अुगलनेवाले दोनो चेहरे अिस समय प्रेमकी वर्षा करने लगे। मृत्युके सामने आदमी सब बुराअियाँ भूल जाता है।

दौडती हुअी नागवेणीने जाकर सरसोतीको यह खबर सुनाअी। नागवेणीको साथ लेकर वह शीनमैयाके दरवाजेपर जा खडी हुअी। नागवेणी अकेली शीनमैयाके घरमें गअी। लच्चा वही बैठा था।

"यहाँ कैसे आअी?"—नागवेणीको देखते ही लच्चाने पूछा।

अुसके गाल आँसुओसे भीगे थे। अुसने यह देखकर पूछा—"क्या बात है?"

"मरते समय भी अपने बापको न देखिअेगा?"—नागवेणीने कहा।

नागवेणीके साथ वह दौड पडा। सभी घरपर आअे। किन्तु लच्चामें अन्दर पैर रखनेकी हिम्मत नही थी।

"वे बाहर खड़े है! क्या अन्दर बुला लाअूँ? आपको नाराज नही होना चाहिअे!"—नागवेणीने अन्दर जाकर कहा।

"बच्ची! तुझे देखकर... . तुम जैसी भाग्यलक्ष्मीके सामने मैं कैसे नाराज हो सकता हूँ।"—अैतालने कहा।

बिलखती हुअी नागवेणी बाहर दौडी आअी। पतिका हाथ पकडकर अन्दर ले गअी। वह व्याकुल था। जैसे ही अुसने शीनमैयाको वहाँ देखा, वह हतबुद्धि-सा रह गया।

"लच्चा! बापूके पैर पकडो। अनकी दुश्मनी हमें नही चाहिअे। नही तो आगे भगवान भला नही करेगे!"—शीनमैयाने कहा। सुनते ही लच्चा अुनके पैरोपर गिर पडा।

रातभर अैताल बेहोश रहे। कभी-कभी जरा होशमें आते थे। अुसी समय नवग्रह-दान, गोदान, भूदान वगैरह हुअे। आखिर अुन्होंने लच्चाको

पास बुलाकर कहा—"तुझे बुद्धि सिखानेकी शक्ति आज मुझमें नहीं। और किसीका नही तो जिसका हाथ पकडा था, अुसका सम्मान करना। तुझपर भरोसा न होनेसे मैंने सारी जायदाद नागवेणीके नाम लिख दी है।"

लच्चा गूंगेकी तरह चुपचाप सुनता रहा।

अमावस्याकी समाप्तिके साथ अंतालकी जीवन-लीला भी समाप्त हुअी। पारोतीकी मृत्युसे अधमरी सरसोतीका जीवन पूरा मृतप्राय-सा हो गया। दूतोंके द्वारा बन्धु-बांधवोंके घर खबर भेजी गअी। सुब्बी अपने पतिके साथ दौडी आअी। अब अगली क्रिया होनी थी। शीनमैयाने ही अगला कन्धा दिया था। यह देखकर अुसके दुश्मन भी अुनकी प्रशंसा करने लगे थे। अुस रोज केवल सरसोतीने अेक भी आंसू नही गिराया, नही तो गांवमें अेक भी आदमी या औरत अैसी नही रही, जिसने आंसू न गिराअे हो। सरसोतीके आंसू सूख गअे थे। और अुसका बोलना तो कबका छूट गया था। अुस दिनसे वह मुंह बन्द कर काम करती जाती थी, मानो अब अधिक दिन बोलना नहीं है।

घरमें मां, बहन पत्नी सबको आक्रान्त देखकर लच्चाको भी रोना आया। अुसको भी यह संसार नरक-यातना-सा लगा। पर यह, जैसा कि कहते है, श्मशान वैराग्य था। अंतालका अन्त्येष्टि-संस्कार होते ही घर आअी बहन और अन्य मेहमान चले गअे, लच्चा भी मृत्युको भूलने लगा। अिसमें शक नहीं घरमें अुसको चारो ओर अन्धेरा ही अन्धेरा नजर आता था, फिर भी घर छोडकर शीनमैयाके घर जानेकी अिच्छा नही हुअी। वह सोचने लगा बाप और बेटेकी दुश्मनीके कारणीभूत शीनमैयाने ही बापके सामने सिर झुकाकर अपमानित किया, फिर घरमें भी सुख कहाँ था? नागवेणीके साथ पहले जैसे हँसने-बोलनेमें कोअी अुत्साह नहीं था। नागवेणीकी ओर देखकर अुसको लगता था, कि घरमें यह कोअी मेहमान आअी है। अुसके बापसे जो द्वेष-भाव पैदा हुआ था, वह अुस बेचारीपर टूट पडा था।

नागवेणी! भविष्य अज्ञात था। क्या करे, क्या न करे, वह कुछ भी नही जानती थी। कअी बार अपने प्रति जो घोर अन्याय हुआ अुसको भूलकर प्रेमसे पतिसे बोलती। अुसी क्षण दूसरी बात भी अुसके मनमें

आती। "मेरे अिस प्रेमके परिणामस्वरूप मुझे पुन वही पुरानी यम-यातना भुगतना पडेगी।" अुसका स्मरण कर ही वह कांप अुठती। बेचारीकी प्रेमोर्मियां वैसी ही मुर्झा जाती! जब कभी सरसोती और सत्या अपनी बहूका वह निर्दोष चेहरा देखती, अुसकी वेदनाअें महसूस करती, तो लच्चाके दुष्कृत्योपर जल-भुनकर रह जाती।

लच्चा तो गलियोंमें घूम-घूमकर अपनी भूख मिटानेका आदी हो गया था। छुट्टियोंके दिनोमें किट्टू अुपाध्याय गांवमें आया था। जिसमें अुसने पुन अेक बार पुरानी बाते ताजी की! पुरानी बोतलमें नअी शराबका मजा लुटवाने लगा।

खैर, अुसके बी अे का परिणाम आया। वह अुत्तीर्ण हुआ था। अपने पास होनेका नया अुत्साह था। किन्तु "आगे क्या?" अुसके सामने अेक महान् प्रश्न-चिह्न था। गांव! अिस दोजखमें रहना अुसके लिअे असम्भव था। क्या आगे अेल-अेल बी करे? पैसा कहांसे आअेगा? नौकरी ढूंढे? या कोअी व्यापार करे? कोअी भी रास्ता नही सूझता था।

"मां! तुम सब घरमें ही रहो! बापूने विल करके आप सबका प्रबन्ध कर दिया है। अिस घरमें अब मेरा कोअी मान नही रहा। मैं बीबीकी दयासे अुसके डाले टुकडे खाकर यहां नही रह सकता। अगर यहां रहना ही था तो भला बी अे होनेकी क्या जरूरत थी? अितना पढ-लिखकर अिस गांवमें क्या करूं? कही जाकर कुछ अुद्योग करता हूं! अब यहां रहनेमें कोअी स्वार्थ नही!"—अेक दिन लच्चाने अपनी मनकी बातें मांसे कहीं। सुनकर सरसोतीको भविष्य और भी अन्धकारपूर्ण लगा।

"तू क्या करेगी बेटी!"—सरसोतीने नागवेणीको बुलाकर पूछा।

"अुसको क्या? वह तो बडे बापकी बेटी है! बापके पास खूब पैसा है। ससुरने भी काफी बना दिया है! वह अपने नअे घरमें बैठकर मोज अुडाअेगी!" अिस प्रकार लच्चा अपना जहर अुगल शीनमैयाके पास कर्जा लेने जा पहुंचा।

"अब तुझे कर्जा लेनेकी क्यो जरूरत पडी? अब तू ही तो घरका मालिक है!"—शीनमैयाने कहा। अिसपर लच्चाने बापने जो विल लिख रखा था,

अुसकी सारी बाते बताकर कहा—"पित्रार्जित सम्पत्तिका कुछ नही कर सकते थे। अिसलिअे वह वैसी ही छोड गअे है । अगर वह नही होती, तो मुझे हाथमें भिक्षा-पात्र लेना पडता । हमारे दादा जो सम्पत्ति छोड गअे थे, वही मेरी सम्पत्ति है ।"

कुछ भी हो शीनमैयाको लच्चाका अिस प्रकार अपनी बीबीको छोडकर जाना ठीक नही लगा । अुसने लच्चाको समझाना शुरू किया । पर लच्चाकी अेक ही बात थी—"कुछ भी हो ! अगर आपके लिअे सम्भव है, तो आप मेरे हिस्सेकी अिस जमीनपर कुछ रुपया दीजिअे । कही भी काम मिलने तक चार रोज खानेको तो चाहिअे ! मैं अपनी बीबीसे भीख नही मांगनेका !"

अैतालके घरमें कोअी आदमी नही रह गया । नारायणमैया ही अैरोडीसे आकर घर और जमीनका प्रबन्ध कर जाते थे ।

अेक दिन नारायणमैयाने सरसोतीसे पूछा—"आप क्या करेंगी ? नागवेणीको आगे क्या करना चाहिअे ? अगर वह हमारे यहाँ आती है, तो मुझे अच्छा ही लगेगा ।"

सुनकर सरसोतीने कहा—"मुझे न कुछ कहना है, न कुछ करना है । अब क्या, चार दिन रह गअे है, अिसी घरमें पैदा हुअी थी, अिसी घरमें मरूँगी !"

"मैं भैयाके पास चलूँ तो अच्छा होगा !"—सत्यभामाके मनमें आया । फिर क्षणभरमें लगा, नही यही रहूँ । किन्तु अुसने कहा—"नागवेणीको बापके पास जाने दें । बेचारी अभी बच्ची है । माँ-बापके पास सुखसे पली है । अपने पतिके लिअे अितने दिन जो कुछ भुगता, वह क्या कम है, क्या जिन्दगी भर अिस वनवासमें रहेगी ?"

नारायणमैयाने जब नागवेणीको घर जानेके लिअे कहा, तो अुसने अिन्कार कर दिया । सरसोतीका स्वभाव देखकर थोडे दिनोमें वह मन-ही-मन सरसोतीकी पूजा करने लगी थी । सरसोतीका स्नेह, अुसकी मृदुता, अिस बुढापेमें भी देखी जानेवाली अद्भुत चेतनता, अुसके मनमें सरसोतीके प्रति अनन्य भक्ति पैदा कर चुकी थी । नागवेणीने सोचा, जिस देवीने अपने जीवनके खादसे अिस घरको अितनी अूँची स्थिति तक पहुँचाया, अुसको अैसी हालतमें छोडकर जाना ठीक न होगा ।

नारायणमैया निरुपाय होकर लौट गया। लच्चा विना किसीके कहे-सुने गाँव छोडकर चला गया, यह सुनकर पडुमुन्नूरसे मादप्पय्याका लडका जनार्दन अपनी वहनको वुलाने आया और "सालभर तो जीजीको हमारे घरमें रहने दो!"—कहकर सत्यभामाको पडुमुन्नूर ले गया। अुसके जानेके बाद सरसोतीने फिर अेक वार नागवेणीसे कहा—"वेटी! तू भी अपने बापके पास जा। अिस वुढियाके लिअे भला तू क्यो दुख अुठाती है?"

सुनकर नागवेणीकी आँखोमें आँसू आ गअे। अुसने कहा—"अपने बापका ऋण चुकानेको वे नही रहे, तो क्या में भी न रहूँ? अगर भगवानने अुनको कुछ अच्छी वुद्धि दी, और मुझे लेने आअे, तो मै जाअूँगी, किन्तु हम दोनोको जाना होगा। आपको अकेली छोडकर में अुनके साथ भी नही जाअूँगी।"

नागवेणी अभी बच्ची थी, वेचारीको जीवनका अनुभव नही था। भावुक जीवन था। अुसके हृदयमें चुभनेवाली वेदनाअें अुसके मुँहसे ये शब्द निकलवाती थी। यह सुनकर सरसोती नागवेणीकी दादी वन गअी। वह दिनभर घरमें वुहारना, लीपना, पोतना आदि काम करती, और नागवेणी रसोअीका काम करती। दोनोने खेती-बाडीका काम वन्द कर दिया था। सरसोतीने कहा—"अव किसके लिअे यह सब? जिनके नसीवमें लिखा है, अुनको खाने दो। जवतक भगवानका वुलावा नही आता, तवतक अुनका नाम लेते-लेते दिन वितावेंगी!"

छह-सात महीनेके बाद मँगलूरसे वकील साहवका अेक पत्र आया। लिखा था— "लच्चा वल्लारीमें है। अुसको सरकारी नौकरी मिल गअी है। अिससे अधिक कोअी जानकारी नही मिली।" अिस पत्रसे भला किसका क्या हित होनेवाला था?

नागवेणीका तपस्या-काल था। सरसोतीने अुसको "ओ नम शिवाय" का मन्त्रोपदेश दिया था। घरका काम करके वह माला लेकर वैठ जाती। कभी-कभी बहुत जी अुकताया तो अेकाध दिन अैरोडी भी हो आती। जव-तक घरमें सरसोती थी अैतालद्वारा छोडी जमीनकी कोअी चिन्ता नही थी। वही सारा प्रवन्ध करती। अैसी कोअी खास वात हुअी तो अैरोडीसे नारायणमैया आकर मदद कर देते। सालमें अेकाध वार खास-खास आसा-

मियोंसे खण्ड भी वसूल करवा देते। कभी-कभी वकील साहब भी मगलूरसे चिट्ठी-पत्री लिखकर पैसेका क्या प्रबन्ध करना चाहिअे, समझा देते। लच्चाके नामपर जो जमीन थी, अुसकी सब व्यवस्था शीनमैया करते। अुसके हाथमें आनेकी कोअी आशा नही थी।

लच्चाको घर छोडे तीन साल हो चुके है। तीन सालके बाद वह अपने गाँवको दर्शन देने आया। फिर भी वह सीधा अपने घर नहीं, बल्कि शीनमैयाके घर गया। वही रहा। अेक दिन सुबह अुसने अपने घरको दर्शन दिया। घरका वातावरण निर्जीव-सा था। घरके लोग भी वैसे ही निर्जीव-से थे। नागवेणी तालाबपर नहाकर घर आ रही थी, अुसने दूरसे किसीको अपने घरमें आता देखा। झटपट अपने आँगनमें आअी। देखते ही आनेवालेको पहचान न सकी। अब ओठोपर बडी-बडी मूंछें थी। पोशाक भी पूरी अपरिचित-सी थी। लच्चा अपने नअे जीवनकी नअी शानसे आया था।

"पहचाना भी नहीं!"—लच्चाने पूछा।

नागवेणीने अेक बार अपने पतिकी ओर देखा। रूपकी नहीं तो ध्वनिकी पहचान कहाँ भूलती है? जरा दुख मिली हँसी आअी—"अैसे क्यों बोलते है आप?"

बस अुसकी आँखें भर आअी, अुसे रोना आया। लच्चा घरके बरामदेपर जा बैठा। सरसोती भी आअी। अुसने पूछा—"बेटा! तू आ गया। कब आया? कहाँसे आया?"

कब आया—अिसका जवाब देनेमें वह शरमाया।

"बेटा! बचपनमें गोदमें अुठाकर बढानेवालोंको भूलनेपर भी, अग्निकी साक्षी रखकर जिसका हाथ पकडा जाता है, अुसको कभी नहीं भूला जाता।"

अब अुसको पुन पुरानी बाते याद आ गअी। बापने मरते समय सबके सामने जो बाते कही थीं, अुसे याद आअी। वह मौन था, किन्तु जैसे घोर अन्धकारमें अेकाअेक बिजली चमकती है, वैसे अेक दिनके लिअे ही क्यों न हो, सबके चेहरेपर प्रसन्नता झलकी।

और यौवन-सम्पन्न नागवेणीका सौन्दर्य देखकर लच्चाका मन चचल हो अुठा। अुसकी वह सौन्दर्यपूर्ण मुख-कान्तिसे लच्चाकी आंखोंमें चांदकी चांदनी छिटक गअी। मैं अिस रूपसीकी अवहेलना कर कहाँ भटक रहा हूँ? अुसके मनमें नया नशा छाया। दोपहरका खाना हुआ तबतक वह कही दूरका मेहमान-सा रहा। अुसके बाद अुसने आत्म-पुराण कहना शुरू किया। अुसने कहा—"मैं अब कानूनगो हूँ। बल्लारी जिलाकी अेक तहसीलमें मुझे नौकरी मिली है। वहाँ काफी आराम है। काम देखकर सम्भवत थोडे ही दिनोंमें तहसीलदारी भी मिल जाअेगी। वेतन कम होनेपर भी दूसरे लाभ खूब हैं।"

दोपहरकी गपके बाद रातका खाना भी हुआ। नागवेणीने अपनी बड़ी प्रसन्नता और मुस्कुराहट कायम रखनेका प्रयास किया। अुसी समय लच्चा कहीं जानेको निकला।

"आप कहाँ जा रहे है?"—नागवेणीने पूछा।

"शीनमैयाके घर। कल ही वहाँ आया था। दिन भर यहाँ रहा। कमसे कम अब तो जाना चाहिअे?"—लच्चाने जवाब दिया।

"क्यो? यही क्यो नही रहते। क्या यह आपका मकान नही? और क्या मैं पराअी हूँ? आखिर मैं भी आप ही की हूँ।"—नागवेणीने कहा। अुस बेचारीने कहनेके लिअे तो कहा, पर आखिरी वाक्य कहते समय अुसके ओठ कांप रहे थे।

"तू मुझे चाहती हैं या नही, यही न समझ पानेके कारण वापस लौट रहा था!"—लच्चाने जवाब दिया।

"जिसका हाथ पकडा है अुसको अिस प्रकार नही सताया जाता!"

खैर, पुन अेक बार नागवेणीके मादक यौवनपर लच्चाका अधिकार हुआ। धर्म-स्नेहके बन्धनमें पुरानी बाते भूलकर पुन अेक बार नागवेणीने अुसको शय्या-सुख दिया, और अुस शय्या-सुखके नशेमें वह पुरानी घोर शत्रुताको भी भूल गअी।

छुट्टीके दिन पूरे होने तक लचचा बडे अुत्साहके साथ हिलमिलकर हँसता-बोलता रहा। नागवेणीने भी अुसे घरकी सारी बाते बताअी।

आखिर अिस आनन्दका भी अन्तिम दिन आया। अेक दिन लच्चाने कहा—"अब छुट्टीके दिन खतम होने आअे। मुझे अपने कामपर जाना चाहिअे।"

"अगर यही रहो तो!"—सरसोतीने कहा।

"जाना हो तो जाओ, किन्तु हम दोनोको भी साथ ले चलो। यहांका काम तो चाचाजी करेंगे ही!"—नागवेणीने कहा।

यह लच्चाको मजूर नही था। अुसने हिचकिचाते हुअे कहा—"मैं वहां जाकर घर देख लेता हूं। वहांका सारा प्रबन्ध कर तुम्हें बुला लूंगा।"

"अच्छा!" सरसोतीने कहा तो परन्तु वह किसी-न-किसी बहाने लच्चा-नागवेणीको पुन साथ कर देना चाहती थी और स्वय जिस मिट्टीमें पैदा हुअी थी, अुसी मिट्टीमें मिल जानेके दिन देख रही थी।

: १७ :

वल्लारीसे कानूनगो लक्ष्मीनारायणरावके पत्र आने लगे। नागवेणी भी अुनको लिखती थी, किन्तु वकील साहबको अिस बातका पता नही था कि अिन दोनोका टूटा हुआ सम्बन्ध फिर जुड गया है। नागवेणी वार-बार लिखती—"हम दोनोको यहाँ अैसे ही सडानेके लिअे मत रखो। कम-से-कम आपको अपनी बूढी बुआका ख्याल तो करना ही चाहिअे।" वहाँसे कानूनगो साहब "आजकल मुझे दौरेपर ही रहना पडता है" —आदि बहाने लिख दिया करते। अिसी पत्र-व्यवहारके बीच अेक दिन नागवेणीका पत्र अुसके हाथ लगा। "आप अब अेक बच्चेके बाप होने जा रहे है, अैसी हालतमें हमारे लिअे वहाँ कोअी खास व्यवस्था करनेकी जरूरत नही!"

करीब छह महीनेमें लक्ष्मीनारायणने और अेक पत्र लिखा, किन्तु वह वल्लारी नही केरलसे आया था। अुसमें लिखा था–"कुछ मित्रोकी सहायतासे मुझे आबकारी-विभागमें अिन्स्पेक्टरका काम मिल गया है। यह रेवन्यू-विभागसे अच्छा है। अिसमें बडी आय होती है। यहाँसे जल्दी अपने जिलेमें बदली भी हो सकेगी!"

यह सच था, लक्ष्मीनारायण केरलमें थे और अुनको वैसी ही नौकरी मिली थी, जैसा कि अुन्होंने लिखा था। किन्तु अुनको वहाँ रहनेकी अिच्छा नही थी। अुनकी महत्वाकांक्षाअें बडी-बडी थी, अिससे वे और अूपरकी बाते सोचा करते थे। वे जिस विभागमें और जिस जगहपर थे, अुसमें आय भी पर्याप्त थी। अनेक लोगोसे अनेक प्रकारकी भेंट, नजराने, रिश्वत जो कुछ आता था, वह सब लक्ष्मीनारायणरावको स्वीकार था। किन्तु अुस आयमें वे कितना बचा लेते थे, यह दूसरा प्रश्न था। जितना आता, अुतना ही अुडानेके वे आदी थे, अितना ही नही अिससे अधिक शानके साथ रहकर और

भी अधिक आयकी अिच्छा रखते । वे अत्यन्त चालाकीसे चलते थे, अिसलिअे तरक्कीकी भी सम्भावना थी । यद्यपि जबसे काममें लगे, अुसी दिनसे तो तरक्की नही मिल सकती थी, फिर भी तरक्कीके चांस अच्छे थे ।

किन्तु अुनका मन अपने हाथोमें नही था । सदा-सर्वदा वे किसी-न-किसी नअी स्त्रीकी खोजमें परेशान रहते । अिससे कितनी ही आय क्यो न हो, अुनका हाथ तग ही रहा करता । अेक बार अुनके मनमें आया, रुपयोके लिये नागवेणीको लिखें, किन्तु सोचा क्या लिखें ? क्या मुझे कम वेतन मिलता है, जो मिलता है वह मेरे अपने खर्चके लिअे भी तो कम होता है, क्या यह लिखें ? अिससे तो मेरा घरमें अपमान होगा । आखिर अुन्होने अपनी पत्नीको बडी होशियारीसे पत्र लिखा । आपने लिखा कि कम व्याजसे लोगोको कर्जा देना अच्छा नही यहाँ पर्याप्त व्याज मिलता है । मुझे अैसा लगता है, नअी फसल आते ही अुसे बेचकर रुपअे मेरे पास भेज दिअे जाअे तो अच्छा हो ।

बेचारी नागवेणी थककर लेटी थी, अुसी समय पत्र हाथमें पडा । अुसका स्वास्थ्य भी अच्छा नही था और छह महीनेकी गर्भिणी भी थी । अुसने पत्र देखा, तो जरा घबडाअी । क्योकि जो फसल हुअी थी, अुसे बेचकर नारायणभैयाने रुपया नागवेणीके नामसे दूसरोको दे दिया था । अब पतिको क्या लिखे ? बात जैसी है वैसी लिख दी जाअे ? अब क्या किया जाअे ? वह सोचने लगी । वह बडी परेशान थी, कि सरसोतीने पूछा, "नागवेणी ! हाथमें क्या लच्चाका पत्र है ! क्या लिखा है ? कब आअेगा ?"

जब नागवेणीने पत्रकी सारी बाते कह सुनाअी, तो सरसोतीने कहा— "नही ! यहाँसे रुपया मँगाकर बरबाद करना चाहता है । अुसको वहाँ पचास रुपअे मिलते है । क्या अकेलेके लिअे कम है, क्यों घरसे मँगवाअे ? अेक पैसा भी यहाँसे मत भेजना !"

पर नागवेणी अपने पतिपर अविश्वास कैसे करती ? पतिको कुछ-न-कुछ लिखना जरूरी था अगर "यहाँ जो रुपअे थे वे औरोको दे दिअे हैं, अैसा लिखती है, तो झट पूछ बैठेंगे— "क्या अब तू ही घरकी मालकिन है ! नही तो मुझसे पूछनेके पहिले किसीको देनेकी हिम्मत तूने कैसे की ?" —खूब

सोचा, परन्तु समझमें नही आया कि क्या किया जाअे। अुसने अपने छोटे चाचाको बुला भेजा।

नारायणमैया आअे। नागवेणीने अपनी सारी परेशानी अुनसे कह डाली। अुन्होंने कहा—"अुनको लिखो कि यहाँ अच्छा सूद मिलनेके कारण चाचाने अपने नामसे ही कर्जपर दे दिया है। घरमें खानेके लिअे जितनी जरूरत है, अुससे अधिक चावल नही है।'

यह पत्र पहुँचते ही लक्ष्मीनारायणका अेक और पत्र आया। अुसमें लिखा था–"पाँच सौ रुपअे फौरन भेज दो। यहाँ अेक आसामी सूद-दर सूदपर माँगनेवाला है। भला वहाँ छह रुपया सैंकडेसे अधिक सूद कौन देगा?"

अिस पत्रका कोअी जवाब नही दिया गया। पहले भेजा पत्र ही नागवेणीने पर्याप्त समझ लिया। खैर,अब बार-बार पैसेकी माँग आने लगी। आखिरके अेक पत्रमें लिखा था–"मेरा स्वास्थ्य अच्छा नही, चिकित्साके लिअे कम-से-कम दो सौ रुपअे भेज दो।"

सरसोतीको अुसपर विश्वास नही था। पर नागवेणीसे रहा नही गया। अुसने अपने चाचाके पास जाकर आँसू बहाअे। चाचाने 'तू ही अुसको बुरे रास्तेपर डाल रही है। हाथमें पैसा नही तो घरमें आने दे।" कहकर डाँटा, फिर भी, आखिर अिस बार दो सौ रुपअे लच्चाके हाथ पड ही गअे। वे रुपअे खतम होते ही अेक पत्र और आया। अुसमें भी कम-बेसी सब वही बाते लिखी थी जो अबतक लिखी रहा करती थी। अिस बार नागवेणीके आँसू भी कुछ काम न आअे। नारायणमैयाने स्वयं अपने नामसे लिखा–"जहाँतक हो सके तुम जल्दी घर आ जाओ, यही तुम्हारा अच्छा अुपचार किया जाअेगा। नागवेणीके भी महीने पूरे हो गअे है। अुसके प्रसवके दिन भी नजदीक है। सरसोतम्मासे अब कुछ नहीं बनता। वे बुढ़िया है। नागवेणी सरसोतम्माको घर छोडकर कही नही जा सकती। अैसी हालतमें घरमें किसी आदमीका होना जरूरी है। अिमीलिअे तुम्हें जल्दी घर आ जाना चाहिअे।"

न लच्चा घर आया,- न अिस पत्रका कोअी अुत्तर ही आया। वह केरलमें ही बैठा रहा। वहाँपर न अुसको कुछ बीमारी थी, न कुछ और वह केवल घरसे पैसे मँगाकर मौज करना चाहता था। जब नारायणमैयाका

पत्र हाथमें पडा, तो गुस्सेमें लाल हो गया। अुसने कहा—"अिस बेकार नारायणमैयाका भूत बीचमें आ गया। मेरे बापने जो पैसे जमा किअे वे मुझे देनेमें अिसके बापका क्या जाता है!" वह केरलमें ही बैठा रहा। नागवेणीके कष्टके दिनोंमें वहाँ जाकर अुसकी सेवा-सुश्रूषा करना तो दूर रहा, अुसने अुसको अेक पत्र लिखना भी जरूरी नहीं समझा।

नागवेणीके नौ महीने पूरे हुअे। नारायणमैयाने अुसको बडे आग्रहसे अपने घरपर बुलाया पर नागवेणीने अिन्कार कर दिया। अुसने "जहाँ सरसोतम्मा वहाँ मैं"—कहकर जिद पकडी। बेचारी सरसोतम्माका पहले ही बुढापा था, फिर जीवन भरके दुखों और यातनाओंके बोझसे कमर टूट गअी थी। वह क्या करेगी? अुस बुढियाने खूब समझाकर कहा—"बेटी, मैं बुढिया हो गअी हूँ। मुझपर भरोसा करके तेरा कैसे निभेगा?"

आखिर सत्यभामाको बुलानेके लिअे आदमी पडुमुन्नूर दौडाया गया। सत्यभामा दौडी हुअी आअी। जब अुसने बहूका चेहरा देखा तो अुसकी आँखोंमें आँसू आ गअे। अुसने कहा—"अितने दिन तुम्हें यहाँ अकेली छोडकर वहाँ पडा रहना मेरी भूल थी!"

सरसोतीको जरा धीरज आया। अुसने कहा—"भगवानने सत्याको समयपर भेज दिया!" सत्याने जिस क्षणसे घरमें पैर रखा, नागवेणीको कोअी काम करने नहीं दिया। जब अुसे लच्चाके पत्रोंकी बानका पता चला तो अुसने कहा—"मैं अुस पापीका नाम भी नहीं सुनना चाहती!" होलीके दिन आअे। ठीक पूर्णमासीके दिन नागवेणीको असह्य वेदना शुरू हुअी। अुस वेदनाको वह नहीं सह सकी। अैरोडी खबर पहुँची। वहाँसे छोटी चाची दौडी आअीं। दिनभर नागवेणी बुरी तरह तडपती रही, किन्तु अुसके चेहरेपर आनेवाले सब कष्टोंको सहनेका निश्चय दिखाअी दे रहा था। सरसोती अुसके पाससे हिली तक नहीं। बेचारी सत्या रसोअीघरसे प्रसूति-गृह और प्रसूतिगृहसे रसोअीघरकी दौड-धूप करती रही। छोटी चाची प्रेमसे अुसको आश्वासन देती रही। नागवेणी गर्भवती हुअी तो न अुसका दोहद पूरा किया गया, न सीमन्त-संस्कार ही हुआ, न अिन कष्टके दिनोंमें पतिकी सहानुभूतिका पत्र आया। यही सारी चिन्ताअें अुसे चुभती थीं।

फिर अिससे भी अधिक भयानक चिन्ता भविष्यकी थी। पहले तीन महीनेका गर्भ नष्ट होनेपर जो यातनायें अुसे भोगनी पडी थी अुन्हे अिस समय वह कैसे भूलती? सरसोती भी सारी बाते नही जानती थी। छोटी चाचीकी आँखें वह सब पढ सकती थी। आखिर अुससे नही रहा गया। अुसने आश्वासन देते हुअे कहा—"बिटिया! पुरानी बाते क्यो सोचती है? भगवान है! अुन्हीपर विश्वास रक्खो। भगवान तेरा हाथ नही छोडेगा। अब वैसा नहीं होगा!"

सरसोती "वे पुरानी बाते" और "फिर वैसाका!" कोअी अर्थ नही समझी। अुसने चाचीसे पूछा— "पहिले क्या हुआ था?"

यह सुनते ही नागवेणी चीख अुठी "छोटी माँ! वह मत बताओ!"

छोटी चाचीने अपनी जबान काट ली। सरसोतीका चेहरा पीला पड गया। फिर भी अुसने अैसे समयमें न बोलना ही ठीक समझा। अुसने नागवेणीको आश्वासन देते हुअे कहा—"डरो मत बेटी! कुछ भी नही होगा। भगवान हैं। शालग्रामका नरसिंह हमारी रक्षा करेगा!"

किन्तु नागवेणीने चीखके साथ आँखें मूँद ली। वह बेहोश हो गअी। छोटी चाचीने आँखोपर पानीका छींटा दिया। सरसोतीने पखा झला। सत्या भी दौडी आअी। सबने अुसको घेर लिया।

कोनेमें बैठी धोबिन पास आ गअी।

मध्यरातके समय सबके चेहरे रजनीगधाकी तरह खिले थे। नागवेणी अपूर्व थकानसे सो गअी थी। अुसका बच्चा पास ही पडा था। अभी अिस दुनियामें आधे घण्टा भर भी नही हुआ था, अुसकी माँने अुसको नही देखा था, नही पुकारा था, परन्तु वह पूरे जोरसे चीख रहा था। जब सरसोतीने देखा, नागवेणीके मुँहसे कोअी शब्द नही निकला तो अुसने धीरेसे पुकारा—"बिटिया!"

यह शब्द सुनकर नवजात शिशु अेक बार पुन. चीख अुठा। अुसकी आवाजसे नागवेणीने आँखें खोली। सूर्यको देखकर खिलनेवाले कमलकी तरह नागवेणीके ओठ खिल अुठे, जरासे हिले और ध्वनि निकली—"मेरे भगवान!"

दिन "सण्ण" भी कहा गया था पर वह नाम चार-आठ दिनसे अधिक नहीं चला। आखिर 'पुत्तू'ही कानोको अच्छा लगा। बच्चेको अुसी नामसे पुकारा जाने लगा।

नागवेणी अपने पुत्तूके लालन-पालनमें सारा दुख भूल गअी। मअीकी छुट्टी हुअी। वकील साहब भी अपने गाँव आअे। अैरोडी पहुँचते ही दूसरे ही दिन अपनी नागवेणीको देखने कोडी गअे। वहाँ नागवेणीका पुत्तू शुक्ल-पक्षमें चन्द्रमाकी तरह खिल रहा था। वकील साहब आते समय पुत्तूके लिअे मंगलूरसे सोनेकी जंजीर लाअे थे। पुत्तूकी कमरमें नानाने वह जंजीर पहना दी। वकील साहबको अब अैरोडी अच्छा नही लगता था। अुन्होने अपनी छुट्टीके आधेसे अधिक दिन अपनी लडकीके पास ही बिताअे। जितना ही अपने नातीको गोदमें लेकर खिलाते अुतना ही कम लगता। अेक दिन वे पुत्तूको गोदमें अुठाकर खिला रहे थे। नागवेणी भी पास ही थी। आस-पास कोअी नहीं था। तब वकील साहबने कहा-' नागू! जब मैंने सुना तू दुबारा माँ बनने जा रही है, तो मेरा दिल ही टूट गया। मैंने सोचा था, जैसा पिछली दफे हुआ.. ..। खैर, भगवानकी कृपा। जब मैंने तेरे सुख-प्रसवकी बात सुनी, तो अितनी खुशी हुअी कि .।" बूढ़ेकी आँखोमें खुशीके मोती झलक आअे और पुत्तूने अुनकी नाक पकड ली! दोनो हँस पडे।

नागवेणीकी छोटी बहन कृष्णवेणी भी बार-बार अपनी बहनके पास आती थी। वह अब बारह वर्षकी हो गअी थी। अेक दिन नागवेणीने अपने बापसे कृष्णिके ब्याहकी बात कही, तो अुन्होंने कहा-"बेटी! तेरा ब्याह कर मै डर गया हूँ। तू जिस नरकको भुगत रही है वही कही अुसके हिस्सेमें न आअे ?"

"क्या करे पिताजी ? जो नसीबमें है वह भुगतना ही चाहिअे और जो अेकके नसीबमें है, वही दूसरेके नही होना!"—नागवेणीने कहा।

"हाँ बेटी! नसीबमें क्या लिखा है, यह ब्याहके बाद ही पता चलता है! अगर मैंने ब्याहसे पहिलेसे ही कुन्दापुरके किसी आदमीसे पूछ लिया होता तो अच्छा होता। अब सभी कहते हैं, पहिलेसे ही यह अैसा था! किन्तु अुस समय किसीने नही कहा! और न मैंने किसीसे पूछा?" बापने अपनी व्यथा कही।

अिससे नागवेणीकी व्यथा और बढी। वह लच्चाका पूर्व वृत्तान्त नही जानती थी। अुसने सोचा, मगलूरमें ही वे गलत रास्तेपर गअे। वह बापको बार-बार तग करती हुअी कहा करती थी–"कुछ भी हो आखिर वह अिस बच्चेके बाप तो हैं। किसी न किसी तरह अुनको घरमें रहनेके लिअे तैयार कीजिअे।"

अिसपर बापका अेक ही जवाब था—"नाग्! यह तेरा भ्रम है। पीतलका सोना कैसे होगा? मैं अुसके बारेमें सोचा करता हूँ। केरलमें अुसको नौकरी लगी थी। वहां अपने अफसरोंसे लडकर कही चला गया है।"

नागवेणीने यह सुना तो अुसकी निराशा और भी बढी। भला अैसी खबरोंसे शान्ति कैसे मिलती?

वकील साहब अुन दिनो अपने दोनो लडकोंके ब्याहके चक्करमें थे। अुनका बडा लडका बापकी तरह वकील बनकर मगलूर गया था। वह अब ब्याहके योग्य था। अबतक वह अपने ब्याहका विरोध करता रहा, अिसीलिअे अुसका ब्याह अुसकी रायकी राह देख रहा था। अब घरमें जो जन्म-पत्रिकाअें आती, अुनमेंसे कौन-सी चुने, यही विचारणीय विषय था। किन्तु लडकीकी बात अैसी नही थी। यद्यपि अुसके लिअे लोग भी खूब आ रहे थे, फिर भी लडकोंके पूर्व-वृत्तका सम्पूर्ण अध्ययन किअे बिना अुनकी जन्म-पत्रिका देखनेका साहस नही होता था। वैसे तो वकील साहब "जो ब्याह किया वही बस है!" यही कहा करते थे। अथवा भावी दामादको साल-दो-साल घरमें रखकर, पूरी कसौटीपर कसकर ही लडकी देनेका विचार रखते थे। कही पहिली गलतीकी पुनरावृत्ति न हो जाअे।

वासुदेवमैया जैसे प्रतिष्ठित और श्रीमन्त वकीलको भला रिश्ता मिलनेमें क्या कठिनाअी हो सकती? यद्यपि लच्चाके अितिहाससे वे डर गअे थे। गाँवकी हालत कोअी खराब नही थी। आखिर अच्छी जगह रिश्ता हुआ, और सदाशिवका ब्याह भी हुआ, कृष्णवेणीको भी सदाशिवकी पत्नीके भाअीको देकर ब्याह कर दिया गया। "अिस प्रकारके ब्याहसे अेक दूसरेका सम्बन्ध अुलझे हुअे होनेसे अधिक मधुर हो गअे", अैसी वासुदेव-मैयाकी वकीली बुद्धि कहती थी। कुछ भी हो आखिर नागवेणी अपने नन्हे

पुत्तूको लेकर अपनी छोटी बहनके व्याहमें अैरोडी जाकर लौट आअी, किन्तु बडे भाअीके व्याहमें नही जा सकी। जून महीना आरम्भ होनेके पहिले ही दोनों व्याह सम्पन्नकर वकील साहब मगलूर चले गअे।

कोडीके अैताल्के घरमें तीन अनाथ महिलाअें बैठकर "अिस साल वर्षाकी बूंदें गिनकर बिताअें या कुछ खेती-बारी करे" का विचार कर रही हैं। सरसोती कहती है—"मुझसे जो होगा सो करूंगी।" किन्तु अुससे घरके पासवाले बागसे अधिक दूर चला नही जाता। जबतक रामअैताल थे, तबतक सत्यभामा खेतपर नहीं गअी किन्तु अब समय काटनेके लिअे अुसने अेक मुडेका खेत करनेका सोचा। अिससे और कुछ न होनेपर भी नवरात्रिके दिनोंमें नव-भोजनके लिअे दूसरोंके घर धान मांगनेकी जरूरत तो नहीं पडेगी। घरके खेतके धान कूटकर नअे चावलका पायस बना सकेगी। किन्तु नागवेणी अिस साल कुलथी लगाअूंगी, कद्दूके बीज बोअूंगी, अवडा और दूसरी साग सब्जी लगाअूंगीकी बाते कर रही थी। हां, वह दूसरी फसलकी बात नही करती थी, क्योंकि अुसमें पानी सींचना पडता, जो कौन करता? बेचारी खेती-किसानीकी अेक बात भी नही जानती थी, किन्तु "यों ही घरमें बैठकर खानेमें क्या शोभा है?" सरसोतीकी यह बात अुसको अच्छी लगती है, कुछ न कुछ करना ही चाहिअे।

पर अुसका स्वप्न आसानीसे पूरा होनेवाला नही था। अुसके पुत्तूको छह महीनेके अन्दर यकृतिकी बीमारी शुरू हो गअी। अुसका हंसना-खेलना बन्द हो गया। वह दिनभर चीखा करता था। अब नागवेणीका खेतीके प्रति अुत्साह मन्द पडकर शिशु-सरक्षण और शिशु-चिन्ताका काम प्रारम्भ करना पडा। घरके बुजुर्ग न जाने किस-किसकी दवा मांगने लगे, देवी-देवताओंकी मनौतियां भी शुरू हुअी। नवरात्रि आअी और गअी। नवरात्रिके बाद निरन्तर तीन महीनेतक अपने पुत्तूके लिअे घरकी स्त्रियोंने जो कष्ट अुठाअे, जो दौड-धूप की, वह सब कही नही जा सकती, किन्तु यह सब कुछ किसी काम नहीं आया।

अेक दिन बच्चा बरामदेपर सोया था। वह रोजकी तरह रोना छोडकर हंस रहा था। त ता त -कर शिशुराग आलाप रहा था।

नागवेणीने सरसोतीसे कहा–"न जाने क्यो आज बच्चा खुश है, चेहरा खिला हुआ है !" किन्तु जैसे कि वह स्वय कहती है––"पता नही मैने किस मुंहसे यह बात कही थी, अुसके बाद बेचारा अेक दिन भी नही जी सका !"

बेचारी नागवेणी अुस बच्चेको देखकर अपनी सारी चिन्ताअें भूलनेका प्रयास करती थी, आखिर वह भी चला गया। तीन दिनतक बेचारीने आंसू बहाअे। किससे कहे, मांका दुख मां बनकर ही जाना जा सकता है। "आखिर अपने बापका मुंह देखनेसे पहिले ही चल बसा"––यह कहते अुसका कलेजा फट जाता।

सत्यभामासे अुसका दुख नही देखा गया। अुसने अपना कलेजा थामकर नागवेणीको सात्वना देते हुअे कहा— "नागू ! हमारे नसीबमें भगवानने जो नही लिखा है, वह मांगनेसे कैसे-मिलेगा ? अुस बेचारेका अुतना ही ऋणानुबन्ध था, जिसने दिया वही ले गया। असके लिअे दुख करनेसे क्या लाभ ?"

सरसोती तो मृत्युजय बनी बैठी थी। अुसने अपने जीवनमें कअी मौते देखी। मृत्युने अुसके कअी सगी-साथियोको निगल लिया। यद्यपि नागवेणीका रोना देखकर अुसका भी हृदय रोता फिर भी क्षण भरमें कभी महाभारत और कभी भागवतकी कहानियां अुसके सम्मुख आ जाती। अुसने नागवेणीको धैर्य देते हुअे कहा–"बेटी ! गांधारीके सौ बच्चे हुअे, आखिर अुनमेंसे कौन रहा ? न जाने हम क्यो पैदा होते है और क्यो मरते हैं... ... । भगवानका कोअी खास हिसाब है... . जो हम नही जानती !"

दुखके क्षणमें अुसको अेक-अेक कहानी याद आती, जो अुसको शान्ति देती। सरसोतीकी बाते सुनकर नागवेणीने कहा—"आपने जो दुख-कष्ट अुठाअे हैं, अुन हजारोंमें मैंने अेक भी नही देखा, फिर भी अपना नसीब देखकर ही रोना आता है। आपको देखकर सहन करना सीखती हूं।"

अेक दिन शीनमैयाके बिस्तर पकडनेकी खबर आअी। सरसोती अुन्हे मृत्यु-शय्यापर देखने गअी। शीनमैयाका बडा लडका भी बंगलूरसे आया था। सरसोतीको देखकर शीनमैयाने कहा — "सरसोती, तुम आअी ! लच्चाके

वच्चेकी वात मैंने सुनी ! क्या करता, विस्तरपर पडा था, कुछ नहीं कर सका। पता नही वह हमें ले जाना भूलकर अिन छोटे-छोटे वच्चोंको क्यों ले जाता है !"

"वेटा नरसिंह ! लच्चाकी भी कोअी खवर है ?"—सरसोतीने वाहर आते समय शीनमैंयाके लडकेसे पूछा। दो साल हुअे लच्चाकी कोअी खवर नही। अुसका कोअी पत्र भी नही आया था।

"लच्चाकी खवर न मिली तो क्या ? अुसको क्या हुआ है ? वौरग पठेमें अच्छी तरह है। कभी-कभी वेंगलूर भी आता है। हमारे यहाँ भी आता है। कह रहा था, वही किसी नौकरीपर है, पर किसीने वतलाया, कि अुसने सव कुछ खो डाला। अभी पन्द्रह दिन पहिले मिला था, तो कह रहा था, घरसे पत्र आया !"—नरसिंहने कहा।

"नही वेटा ! यह सव झूठ है। करीव तीन साल हुअे, अुसने घरका मुँहतक नही देखा। कुछ दिन पत्र लिखता रहा, अुसके वाद वह भी नही ! जव कभी पत्र लिखता था, अितने रुपअे भेजो, अुतने रुपअे भेजो, यही लिखता था। हम कहाँतक भेजते ? जव यहाँसे रुपया भेजना वन्द हुआ, तो अुसका पत्र आना भी वन्द हुआ।"

अुस दिन और कोअी खास वात नही हो सकी। शीनमैंयाकी वीमारी वुढापेकी वीमारी थी। अिसलिअे नरसिंह अन्दर गया। अैसे ही कुछ दिन वीते और शीनमैंयाने अपनी जीवन-लीला समाप्त की। अुसकी अन्त्येष्टि होने तक सरसोती अपने पडोसियोंके दुखमें समभागी हुअी। अन्त्येष्टि हुअी। वैकुण्ठ समाराधना भी हुअी। अव प्रश्न यह आया कि घरका प्रवन्ध कौन करे ? वडा भाअी रहे या कोअी छोटा भाअी ! आखिर शीनमैंयाका तीसरा लडका ओरटाको वहाँ रखनेका निर्णय किया गया। क्योंकि विना नरसिंहके वेंगलूरका कारोवार चलना असम्भव था और अुसके पास वहाँसे पत्र भी आ रहे थे।

नरसिंहके वेंगलूर जानेसे पहिले यहाँका सारा हिसाव-किताव देखना आवश्यक था। हिसाव देखते समय लच्चाकी शीनमैंयाके लिअे कर्जकी वात भी सामने आअी। वह कर्जा अुसके हिस्सेकी जमीन वन्धक रख कर लिया

गया था। अिससे वह रकम बढकर करीब तीन हजार तक हो गअी थी। अिसके बारेमें लच्चाको पूछना व्यर्थ था, अिसलिअे नरसिंह अैतालके घर आया। वहाँ आकर अुसने सरसोतीसे बातचीत करना प्रारम्भ किया।

"शायद वह लच्चाकी पत्नी होगी न!"—वहीं अेक तरफ नागवेणी कुछ काम कर रही थी, अुसको देखकर नरसिंहने कहा।

"हाँ बेटा! हमारी नागवेणी है। व्याहके बाद अेक दिन भी सुखसे नहीं रही। हम पतिके मरनेसे विधवा हैं, तो वह पतिके जीते जी विधवा है।"—सरसोतीने कभी अपने घर न आनेवाले नरसिंहसे आदर-सत्कार करते हुअे अपने दिलकी बात कही।

नरसिंहको अपने आनेका अुद्देश्य बतानेमें खूब समय लगा। अैतालके घरकी स्त्रियोंकी राम-कहानी सुन लेनेपर वीरेसे अपनी राम-कहानी कहनी पडी। आखिर अुसने शान्तभावसे कहना शुरू किया—"मैं यहाँकी कोअी बात नही जानता, फिर भी जब मैं घरके कागज-पत्र देख रहा था, तब पता चला, कि आपके लच्चाने अपनी जमीन हमारे यहाँ बन्धक रखकर कर्जा लिया है। करीब तीन हजार रुपअे होते हैं, जिसकी अवधि भी खतम हो गअी है। जिस दिन यह रकम दी गअी, अुस दिनसे अेक पैसा भी नहीं मिला, म छह महीनेके बाद आअूँगा। तबतक अगर कोअी प्रबन्ध हो जाअे, तो अच्छा होगा!"

सरसोती, सत्या कुछ भी नही जानती थी। रामअैतालके पीछे क्या व्यवस्था हुअी, यह भी वे ठीक तरहसे नही जानती थी। लच्चाने शीनमैयासे जो कर्जा लिया था, आगे जाकर अुसी कर्जमें अुसने अपने हिस्सेकी जमीन लिख दी थी। पर वह ऋण दे कौन? सरसोती तो अपने पूर्वजोंकी जायदाद रेहन लिख जानेसे बडी दुखी हो गअी। यह खबर अैरोडी पहुँचाअी गअी। वहाँसे वकील साहब तक पहुँची। अुन्होंने लिखा—"अगली छुट्टियोंमें घर आअूँगा, तभी सब प्रबन्ध कर दूँगा!"

मअीकी छुट्टी आअी। वकील साहब मगलूरसे अैरोडी आअे। बेंगलूरसे नरसिंहको भी बुलाया गया। दोनोंमें बातचीत होकर मुकदमा चलानेका निश्चय हुआ।

कोर्ट खुलते ही नरसिंहने अदालतमें मुकदमा दायर किया। अदालतने लच्चाके नाम नोटिस दिया। नोटिस मिलनेपर भी लच्चाने अुसकी ओर ध्यान नहीं दिया। परिणाम क्या होगा यह वह पहिलेसे ही जानता था। वह अुस प्रान्तमें गया ही नही, मैसूरमें ही रहा। आखिर अदालतमें अुसकी जायदाद नीलाम हुअी और वह सारी सम्पत्ति, जिसमें रहनेका मकान भी था नागवेणीके नाम खरीद लिया गया। हाँ, तीन हजार रुपअे तो देने ही पड़े।

"अुसने अगर पूर्वजोका घर वेच दिया होता, तो वह भी चला जाता! आखिर वह तेरे पास तो रहा!"—वकील साहवने कहा।

"अव रहा तो भी क्या और गया तो भी क्या? अगर पुत्तू जिन्दा होता. ! अव यह घर भी किसके लिअे!"—नागवेणीने कहा।

"यह सुनकर वकील साहवकी आँखोंमें आँसू भर आअे। अुनके मनमें आया, मैंने अपने हाथसे अिसका खून किया!"—अुनका हृदय रो अुठा।

काल किसीके लिअे नही रुकता। वह अपनी गतिसे चलता है। "तो क्या वह लच्चाको सद्बुद्धि आनेतक रुका रहेगा?" वह नो अपनी ही गतिसे सरकता जा रहा था।

नागवेणी आगे-आगे सरकनेवाले अुस कालके क्षण गिनती रहती थी। जेठ आता तो वह कहती "हाँ, अव धानकी खेती करनी है!" अगहन आते ही वह कुलथीके खेतकी वात सोचती। मकर-सक्रान्ति आते ही वागकी वात करने लगती और कभी आँखोमें आँसू भरकर कहती—"अितने साल हुअे अुनका मुँह नही देखा ..पुत्तूको भगवानके घर गअे .साल हुअे!" अुसके हिसावसे सरसोती ही अिस घरका अेक वच्चा है। अुसकी अुम्र सत्तर सालसे अधिक हो गअी थी। शरीरके मासका, पता नहीं कहाँ चला गया, वेचारी झुर्रियोंके जालमें लिपटा ककाल मात्र रह गअी थी। आँखोंसे दिखाअी नही देता था। पिछले अन्दाजके सहारे घरमें घूमती-फिरती थी। सरसोतीसे वातें करनेमें नागवेणीको आनन्द आता था। अुसके अनुभव सुननेसे प्रसन्नता होती थी। अुसकी सेवा करनेसे जीवनमें शान्ति-सी मिलती थी और वही अिस घरका वच्चा तथा नागवेणीकी आराध्यदेवी है।

सरसोती कभी नागवेणीका हाथ पकडकर अुसको अपने बचपनके अनुभव सुनाती, तो कभी अुसकी पीठपर हाथ फेरते हुअे अैताल-खानदानकी पुरानी दरिद्रताकी कहानी सुनाती। कभी पारोतीके व्याहकी वात सुनाती, तो कभी अुसको गोदमें लेकर पारोती और अैतालके दीर्घ दाम्पत्य-जीवनकी बाते कहती। कभी-कभी ये सारी वाते वताते हुअे "सब गअे और यह सारा देखनेके लिअे मै ही क्यो रही ?"—कहकर रो पडती।

तब नागवेणी भी अेक नन्ही बच्चीकी तरह अुसके आँसू पोछकर कह देती—"माँ! अैसा मत कहा करो, मेरे रहने तक तुम भी रहो!"

"बेटी! अभी तू बच्ची है! तुझे जीना चाहिअे। अब भी शालग्रामके नरसिंह भगवान अुसको अच्छी बुद्धि देंगे। वह यहाँ आकर तेरे पास रहेगा। तू अैतालके घरका नाम रोशन करेगी! पर मुझे जीकर क्या करना है ?"—सरसोती नागवेणीको सात्वना देते हुअे कहती थी।

आखिर अुसने अेक दिन कहा—'बेटी! मै भी अेक पागल हूँ! न जाने क्यो अेक असाध्य साध तग कर रही है। भैयाके रहते हुअे अुनसे कहती, तो अुनमें वह आशा पूरी करनेकी ताकत थी। अब कहकर क्या होगा ? अरण्यरोदन ही है!"

"माँ, आपकी क्या साव है! आपका जीवन ही अेक यज्ञ है।"—नागवेणीने कहा।

"अैसे नही बेटी! मनमें आता है कि मरनेसे पहिले अेक वार काशी-यात्रा करती, अगर भगवानकी कृपा होती तो वही आँखें मूँद लेती! मगर अैसा पुण्य सबके नसीबमें नही होता। आखिर कुछ न भी हो, तो भी गगामें अेक डुबकी लगा आती! पर अब क्या होगा ? आँखोसे नही दीखता। बैठी जगहसे अुठा नहीं जाता। अब काशी क्या और रामेश्वर क्या ? सब यही घरमें बैठे-बैठे होनेको है।"

सरसोतीको अब काशी-यात्राके ही सपने आने लगे। अुसने अपनी काशी-यात्राकी भूख मिटानेके लिअे काशीकी कहानियाँ कहना शुरू की। "रामअैतालके बाप कोदण्डरामने पैदल काशी-यात्रा की थी।"—कहकर सरसोती अुसका आकर्षक वर्णन सुनाती।

अब छठवाँ युगादि था। छठवीं युगादिका अर्थ था पुत्तूके गमे छठवीं युगादि, छठवे वर्षकी प्रतिपदा! अुस दिनसे वह अपने घरसे कहीं नहीं गअी। हाँ, कभी-कभी किसी जरूरी कामके लिअे सुबह अैरोडी जाकर शामको लौट आती। अैरोडी जानेपर भी अुसको सरसोतीकी फिकर रहती। कहीं वह गिर पडी तो! कहीं चोट लगी तो! अिसी डरसे वह जहाँ कहीं भी होती, परेशान होकर घर लौट आती। जब कभी वह अुससे जरा दूर जाती, यही डर अुसके पीछे-पीछे लगा रहता और अिसी डरसे भयभीत घर आती।

चैत बीतकर वैसाख लगा। वकील साहब मअीकी छुट्टीमें लडकीको देखने कोडी आअे। आते ही अुन्होंने सबसे प्रेमपूर्वक बातचीत कर सबको लच्चाकी खबर दी—"वह कभी बेंगलूर, तो कभी मैसूर जाता है। जहाँ जाता है, वहाँ होटल, जुआ, सट्टा, . . .आखिर कर्जा करके वहाँसे भाग जाना! कहते हैं, यही अुसकी जिन्दगी है। अभी कुछ दिन पहले हमारे घर आया था। सदाशिवसे मिलकर मुझे घरपर जाना है, पर क्या करे मोटरके लिअे पैसे नहीं, कहकर पाँच रुपअे लेकर चला गया। खानेके लिअे कहनेपर भी नहीं ठहरा। मेरे आनेपर सदाशिवने सारी बाते कहीं।"

ये सारी बाते सुनकर सरसोतीने कहा—"अब भी अुसको भगवान अच्छी बुद्धि देगा, वह अपना घर सँभालकर रहेगा।"

"घर सँभालकर रहेगा या घर बरबाद कर देगा, कौन जाने!"

"वह गाँवमें आया है क्या ?"—सरसोतीने पूछा।

"मेरे रहने तक वह नहीं आअेगा। हाँ, अुसके बाद वह घरको लूटने आअेगा। पचास बाते कहकर रुपया माँगेगा। पर मैं कहे देता हूँ मुझसे पूछनेके पहले अुनको अेक पैसा भी नहीं देना!"—वकील साहबने अपनी लडकीसे कहा।

अुस दिन रातको वकील साहब लडकीके घरपर रहे। रातको वकील साहबने नागवेणीको अुसकी छोटी बहनकी बात बताअी—"वे दोनों अब मद्रासमें हैं। सौ रुपअे वेतन पाता है। लडका बडा अच्छा है!"

नागवेणीने अपने मायकेकी कुशल-मगल सुननेके बाद कहा—"बापू ! आपसे अेक बात कहती हूँ, अिन्कार तो नही करोगे ?"

"वह क्या वेटी ?"

"अिन्कार नहीं करोगे ना !"

"मुझसे होनेका काम होगा तो जरूर करूँगा !"

"कोअी खास बात नही । हमारी सरसोती माँकी अुम्र हो गअी है। पता नहीं अब कितने दिनकी मेहमान हैं। अुसकी अेक जीवनभरकी साव है !"—नागवेणीने कहा ।

"वह कौन-सी साध है, वेटी !"

"कहती हैं, काशी-यात्रा करनेकी वडी साध है ! अुनके मुंहपर कोअी बात स्पष्ट नही आती। कहती हैं अिस अन्धीका वोझ कौन अुठाअेगा ? शायद अुनके पुण्य और आशीर्वादसे मुझे भी अच्छे दिन . ।"

अुसकी आँखें भर आअीं। सुनकर क्षण भर वकील साहव चुप रहे। आखिर अुन्होने कहा—"अच्छा है वेटी ! मेरे भी वाल सफेद हो गअे हैं। अब मैं धीरे-धीरे अपनी वकालतका काम भी सदाशिवपर छोडता जा रहा हूँ। मै ही तुझे भी ले चलूंगा और अुन्हे भी !"

नागवेणीने खुद जानेसे अिन्कार कर दिया। अुसने कहा—"वापू, मै नही जाती। हाँ, छोटी साससे पूछकर देखती हूं।"

वकील साहव नागवेणीको राजी नही कर सके। पर घरके वडोका जाना निश्चय हुआ। वकील साहवने दिन देखकर फौरन काशीके लिअे प्रयाण करनेका निश्चय किया।

दूसरे ही रोज सुवह नागवेणीने सरसोतीसे कहा—"माँ ! वापू कहते थे कि वे काशी-यात्राके लिअे जा रहे है। आप दोनोको ले जाअेंगे।"

यह सुनकर सरसोतीने कहा—"वेटी ! मुझसे पूछा अितना ही वहुत। मुझ जैसी अन्धीको साथ लेकर वेचारेको परेशानी अुठानी पडेगी। और मैं रास्तेमें मर गअी, तो क्या होगा ? दूसरोको बिना किसी प्रकारका कष्ट दिअे जीना भी काशी-यात्रासे कम नहीं। सत्या ! तू जा। नागवेणीको साथ ले जा ! मै यहीपर पडी रहूँगी !"

: १८ :

तीन दिन हुअे, लच्चाको घर आअे, किन्तु वह विचित्र मेहमान-सा है। अुसका कोअी विशेष आतिथ्य करनेकी नागवेणीकी अिच्छा नहीं थी। जबसे पुत्तूकी मृत्यु हुअी, अुसके मनमें पतिके प्रति घृणा-सी हो गअी थी, कोअी आत्मीयता नहीं रह गअी थी। पर घरपर आअे पतिको "चले जाओ" कहनेकी अशिष्टता वह नहीं कर सकती थी और अुसका वैसा करना अुचित भी न होता। बस खानेके समय "खाना तैयार है" और नहानेके समय "नहाने चलो" कहती। सोनेके समय बाहर बरामदेमें बिस्तरा बिछा देती और खुद अन्दर सो जाती। अैरोडीसे आया हुआ घरका नौकर भी वहीं बरामदेपर सो जाता। लच्चाने भी अुससे बोलनेका कोअी विशेष आग्रह नहीं किया। अुसके गांव छोडनेके बाद यहां क्या-क्या हुआ, अिसकी पूरी जानकारी अुसने प्राप्त कर ली थी। सारी बातें जानकर ही अुसने गांवमें पैर रखा था।

किन्तु निराश होकर बैठनेकी अुसकी आदत नहीं थी। आनेके बाद वह दो-चार दिन चुप रहा, परन्तु पांचवे दिन अुसने मुंह खोला। नागवेणी अन्दर रसोअी बना रही थी, गीली लकडियां फूंक-फूंककर अपनी आंखें पोछ लेती थी। लच्चा साहब अन्दर पहुंचे। अन्दर जाते ही पूछा— "नागवेणी, मैं यहां रहूं या जाअूं?"

"मैंने आपको अैसा कब कहा है?"

"तूने कहा तो नहीं . . पर बोलती भी तो नहीं।"

"मेरे पास बोलनेके लिअे धरा ही क्या है, जो मैं आपसे बोलूं? आप ही तो हमें कूडेसे बदतर समझकर कुछ कहे-सुने बिना चले गअे थे। बातोंका बोझ हमपर क्यों डालते हैं?"— नागवेणीने कहा।

"जो हुआ सो हुआ। मेरा नसीब ही वैसा था। जो कुछ मैंने किया, अुसमें घाटा ही अुठाया, किसीमें कोअी लाभ नही हुआ। जितने दुख-कष्ट अुठाये, जितनी ही मेहनत की, अुतना ही नुकसान होता गया, वह सब मैं किससे कहूँ ?"— लच्चाने कहा।

अिन बातोमें नागवेणीको कोअी सार नहीं दीख पडा। वह सुनकर भी अनसुनी कर गअी।

" आखिर मैंने सोचा जो मेहनत बाहर करनी है, वही घरमें क्यो न करूँ। कही भी बैठकर खाना है। सोचा जो बाहर मरना है तो घरमें जाकर मरे! अिसीलिअे घर चला आया!"

नागवेणीने फिर भी कुछ नही कहा। यह देख लच्चा जरा सोचमें पड गया। आखिर अुसने कहा—"क्या कहती है, यहाँ मैं न रहूँ? अैसा है तो वही कहो। मुझे किसीपर बोझ बनकर रहनेकी अिच्छा नही है। वैसे तो घर मेरे बापका है! फिर भी अुसी घरमें मुझे भिखारीकी तरह तुम लोगोका मुँह देखना पडता है। निर्लज्जताका जीवन! मैंने सोचा, आखिर घर है। घरमें जाकर रहें। आया, आकर कहा, मैं यहाँ रहता हूँ! खैर, अगर तुम्हे मेरा रहना पसन्द नहीं है, तो चला जाता हूँ। कर्ज अदा करनेके नामपर जो थोडी-सी सम्पत्ति थी, अुसे भी तुम्हारे बापने तुम्हारे नाम लिखवा लिया। मेरे बाप द्वारा तुम्हें अितना सब देनेपर भी तुमने मुझे राहका भिखारी बना दिया न!"

अबतक नागवेणी चुप थी, पतिकी बाते सुन रही थी। अब अुससे भी नही रहा गया। आखिर अुसने भी कहा—"जो कुछ किया गया, वह मेरे लिअे नही था! बल्कि आप अपने सिरपर पूरी खाक न डाल ले, अिसीलिअे किया गया था। नरसिंहमैयाको दिअे तीन हजार रुपअे किसके लिअे गअे? आपपर ही तो। अुसके लिअे क्या बना बनाया घर चला जाना चाहिअे था? यहाँ जो रहती हूँ, वह आपके लिअे नहीं तो क्या बैठकर खानेके लिअे? अगर अैसा ही होता तो बापके घर न जा बैठती!"

लच्चाने भी सोचा कि यह बिना तथ्यकी बात नहीं। वह चुप हो गया। तीन-चार दिन तक तो खा पीकर सोने और अेक-दो बार अपने पुराने मित्र

नही अिस नअी दोस्तीके लिअे मांने अुसको कअी वार डांटा भी, पर अुसने मांसे हँसते-हँसते कहा—"मां, अुसके जालमें फँसनेके लिअे क्या मैं वच्चा हूं ? यों ही आता है वक्त काटनेके लिअे। वैठने देता हूं ! ताशमें जोकर होता है न। वस वह भी वैसा ही है !"

लच्चाको आअे करीव दो महीने हुअे। खाना समयपर मिलता था। कुछ दूध-घी भी मिल जाता था। शरीर जरा भरा। अिसका अर्थ यह नहीं कि अुसका स्वास्थ्य अच्छा हुआ या लगी हुअी वीमारी चली गअी। फिर अुसने वीमारीकी चिकित्सा भी कितनी की ? चिकित्साके नामपर चालीस-पचास रुपअे और नागवेणीकी दो चूड़ियां वाजारमें अवश्य चली गअीं ! क्या अिसीसे शरीर स्वस्थ होता ?

यद्यपि लच्चा कामका कीडा था, फिर भी अिस विषयमें अुसे नागवेणीसे कुछ कहनेकी हिम्मत नही होती थी। अुसको डर लगता था कि कहीं वह यह न पूछ वैठे कि क्या दो वच्चोंका मरना कम हुआ ? अिसके अलावा शाम होते-होते वह लच्चाके पास आना-जाना, वोलना, हँसना भी वन्द कर देती। अिसपर लच्चाने भी अेक-दो वार मनका जहर अुगलते हुअे कहा—"तेरी निगाहोंमें मैं कुप्ठ-रोगी, अछूत हूं न ?" यह सुनकर नागवेणीको लगा, काशीयात्राके लिअे गअे हुअे लोगोंके आने तक तो मैं वच जाती।

काशीयात्रा कर आनेमें क्या युग वीतते हैं ? आज वह काल नहीं रहा जव कि रेलवे स्टेशनतक पहुंचनेमें महीनों लग जाते ! जव कोदण्डराम काशीयात्रा करने गअे थे, अुनको आवीसे अधिक काशीयात्रा पैदल करनी पड़ी थी और आजकल जमीनसे पैर लगानेके पहले काशी-यात्रा हो जाती है ! केवल सात ही आठ सप्ताहमें वकील साहव काशी-रामेश्वरकी यात्रा करके घर पहुंच गअे। जव नागवेणीने सुना, यात्राको गअे हुअे यात्री आ रहे हैं, वह दौडती हुअी अेरोडी पहुंची। वहां जाते ही अुसने सरसोतीके कानमें कहा—"मां ! जिस दिन आप गअी अुसी दिन वे आ गअे !"

सुनकर सरसोतीने कहा—"अुसका आना और न आना अेक-सा है !"

सरसोती और सत्या अपने घर आअीं। अैतालरामके घर मानो अुन दिन रातको मेला ही लग गया। गांव भरकी सव सुहासिनियां और वडे-वूढे

वहाँ आओ। सबने कहा—"दीदी ! आपका भाग्य बडा है ! नही तो क्या अिस अुमरमें कोअी काशीयात्रा करके वापस आता है ! आपका पुण्य ही अैसा है। भगवानकी कृपा है सब !" सबने सरसोतीके पैर छूकर प्रणाम किया। सत्यभामाने भी अपने जीवनको कृतार्थ समझा।

जबसे सरसोती काशीयात्रा करके आअी, अुसके रोम-रोमसे हास्य फूट पडता है। अुसकी प्रसन्नताका पारावार नही। असीम प्रसन्नता, अनन्त शान्ति ! जब कभी वह नागवेणीको देखती, तो कहती—"बेटी ! तेरे बापने बडी अच्छी तरह चला लिया। तूने मेरी जीवन भरकी साध पूरी कर दी। अिसका सारा फल तुझे है। अिसका सारा पुण्य तुझे है !"

यह सुनकर नागवेणी कृतज्ञतापूर्वक, नम्र हो जाती। वह सिर झुकाकर कहती—"माँ ! आप सबके पुण्यसे वे अेक बार अच्छे हो जाते और ...!" अुसकी आँखें भर आती, हृदय भर आता, मुँहसे शब्द नही निकलते। स्त्रीका अनन्त मातृत्व मुँह तक आकर पुन हृदयको भर देता !

"भगवानने चाहा तो क्या नही होता नागू ! तू दुख न कर। अुस-पर भरोसा रख। वह सब भला करेगा !" सरसोती नागवेणीको आश्वासन देती, और यह सुनकर सत्या कहती—"नागू ! जिस दिन मूसल महुलाकर अुसमें पत्ते फूटेंगे न, अुसी दिन वह सुधरेगा !"

लच्चा भी अब घरमें आया। घरमें आअे हुअे लोगोंके वापस आनेके बाद ही अुसने घरमें कदम रखा। अुसने किसीसे कुछ नही कहा, पर सर-सोतीने अुसके पास जाकर पूछा—"बेटा ! जी कैसा है !"

"जी रहा हूँ। न गाँववालोको भाता हूँ, न मौतको !"

लच्चाका यह जवाब सुनकर सरसोतीको बडा दुख हुआ—"मौत हम जैसे बूढोंके लिअे होती है, बेटा ! तुझ जैसे कच्ची अुम्रके बच्चोंके लिअे नही !" सरसोतीने कहा।

अिस जवाबमें जो जहर था वह भला नागवेणीसे कैसे छिपा रहता ? अुसी दिन शामको अुसने पतिका विरोध करते हुअे कहा—"माँके सामने अैसी बात करना शोभा नही देता ! अुनके सामने तुम्हारे मुँहसे अैसे शब्द

निकले कैसे ? अिस घरमें कौन आपकी मौत चाहता है ? अैसी बात तुमने अुनसे क्यों कही... ।"

बस, वह भी चिढ गया—"तुझे सम्पत्तिका घमण्ड है ! सम्पत्तिके घमण्डसे तू मुझे सिखाने आअी है ? तुम लोगोंको . ... !"

नागवेणीने अपनी जबान रोक ली । अुसने कहा—"कहाँसे कहाँ पहुँचे आप ! मैंने कहा अुनका मन दुखाना...... !"

"मैं जानता हूँ सब, तू अब घरकी मालकिन बन बैठी है न ! जब मैं वहाँ बीमार था, मुझे पैसेकी जरूरत थी तब तीन-चार सौ रुपअे न भेजकर मुझे आवारेकी तरह भटकनेके लिअे मजबूर किया । पाँच-सात वर्ष वनवास करना पडा और यहाँ जिनको तू चाहती है, अुनको काशी-रामेश्वर जानेके लिअे ढेरों पैसे खर्च करती है ! अैसी हालतमें मैं मौतकी याद न करूँ तो किसकी याद करूँ ? मैं मानता हूँ मुझे अैसा नहीं कहना चाहिअे था, पर जो दिलमें सुलगता है, वह जबानपर आनेसे कैसे रुकेगा ?"

लच्चाकी बातें सुनकर नागवेणी चुपचाप वहाँसे चली गअी । अुसने सोचा, अिनके मुँह लगनेसे कोअी लाभ नहीं । किन्तु जैसे ही सत्यभामाने ये बातें सुनीं, अुसका खून खौल अुठा । "तेरा जो तीन हजारका कर्जा दिया, वह क्या कम हुआ ? हमने यात्रा करनेके लिअे जो खर्च किया, वह तेरी आँखोंमें चुभता है । अगर तू ठीक होता, तेरी अक्ल ठीक होती, तो यह सब क्यों होता ?..... "

सत्या गरज रही थी, सरसोतीने आकर कहा—"सत्या ! तू चुप हो जा ! अिस घरमें अगर वही अैसा नहीं कहेगा तो और कौन कहेगा ? अब पता नहीं मरनेके लिअे छह महीने हैं या दो महीने ! हाँ, मरनेसे पहले यह सुन लेना भी ब्रह्माने मेरे नसीबमें लिखा था सो सुन रही हूँ !"

दिन भर अुस बुढियाके मनमें यही बात रही । अुसको लगा, आखिर मुझे काशीयात्रा करके बिना अिच्छाके ही नागवेणी..... अर्थात् अिस लच्चाके ऋणमें पडना पड़ा ! बादमें यह भी अुसके मनमें नहीं रहा । अुसने नागवेणीको बुलाकर कहा—'बेटी ! सत्याका यहाँ रहना ठीक है । आखिर

यह सब अुसके पतिका बसाया ससार है ! पर मैं दूसरे गोत्रकी, मेरा यहाँ रहना लच्चाकी दृष्टिसे अच्छा नहीं होगा। मुझपर कुछ भी खर्च करना तेरे लिअे ठीक नही। मैं कल मन्दर्ति अपने घर जाती हूँ ! मरते समय वे लोग मुझे बाहर नही ढकेलेगे !"

यह सुनकर नागवेणी थर्रा अुठी। आखिर माँके मुँहसे मुझे यह भी सुनना पडा ! अुसका दु ख असयत होकर अुग्र हो अुठा— "माँ ! यह घर-द्वार किसीका नही है। अुनके पूर्वजोने अुनके लिअे जो छोड रखा था, वह सब खतम हो चुका। यह घर जो अिस हालतमें है, वह आपके कारण। आपको यहाँसे जानेके लिअे कौन कह सकता है? जिनको अिस घरमें रहना है वे आपके लिअे अैसा नही बोल सकते ! बिना अुनके मैंने अितने साल बिताअे, पर बिना आपके डेढ महीना बिताना भी मेरे लिअे कठिन होता ! तब तो मेरा जीवन भी मौतसे बदतर हो जाअेगा !"

नागवेणीने समझानेके लिअे ये बाते कही, पर अुनमें पतिके प्रति जो कटावष था, अिससे भी सरसोतीके दिलमें दुख हुआ। अुसने कहा—"नागू ! वह कैसे भी हो तेरा पति है। अुसके लिअे अैसा नही कहना चाहिअे, बेटी ! मैं यहाँ रहूँ या न रहूँ, तुझे अुससे दुश्मनी रखना अच्छा नही।"

लच्चाने भी यह सब सुना। वह भी वहाँ आया। वह अैसी बाते कैसे सहन करने लगा। वह तो अग्निसाक्षीमें हाथ पकडा हुआ पति है न ! अुसने कहा—"तू वकीलकी लडकी है। कानून भी जानती है। तेरे अधिकारका घर है, तू ही रह अुसमें ! यह देख मै चला।"

अुसने रातका खाना भी नही खाया, और चल पडा। पर दूर नही गया। पास ही ओराटाके घर ! ओराटाको भी अिसकी बातोकी चाट लगी थी, और वह भी दोस्त था, पडोसी था। आखिर पडोसीका कुछ धर्म तो है ही। अुसने लच्चाको अपने घरमें रख लिया।

लच्चा ओराटाके घरमें रहने लगा। दो-अेक महीने तक अपने घरमें नहीं आया, बल्कि आने-जानेवालोंके जरिअे नागवेणीको अपने जहरीले वाग्बाण प्रेषित करता रहा। अुसमेंसे कुछ तो अुसके हृदयको सदाके लिअे

जख्मी करनेवाले थे। "नया पति मिलनेके बाद पुरानेका खयाल कौन करेगा ?" कहने तक में अुसकी जबान लज्जित नही हुअी। अिन सब बातोंसे नागवेणीका दिल टूट गया। संताप शत्रुतामें बदल गया। फिर भी अुसने पतिके वाग्बाणोंके विरुद्ध कुछ नही कहा। वह शान्त हो सब सहती रही। सत्यभामा अपने लडकेकी अिन बातोंसे क्रोधसे जलने लगी। वह तो सिंहनीकी तरह गरजकर कहा करती— "अैसे बच्चे पैदा होनेसे तो बांझ रहना अच्छा।" सरसोतीको काशी-यात्रासे जो शान्ति मिली थी, अिन सब बातोंसे खतम हो गअी। वह बडी दुखी रहने लगी। अुसने कहना शुरू किया, "अब जीनेमें सार नही, जितनी जल्दी मर जाअूं अुतना ही अच्छा। किन्तु आजकल सूर्य दक्षिणायण है। स्वर्गके दरवाजे बन्द रहते हैं। मकर सक्रान्तिके बाद मरना अच्छा होगा।"

यह सुनकर सत्या कहा करती—"तुम अैसा क्यों कहती हो ? मरना क्या अपने हाथमें है ? फिर भी मैं कहती हूं, भगवान तुमको कभी बुरा मरण नही देगा।"

अेक दिन ओराटाका छोटा लडका आया। "नागवेणी कहां है ?" आते ही अुसने पूछा। बच्चेकी आवाज सुनकर वह बाहर आअी।

सरसोतीने पूछा—"नागू, यह किसका बच्चा है ?" और अुस बच्चेने जवाब दिया—" पिताजीने कहा है, क्षणभरके लिअे नागवेणी हमारे घरपर आ जाती, तो अच्छा होता।"

"मेरा क्या काम है वहां ? मैं क्यों जाअूं ?"—नागवेणीने कहा।

"यह सब मैं नही जानता। कहते हैं कोअी लच्चाको पकडकर ले जाने आअे हैं।"—अुस बच्चेने कहा। सुनकर घरवाले घबडाअे।

"तू रसोअी कर, मैं हो आती हूं।"—सत्यभामाने कहा और वह अुस बच्चेके पीछे-पीछे गअी। वहां पर दूसरा ही दृश्य अुसकी राह देख रहा था। लच्चा कैद हो रहा था। मलबारमें अुसने कोअी कर्ज लिया था। अुसके लिअे पकडनेका वारन्ट था। कर्जके लिअे कोअी जमानत नहीं देगा, तो जेल जाना होगा। ओराटाने सत्यभामाको समझाया। सुनकर वह दौडती हुअी घर आअी। घरवालोंको सारी बातें कहीं। नागवेणी अपने

पतिका अपमान कैसे सहन करेगी ? और सरसोतीने भी कहा—"वह कैसा ही क्यों न हो ! अंतालके खानदानका ही है न ! अुसको जेलमें जाते देखकर हम कैसे चुप बैठ सकते हैं ?"

नागवेणीने वहां जाकर पूछताछ की—"अब क्या करना पड़ेगा ?"

"कर्जके आठ सौ रुपये और कुछ फुटकर देनेपर छूट सकता है !" ओराटाने सारी बातें समझाओ। पर नगद आठ सौ रुपये अुसके पास थे कहां ? बापसे कह कर मँगवा लेनेके लिअे समय नहीं था ? आखिर खूब बहसके बाद नागवेणीसे प्रोमीसरी नोट लिखवाकर ओराटा अुतनी रकम देनेके लिअे तैयार हो गया।

खैर, किसी तरह किस्सा खतमकर नागवेणी अपने घर आओ। "क्या हुआ नागू !" आते ही सरसोतीने पूछा। नागवेणीने सारी कथा कह सुनाओ। सारी बाते सुनकर अुसने कहा—"यही अेक किस्सा हो तो कोओ बात नहीं ! पता नहीं अिसके पीछे अैसे और कितने किस्से हैं !"

अितनेपर भी लच्चाने ओराटाके घरसे अपना डेरा नहीं अुठाया। वह वहीं रहा। अुसको भी अपनी सद्विद्याकी दीक्षा दी। अब अुसके साथ बार-बार अुडपी जाना-आना शुरू हुआ। दोनोंका नाता-रिश्ता पक्का हुआ। धीरे-धीरे अिस लच्चा-ओराटा-युगलके पराक्रमकी बाते ओराटाकी मांके कानोंतक आने लगी। वह घबडाओ, अुसने अपने बड़े लड़केको पत्र लिखवाया।

मकरसक्रान्ति आओ। नरसिंह अपने भाओकी बात सुनकर घबडाया हुआ घर आया। आनेका असली मकसद अुसने गाँववालोंसे छिपाअे रखा। यद्यपि ओराटाको कुछ अुपदेश देकर वह अुसे लच्चासे दूर रखने आया था, फिर भी अुससे कोओ पूछता तो कहता—"कुलदेवके अुत्सवमें आया हूँ।" "जिसको घरवालोंने, खासकर मां, पत्नीने घरसे निकाल दिया, अुसको कौन अपने घरमें रखता ?" कहकर असने छोटे भाओको बहुत समझाया पर वह अुलटे घड़ेपर पानी जैसा पड़ा। महीना भर अिसी रगड-झगड़में बीता और कोओ फल नहीं निकला। नरसिंहको मालूम हो गया कि अब घरका प्रबन्ध ओराटाके हाथमें रहनेसे यह चार दिनमें सब बेच खाअेगा। ओराटाको

भी अिसका पता चल गया। अुसने लच्चासे सलाह-मशविरा किया। लच्चाने अपना हिस्सा मांगनेके लिअे अुसकाया।

परिणामस्वरूप शीनमैयाके अेक घरके दो हो गअे। हिस्से करते समय पाँच हिस्से हुअे। ओराटा अलग हुआ। दूसरे भाअियोंने नरसिंहका साथ दिया। हिस्सा होते ही ओराटाने बापके पुराने घरमें ही रहनेकी जिद पकडी। जन्म देनेवाली माँ दुश्मन हो गअी। ओराटाका दूसरा भाअी आकर अन्य भाअियोंके हिस्सेकी व्यवस्था देखने लगा। ओराटा स्वतन्त्र हो गया। अपना अलग संसार चलाने लगा।

अिन सब बातोंमें लच्चाको अेक काम मिला। कलह, चुगलखोरी, झूठ अिन सबके सहारे अुसने अपना धन्धा चलाया। अलग होते ही ओराटाने नागवेणीको दिअे गअे अपने आठ सौ रुपयोंका तकाजा किया। बेचारीको बापको लिखकर पैसे मंगवा देने पडे। अिसके बाद और दो-तीन वारंट आअे। अुसने कभी चौरंगी पट्टनमें होटल किया था, जब बल्लारीमें कानूनगो था, तब किसीसे कर्ज लिया था। पिछले सात सालोंमें जहाँ कही कुछ किया था, सबका जुर्माना घरवालोंको भरना पड रहा था। अेकके बाद अेक वारंट आने लगे। कर्जा देनेवालोंको मालूम था कि नागवेणी अपने पतिको जेल नहीं जाने देगी, अिसीलिअे वे अुसपर वारंट निकलवा रहे थे। नागवेणी कितना भी अपने पतिको कोसे फिर भी "हाथ पकडे पतिको, जब कि अुसके बापका ही किया-धरा सब है जेलमें कैसे जाने दे।" कहकर कर्जा दे डाला। अिन कर्जोंको चुकानेमें अब तक जो रकम पास थी, वह सब समाप्त हो जानेसे आखिरमें अेक रकम जमीन गिरवी रखकर चुकानी पडी। अुसे चुकाते समय खुद वकील साहबको मगलूरसे घर आना पडा। वकील साहबने दामादको घरपर बुलाकर साफ-साफ बताया, "बापने जो कुछ बना रखा था वह सब खतम हो गया। अब हम तुम्हारा कर्जा चुका रहे हैं, वह भी दूसरोंसे कर्जा लेकर। अगर अिससे अधिक किसीका वारंट है, तो हम वह कर्जा नहीं चुकाअेंगे। तुम्हारे जैसा आदमी जेलमें रहे या बाहर, दोनों अेक-सा है। अब अगर तुम घरमें किसीको बिना कष्ट और शिकायतका मौका दिये, पडे रहनेको तैयार हो, तो हम यह कर्जा चुकाते है, नहीं तो तुम जेलमें पडे रहो यही अधिक अच्छा।"

नरक-यातना देखकर लच्चाको अब नारायणकी याद आने लगी। वह वकील साहबकी कही हर बातको माननेके लिअे तैयार था। आखिर वह ओराटाके घरका बरामदा छोडकर अपने घर आया। आने ही "पता नही मुझे कौनसे ग्रह लगे थे। मेरे ग्रह ही अैसे खराब थे, नही तो अितने पढने-लिखनेपर भला अैसी बुद्धि क्यो आती! अब तक न आप लोगोको मुझसे कोअी सुख मिला, न अपनेको!"—कहकर पछताने लगा।

यद्यपि अुसने ओराटाके घर जाना-आना नही छोडा, फिर भी घरमें हाहाकार मचाना छोड दिया। नागवेणीके कहनेसे अपनी चिकित्सा भी कराअी और कुछ-कुछ भले आदमीकी तरह रहने लगा।

सरसोती दिनोदिन क्षीण होती जा रही थी। फिर भी अपना काम अपने हाथसे कर लिया करती। दूसरोंसे काम न लेनेका अुसका नियम-सा था। कभी दीवारके सहारे, तो कभी खिडकीके सहारे, अुठकर टटोलते हुअे वह अपना काम कर लेती। अेक दिन न जाने क्यो अुसके मनमें आया—"कुछ भी हो, लच्चाकी जन्मपत्रिका किसीको दिखानी चाहिअे। अुसके ग्रह-पीडा-परिहारके लिअे कुछ करना चाहिअे।"

अुसने सत्यभामासे कहा और वह लडकेकी जन्मपत्रिका बनानेवाले ज्योतिषीको दिखा लाअी। अुसने आते ही कहा—"लच्चाको अब साढसाती चल रही है। अभी-अभी अुसके छूटनेका समय आया है। साढसाती छूटते समय अगर नवचण्डीका होम और पावन शान्ति कर अेक ब्रम्हभोज कर दें, तो आगे अुसका भला होगा।" अैसा ज्योतिषीने कहा है।

नागवेणीके मनमें कुछ आशाका सचार हुआ। वृद्धोका कहना ज्योतिषिकी भविष्यवाणी, यह सब यदि मार्गदर्शन कर रहा है, तो अुनकी आज्ञा मानकर चलना ही अच्छा है। अुसने सारा प्रबन्ध कर दिया। स्वय लच्चा जाकर ब्राह्मणोको न्यौता दे आया। कितने ही दिन बाद पुन शान्तिसे अेक बार पति-पत्नी साथ बैठे। नागवेणीका अुसके पास बैठनेको जी नही करता था। अुसका हृदय नही मानता था, फिर भी अच्छे काममें, रोडा अटकाना अुसने ठीक नही समझा। दिलमें कुछ भी हो, वह

हँसती-मुस्कराती हुअी पतिके पास आ बैठी। ब्राह्मण पेटभर भोजन कर पति-पत्नीको आशीर्वाद दे चले गअे।

लच्चाने भी प्रसन्नता प्रकट की। नागवेणीको प्रसन्न रखनेके लिअे जो कुछ करना आवश्यक था, अब वह सब करने लगा। सात-आठ महीनेका वर्ताव देखकर सत्यभामा भी "बेटा! भगवानने आज जो सद्बुद्धि दी वह पहले ही देता, तो कितना अच्छा होता!"—कहने लगी। घरके किसी व्यक्तिने न तो अुसको चिढाया, न कुछ भला-बुरा कहा। वह भी "कुछ भी हो अिस साल अेकाध मुडेकी खेती तो करनी ही चाहिअे" कहकर अुत्साहसे खेतीका काम करने लगा।

वर्षाके दिन आअे। लच्चाकी पहली खेती हरी-भरी हुअी। घरके लोगोंका मन भी वैसा ही लहलहाने लगा। वह घरवालोंसे प्रेम भी करने लगा था।

अेक दिन रातको वर्षाके कारण जुकाम होनेसे लच्चा खाँसता हुआ बरामदेपर पडा था। रातका भोजन हुआ। घरका सब काम हो गया था। सोते समय लच्चाने नागवेणीसे कहा—"अगर तुम्हें तकलीफ न हो तो सोंठ, काली मिर्च डालकर थोडासा काढा बनाकर दे दो। बहुत खाँसी आ रही है, जुकाम भी है, कहीं कल ज्यादा तकलीफ न हो!"

"अितनी-सी बातके लिअे अितना सकोच क्यों?"—नागवेणीने कहा और जाकर सोंठका काढा बनाकर ले आअी। वहीं बैठकर दोनों बात-चीत करने लगे। लच्चाने कषाय काढा पी लिया। अुसके बाद वह खेत और फसलके सुख-स्वप्नोंका वर्णन करने लगा। बोलते-बोलते अुसके हाथोंने धीरे-धीरे टटोलते-टटोलते नागवेणीके हाथ पकडे। "नागवेणी! कितने दिन हुअे तुम्हें मेरा हाथ छोडे"—लच्चाने कहा।

अुसकी आवाज काँप रही थी। नागवेणीका शरीर अेक कलीकी तरह खिल गया। अिस बार जबसे वह घर आया, नागवेणीने अुसका स्पर्श नहीं होने दिया था। पतिके सहवास और अुसके परिणामकी कल्पना आते ही वह भयसे काँप अुठती थी। अुस दिन पता नहीं, क्यों वह किसी प्रकारका विरोध नहीं कर सकी। पतिके स्वर्गीय सहवासकी क्या अुसे कोअी कामना

नही थी ? हाँ, वह भी अेक युवती थी। युवकोचित भावनाअें, विचार, विकार सब कुछ अुसमें भी थे। पर मनुष्य जो चाहता है, सब मिलता थोडे ही है ? पति होनेपर भी वह अपनेको विधवा समझने लगी थी। पतिके स्नेह और सहवासकी कल्पनासे ही अुसका शरीर कॉंप अुठता था। साथ-साथ बापकी आज्ञाका भी खयाल था। भावी परिणामका भी भयानक रूप सामने था। फिर भी तारुण्य था और......! अनेक सालोंके बाद आज वह शरीर-सुखकी याचनासे पागल हो गअी। वह दिन अुसके लिअे नअे डर और भावी भयका दिन बना।

अुसके बाद कअी दिन बीते। अुस बेचारीने सोचा—"अब घरमें आया हुआ शनि चला गया। विवाहके पहले दिन लौट आअे। नया जीवन मिला।"

अुस साल फसल भी अच्छी हुअी। लच्चाकी खेती-किसानीमें खूब धान पैदा हुआ। आँगनमें दो-चार पुआलके ढेर लगे। बरामदेमें धानके ढेर लगे। "हर साल अितना बोझ नही अुठाना चाहिअे। चार-आठ मुडीकी खेती की तो बहुत है। नही तो यह प्राण खोनेका काम है !"—लच्चाने कहा।

दीवाली आअी। अिस साल लक्ष्मीपूजनके दिन घरमें चारो ओर चिराग जले। प्रतिपदाके रोज नागवेणीने अेक नअी खबर सुनाअी। अुसने सरसोतीसे कहा—"माँ ! पता नहीं तुम क्या कहोगी और आगे क्या होगा ! मैं फिरसे ।"

सुनकर सरसोतीने कहा—"नागू ! सब अच्छा होगा। अितने दिन शनि था, अिसीलिअे यह सब हुआ। अब अुसको भी देखो न ! कैसी अच्छी बुद्धि आअी है। भगवान जो कुछ करता है भलाअीके लिअे करता है। तू दुनिया भरकी चिन्ता करना छोड दे !"

नागवेणीने आँखें पोछते हुअे कहा—"कम-से-कम आपके पुण्यसे मुझे माँ होकर जीनेका सौभाग्य मिले तो " और झुककर सरसोतीके पैर पकडे।

"मिलेगा ! मिलेगा बेटी ! तुझे माँ बननेका सौभाग्य मिलेगा !"—नन्हेसे बच्चेको जैसे गोदमें लेकर प्यार करते हैं, वैसे ही सरसोतीने नागवेणीको गोदमें लेकर अुसको पुचकारते हुअे कहा—"भगवानसे माँगो। वही दुखियोकी सुनता है। वही तेरी अिच्छा पूरी करेगा।"

"तुम ही मेरा भगवान हो माँ !"—नागवेणीने कहा। सुनकर सरसोती शरमाओी। "मेरा बुढापा देखकर बेटी अैसा कहती है? वह देखो कटहलका ठूँठ कितना पुराना है, जैसा वह है वैसी ही मैं हूँ! बस, अब क्या है? अेक दिन आँखें मूँदना है। आशा थी कि पिछले अुत्तरायणमें, अुसका बुलावा आअेगा। नही आया, अब फिर दक्षिणायण है, अबकी मकर-सक्रान्ति बीती कि अुसका बुलावा आया!"

सरसोतीकी बात सुनकर नागवेणीने कहा—"मकर-सक्रान्ति होनी चाहिअे, मेरा प्रसव होना चाहिअे और आपको अुस बच्चेके मुँहमें चम्मच भर दूध डालना चाहिअे।"

"नागू, भगवान सब ठीक करेगा"—बुढियाने कहा। अितना विश्वास भला सबको कैसे मिलेगा?

मकरसक्रान्ति आअी। अुसी समय शालग्रामके नरसिंह भगवानका अुत्सव था। वही अंतालका कुल-देवता है। सरसोतीने लच्चाको बुलाकर कहा "लच्चा, तू नागवेणीको लेकर शालग्रमके नरसिंह भगवानके अुत्सवमें हो आ। अुसको धीरे-धीरे पैदल ले जानेमें भी कोअी हर्ज नही। पर खुद तू अुसे मन्दिरमें ले जा, और नारियल तथा केले रख प्रणाम कर वापस आ जा! सारे बुरे ग्रह दूर हो जाअेंगे।"

लच्चाके लिअे भगवान और शैतान दोनो अेक-से हैं। सबपर अुसका अेक-सा विश्वास। "अच्छा!" कहकर वह माँ और पत्नीको साथ ले अुत्सवमें जाकर नारियल केलेकी मनौती पूरी कर आया। आते ही नागवेणीने सरसोतीको शालिग्रामके नरसिंहका प्रसाद दिया।

अिन सुखके दिनोंमें भी, जब कि सिरपर बैठा शनि अुतर चुका था, लच्चाका ओराटाके घरमें आना-जाना जारी था। वह अुसको दूसरे भाअियोंके खिलाफ अुकसाता भी था। आखिर अेक दिन ओराटाने कहा—"लच्चण्णा! मेरा अिस गाँवमें जी नहीं लगता। अगर यहीं घरमें पडा रहा तो यह जमीन कितने दिन चलेगी? चार दिन भी नहीं चलेगी। भैयाने तो होटलको अपने चार भाअियोंके लिअे रख लिया है। वह होटलके जरिये फावडोंसे पैसा कमा रहा है। अैसी हालतमें मैं गाँवमें पडा रहकर क्या करूँ? और

सुना है कि अुन्होंने मैसूरमें भी अपना अेक होटल खोल दिया है। वहाँ भी खूब व्यापार होता है। यहाँ कुछ नही। सोचता हूँ, यहाँकी जमीन किसीको खण्डपर चढाकर मैं भी मैसूर जा होटल शुरू कर खूब पैसे कमाअूं। तुम्हारी क्या राय है ?"

लच्चाने "ठीक है !" कहकर अपनी राय दी।

वैसाखके आखिरी दिनोंमें कोडी गांवमें दो खबरें मुख्य थी— अेक ओराटाका गांव छोडकर जानेकी और दूसरी नागवेणीके नौ महीने बाद सुख-प्रसव होनेकी। ओराटा अकेला ही मैसूरके लिअे रवाना हो गया। वहाँ जाते ही थोडे ही दिनोंमें ओराटाने अपने मैसूर दिग्विजयके बारेमें लच्चाको लिखा, "यहाँपर भैयाका रामा रेस्टोराँ था। अुसके सामने मैंने दिल्ली दरबार रेस्टोराँ शुरू किया है !" लच्चाको समय-समयपर ओराटाके यहाँसे कार्य-कलापोंका सुन्दर वर्णन लिखकर आता था।

नागवेणीने अपने प्रसवके लिअे मायके जानेसे अिन्कार कर दिया। सरसोतीने भी खूब समझाया। पर "वे घरमें है !" कहकर नागवेणी वहाँसे जानेके लिअे तैयार नहीं हुअी। अिसी हालतमें जब कि अुसके नौ महीने पूरे हो रहे थे, बीमार पड गअी। अुसका शरीर अत्यन्त कृश हो गया। फिर भी भगवानकी कृपासे बिना किसी खतरेके प्रसव हुआ। बच्चा बडा दुर्बल था। जब नागवेणी बच्चेका मुखावलोकन करने लगी, तो अुसके मनमें आया, "यह तीसरा भी !" पर अुसने मुंह नही खोला। प्रसवकालकी आवश्यक सेवा-शुश्रूषामें यद्यपि किसी प्रकारकी कसर नही रखी गअी, तो भी अुसके दिन अत्यन्त कष्टसे बीते। बच्चेके लिअे दूध नही था। सत्यभामा कपडेकी बत्ती बनाकर बकरीके दूधमें डुबोकर बच्चेके मुंहमें दिया करती। अिसी तरह बच्चेको पोसना पडा। माँ बच्चेकी सेवा-शुश्रूषा नही कर पाती थी। वह सारा काम सत्यभामाको करना पडता था। आठ-दस बार लच्चा भी अुडपी जाकर दवा ले आया। अुसकी शुश्रूषा भी कम नहीं थी, किन्तु अिसका मन घरसे अुचटकर कही बाहर घूमने लगा था।

बच्चेके हुअे तीन महीने बीते। यद्यपि अुसका पेट कुछ बढ़ा हुआ था, फिर भी अुसकी अन्य गतिविधि निराशा-जनक नही थी। मअी महीनेमें जब

वकील साहब घरपर आओे, अुन्होंने बच्चेके सम्बन्धमें कअी आवश्यक बातें समझाअी। जहाँ-तहाँ खुद जाकर कअी दवाअियाँ भी ले आओे। अुन्होंने नागवेणीको भी पुष्टिकर औषधि लेनेको कहा। अगर पिछले दिन होते, तो सरसोती डाक्टरोंकी दवा पिलानेकी अनुमति नहीं देती। जब वकील साहबने कहा तब नागवेणीके अेक मात्र बच्चेकी जान बचानेकी आशासे "आखिर भगवानकी यही अिच्छा है तो मैं भी क्या कर सकती हूँ।"—कहकर अुसने डाक्टरोंकी दवा पिलानेकी अपनी अनुमति दे दी।

खैर, वकील साहबके आनेसे लच्चाके लिअे पत्नी-सेवाका बोझ कुछ कम हुआ। वकील साहब चले गओे। और कुछ दिन बीते। नवरात्रिके दिन आओे। बच्चा स्वाभाविक रीतिसे बढ रहा था। सत्यभामाने अत्यन्त दक्षतासे अुसको सम्भाला, किन्तु अबतक नागवेणीके मनका संशय दूर नहीं हुआ था। कभी-कभी अुसी विचारसे आँखें भर आती थीं। आखिर "माँने कहा था, भगवान सब अच्छा करेगा। वह सब अच्छा ही करेगा!"—सोचकर मनको समझाती थी।

बेचारीको बच्चेसे अधिक पतिकी फिकर थी। वह देख रही थी कि अुसके होठोंपरकी मुस्कराहट धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। जब कभी वह नागवेणीसे बोलता, तो मुँह बनाकर बोलता। अिसमें शक नहीं कि अभी-तक जबान कैंचीका काम नहीं करने लगी थी, फिर भी अुसमें अजीब-सी अुदासी थी। अुसका अुदास चेहरा देखकर वह कारण नहीं समझ पाती थी। आखिर अेक दिन अुसने धैर्य करके पूछा भी— "आजकल आप अैसे अुदास-अुदास क्यों रहते हैं?"

कोअी अुत्तर नहीं मिला। जब दो-चार बार अुसी सवालको दुहराया तो अुसने कहा—"यह जीवन भी कैसा है? अेक विधवाका-सा जीवन है!"

"आखिर अिसका अर्थ क्या है?"

"दूसरोंकी दी रोटीपर जीना कोअी जीवन है? अितना सब पढ-लिखकर मैं अपने और पत्नीके लिअे रोटी भी नहीं कमा सकता तो..!"

"यहाँ आपको किस बातकी कमी है? क्या यह आपका अपना घर नहीं?"

"घर अपना ही है ! किन्तु जब गांवके लोगोंकी बाते सुनता हूँ, तो मनमें आता है कि क्या मेरा भी घर है ?"

"अिसका अर्थ मैं नही समझ पाअी !"

"तूने सुना कहाँ ? .....लोग कहते हैं, रोजकी रोटी भी बीबीकी मेहरबानीसे खाना है ! अैसे आदमीकी जिन्दगी भी कोअी जिन्दगी है ?"

आगे क्या बोलना चाहिअे यह नागवेणीको नहीं सूझा। वैसे ही कुछ दिन बीते। अेक दिन लच्चा बच्चेको गोदमें अुठाकर खिला रहा था। अुसने नागवेणीको पुकारकर कहा—"नागवेणी ! बच्चेका नाम कब रखोगी ? कितने दिनों तक बेचारेको सण्ण ! पुट्टा ! कहकर पुकारेगी ? और यह क्या शूद्रोंका बच्चा है, जिसे अैसे नामोंसे पुकारा जाय। अेक अच्छा नाम ढूंढ़कर अिसको अुसी नामसे पुकारे !"

"अितनी जल्दी क्यों ? जब अुसका जन्म-दिन आअेगा, अुसी दिन नाम रखेंगे। अेक अच्छा-सा नाम देखकर !"—नागवेणीने कहा।

"नही ! अैसे ही मनमें आया, अुसका नाम सुनकर कहीं जायँ !"

"क्या मुझे छोडकर ?"

"तुझे छोडकर जानेकी मेरी अिच्छा नही हैं और बाहर जाकर जो सुख मिलनेवाला है, वह भी मालूम है, किन्तु कम-से-कम अपनी रोटी तो अपने श्रमसे कमानी चाहिअे। हजारो रुपये खर्च कर अितना पढ़ा-लिखा अुसका क्या प्रयोजन ? मेरा अेक साला वकील है, दूसरा वैद्य, मेरे दूसरे सहपाठी क्या-क्या बन गअे और मैं यहाँ अेक अन्तर-पिशाच बनकर बैठा हूँ। मुझसे अिस तरह ज्यादा दिन नही रहा जाअेगा !"

"चार दिन ठहरो ! सोचेंगे !"—नागवेणीने कहा। ये चार दिन अुसके अन्तरमथनके दिन थे। जेठकी आँधीमें शायद समुद्रमें अितना तूफान नहीं आता, जितना अिन दिनोंमें अुसके हृदय-सागरमें आ रहा था। अुसकी भावनाके पट विछिन्न होकर तन्तु-तन्तु अलग हो रहे थे। अुसके भाव-सागरमें लहरपर लहर आ रही थी। चार दिन बीतनेपर अुसने लच्चासे कहा—"मुझे यह जमीन, रुपये, पैसे अपने नामपर नही रखना। मैं फिरसे आपके नाम लिखाअे देती हूँ। मैं आपके हृदयकी वेदनाओंको समझती हूँ। आप ही जब अैसी जिन्दगी बसर कर रहे हैं तो मुझे अुसमें क्या सुख ?"

: १९ :

सत्यभामाके लिअे अब तककी मुसीबतें पर्याप्त थी। अब पता नही यह लडका और क्या आफत लाता है! अिस विचारसे बेचारी पागल-सी हो गअी। अुसने कभी नही सोचा था कि वह अिस तरह लडकेके हाथमें फंस जायगी। अब वह अपनी बहूके प्रति भी कठोर बनी। अेक दिन अुसने कहा—"जब तुम जानती थी कि अुसका भाग्य ही अैसा है, तो हम जो घरमें बुढियाँ थी, अुनसे अेक अक्षर पूछे बिना तुमने अैसा क्यो कर डाला? कल अगर वह घर किसीको बेंच दे, तो हमारी क्या हालत होगी? और क्या वह माँ या बुआका खयाल करनेवाला है? मरते समय हमें क्या राहका भिखारी बनना पडेगा? बेटी, तुमने यह क्या कर डाला!"

यह सुनकर नरसोतीने जहाँ बैठी थी, वहीसे कहा—"अुस बेचारीको क्यो कहती है? जब बुरे दिन आते हैं, तब अैसे ही मति मारी जाती है। अिसमें अुसका क्या दोष! लच्चाका व्यवहार ही अैसा था! अुसे देखकर क्या हमने भी अुसपर विश्वास नही कर लिया था? अुसकी जन्मपत्रिकाका फल सुनकर हमने भी अुसकी प्रशंसा करनेमें क्या बाकी रखा था?"

अितना सब होनेपर भी सत्यभामाको सन्तोष नही हुआ। अुसको रातभर बुरे-बुरे सपने आते रहे। कोअी न कोअी आकर अब हमें अिस घरसे निकाल देगा, यही डर सता रहा था। दूसरे दिन सुबह अुठते ही "तुमने बुरा माना तो भी क्या करें! अिस नन्हें-से बच्चेका मुंह देख आनेवाली सब आफतोंका विचार कर मुझसे रहा नही जाता। सहनेकी भी अेक सीमा होती है। चार दिन मैं अपनी सुन्वीके घर जाकर पडी रहूँगी!"—कहकर अुसने सुन्वीके घर जानेकी तैयारी की और बूढे सूराको बुला अुसके साथ मन्दाकिके लिअे रवाना हो गअी।

अब घरमें रामके साथ सरसोती, नागवेणी ही रही। नागवेणी अपनी बुद्धि-हीनतापर लज्जित थी। अुसको बडा दुःख भी हुआ। पर अब क्या होनेवाला था? बात बीत चुकी थी। बीती बातके लिअे रोनेमें भी क्या धरा था? वह जानती थी कि न केवल घरबार खोया, बल्कि पतिको भी खोया। अब वे कभी वापस नही लौटेंगे। जो लौटेंगे तो भी जो कुछ है सब खोकर ही लौटेंगे। सरसोती बेचारी पहले आधी अन्धी थी, अब पूरी अन्धी हो गअी। बेचारी रामको गोदमें लेकर अुसे खेलाती और खुद खेलती। कभी-कभी नागवेणीको बुलाकर कहती—"नागू! अिन सब बातोकी चिन्ता न कर! भगवानको जो कष्ट देना है, वह देगा। मनुष्य अुससे नही बच सकता। हमें सब शान्त भावसे सहन करना है। वह सब ठीक ही करेगा!"

अिसपर बोलनेके लिअे बेचारी नागवेणीको अेक भी शब्द नही सूझा। वह गूँगी बन गअी। अुसके मनमें अेक ही निश्चय होता जा रहा था—"अब जीनेमें क्या धरा है? बच्चा बडा होकर क्या खाअेगा? क्या नरक-यातना देखनेके लिअे ही अुसे जीना है? अुसके लिअे भी मुसीबत है और अपने लिअे भी। अेक बार मौत आती तो सबका भला होता!"

कअी बार अुसके मनमें आत्म-हत्याके विचार आते, पर सरसोतीके लिअे जीना जरूरी था, नही तो बुढ़ियाका क्या होगा? बेचारी नागवेणी सरसोतीकी मृत्युकी राह देखने लगी। कभी-कभी यह विचार अनायास जबानपर भी आने लगा। अेक दिन अुसने कहा—"माँ! मुझ जैसीका जीना और मरना दोनो अेक हैं!" और खूब रोअी। अिसपर सरसोतीने अुसको नल-दमयन्तीकी कहानी सुनाअी।

"माँ! हमारा कुछ भी हो, बच्चेको तो राहका भिखारी बना दिया न! हमारे बुजुर्ग अपने बच्चेके लिअे कुछ करके स्वर्ग सिधारे, अुन्होने अपने बच्चोंके लिअे स्वर्ग बनाया और हम अपने बच्चेके लिअे जीता नरक बना रहे हैं।"

अुसकी बात सच्ची निकली। तीन महीनेके अन्दर घरबार सब कूडेके दाम बिक जानेकी खबर आअी। लच्चा यहाँसे जानेपर अुडपीके अेक धनीके हाथ घर बेचकर अुससे नकद रकम ले बेंगलूर चला गया था।

खरीददारने तुरन्त पाँच-छह महीनेके बाद नोटिस दिया, जिसमें मकान और सब जमीनपर कब्जा माँगा गया था।

अुस दिन नागवेणीसे अक कौर भी नहीं खाया गया। बच्चेको थोड़ा-सा दूध पिलाकर बुढियाकी गोदमें दे वह चाचाके घर दौड़ी। नारायणभैयाने अुडपी जाकर खरीददार सज्जनसे बात की, पर भला अुसको दया क्यों आने लगी? अुसने कहा—"हमने नकद आठ हजार गिने हैं! वह छोटी-सी रकम नहीं है।"

अब दुबारा खरीदनेकी हिम्मत किसीमें नहीं थी। आखिर नारायण-भैयाने अपनी नागवेणीके लिअे अंतालके घरकी जमीन और तीन मुड्डीके खेत अपने नामसे कायम-पट्टा लिखवा लिया। कायम-पट्टेपर लिख देना भी कम शराफत नहीं थी। अिसके लिअे अुसका कृतज्ञ होना ही चाहिअे।

नारायणभैया कोडी आअे। अुन्होंने बुढियाके पास बैठकर सारी बातें बताअीं। अुन्होंने कहा—"माँ! यह सब हुआ है। अब मेहनत करके खानेके दिन आअे। मुझसे जो कुछ बन पड़ेगा, वह सब मैं करूँगा, किन्तु जहाँ सोना बेचा था, वहाँ अब कूड़ा बेचना पड रहा है।"

सुनकर सरसोती बहुत दुखी हुअी। अुसने कहा—"बेटा! अगर मुझे भगवान बुलावा भेजते तो अिस बच्चीको अुसका बाप भी सँभालता। मेरे भैयाका वह पोता बड़ा होगा, तो बुढापेमें अपनी माँको नहीं छोड़ेगा। वह अुसकी सेवा करेगा, अुसको सँभालेगा। मुझे भरोसा है अुसको बापके गुण नहीं आअेंगे। तब पता नहीं मैं कहाँ रहूँगी! पर जब तक मैं जिन्दा हूँ, नागवेणीका भीख माँगना मुझसे नहीं देखा जायगा। अब तुम ही बताओ, अिस बच्चेको सँभालने और जमीनमें मेहनत-मजदूरी कर साहूकारको जमीनका खण्ड बटाअीपर देना अुस अकेलीसे कैसे होगा?"

"हम सब हैं, माँ! क्या हम आपके किसी काम नहीं आअेंगे। आपके घरका सम्बन्ध हमसे दूर नहीं होना चाहिअे। मनमें आया, आखिर खण्ड हो तो खण्ड ही सही। अुस घरकी छायामें दिन बिताना चाहिअे। अगर कायम-पट्टा नहीं निभेगा, तो जब चाहे तब छोड़ा भी जा सकता है! . .

"खैर, अब आप मेरे साथ ही अंरोडी चलिअे! . . . भगवानकी कृपासे आप तीनोंका मुझे कोअी बोझ नहीं मालूम होगा।"

सरसोतीने नागवेणीको बुलाकर कहा--"बेटी ! तू अपने चाचाके घर जा। अुनकी बात सुनी नही तो अपने बापके पास जा। कुछ भी हो, यह मेरे रामका घर है न ! हम दोनो यहाँ रहकर जैसे भी हो, जिन्दगीके दिन काटेंगी। अगर हम दोनो काशीमें ही रहतीं तो काशीवास तो होता। वहीं आँखें मुंदती। पर वैसा पुण्य कहाँ था।"

अुसने अपनी ओरसे सब बाते कही। सब सुनकर नागवेणीने अपने चाचाको बुलाकर कहा—"चाचा ! आप घर जाअिये। अिस समय कोअी खास असुविधा नही। घरमें काफी चावल है। गरमीके दिनो तक किसी प्रकार चला ले जाअेंगे। मअीमें पिताजी आअेंगे तब हम सोचेंगे!"

कहते समय अुसकी आँखें भर आअीं। वही आँसू लेकर नारायणमैया अपने घर गअे। अुसके बाद नागवेणी रोती हुअी अेक कोनेमें जा बैठी। माँके आँसू देखकर अबोध बालक भी रोया।

शामको नागवेणीने चावल अुबालकर "गजी" बनाअी। बच्चा भूखा था। बच्चेको वही गजी खिलाअी। सरसोतीको रातको खाना ही नहीं था। अुसने भी नहीं खाया। किन्तु अिस बच्चेको क्यो भूखा मारे, अिसलिअे थोडीसी गजी खिला दी। अुसके बाद देवघरमें दीप जलाया। बाहर चिमनी जलाअी। अुस चिमनीके प्रकाशमें झाडू लगाकर, वही दो चटाअियाँ बिछाअी। बीचमें बच्चेके लिअे अुसकी छोटी-सी गद्दी लगाअी। अपने सोनेके पहले सरसोतीका हाथ पकडकर अुसे लाकर सुलाया और फिर स्वय जाकर लेट गअी।

अुस दिन अुसके मुँहसे अेक भी शब्द नही निकला। बुढ़ियाने भी कुछ नही कहा।

दो-चार दिन अैसे ही बीते। अेक दिन शामको वकील साहब दौडे हुअे वहाँ आअे। अुनको नारायणमैयाका पत्र मिल गया था। अुसमें नागवेणीके घरकी सारी रामकहानी लिखकर अुसके घरके लोगोंके अनाथ होनेकी बात लिखी थी। सुनकर अुनका दिल दहल गया। क्या करना चाहिअे, यही नहीं समझ पाअे। आखिर जैसे थे वैसे दौडे आअे।

अुनका ससार अब काफी बडा था । दो-चार बेटे, अुनके भी बच्चे, सारा घर भरा था । खर्चा भी आमदनीसे कम नहीं था । फिर भी कोअी खास तगी नही थी । गरीबीकी मार अभी नही देखी थी । अब तीन नहीं, चार और आदमियोका बोझ अुठाना आसान काम नही था । किन्तु दूसरा अुपाय भी नहीं था । अिन्ही बातोपर विचार कर वे दौडते-भागते लडकीके घर आये ।

आते ही नागवेणीने अुनसे पूछा—"बापू ! आप क्यो दौडे आये ? आपको क्या चाचाने बुलाया था ? मैंने तो अुनसे कह दिया था कि जेठ तक कोअी तकलीफ नही । जब मअीके दिनोमें बापू आयेंगे, तब बात करेंगे। पता नहीं चाचाने चिट्ठी लिखनेकी जल्दी क्यो की !"

सुनकर बाप हँसा—"नागू ! तुझे अकल नही है। फूलसे अिस बच्चेको, अुससे अधिक फूल बनी सरसोतम्माको, सँभालकर खण्ड-बटाअीकी खेती करके तू जीअेगी ? तेरी सास अपनी लडकीके घर गअी है, अुसको वहाँ रहने दे, तुम दोनों मेरे साथ चलो । यह भी तुम्हें पसन्द नही है, तो सरसोतम्माको अैरोडीमें रहने दो और तुम मेरे साथ मंगलूर चलो ! अगर तुम अुसी समय आती, जब कि मैंने बुलाया था, तो ये सब बाते नही होतीं।"

नागवेणीका चेहरा सूख गया । बापकी बातोंसे अुसके समझमें आया कि सासका बोझ अुठानेके लिअे वे तैयार नही है । और सरसोतीकी "मैं यही भीख माँगकर खाअूँगी । जिस घरमें पैदा हुअी, वहीं मरूँगी !" बात वह सुन चुकी थी । अुसने सोचा—"मैं बापका गोत्र छोडकर नअे गोत्रमें आअी हूँ । सुखके दिनोमें यहाँ रही । अब आनेवाले कष्टोंसे डरकर क्या यह घर छोड बापकी शरणमें जाअूँ ? और वह भी अिस घरकी वृद्धाओंको छोडकर ?"

बापकी कोअी युक्ति काम न आअी । सब अुपदेश बेकार गया । अुसने रातको रसोअी बनाकर बापको परोसा । बापके खाते समय अुसने कहा—"बापू ! जब आप मअीकी छुट्टियोंमें आयेंगे तब बातें करूँगी !"

बापने अपनी लडकीका मुँह देखा । अुन्होंने बच्चेकी ओर अिशारा करके कहा– "नागू ! अुस बच्चेकी ओर देखो ! अुसको दो ही साल हुअे

हैं। वह अपने पैरपर खडा रहकर अपनी कमाअी खाने लगे, अिसके लिअे बीस साल चाहिअे ! अुसके भविष्यका विचार कर बोलो !"

वह जानती थी कि सरसोतीकी अिस आयुमें और किसी जगह मेरा रहना ठीक नही होगा। अुसकी चाची भी कठोर थी। वह चाचाकी अुदारतामें जहर मिला देगी। और, . अबतक यहाँ रही अब अपने घरकी छाया क्यो छोडे ? यह अभिमान भी कम नही था ! अिन बातोंसे प्रभावित होकर अुसने कहा—"बापू ! अभी कुछ भी मत कहो !"

"मै अब अैरोडी जाता हूँ। वहाँ नारायणमैयासे कुछ सलाहकर कल सुबह यहाँ आअूँगा। कामके दिनोमें, मगलूर छोडकर अधिक दिन यहाँ नहीं रहा जायगा। जैसा कि मैने कहा, कल ही यहाँसे चलनेकी तैयारी करो!"— बाप आज्ञा देकर अैरोडीके लिअे रवाना हो गया।

रातको नागवेणी और सरसोतीने खूब बाते कीं। सरसोतीने कहा— "नागू ! तेरी सास कहाँ जायगी ? आज वह अपनी लडकीके घर गअी है तो क्या कल वह नही आअेगी ? जब वह आअेगी, तो कहाँ जाअेगी ? क्या अुसको भी अपने बापके घर जाना होगा ? बेचारीका बाप भी नही है। मेरी बात तू छोड। मेरे लिअे यही मिट्टी अच्छी है। मै अपने अन्तिम दिनोकी प्रतीक्षा करती हुअी किसीके घर नही पडी रह सकती !"

अिसके बाद अुसने अपनी अेक सहेलीकी कहानी सुनाअी, जो कि बुढापेमें अनाथ होकर अपने रिश्तेदारोंके घर सबकी लाते-बाते सहते हुअे मरी। नागवेणी कुछ भी नही बोली। तीन पहर रात बीती। अुसको नींद नही आअी। अुठकर बिछौनेपर बैठी रही। सामने निर्बोध बालक शान्त सोया था। वह हँसी। क्षणभरमें अुसकी आँखें भर आअी। "राम!" अुसने कहा—"तुझे वे पालेगे। वे कल सुबह आअेंगे। वे तुझे ले जाअेंगे। तू सुखसे सो जा !"

अुसने अुस बच्चेको पुकारा। अुसकी पीठपर, बालोपर हाथ फेरा। अुसको जितना प्यार दे सकती थी, दिया। बिछौनेपरसे अुठी। धीरेसे सरसोतीके बिछौनेके पास गअी। अुसके पैर छूकर प्रणाम किया। वहाँसे धीरे-धीरे, बिल्लीके पैरोकी तरह आँगनमें आअी। मन्द सुगन्धित हवा बह

रही थी, आसमानसे लाखो तारे झुक-झुककर देख रहे थे, मनमें राम-नाम चल रहा था। वह घरसे निकलकर बाहर आअी। पैर सामनेवाले रेतीके टीलेपर चढ़ने लगे। टीलेसे अुतरकर पश्चिमकी ओर मुडी, होन्नेका जगल आया, वहाँ भी नही रुकी, और सीधे समुद्रकी ओर चल दी।

अमावस्याको समुद्रका पानीमें अुतार होनेसे अुस दिन वह हटता जा रहा था। नागवेणी साँस रोक, वहाँसे दक्षिणकी ओर मुडकर नदीमुखकी ओर गअी। प्रत्येक कदम अुसके शरीरको घसीटकर आगे बढा रहा था। अुसकी दृष्टि स्थिर थी, अुसकी पलके भी स्थिर हो गअी थी, अुसकी दिशा भी स्थिर थी, लक्ष्य भी स्थिर था। वह अपने अुद्देश्यकी दिशामें आगे बढ रही थी, समुद्रकी लहरोंसे भी अुसकी स्थिरता नही टूटी। पालनेमें झूलने-वाले बच्चेके लिअे माँकी लोरियाँ जैसे नीदके नशाको और बढाती हैं, वैसे ही समुद्रकी लहरोने अुसके निश्चयको और बढाया। क्षणभरमें नदी-मुख आया। बिछाअी हुअी चटाअीकी तरह फैला हुआ नदीका वह रेतीला किनारा अेकाअेक कट-सा गया था। नदी कहाँ-कहाँ पानी लाकर समुद्रमें अुंडेल रही थी और समुद्र "मुझे नहीं चाहिअे!" कहकर अुस जलराशिको बाहर फेंक रहा था।

नागवेणीने देखा, अपनी यात्रा अन्तपर आ गअी है। अेक बार मन बच्चेकी ओर मुडा, अेक बार अँधी बुढियाकी याद आअी। अुसीके प्रेमसे अितने दिनके जीवनमें जो सुख मिला, अुसका कृतज्ञतापूर्वक स्मरण हो आया। आखिर "क्या वह मेरी भूलोको क्षमा नही करेगी!" की भावना भी अुठी। अुसने आसमानकी ओर देखा। अनन्त तारे अुसीकी ओर टकटकी लगाकर देख रहे थे। पुन अेक बार अुसकी समाधि भग हुअी। कुत्ता भूँक रहा था। दूर छायाकी तरह खडी नागवेणीको देखकर वह भूँका। अुसके पीछे मनुष्यकी ध्वनि भी सुनाअी दी। शायद कोअी यही आता है अैसा लगा। कुत्ता भूँकता हुआ अुसी ओर आ रहा था। अब देर नहीं की जा सकती थी। रेतीले टीलेपरसे नदीमुखमें कूद पडी।

भूँकते हुअे कुत्तेका अिस तरह भागना देखकर अुसके पीछे आनेवाले दोनों आदमी घबराकर "यह क्या?" कहते हुअे कुत्तेके पीछे दौडे। वे

केकडा पकडनेके लिअे हाथमें टोकरी लिअे थे। अुनके आते समय कुत्ता नदीमुखकी रेतीली टेकरीपर खडी नागवेणीको देखकर भूंकने लगा था। सामने नदीमुखमें काला-काला कुछ डूबता-तैरता दिखाअी पडा। अितनेमें अुनमेंसे अेक "कुत्तेके डरसे कोअी पानीमें कूदा!"—कहकर स्वय पानीमें कूद पड़ा। दूसरा वही किनारेपर अुसकी प्रतीक्षामें बैठा रहा। नदी और समुद्रके संघर्षमें बेहोश नागवेणी वहीं चक्कर काट रही थी। आखिर अुसका अचल अुस धीवरके हाथ लगा। अुसने पकडकर खीचा। दोनो अेक दूसरेको खीचने लगे और दोनोके दोनों आकर किनारेपर लगे। वह कुत्ता अब भी भूंक-भूंककर गांवको जगा रहा था। अुन दोनोंने चिढकर पहले अुसको भगा दिया। यह सारी घटना क्षण भरमें विद्युत्गतिसे हो गअी।

अुनके प्रयत्नोसे धीरे-धीरे नागवेणीने आंख खोली। अब वे घबराये। अुन्होने वही नारियलके बागमें जाकर सोअे हुअे लोगोको जगाया, नागवेणीको वहां ले गअे। वहांकी अेक धीवर वृढियाने चिमनी जलाकर नागवेणीका चेहरा देखा। "मालूम होता है कही देखा है" वुढिया बडबडाअी।

सोच-सोचकर अुसने कहा—"अम्मा! आप अैतालकी वहू हैं न!"

"हां!" कहकर नागवेणी चीख पडी। अुसने रोते हुअे कहा—"मुझे फिर वही डाल आअिअे। कम-से-कम सुखसे मरने दीजिअे।"

यहां सुबह होते-होते बच्चा जगा। अुसने अिर्द-गिर्द देखा, अुसकी मां नही है। अुसने "मां! मां!!" कहकर रोना शुरू किया। पर अुसकी मां कहां थी? सरसोतीने नागवेणीकी आवाज नही सुनी। अुसने सोचा, रात भर जगी थी, अब नीद लगी होगी। धीरे-धीरे बच्चेको अपनी गोदमें लेते हुअे "सो मेरे राजा! मां सोअी होगी" कहकर पुचकारना शुरू किया। पर बच्चेका रोना कम होनेके बजाय बढता गया। तब वृढियाने भी पुकारा—"नागू! नागू!" फिर अुसने नागवेणीकी आहट न पाकर जोरसे पुकारा—"नागू बेटी, कहां गअी? यहां बच्चा रो रहा है!"

पर नागवेणी कहांसे आती? आखिर बच्चेको जैसे भी हो चुप करनेका प्रयास करने लगी। साथ-साथ वह सोच रही थी, "नागू! अितनी जल्दी क्यों अुठी आज! कहां गअी होगी? शायद जूठे बर्तन साफ करती होगी।"

फिर अुसने सोचा, "अगर जूठे वर्तन मांज रही है तो तालावपर होगी। तब तो मेरा वुलाना सुनना चाहिअे था। शायद होन्नेके जगलमें सूखा जलावन लेने गअी होगी।"

वह सोच ही रही थी कि वाहरसे किसीने पुकारा—"अम्मा, अम्मा।"

"कौन वुलाता है? क्या चाहिअे तुम्हे?" पुकार सुनकर अपनी जगहपर वैठी सरसोतीने पूछा और तवतक सिर झुकाअे नागवेणी भी वहाँ आ गअी। तव अुस धीवर वुढियाने कहा—"अम्मा! यह क्या अनर्थ है! आपकी यह वहू, रातको जान देनेके लिअे नदीमुखमें कूद पडी थी। किन्तु केकडे पकडनेके लिअे गअे मर्दने वेचारीको वचा लिया।" अुस वुढियाने सारी कहानी कह सुनाअी।

सुनकर सरसोतीने कहा—"नागू! वेटी तूने यह क्या किया?" अुसने अुन लोगोंसे कहा—"आप लोगोंने मेरी वच्चीको वचाया। आपके वडे अुपकार हैं ...... वह वेचारी भी क्या करेगी? जव भगवान ही सतानेपर तुला है, तव वह कहाँ तक सहे?"... ...वह धीवरोंसे अपनी नागूका दुःख कहकर रोअी। धीरे-धीरे सव वहाँसे चले गअे।

"नागू! अैसा करनेसे कैसे चलेगा? क्षण भर तू नही रही तो रामने "माँ! माँ!" कहकर देखो कितना परेशान कर डाला। वेचारा माँको पुकार-पुकारकर थक गया। अुसको छोडकर तेरा जाना कहाँ तक अुचित है? तुझे छोडकर वच्चा कैसे जीअेगा? और नागू, वेटी, हमी क्या दुनियामें दुखिया हैं? अिस दुनियामें हमसे हजार गुना दुख अुठानेवाले हैं।"

वह नागवेणीको धैर्य दे ही रही थी, कि अुसका वाप आ पहुँचा। वकील साहवने आते ही सरसोतीसे कहा—"आज आप मेरे साथ अैरोडी चलिअे। वहाँ आपको किसी प्रकारका कष्ट नही होगा। नागवेणी मेरे साथ मगलूर जाअेगी।"

यह सुनकर नागवेणी वहाँ नही रह सकी। वह वहाँसे गोठमें चली गअी। वहाँ जाकर गायकी रस्सी खोलकर अुसको चरानेके वहाने जगलकी ओर भागी।

"लडकी आकर मुझसे वाते करेगी।"—अिस आशामें वैठे वकील साहवने थककर पूछा—"अिसने अैसा क्या किया? नागू कहाँ गअी?"

"बेटा ! तुम मेरा विचार मत करो। मैं और सत्या किसी तरह यहाँ रहेंगी। पर लडकी और नातीको पालने, और अुनकी रक्षा करनेकी जिम्मेदारी आपकी है। कहते हैं, कल रातको वह जाकर नदीमुखमें कूद पडी थी !"—कहकर सरसोतीने सुनी हुअी सारी बाते अुनसे कही। यह सुनकर वकील साहब घबडा अुठे।

"अरे ! मेरी लडकीके ये हाल हैं ! यह तो फूलकी तरह पाल-पोसकर धूपमें सुखाना हुआ !"—कहकर रो पडे। आखिर "नागू ! नागू !" कहकर पागलकी तरह अुसे ढूंढने जगलकी ओर भागे। सरसोतीकी कही बात अब तक हृदयमें चुभ रही थी। अनजाने अुनके पैर पुन समुद्रकी ओर मुडे। वहाँसे नदीमुखकी ओर गअे।

"मेरी लडकी, अंतालरामकी बहूको तुमने देखा है ?" —राहपर मिले किसी आदमीसे अुन्होने पूछा।

"ओह ! अभी जानवरोको चराती हुअी घरके पीछे बैठी थी !"—अुसने कहा।

"घरके पीछे !"

"जी ! वहीं होन्नेके जगलके पास।"

नदीमुखसे वहाँ भागे। वहाँ घरके पिछली ओर जगलमें अेक होन्नेके पेडकी छायामें नागवेणी सिरपर हाथ धरे बैठी थी। बापके पास आनेक बेचारीको पता नही लगा। वह नही अुठी, अुसकी दृष्टि पैरकी अँगुलियोपर स्थिर थी, जैसे समाधिस्थ योगीकी दृष्टि स्थिर होती है।

बाप अुसके पास जाकर बैठ गया, अुसकी पीठपर हाथ फेरते हुअे बोला—"बेटी ! क्या मेरी बाते अच्छी नही लगी ? अिस बूढ़ेपर गुस्सा आया, बेटी ! कल रातको तूने अैसा क्यो किया ? सरसोतम्माने जो कुछ कहा, वह सच है या अुनकी बुढापेकी कल्पना ?"

वे अत्यन्त मृदु वचनसे अुसका समाधान करने लगे। अेक बार नागवेणीने गर्दन अुठाकर बापकी शक्ल देखी। अुसकी आँखें मोती गिराने लगी। क्षण भर रुककर अुसने कहा—"जी ! आप मुझे अपने घर बुला

रहे हैं। किन्तु आपने यह भी सोचा, कि अुनके कौन हैं? अिस अुम्रमें क्या वे अपना घर छोडकर दूसरोंकी शरणमें जाअेंगी? और . . . माँ तो अिसी बरामदेमें आँखें मूँदनेके सपने देखती है।"

"सबका प्रबन्ध कैसे कर सकता हूँ? फिर भी जो कुछ हो सकेगा, किया जायगा। पर जब तू यही रहनेकी जिद पकड रही है, तब क्या किया जाय?"

"माँ! वहाँ नही जाअेंगी। और जब तक वे हैं, मैं भी यहाँसे कही नही जाअूँगी।"

"पर अिस बच्चेका क्या होगा?"

"कुछ भी हो! यही रहूँगी। खण्ड है तो खण्डमें खेती करूँगी। जब तक वे जिन्दा रहेगी अिसी घरमें रहूँगी। क्या मुझसे अपना अेक बच्चा भी नही पाला जायगा? मैं जिन्दा रही, वह जिन्दा रहे, तो देखेंगे। सबके छोडनेपर भी रामअैताल्के पोतेका हाथ भगवान नहीं छोडेगा।"

"बेटी! अगर अितना विश्वास है, तो भला कल रातको अैसा क्यो किया?"

"आप मुझे माँसे अलग करते हैं अिसीलिअे! मेरा दुःख देखकर वे मुझसे वैसा करनेके लिअे कहती हैं। अुनकी आँखें नहीं हैं, अुठी तो बैठनेकी शक्ति नहीं, बैठी तो अुठनेकी शक्ति नही। फिर भी वे अकेली रह सकती हैं, तो मैं क्यो नही रह सकती? मौत सबको आअेगी। मनुष्य कभी घास चरकर नही मरेगा!"

नागवेणीके मुखसे यह सुनकर वकील साहबके मनमें अपनी लडकीके प्रति जो अभिमान था, वह हृदयमें न समा सकनेसे वाणीद्वारा फूट पडा— "नागू, तू लडकी न होकर लडका होती......" हृदयकी सारी करुणा आँखोंसे फूट पडी। बाँध टूटी नदीकी तरह आँखोंसे आँसू बह चले।

"जाने दो, तेरे जैसोंको भगवान कभी नही छोडेगा। तू अुनके साथ ही रह, पर अेक बात सुन। यही रहनेकी जिद छोड दे! नालेके अिस पार हमारी जगह है। वहाँ दूसरा अलग मकान भी है। दूसरोंकी जगहका खण्ड देकर क्या बचेगा और वह भी कणी देकर मजदूरी करानेके बाद?"

"नही, रहना है, तो यही रहेंगे। अिस मकानके खरीदार लोगोको हमारा रहना ठीक नही लगा, तो वहीं पास सरकारी जगह है। अुसपर छोटीसी झोपडी डालकर रहेंगे। अेक दिन वे अपनी पत्नी और बच्चेको ढूंढते आअेंगे। जब वे आअेंगे तब, अुन्होने अपने बच्चेकी क्या दुर्दशा की, यह देखकर अुनको खुशी होगी!"—नागवेणीने कहा।

अुसका मन दो ओर दौड रहा था। अेक ओर घरकी वृद्धियोपर अत्यन्त प्रेम था, अुनके प्रति स्नेह और श्रद्धा थी, अुनके बारेमें अपूर्व सम्मान था, दूसरी ओर अपने और अपने घरके लोगोको, अिस गतिको पहुँचानेवाले पतिके प्रति क्रोध और तिरस्कार भी था।

वकील साहब लडकीको अैतालके घर बुला लाअे। यहाँ आते ही अुन्होने कहा—"सरसोतम्मा! अैसा लगता है, भगवानने तुम लोगोंका जीवन अेक दूसरेके साथ बुनकर सी दिया है। अुसे तोडने या कम करनेकी मेरी अिच्छा नही। किन्तु अेक बात कहे रखता हूँ, जब कभी किसी बातकी जरूरत पडे, तो और किसीसे न पूछकर हमसे पूछना। हमारा नारायण तो पास ही है। हमें पराया नही, अपना समझना! अगर आप अितना नही करेंगी, तो मुझे बडा दुःख होगा। भगवानके लिअे हमें अपना ही समझिअे।"

नागवेणीके आग्रहपर वकील साहब दोपहरके भोजनके लिअे वही रहे, किन्तु खाते समय मैं "अपने नातीका अेक कौर अन्न कम कर रहा हूँ" अिस विचारसे कौर अुनके गलेके नीचे नही अुतरता था। खाते समय अुन्होने कहा—"सरसोतम्मा! यह ससार भी क्या है? पता नही भगवानने अिसको क्यो रचा है!" अबतक अुनके मनमें अिस प्रकारका दुःख कभी नही अुत्पन्न हुआ था। और आज जो वह अुत्पन्न हुआ, जीवनभर अुसका अन्त भी नही होना था।

वकील साहब जैसे आअे थे वैसे ही लौट गअे। अुनके जानेके बाद दो-चार दिनमें सत्यभामा भी अपनी लडकीके घरसे वापस लौट आयी। यहाँ आनेपर सरसोतीसे अुसने सब कथा सुनी। अुसने देखा, नागवेणी अैसी-वैसी स्त्री नही, बल्कि देवी है! बहूका दिल दुखाकर लडकीके घर जानेकी बातपर वह शरमाअी। अुसने कहा— "हम जैसोका जीवन भी क्या है? मंगलूरसे आनेके वषणसे बेचारी पुन वहाँ नही गअी। क्या बाप, क्या माँ, क्या चाचा,

क्या चाची, सबको यही आकर देख जाना पडता है। यहाँसे अँरोडी है ही कितनी दूर, वहाँपर भी अेक रात नही गअी। अुसकी यह तपस्या व्यर्थ नही जाअेगी। अिस तपस्याका और हमने जो जीवन भर आँसू बहाअे अुसका फल, अेक न अेक दिन बच्चेको अवश्य मिलेगा!"

रामके अब दो वर्ष पूरे हो गअे थे। युगादि भी आकर गअी। अिस प्रकार धोखा देकर गये लच्चाको भी अेक साल हो गया था। अिस अेक सालमें अँतालरामके वशज अपनी ही जमीनमें मजदूर बन चुके थे। अेक दिन नागवेणीने सूरको बुलाया, अुसके सामने अपनी सारी रामकहानी कहकर अुसने कहा— "देखो सूरा! यह सारा भगवानका खेल है! अेक दिन अुसने हमें अिस जमीनका मालिक बनाया था, आज अिसका मजदूर! अिसमें शक नही, अब तुम बूढे हो गअे हो। फिर भी तुम्हारे घरमें मेहनत-मजदूरी करनेवाले तुम्हारे लडके हैं। अगर तुम अितनी जमीन हलसे जोत दोगे, तो हम अिसीमें पसीना बहाकर खाने लायक कुछ पैदा कर लेंगे।"

सरसोती वही बरामदेमें बैठी थी। अुसने भी कहा—'सूरा! तुमने देखा भगवानका यह खेल!"

सरसोतीसे आगे कुछ कहा नहीं गया। सूरकी आँखोंमें भी आँसू निकल आअे। कुछ भी हो, अुसकी हड्डियाँ अँतालके घरके अन्नसे बनी थी। वह जिन्दगी र अिस घरका आसामी रहा था। भला अपने मालिककी अैसी दुर्दशा कैसे देख सकता? अुसने कहा– "माँ, मेरे बेटे अधर्मी नही हैं। अगर मैं अुनसे आपके खेत जोतनेका कहूँगा, तो वे अिन्कार नही करेंगे।"

"पर सूरा! तुझे कानी तो वैसे ही मिला करेगी जैसे पहले मिलती थी। भगवानकी दयासे अितना तो है! वर्षा शुरू होनेके पहले अेक बार खेत जोत दिअे, तो आगे जो भगवान करेगा सो होगा। आश्विनमें दो दिन फिर अेक-दो आदमी लगेंगे, बस फ़सल काटकर घरमें चली जाअेगी।"

सूरा अपनी लकडी टेकता वहाँसे चला गया। अुससे अपने मालिककी दीनता अधिक देखी-सुनी नही गअी। बापकी आज्ञानुसार सूराके लडकोंने सरसोतम्माके तीन मुडीके खेत जोत डाले। अुसमें खाद भी डाल दी। अब बुवाअीके लिअे तैयार करने लगे। गर्मीके दिनोंमें ही अेक-दो बार पानी

पडनेसे वोअे हुअे वीजोके अकुर फूटे। कभी नागवेणी तो कभी सरसोतम्मा रामको गोदमें लेकर खेतमें वैठ शूद्रोके मुर्गोसे अुसकी रक्षा करती।

धूप वढी। शुभ्र आकाशमें काले मेघ अेकपर अेक चढने लगे। अुनका पश्चिमकी ओरसे पूरवकी ओर तेजीसे भागना, वीच-वीचमें रुककर अेक दूसरेसे लडना, ताण्डव-नृत्य करना, यद्यपि व्याह-जनेअूवालोके लिअे डरावनी वात थी, परन्तु खेती-किसानी करनेवालोंके लिअे आशामय। आकाशमे चार वूंद पडते ही वेचारोको किसी कुअेंसे पानी निकालकर खेतोमें पसीना सींचनेकी जरूरत नही पडती। धानकी क्यारी हरी हुअी। अेक दिन सरसोतीने कहा—"सत्या! सिचाअीके लिअे कानी देनी पडती, तो जो कुछ पैदा होता अुसीमें चल जाता! कम-से-कम अिस साल तो भगवानने वचा लिया।"

दूसरे दिन सरसोनीने रामका रोना-चीखना सुनकर कहा—"सत्या! वर्षाके दिनोमें रामके खानेके लिअे कुछ नही तो थोडेसे चावलके पापड वना ले!"

यह सुनकर नागवेणीने वीचमें पकडकर कहा—"अैसे पापड-वापडके लिअे चावल निकालती रहोगी, तो रोपाअी, कटाअी, वटाअीमें क्या दोगी? वेहिसाव चावल निकलते जाअेंगे तो . .. "

यह सुनकर सरसोनी हँसी, "वच्चेके पापडके लिअे चावलके कम पडनेकी नौवत आअी, तो हम तीनो अेक-अेक दिन अेकादशी कर लेगे, और क्या?"

सरसोतीकी यह वात सुनकर नागवेणी शर्माअी। फिर भी अुसका मन यही कहता था— "घरमें जो चार चावलके मुडे पडे है, वे वैसे ही रहने चाहिअे!" अिसीलिअे अुसने कहा—"वच्चेके लिअे पापड वनाने हैं न!"

गाँवमें और चीजोका अकाल पडा तो काजूका अकाल तो नही है! अुसको तो सूँघनेवाला भी नही। वेचारीने यहाँ-वहाँसे "काजू" अिकट्ठा कर अुसके पापड और वडी वना लिअे। साथ ही साथ नागवेणीने साससे कहा—"वर्षामें ये पापड खराव नही हुअे तो अच्छा!"

यह सुनकर सत्यभामाको सुव्वीके घरकी याद आअी। अुसने कहा—"नागू! वहाँसे चार कटहल लाती, तो किसी वातकी चिन्ता नही रहती।"

"वहाँसे यहाँ तक कटहल लाना क्या मजाक है ?"

नागवेणीकी यह बात सुनकर सरसोतीने अपनी जवानीमें वहाँसे आम लाकर अचार बनानेकी कथा सुनाअी।

"आपका धैर्य, और आपकी ताकत हममें होती तो हम जो चाहते सो कर लेते !"—सत्यभामाने कहा। अपने पोतेको वर्षाके दिनोंमें खाने-पीनेमें किसी प्रकारकी बाधा न हो, अिसलिअे वह खुद मन्दर्त्तिको गअी। जाते समय "कुछ नहीं, अेक-दो दिनमें चली आअूँगी"–कहकर गअी थी।

आनेमें दोके छह दिन बीत गअे। अुसके पीछे मुब्बीका लडका सिरपर अेक बडी भारी पोटली लिअे आया। अुसके सिरपर भी अेक पोटली थी। अुस दिन सत्यभामाने अपने श्रमका आनन्द समझा। अुसका रोम-रोम मानो मुस्करा रहा था। आते ही अुसने रामको गोदमें लेकर कहा–"बच्चा बाबू ! देख कौन आया है। बाबू साहबके लिअे पापड लाया है !"

सत्याको तो अुसका नाम नहीं लेना चाहिअे था न ! अिसलिअे अुसके वास्ते "बच्चा" ही अुसका नाम था ! हमारे बच्चा बाबू और कुछ समझे या न समझे "पापड" तो समझमें आ गया। वह वहीं गोदमें अुछलने लगा। सत्यभामाने वहीं लडकीके घरमें बैठकर कटहल कटवा, गुठली निकालकर पकाया। फिर कूटकर थोडासा चूडेका आटा मिलाया और पापड बेल लिअे। साथमें सुब्बी बुआने भी रामके लिअे शकरकन्द और घुअियाँके पापड भेजे। वह सब लेकर आया हुआ सुब्बीका लडका अेक-दो दिन अपने ननिहालमें रहकर लौट गया, और ठीक अुसके पीछे ही वर्षा प्रारम्भ हुअी।

अिस साल जरा पहलेसे वर्षा प्रारम्भ हुअी थी। गाँवके खेत, तालाब, कुअें सब मेंढकोंकी 'टर्र-टर्र' से गूँज गअे। समुद्रकी गर्जना अत्यन्त तीव्र हो अुठी। सरसोतीने कहा—"मालूम होता है, अिस साल वरुण देव कोडी गाँवको निगल जाना चाहते हैं !"

आसमानमें वर्षा होती थी, वर्षाकी तालमें खेत हिलडुल रहे थे। रोपाअीके दिन आअे। सत्या और नागवेणीने सूरके लडके-पोतोंके साथ रोपाअी की। तीन दिनमें तीन मुडेके खेतकी रोपाअी हो गअी। खेत रुप गअे, किन्तु अेक बात नागवेणीके मनमें चुभती रही। अब तक सूरके घर-

वालोंने मजदूरीकी कानी नहीं ली। पिछले महीनोंमें अुन्होंने खेतीमें खाद डाला, हल जोता, अिस महीनेमें रोपाअी की, फिर भी कानी नहीं ले गअे। कानीका बोझ काफी हो गया था। अुसने तीन-तीन बार अुसको बुलाया। डर था कानी कहीं घरमें खर्च हो गअी तो आखिर सूराके ऋणमें रहना पड़ेगा।

किन्तु वहाँ सूराने लड़कोंको ताकीद कर दी थी। अुसन कहा था, "देखो बच्चो! अुस माँने कभी आचार, कभी पापड़, कभी चावल तो कभी कुछ देकर पाल-पोसकर बड़ा किया। जब बड़े अँताल थे अुन्होंने भी खण्डके लिअे हमें कभी तंग नहीं किया। गाँवके लोग अुनके लिअे कुछ भी कहें हमारे लिअे देवता पुरुष थे। किसी दिन फसल अच्छी नहीं हुअी, तो अपने आप बुलाकर कहते—"सूरा! अिस साल फसल अच्छी नहीं हुअी, अगर कुछ तंगी हो, तो जो चावल देना है, अगले साल देना! अैसे लोगोंपर आज गरीबी आअी है। अगर अुन्होंने कुछ दिया तो भी हमें नहीं लेना चाहिअे!'

अिसलिअे सत्यभामाने तीन-तीन बार कानी लेनेके लिअे बुलाया, पर व्यर्थ हुआ। आखिर नागवेणी सूरके घर गअी। अुसने जरा डाँटकर कहा—"सूरा! कानी लेनेके लिअे कब आअेगा? कानीमें कीड़े पड़नेपर आअेगा क्या?"

"माँ! आपकी कृपासे अब घरमें चावल हैं। जब जरूरत होगी, ले आअेंगे। हमारा बनकर जो आपके घरमें रह गया तो क्या बिगड़ा?"

नागवेणीकी डाँटपर सूराने जवाब दिया। पर अुस बेचारीको अिसका अर्थ समझमें नहीं आया। वह "कल खेतीका घास-फूस निकालते समय लेते जाना!" कहकर घर आअी।

रोपाअीके दिन बीते। नागवेणी अपने रोजके काममें लगी रही। जरा समय मिला, तो खेतीमें जाकर घास-फूस निराने लग जाती, नहीं तो जानवरोंको बाहर जंगलमें ले जाकर चरा लाती। जब कभी वर्षा नहीं होती, आसमान साफ होता, तो रामको भी साथ ले जाती। रामके शरीरमें कोअी खास शक्ति नहीं थी, पर वह अपनी मृदुमधुर तुतलाती बोलीमें कुछ बोलता रहता, कुछ-न-कुछ पूछता रहता। कमजोर होनेपर भी जरा-जरा दौड़ धूप

किया करता। अुसकी मधुर बातोंसे बडोंके हृदयमें आनन्द लहराने लगता। अुसे सुनकर घरके बडे अपने दुखोको भूल जाते। नागवेणीको भी अुसको अपने साथ ले जानेमें बडा आनन्द आता। घरसे बाहर निकलते ही अुसका चहकना शुरू हो जाता। वह समुद्रकी ओर देखकर पूछता—"माँ! वह क्या चमक रहा है?"

"समुद्र!"

"समुद्ल तिसतो तहते हे?"

नागवेणी हँसती। वह बेचारी समुद्रकी परिभाषा क्या बताती? हँसकर कहती थी—"बड़ा तालाब!"

"माँ! अुसमें नमल तिले होदे। चलो देथें!"

जबतक वे समुद्रके किनारेपर नही ले जाती, राम जिद्द नही छोडता। वह अपनी बातके लिअे माँको नही छोडनेवाला था। अुसे समुद्रपर ले जानेमें नागवेणीको बडा डर लगता। रामको समुद्रसे खिसकते-अुछलते हुअे आनेवाली लहरोको देखने और छूनेमें बडा आनन्द आता। अुसको देखने और छूनेकी अुसे अनन्त अुत्सुकता रहती। लहरोपर अुछलनेवाला सफेद फन, लहरोंके ताडवसे अुठनेवाले मोतीसे अनन्त जलकण, देखकर वह हँसनेमें समुद्रसे होड लगा देता।

"घर चलो अब!"— माँ कहती।

"ना! यही थेलेगे! — तुम भी यहीं थेलो!"

अिस प्रकार सप्ताहमें दो-तीन बार समुद्र-यात्रा निश्चित थी। कभी रातको समुद्रकी आवाज सुनकर वह पूछ बैठता—"माँ, वह कौन चिल्लाता है!"

माँ कहती—"समुद्र!"

"वह त्यों चिल्लाता है। अुसको त्या चिन्ता?"

घरवालोकी बातोमें अुसे चिन्ताके अलावा और क्या सुननेको मिलता। तब अुसके प्रिय समुद्रको भी चिन्ता होना अनिवार्य था।

जब अुसको दुख होता, जब किसी बातसे परेशान होता, तो समुद्रपर जाना ही अुसकी दवा थी। माँ कहती—"आ बेटा! समुद्रपर चले!"

वह अपना सारा दुःख-कष्ट भूलकर समुद्रपर जानेके लिअे तैयार हो जाता। समुद्र भी घरके पास था। अगर वर्षा नही होती, तो भला पचास सौ कदम चलना क्या मुश्किल था ?

रामको खाने-पीनेका कोअी कष्ट नही था। दादी मन्दर्त्तिसे पापड-वडी वना लाअी थी। अेक पापड भूनकर दिया कि राम सन्तुष्ट। घरमें दादी थी, अुनसे वह अपनी वाते कहता रहता। वडी दादीसे कहानियाँ सुनता रहता।

वर्षाऋतु समाप्त हुअी। महा-पितृ-अमावस्या (पितृ-विसर्जनी) थी। गाँवके लोग समुद्र-स्नान करने आअे, पितरोको पिण्ड-दान देनेका दिन था। न जाने क्यो आज सरसोतीको समुद्र-स्नान करनेकी अिच्छा हुअी। वह काशीसे आनेके वाद कभी समुद्र-स्नानके लिअे नही गअी थी। "वहाँ तक चलना और खेलती हुअी समुद्रकी लहरोमें डुवकी लगाना मुझसे नही होगा", कहकर वह चुप हो जाती। किन्तु आज अेकाअेक अुसने कहा— "नागू ! पता नहीं अब कितने दिन रहना है, मनमें आता है, आज समुद्र-स्नान कर आअे।"

"पर आपसे वहाँ तक चला कैसे जायगा ?"—नागवेणीने कहा।

"अिसमें क्या है ? आँखसे नही दिखलाअी देता, तुम हाथ पकडके ले चलना और वहाँ पानीमें डुबोकर लौटा ले आना। अेक कोनेमें अुस नमकीन पानीमें डुवकी लगा लूँ ! पितृपक्षकी अमावस है, मन कहता है, नहा आना अच्छा। अव क्या मुझे मन्दिरमें जाना है या तीर्थ-यात्रा करनी है ? मुझे तुम अितना करा दो !"

अुस दिन सुवह अुठते ही अुसने घरमें अेक वार स्नान किया। विना किसीकी सहायतासे देवघर हो आअी। देवघरमें जाकर नमस्कार करके, सत्याको वुलाकर पूछा—"सत्या ! मुझे कौन ले जायगा, तू या नागू ? तू ही आ। रास्तेमें सुसताते चलेगे। हाँ, अेक साथ अितना कैसे चला जायगा। डुवकी लगाते समय हमारे सुब्राय अुपाध्यायकी पत्नी मुझे पकडने आअेगी। तुम दोनो हाथ पकडकर डुवोकर निकाल लेना। नागवेणीको रामके साथ यही रहने दो !"

यह सुननेके बाद राम घरमें बैठनेवाला थोडे ही था। अुसने भी—"मैं आअूंदा!" की रट लगाअी।

"बेटा! तुम यही मेरे पास बैठे रहो, नही तो मुझे डर लगेगा!"—माँने कहा, तो फौरन अुत्तर मिला—"वहाँ बडी दादी डलेगी!"

विवश होकर नागवेणीको अुसे भी साथ ले जाना पडा। घरके सब लोग स.थ-साथ चले। रामने अपनी बडी दादीका हाथ पकडकर कहा—"दादी! आ! हम ले जाअेंदे!"

सुनकर सब हँसे। सरसोती अेक हाथसे सत्याका हाथ पकडकर धीरे-धीरे चल रही थी, दूसरा हाथ रामने पकडा था, नही तो भला अुसकी बडी दादी कैसे चल सकती? जाते-जाते सरसोतीको पुरानी बातें अेक-अेक कर याद आने लगी। अुसने कहा—'सत्या, सब य.द आने लगा, देखो। जबतक पारोती थी, मैंने अेक अमावसको भी नागा नही की। ... सत्या! वह अमावसको गअी ना!"

पारोतीके स्मरणसे अुसकी आँखोमें भी पानी भर आया। सब समुद्रके किनारे गअे। वहाँ सैकडो लोग अिकट्ठे थे। कुछ लोगोंका स्नान हो चुका था, कुछ स्नान कर रहे थे। कुछ तिलोदक देनेमें तल्लीन थे तो कुछ सन्ध्या करनेमें। रामने चारो ओर देखा। अुसने कहा—"माँ! मै भी अैसा करूँगा!"

बस फिर क्या था। वह वही बैठ गया। अुसने रेतीके लड्डू बनाअे, और वहाँ रखकर "ओम् बा! ओम् बा!" करने लगा। अुसके ये मंत्र सुनकर सब हँसे। सरसोतीने हँसकर कहा—"सत्या! भैयाका पूरा अवतार हुआ है! अगर भैया होते, तो वे भी आज यहाँ आकर मंत्र कहते!

स्नानकी तैयारी होने लगी। राम भी सबसे आगे नहानेको तैयार हुआ। आखिर सत्या और नागवेणीने हाथ पकडकर अुसको पानीमें डुबकी लगवाअी। खारे पानीसे आँखें दुखने लगी, पर राम बडे जोर-जोरसे हँसता हुआ चीख रहा था—"नहानेमें मजा आता है। और और . खूब नहलाओ!"

मन भरकर रामका स्नान हुआ। "अगर धूप होगी तो सरसोतीको कष्ट होगा" कहकर सुब्राय अुपाध्यायकी घरवालीको ढूंढने लगे। वह अपनी

पुरानी सहेलीसे बाते कर रही थी। नागवेणी रामको पकडकर खडी रही और अुन दोनोने सरसोतीका हाथ पकडकर नहलवाया। अुसके बाद अुसने नागवेणीसे दो पैसे माँगकर वहीपर बैठे अेक वैदिक ब्राह्मणको दक्षिणा दी। सत्यभामाने भी अुसका अनुकरण किया।

"अब चले!"—सरसोतीने कहा। सब पूर्वाभिमुख होकर घरको चल पडे। जब सरसोती लौट रही थी, तब पुरानी सब थकावट सूद सहित महसूस होने लगी। फिर भी जहाँ-तहाँ ठहरती हुअी अपनेको पहुँचाने आअी सुब्राय अुपाध्यायकी पत्नीके साथ बात करती चल पडी। घरमें आते ही अुसने कहा–"नागू! कुछ भी नही होता बेटी! थोडासा अमृतपानक बनाओ तो!"

नागवेणी अुसको वही बरामदेपर बिठलाकर अमृतपानक बनाने अन्दर दौडी। रामने कहा—"दादीको मै पिलाअूँगा पानक!"

"अच्छा बेटे, तू ही पिला!"—सरसोतीने कहा।

अुसका जी घबडाने लगा। वह वही लेट गअी। पानक आया। रामकी जिद्द देखकर थोडासा अुसीके हाथसे पी गअी। पानक पीनेके बाद जरा आराम हुआ।

"तुम बडे होकर माँ और घरका नाम रोशन करना, मेरे राजा बेटा!" सरसोतीने हँसते हुअे रामको आशीर्वाद दिया।

"न जाने क्यों काशीसे लाया गगाजल थोडा पीनेको जी चाहता है!"

सरसोतीकी अिच्छा जानकर सत्यभामाने काशीसे लाया गगाजलका लोटा ला अुसका ढक्कन खोलकर पूछा—"क्या गगाजल पिलाअूँ?"

"मै पिलाअूँगा!"—रामने कहा।

सरसोतीके लिअे पानक बनाते समय ही न जाने नागवेणीको क्या लगा। घबडाअी हुअी सूराके घर जाकर अुसे अपने चाचाको बुला लानेको भेज दिया। जब वह लौट रही थी, राम अपनी दादीके मुँहमें गगाजल डाल रहा था। अुपाध्यायकी पत्नीने भी सरसोतीका चेहरा देखकर घबडाकर कहा—"अगर कोअी पुरुष होता तो अच्छा होता! मालूम होता है, सरसोतीको बडी तकलीफ हो रही है।"

सरसोतीके कानमें भी यह बात पडी। बुढियाने हँसते हुअे कहा—"मेरा राम है न पुरुष !"

यही अुसका अन्तिम वाक्य था। थकानमे जो लेटी तो क्षण भरमें वही आँखें मुंद गअी।

नागवेणीने रोते हुअे कहा—"जब माँने कहा था, पारोती अमावसको गअी थी न, तभी में जान गअी ! शायद अुन्होंने ही मांको अपने पास बुला लिया !"

राम बार-बार अपनी दादीको हिला-हिलाकर अुससे बोलने लगा। नागवेणीसे यह नहीं देखा गया। वह रामको गोदमें अुठाकर जरा ओझल हो गअी। अैरोडीसे नारायणभैया दौड़े आअे। अुनसे सत्याने कहा—"यह तो अिच्छा-मरण है। जब अुन्होंने मौतको बुलाया, तभी वह आअी। हम जैसे पापियोंका अैसा भाग्य कहाँ?"

: ४० :

नवरात्र बीती, गाँवके खेत पके, समुद्रका जोर कम हुआ। धीवर मछली पकडने लगे। हुगारकट्टेकी बन्दरगाहपर दूसरे गाँवके पालवाले जहाज आने लगे। अब रामका घरमें जी नही लगता था। वह समुद्रके किनारे ले चलनेके लिअे माँसे जिद्द करने लगा। सरसोतीके मरनेके बाद आठ रोज वह "दादी! दादी!!" कहकर अुसके लिअे परेशान रहा। दादीको भुलानेके लिअे नागवेणी अुसको कभी समुद्र किनारे, तो कभी खेतोंमें, कभी होन्नेके जगलमें तो कभी नारियलके बागोंमें घुमाने लगी। अेक दिन पहले जो अपना ही नारियलका बाग था, अुसे अुसमें ले गअी। यही बाग बच्चेके दादाने खरीदा था। अब वह अुसका नही था, फिर भी अुसके पैर अुसे वहाँ खीच रहे थे, बेचारी रामको लेकर वहाँ गअी। वह बाग तो कल्प-वृक्षोंसे भरा नन्दनवन् था। हर जगह नारियलके गोने झुककर झूल रहे थे। अिसके पहले भी, जब वह बाग अुसका था, सत्यभामाके साथ वह यहाँ आअी थी। अब अुसको वह दिन याद आया। अुसने अपने बच्चेसे कहा—"बेटा! भगवानने तेरे नसीबमें नही लिखा, नहीं तो यह बाग तेरा था!" बस, रामने पेडपर झूलनेवाले गोत्तोकी ओर अिशारा करके कहा—"माँ, मुझे वह चाहिअे!"

"वे हमारे नही है, बेटा!" कहकर अुस बेचारीको रोते हुअे रामको लेकर बागके बाहर निकल आना पडा।

सरसोतीके शुद्धिके दिन आअे। अुसके घरवालोने अुसकी अुत्तरक्रिया (श्राद्ध) यही आकर की। जिस घरमें सरसोतीका ब्याह हुआ था, अुसी घरमें सुब्बीको देनेसे अुन दोनों घरानोंके सम्बन्ध अधिक प्रेम और निकटके बन चुके थे। सरसोतीकी अुत्तर-क्रियाके लिअे आअे सुब्बीके पतिको अपने

ससुरालकी दयनीय दशा देखकर बडा दुख हुआ। अुसने कहा—"बापके मरनेपर हमारा घर भी अेकका तीन हो गया, किन्तु कम हो या ज्यादा घरकी जमीन हम भाअियोंमें ही रही, पर यहाँकी हालत देखकर बडा दुख होता है।"

अुत्तर-क्रियामें आये हुये लोग अेक-अेक करके चले गये। जाते समय सब रामके हाथमें कुछ न कुछ रखकर गये। रामने माँसे पूछा—"माँ! यह क्या है? अिनसे क्या करेंगे?"

सत्यभामाने अपनी गरीबीकी याद करके कहा—"अिससे सब कुछ होता है।"

और नागवेणीने हँस करके कहा—"बेटा! कुछ नहीं, तुझे खेलनेके लिये यों ही दिया है!"

यह सुनकर रामने पूछा—"माँ, अिसकी दाढी बना दो न!"

नागवेणीने वह पैसे अुसके हाथसे लेनेकी बजाय अुसके हाथमें अपने श्वसुरकी तकली अुठाकर दे दी। अिस तकलीपर दादा जनेअूका सूत काता करते थे। राम अुसको लेकर खेलने लगा।

सूतक या मृत्युमें भी भला क्या रोजका खाना-पीना छूट सकता है? अुसके लिये खेतीमें जाकर मेहनत-मजदूरी करके पकाअी फसल कैसे भूली जा सकती है? अगर चार दिन लापरवाह रहे, तो आकाशके स्वामीको गुस्सा आ जाये, और वह दिया हुआ सब छीन ले तो?

कटाअीके दिन आये। सत्यभामा या नागवेणीने कभी हाथमें हँसिया नहीं पकडा था। वे सोचने लगी, "मजदूरोंको बुलाकर अुनके साथ हम हँसिया पकडकर काम करें या अपने आप फसल काट लें!" सूरको बुलायें, लेकिन अुसको पिछली कानी (मजदूरी) अब तक नहीं दी गयी थी। वह माँगनेके लिये आया भी नहीं। अिस बार यदि अुसके घरवालोंने कटाअी की तो खेत ही अपना कर लेंगे। वह यह सब सोचती रही। अुधर सूर और अुनके लडकोंने अपना खेत काटनेके पहले अपनी मालकिनका खेत काटकर घर भर दिया। सूराके लडके जवान थे, काम-चोर नहीं थे, अुनके साथ अुनकी बहुयें भी काममें लगी थीं। चुटकी बजानेमें सारा काम हो गया। जब फसल घरके

आँगनमें आ गओी, तो सास और बहूने लम्बी चारपाओीपर पटक-पटककर धान निकाल लिया। राम भी "पटतो पाओीपर" खेलमें शरीक हो गया। बरामदेपर धानका ढेर लगा। नागवेणीने सबसे पहले सूरके ऋणसे मुक्त होनेके लिओ "कितने मजदूर कामपर लगे? कितना धान अुनके हिसाबका हुआ"—कहते हुओ हिसाब लगाकर अुसका धान अलग निकालकर रख दिया।

अिसके बाद सूरको बुलाया। बेचारेको पता नहीं क्यों बुलाया। वह आया। अुसके आते ही नागवेणीने कहा—"सूरा, देख यह धान, तेरे कानीके हिसाबका है, अुसे ले जा। कल अगर सब खतम हो गया, तो मैं कहाँसे दूँगी?"

नागवेणीके अलग निकालकर रखे धानको देखकर सूरने कहा—"माँ! अिस साल मुझे कानी नहीं चाहिओ। भगवानकी कृपासे अिस साल हमारी फसल अच्छी हुओी है। आखिर आप ही का तो खाता हूँ। आपके घरमें अेक दिन हमने काम कर दिया, तो क्या हमारे हाथ टूट जाअेंगे?"

यह सुनकर नागवेणीको अच्छा नहीं लगा। "सूर! मुझे किसीके ऋणमें रहना पसन्द नहीं। तुम जानते हो, बापके बुलानेपर भी मैं अुनके घर नहीं गओी!"—अितना कहकर वह अन्दर चली गओी।

यह सुनकर सूरा भी परेशान हुआ। खण्ड देनेपर मालिकको क्या बचेगा, यह और कोओी न जाननेपर सूरा तो जानता था। अुसको नागवेणीके शब्द कठोर लगे। अुसका दिल न दुखानेके लिओ अपनी बहूको बुलाकर अुससे धान घरपर भेजवा दिया।

अब नागवेणीको शान्ति मिली। वह धान नापने लगी। पचास मुडी धान हुआ। खण्डका धान काटकर करीब दस मुडी चावल बचेगा। केवल दस मुडी चावलसे भला घरका सारा खर्च कैसे चलेगा? कपडे, नमक, मिर्च सब अिसीमें तो आता था। अिसीलिओ अुसने आधा मुडीका सुग्गी[1]का खेत बोना तय किया। जिसके लिओ खेतमें मेहनत करना जरूरी था। पहली फसलमें वरुण देव सिंचाओी करते हैं, दूसरी फसलमें भला कैसे सिंचाओी करेंगे?

---

१. कोंकण प्रदेशमें कहीं-कहीं आश्विनमें दुबारा धान बोया जाता है और वह होलीके दिनोंमें कटता है। होलीको कन्नडमें "सुग्गी" कहते हैं। अिसीलिओ अिस दूसरी फसलको भी "सुग्गी" कहा जाता है।

अिसीलिअे सुग्गीके खेतोको पसीनेसे सींचना पडेगा। चार-पांच महीने खूब मेहनत करेंगे, तब चार-पांच मुट्ठी चावल मिलेगा। नागवेणीने अिसकी तैयारी शुरू की।

अिस बार जोतना सूराका काम और बाकी सब अपना काम माना गया। "खण्ड देकर खेती करना महा आफत है!" यह बात समझमें आ गअी थी। खैर, अुस दिनसे दिन भर राख, खाद ढोना, पानी सींचना, साग-सब्जी अुगाना यही काम चला। धान कूटनेके लिअे भी किसीको बुलानेकी हिम्मत नहीं पडती थी। अिसी सुग्गी खेतमें थोडा तिल, अुडद, कुलथी भी बो दी।

बोआअीका काम समाप्त हुआ। जब कभी खेतीके कामसे जरा समय बचता, तो होन्ने-जगलमें घरके पिछवाडे बागमें जाकर सूखे जलावन बुहारनेका काम भी करने लगती। अिसके अलावा, अवकच्य पकाना, धान पकाकर सुखाना आदि कअी काम थे। अब तक नागवेणीने कभी मूसल हाथमें नहीं पकडा था। हाँ, रामके लिअे चूडा कूटनेको दो बार अवश्य अुठाया था। अब वह रोजका काम था। कुछ दिनतक रोज धान कूटनेसे हाथमें छाले पडे और बाजुओंमें दर्द शुरू हुआ। चार-आठ रोजमें वे सूजकर रुलाने लगे। फिर भी जीना था। जीनेके लिअे यह सब करना भी जरूरी था। कलका खाना आजके कामपर निर्भर था। अिससे भी बढकर रामकी चिन्ता थी। बेचारा राम अुत्साहसे मांके प्रत्येक काममें हाथ बँटाता था। अुसको और अुसके कामको देखकर क्षण भरके लिअे वह अपनी थकान भूल जाती। दूसरे ही क्षण अुसके मनमें आता—"अिस बच्चेका आगे क्या होगा? क्या यही मूसल और यही 'पटतो पाअी पल!' अुसके नसीबमें लिखा है? क्या अुसको भी यही खण्ड-बटाअीकी जमीन जोतनी पडेगी?"

अेक दिन सत्यभामाने कहा—"बच्चेका जनेअू करेंगे तो भुलाया हुआ कुलाचार भी तो वह करेगा। मन्त्र सहित चार अष्टाध्याअी सिखाअेंगे, तो बेचारा अिज्जतकी जिन्दगी बसर कर सकेगा। चावल, नारियल कुछ न कुछ दक्षिणामें अिज्जतके साथ ले आअेगा। जब वे जिन्दा थे, कुछ भी नहीं मालूम होता था, आज अेक-अेककर सब मालूम हो रहा है।"

"पता नही भगवानने अुसके नसीबमें क्या लिखा है ? कौन जानता है, वह पढ़-लिखकर अपने नानाकी तरह वकील बनता है या दादाकी तरह वैदिक ब्राह्मण। कौन जाने नरसिंहभैयाकी तरह होटल भी चलाअे या अपना ही नया रास्ता ढूंढ निकाले ! सब भगवानका खेल है। अुनको वकील बनानेके लिअे क्या-क्या किया गया। पर अिसका क्या नतीजा निकला ? वे होटल चलाने लगे।"

नागवेणी निराशावादी नही, पर अपने रामके विषयमें भविष्यवाणी करना अुसकी शक्तिके बाहर है। अिस मामलेमें वह अनिश्चयवादी है।

घरकी अनेक मुसीबते थीं, फिर भी सास-बहूने रामका हाथ नहीं छोडा। अुसका चौथा साल चल रहा था। पाँच वर्ष होनेपर अुसको गाँवके पासवाले स्कूलमें भेजनेका विचार कर रही थी। अब गाँवमें ही अेक स्कूल हो गया था। जबसे गाँवमें यह स्कूल खुला शकरय्याका मठ बन्द हो गया। अब अुस मठका नाम भी नहीं सुनाअी पडता था। शकरय्याकी खबर भी कानोमें नही आती थी। वह कभी कही "यक्षगान" का अर्थ कहता, तो कभी यहाँ-वहाँकी हाँकते हुअे अपनी जिन्दगीके दिन काट रहा था। रामकी पढाअीके सम्बन्धमें शकरय्याके मठका सवाल ही नही था।

पर अभी वह नन्हा सा बच्चा था। ये अुसके खेलने-खानेके दिन थे। दादी और माँ अुसको खेलाती थी। कभी समुद्र दिखाने ले जाती, कभी गौवे चराने और कभी आसपासके गाँवके मेलेमें। यही अुनका मनोरजन था। समुद्र किनारेपर मिलनेवाली चित्र-विचित्रकी सीपें, छोटे-मोटे शख और होन्नेके फल यही अुसके खिलौने थे।

गाँवमें जब कभी मैदानी[1] नाटक होते, अुसमें "अुरचण्ड" बजनेकी आवाज सुनते ही वह "टमटम ले जा !"—कहकर जिद् करने लगता। जालवाले धीवर कभी-कभी गाँवमें मैदानी नाटक करवाते, कभी मन्दर्तिकी और कभी मारी कट्टेकी मण्डली बुलाते। अिस प्रकारके मैदानी नाटक खेलना ही गाँवके अिन धीवरोका मनोरजन और आमोद-प्रमोद था। अिन

---

१ भागवत नाटकमें स्वाग समाप्त होने आते हैं। वह नाचने लगते हैं तब वह मैदानी नाटक कहलाता है। यह खेतोंमें होता है। नाटक स्थानको रगस्थल कहते हैं। अिसे दशावतार नाटक भी कहते हैं। यह देहातोंका मनोरजनका विषय है।

नाटकोंमें घण्टे भरके लिअे ही क्यो न हो, रामको ले जाना अनिवार्य था अैसे समय रातको खाना खाते ही सत्या अुसको "अब सो जा बेटा ! रातक स्वाग[२] आते ही तुझे ले चलूंगी !"—कहकर सुलाती थी और रात भरं सोअे हुअे बच्चेको पौ फटते ही जगाकर नाटकमें ले जाती। जब कभी बच्च "रंगस्थल"के पास जानेको जिद्द करता, तो "बेटा ! वहांपर सब अछू बैठते है ! सारा भ्रष्टाचार है ! हमें वहाँ नही जाना चाहिअे !"—कहक अपने और अुस अबोध बालकके ब्राह्मणत्वकी रक्षा कर लेती थी।

फिर भी आखिर बच्चेकी तृप्तिके लिअे, खेल खतम हो जानेपर लोगोंके चले जानेपर अुसको जहाँ स्वांग भरते हैं वहाँ ले जाकर "देखो बच्चे ! वह रावण है ! वह भीम है ! वह किरात है !"—कहते हुअे अुसको स दिखाती थी।

वहाँसे घर आते ही वह घरके बर्तन बजा-बजाकर, नाटकके वी पात्रोका अनुकरण करते हुअे मूंछ मरोडकर "अ ल ल ल ल कूदू !" कहकर शोर मचाया करता था। आंगनमें, रसोअीघरमें, बरामदेपर, जोर-जोरसे नाचता, चीखता, पुन "अ ल ल ल कू हु" करता !

अुसका यह अवतार देखकर कभी नागवेणी तो कभी सत्या कहा करती, "बेटा ! तुम्हें अैसा नही करना चाहिअे ! तू क्या नाचनेवाला है, जो अैसा करता है ?"

फौरन वह जवाब देता—"हाँ, मै नचय्या हूँ ! मैं अुप्रल्ली शेष हूँ ! रावण हूँ ! मै पौंडेश्वर पुट्टय्या हूँ ! अर्जुन बनता हूँ !" दुनिया भरके सब मशहूर यक्षगान नर्तक अुसके परिचित थे।

अेक दिन गाँवके मन्दिरके सामने खेल हुआ। रामने नाटकमें जानेकी जिद्द की। आखिर अुसको किसी तरह समझा-बुझाकर सुला दिया, और जैसे कि अक्सर ले जाती थी, पौ फटेनपर ही ले गअी। बच्चेको गोदमें लेकर अुसने वहीं रेतीले टीलेपर खडे हो नाटक दिखलाया। अुसने कभी अितनी अच्छी तरह और नजदीकसे नाटक नही देखा था। अुस दिन वह खुश हुआ। सत्याने अुसे गोदमें अुठाया था। पर "अुरचड" की आवाज सुनते ही अुसके

२ राक्षलश स्वांग। वह बड़ा भयानक और विचित्र बनता है।

पैर वही नाचने लगे । यह देखकर सत्या भी पाँच-छह सालकी बच्ची बन गओी ।

वे रातका खेल देखकर लौटे । लौटते समय सत्याने रामके सिरपर हाथ धरकर देखा, तो घबडा गओी । अुसका सिर सारा ओससे भीग गया था । वह मन ही मन गुनगुनाओी—"बच्चेके सिरपर ओस पडी । मैं बावली खेल देखनेमें मस्त रही !" अुसको डर लगा, कही सर्दी हो गओी तो ?

अुस चिन्ताके साथ मनने पूर्वापर सम्बन्ध जोडना शुरू किया। पारोती लच्चाको कुलथीके खेतमें ले जानेकी बात अुसको याद आओी । अुसे बुखार आना, अिसपर सत्याका पारोतीको रुलाना, आदि बाते अुसकी आँखोंके सामने फिर गओी । अुन सब बातोको याद करती वह रामके लिओ घर आओी । जब घरपर आओी अुसकी आँखोमें आँसू भर-भर आते थे । राम अुसकी गोदमें सो गया था । सत्यभामाको अिसका भी ध्यान नहीं था । वह अपने विचारमें मग्न थी, परेशान थी । काल्पनिक सकटकी भीतिसे अुसका चेहरा सूख गया था । घरमें आते ही नागवेणी दरवाजेपर ही मिली । रामको देखकर नागवेणीने कहा—"अिस बच्चेको नाटकका पागलपन है ! अम्माँ ! वहाँ नाटक देखा या आपकी गोदमें अैसे ही सो गया ?"

"नागू ! पता नही बेटी, तू क्या कहती है ..

मुँहसे बाते निकलती थी, और आँखोंसे आँसू ! पता नही मेरी बुद्धि कहाँ घास चरने गओी थी बच्चा ओससे भीग गया !!"

सत्यभामा, अपनी बात कह रही थी, नागवेणी अुसकी आत्मवेदना महसूस कर रही थी । नागवेणीने कहा—"माँ ! ओसमें जरा भीगा तो क्या हुआ ? अिसके लिओ आँसू गिरानेकी क्या जरूरत ?" कहकर रामको अपनी गोदमें ले लिया ।

"नही, बेटी ! रातको बुखार आया तो ! यही डर है मुझे !"

"जरा-सा बुखार आया भी तो क्या ? बच्चा चार दिन नाचता है, अेक दिन सोता है ! अिसमें अितना दुखी होनेकी क्या बात है ?"—नागवेणीने कहा ।

अिसपर सत्यभामाको पुरानी बात याद आ गअी। अुससे रहा नहीं गया। अुसने पारोती-सरसोतीकी सारी बातें नागवेणीको कह सुनाअी। सुनकर नागवेणीने कहा—"माँ! वे दोनो शायद जुडवा जन्मनेवाली थी, पर जनम नही ले सकीं।"

नागवेणी रामको सुला आअी। दोनो घरके काममें लग गअीं। राम जब अुठा, दोपहर हो गयी थी। अपने-अपने काममें लगीं दोनोंने बच्चेको जगाना अच्छा नहीं समझा। नागवेणी अपना गोठ-गोशालाका काम कर नहा आअी। रसोअी करनेको जाते समय रामको प्यार करनेकी सोचकर वह अुसके पास गअी। अुसने प्यारसे अपना हाथ अुसके माथेपर रखा। अुसका माथा जरा गरम लगा। "क्या पागलपन है!"—अुसने मन-ही-मन कहा। फिर गालोंको छूकर देखा, अुसका बदन छूकर देखा, वह भी गरम था! अुसे विश्वास करना कठिन था। अुसने "माँकी कही बातसे मुझे भ्रम हुआ है!"—यही सोचा। फिर "शायद हवा लगी होगी। किसीकी नजर लगी होगी।"—कहकर अुसने कलछीको आगमें गरम करनेके लिअे रखा। जब वह गरम होकर लाल हो गअी, तो लाकर बच्चेके मुखके दाहिनी ओरसे बाअीं ओर घुमाकर अुतारा और पानीमें डुबो दिया! 'चोंय्' होकर अुसमेंसे भाप निकली। अुस आवाज और भापसे राम जग गया।

"माँ, यह क्या करती है?"—बच्चेने पूछा।

"नजर अुतारती हूँ!"

"नजर कैसी?"

"पीछे कहूँगी, बेटा! अब तू सो जा, तुझे बुखार आया है!"—माँने कहा। बच्चा चुपचाप लेट गया।

अिसके बाद माँने अिसी प्रकार बच्चेके सिरपरसे मिर्च अुतारकर आगमें डाली। चूल्हेपर रखे पानीमें चावल डालकर सासकी आँख बचाते हुअे अुपाध्यायके घर साम्भर-बेलके पत्ते लाने गअी। अुसके रससे बच्चेकी सर्दीकी दवा करनी थी।

जब वह गअी, रामने वहीं सोअे-सोअे "माँ! माँ!!" कहकर पुकारा। चारो ओर देखा, फिर अेक बार पुकारा। वहाँ कोअी नहीं था।

अुसको भूख लगी थी। अेक बार और पुकारा। सुनकर सत्यभामा दौडती हुअी आअी। अुसका चेहरा देखकर ही वह डर गअी। बच्चेको अुठानेके लिअे अुसने अुसका हाथ पकडा। वह गरम लगा। सत्याके हाथ कांपने लगे। हृदय रो अुठा। "जैसे मैंने सोचा था, वैसे ही हुआ!" अुसने अपने होठ काट लिअे। चेहरा गम्भीर हो गया। पुरानी बातें आंखोंके सामने आने लगीं।

"दादी! मां तहां दअी? मुझे भूत लगी है!"—रामने कहा।

अुससे बच्चेको वहां छोडा नहीं गया। अुसको गोदमें लेकर जैसेके तैसे रसोअीघरमें आअी। बर्तनमें अेक-अेक चावल पानीकी तलमें जाकर नाच रहा था। "चावल पकते ही गजी खिलाती हूं, बेटा!"—दादीने कहा।

अितनेमें सत्यभामाका हृदय पिघलकर आंखोंसे बहने लगा। वह रोने लगी। यह देखकर रामने पूछा, "दादी त्यो रोती है?"

रामके मुर्झाअे हुअे मुखसे निकले अिस सवालका बेचारी क्या जवाब देती? नागवेणीने आकर यह दृश्य देखा। अुसके हाथमें सम्भारके पत्ते थे। पागलकी तरह ओठ आगे कर रो देनेवाली सासके अूपर अुसकी दृष्टि गअी। "मां! यह क्या पागलपन है! जरासा शरीर गरमाया तो क्या हुआ? मैंने अुसकी नजर अुतारी है। देखिअे यह सम्भारके पत्ते लाअी हूं। जरा गरमाकर सिरमें अिसका रस लगाअेंगे, तो बुखार अुतर जाअेगा।"

नागवेणी अपनी सासको समझा रही थी कि रामने अपनी मांसे पूछा—"मां, दादी त्यो रोती है?"

"आंखमें कुछ गिरा है!" नागवेणीने बच्चेसे कहा और अपनी सासकी ओर देखकर—"आप अुस बच्चेसे भी "

"नहीं बच्ची! मुझे अपने पिछले कर्म याद आ रहे हैं!"—सत्याने नागवेणीसे कहा।

नागवेणीने रामको अपनी गोदमें अुठा लिया। अुसको चूल्हेके पास लाअी। "देखो बेटा, अब तेरी गजी तैयार होगी, मैं अपने रामा बेटेको खिलाअूंगी!" कहकर बच्चेको प्यार करने लगी। वह वहीं चूल्हेकी गर्मी सेकने लगा और मांने चावलका बर्तन झुकाकर मांड निकाला, अुसी मांडमें थोडा चावल अुबालकर गजी बनाअी, फिर नमक डालकर अुसे खिलाया।

नाना शरमाअे। "अिसमें भला मेरी क्या अच्छाअी ?" अुन्होंने कहा और बच्चेकी जेबमें कुछ पैसे रख दिअे।

"चलो ! हम सब अैरोडी चलें। वहाँसे शामको कोडी जाअेंगे।" नारायणमैयाने कहा।

"पर घरमें गौवें भूखी रहेंगी !" नागवेणीने कहा।

"मैं अुनको देख लूंगी। बच्चेको अेक दिन ननिहाल ले जा !" सत्यभामाने कहा।

अुसकी जबान बन्द हो गअी। अन्दरसे मन वहाँ जानेके लिअे तैयार नही था, किन्तु चाचाका आग्रह था। और. "अगर अेक दिन भी बच्चेको अच्छा खाना मिल रहा हो, तो मैं क्यों वह अुसके मुंहसे छीन लूं ?" यह विचार भी अुसके मनमें आअे बिना नही रहा। वह तैयार हो गअी। नारायण मैयाने सत्यभामासे भी आग्रह किया। पर अुसने कहा—"गोठमें अितना-सा घास डालकर आअी हूँ ! बंधे हुअे जानवर, बेचारे भूखे रहेंगे !"

नारायणमैया निरुत्तर हो गअे। निरुपाय हो वे केवल नागवेणीको साथ लेकर अैरोडी गअे। "कबतक तू अकेली अुसको अुठाकर चलेगी ? ला थोडी दूरतक मुझे दे ! मैंने थोडा-सा गोदमें लिया तो मेरे हाथ थोडे ही घिस जाअेंगे ?" नानाने अपने नातीको गोदमें लेते हुअे कहा।

"नही, अुसको वहाँ बाग तक चलने दीजिअे !"

"तो क्या तू आज घर पहुँचना नहीं चाहती !"

नारायणमैया हँसा। जब सूर्य सिरपर आया तो सब घर गअे। सरसोतीकी काशीयात्राके बाद आज वह अैरोडी आअी थी। नारायण मैयाको आज अुसका वह रूप विचित्रसा लगा। वहाँ अुसका अत्यन्त हार्दिक स्वागत हुआ। घरके प्रत्येक मनुष्यने रामको प्रेम और सहानुभूतिसे गोदमें लेकर प्यार किया। अुसकी मृदु-मधुर तुतली भाषा सबको प्रिय लगी। दोपहरके भोजनके लिअे पायस और कडवू बने थे। रामने अपने पास बैठी नागवेणीके कानमें कहा—"माँ ! घरमें यह सब क्यों नहीं बनाती !"

"करेंगे भला !" माँने कहा और पायसमें अेक बूंद आँसूका खारा पानी भी टपक पडा। वहीं अुसने आँचलसे आँखें पोछ ली और चुपचाप खाना

खतम किया। भोजनोपरान्त दुख-सुखकी बाते होने लगी। नारायणभैयाके घरवालोने शामको पुन रथोत्सवमें जानेका तय किया था। अुन्होने नागवेणीसे कहा—"तू आज यही रह। तू रहेगी तो हम भी यही रहेगे। रथोत्सव नही जाअेंगे।"

"पर घरमें माँ अकेली होगी!" नागवेणीने कहा। कितना भी समझाअे, अुसने अपनी जिद्द नही छोडी। अिसपर रामने भी "चलो घर चले" कहा। बस नागवेणी अपने रामके साथ घरके लिअे चल पडी।

नारायणभैयाकी पत्नी स्वभावसे ही जरा कठोर थी, परन्तु वे भी नागवेणीको देखकर रो पडी। अपने घर आनेवाली अपनी भतीजीसे अुसने कहा—"नागू! कोअी कुछ भी कहे, तू अपनी जिद्द नही छोडेगी! आखिर रामको चार दिन यहाँ छोडती तो... ."

"वहाँ मेरे पास कौन है, चाची!"

नागवेणीने अुसको निरुत्तर कर दिया। नागवेणी अपने रामको साथ लेकर चल पडी। नाले तक नारायणभैया भी अुसके पीछे-पीछे गअे। जब नाला पार कर लिया, तो वापस लौटे।

घर आनेपर सारे दिन नागवेणीकी बाते होती रहीं। शामको राम अपने आँगनमें खेल रहा था। अुसको मेलेकी बाते याद आअी। माँने मेलेके रोज अुसको चूडा ला देनेकी बात कही थी। अुसने अपनी माँसे पूछा—"माँ! मेलेमें चूडा आया था!" नागवेणी वह नहीं भूली थी। किन्तु अपने चाचाके सामने अेक पैसेका चूडा खरीदनेकी अुसकी हिम्मत नही पडी थी। अुसका चेहरा मुर्झा गया। अुसने कहा—"आग लगे मेरे मनको!"

किन्तु सत्यभामा वह नही भूली थी। "मैं लाअी हूँ!"-सत्यभामाने कहा और मूठ भर चूड़ा जमीनपर डाल दिया। राम आँगनसे दौडता हुआ बरामदेमें गया और तोतेकी तरह चहकता हुआ अेक-अेक चूडेका दाना अुठाकर खाने लगा।

"और है, बेटा! कल खाना!"—सत्यभामाने कहा।

"अच्छा! कल खाअेंगे!"

रातको नागवेणी अपने बच्चेको गोदमें लेकर सो गअी। सोनेके पहले अुसने रामसे पूछा—"क्या तेरा नया कुर्ता अुतार ले !"

"नही माँ ! सुन्दर है ! पहनकर सोअूँगा !" रामने कहा।

राम वही पहनकर ही सोया। रातको जब माँ बच्चेके बदनपर हाथ फेरती, तो वह कुर्ता अुसके प्यारको रोकता-सा था। अुस कुर्तेकी याद, अुसको अपनी दुर्दशाका अनुमान कराती थी और जब गर्भवती थी, तब पतिके साथ अिसी मेलेमें जानेका स्मरण भी था।

गाँव भरका वह बहुत बडा मेला था। मेला खतम होनेपर भी अुसकी बातें खतम नहीं हुअी। मेलेकी बाते कह-कहकर लोग थकते नहीं थे। अेक नअी बात मिल गअी थी जो गाँवभरमें आँधीकी तरह फैल गअी। कोडी, अैरोडी, मणूर, मन्दर्ति और दूर अुडपी तक जहाँ कही जिस गाँवको देखा, सुना अुन सबका नाम ले-लेकर लोग कहा करते थे,"वहाँ मौतोकी वर्षा हो रही है ! कहते हैं, अेक अजीब बुखार कहींसे आया है !" हर किसीके मुँहमें यही बात ! हर किसीके मनमें अजीबसा डर, अजीबसी जिज्ञासा ! अेक दूसरेसे अेक ही बात कहना है, अेक ही बात पूछता है ! नागवेणी सत्यभामासे पूछती, "माँ ! क्या यह बात सच हो सकती है ?" सूरा नागवेणीसे पूछता, "छोटी मालकिन, यह सच है ?"

अेक दूसरेसे पूछते-करते किसीने कहा—"कहते हैं अुस बुखारका नाम "गाणगुदगा (अिन्फलुअेंजा) है !"

नागवेणीने अिस बीमारीका नाम भी नहीं सुना था। वह हँस पडी। अुसने कहा—"अुस साल सिल्कन चूडियाँ बोलती हे, यह सुनकर सब लडकियाँ अुन चूडियोको तोडकर फेंक दिया था न ! यह भी वैसी ही बात है।"

अिस प्रकारकी हँसी-मजाकके दो दिन भी नही बीते कि सूरके बिस्तरा पकडनेकी खबर आअी। तालाबपर आअी अुसकी बहूने यह खबर कही और अुसी दिन शामको अुस बहूको भी बुखार आनेकी खबर मिली ! दूसरे दिन ही किसीने कहा—"कहते हैं सूरके घरमें सब बुखारसे जल रहे हैं !" सत्यभामाको विश्वास नही हुआ। वह देखनेके लिअे अुसके घर गअी, तो

आधे रास्तेसे ही भाग आना पड़ा। क्योंकि सूरकी श्मशान यात्रा हो रही थी।"

"नागू! कितनी भयानक बात है! सन्निपात होनेपर भी आदमीको पन्द्रह दिन लग जाते हैं। आज बुखार आया और कल खतम, यह कभी किसीने नहीं सुना? सुनते हैं, अुसकी बड़ी बहूकी भी कोअी आशा नहीं!" घरपर आते ही सत्यभामाने कहा और सुबह होने तक वह खुद बुखारमें तपने लगी। नागवेणी डर गअी। घरके बागके पत्ते अुबालकर अुसने काढ़ा बनानेको रखा और अुपाध्यायकी पत्नीसे कुछ पूछनेके विचारसे अुनके घरकी ओर गअी, तो अुनके घर पहुँचते-पहुँचते वहाँसे रोने-चीखनेकी आवाज आअी। वहाँ न जाकर दौड़ती हुअी शीनमैयाके घर गअी। यहाँ बरामदेपर मैयाकी बुढ़िया सिरपर हाथ धरे बैठी थी और अुसके सामने चार बिस्तर पड़े थे। नागवेणीको देखकर बुढ़ियाने रोना शुरू किया। यहाँ भी लेनेके देने पड़ गअे। नागवेणीने अपना दुखड़ा रोकर पूछा—"आप अिनके लिअे क्या कर रही हैं?"

बुढ़ियाने आसमानकी ओर हाथ अुठाया।

नागवेणी काँपती हुअी घर आअी। अुसी दिन शामको रामको बुखार आया। नागवेणी बेचारी अुन दो बिस्तरोंके बीच चिन्तित बैठ गअी। फिर अुसने छासिया घास लाकर अुसका काढ़ा बना दोनोंको पिलाया। रातको बीमारोंकी सेवामें बैठी नागवेणीका शरीर भी गर्म हो गया। अुसने भी काढ़ा पिया। सुबह होने तक वे अेक दूसरेसे बोल नहीं सकते थे। राम बेहोश था। सत्यभामाकी आवाज़ नहीं निकलती थी। नागवेणी जहाँ पड़ी थी, वहीं पड़ी रही। गाँवका गाँव जल रहा था, तब भला अेक घर कैसे अछूता रहता?

घण्टे बीते, दिन बीते या युग बीते, अिसका सोअे हुअे लोगोंको पता नहीं था।

जब नागवेणीको अपना भान हुआ, तब दो दिन बीत चुके थे। न अुसको सत्यभामाका स्मरण था, न अपने रामका। अपनी हालतका भी भान

नही था। अितना जानती थी कोअी अुसके मुंहमें कुछ डाल रहा है और वह निगल रही है। तीसरे दिन अुसको कुछ होश आया और चौथे दिन अुसने आँखें खोली तब तक बुखार अुतर गया था। शरीरको देखा तो अुसका भी परिचय नही मिल पाता था। चार दिनके बाद अुसको पता चला कि अुसके मुंहमें कुछ डालनेवाले अुसके चाचा हैं।

"चाचा! मैं कहाँ हूँ?"

"तू अपने ही घरमें है, बेटी!"

"आपको किसने खबर दी?"

"मैं डरके मारे खुद आया था!"

अब अुसे खुद डरके मारे दवाके लिअे भटकनेकी बात याद आअी। अुसके साथ-साथ बच्चेकी भी याद आअी। अुसने करवट बदलकर कहा—"बच्चा?"

अुसको तो अपने पास ही सोअे हुअे बच्चेका स्मरण था, किन्तु वहाँ अब कोअी नही था।

"हाय राम!" वह चीख पडी।

चाचाने अुसको सान्त्वना देते हुअे कहा— "घबडा नही। राम अच्छा है, अुसको अँरोडी भेज दिया है।'

"माँ!"

अिस बार नारायण भैया चुप रहे।

"कहो! माँ कहाँ गअी? अुनको कौन ले गया?"

नागवेणीने रोना शुरू किया।

तब मजबूर होकर नारायण भैयाको "अुसको कौन ले गया?" के जवाबमें "भगवान" कहना पडा।

सुनते ही वह पुनः बेहोश हो गअी। होशमें आनेपर भी अुसका रोना जारी था। "अैसे रोनेसे क्या होगा? गअे हुअे आदमी क्या रोनेसे लौट आते हैं? तू व्यर्थ ही परेशान होगी!"—नारायण भैयाने यह कहकर सान्त्वना देनेका प्रयास किया।

अब नागवेणीका मन साससे बच्चेपर गया। अुसने रोते हुअे कहा, "मेरा राम भी नहीं है आप झूठ कहते हैं ..वह भी गया...जैसा सूरके घरमें हुआ ।"

"नहीं बेटी ! अुसको अैरोडी भेजा है। अुसका बुखार अुतर गया था। यहाँ अुसको देखनेवाला कोअी नहीं था।"

फिर भी वह नहीं मानी, अुसका अेक ही रोना था—"आप झूठ कहते हैं, सबने मुझे छोड दिया, ..मैं अकेली रह गअी !"

नारायण भैयाने कसम खाकर कहा—"नागू, अैसा मत कहो ! वह जिन्दा है ! मैं तेरी कसम खाता हूँ। तू अब जरा सो जा !"

बस फिर अुसने "माँ !" के लिअे रोना शुरू किया। अब "माँ !" और "बेटा !" का दुःख ही बुखार बना। अुसे दुःखकी बाढ आने लगी। सारा संसार दुःखका सागर बन गया। अुतरा हुआ बुखार फिर बढ गया। पुनः अेक बार वह तीन-चार दिन तक बेहोश पडी रही। अुसका मन अेक बार अपने बच्चेकी ओर जाता तो दूसरी बार सासकी ओर। पहले कभी न देखी, न सुनी अिस बीमारीकी विचित्र भयंकरता अनन्ताकार बनकर समुद्रकी तरह अुछलती हुअी अुसकी आँखोंके सामने खडी रहती।

अिस बीमारीने हमारे ही गाँवको साफ कर दिया या पास-पडोसको भी निगल गअी, यह देखनेके लिअे आअे हुअे नारायण भैयासे नागवेणीने पूछा—"आपके घरमें "

"वह गअी !"—अिसके अलावा भी और कअी लोगोंका नाम लिया।

"और सुब्बीके घरमें ?"

"अुसकी खबर कौन देगा, बेटा !"

चार-पाँच दिन बाद नागवेणीका बुखार अुतरा। रामको न देखकर वह पूरी तौरसे घबडा गअी थी, अिसलिअे रामको वहाँ लाना पडा। अस्थि-चर्मावशेष अुन दो कंकालोंका वह प्रेम-मिलन कितना पुनीत, कितना हृदय-स्पर्शी था ! अपने बच्चेको गोदमें लेकर प्यारसे थपथपाते हुअे अुसने पूछा—"अब माँकी अुत्तरक्रिया कौन करेगा ?"

"जब लडका है, तब अुत्तरक्रिया दूसरा कौन कर सकता है ? अुसको आना चाहिअे ! पर वह कहाँ है, यह कौन जानता है ?" नारायणभैयाने कहा।

नारायण भैया अुठकर शीनभैयाके घर गअे। वह भी मृतकोका घर था। वहाँ शीनभैयाकी बुढ़िया और दो आदमी चल बसे थे! खबर सुनकर नरसिंह खबडाकर दौडा आया। आते ही अुसने अुस अिलाकेमें अिस नअी बीमारीसे जो आतक मचा था, अुसका वर्णन सुनाया। मौके मरनेसे अुसे बहुत दुःख हुआ था। नारायण भैयाने छोटे नरसिंह भैयाको धैर्य दिलाते हुअे कहा—"यह किसी अेक पर नही, सारे गाँवपर आअी आफत है। किसके लिअे कौन रोअे और किसको कौन सात्वना दे? आपके घरमें जो हुआ वही मारे घरमें हुआ! कहते हैं कअी घर अैसे थे, जहाँ लाश अुठानेवाला कोअी नही था!"

अुसके बाद यहाँ-वहाँकी बाते हुअी। तब धीरेसे नारायण भैयाने अपने आनेका प्रयोजन बताते हुअे भूमिका शुरू की—"तुम जानते होगे, हमारी नागवेणीकी सास मर गअी। तुम माँकी बीमारीकी खबर सुनते ही दौडे आअे। पर हमारे जमाअी राजा पता नही कहाँ है। अुनके लिअे कहाँ लिखना होगा, यही पूछनेके लिअे तुम्हारे पास आया हूँ।"

"अुसने मेरे छोटे भाअीके साथ मिलकर मैसूरमें होटल चलाया था। अुन लोगोका दरबार होटल चला। जो पैसा आता वह जूआ, रेस, सट्टा आदिमें चला जाता। मुझे लगता है, यह खेल ज्यादह दिन नहीं चलेगा।"

यह सुनकर नारायण भैया नागवेणीके घर आया। "जमाअीराजका मैसूरका पता मिला है। अुनको अेक तार देता हूँ। लिखता हूँ आया तो ठीक! नही तो कुछ न कुछ करना पडेगा?"—नारायण भैयाने कहा। फिर अुन्होंने नागवेणीसे कहा—"नागू! हमारे घरमें भी अुसका प्रकोप हुआ! वह भी मृतकोंका घर है और यह भी, किन्तु अभी वहाँ कुछ खिलाने-पिलानेकी ताकतवाले दो-चार लोग है। मै यहाँ कितने दिनो रह सकता हूँ? चलो अब, हमारे घर चलो। वहाँके लोगोका श्राद्ध होनेके बाद चाहो तो तुम लौट आना! या वह महापुरुष तुम्हें बुलाने आअे तो चली जाना। अब तो यहाँ कोअी बन्धन नही रहा।"

"मुझे अभी थोडा हाथ-पैर हिलानेकी ताकत है! मै अब रसोअी बना लूँगी! आप घर जाअें। आप कहाँ तक मेरी चिन्ता करेंगे?"

नागवेणीकी यह बात सुनकर नारायण मैयाको गुस्सा आया। अुन्होने कहा—"नागू! हर समय अपनी ही जिद्द अच्छी नहीं होती। कभी-कभी अपने बडोकी बाते माननेसे कोअी पाप नही लगता! तुम्हारी अिन बातोंसे तुम्हे पता है, हमें कितना दु ख होता है?"

नागवेणीने महसूस किया कि मेरी बातोसे चाचाका दिल दुख गया। अुसने सिर झुकाकर कहा—"अच्छा! मै आपके साथ चलती हूँ। जरा धूप अुतरनेपर चलेगे, किन्तु यहाँ जानवरोको कौन देखेगा?"

जानवरोका स्मरण आते ही वह पुन पछताअी, "हाय राम! मेरी स्मृति कैसी है? मैं भूल ही गअी थी! बेचारोंका क्या हाल हुआ होगा!"

"तू मत घबडा! मैंने अुनको कबका अैरोडी भेज दिया है। वहाँ अुनको चरानेके लिअे लोग है। यहाँ गाँवमें गौवे चरानेवाला कोअी नही था, आवारा बनकर घूम रही थी। घूँटभर पानीके लिअे भी अुन्हें तरसना पडता था।"

नारायण मैयाने अपनी भतीजीको सतुष्ट कर दिया और धूप कम होते ही अैरोडी जानेके लिअे चल पडे। नागवेणीका चार कदम चलते ही दम फूलने लगता था। यह देखकर नारायण मैयाने कहा—"कहती है, मै रसोअी बना सकती हूँ! अब देखा? अनावश्यक दुख अुठाना भी क्या तमाशा है?"

नारायण मैयाके कन्धेपर राम था। नाला पार करते समय अुसने कहा—'माँ! मै बडा हो जाअूँगा, तो तुझे कन्धेपर बिठा लूँगा।"

बच्चेकी बात सुनकर नागवेणीकी आँखोमें आअे आँसू हँसीमें बदल गअे। अुसने हँसते हुअे कहा—"हाँ, बेटा!"

बच्चेकी अैसी अेक-अेक बातसे अुसके मनमें कभी-कभी प्रसन्नताकी लहर दौड जाती। गरीबी, विरह, व्यथा आदिका अुसके हृदयाकाशमें जो काला घना अँधेरा रहता, रामकी अैसी बातोकी बिजली अुसपर चमककर क्षण-भरके लिअे प्रकाश कर देती।

नाला पार करते ही अुसने कहा—"आह! माँ! हम तो दादीको वही छोड आअे! क्या वे नही आअेंगी?"

"वे अब कहाँसे आअेंगी, बेटा?"

"क्यों ? वे गओ ? शालग्रामके मेलेमें गओ न !"

"अैसे नहीं कहना चाहिअे !"

"क्यों ?"

"तेरी समझमें कैसे आअेगा, बेटा ? वे मर गओ कहा, तो तू क्या समझेगा ?"

"हाँ ! अैसा है ! मैं बड़ा होनेके बाद सब समझूँगा, जैसे अुस दिन बड़ी दादी सोओ थी। माँ, छोटी दादी भी वैसे ही सो गओ थी न !"

"हाँ, बेटा !"

बच्चेकी अिन बातोंसे नारायण मैयाके कलेजेपर छुरी चल रही थी। अुनका दिल रो रहा था।

"अब तू सो जा, राजा बेटा ! नहीं तो बातें करते-करते थक जायगा।"

नारायण मैयाके अैसा कहनेपर बच्चा चुप होकर सो गया। जब अैरोडी पहुँचे, तो शाम हो गओ थी।

नागवेणीको अैसा लगा, मानो अेक जंगलसे दूसरे जंगलमें आ गओ। किन्तु, यहाँ चाचा नामक अेक साथी था, जो चल-फिरकर कुछ मदद कर सकता था। अपने दुखोंको अन्दर-ही-अन्दर दबाकर हँसते हुअे औरोंके आँसू पोंछ सकता था। अिससे वह और चिंतामें भूल गओ।

नारायण मैयाने हगारकट्टे जाकर वहाँसे मैसूरको तार दिया। अुनको अपने जमाओराजपर यत्किंचित भी विश्वास नहीं रह गया था, अिसलिअे जवाबी तार दिया! अुसके भी पैसे मरे !! दूसरे दिन नहीं, अुसके दूसरे दिन लच्चाका जवाब आया। नारायण मैयाने वह जवाब नागवेणीको दिखला दिया। जवाब देखकर नागवेणीने कहा—"कुछ भी हो, माँकी अितनी याद तो रही। माँ जीते जी कहा करती थी, मेरे मरनेपर पिण्ड देनेवाला भी कोओ मिलेगा या नहीं, कौन जाने ! भगवानकी कृपा ही कहनी चाहिअे।"

माँकी मृत्युके नवे दिन ही लच्चा अैरोडी पहुँचा। माँकी मृत्युका समाचार मानो अुसके पास तक पहुँचा ही नहीं था। स्त्री किअे हुअे बड़ी शौकीनीके कपड़े पहने मोटरसे अुतरकर आया। मोटरसे अुतरते ही सीधा नारायण मैयाके घर पर पहुँचा। वह नहीं जानता था कि नागवेणी और राम

यहाँ पर है। वह अुनके वरामदेमें जा वैठा। किसीने देखा, यह अिस नअे फैशनका कौन आदमी आया? अुसने जाकर नारायण मैयासे कहा—"नअे फैशनका कोअी मेहमान आया है।" यह सुनकर नारायण मैया वहाँ आया। आकर देखा, तो जमाअीराज हैं। अुन्होने सामान्य शिष्टाचार दिखाते हुअे खाने-पीनेको पूछा, तो जवाव मिला—"वह सव मुझे नहीं चाहिअे हाँ, आगे क्या? वहाँ घरमें कौन है? नागू है न!"

"किसी तरह वही जिन्दा वची है। वेचारी सत्या चल बसी। अुसके मरते समय सव वेहोश पडी थी। गाँवके किसी आदमीको पता नहीं था। जब मैं पहुँचा, तो अेक रात वीत चुकी थी। आखिर मैं अकेले अुठाकर घरके पीछे टीलेपर जला आया!"—नारायण मैयाने कहा।

"वीमार पडते ही मुझे लिखा होता तो मैं चला आता!"—लच्चाने जवाव दिया।

अिससे अधिक वोलनेमें कोअी प्रयोजन नही, यह जानकर नारायण मैयाने कहा—"जो हुआ सो हुआ, अव तुम अगला प्रवन्ध करो। नाग-वेणीमें कुछ भी शक्ति नही। अुससे कोअी काम नही होगा। अगर तुम्हे कोअी आपत्ति न हो, तो यही रहकर तुम सारा काम कर डालो।"

"अच्छा! वह कहाँ है?"

नारायण मैया अुसको अन्दर ले गअे। सिर झुकाअे नागवेणी अपना मुँह गम्भीर वनाअे वैठी थी। राम अन्दर कमरेमें सोया था, वह अुसकी नजरोंमें नही पड़ा। नागवेणीको देखकर कुछ भी न वोलते हुअे लच्चा वाहर निकल आया।

"जरा ओराटाके घर जाकर आता हूँ। वहाँकी हालत देखे आता हूँ। रातको खानेके लिअे यहीं आ जाअूँगा।"—कहकर वह बाहर चल पडा।

नारायण मैयाने अन्दर जाकर नागवेणीसे कहा—"मालूम होता जमाअीराजको यहाँ अच्छा नही लगता। ओराटाके घर हो आता हूँ, कहकर चले गअे हैं।"

"आप अपना काम कीजिअे। अुनको भगवान जैसी वुद्धि देगा, करेंगे!"—नागवेणीने जवाव दिया।

राम जगकर अपनी मांके पास आया। नागवेणीका "पुतू" के होनेका दिन याद आया। अुसने कहा— "राम! तुम्हारे बापू आअे थे!"

"बापू किसको कहते हैं, मां!"

अिसका क्या जवाब दें? नागवेणीने कहा—"बेटा! जब तू छोटा था तब तुझे गोदमें लिया करते थे।"

"अब भी गोदमें लेंगे? . .... नहीं, अब मुझे चलना आता है। किसीको गोद लेनेकी जरूरत नहीं! मां, अब मैं बड़ा हो गया हूं न!"

"हां बेटा! अब तू बडा हो गया!"

"हां . कल मुझे मूंछें आअेंगी और मैं तेरे जैसा ही बडा हो जाअूंगा!"—सुनकर मां हँस पडी, हँसकर खिल पडी।

रातको "जमाओराज" आअेंगे, यह सोच नारायण भैया बहुत देरतक राह देखते रहे, पर अुनकी तपस्या बेकार गअी। अपने लिअे पर्याप्त तपस्या कराकर भी आखिर जमाअीराजने दर्शन नहीं दिअे। दूसरे दिन वहांसे अेक आदमीने आकर कहा— "वे कहते हैं सब विधि-विधान यहीं बैठकर कर लेंगे। वहां सब प्रकारकी सुविधा है।"

"अगर घरमें ही मांका काम हो रहा है, तो मुझे भी वहां जाना पडेगा।" —नागवेणीने कहा?

"वहांका अर्थ ओराटाके घरमें या अपने घरमें?" नारायणभैयाने नया सवाल पैदा कर दिया। यह जाननेके लिअे अेक दूसरे आदमीको वहां दौडना पडा। अपने घरमें हो तो नागवेणीको भी वहां जाना चाहिअे न!

खैर, वह आदमी लौट आया। अुसने वहांका मतलब समझाते हुअे कहा—"कहते हैं वे ओराटाके घरमें बैठकर सब काम करेंगे और बीमार नागवेणीकी वहां आनेकी कोअी जरूरत नहीं!"

"आखिर मांकी अन्त्येष्टि क्रिया अपनी आंखोंके सामने भी नहीं होने पाअी!"—कहकर वह बडी दुःखी हुअी।

"जैसे अुनको ठीक लगता है, वैसे करने दो! अुनका पाप-पुण्य अुनके सिरपर!" नारायण भैयाने कहा।

चार-पाँच रोजमें अन्त्येष्टि और वैकुण्ठ-समाराधना-भोज बडे ठाट-बाटके साथ सम्पन्न किया गया। ब्राह्मणोंको मुट्ठी भर-भरकर दक्षिणा मिली। दान भी दिअे गअे। वैकुण्ठ-समाराधनाके रोज नारायण मैयाको भी बुलौवा आया था। नारायण मैया नागवेणीको लिअे वहाँ गअे। अुन्होंने सुबह ही जाकर लच्चाको सुझाया, "आखिर वैकुण्ठ-समाराधना तो अपने घरमें करो। रसोअी यहाँ पकाना क्या वहाँ पकाना? आअे हुअे ब्राह्मणोंको अपने ही घरमें भोज देना अच्छा होगा।"

दोनो घर नजदीक-नजदीक थे। कोअी कष्टकी बात तो थी नही, पर लच्चाने बडी शानसे कहा—"बेचा हुआ घर भला अपना कैसे होगा?"

नारायण मैयाको अपना-सा मुँह लेकर चुप रह जाना पडा। नागवेणी जिद्द करके अपने घर चली गअी। नारायण मैया अुसे घरतक पहुँचाकर अैरोडी चले गअे। जाते समय अुनका मन जल रहा था, पर जानेसे पहले अुन्होने नागवेणीको अपने पास बुलाकर सावधान करते हुअे कहा—"अगर जमाअी-राज घरमें आअे तो अुनसे न बोलना ही अच्छा!"

दूसरे रोज लच्चा बेचे हुअे अपने अुसी घरमें आया। आकर अुसने नागवेणीसे कहा—"अब तुम्हारे यहाँ रहनेकी कोअी जरूरत नही। मैं तुम्हे अपने साथ मैसूर ले जाना चाहता हूँ। तुम अपने चाचासे पूछ लो। देखो वे क्या कहते हैं! अगर हाँ कहते है, तो मेरे साथ चलो!!"

अिन बातोंमें नागवेणीने अेक प्रकारका जहर महसूस किया, अिसीलिअे नागवेणीने कहा—"न अुनसे पूछनेकी जरूरत है, न और किसीसे. . मैं खुद अपना भला-बुरा समझती हूँ . । जिनको भगवानने मुँह दिया है, अुनको दो हाथ भी दिअे हैं।"

राम वही बैठकर देख रहा था। अुसने पूछा—"माँ, ये कौन हैं? कहाँ जानेको कहते हैं? अिनके साथ नही जाअेंगे माँ! हम यही रहेगे!"

लच्चाका अभिमान प्रज्वलित हो जल अुठा! "अिस बच्चेको भी अितना सब सिखा रखा है! जाने दो!" कहकर वह वहाँसे चल दिया। नागवेणी अपना मुँह सुअीकी नोक-सा बनाकर बैठी देखती रही, और क्षण भरमें न जाने क्या सोचकर रो पडी।

: २१ :

नागवेणीको अब अपने भावी जीवनकी दिशा निश्चित करना आवश्यक हो गया था। अब राम ही अुसका सब कुछ था। लच्चा बिना कहे-सुने मैसूर चला गया, बुलानेपर भी अुसके साथ जाना संभव नहीं था। अब न अुसका विश्वास रह गया था, न कोअी संबंध। अुसका दिल टूट चुका था। टूटा मोती कैसे जुड़े? नागवेणी कहा करती थी—"मुझसे अुनको कोअी प्यार-मुहब्बत नहीं तो कोअी बात नहीं, किन्तु क्या अपने बच्चेका मुँह न देखनेवाला बाप भी हो सकता है?"

अिन्हीं बातोंको सोचकर अुसका खून जल रहा था। पर आगे क्या करना है? अिस जीवन-संघर्षमें रामके लिअे अकेले कैसे आगे चला जा सकता है? अितने बड़े मकानमें चार-पाँच सालके बच्चेके साथ कैसे दिन कटेंगे? खेती-किसानीका भार अुठाना क्या अकेलीके बूतेका है? अब तक और कुछ भी न हो, रोनेके लिअे तो कोअी साथ था। बड़ी माँ! अुसका कैसा सोनेका-सा जीवन था! अुसके दुःखके आँसू भी नहीं सूखे थे कि माँ अैसे चल बसीं कि पता भी नहीं लगा। अब घरमें वह जहाँ कहीं भी जाय, क्या बरामदा, क्या रसोअीघर, क्या कोठ, चारों ओरसे बहनेवाली हवा पुकार-पुकारकर पूछती—"क्या तू अकेली अिस घरमें रामको सम्भाल कर रहेगी? तेरा अपना कोअी नहीं है? अपने आँसुओंसे सने भाग्यके लिअे अुस अबोध बालककी बलि देगी? कल तेरे चले जानेके बाद वह क्या करेगा?"

अिन सवालोंने वह प्रति-क्षण परेशान रहने लगी। नदीके अुतार-चढ़ावमें पानीकी गति रुककर अपना प्रवाह छोड़ भँवर बनकर जैसे कहींसे

खिसकती है, वैसे अुसका मन अिन्ही प्रश्नोंके चक्करमें कहीसे कहीं बहने लगा। जब कभी रामकी करुण आँखें दीख पडती तो अुसके ओठ खुल जाते, आँखोंसे मोती टपकने लगते। हृदय चीख अुठता—"भगवानने मुझे अिस हालतमें क्यो पहुँचाया!"

बापके घर जानेमें वह अपनी हार समझती थी। पतिसे कसम खाकर भी अेक प्रकारसे भिखारिन बननेकी अुसे अपूर्व वेदना थी। अगर बापके पास नहीं जाती, तो अिसी गजीके पानीमें, अुसको पानेके संघर्षमें, सारा जीवन गल जाअेगा, और आखिरमें रामको भी भिखारी होना पडेगा! अुसका अेक मामा वकील था, अेक वैद्य था, और अेक किसी बडे स्कूलका शिक्षक। गाँवमें भी कितने ही लोग लिख-पढकर अपना नया जीवन बिता रहे थे। कोडी, पडुकेरे गाँवमें जिन्हे अबडेके पत्तोके सार पर जिन्दगी बितानी पडती थी, अुन्होंने अब अुससे कुछ अधिक पाया था! और मेरा राम! अिसके साथ ही अुसे अपने ससुरकी याद आती, अुनने अपने बच्चेके लिअे रो-रोकर आखिर बुढापेमें जीवन भर कमाया हुआ सारा धन मेरे हाथपर रख दिया! अुनको अिसी होन्नेके जगलमें जलाया था। आज अुनकी आत्मा किस आशासे अपने पोतेकी ओर देखती होगी? -लडकेने तो मेरी आशा-आकाक्षाको मिट्टीमें मिला दिया, किन्तु शायद यह पोता अुसको पूरी करेगा, अिस आशासे बेचारे दिन-रात यही घरके चारो ओर चक्कर काटते होगे! दिन-रात अैसी ही बाते सोचा करती।

सत्यभामाकी वैकुण्ठ-समाराधना हुअे अेक महीना बीत चुका था। अुसके बाद नारायण मैयाने अेक-दो बार आकर पूछ-ताछ की थी, किन्तु वे अिसके विचार और जिद्दी स्वभावको जानते थे, अिसलिअे अुन्होने यह नही कहा—"नागू! अब यहाँ रहनेकी कोअी जरूरत नही, तू अैरोडी आ!" अितना कहना तो दूर रहा केवल "आ!" भी नही कहा। नागवेणी जब अिसपर विचार करती, तो अुसे लगता, अुन्होने सोचा होगा, अुनके बुलानेपर मै "नाही" करूंगी! अब तक तो मै यही कहती आअी हूँ! शायद अुन्होने सोचा होगा, अिसको बुलाना बेभूखवालोको खानेके लिअे बुलाना है भूख लगेगी तो आअेगी ही! दो-दो चार 'न' कहनेपर क्या अब मुझे ही

तो अुस वच्चेके कोमल चरणोंमें अनन्त आकाश तक अेक स्वर्ण-स्तम्भसा खड़ा कर दिया था। नागवेणीने सूर्य भगवानको देखते-देखते भक्तिसें अपनी आँखें मूँद ली, अनायास अुसके हाथ जुड़े, सिर झुका। और वच्चेने पूछा—"माँ, वह सूर्य कहाँ जाता है?"

"समुद्रमें घुस रहा है।"

"तो क्या फिर वह नही आअेगा?"

"कल आअेगा! कल वह पूरवसे आअेगा! वह दिन-रात घूमता है!"

"माँ! वडी दादी, छोटी दादी सव अैसे ही घूमकर आअेंगी। तू यो ही सोचती है। वह भी आअेंगी, माँ! तू नही जानती। मै सव जानता हूँ।"

वच्चेकी वाते सुनकर नागवेणीको रुलाअी आ गअी। वह क्या कहती? अुसने कहा—"हाँ, वेटा! जन्म-मरण किसीको नही छूटा है।"

वच्चा वही वैठा-वैठा झपकियाँ लेने लगा। नागवेणीसे भी नही अुठा गया। घरमें जानेमें देर हो रही है, सोचकर जव अुसने जरा मुड़कर देखा, आकाशमें चाँद हँस रहा था। चारो तरफका वातावरण अत्यन्त शान्त था। हृदयके सारे घाव भरकर न जाने कैसी अनिर्वचनीय प्रसन्नता फट रही थी। आँसुओंके स्थानपर नया हास्य चमक रहा था। न जाने कैसे अुस वातावरणमें नया जीवन खिलसा रहा था। अुसके मनमें आया,"कैसी पागल हूँ मैं! यहाँ आअी और यही वैठ गअी। घरमें अभी देवघरका दीप भी नहीं जलाया।"

वच्चा सो गया था। अुसने वच्चेको गोदमें अुठा लिया और जल्दी-जल्दी घरकी ओर चलने लगी। घरका पिछवाडा आया और अेकाअेक अुसके पैर रुके। अुसने देखा, अुसके सामनेवाली पगडडीपर कोअी वैठा है। नागवेणीको देखकर वह वैठा हुआ मनुष्य अुठा। कौन है वह? यह सोच ही रही थी कि अुसने देखा अुसका वाप आया है।

वकील साहव अपनी लड़कीके घर आअे थे। अुन्होंने देखा लड़की घरमें नहीं है। यहाँ-वहाँ देखकर लड़कीकी राह देखते पिछवाड़े जा वैठे। शायद पुरानी वात याद आ जाती तो पता नही कोडीके अुस कोने तक जहाँ कोडीका नाला समुद्रमें गिरता है— अपनी नागको ढूंढने जाते।

अपनी लड़कीकी सारी बातें अुनको अपने छोटे भाअीसे मालूम हुअी थीं। नारायण भैयाने अपनी बातोंका कुछ असर नही देख लिखकर भाअीको बुलाया। वे यद्यपि वकालत छोड चुके थे, फिर भी अुनको आराम नही था। अिसी साल अुन्होंने सोच-समझकर सब बच्चोंको अलग कर दिया था। अुन्होंने अपनी जिम्मेदारी समझकर जीना अच्छा समझा। अेक घर कह अेकताके नामपर घरमें जीवन भर झगडा करते रहनेमें क्या धरा है? अेक होकर लडते रहनेसे अलग होकर प्रेमसे रहना क्या बुरा? अिसी विचारसे अुन्होंने अपने जीते-जी सुख-शान्तिसे सबको अलग कर दिया। भगवानकी कृपासे सब बच्चे कमा रहे थे। वैसे ही देखा जाय, तो अुनका ससार ही अेक धोखा था। जीवन भर अुन्होंने खून-पसीना बहाकर काम किया। बुढापेमें सब कुछ अपने बच्चोंको बाँटकर, अपनी आवश्यकताओंको घटाते हुअे घरमें ही विरक्त-सा जीवन बिता रहे थे। वैसे लडकोंके बुलानेपर अुनके यहाँ जाकर बातचीत कर आते, पर वहाँ रहते नही। घरमें अब वृद्ध पति-पत्नी दोनों बुढापेके दिन बिता रहे थे। अुनको अैसा समय बिताना भी कठिन था। समाचार सुना, तो भी झट नही चल सके। अुनकी छोटी लडकी कृष्णवेणी अपनी पहली प्रसूतिके लिअे घर आअी थी। अुसको देखना था। अुस नातीका मुख देखकर अब अिस नातीका मुँह देखनेके लिअे दौडे आअे थे।

"अितनी रात गअे कहाँ गअी थी, बेटी!"—अुन्होंने पूछा और अपनी लडकीकी गोदमें सोअे नातीको अपनी गोदमें ले लिया।

"यह समुद्रपर जानेका जिद्द करने लगा। समुद्र कहते ही पगला हो जाता है। कैसा भी दुःख क्यों न हो समुद्रपर गया कि सब भूल जाता है। आज मेरा दुःख भी भूल गया।"—नागवेणीने कहा।

"कबतक अिस तरह समुद्रकी लहरें गिनती रहेगी?"

बापके सवालका नागवेणीने कोअी जवाब नही दिया। पर बात काटकर पूछा—"बापू, आप कब आअे?"

"आज ही! मोटरसे अुतरा और यहाँ आया। वैसे तो आठ-दस दिन पहले आ सकता था, पर कृष्णा प्रसूतिके लिअे वहाँ आअी थी, अिसीलिअे अब तक वहाँ रहना पडा।"—बापने कहा।

"हाँ, तू बड़ा होशियार है, बेटा! तुझे मैसूर-पाक बनाना आता है?"

"वह क्या है, नाना!"

"जिसे अभी तूने खाया!"

"वाह! यह मैसूरपाक है!...नही...यह तो सख्त किया हुआ दूध-पाक है!"

"हाँ, सख्त किया हुआ दूधपाक है। क्या तू बनाअेगा?"

"अरे! चावलमें गुड डाल दिया, दूधपाक हो गया!"

अितनेमें नागवेणीने खानेके लिअे बुलाया। अपने बाप और बेटेको अेक-अेक पत्ता रखकर अचार परोसा। पत्तेपर भात भी आया। साम्भार और कुछ व्यंजन भी, अभी-अभी रामका कहा हुआ दूधपाक भी आया। यह सब देखकर बापको आश्चर्य हुआ—"अिस समय दूधपाक कैसे?"

बापका सवाल सुनकर अुसने हँसते हुअे कहा—"किसानके घरमें बापू आपकी अितनी भी खातिरदारी नहीं होगी? क्या मुझे थोड़ा-सा आटा पकानेकी भी मनाही है? बहुत दिन हुअे रामके लिअे कोअी चीज नहीं बनाअी थी!"

रामने दूधपाक खूब चावसे खाया। बाप भी लड़कीकी खातिरदारी देखकर प्रसन्न हुआ। दूधपाककी मिठाससे नागवेणीकी मधुरताने अुनके हृदयको मुग्ध कर दिया। जैसे दूधपाककी मिठाससे अुनकी जीभ शान्त हुअी, वैसे लड़कीकी दुरवस्था देखकर अुनकी जबान भी शान्त हो गअी।

वकील साहबने अेकाअेक रुकी हुअी बात आगे चलानेके लिअे कहा—"नागू, तू भी अेक पत्ता रख ले!" किन्तु अुसने जिद्द कर बापको खिलानेमें ही समय लगाया। जब बाप खाकर हाथ धोने गया, तो नागवेणी खाने बैठी। बाप हाथ धोकर नीचे बरामदेमें टहलने लगा और राम अपनी माँसे गप लगाने अन्दर गया। नागवेणी रामके लिअे पकाअी गजीमें नमक-मिर्च मिलाकर खा रही थी। यह देखते ही राम चिल्ला अुठा—"माँ, तुम्हारा दूधपाक कहाँ है?"

"मैंने खा लिया!"—अुसने हँसकर कहा।

"झूठ बोलती है!"—अुसने बाहर जाकर नानासे शिकायत की।

"नाना ! मांके लिअे दूधपाक नहीं है। अपना लाया हुआ दूधपाक दो।"

नाना अन्दर आअे। नागवेणीकी चोरी पकडी गअी। "नागू ! जो किया था, वह सब हमें परोसकर तू वही गजी खाने बैठी है !"

बापका सवाल सुनकर नागू हँसी। "आपने खाया, तो मेरे अपने खानेसे अधिक हुआ, बापू ! आपको खाते देखकर ही मेरी तृप्ति हो गअी। पता नही, मैं कब आपका ऋण चुकाअूँगी।"

लडकीकी बात सुनकर बापका मन द्रवित हो गया। रामको बाहर बुलाकर अुन्होंने अुसके लिअे रखा हुआ मैसूरपाक रामके हाथमें देकर कहा—"लो, यह अपनी मांको दे आओ, बेटा ! तुम्हें मैं दूसरा दूंगा !"

राम वह मांको देने गया। मांने कहा—"रहने दो, बेटा ! अिसे तुम कल खाना !"

यह सुनकर रामको गुस्सा आ गया। अुसने चिढकर कहा—"वह तेरा है ! मैं तेरा नही खाना !" और मांके पत्तेपर रख दिया। अपने बच्चेकी खुशीके लिअे अुसको खाना ही पडा। मांने जब अुसके परोसे हुअे मैसूर-पाकके टुकडे खाअे, तो अुसने खुश होकर पूछा—"मां ! बढिया है न !"

"हाँ, बेटा !"

"मगर मां ! तुम्हारा बनाया दूधपाक अिससे अच्छा होता है। गुड-सा मीठा और मक्खन-सा नरम !"

"यह दूधपाक नही है, बेटा ! यह दूसरी मिठाअी है। यह दूकानसे लाअी गअी है।"

नागवेणी हाथ धोने गअी। रसोअीघरका अन्य काम भी पूरा हुआ। राम अुसके आगे पीछे चहकता फिरता था। बाहर आकर अुसने रामके लिअे अेक चटाअी बिछाअी। अुसपर अैसा ही अेक कपड़ा बिछाकर कहा—"राम ! आ, सो जा, बहुत रात हो गअी !"

"मां ! नाना कहानी नही सुनाअेंगे ?"—सोते-सोते रामने पूछा।

"अुन्हे कहानी नही आती !"—नागवेणी बापका मुंह देखकर हँसी।

"हाँ, मां, तू ही कहानी जानती है !"

"हाँ ! मेरी कहानी मैं ही जानती हूँ ।"—माँ हँसी ।

"माँ, आज मैं नानाकी गोदमें सोअूँगा ।"

वकील साहबने पद्मासन डाल दिया । अुसके बाद राम अुनके पद्मासनपर आ सोया । क्षण भरमें सो गया । अुसके बाद अुसे अपनी चटाअीपर सुलाकर नागवेणीने कहा— "आपके लिअे बिछाअे देती हूँ ।" और वहीं पडी अेक चटाअी बिछाकर सिरहाने ताडपत्रोंके अेक पुलिन्देका तकिया रख दिया और हँसकर कहा— "अिसपर बिछानेके लिअे कुछ नही ।"

बापने लडकीका हाथ पकडकर अपने पास बैठाते हुअे कहा— "अिधर बैठो तो !" फिर अुन्होने अुसको समझाते हुअे कहा—"बेटी नागू ! अब तुझे यहाँ रहनेकी क्या जरूरत ! अब न मरसातम्मा है और न सत्यभामा ! बेकारकी जिद् मत कर । अिसमे क्या लाभ ? अितने बडे मकानमें अकेले रहना क्या अच्छा लगेगा ? पता नहीं अैतालने मरते समय अितना बडा मकान किस विचारसे बनवाया था । आज अिस घरमें झाड़ू लगानेवाला भी नही रहा । अब तू यहाँ रहकर खेती-किसानीसे और वह भी मालिकको खण्ड देकर अपना गुजर-बसर कर लेगी, अैसी आशा करना बेकार है । माना तूने अैसा किया भी तो रामका क्या होगा ? क्या अुसके हाथोंमें हल और सिरपर गोबरकी टोकरी देगी ? अुसको पढना-लिखना है । अुसके लिअे तो कुछ सोचना चाहिअे । अपने ही गाँवके लोगोको देखो । लोग कही न-कहीं नौकरी तलाश करते, जहाँ-तहाँ भटकते है, क्यो ? जब मैं पैदा हुआ था, जहाँ पैदा हुआ था वही हमारा स्वर्ग था । आज वह स्वर्ग नरक बन गया है । आज खाने-पहननेके लिअे पहलेसे अधिक चाहिअे । कमरमें गमछा बाँधकर घूमनेके दिन अब नही रहे । भविष्यमें अिस तरहसे दिन नही बीतेंगे ?"

आगेकी बात दोनोको मालूम थी । अुसके विरोधका कोअी कारण नहीं रह गया था । वस्तुत अब अुसके जीवनका अुद्देश्य था रामका सुख । अुसीके लिअे नागवेणीको जीना था । अुसका नाम चलना चाहिअे ना ! "आखिर आप क्या करनेको कहते हैं ?"

"करना क्या है ? हमारा भी घरमें जी नही लगता । अभी चार दिनके लिअे कृष्णा आअी है । वह जब चली जायेगी, तो हमें घर खानेको

दौडेगा, सब लडकोके अपने-अपने स्वतन्त्र घर है । अगर तू हमारे घरमें रहेगी, तो कमसे कम जितने दिन जिन्दा रहेंगे, अुतने दिन तो अिस बच्चेको पढाने-लिखानेका सौभाग्य प्राप्त होगा। जितना अुसके नसीबमें लिखा है अुतना वह पढेगा । पढ़ने-लिखनेवाले सब लुच्चाकी तरह नही होते ।"

"अच्छा ! पर यह सब छोड़कर जाना पडेगा न !"

अब अेक बातकी चिन्ता रह गअी थी-- "पूर्वजोका घर कैसे छोड दें !"

"नागवेणी ! तू भी कैसी पगली है ? यह घरबार सब क्या बांधकर ले जा सकते है ? और अिस जमीनपर भी अब तेरा क्या हक है ? अुसे भी अुसने कही रहने दिया !"

"पर हम कायम-पट्टेपर हैं न !"

"हाँ ! किन्तु अुसका खण्ड जो देना पडता है ! और जब अच्छी फसल देनेवाली जमीन दूसरोको दे दी है, तो केवल घर रखकर क्या करेंगे ?"

बापकी बात सुनकर नागवेणीने कहा-- "कुछ भी हो, चाचाजीने कायम-पट्टेपर लिखवा लिया है। किसी दिन अपने घरमें रहनेकी अिच्छा हुअी, तो आकर रह सकते हैं न ! और राम बडा होकर क्या करेगा, कौन जाने ! अुसे अपना जन्मस्थान देखनेकी अिच्छा हुअी तो ! जो हाथमें है अुसे क्यो छोडें ! खेत सब खण्डपर अुठाकर घर हम अपने हाथमें रख लें !"

लडकीकी बातोकी कोअी खास कीमत है, अिसमें अुनका विश्वास नही था। फिर भी अुसका मन रखनेके लिअे अुन्होने कहा-- "अच्छा, अैसा ही करेंगे !"

अुसके बाद नागवेणीने कहा--"बापू ! राम तो समुद्र कहते ही सब-कुछ भूल जाता है। बिना अिसके अुसके दिन ही नही कटते। अगर कल कही अुसकी समुद्र-किनारेके अपने घरमें आकर रहनेकी अिच्छा हुअी, तो अुसके लिअे यह असम्भव न हो यह तो मेरी भी अिच्छा है।"

बस, नागवेणीकी विचार-तरंग जरा शान्त हुअी। वह बिना किसी सोच-विचारके सो गअी। सुबह अुठते ही वकील साहबने कहा--"नागू ! आज ही चले यहाँसे। घरमें कोअी खास सामान तो है नही। और जो कुछ थोडा-सा सामान है, वह नारायण अपने घर ले जाअेगा। वही किसीसे बातचीत करेगें।

खेत किसीको खण्डपर अुठा देंगे !......हाँ, और क्या-क्या करना है कहो ! सारा प्रवन्ध कर दिया जाअेगा।"

अब नागवेणीको कल रातकी वच्चीकी कही हुअी वातें याद आअी। अुसने वच्चीको वुला लिया। अुसके आते ही नागवेणीने कहा—"वच्ची, अब अैसा लगता है, हमारा यहाँका ऋण टूट गया। वापू अपने साथ ले जाना चाहते हैं, और मैंने 'हाँ' कह दिया है !"

"वहुत अच्छा हुआ, माँ! सरसोतम्मा और वडे मालिकने यहाँ अपना पसीना वहाकर नन्दनवन वनाया था, वे अपने पसीनेके वल जिअे, वैसा आपसे थोडे ही होगा? और वह भी अिस फूलसे वच्चेको वाँधकर! जाअिअे, कम से-कम अुस वच्चेके नसीवसे तो आपको सुख मिलेगा! कहीं भी रहीं तो क्या?"— वच्चीने कहा। अुसके वाद वेचारीके मनमें कुछ आशा भी पनपने लगी। अुसने कहा—"माँ! आपकी जगह कायम-पट्टेकी है न! आप वह हक अपने पास ही रखिअे, खण्ड कुछ ज्यादा नहीं है। और अगर छोडना ही है तो हमें याद रखिअेगा!"

जव यह वात वकील साहवके कान पर गअी,तो अुन्होंने वच्चीके पतिको वुलवा भेजा। अुसको भी सारी खवर मिल गअी थी। वह आया। आते ही अुसने "हम वडे मालिकके समयसे अिसी घरके नमकपर पले हैं।"—कहकर जमीन चालू खण्डपर देनेके लिअे कहा। वकील साहवने झट स्वीकार कर लिया। अिससे अुनके सिरका अेक वोझ हलका हो गया।

दोपहरके भोजनके वाद यहाँसे चलनेका तय हुआ। अिसके पहले नागवेणी रामको गोदमें अुठाकर अपने घरके चारों ओर घूम आअी, अपने दूसरे अिष्ट-मित्रोंसे मिलकर अुनका आशीर्वाद अुपदेश ले आअी। शीनमैयाके नरसिंह मैयाके घर भी हो आअी। वहाँसे सुव्राय अुपाध्यायके घर गअी। सुव्राय अुपाध्यायकी पत्नीने वडे प्यारसे आशीर्वाद देकर "अच्छा! अब तो भगवान भला करे, सारा भगवानका खेल है!"—कहकर चार आँसू गिराअे। नागवेणी अपने अडोस-पडोसकी वृद्धाओंके आशीर्वाद और सहानुभूति प्राप्त कर अपने घर आअी।

सूरके लडकेसे वातचीत करके वकील साहव पहले ही अपने घरको चल दिअे थे। नागवेणीने भी दोपहरके खानेसे निवृत्त होकर कुछ सामान वाँध

लिया। अब सवाल था काली कपिलाका प्रबन्ध कैसे करे। यह भी पारोती-सरसोतीके जमानेकी केपी-चेपीकी सन्ताने थीं। घरमें ही पैदा होकर बढी थी। पहले अैरोडी भेजनेका विचार मनमें आया। चलनेकी गडबडीमें अुसको चरनेके लिअे भी नहीं छोडा था। जब खाना समाप्त हुआ, सामान बांधा, गोठमें जाकर घरकी गौवोको देख आअी, सामान ले जानेके लिअे अैरोडीसे मजदूर भी आ गअे, तो भी नागवेणीको वहां जाना कठिन हो गया। अुसकी आँखोसे आँसू निकल आअे। "अरे भगवान, अब यहांसे जाना पडेगा?"—क्षण भरके लिअे वह विकल-सी हो गअी।

सूरका लडका कालू और अुसकी पत्नी बच्ची दोनो अपनी मालकिनको विदा करने वहां आअे थे। पता नही अुनको देखकर नागवेणीके मनमें क्या आया। अुसने कहा—"कालू! बच्ची! न जाने क्यो अिन गौवोको यहांसे अपने घर ले जानेकी अिच्छा नही होती। अिसमें शक नही अब वे सूखी भी हैं, फिर भी लगता है हमारी हैं। अिसी घरकी हैं। तुमने हमारे खेत लिअे हैं। वैसे ही अिन दोनों गौओको भी ले लो। अिन्हे पालनेके लिअे तुम्हारे घरमें छोडती हूँ। जब कभी हम आअेंगे तो रामको पावभर दूध तो मिलेगा।"

काली कपिलाको बच्चीके हाथमें सौंपते समय अुसको असह्य दुःख हुआ। राम भी वही था। रामने पूछा—"माँ! गौअें अुनको?"

"कहते है, हम अुनको पालेगे।"

खैर, अुस बच्चेको भी अिस घरको छोडकर जानेका भान हुआ। अब किसी खेलमें अुसका मन नही लगता था। अुसके मनके भाव बातोमें आने लगे। और जब घर छोडकर चलनेका समय आया, तो अुसकी अुदासीकी सीमा नहीं थी। वकील साहब अैरोडीसे लौट आअे थे। अुन्होने कहा—"राम चलो! हम अपने घर चले!"

जब अुसको पता चला मुझे यहांसे ले जाअेंगे, तो वह चीख पडा। "मै भी तेरे साथ आती हूँ, बेटा! यहां अब हमारे कौन है!"—माँने अुसको शान्त करनेके अनेक प्रयत्न किअे, पर सब व्यर्थ गअे।

रामने कहा—"यह मकान हमको चाहिअे! हम यही रहेगे!"—

वह रो-रोकर यही कहता था । यह सुन और रामका रोना देखकर वकील साहब हैरान हो गअे । अुसे कोअी शान्त नहीं कर सका ।

आखिर नागवेणीने कहा—'चलो बेटा ! हम समुद्र-किनारे चलें । वहाँ जाकर हम सीपें चुनेंगे ।"

यह सुनकर वह खुशीसे तैयार हो गया । तीन बजे धूपमें माँ-बेटा समुद्रके किनारे पहुँचे । वहाँ अुसको समुद्रमें तैरनेवाले सफेद पालके जहाज दिखाअे गअे । सीप, शंख आदि समुद्रकी चीजें जमा की गअीं । फिर धीरेसे माँने कहा—"बेटा ! यहाँ हमारे कौन है ? हम नानाके घर चलें ।"

"अच्छा ! माँ हम वापस लौटेंगे न वहाँसे ?"

"हाँ ! जब चाहे तब लौट आअेंगे ।"

'सच !" अुसने अपनी माँसे यह तय कर लिया, तब ननिहाल जानेकी स्वीकृति दी ।

अुस दिनका वह प्रस्थान अुसको सरसोती-सत्यभामाके काशीयात्राके लिअे किये गअे प्रस्थानसे अधिक महत्वपूर्ण था । दुःख मानो हृदयमें न समानेके कारण आँखोंसे फूटा पड़ता था । किन्तु अुसको यही डर दबा देता था कि कहीं राम न देख ले ! अिसी डरसे हृदयमें अुठी हुअी आह वहीं ठण्डी हो जाती थी । नाले तक बच्चों और अुसका पति पहुँचाने आया । सुब्राय अुपाध्यायकी बूढ़ी पत्नी भी वहाँ तक आअी । नालेमें पैर रखनेसे पहले नागवेणीने रामको अुसके चरणोंमें डालकर कहा—'माँ ! आप अिसको आशीर्वाद दें ।" अुसकी आँखोंमें सरसोतीके जीवनका अन्तिम दृश्य छा गया था । अुस बुढ़ियाने कहा—"नागू ! जब अुस देवीने अिसे आशीर्वाद दिया है, तो क्या मैं अुससे बड़ी हूँ ! अुसीके पुण्यसे, अुसीकी तपस्यासे तेरे बच्चेका भला होगा ।"

कुछ देर पहले नालेमें समुद्रका पानी भर रहा था, और अब पुनः समुद्रका पानी समुद्रकी ओर भाग रहा था । नालेका पानी भी नदीमुखकी ओर भाग रहा था। वकील साहबने बच्चेको अूपर अुठाया। पानी कमर तक चढ़ा था । बापके पीछे-पीछे नागवेणी चली । अुसकी दृष्टि अैताल रामके दुमजिले घरकी प्रत्येक खपरैल गिन रही थी । जब वह आँखोंसे ओझल हुआ, शीनमैयाका घर दिख रहा था, वह भी ओझल हुआ ।

नारायणमैयाने अेक बार नागवेणी और रामका स्वागत किया। राम भी अपने छोटे नानाको पहचानकर हँसा। घरके सब लोगोने अुनका अत्यन्त प्रेमादरपूर्वक स्वागत किया। किन्तु अुस दिन रातको नागवेणीका मन शान्त नही रहा। कोअी दुख नही था, चिन्ता नही थी, पर मनमें वेसिरपैरके विचार आते थे। अपने ससुरालमें आज तक जो देखा, सुना, अनुभव किया, अुन सबके सपने अेक-अेक करके अुसके सामने आते थे। अुनके साथ-साथ कलके, अपने जन्मसे खेले हुअे मकानकी बाते भी मनमें आती थी। भविष्यकी कल्पना ही कल्पना थी, रामके भविष्यके विचार अुसके अपने भूतकालके स्पष्ट चित्रोपर अपनी अस्पष्ट छाया डालकर गायब हो रहे थे। बेचारीकी सारी रात अिन्हीं सपनोमें बीती। जब कभी रामकी याद आती, तब वह अपने पासमें सोअे हुअे रामके बदनको टटोलकर देखती। सोचती बच्चा भी कभी पतिकी तरह मुझसे बिना कहे-सुने चला न जाअे! अुसे विचित्र शका थी। मानवी मनकी शकाओकी क्या सीमा है?

वकील साहब फौरन अपनी नागवेणीके साथ मगलूर जानेका विचार कर रहे थे। पर नारायण मैयाने भाअीसे कहा—"घरमें आअी बच्चीको चार दिन तो यहाँ रहने दीजिअे!" कहकर रख लिया। वकील साहबके मनमें बार-बार घरमें प्रसूता लडकी पडी है, अिसका विचार आता था। फिर भी वे अपने भाअीके आग्रहपर दो-चार दिन रहनेको राजी हो गअे। अिन्ही दिनो रामको भी अपने दोस्त मिल गअे। नारायणकी छोटी बच्चीसे अुसकी दोस्ती हो गअी। दिन भर दोनों प्यारमे खेलते रहते। आखिर अुसने अुस बच्चीसे पूछा—"क्या तुम्हारे घरमें समुद्र नही है?" यह सुनकर नाना अुन दोनोको अेक दिन हगारकट्टे ले गअे। वहाँसे कोडीके नालेका समुद्रमें डूबनेका दृश्य दिखाअी देता था। अिसपर राम "वहाँ . समुद्रपर जाअेंगे" कहकर जिद्द करने लगा। वह घर आया, माँसे कहने लगा—"माँ यह जगह अच्छी नही है। यहाँसे समुद्र-किनारे नही जाया जाता। बीचमें बडा पानी है! दूरसे देखना पडता है। मै वहाँ कैसे समुद्रको चूमता था!"

नागवेणीने सोचा, अगर बच्चेको समुद्रका पागलपन अैसा ही रहा, तो पुन जल्दी अपने घर जाना पडेगा। अुसने सोचा—"मगलूर जानेसे पहले कल अेक बार अिसको समुद्रपर ले जाकर दिखा लाअें!" अुसने बापसे

नानीके पागलपनकी बात कह सुनाओी। बापने हँसकर अपने नातीसे कहा—"रामा! तुझे कल अेक बडा भारी जाल बना देता हूँ, जब तू मगलूर जाओगा, तो समुद्रमें जाल डालकर खूब मछली पकडना!"

यह सुनकर नागवेणीको दु:ख हुआ। अुसने बापसे कहा—"बापू! वह अेक पागल बच्चा है! आप यह सब कहेंगे, तो कल वह अिन्हीं बातोंकी जिद्द पकडेगा! तब क्या होगा?"

"नागू! तू अुससे भी बडी पगली है! हमारे घरके बरामदेमें बैठेगा, तो सडकपर जानेवाली मोटर, सायकल, ताँगे देखते-देखते समुद्रको भूल जाओगा। बच्चोंकी बातें चार दिनकी होती हैं!"

बापकी बातमें नागवेणीको कोअी तथ्य नजर नहीं आया। वह अपने रामको जानती थी। रामको समुद्रका भूलना असम्भव है, अुसकी अैसी धारणा थी, क्योंकि अुसको भी समुद्रसे अुतना ही प्यार हो गया था।

रात बीती, सुबह हो गअी। जैसा कि नागवेणीने सोचा था, पहले ही रामने कहा—"माँ! चलो समुद्र देखने, यहाँ मेरा जी नहीं लगता!"

"अच्छा शामको!" माँने कहा।

दिन भर वह दूसरे बच्चोंमें खेलता रहा। दोपहरका खाना खाया। जरा शाम होते ही अुसने कहा— "माँ, यहाँ गोअें नहीं हैं?"

"हैं तो!"

"क्या वे समुद्रकी ओर जगलमें चरने नहीं जातीं?"

"बेटा! वे हमारे गाँवमें जाती हैं!"

"तब तो हम वहीं चलें!"

फिर माँका हृदय पिघल गया! "बेटा वहाँ क्या है? ठीक खानेको भी नहीं मिलता। यहाँ देखो कैसा दूध है, दही है, घी है, और देखा, कल हम मगलूर जाअेंगे, वहाँ ताँगा, सायकल, सब कुछ देखनेको मिलेगा!"—माँने अुससे मोटरकी कहानी कही।

वह दिन बीता। दूसरे दिन सुबह होते ही सब नहाकर तथा कुछ खा-पीकर मगलूर जानेको तैयार हो गअे। अुनका सारा सामान पहले ही नालेसे पार

जा चुका था। घरके लोग अुन्हें विदा करने नदीके अुसपार तक गअे। नदी पार करते समय रामने पूछा-- 'यही मोटर है !"

"वह देखो, मोटर नदीके अुसपार खडी है !" मांने अुसे दूर खडी मोटर दिखाअी।

सबके साथ राम भी नदी पार गया। नाव और पानीने अुसे खुशीसे पागल बना दिया। वह तालियां पीट-पीटकर अपनी खुशी दिखाने लगा। आगे मोटर खडी थी। नारायण मैयाने रामको बिदाकर नागवेणीसे कहा--"नागू, साल भरमें अेक बार बापूके साथ तू भी आया करना !"

अुसने भी "अच्छा !" कहकर चाचाकी बात स्वीकार की। अुसकी आंखें पसीज रही थी। मनमें आता था अैतालके घर "पुन पानी पीना और कोअी आना हमारे नसीबमें लिखा भी है या नही ?"

सब मोटरपर चढ़े। नारायणमैयाने नागवेणी और रामको विदा किया।

अिन भर मोटरपर चढ़ना-अुतरना और नदी पार करना यही काम हो गया था। अिस यात्रामें राम खुश रहा। जब कभी रास्तेमें नदी मिलती, अुसका अुत्साह फूट निकलता। आखिर शामको वे मगलूर जा पहुँचे। वहां नागवेणीकी मां अत्यन्त प्रेम और अुल्लाससे अुसका स्वागत करनेके लिअे तैयार थी। रामको देखते ही नानीने अुसको गोदमें लेते हुअे "आ मेरे राजा बेटा!" कहकर प्यारसे अुसका मुंह चूम लिया। अुनके हाथ-पैर धोनेके पहले ही मां नागवेणीको कृष्णवेणीके कमरेमें ले गअी। नागवेणीने अपनी बहनका मुंह देखा। अुसके बाद अुसके छोटे बच्चेको देखा। अुसने रामसे कहा--"राम देखा तेरा भैया है !"

रामने अुस छोटे बच्चेको देखकर कहा--"मां, मेरे खेलनेके लिअे है ?"

"हां, तेरे खेलनेके लिअे है !" हंसकर कृष्णवेणीने जवाब दिया।

अपनी बहनको देखे कअी वर्ष हो गअे थे। अुसको देखकर नागवेणी बडी खुश हुअी। तीन सालसे मांको नही देखा था। लम्बे समयके बाद यह मिलन अपूर्व था। अब नानीको नातीकी चिन्ता शुरू हुअी। अुसने कहा--'नागू ! बेचारेको भूख लगी होगी, थोडासा दूध ला देती हूं !"

"हां, खूब भूख लगी है मुझे। मांको भी लगी है। और नानाको भी लगी है !"--रामने प्रतिनिधित्व किया।

नानी दूध गरम करने गअी। नाना हाथ-पैर धुलवाकर नातीको अन्दर रसोअीघरमें ले गअे। रामने वहाँ दूध पिया। नागवेणी कृष्णाके बिछौनेके पाससे नही हिली। वह अुसका और अुसके बच्चेका मुँह देखती बैठी रही। दोनो बिना कुछ बोले पागलकी तरह अेक दूसरेको देखती रही।

अुसी समय कृष्णिके पतिदेव अन्दर आअे। अन्दर बैठी हुअी देवी कौन है, अिसका पता न लगनेमे वे पुन बाहर जाने लगे, तो कृष्णिने हँसकर कहा—'आअिअे न! यह तो जीजी है!" वह बेचारा अब तक नाम भर जानता था। चेहरा नही देखा था। अुसने प्रणाम करके पूछा— "कब आअी? सब कुशल-मगल है न?"

नागवेणीको क्या जवाब देना चाहिअे, यह समझमें नही आया। अितनेमें अुनके पीछे पीछे नागवेणीका बडा भाअी सदाशिव भी अन्दर आया। बाहरसे ही "नागू! नागू!!" कहकर पुकारता आया। भाअीकी आवाज सुनते ही वह अुठ खडी हुअी। भाअीने अुसको देखते ही पूछा—"नागू, राम कहाँ?"

"अपने नानाके पास होगा!" नागवेणीने कहा।

बस वह पवनसुत हनुमान बनकर रामको ढूँढने निकला। रामको देखते ही अुसको गोदमें लेते हुअे बहुतसे खिलौने दे दिअे! नागवेणीकी आँखोंमें भैयाका चेहरा पूर्ण अपरिचित नया-सा ही दिखाअी पडा। अुसके बाद अुसका दूसरा भाअी वैद्य भी आया। घंटे भरमें सारा परिवार अिकट्ठा हो गया। सबका प्यार देखकर बेचारा राम पूरा बुद्धू बन गया। अिस प्यारका अर्थ ही नही मालूम होता था अुसको। यह सब कौन है, क्यों मुझे गोदमें अुठाते है, मुँह चूमते हैं, खेलते और खिलौने देते है। कोअी बात अुसकी समझमें नही आती थी। नागवेणी भी चकित थी। अिसी क्षण अुसके मनमें आया—न जाने अितने दिनोतक वहाँ रहकर मैंने क्या-क्या खोया!

: २२ :

जबसे राम और नागवेणी वकील साहबके घर आये, तबसे घरमें मानो मेला ही लगा रहता था। अब तक वह कृष्णवेणीके प्रसवके आदर-सत्कारका स्थान था, अब नागवेणी और रामके आदर-सत्कारका स्थान बन गया। आने-जानेवालो, नाना-नानी और मामा-मामियोको कृष्णवेणीके अुस नवजात शिशुसे राम अधिक प्यारा लगता था। अिसका कारण भी स्पष्ट था। कृष्णवेणीके अुस नवजात शिशुको केवल दूरसे देख सकते थे, अुसको गोदमें अुठाना मुश्किल था, और अुसके साथ खेलना भी कठिन था। किन्तु रामको गोदमें लेकर अुछाल सकते थे, अुससे तुतला तुतलाकर बोल सकते थे। वह अिन बडोंका अच्छा खासा खिलौना बन गया।

नागवेणी अपना वनवास पूरा कर माता-पिता और भाअियोंके लिअे आदर्शकी मूर्ति बन गअी थी। अुसने जो दुःख भोगे, यद्यपि अुन्हे किसीने नही देखा, फिर भी सुनकर ही सब भाअियोका कलेजा कांप अुठता था। अैसी हालतमें माता-पिता और भाअियोने अुसपर अपने प्रेमकी वर्षा की तो कोअी आश्चर्यकी बात नही थी। नागवेणी भी जैसी कि अुसकी आदतसी हो गअी थी, कभी मांकी तो कभी कृष्णीकी सेवामें समय काटती। साथ ही अपने भाअियोके अुनके परिचितो तथा अपने बचपनकी सहेलियोके घर जाने-आने अुठने-बैठनेमें किसी प्रकारका सकोच नही करती थी। अिन लोगोके सुखद सहवासमें अुसके दिन अच्छी तरह बीतने लगे।

राम भी कभी अपनी मां, कभी नाना-नानी तो कभी सदाशिवके बच्चोंके साथ खेलनेमें दिन बिताता। अिस आमोद-प्रमोदमें भी वह कभी-कभी अपनी पुरानी बातोकी याद कर समुद्रकी बाते करता और फौरन भूल

रामने कहा—"वह समुद्र है, किन्तु कैसा निकम्मा समुद्र है। हमारे घरका समुद्र कैसा बढिया है, अुसकी लहरे कैसी जोरदार हैं! यह तो अैसा लगता है जैसे भैंस सोअी है!"

"बेटा! यह समुद्र भी वैसा ही है। पर हम दूरसे देख रहे हैं न! अिसीलिअे ठीक दिखलाअी नही देता!" रामकी आलोचना सुनकर माँने कहा। पर अिससे अुसकी शान्ति नही हुअी। अेक प्रकारसे अुसकी जिज्ञासा और बढ़ी। कभी-कभी अुसके तकाजोसे परेशान होकर नागवेणी कह देती—"अच्छा बेटा! मामासे कहूँगी, अेक दिन वे तुझे समुद्रके किनारे ले जाअेंगे।"

"कब?"

"जब अुन्हे समय मिलेगा! छुट्टी होगी!"

"तुझे भी चलना होगा!"

"अच्छा!"

वह दिन बीता और दूसरे दिन फिर वेही बाते। वकील सदाशिवको समय मिलना आसान नही था, और रामकी जिज्ञासा तृप्त होना अुससे भी कठिन था। जब दो महीने बाद मअीकी छुट्टी पडेगी तब जाना हो सकेगा!

मायके आअी हुअी कृष्णवेणीके जानेका दिन आया। अुसका घर भी दूर मद्रासमें था। अुसका पति भी प्रसवके समय बच्चेको देखने आया था, अब पुन: लेने आया था। अब दामाद, लडकी और अुस नवजात नातीको घर भेजनेका कोलाहल मचा। जाते समय कृष्णवेणीने नागवेणीको आग्रहके साथ मद्रास आनेका न्यौता दिया। जवाबमें नागवेणीने कहा—"अच्छा बहन! आअूँगी। किन्तु रामका यहाँ जरा जी लगने दो। वह चार आठ दिन जब मुझे छोडकर रहने लगेगा, तब कही जाना-आना होगा!" फिर भी अुसके मनमें यही आता कि अब मेरा सुखी होना असम्भव-सा है। कुछ भी हो, पराया घर कभी अपना हो सकता है? जब तक राम बडा होकर मेरे लिअे अेक घर नही बना देगा, तब तक मेरा जीवन अुत्सवकी अुस मूर्तिकी तरह रहेगा, जिसका काम लोगोंका आतिथ्य लेना भर होता है।

अुसके सामने जो सवाल सबसे कठिन था, वह था समय कैसे कटे? पहले घरमें कभी न समाप्त होनेवाला काम था, और अब दिन भर न समा

सकनेवाला आराम ! सबसे बड़ा कार्य था रामको नहलाना, अुसके साथ बोलना और खेलना। जैसा कि नाना कहते थे, जूनका महीना आअेगा, तो पाँच साल समाप्त होकर अुसे छठा साल लग जाअेगा। अुसके बाद अुसे पढ़नेके लिअे स्कूल भेजना पड़ेगा। फिर तो घरकी खपरैल गिननेका काम ही रह जाअेगा।

वकील साहबकी भी यही हालत थी। वे अपने व्यवसायसे निवृत्त हो चुके थे। किन्तु समय नहीं कटता था, अिसलिअे अपने लड़केके घरमें जाकर अुसे वकालतकी युक्तियाँ सिखाया करते। अुसके बाद अपने चार-पाँच मित्रोंसे जाकर मिल आते थे। शाम हुअी कि घर ही मन्दिर बन जाता। आजकल दुनिया भरकी भक्तिने आकर अुनके जीवनमें घर कर लिया था। सिद्धारूढ़ स्वामीकी तसवीर सामने रखकर पूजा-जप चलता रहता, मानो पूर्व जीवनकी कमीको सूद-दर-सूद पूरा कर रहे हो। जब कभी समय मिलता रामकृष्ण परमहंसका चरित्र और भगवद्गीता हाथमें लेकर बैठ जाते। पर नागवेणीको अभी वह पुकार नहीं सुनाअी देती थी, भक्तिकी पुकार अुसके हृदयमें नहीं अुठती थी। जैसे कोडीमें नित्य-नियमसे देवघरमें चिराग जलाकर नमस्कार कर आती, वैसे ही यहाँ भी करती। किन्तु सरसोतीकी तरह जरा समय मिलते ही माला लेकर "ओं नमः शिवाय" कहनेकी आदत नहीं पड़ी।

किन्तु राम अपने नानासे बढ़कर भक्त बनता जा रहा था। जब कभी लै-ताल अुसके हाथमें आ जाता, वह डेढ़-डेढ़, दो-दो घण्टा भजन करनेमें लगा रहता और जिस दिन ताल कहीं खेलमें भूल जाता, अुस दिन तीन मिनट भी नहीं बैठता। माँ और बेटा अब तक यहाँके वातावरणसे अेकीभूत नहीं हो पाअे थे। नागवेणीकी माँके ध्यानमें यह आअे बिना नहीं रहा। अुसने अपनी लड़कीसे पूछा— "क्या बेटी, वक्त नहीं कटता ?"

कभी-कभी माँ "मंजुनाथके मन्दिरमें चलो !" कहकर अुसको मन्दिरमें ले जाती। रामका अुनके साथ हो जाना स्वाभाविक था और रामके साथ होनेसे, मन्दिरके सामनेकी टेकड़ीपर चढ़कर दूसरे अुस "निकम्मे समुद्रका" दर्शन कर लेना भी अनिवार्य था। तब तक नानीको वहाँ मन्दिरके दरवाजेपर बैठकर अिनकी राह देखना पड़ती। फिर तीनों मिलकर घर लौटते। वकीलकी

पत्नीकी बहुत-सी सहेलियाँ थी। आते समय किसी-न किसीके घरमें जाकर समय सहारका काम किया जाता।

किन्तु नागवेणीको यह जीवन भारी मालूम होने लगा। अुसने मन बहलानेके लिअे पढना प्रारम्भ करनेका विचार किया। जिस दिन अँग्रेजी कहानियोकी किताब हाथमें ली, अुसी दिन पता लग गया कि अँग्रेजी भूल-सी गअी है। अुसने अुन किताबोको वहीं रख दिया। अेक दिन बापके नित्य-पारायणकी गीता हाथमें अुठाअी। कन्नड पढनेमें कोअी कठिनाअी नही हुअी। गीताकी अेक-दो बातें मनमें बैठ गअी। किन्तु बापकी तरह रोज अुसको गुन-गुनाते हुअे अथसे अिति तक पारायण करनेकी अिच्छा नही हुअी। अुसके मनमें आने लगा—"भक्तिके बारेमें मै ही अैसी अयोग्य क्यो हूँ! भक्ति मुझमें क्यो नहीं पनपती? जैसे सरसोती, पारोती और सत्यभामा बराबर नाम-स्मरण करती थी, वैसा मुझसे क्यो नही होता? वे अितना काम होनेपर भी नित्य भगवन्-चिंतनमें अपना समय बिताती थी और अितना समय होनेपर भी मुझसे वह नही होता!"

आखिर अुसका झुकाव अुपन्यासोकी ओर हुआ। अपनी सहेलियोसे किताबें मँगवाकर पता नही क्या-क्या पढने लगी। पढते रहनेसे भूली हुअी अंग्रेजी भी लौट आअी। कन्नड भी अच्छी तरह पढने लगी। जब तक राम आकर हाथसे किताब नही छीन लेता, तब तक पढती रहती। कोअी किताब पढते समय अुसका हृदय कहता—"अरे! लोग अैसे भी होते है?" कभी कहती—"यह सफेद झूठ है!" कभी कहती—"हमारी गरीबीसे यह क्या कम है?" अिस प्रकार वह अपनी तीव्र बुद्धिसे नहीं तो विशाल अनुभवसे अुन पुस्तकोका मूल्याकन करती। कभी वक्त काटनेके लिअे तो कभी रामकी जिद्के लिअे जो कुछ पढा था, अुसीको मिर्च-मसाला लगाकर रामको सुनाती। किन्तु रामके जीवनमें अेक खास अिच्छा बनी रहती थी, हर कहानीमें वह पूरी होनेके पहले "वहाँ अेक बडा समुद्र था। अुसमें बडी-बडी पहाड-सी लहरे अुठती थी। अुसमें लाल-लाल सूर्य डूबता था।" अैसी बाते आना अनिवार्य था। जब तक अैसी बाते नही आती, अुस कहानीकी पूर्ति ही नही होती थी।

समय खिसकने लगा। सुखदायक या दुखदायक रूपमें वह अपनी गतिसे सरकता जाता था। करीब चार महीने हो गअे वापके घर आअे। जैसे ही जून महीना आया, रामके नानाने पूछा—"राम, तू स्कूल जाअेगा?" अुन्होने अुसके कअी मित्रोका नाम लेकर कहा—"वे भी जाते हैं।" रामने भी अपने कअी साथियोका नाम लेकर पूछा—"क्या वे जाते हैं?" वैसे तो रामका घरमें मन नही लगता था, जब अुसको पता चला, सदाशिव मामाके चिदा और मालू भी स्कूल जाते हैं, तो अुसने भी ताली बजाकर कहा—"मैं भी जाअूंगा।"

अब चिदा, मालू अुसको बुलाने आते। वह भी अुनके साथ अुछलता-कूदता स्कूल जाने लगा। पहले दिन स्कूलसे आते ही अुसने अपनी मांसे शिकायत करते हुअे कहा—"मां! बहुत बच्चे आते हैं। कहते हैं, चुपचाप बैठना चाहिअ। कैसा निकम्मा स्कूल है!"

किन्तु जब दूसरे रोज चिदा, मालूने 'राम, आज नही आओगे?" कहा तो अपने आप कपडा पहनकर तैयार हो गया। महीन भरमें वह दिनमें दो बार अपना बस्ता अुठाकर स्कूलके लिअे जानेवाला सभ्य विद्यार्थी बन गया। अिसमें वह प्रसन्न रहने लगा, किन्तु अुसके स्कूल जाकर लौट आने तक नागवेणीके लिअे समय बिताना और भी मुश्किल हो गया। रामका दोपहरके समय घर आना भी अनिश्चित-सा हो गया, वह कभी घर आता तो कभी चिदा-मालूके साथ मामाके घर जाता। मामाका घर स्कूलके नजदीक था, अिसलिअे नागवेणी और अुसकी मां भी चुप हो जाती। किन्तु मां रामको स्कूलसे आकर हाथ-पैर धोते ही अुससे 'बेटा! आज स्कूलमें क्या हुआ?" कहकर सब पूछ लेती। और वह भी अुस दिनका सारा आत्मपुराण कह डालता। साथ-साथ अपने मित्र चिदा-मालूकी भी बडाअीकी बात कहता।

अब नागवेणीको अपने अुपन्यासोके कल्पना-राज्यमें विचरनेका पर्याप्त अवकाश मिला। वह जबर्दस्ती सिरपर अुठाया हुआ बोझ था। दूसरा चारा नहीं था। अिस प्रकारके पठन और निठल्लेपनसे अुसकी अनेक सुप्त भावनाअें जाग्रत होकर ताण्डव करने लगीं। वह सोचने लगी, मेरा भी अेक पति है। वही आजकी अिस दयनीय दशाका जिम्मेदार है। जीवनमें अनेक लोग सुखी हैं, किन्तु पतिके कारण मेरा जीवन बरबाद हो गया। अभी मेरी आयु पच्चीसकी

भी नहीं हुअी। बहुत जीना है। क्या अिस प्रकार किताबोंके पन्ने अुलटते, दूसरोंकी जीवन कथाओंको पढते दिन बिताअूंगी ? और मेरा बच्चा ? वह अपने नानाके सहारे जी रहा है। कल अुसका क्या होगा ? मेरा क्या होगा ? यही बाते बार-बार अुसके सामने आती। जीवनमें अुठनेवाली अनिश्चितताकी लहरोंको गिनते हुअे वह अिन्ही विचारोमें डूबी रहती।

कभी-कभी सोचती, अगर मैं अैसी ही रही तो सारा जीवन आन्तरिक आगमें झुलस जायगा। जब तक राम बडा होकर सिर अुठाअेगा, तब तक शायद मैं जलकर राख हो जाअूंगी। क्या तब तक मैं जिन्दा रहूंगी ? मुझे जीना चाहिअे। रामको बिना किसीका सहारा न पा अनाथ नहीं बनना चाहिअे। रामके जीवनमें समयपर "बेटा ! मैं हूं, घबडा मत !" कहनेके लिअे तो मुझे जीना चाहिअे। परन्तु क्या अिस तरह जीना भी सभव है ?

यह सवाल ही विचित्र था और यह विचित्र सवाल अज्ञात भावसे हल होनेका रास्ता देख रहा था। अुन्ही दिनोमें कदोके अक मित्रके घरपर सगीत-सभा हो रही थी। वहीका काअी फिडलवादक अुस रोज शामको अपनी कलाका प्रदर्शन करनेवाला था। सदाशिव भी जानेवाले थे, और अुनके घरवाले भी। अुन्होने सोचा नागवेणी जो घरमें सूखी अमियाकी तरह मुंह बनाअे बैठी रहती है, यदि सगीत-सभामें जाअेगी तो कुछ प्रसन्न होगी। वे अपनी बहनको बुलाने आअे। वह तो अैसी किसी भी बातके लिअे तैयार थी, जिससे जरा मनबहलाव हो।

"सगीत ! और फिडल !! बचपनमें मैं कुछ बजाती थी। पर अब किसको याद है अुसकी ? खैर, भैया चलो मैं भी चलती हूं। किन्तु रामका घर आनेका समय हो गया। अगर वह आया तो .. ..।"

"अरे, अुसको चिदा-मालू ले आअेंगे ! तू मेरे साथ चल !" भाअीने आग्रह किया और बहन अुसके साथ चल पडी। पास ही सौ डेढ सौ गज दूर अुनके मित्रका मकान था, काशी-रामेश्वर जाना थोडे ही था !

सदाशिवके अेक मित्रका नाम मोहनराय था। वह भी वकील था। मोहनरायके अेक मित्रको सगीतका शौक था। वे कभी किसी-न-किसी मित्रके घरपर मनोरजनके लिअे सगीत-सभाका आयोजन किया करते थे।

आज मोहनरायके घरपर ही संगीत-सभाका आयोजन किया गया था। जब सदाशिव नागवेणीको लिवाअे वहाँ गया, तब वह संगीतज्ञ फिडलके तान अेठता वहाँ बैठा था। अेक वकीलके दूसरे वकीलके घर जानेके बाद जो नमस्कार-चमत्कारादि आगत-स्वागत होता था वह कुछ हो न सका और जाते ही संगीत शुरू हो गया। स्त्रियाँ सब अेक जगह बैठी थी। नागवेणी अपना आधा मन रामके लिअे रखकर आधे मनसे संगीत सुनने बैठ गअी। मनके पागल सपनोके सारे भाव गायककी अुंगलियोपर थिरकते फिडलके तारोमेंसे निकलकर सारे वातावरणको भर रहे थे। राग पर राग निकाल रहे थे। अुनकी अुंगलियोकी नोकोंके चमत्कारसे सभामें बैठे हुअे नर-नारियोंके हृदयमें अेक नया अुन्माद-सा आ गया था। जानकार लोग अपने ज्ञानका प्रदर्शन कर औरोसे भी जानकार कहलानेके लिअे "यह बिलावल और यह बिहाग" कहकर हाथसे ताल देने लगे। किन्तु गायक आखिर "क्या बजाअूं ?" कहकर अपने ही रास्ते आगे चढा। वह दो-तीन घण्टे तक, संगीत सुननेवालोके अथाह हृदय-सागरकी थाह लेता रहा। अब और आगे बढा। सुननेवाले सुध-बुध भूल-से गअे। अिसमें शक नही, कुछ देवियाँ "रसोअीका समय हो गया" कहकर घर चली गअीं। जानेवाली गअीं पर बैठनेवालोको अुसका पता नही लगा। बैठनेवाले रातके दस बजे तक मूर्ति बनकर बैठे रहे। वे मानो कान रखनेवाले पत्थर थे। नागवेणी भी अुनमे अेक थी। अुसके कान संगीतके अलापोमें विलीन हो गअे थे। अुसके हृदयमें अुठनेवाली गत जीवनकी भावनाओमें समुद्र, नदी, नदीमुख, अुसका ज्वारभाटा और अुसकी लहरे, मन्द सुगन्ध पवन और भयानक आँधी, जीवनके घोरतम दुःख-कष्ट और मृत्यु-नृत्य, भावी आशा-आकाक्षाअें और जीवनका अन्तिम अुद्देश्य, सारी बाते अिस संगीतकी नावमें भर-भरकर कहीं अज्ञात स्थानको जानेके लिअे अदृश्य हो रही थी। अुसका चेहरा स्थिर था, आँखें अर्धोन्मीलित थी। वह किसी अज्ञात ससारमें विचर रही थी। जब संगीत-सभा समाप्त हुअी, तब अुसको पता चला कि अुसका प्यारा राम अुसकी गोदमें बैठा है। अुसका सिर माँकी छातीसे सटा था। वह भी अज्ञात भावमें लीन था।

संगीत समाप्तिपर सबने प्रसन्नतासे अुल्लसित हो तालियाँ बजाओी। तब नागवेणीका स्वप्न टूटा, अुसको अपनी गोदमें रामके होनेका भान हुआ, अुसने रामके सिरपर हाथ फेरते हुओे कहा—"कब आया, बेटा !"

"बहुत देर हुअी !"—रामने कहा।

सभी जानेके लिअे निकले। जानेसे पहले नागवेणीने पागलकी तरह अुस कलाकारको हाथ जोडकर प्रणाम किया।

"नागवेणी ! आजका संगीत कैसा था ?"—जाते समय अुसके भाओीने पूछा।

अत्यन्त नम्र होकर नागवेणीने कहा—"भैया ! मैं पगली क्या जान सकती हूँ ? पर बहुत आनन्द आया !"

कुछ भी हो, अुस दिन "बात न जाननेकी भाषामें" वह संगीतकी गहराओीमें पैठ चुकी थी, अुसका हृदय भरा हुआ था। अुसने अुसी भावमें अेक आह भरकर कहा—"भैया ! अेक महान् आत्मा है !"

"हाँ ! मुझे भी अैसा ही लगता है। फिडल बजाते समय वह किसी और ही दुनियामें पहुंच जाता है !"—भाओीने कहा।

सब घर पहुँचे। बूढ़ा बाप अपनी लडकीकी प्रतीक्षामें भूखा ही बैठा था। घर जाते ही सदाशिवने कहा—"बापू ! आपको आना चाहिअे था। मैंने अपनी जिन्दगीमें अैसा संगीत नही सुना।"

"कैसा भी संगीत क्यो न हो, अिस तरह चार-पाँच घण्टे तक सुननेसे मेरे सिरमें दर्द होने लगता !" बापकी बात सुनकर सदाशिवने हँसते हुओे कहा, "हाँ बापू ! आपके भजनमें भी अिससे कम समय नही लगता और अुसके समाप्त होने तक क्या हम सब चुपचाप नही बैठे रहते ?"

हँसते हुओे सदाशिवको देखकर बूढे बापने कहा—"तुम बच्चोंको क्या ? भजन, संगीत और वह सा-रे-गा . संगीत सब अेक हैं ?"

खैर, अुस रोज सदाशिव रातके खानेके लिअे वही बापके पास ही रहा। खाते समय अुसने कहा—"बापू ! मुझे अैसा लगता है कि संगीत सीखनेसे नागवेणीकी अुदासी दूर हो जायगी।"

नागवेणीने भी जो सदाशिवके बगलमें बैठकर खाना खा रही थी सिर अुठाकर भाभीकी ओर देखा। नागवेणीके हृदयमें भी यही बात अुठ रही थी। सदाशिवने नागवेणीकी ओर देखकर पूछा, "नागू ! तेरी क्या राय ? हाँ यहाँ वैसा सिखानेवाला कोअी नहीं। किन्तु मुझे लगता है, कि अगर तू यह विद्या सीख ले तो तेरी अुदासी दूर होगी।"

"आजका अुनका संगीत सुनकर मुझे भी अैसा ही लगा!" —नागवेणीने कहा।

भोजन समाप्त हुआ। नागवेणी रामको लेकर अपने सोनेके कमरेमें गअी। जब वह बिस्तरा बिछाकर सोनेकी तैयारी कर रही थी तो रामने पूछा—"माँ ! यह फिडल किसने बनाया ?"

माँको अपने बच्चेके अिस विचित्र सवाल पर हँसी आ गअी। "क्यों ? तुझे वह अच्छा लगा ? अुस फिडलने क्या कहा ? तेरे समझमें कुछ आया या नहीं ?"

"माँ ! मैं तुम्हारी गोदमें बैठा था न ! मेरी समझमें कुछ भी नहीं आया। कोअी कहता था संगीत, फिडल मुझे कोअी भी नहीं सुनाअी पड़ा ! माँ, हमारा घर है न, वह हमारा कोडीका घर, समुद्र, अुसकी लहरें, अुसमें डूबनेवाला लाल-लाल सूर्य, मैंने वह सब देखा !"

रामने अपना अनुभव सुनाया और माँने कहा—"अच्छा !"

तब रामने अपने अनुभवको माँके अनुभवसे तुलना करनेके लिअे पूछा, "माँ, तूने भी यह सब देखा ?"

"हाँ ! बेटा !"

रामने और अधिक कुछ नहीं कहा, अुसने अितना ही पूछा—"माँ ! हम कोडीके घर कब जाअेंगे ?"

"तुम्हारे बड़े होनेपर !"

"माँ ! तू भी फिडल बजाना सीखेगी ?"

"देखूँगी !"

न जाने क्यों बच्चा माँका मुँह देखता रहा। माँने कुछ नहीं कहा। फिर अुसने "रात हो गअी, बेटा ! कल सुबह स्कूल जाना है ! सो जा !"

कहकर अुसको सुलाया और खुद अुसकी बगलमें सो गअी। अुस क्षणसे अुस शामको सुनी सभी संगीत-लहरी समुद्रकी लहरोंकी तरह अुसके सामने फैल गअी। अुसी नशामें वह सो गअी। सोते समय अुसको लगा, जैसे समुद्रमें तैरनेवाले जहाजपर सो गअी हो। अुसके सब राग समुद्रकी लोरियोंकी तरह बन गअे। जब वह सुबह अुठी, अुसके लिअे सारा संसार नया-सा लगा। अुसके मनमें अेक नया ही अुल्लास था, जैसा अुल्लास कभी युगोंसे अुसने नहीं देखा था।

नागवेणीके मनमें संगीत सीखनेकी अिच्छा पनपने लगी। व्याहके पहले अुसने संगीतका थोड़ा अभ्यास किया था। वह सब याद रहना सम्भव नहीं था, और अब सीखनेमें भी पहले जैसा अुत्साह और स्फूर्ति कहांसे आअेगी? फिर भी समय तो कटेगा? अिसी विचारसे अुसने बापसे अपने मनकी बात बताअी।

नागवेणीको यहां आअे करीब आठ महीने हो गअे। अिन आठ महीनोंमें अुसका आकाशके तारे गिनते दिन बिताना भला बापकी आंखोंसे कैसे छिपा रहता? यह सब देखकर ही अुन्होंने अेक बार कहा था, "नागू! भगवानके सामने ताल लेकर बैठती तो मन प्रसन्न रहता!" और वह भी कुछ दिन तक ताल लेकर भगवानके सामने बैठी रही। अुसके सामने भगवानकी मूर्ति होती, किन्तु मनमें वही नदीमुखका पानी और समुद्रकी लहरे, अिस बीचमें रामका भविष्य बिजलीकी तरह चमक अुठा। आखिर नागवेणीको अेक दिन बापके सामने कहना पड़ा—'बापू! जिसका मन ही स्थिर नहीं अुसका भगवानके सामने ताल लेकर बैठनेसे क्या होगा?"

अुसके मनमें "ताल लेकर बैठनेसे जो शान्ति नही मिलती वह फिडलके कान अुमेठनेमें कहां मिलेगी?"—यह विचार आअे बिना नही रहा। फिर भी अुस दिन जो संगीत अुसने सुना था, वह अत्यन्त नवीन था। अुस अनुभवको भला वह कैसे भूल सकती थी।

अब वह फिडल सीखने लगी। गाना फिडल-अभ्यासके सहायक रूपमें होता था। मंगलूरके प्रसिद्ध सुब्राय ही अुसके संगीत गुरु थे। वे बड़े वृद्ध पुरुष थे। अुनको अपने ज्ञानका अहंकार नही था और सिखाते समय भी

अुनको "मै किसीको कुछ सिखा रहा हूँ" अिसका भान नही होता था। अुनका व्यवहार अैसा था मानो कहते हो, "मुझे जो आता है, वह मै बताता हूँ, तुम्हे जो अच्छा लगे, वह तुम स्वीकार करो।" यह अुनकी नम्रता थी। नागवेणीको कच्ची अुम्रमें जिन्होने "बेटी नागवेणी! विना साधनाके सगीत कैसे?" कहा था, वही आज बारह सालके बाद अत्यन्त मृदु और मधुर हो गअे थे। अेक ओर बुढापा तो दूसरी ओर जन्मकी गरीबी, दोनो अुनके पीछे लगे थे। शायद अिन्ही बातोसे अुनकी विद्याका बुढापा आ गया था।

नागवेणी फिडल सीखने लगी। जब राम स्कूलमें जाता तो अुसकी सगीत साधना चलती। आम तौरसे जब तक वह अपने घर नही लौटता, नागवेणीकी अुंगलियाँ फिडलकी तारोको छेडती रहती। कभी-कभी निराशासे चिढकर वह "अब चितापर चढनेके बाद ही मुझे सगीत आनेका" कहती, तो कभी तारोसे जो कर्कश आवाज निकलती, अुसे सुनकर खुद सहमसी जाती। अुसके मनमें आता कही किसीने सुना तो नही और यह देखनेके लिअे बाहर निकल आती।

जब वह अपने गुरुके पास जाती, तो अुसका आधा समय सगीतके पाठ लेनेमे व्यतीत होता, और आधा समय अुनके घरकी राम-कहानी सुननेमें बीतता। गुरुका दुख सुनकर वह भी दुखी होती। अुनके दुखमें अपना दुख भूल जाती। ससारके अनेक ठोकरोंसे पक्के हुअे अुसके वृद्ध गुरुदेव कभी-कभी निराशामें कह अुठते,—"नागू! मनमें आता है, यह फिडल, यह कमानी तोड-ताडकर फेंक दें!"

अेक दिन अुसको रात भर नींद नहीं आअी। अुसके मनमें आया—"मै अपने ससारके तापत्रयसे परेशान होकर अुन्हें भूलनेके लिअे सगीतका आसरा ले रही हूँ और मेरे सगीतके गुरुजी अपने ससारके तापत्रयोंसे सगीतको ही तिलाजलि देनेकी सोच रहे हैं, फिर मेरे हाथ क्या आअेगा? अुसका मन नअे तर्कमें फसा, आशा-निराशाके झूलेमें झूलने लगा। तभी अुसके मनमें आता" किन्तु अुस रोज मैंने जो सगीत सुना था, वह अैसा नही था। वह तो ससारके तापत्रयको ही नही ससारको भी भुला देनेवाला था?" अिन्हीं विचारोंसे अुसको अेक प्रकारकी शान्ति मिलती।

जैसे चार मासकी वर्षासे भीगी हुअी जमीनको आठ मासकी कडाकेकी धूप सुखाकर जला डालती है और आठ मासमें सूखकर जली जमीनको पुन चार मासकी वर्षा गीली कर गला देती है, वैसे ही नागवेणीका मन अुदासी और अुत्साहके चक्करमें नीचे-अूपर होता रहा। अिसी चक्करमें अुसकी सगीत-साधना चलती रही। कभी घण्टो तक दृढ साधना चलती, तो कभी फिडलके तारोपर जग चढ़ने तक अुसपर ध्यान नही जाता। तब अुसके वृद्ध गुरुदेव बुढापेमें घरमें बैठे-बैठे मिलनेवाली रूखी-सूखी रोटी कही न चली जाय, अिस डरसे अपना सारा वेदान्त भूल जाते और अत्यन्त नम्र अेव हितकारी वचनसे "बेटी! सगीतको मत छोडो, वह देवोकी विद्या है, देवोने भी अुसका अभ्यास किया है, अुसका अनादर मत करो!" कहकर अुसके मनमें सगीतके विषयमें रुचि अुत्पन्न करके पुन सगीत सीखनेको प्रेरित करते।

अब रामके राज्यका विस्तार होता जा रहा था। अुसका मित्र-मण्डल बढा। अुसके खेल बढे। अभी तक अुसके छोटेसे ससारमें माँ ही सर्वव्यापी थी। अब नाना, नानी, चिदा, मालू और स्कूलके कितने ही मित्र शामिल थे! वे सारे अुसके ससारमें आ गअे थे। अिससे माँका प्रभुत्व अुतना नही रहा। अिसका अर्थ यह नही कि अुन दोनोका स्नेह टूट गया। माँसे बोलनेमें प्यार और अुत्साह कम नही हुआ। "माँ!" कहते समय हृदय-सागरमें जो अमृत-तुल्य मधुर लहरे अुठती थीं, वे सूखी नही! केवल वयो-मर्यादाके आवरणोने अपना-अपना हिस्सा अुस बालकसे माँगा और वह अनको मिला।

मगलूर ही क्यो न हो, जहाँ बैठे थे वही बैठे-बैठे जहाँ जो खाया था वही खाते-खाते बढनेमें नवीनता क्या? वही परिस्थिति, वही वातावरण, वही आशा-आकाक्षा और वही दोड-धूप! नागवेणीको वहाँ आअे छह महीनेका दूना अेक वर्ष हुआ, दो हुअे, तीन भी बीते। फर्क अितना ही था, जब कोडीमें रहती थी तब घरके खेतके और गौवोंके कामोमें अुसका समय बीतता था, और अब अुस समयको सगीत निगलने लगा था। वैसे ही रामका समय पढने और मित्रोके खेलमें जा रहा था।

राम भी क्या है? अपने दूसरे साथी, भैया चिदा, बहन मालूकी तरह वह भी अेक विद्यार्थी है, वह भी अेक कलाकार है! वह जानता था कि नानाका प्रेम केवल राम पर ही नही है। बचपनकी अुसकी

कुछ विशेषता थी जो अुसके अन्य साथियोमें नही पाअी जाती थी, वह थी कभी कोयला, कभी खपरैलका टुकडा तो कभी खडिया या पेन्सिल लेकर दीवालपर, जमीनपर, मिट्टीमें, कागजपर, जहाँ कही भी हो चित्र खींचना। वह नागवेणीको देखकर कहता था—"माँ! देखा मैंने समुद्र बनाया है? यह नाव है, यह मछली पकडनेका जाल है, यह आसमान, यह चाँद और यह सूर्य डूब रहा है।"

वह अेक ओर चित्र खींचता जाता था और दूसरी ओर अपनी माँसे बोलता और पूछता जाता था—"माँ, यह कैसा है?"

माँ कहती, "बेटा! हर जगह अैसे नही खींचना चाहिअे। बरामदा, जमीन, दीवार हर जगह लिखकर गन्दा करना ठीक नही। तेरी अपनी स्लेट है न? अपनी कापी है न? अुसीपर खींचा कर।"

तब वह माँसे पूछता—"माँ! वह बडा समुद्र अितनी छोटी स्लेटपर कैसे खींचा जाय। हमारा बरामदा भी अुनके लिअे छोटा पडता है। अुस-पर किनारा बनाया तो नारियलके बागके लिअे जगह ही नहीं रहती और वह बनाया तो नदीमुख लिखनेके लिअे जगह नही।"

"अरे! छोटासा समुद्र बना और पाटी पर बना।"

माँका यह अुपदेश सुनकर वह कहता—"तू कहती है छोटासा समुद्र स्लेटपर बना। सा कैसा होगा, माँ! अितना बडा समुद्र छोटा कैसा होगा?"

बच्चोंके सवादका आदि अन्त नहीं होता। आकाश ही अुसका अन्त है। कभी-कभी अुसके भी पार अुनकी भावनाअें दौड़ती है। अगर वे सही रास्तेसे दौडती तो अुनका जवाब सम्भव है, जरा असम्बद्ध दौडीं तो अुनका अुत्तर कहाँ? और जिनको अुनके सवालोका ओर-छोर नहीं सूझता, वे कहते हैं, "बच्चा पागल है।" किन्तु अुसके अिस रेखाकनमे नागवेणीके मनमें अेक बात आअी कि जन्मसे बच्चेका जो समुद्रका पागलपन लगा था, वह अब तक नही गया। जब वह दुधमुँहा बच्चा था, तब भी बिना समुद्र किनारे गअे अुसको चैन नहीं आता था। अुसके बाद बिना समुद्रके अुसकी कहानी पूरी नही होती थी। अब बिना समुद्रके अुसका चित्र पूरा नहीं होता। यह देखकर कभी-कभी नागवेणी "शायद यह पूर्वजन्मका मछली पकडनेवाला

धीवर होगा !"— कहकर खिल-खिलाकर हँस पडती और गुस्सेसे लाल होकर राम कह अुठता —"मै मछली नही पकडना, मछली पकड तू ! मुझे न मछली चाहिअे, न जाल !"

अिन वर्षोंमें कभी-कभी वकील साहब अैरोडी जाते-आते रहते थे किन्तु जबसे नागवेणी मगलूर आअी, वहाँ जाकर चार दिनसे अधिक नही रहे। अुनके अैरोडी जाते समय नागवेणीके मनमें आता, मै भी अेक बार वहाँ जाकर देख आअूँ। किन्तु अुसकी अिच्छा मनसे जबानपर नही आअी। कोडी जाकर रहना भी हमें कहाँ है ?—यह सोचकर वह चुप हो जाती। मगलूर रहनेसे बच्चेके खाने-पीनेका कष्ट दूर हो गया था, अब अुमकी दिल जलानेवाली गरीबी भी नही रह गअी थी, कभी नअे भाग्यका आना भी सम्भव मालूम होता था। बच्चेका सुख देखकर वह अपने मनमें सन्तोष कर लेती। अब कोडीका स्मरण और हाय-हाय क्यों करती ? वह खून पसीना बहानेकी जिन्दगी स्पृहणीय क्यो होने लगी ? मेरी अपनी बात हो तो दूसरी बात, अिस बच्चेको क्यो अुस मिट्टीकी जिन्दगीमें डालूँ ? कोडीसे चलते समय "जिसने हम फिर यहीं आकर जीनेवाले जीव है।" कहा था, वही आज बच्चेको जो सुख यहाँ मिल रहा है, अुससे अुसे क्यो वचित करूँ ? कहकर मनमें आनेवाले कोडीके विचारोको भुलाना चाहती थी।

मगलूरमें आये पाँच साल हो गअे। अब राम दस सालका है। अिन्हीं दिनो अपने आप अैरोडीकी यात्रा करनेका सयोग आ पड़ा। अैरोडीमें नारायण भैयाकी लडकीके व्याहका तय हुआ। अगर घरके बडे ही नही जाअेंगे, तो भला कैसे बनेगा ? आखिर घरके बडे आदमीकी अुपस्थिति अैसे कामोमें कम महत्व नही रखती। अैसे शुभ-अवसरपर जाकर सब प्रबन्ध देखना बडोका ही काम है। वकील साहबने अपने सारे परिवारके साथ वहाँ जानेका निश्चय किया। अुन्होने सबकी अनुकूलता देखकर, गर्मीकी छुट्टियोमें ही व्याहका मुहूर्त रखवाया। व्याहके दिनसे तीन-चार रोज पहले ही वकील साहबने अेक किरायेकी बस लेकर अपने लडके, बहुअें, अुनके बच्चे सबको लेकर अैरोडीके लिअे प्रस्थान कर दिया। अुनके साथ नागवेणी, राम भी थे, यह कहनेकी कोअी जरूरत नही।

ब्याहके चार दिन पहले ही वह अैरोडी पहुँच गअे। ब्याहके समारम्भमें सारा परिवार सम्मिलित हुआ। विवाहके दिनोंमें घरके किसीको जरा भी आराम नहीं मिला। ब्याहका सारा समारम्भ बहुत अच्छी रीतिसे सम्पन्न होनेसे नारायण भैया बडे खुश हुअे। घरके सब लोगोंके आनेसे अुनको विशेष प्रकारका आनन्द हुआ।

वकील साहबने भी "अब सब आअे ही है, तो गाँवमें दस-पन्द्रह दिन रहा जाअें!" कहकर रहनेका समय और बढा दिया। अैसी हालतमें नागवेणीके मनमें घर जाकर देख आनेकी अिच्छा हो, तो क्या आश्चर्य! अुसने सोचा, राम सब भूल गया होगा। अुनके अैरोडी आनेकी खबर सुनते ही बच्ची अपनी मालकिन और छोटे मालिकको देखनेके लिअे कोड़ीसे दौडी आअी। अुसने आते ही "माँ! घरपर कब आअेंगी? आप गअी, गाँव क्या पूरा नरक बन गया!" कहकर गाँवका सारा अितिहास सुना दिया। आखिर अुसने काली कपिलाकी बात बताते हुअे कहा— "माँ! आपकी काली गाय पिछले साल मर गअी। पर कपिलाकी दो बछियाँ है। अिस समय वे तीन सेर दूध देती हैं, हम शूद्रोंका दूध घीसे क्या वास्ता? हमारे लिअे भगवानने मछलियाँ बनाअी है। आप आकर चार दिन वहाँ रहिअे। छोटे मालिक चार दिन खूब दूध पिअेंगे।"

बच्चीने अपनी मालकिनके सामने अपने घरका सारा परम्परागत स्नेह और सम्मान प्रगट किया। अिन पाँच सालोंमें वह सूखकर काँटा हो गअी थी। अुसने अपनी मालकिनको देखकर कहा—"माँ! अब आपका शरीर कुछ अच्छा हुआ है। छोटे मालिकको तो मैं पहचान भी नहीं सकी।"

"मगर बच्ची, तू क्यों अितनी कमजोर हो गअी है? तेरे घरवाले कैसे हैं?"

अपनी मालकिनकी यह बात सुनकर बच्चीने कहा—"माँ, क्या कहूँ? खाने-पीनेके लिअे ठीक मिले तो सब ठीक है। आपके दिअे हुअे चार खेत हैं, अिसीसे जिन्दा हैं, नहीं तो पता नहीं क्या हुआ होता! माँ अब तक आपके चाचाको अिस सालका खण्ड नहीं दिया। जब बडे मालिक थे, तब अुनकी जिस जमीनका हम पाँच मुडी खण्ड देते थे, अुसके लिअे नअे

मालिकने बढ़ाकर बारह मुडी कर दिया। अितना कैसे दिया जा सकता ? आखिर हमने वह जमीन छोड दी। घरमें खानेवाले दस हैं और काम करनेवाले दो! जो बच्चे हैं, वह गौवे चरा लेते है, हम जोतनेका काम भला कैसे करे ? तीन मुडी जमीनसे क्या होता है ? दूसरी जमीन खण्डपर ले, तो अुसमें काम करनेवाला कोअी नही, और जो है अुससे पेट नही भरता।"

अुसकी सब बाते सुनकर नागवेणीको घर देखनेकी अिच्छा प्रबल हो अुठी। दूसरे ही दिन अुसने रामसे पूछा— "राम! समुद्र देखने चलोगे ?"

सुनते ही वह नाच अुठा। रामने अपने मित्रोंको भी जमा कर लिया। अुस वानर सेनाको लेकर नागवेणी कोडीके लिअे रवाना हुअी। नाला पार करते ही घरके सामनेवाला विशाल खेत आया। वहाँसे बडे अंतालका बनवाया हुआ वह अूंचा मकान दिखाअी पड़ा। अुसको देखकर नागवेणीको अपने श्वसुरके अन्तिम दिनोकी याद आअी। घर जानेसे पहले वह बच्चीके घर गअी और अुससे कहा—"हम सब आ गअे है।"

अुसने अपनी मालकिनकी बात सुनकर कहा—"माँ, घरमें चलिअे, मै आती हूँ!"

नागवेणी सबको लिवाअे अपने घर गअी। तालावके किनारे चलते समय अुसको पुष्पशैयापर चलनेका भान हुआ। अुसने रामसे पूछा—"बेटा राम! तुझे पता है, यह किसका घर है ?"

राम गूंगा बनकर चल रहा था। जैसे ही वह आँगनमें पहुँचा, दौडकर बरामदे पर जाकर लेट गया। "हमारी मालकिन और छोटे मालिक आअेंगे।" सोचकर बच्चीने बरामदा अच्छी तरह लीप-पोत रखा था।

प्रातःकालकी स्वर्ण-किरणें आँगनमें पडी। घर खाली-खाली लगता था। मानो घरकी दीवारे, खपरैल, खम्भे, जमीन सब नागवेणीसे बोल रहे थे। नागवेणीको असा महसूस हुआ कि वे सब गम्भीरतासे अुससे पूछ रहे हैं— "क्या तुम आ गअी ?" अितनेमें बच्ची पीतलके लोटेमें धारोष्ण दूध ले-आअी। आते ही अुसने कहा—"माँ, यह कपिलाका दूध है, अभी गरम है, बच्चोंको थोडा-थोडा पिला दीजिअे।"

नागवेणीने "राम! यह हमारे घरकी गायका दूध है!" कहकर सब बच्चोंको अुसी लोटेसे थोडा-थोडा दूध पिलाया।

"माँ, यह हमारा घर है क्या ? तुम जो बार-बार कोडो कहती हो, वह क्या यही है ?"

"दुत् ! चोर कहींका ! अितनेमें सब भूल गया ?"—नागवेणीने कहा और हँस पडी।

खैर, अुसी समय बच्चीका पति कालू अपनी मालकिनको देखकर अुनकी कपिला गाय दिखलानेके लिअे वहाँ ले आया। अुसकी दो बछियाँ भी अुसके साथ थी। अुसने अुन सबको आँगनकी ओर मोडकर कहा—"माँ, यह है तीन सालकी बछिया और यह अिसी सालकी है !"

गोठसे आनेवाली कपिलाको देखकर नागवेणीने अुसको पुकारा, "कपिले !"

जैसे ही कपिलाने वह आवाज सुनी, वह अपनी पूँछ अुठाकर दौडती हुअी अुसके पास आअी।

"माँ ! गाय मारने आअी है !"—राम चीखा।

"पगले ! कपिला मुझे क्यों मारेगी ?"—माँने कहा। कपिला आकर अुसका हाथ चाटने लगी। नागवेणीने प्यारसे अुसका गला थपथपाया। दोनों जन्म-जन्मकी सहेलियोंकी तरह अेक दूसरेको प्यार करने लगीं।

न जाने क्यों नागवेणीको दुःखका अुफान आया, पर वह आँखोंसे छलकने नहीं पाया। बच्चोंके सामने कहीं वह आँखोंमें फूट न पडे, अिस डरसे नागवेणीने रामसे कहा—"राम ! बेटा सबको समुद्रपर ले जाओ ?"

"माँ, यहाँ समुद्र है ?"

"तू तो सब कुछ भूल गया !"—अुसने अपने बच्चेको कहा और कालूको बुलाकर कहा—"कालू ! ये शहरके बच्चे हैं, जरा समुद्र दिखा ले आओ !"

समुद्रका नाम सुनते ही वह वानर-सेना अुछलती-कूदती वहाँसे भागी। नागवेणी और बच्ची वहीं आमने-सामने बैठ गअीं। "बच्ची ! मानो अिस जगहका नया सम्बन्ध किसीसे नहीं था, अिसलिअे तोड दिया !"—कहकर नागवेणी रोअी। बच्चीकी आँखोंमें आँसू छलक आअे।

"माँ ! पानीका-ऋण, जमीनका ऋण, अन्नका ऋण यह सब ब्रह्माने माथेपर लिख दिअे तो हैं, नही तो कुछ भी नही । कही भी रहे और कैसे भी रहे, सुखसे रहे, अिसीमें खुशी है । कमसे कम बच्चेको तो रहने-करनेके लिअे अच्छी जगह हुअी । अगर यही रहती, तो क्या रास्ता था ? हम अिसी मिट्टीमें पैदा होकर बढ़े है, फिर भी आप हमारी हालत देखती हैं । आप अगर अिस बच्चेको लेकर यहाँ रहती तो पता नही क्या होना ?"—बच्चीने कहा ।

नागवेणीने घरका दरवाजा खोला । कअी बार अन्दर-बाहर हो आअी । बिना दीपकके, बिना मूर्तिके, देवघरमें जाकर देखा, और वैसे ही बन्द करके बाहर चली आअी । आखिर आह भरकर अुसने पूछा—"बच्ची, अब अुपाध्यायके घरमें कौन है ?"

"अुपाध्यायजी मर गअे । अुनका लड़का और बहू कुन्दापुरमें रहते है । अुनकी बुढिया 'मैं अिसी घरके बरामदे पर मरूंगी !' कहकर घरमें पडी है । लडका कभी चावल-बावल लाकर रख जाता है । किसी तरह जिन्दा है । और क्या ?"

बच्चीके मुंहसे यह सुनकर नागवेणी अुपाध्यायके घर जानेके लिअे तैयार हो गअी । वह वहाँ गअी । नागवेणीको देखते ही बुढ़ियाने कहा—"बेटी ! मेरी यह हालत हुअी । अुनसे पहले अगर मैं मरती, तो भगवानका क्या जाता ?" कहकर रोअी । नागवेणीको सान्त्वना देना पडा । आखिर बुढियाने अपने ही यहाँ खानेका आग्रह किया । अुसने कहा—"बेटी ! यहाँ क्या है ? अेक गोज्जु और अितना-सा भात, अगर तू खा जायेगी, तो मुझे बडा सन्तोष होगा । अगर तेरे बच्चेको देखती तो कितना अच्छा होता !"

पर नागवेणी अपने परिवारके साथ आअी थी । अुसका यहाँ खाना ठीक नही था । "कल आअूंगी" कहकर वहाँसे रवाना हुअी । आते समय रास्तेपर होन्नेके जगलके दर्शन हुअे । वहाँ होन्नेके फल बहुत पडे थे । नागवेणीने देखकर पूछा—"बच्ची ! क्या कोअी-होन्नेके फल नही चुनता ?"

"अरे ! अिन्हे कौन चुनेगा अब ? यहाँ मिट्टीके तेलके चिराग जलते है । अब होन्नेका तेल कोअी नही जलाता । हाँ, कोअी-कोअी देवघरमें जलाते है !"

बच्चीकी यह बात सुनकर नागवेणीने मैयाके घरकी बात पूछी। अुसको वहाँ जानेकी अिच्छा नहीं हुअी। यों ही पूछ दिया, "अुस मकानमें कौन है ?"

"वहाँ ?" बच्चीने कहा—"अब कुछ समयसे बड़े भाअी ही घरका काम-धाम देखते हैं। कहते हैं छोटे भाअीके कारण अुनको व्यापारमें बहुत हानि अुठानी पड़ी। ओराटाने यहाँका घर, जमीन सब कुछ बेचकर गाँव ही छोड़ दिया। पिछले साल या अुसके पहले लच्चा बान्नू आकर अुनका सब कुछ साफ करके चले गअे। हमारे घरमें आकर अुन्हें भी भला बुरा कह गअे !"

नागवेणी पुनः अपने घरके बरामदे पर आ बैठी। "अगर बच्चे जल्दी आअे होते तो घर चले गअे होते! कल फिर आ सकते थे!" कहकर बच्चोंकी राह देखती बैठी रही। किन्तु जब तक धूप तेज नहीं हुअी, समुद्रकी दिग्विजय पर गअी वानरसेना वहाँसे नहीं लौटी!

: २३ :

बच्चोंके साथ नागवेणी जब घरपर पहुँची, तो शाम हो चुकी थी। सबका चेहरा मानो टेसूका फूल बना था। किसीमें बोलनेकी भी ताकत नहीं थी। सबके सब जैसे ही आये सीधे रसोईघरमें पहुँचे। हाँ, खाना समाप्त होते ही बच्चोंमें फिर नया जीवन आ गया और वे पुन अपने खेलमें लग गये। नागवेणीका मन अब घरपर लगने लगा था। वह सोचने लगी, "उस घरमें जो चार वर्ष बीते, वह कितने मधुर थे। वहाँ कितनी शान्ति थी। अगर खाने-पीनेकी तंगी न होती, तो यह स्थान क्या स्वर्गसे कम है ?"

रात हुई, उसने रामको बुलाकर कहा—"राम! बिस्तरा बिछ गया, आकर सो जाओ!"

बाहर आँगनमें शोर मचानेवाला राम अन्दर आकर सो गया। उसके पास ही नागवेणी भी सो गई, किन्तु बिछौनेपर उसके साथ घरकी स्मृतियाँ भी करवटें बदल रही थी।

रामने धीरेसे पूछा—'माँ! चल, कल फिर कोडी चले! हमारा घर कितना अच्छा है!"

"हट उल्लू, तेरा कैसा मकान? तुझे कोई बात याद नहीं!" —माँने कहा।

"हाँ माँ! जब मैं वहाँ गया, तब ऐसा ही था, किन्तु जब समुद्रपर गया, तो समुद्रकी लहरोंकी तरह कितनी ही बातें एक-एक करके याद आने लगीं। ऐसा लगा यह मेरा है। सारा मेरा ही है!"—रामने अपनी अनुभूति सम्मति बतलाई।

"समुद्रपर जाकर तुमने क्या किया ? समुद्र-स्नान किया न ?"

"नहीं माँ ! भैयाने कहा, चलो नहा आअें, किन्तु मैं डर गया। मैं समुद्रके किनारेपर चित्र बनाता रहा। तू कहती है न कि रामको चित्र बनानेका काम है। मैं चित्र बनाता गया और समुद्र अुनको पोंछता गया ! काम मैं अपना करता था और समुद्र अपना काम करता था।"

"बेटा ! मैं भी समुद्रके किनारे कअी बार जाकर अैसा ही करती थी, जिसे वह पोंछ देता था। मैं अुसकी लहरोंसे लड़ती थी, किन्तु अुसके सामने भला मेरी विजय कैसे होती ?"

"अिसे रहने दे, माँ ! पहले मेरे सवालका जवाब दे !"

"आखिर तेरा सवाल भी सुनूँ !"

"कल फिर, समुद्रपर चलेगी ? तू कहती है, वह हमारा मकान है। वहाँ अेक दो दिन रहेंगे !"

"अच्छा देखेंगे !"

सुबह होते ही नागवेणीने अपने चाचासे सलाहकर थोड़ा दही और चूड़ा बाँध रामके साथ कोडीके लिअे प्रस्थान कर दिया। और बच्चोंने भी अुनका अनुकरण करना चाहा किन्तु छोटे दादाने अुनको डाँट दिया—"तुम सबको वहाँ तालाबपर और समुद्रपर कौन सँभालेगा ? अुसका तो वहाँ घर है ?

नागवेणीने चाचासे कहा—"आने दो ! घूमकर आ जाअेंगे !" अुसने कहनेके लिअे ही कहा, नहीं तो अुसका मन अेकान्त चाहता था।

किन्तु आखिरमें कोडीका नाला माँ-बेटेने ही पार किया, दूसरे बच्चे अपनासा मुँह बनाकर वहीं कोअी खेल खेलने लगे।

कोडीमें अपने घर जाने तक और जानेके बाद भी माँ और बेटेका मुँह बन्द रहा। अुनके वहाँ जाते ही बच्ची अुनसे मिलने आअी। अुसने रामके लिअे लोटा भर दूध ला दिया। साथ-साथ अुसको गरम करनेके लिअे थोड़ा-सा अींधन भी ले आअी। दूध गरमकर रख देनेके बाद रामने समुद्रपर जानेकी बात कही। दोनों समुद्रकी ओर चले। बच्चीने पूछा—"मुझे भी छुट्टी है, क्या मालकिनके साथ मैं भी आअूँ ?"

वह भी साथ हो गअी। समुद्र-किनारे जानेसे पहले नागवेणी सुब्राय अुपाध्यायकी बुढियाके घर जाकर कह आअी "हम आअे हैं।" वहाँसे नदीमुख तक गअे। नदीका संगम आया। अेक बार नागवेणीके जलसमाधि लेनेके प्रयत्नवाली जगह आअी। पुरानी स्मृतियाँ ताजी हो गअीं। पर अब वहाँ बहुत रेती वह आअी थी, जिससे अेक बडी टेकरी-सी बन गअी थी। जब वह अुस टेकरीपर खडी हुअी, तो बच्चीने कहा—"माँ, वहाँ क्यों खडी हो? नदीमुख अभी बहुत दूर है।"

सुनकर नागवेणी हँसी। अुसने अपना पूर्व वृत्तान्त सुनाया। रामके लिअे माँका मुखावलोकन ही अेक काम हो गया। अेक बार अपनेको बचपनमें गोदमें लेकर प्यार करनेवाले दो चेहरे अुसके हृदयाकाशमें बिजलीकी तरह चमककर विलीन हो गअे। वहाँसे मुडे। अेतु पुजारीके बागमें आअे। बाग क्या नन्दनवन था। नागवेणीने बच्चीसे पूछा—"अब यह किसके पास है?"

"पता नहीं किसके पास है?"

तब नागवेणीने रामसे कहा—"रामू! तेरे दादाने अिसे खरीदा और तेरे बापने अिसको बेंच डाला।"

अब तक अुसने रामसे अुसके बापकी कोअी बात नहीं कही थी। अब रामने अपने बापकी बात सुनकर पूछा—"माँ! वे अब कहाँ हैं?" और माँने "यह क्यों पूछता है बेटा?"—कहकर अुदासीनता दिखाअी।

तब घरके पीछेवाले होन्नेके जंगलमें आअे। कपिला वहाँ छायामें सोअी हुअी थी। नागवेणीको देखकर वह अुठने लगी। नागवेणी वहीं जाकर बैठ गअी। जब नागवेणी वहाँ जाकर बैठी तो कपिला खडी-खडी अुसका हाथ चाटने लगी। अुस बेचारीका वदन रोमांचित हो आया, भावना जाग अुठी। "बच्ची! अिन जानवरोंमें भी कितना प्यार, कितनी स्मरणशक्ति है?"

नागवेणीने कपिलाका गला थपथपाया। अुसके अुस मूक प्रेमके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। होन्नेके वृक्ष फूले थे। अुनके फूलोंकी सुगंधमें हृदय आनन्दसे नाच रहा था। सूखे फूलोंने जमीनपर मानो अपनी चटाअी बिछा दी थी। अुस सौन्दर्य और सुगन्धके वातावरणमें पता नहीं बच्ची और नागवेणी कितनी देर बातें करती रहीं। राम जमीनपर हाथ टेककर सब सुन

रहा था। "माँ! यहीं रहनेकी तेरी अिच्छा है क्या?" — आखिर रामने पूछा।

"अैसा क्यों पूछता है, बेटा? जहाँ हम चाहते हैं वहाँ रहनेको थोडे ही मिलता है? जहाँ ब्रह्माने लिखा है, वहीं रहना पडता है।"—नागवेणीने कहा।

अिसपर राम क्या कहता? अुसने कहा— "मंगलूरसे यही अच्छा लगता है न, माँ!"

'हाँ, बेटा!"

अब बच्चीको घरके बडे लोगोंकी कही बात याद आने लगी। अुसने कहा—"माँ! मेरी बातको मजाक न समझना, जब हमारे दादा थे, तब कहते थे, राम अैतालके पास बहुत पैसा था. अुन्होंने कहीं गाड रखा होगा। लडकेके अूपर नाराज होनेसे नही बतलाया। माँ! अगर अैसा है, तो घरमें कहीं रखा होगा, आपके नसीबमें होगा तो जरूर मिलेगा।"

नागवेणीने भी सुना था कि अुसके ससुर दीवारके सधोंमें पैसा रखा करते थे। किन्तु और सब बातें अुसके लिअे नअी थीं। अैसे सपनोंकी बातोंमें भला अुसका विश्वास कैसे होता? अुसने कहा— "बच्ची! जब हाथ अुठाकर दिया हुआ ही नहीं रहा, तो गाडकर रखा क्या मिलेगा? हाथ अुठाकर दिया हुआ ही क्या कम था?"

"आपको तो नहीं मिला। यह बच्चा अुन्हींका पोता है न! अिसको ही शायद मिले!"—बच्चीने तर्क किया।

"बच्ची, तू पगली है। हर अेकका अपना-अपना भाग है। किसका दिया किसको मिलता है?"—नागवेणीने कहा।

भूख लगी। सब घर आअे। कपिला गायके दूधने जरा आत्माको शान्त किया। "पता नही दादीके घरका खाना कब मिलेगा!" रामने मुँह टेढा करके कहा और नागवेणीने हँसकर अैरोडीसे लाअे दही-चूडेका बर्तन खोल दिया। अुसका हिसाब-किताब अभी पूरा किया ही था, कि दादीके घरसे आवाज आअी— "नागवेणी!" अुपाध्यायकी बुढिया अुसको बुलाने आअी थी।"

अुपाध्यायकी वुढियाने अुस रोज जो आदरातिथ्य किया, अुसके बारेमें क्या कहना ? पापड, मुंगोडी, सारम्, गोज्जु जो महीने भरमें वह करती, सब अेक ही दिनमें बना डाला। आते ही केलेके हरे-हरे पत्तेपर सब परोस दिया ! नागवेणीने कहा— "दादी ! यह सब क्या है ?"

"तू क्या रोज आती है बोल ! यह मेरा बच्चा फिर यहाँ कब आअेगा कौन जाने !"

"राम ! कल यहाँ रहनेकी अिच्छा हो तो नही आअेगा क्या ?"

"हाँ ! शहर छोडकर क्या अिस देहातमें आअेगा ? देहातके लोग ही जब देहातको दोजख समझकर शहरमें जा रहे हैं, तो भला शहरके पढे-लिखे लडके देहातमें क्यो आअेंगे ? और वे क्या खानेके लिअे यहाँ आअेंगे ? यहाँ क्या धरा है ? हमारा गाँव ही देखो न ! यहाँ कौन है ? जरा जनेअू हुआ कि भागे बेंगलूर ! अब हमारे कोटके गाँव सब औरतोके गाँव रह गअे हे ! यहाँ हैं कौन ? मुझ जैसी अन्धी बुढिया ! या जिनको दूसरा चारा नही अैसे लोग। हमारे ही किट्टूको देखो ना, मैंने अुससे कहा, बेटा ! अब बस कर, रहने दे अपना होटल-फोटल ! यहीं आकर जो आठ दस मुडी जमीन है अुसीको करके रह ! पर वह किसकी सुननेवाला ? वहाँ होटल से अमीर बनना चाहता है ! कुदापुरमें जा बसा है। कभी-कभी मनमें आता है, अगर मैं यहाँ मर गअी, तो अुसे खबर देनेवाला भी कोअी नही !"

"दादी ! तुम भी वहाँ क्यो नही जाती ?"—नागवेणीने पूछा।

"अरे राम-राम ! अुस भ्रष्ट जगहपर ! पता नही कैसे-कैसे लोग वहाँ आते हैं, मैं क्या बिना शुचाशुचीवाले अुस होटलमें जाकर मरूँ ? मरते समय अुस नरकमें जाके मरनेकी जगह राम-राम कहते यहीं मरना क्या बुरा है ?"

खूब देरतक बाते चलती रही। आखिर नागवेणी "बहुत देर हो गअी" कहकर वहाँसे अुठी। रास्तेमें रामने "माँ ! और अेक बार समुद्रपर" कहा। दोनो समुद्रके किनारे चले। आकाशमें किसीने सोना फैला दिया था। धीरे-धीरे वह लाल हुआ। लालीमें कालिमा आने लगी। "राम, रात हो गअी, चलो चले !"

अुसने मुडकर चन्द्रमाकी ओर अुंगली अुठाकर कहा—"माँ ! जब चन्दा मामा है, तो क्या डर ?"

"हाँ बेटा ! जैसे जैसे तेरा चन्दा मामा अूपर चढता है, वैसे वैसे वहाँ नालेमें पानी भी अूपर चढेगा !"

"तब तो माँ यहीं घरमें सो जाअेंगे ! गर्मीके दिन हैं। बिछौनेकी भी कोअी जरूरत नही। और आज दादीके घरका खाना गले तक पहुँच गया है ! खानेकी भी जरूरत नहीं !"

राम सूर्यास्त होनेतक वही रहा। माँका हृदय भी अुसी दृश्यमें तल्लीन था। समयका ज्ञान भी नही रहा। जब समयका ज्ञान हुआ, तो दोनो अैरोडीके लिअे रवाना हुअे। चांदनीमें जब वे अपने घरपर आअे, तो दोनोंका मन प्रसन्नतासे खिला हुआ था। समुद्रकी लोरियोंके साथ ताड और माडके पत्ते "बरबर" करते अपना मगीत गा रहे थे। रेतीका टीला आया। घरके तालावपर पहुँचे। घर आया। घरके चारो ओरके कल्प-वृक्ष मानो चांदनीमें नहाकर खडे-खडे अुनसे पूछ रहे थे— "कहाँ जा रहे है ? यही रहो !"

"माँ, आज यही रहें। कल सुबह और अेक बार समुद्रपर चलकर फिर अैरोडी चलेंगे।"

रामके जिद्के सामने नागवेणीकी कुछ भी नहीं चली। नागवेणीने बच्चीको बुलाकर वही सोनेको कहा। और खबर देनेके लिअे अुसके पतिको अैरोडी भेज दिया।

रातको बच्चीने अेक ढिबरी जलाकर ला दी। वह अन्धेकी आँखोंकी तरह टिमटिमाती थी। "खाना नही !" यह सुनते ही बच्ची अपने घर जाकर दूध और ताडके फल ले आअी। आते ही "मगलूरमें क्या अैसे ताजा ताड-फल थोडे ही मिलते है ?" कहकर अुसने अुसकी मलाअी निकाली। और राम भी "कितने अच्छे है !" कहकर खाने लगा।

अुस टिमटिमाते चिरागके सामने दोनो महिलाअे अपने सुख-दुखकी बाते कहने लगीं और राम अुमे अेक कहानीकी तरह सुनने लगा। नींद आनेपर झपकियाँ लेते सब वही सो गअे। समुद्रके शब्दोंके साथ ताड और माड़का सगीत हो रहा था।

अुस सुश्राव्य सगीतमें माँ-बेटेको निद्रादेवीने अपनी गोदमें सुला दिया। स्वप्नहीन अखण्ड नींद ! पौ फटनेसे पहले ही अुठकर बच्ची अपने काममें लग गअी। पहले दिन रातको धान अुबालकर सुखा दिया था। सुबह अुठकर अुसको कूटा न जाअे, तो कैसे होगा ? वह अपने घर जाकर गाते गुनगुनाते चावल कूटने लगी। किन्तु नागवेणी और रामको भला क्या चिन्ता थी ? दोनो घोडा बेचकर सोअे थे। जब सूर्य भगवानके स्वर्ण-किरणोंने धीरेसे आकर अुनके गालोंको चूम लिया तब राम जगा। हवामें सुन्दर परिवर्तन था। प्रात कालकी मन्द-सुगन्धित शीतल पवन शरीरमें लगनेसे अपूर्व आनन्द आ रहा था। राम दौडकर आँगनमें आया। पूर्वमें सूर्य भगवान अपनी स्वर्ण-किरणे फैला रहे थे और पश्चिममें आकाशपर मानो किसीने काला कम्बल बिछा दिया हो। रामने पश्चिममें काले कम्बलके नीचे चमकनेवाला अिन्द्र-धनुष देखा। वह चीख पडा— "माँ ! वह देख- !"

पुन अुसने कहा—"कितना प्यारा ! कितना सुन्दर ! माँ, चल सममुद्रकी ओर चले ! वहाँ कितना सुन्दर दीखता होगा !"

पुन -पुन वह यही दुहरा रहा था। यह सुनकर माँने कहा—"बेटा ! अब वर्षा आअेगी।"

"तब तो और भी मजा आअेगा !" वह तालियाँ पीटकर अुछलने लगा।

दोनों समुद्रपर गअे। काले-काले आकाशकी छायामें समुद्र भी वैसा ही काला होकर शान्त सो गया था। नीचे शान्त समुद्र और अूपर आकाशकी विशाल छत मानो अिन्द्र-धनुष अुसे अूपर अुठाअे था। मानो आज किसी देवताका विवाहोत्सव हो। वरुण स्वय कन्यादान करनेवाला था, अिसीलिअे शायद अुसने अिस तरह आकाशको सजाया था।

अैसा ही मनोरम दृश्य था। दोनोंने आँखोंके न थकने तक अुसे देखा। बस अेक-दो बूँदें टपकी, फिर धूप तेज होने लगी। काला आकाश भूरा हो गया, और भूरेसे मटमैला, आखिर शरीर सूर्यकी सारी अुष्णता सोखकर स्वय जलने लगा। तब माँने कहा—"आज न जाने क्यो धूप बडी तेज है !"

दोनो लौटे। रास्तेमें रामने पूछा—"माँ ! हम यह मकान छोडकर मगलूर क्यों गअे ?"

"बेटा ! यहाँ हमारा कौन है ? सब हमें छोड़कर चले गये !"—अुसकी सारी पुरानी स्मृति ताजी हो गअी। अुसने बच्चेके दादा, दादी, बड़ी दादी, सबके मरनेकी बात सुनाअी, किन्तु अुसमें "अुनका" नाम नही आया। फिर भी रामने पूछा—"माँ, क्या बापू घर नहीं आअेंगे ? वे अब कहाँ है ?"

यह प्रश्न सुनते ही नागवेणी अुदास हो गअी। अुसने अितना ही कहा—"बेटा, अगर वे ठीक होते, तो आज हमें अैसे कही क्यो पडा रहना पडता ?"

माता-पुत्र अैरोडी पहुँचे। वे पुन समुद्र तथा अपना घर नहीं देख पाअे। नारायण मैयाने पूछा—"बेटा ! क्या अपना घर देख आया ?" फिर अुसने कहा—"सुना था, वह पिछले साल आया था। ओराटाकी सारी सम्पत्ति अुसीके हाथ समाप्त हुअी। पता नही कितना सच है और कितना झूठ। सुनते हैं, दोनों मैसूर और बेंगलूरका काम खतम कर अब विजयनगरमें अेक होटल खोलकर रहते हैं।"

"ओराटाके बीबी-बच्चे ?"

"अुनकी भी वही हालत है, जो तेरी है ! ओराटाने न अुनको यहाँ रहने दिया, न साथ ले गया। बेचारी अपने बापके पास गअी। वहाँ अुन्हींको खानेके लिअे मिलना मुश्किल था। अिसपर तीन बच्चोंके साथ अुसके जानेसे सबको बडी दुर्दशामें अपने दिन बिताने पड रहे हैं ! क्या कहे शीनमैयाका अेक ओराटा और राम अैतालका अेक लच्चा ! भैंसोंकी घुडदौडमें सांड ही घोडे है !"

कुछ देर बाद फिर कहा—

"अच्छा बेटी ! तुझे मगलूर पसन्द आया न ? हमारे अिस भिखारी गाँवसे वह लाख दर्जे अच्छा है। यहाँकी यह चुगली, झगडे, गालियाँ, यहाँसे कही चले जाओ शान्तिसे सो तो सकते हैं !"

नागवेणीने कहा—"वहाँ रहनेपर भी अिस घरका स्मरण किअे बिना अेक दिन भी नही बीतता। अगर मै अकेली होती, तो मैं अुसी घरमें पडी रहती। किन्तु राम वहाँ रहकर क्या करेगा ? अुससे रोपाअी, कटाअी, कुटाअी वगैरह करना कैसे होगा ?"

"तू रामकी बात कहती है। अब हमारे गाँवमें कौन पुरुष रहता है ? खेतीके दिनोंमें कोअी बेंगलूरसे, कोअी हावेरीसे तो कोअी और कहीसे आता

है। अेक बार रोपाअी कराके गअे तो कटाअीके दिनोंमें ही आते और कटाअीके बाद गअे तो पुन आठ महीनेके लिअे अन्तर्धान हो जाते। कही कोअी जनेअू, व्याह हुआ तो आते है, नही तो यहाँ कौन रहता है?"

बातें हुअी। दोनो अपने-अपने कामपर गअे। अेक-दो दिनके बाद वकील साहब मगलूर जानेके लिअे तैयार हुअे। पुन अेक बस किराअेपर की गअी और सारा परिवार मगलूरके लिअे रवाना हुआ। नागवेणी रामके साथ वहाँ गअी। छुट्‌टीके दिन बीते। पुन रामका स्कूल प्रारम्भ हुआ। नागवेणीको फिडल और सगीतकी याद आअी। अुसने पुन फिडलके कान अुमेठने शुरू किये। आजकल अुसके शिक्षक सिखाने नही आते। असे ही जैसा आता है वैसा बजाती। हाथमें फिडल लेते ही सुब्रायका हाथ काँपने लगता। अुनकी आयु भी पर्याप्त हो चुकी थी। अँगुलियोंमें कमान पकडनेकी शक्ति नही थी। जब कभी अुसको कुछ पूछना होता, तो वहाँ जाकर पूछ आती और बजाकर बतलाती।

अेक दिन अुसके गुरुदेवने कहा—"नागू! मुझसे जिन्होने सीखा अुन्होने व्याहके बाद अपना फिडल ताकपर रख दिया, अुसी तरह जैसे गान्धीजीका चरखा आजके देशभक्तोंने ताकपर रख दिया, मगर तू अिस आयुमें भी बजाती है। जिन्होने तेरे हाथमे बजाया हुआ फिडल सुन लिया वे मुझे नही भूलेगे। अकेली तू अिसकी साधना करती है, अिसीमें मेरी खुशी है।"

यह सुनकर नागवेणीको बडी प्रसन्नता हुअी। अुसका फिडल अुसके अपने घरमें कोअी भी नही सुनता था। कभी-कभी राम कहा करता था "माँ, तू कितना अच्छा बजाती है।" फिर भी वह समझती यह रामकी ममता है। माँकी हर बात अुसको अच्छी लगती थी, अिसलिअे अुसका विचार नहीं करती थी। किन्तु आज अुसके गुरुजीने जो कुछ कहा, अुससे वह बडी प्रसन्न हुअी, और गुरुदेवका अिननी तारीफ करना किस शिष्याको पसन्द नही होगा?

अेक बार और जब वह गअी थी, तब वृद्ध गुरुदेवने कहा—"बेटी! अेक बार चार आदमियोके सामने बजा।"

"हूँ ! मुझे क्या लोगोंसे 'वाह-वाह' कहलाना है या पैसे लेने हैं ?"

"अैसा नहीं, बेटी ! अपने लोगोंकी, कलाकी हम कोअी कीमत नहीं समझते और बाहरका कोअी सड़ियल-टट्टू भी आ जाता है तो अुसीको महान कलाकार समझ अुसकी पूजा करते हैं।"

सुब्रायके आग्रहका फल हुआ, किन्तु दो साल बाद। वकील मोहन-रायके संगीतज्ञ-मित्र राघवेन्द्रराय अेक बार फिर मंगलूर आअे। सदाशिवके मनमें आया कि अुनको अपने घर बुलाकर अपनी बहनका संगीत सुनाया जाअे। अिसलिअे अुन्होंने अपने मित्रोंको बुलाया। अुस मित्र-मण्डलीमें पाँच-सात भद्र जनोंको निमन्त्रण दिया गया था। राघवेन्द्रराव भी आअे थे। नागवेणी अपना सिर झुकाअे चुपचाप फिडल बजा रही थी, अेकके बाद अेक राग आलाप रही थी। अुसके वृद्ध गुरुदेव भी वहीं अुसके पास बैठकर पान चबा रहे थे। फिडलमें जिस मधुश्रीकी वृष्टि हो रही थी, जिस नाद-माधुर्यकी सृष्टि हो रही थी, अुसे वृद्ध संगीतज्ञने कभी नहीं सुना था। वह अपनी सुयोग्य शिष्याकी अिस सफलतापर मुग्ध होकर सिर हिला ही रहे थे कि अितनेमें किसीने कहा— "अब तोडी !"

नागवेणीने तोडी राग प्रारम्भ कर दिया। तोडी विशेषत अुसके कलेजेको हिला देनेवाला राग था। अुसने अुसे बजाया। वृद्ध संगीतज्ञ मस्त होकर कह अुठा—"वाहवाह !" अपने गुरुदेवके अिस आशीर्वाद-रूप प्रशंसासे अुसका मस्तक अूपर अुठ गया। अुसकी आँखोंने सामने देखा कि किसने तोडी कहा था और अेकाअेक अुसका हाथ रुक गया। अुसके मुँहसे हल्के-से निकल गया— "ओह !" अुसने फिडल नीचे रखकर प्रणाम किया। अुसने सोचा, "जिस महापुरुषने मुझमें संगीतकी जिज्ञासा जगाअी, वही मुझसे पूछ रहे हैं !"

वृद्ध गुरुने पूछा—"बेटी ! क्यों रुकी ?"

"अिनके सामने मैं अपना खेल क्या खेलूँ !"—नागवेणीने कहा।

वृद्धने सामने देखा। अुस नअे अभ्यागतसे अुनका परिचय नहीं था।

सदाशिवने अपनी बहनसे पूछा— "नागू ! क्यों रुकी ?"

"भैया ! अब मेरा हो गया ! जरा अुनका सुनने दो !"

मित्रोंने राघवेन्द्ररावकी ओर देखा। अुन्होंने फिडल अपने हाथमें लिया और जहाँ बैठे थे वहींसे बजाना शुरू किया। अुन्होंने भी तोडीका ही विस्तार किया। नागवेणी जहाँ रुकी वहीसे आगे बढे। अपनी भारतीय भैरवीकी तहमें अुन्होंने अपनी संगीत-क्रीडा द्वारा अद्भुत लहरें पैदा की। कैसा नाद-माधुर्य! सुननेवाले नाद-ब्रह्ममें लीन हो गअे। वृद्ध संगीतज्ञने भी "कमाल!" कहा।

संगीत-सभा समाप्त हुअी। नागवेणीने राघवेन्द्ररावको प्रणाम करके कहा— "यह आप ही की कृपा है। अुस दिन आपका फिडल सुनकर ही मैंने फिडल हाथमें लिया!" फिर अुसने अपने गुरुकी ओर अिशारा करके कहा— "यही मेरे गुरुदेव हैं!"

अुनके मुँहसे क्या निकलता है, वृद्ध अिसीकी प्रतीक्षा करने लगा। राघवेन्द्ररावने "बहन! आपने अिन पाँच सालोंमें अिस महान सागरको पार कर लिया। आप महान हैं, और आपके गुरुदेव अुससे भी महान हैं!" कहकर वृद्ध संगीतज्ञको प्रणाम किया।

यह सुनकर नागवेणी शरमाअी, सकुचाअी। राघवेन्द्रराव सुब्रायके पास आ बैठे, और नम्रतापूर्वक बोले—"संगीत सीखना आसान काम है, अभ्याससे कोअी भी विद्या आ जाती है। किन्तु बजानेवालेका हृदय केवल अुसीका होता है। वही अिन तारोंसे झंकृत होता है। वह औरोंके पास कहाँसे आअेगा? बहन नागवेणीके कमानकी प्रत्येक गतिसे अुनके हृदयकी अपूर्व वेदना व्यक्त होती थी। मैं आपको अब तक नही जानता था। आप अितने महान हैं, यह मुझे पता नहीं था। आपको सुननेका सौभाग्य अिस साधकको कब मिलेगा?"

"तीन साल हुअे मेरा हाथ टूट गया। जब कभी हाथमें फिडल अुठाता हूँ, हाथ काँपने लगता है। मैं भी वैसे ही जीता हूँ, जैसे बैल जीता है।"

सुब्रायका यह अुदासीनतापूर्ण अुत्तर सुनकर राघवेन्द्ररावने दुखित हो कहा—"आप अैसा क्यों कहते हैं? आप महान हैं!"

"जिसने अपनी विद्याको पेटके लिअे बेचा, अुसकी कीमत ही क्या?"

राघवेन्द्ररावको दुख हुआ। अुस महान कलाकारकी अिस हीनताके पीछे गरीबीकी वेदना झाँक रही थी।

दूसरे दिन राघवेन्द्रराव सुब्रायके घर गअे। नागवेणीको भी अुन्होने वहाँ बुला लिया और नागवेणीसे पुन फिडल सुना। "पता नही फिर मैं कब यहाँ आअूँगा! आज जो मधुर-सगीत मैंने सुना अुसको कभी नहीं भूलूँगा!"— वे जो शाल साथ लाअे थे, चलते समय नागवेणीके वृद्ध गुरुको ओढा, चरण छूकर अुन्हे प्रणाम किया। वृद्ध कलाकारकी आँखें भर आअी। आँखोंसे आँसू टपकने लगे। अुनका हृदय मुँहसे छलकने लगा। "आप महान विद्वान है। मेरे बच्चोने भी कभी मेरा अितना सम्मान नही किया था। आप अैसा क्यो करते है!"

वृद्धका हृदय सहानुभूति भी न सह सकने-सा नाजुक हो गया था। अेक दूसरेसे विदा होते समय मानो दोनो अेक परिवारके हो गअे थे। अीर्ष्या-मत्सरसे भरे कलाके ससारमें भी दोनो कलाकार द्वैतको भूलकर निष्कलक प्रेमसे गले मिल अेक दूसरेसे अलग हुअे।

सगीत अब नागवेणीके जीवनमें ओत-प्रोत हो गया। अुसको मोहनराय और सदाशिवके बच्चोंका गुरु बनना पडा। जब मनमे आता राम भी फिडलका कान अैंठकर माँके सामने आ बैठता, किन्तु अुसकी सगीत-साधनाका रूप बचपनके पागलपन-सा था।

"सबमें अेक प्रकारका सौन्दर्य, आनन्द, अुत्साह है। सगीतमें भी वही है। जीवनकी अुदासीमें, जीवनकी विकलतामें भी वह अेक प्रकारके आनन्दको भर देता है। दुखमें भी वह हृदयको प्रफुल्लित करता है, किन्तु क्या वह जीवनमें दुखको बिलकुल समाप्त कर सकेगा? क्या वह जीवनकी विकलताको दूर कर सकेगा?" नागवेणीको अिन प्रश्नोका अुत्तर अब तक नही मिला।

अुसके दुखी-जीवनपर दो और आघात हुअे। अुस साल गुरुदेवकी मृत्यु हुअी। मृत्युशैयाके पास नागवेणी अुन्हीकी लडकीकी तरह दिन-भर आँसू बहाती खडी रही। अुनकी अिच्छानुसार राघवेन्द्ररावका दिया हुआ शाल अुसे ओढा दिया गया। बिना किसीके मान और सम्मानके जीवन भर तडपनेवाले अपने गुरुदेवकी याद कर नागवेणी "अुनके चले जानेपर अिस सगीतकी भी क्या जरूरत!" कहकर फिडलसे मुंह मोड लेती और क्षणभर बाद फिर अुसको अुठाकर बजाने लगती। आखिर समय कैसे काटे? गुरुजी गअे तो क्या अुनकी दी हुअी अिस कलाको भी जाने दें?

दूसरे साल और अेक घटना हुअी। वकील साहब अेक दिन पूजाके समय "सीनेमें दर्द होता है" कहकर जो सोअे, तो फिर नही अुठे। खबर पाकर लड़के दौडे आअे। अुनमें अेक डाक्टर भी था, अुसने फौरन सुअी लगाअी। फिर अपने भाअीसे कहा, "भैया ! दवा देनेका अेक वक्त है, लगता है, अुनको वहाँका बुलावा आ गया।"

बात सच निकली। अुसी रातको वे भगवानके पास चले गअे। नागवेणी माँको सात्वना देनेमे अपने दुखको भूल गअी। माँके आँसू पोछनेमें बेचारीने अपने आँसू पी लिअे।

महीने भरमें नागवेणी अपनी माँ और रामके साथ भाअीके घर रहने लगी। यद्यपि रामको यहाँ कुछ नया नही लगा, तो भी नागवेणीके लिअे न भैयाका घर अपना घर बना, न बापका घर ही। दो-चार महीने ठीक तरहसे बीते। फिर घरकी मालकिनको यह नया परिवार अच्छा नही लगा। अुसके दिलके भाव जबानपर भी आने लगे। नागवेणी और अुसकी माँसे भला यह कैसे छिप सकता था ?

* * * *

अपने नानाकी मृत्युके बाद रामने अपनी माँके साथ मामाके घर पाँच-सात साल बिताकर मैट्रिक पास किया, यह तो अब आसानीसे कह सकते हैं, किन्तु अुन दिनो अुसकी माँने अपनी मानसिक वेदनाओंको चुपचाप कैसे सहन किया, यह कहना आसान नही। कितना संकोच, कितनी मूक पीड़ा ! जबानसे गूँगी नागवेणीकी वेदनाअें फिडलकी तारोसे छलककर विश्वके वातावरणमें फैल जाती थीं।

सदाशिवकी आमदनी भी कोअी खास नहीं थी। बापने जो छोडा था, अुसके अलावा महीनेमें करीब दो सौ रुपअे आ जाते थे। किन्तु अुनका पाँच बच्चोंका ससार था। बडा लडका चिदानन्द अिन्टरमें था। दूसरा भी अिस साल स्कूल फायनल करेगा। बाकी सब स्कूल जाते थे। कल यह परिवार दूना होनेकी संभावना भी रखता था। अैसी हालतमें अपनी माँ, बहन और रामका बोझ अुठाना कर्तव्यकी भावनाके अतिरिक्त अपनी शक्तिका नही था। अुनकी पत्नी ललिता अपने पतिको काटने दौडती थी। कहती थी, "चार दिन आपके भाअीके घर रहे तो क्या जाअेगा?

"हाँ नागू ! मुझे भी वैसा ही लगता है। लड़केका घर मेरा अपना घर नहीं बन पाया। मैं भी तेरी ही तरह दिन गिन रही थी। बहूके दानेपर जीना मुझे भी कुछ अच्छा नहीं लगता। अुससे बचनेके लिअे ही अुन्होंने पहलेसे सब प्रबन्ध कर दिया था। किन्तु अुनके जानेके बाद वही हुआ, जो होना था।"—माँने कहा।

अब नागवेणीका मन मुन्नाय अुपाध्यायकी बुढियाकी ओर गया। अुसने बच्चीसे पूछा—"मुन्नाय अुपाध्यायके घरकी दादीका क्या हुआ?"

"माँ! किसकी जिन्दगी सदा रही है? अुनकी भी खूब अुमर हुअी थी। बेचारी पिछले साल वर्षाऋतुमें चल बसी। अुनके मरते समय घरमें कोअी भूत भी नहीं था। राहगर चलते किसीने लाश देखकर कुन्दापुर अुनके लडकेको खबर दी, तब अुन्होंने आकर अगला सस्कार किया।"

"माँ! जब मैं पिछली बार आअी थी, तभी दादीने कहा था—"मेरे मरते समय घरके खम्भे ही रहेंगे। वैसा ही हुआ।"—नागवेणीने कहा।

रामने अपनी माँसे "माँ, समुद्रपर जाकर फिर आअूँगा?" कह अकेला कपडे पहन चल दिया। और मैदानसे होते समुद्रके किनारेपर जा पहुँचा। वहाँ जाकर जहाँ-तहाँ घमता पानीके किनारे-किनारे कतार बाँध-कर बैठे समुद्री कौवोको गिनता, अूपर आअे केकडोको अुनके बिलोमें भगाता दौड़ता रहा। आखिर पडुकेरेके धीवरोको मछली पकड़नेके लिअे जाल फैलाते देखता नजदीकसे देखनेके लिअे वहाँ गया और धीवरोको ढेरो मछ-लियाँ अेक साथ खींचते देख चकित होकर खडा रहा। किनारेपर फेंकी मछलियोके ढेरमें पनसर्पोंको समुद्रकी गरम रेतपर तडपते देखकर आँसू बहाअे और आसमानसे झपट्टा मार अुनको अुठा ले जानेवाली चीलोंको देखकर अुसका खून खौल अुठा। समुद्रकी अस नित्य नूतन नव चेतनतासे अधिक अुसके आश्रयमें रहनेवाले अिन जीवोंके जीवन-संघर्षने अुसका चित्त आकर्षित किया। यह सब तबतक देखता रहा, जब तक सूर्य सिरपर आ गया। धूपमें तपकर रामका चेहरा लाल हो गया। पेटके तवेमें जैसे दोसेसे पकने लगे। वह घरकी ओर मुँह करके चल पडा, किन्तु जितना चलता, अुतना ही बाकी रहता, आखिर "आज यह रास्ता अितना लम्बा कैसे आ!"—कहकर हँसा।

घर आते ही अुसने कहा– "माँ ! अैरोडी कौन चलेगा ? चलो यहीं किसीसे अेक दो कच्चे नारियल या ताडफल अुतरवा ले ! वही खाकर दोपहरी बिताअें !"

रामकी बात सुनकर नागवेणीने कहा–'राम ! पहले जाकर तालावमें दो डुबकियाँ लगा आ !"

यह सुनकर अुसको आश्चर्य हुआ। वह नही जानता था कि अुसके आते ही अैरोडीसे अेक मजदूर रसोअीका सामान और दो-तीन चटाअी ले आया था। आनेके समय नागवेणीने अपने चाचासे अिस वार दो-चार दिन कोडीके घरमें रहनेकी अिच्छा प्रकट की थी, और चाचाने अपनी स्वीकृति भी दे दी थी। किन्तु अुन्होने अेक वातकी चेतावनी दी थी कि, तुम्हारे ये हनुमानजी कही समुद्र या नदी-मुखमें नहाने न जाअें। अपने हनुमानजीको सँभालके रखना !"

अिसपर रामने भी "दुत्त ! अुस खारे पानीमें कौन अुतरेगा !" —कहर समुद्रके पानीमें पैर न डुबोनेकी कसम खाअी थी, और समुद्रको देखकर कुल्ला कर "थू !" कर लिया था। अुसमें वह अुतरा नहीं था। किनारेपर टकराकर टूटनेवाली लहरोको देखकर अुनको कुचलनेका मन करता था फिर भी पर्वताकार लहरोको देखकर अुसका हृदय काँप अुठता था। अुन्ह देखकर "अरं वापरे !" कहकर वह किनारेसे ही लौट आता। बचपनका वह समुद्र-प्रेम तरुणाअीमें सम्पूर्ण रूपसे वदल गया था।

माँ और नानी लडकेके नहाकर आने तक राह देखती वैठी रहीं। बच्ची केलेके पत्ते लाअी थी। माँ और नानी अुसे रखकर वैठी थी। रामके आते ही अुन्होने कहा—"वेटा ! तूने कितनी देर की !"

सबके पेटमें चूहे दौड रहे थे। रामने आते ही कहा–"माँ, क्या है ?"

"आज गंजी-भोजन है !"

"जो मिला सो ही खानेवालोंका भाग्य !"

राम खाने बैठा। अुस दिनकी नमक-मिर्चकी चटनीके साथ गंजी (पतला भात) ही वहुत अच्छा लगा। खाते समय नागवेणीको अपने दस-

ग्यारह साल पुराने जीवनका स्मरण हो आया। अुसने मिर्च चबाकर गजी खाते हुअे कहा–"माँ, मैं अैसे ही वर्षों तक रही हूँ। पता नही भगवानने चार दिनके लिअे क्यो दूसरेके अन्नका आश्रित बनाया।"

माँने कहा––"बेटी, अपने भाभीको पराया नहीं समझना चाहिअे। हाँ, पहलेसे ही दूसरे कुलमें पैदा होकर बढा तुम्हारी भाभी, रामको कैसे अपना बच्चा समझकर पालेगी?"

तीन दिन तक राम अिस वन-भोजनको "कैंप-जीवन" समझकर गाँव, समुद्र, नदीमुख, होन्नेका जगल सर्वत्र घूमता रहा। भूख लगती तो काजूके बागमें काजूफल थे। चबानेका मन हुआ तो काजूके बीज लाकर माँको देकर कहता था––"माँ, अिन्हे भूनकर दे!" भोजनमें छाछ, घुअियाँके पत्तोंके चट्टी बडे (रिकवच) रतालूका भुरता, अुसीके पकौडे, कटहलके बीजकी तरकारी......यह सब बच्चीकी कृपासे मिल जाती। तीन दिनके शान्त वातावरणको देखकर नागवेणीकी माँने कहा––"बेटी! अगर रामकी पढाअी नही होती, तो यहीं रहना अच्छा होता। यहाँ कुछ करो न करो कोअी कहने-सुननेवाला नहीं, किसीका अेहसान भी नही! खानेके समय खाना, सोनेके समय सोना! गजीके साथ कुछ मिल गया तो बहुत है।"

"और हमारी कपिलाकी बछिया भी दूध देती है। बच्ची अुसे वापस लौटा देगी। थोडेसे छाछके साथ किसीके अेहसानके बिना दो कौर अन्न मिल गया तो मेरे लिअे वही अमृत है। पर पता नही राम क्या कहेगा। कौन जाने अुसके मनमें और क्या-क्या पढनेको है?"––नागवेणीने कहा।

दूसरे दिन नागवेणी रामको लेकर समुद्रके किनारे गअी। जाते समय रसोअी बनाकर माँको घरमें ही बैठनेके लिअे कह गअी थी। जब वे समुद्र-पर गअे, तब आकाशमें सूर्य लाल हो चुका था। धीरे-धीरे वह मुर्झाकर गायब हो गया। सूर्यकी अुस लालिमामें दोनोंके चेहरे खिल रहे थे, अुसके सामने तीन-चार धीवर अपना जाल लेकर चले जा रहे थे। ये नअे लोग कौन हैं, अिस ख्यालसे माँ-बेटेकी ओर देखते वे आखिर निराश होकर चले गअे। अब सन्ध्याका झिलमिल प्रकाश भी धीरे-धीरे काला होता अन्धकारमें विलीन हो गया।

सामने मुड़ती, टूटती, गिरती आगे जाकर गायब होनेवाली बड़ी-बड़ी सरगोमें यकायक आगकी चिनगारियाँ चमकने लगी, अिस दृश्यने रामका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। वह पानीकी ओर पैरसे जमीनको चापते हुअे दौड़ा। पानी स्वर्ण-रंजित हो अुठा, मानो बिजलीकी वर्षा हो रही है। "माँ! कितना सुन्दर है! मुझे कोअी अैसा दूसरा दृश्य स्मरण नहीं आता!"

रामके मुँहसे यह बात सुनकर माँ हँसी। "राम! गरमीके दिनोंमें समुद्रका पानी अैसा ही होता है। अुस नालेका भी अैसा ही रहेगा। चलो घर चले!"

"अच्छा चलो!"

दोनो घरकी ओर चले। रास्तेमें माँने लड़केसे पूछा—"राम! तुझे मेरा गाँव कैसा लगता है?"

"क्यो माँ?" असने पहले माँका विचार जान लेना चाहा।

"मुझे लगता है, अगर हम यही रहते, तो अच्छा होता!..... क्यो पराया अेहसान अुठाअें!"

"माँ! यह गाँव कितना अच्छा है! और यह तो अपना घर है! रह तो सकते ही है, किन्तु खाने-कपड़ेका प्रबन्ध कैसे होगा?"

"तो क्या मामाके घरमें ही रहनेका विचार है?"

"नही माँ! यही कहना चाहता था, पर मुँह नहीं खुलता था। हम वहाँ रहते है, लेकिन अुनको अच्छा नही लगता। क्यो औरोके लिअे बोझ बनकर रहे? कालेजके लिअे मैं और कही जानेका सोच रहा था, मै मगलूरमें नही पढना चाहता।"

"कहाँ पढ़नेका सोच रहा है, बेटा?"

"यही सोचता हूँ कि मगलूरमें नही पढना है। दूसरा कोअी रास्ता नजर नही आता। बी० अे० हो गया, तो आगे कुछ न कुछ कर लूँगा। अगर अभी नौकरी करने लगा, तो महीनेमें पन्द्रह रुपअे भी नहीं मिलेगे।"

यह सुनकर नागवेणीने कहा—"बेटा! अगर तू अकेला रह सकता है, तो हम भी यही रहकर दिन बिता लेगे। बापूने माँके नामसे कुछ रकम

रखी है। कुछ नहीं तो, अपने ही हाथकी थोडी गजी खाकर भी हम यहाँ रह जाअेंगे, बिना किसीसे कुछ दिअे-लिअे यहाँ रह सकेंगे।' चाचा अब तक हमारा सुख-दुख जैसे देखते आअे, वैसे ही आगे भी देखते रहेंगे। मुझे तेरा ही डर है। तेरे बी अे करनेमें पता नहीं कितने रुपअे लगेंगे। अितने रुपअे कौन देगा ? क्या सदाशिव अितने रुपअे दे सकेंगे ?"

"माँ, असे देखूंगा ! कुछ-न-कुछ हो जाअेगा !!"— कहकर रामने आशामयी जवानीका परिचय दिया। और माँके साथ जहाँ-तहाँकी बातें करता हुआ घर आया। खाते समय पुन अेक बार अिन्ही बातोंका पुनरावर्तन हुआ।

दूसरे दिन प्रात काल अैरोडीके लिअे रवाना होना पडा, क्योंकि रामके ही शब्दोंमें "कैंप-जीवन" के लिअे लाया सीधा-सामान समाप्त हो गया था। और यदि रहना हो तो भी बिना चाचाकी राय लिअे यह कैसे हो सकता था ? अिसलिअे सभी अैरोडी आअे। जाते समय नागवेणीने बच्चीको बुलाकर कहा— "बच्ची ! शायद हम यहीं रहनेके लिअे आ जाअेंगे। अगर आअे तो अेकाध गाय तो लौटा देगी न ?"

"माँ ! आपकी चीज आपको ही ना दूं, तो भगवान मेरा क्या करेगा ?"

जब अैरोडी पहुँचे, तो नागवेणीकी माँने देवरसे अपनी अिच्छा कह डाली। सुनकर नारायण भैयाको आश्चर्य हुआ। अुन्होंने कहा— "भाभी ! तुम्हे भी अपनी लडकीका पागलपन कैसे सूझा ?"

"तुम नही जानते भैया ! . .. अैसा लगता है मरते समय किसीका अेहसान क्यों लें ?"

आगे और बातें हुअी। सुनकर नारायण भैयाका विश्वास-सा हो गया कि वहाँ शायद नागवेणीके मनको दुखाया गया। नारायण भैयाने कहा— "भाभी ! मुझे क्या है ? भैयाने आपके लिअे सालमें सौ रुपयोंका प्रबन्ध किया है। वह तो आपको मिलते ही रहेंगे। कोडीमें अितने रुपअे पर्याप्त हैं। और अगर कम पडा भी, तो मैं किस दिन काम आअूंगा ? जब तक मैं हूँ, आपको किसी बातकी फिकर नही करनी चाहिअे। किन्तु मुझे रामकी

चिन्ता है। रामका आगे क्या होगा ? अुसकी शिक्षा कैसे होगी ? बेचारेने बापका मुँह नहीं देखा। क्या वह अपनी माँसे अलग रह सकेगा ?"

"तुम रामकी चिन्ता मत करो, भैया! वह अपने लिअे कुछ कर लेगा। अुसे भी मगलूर रहना पसन्द नही। और भैयाने छह साल तक तो पाला। वे कितने दिनो तक पालेंगे ?"—नागवेणीने कहा।

सप्ताह भरमें बारह साल प्रथम जो बर्तन-भाण्डे अैतालके घरसे अैरोडी आअे थे, वे सब कोडी लौट आअे। नारायण मैयाके यहाँके मजदूर कोडी जाकर अैतालके मकानकी सफाअी, मरम्मत आदि कर, गोठ-बीठ ठीक कर लौट आअे। घरका काम ठीक होते ही दूसरे दिन नागवेणी अत्यन्त अुत्साहके साथ अपनी माँके साथ कोडीके लिअे चल पडी। चलते समय राम "माँ! गाँव आनेके बाद तुम्हारा फिडल ताकपर ही पडा है, अुसको कभी तुमने गोदमें नही लिया!"—कहकर हँसा।

नागवेणी भी हँसी। अुसने कहा—"बेटा, बिना अुसके मेरा समय कैसे कटेगा ?"

रामने फिडलका थैला अपनी पीठपर लाद लिया और माँके साथ चल दिया।

दो-चार दिन रहते ही नागवेणी "यही हमारा घर है और हम यहाँसे कभी कही गये ही नही" अिस ममताके साथ रहने लगी। दो-चार दिन बाद लगडाते हुअे नारायण मैयाने आकर भाभी-भतीजीका ससार देखा। और "नागवेणी, यहाँ रहना तो हुआ, किन्तु खेती-किसानीकी बला मत लेना।" कहते हँस पड़े।

यह सुनकर रामने भी हँसकर कहा—"क्या माँ और किसानी!"

"पगले! तेरी माँने तुझे गोदमें अुठाकर यहाँ किसानी की है। तू क्या जाने!"—कहकर छोटे नानाने अुसका मजाक अुडाया।

गरमीकी छुट्टी खतम होने आअी। राम प्रसन्नचित्त हँसते-खेलते दिन बिता रहा था। आगे क्या करना है, यह विचार आते ही अुसका मन चचल हो अुठा। अुसमें अितने विचार आने लगे कि शायद समुद्रमें तेज तूफानसे भी अुतनी लहरे भी नही अुठती। अुसकी मनोदशा अस्तव्यस्त हो

गअी। मगलूर छोडकर और कहाँ जावें ? मद्रास ? जगह अच्छी है, किन्तु खर्चीली है। अितने रुपअे कहाँसे आअेंगे ? अिन्ही दिनोंमें मगलूरसे सदाशिवने अपने चाचाको अेक पत्र लिखकर पूछा था–माँ कैसी है ? नागवेणी कैसी है ? रामने आगे क्या करनेका सोचा है ? जवाबमें नारायण भैयाने बिना किसी ब्यौरेके अेक पत्र लिख डाला।

पत्रमें था—"नागवेणी और भाभीने कोडीमें रहना ही तय कर लिया है। राम आगे क्या करेगा अिसका कोअी अन्दाजा नही है, किन्तु मगलूर आनेका विचार किसीका नही है !" आखिरी वाक्य सदाशिवको चुभ गया। अुसके कारणपर सोचा माँको भी मेरा घर अच्छा नही लगा और "वह तेरी जबानकी कैंचीने मेरे और माँके बीचके प्रेमसूत्रको काट दिया।" कहकर अपनी पत्नी पर रुष्ट हुअे, किन्तु बीती बातोंके लिअे क्या कर सकते थे ? आखिर अुन्होने अपने चाचाके पास अेक पत्र भेजा अुसमें लिखा था— "मालूम होता है वे मुझसे नाराज हैं। अिसमें शक नही मैं अिसी लायक हूँ। किन्तु राम यहाँ रह सकता है। बेचारेकी पढाअी अधूरी रही तो भविष्यमे अुसको बडी कठिनाअियोका सामना करना पडेगा ? आजकल मैट्रिकको कौन पूछता है ? कमसे कम बी० अे० कर लेना तो अच्छा रहता। मैं और भैया दोनो मिलकर अुसकी सहायता कर सकते हैं। वह कही भी पढे मैं दस रुपअे मासिक भेज देनेको तैयार हूँ।"

पत्रका साराशका रामको भी पता लग गया। अुसने कहा—"माँ ! मामाकी सहायता लेनेको जी नही करता !"

नानीने कहा–"बेटा, किसीसे न माँगनेसे कैसे पढेगा ? अगर महीनेमें दस रुपअे भी नियमित रूपसे मिलते हैं, तो अुतना कष्ट तो कम होगा।" न पैसेके लेनेकी अिच्छा थी, न छोडनेकी स्थिति थी। अैसी हालतमें भला क्या निश्चय हो सकता है ? बिना किसी निश्चयके बात वैसी ही रह गयी।

जून प्रारम्भ होते ही रामने माँसे विदा ली। अुसने कहा—"माँ ! तू मेरी चिन्ता मत कर। किसी न किसी तरह मैं अपनी पढाअीका काम आगे बढाअूँगा। जब तक कही जाकर अेक जगह नहीं बना लूँगा तब तक तुम्हे नहीं लिखूँगा। किन्तु किसी भी हालतमें तू मेरी चिन्ता न करना !"

अुस रातको नागवेणीने रामको अपने ब्याहसे अब तक पतिने अुसे कैसे-कैसे सताया असिका पूरा अितिहास रो-रोकर कह सुनाया। आखिर अुसने कहा—"बेटा! अुन्होंने मेरा हाथ छोड दिया। मैं केवल तेरा मुंह देखकर जी रही हूँ! अगर तूने भी . . !"

कोडीके नदीमुख पर हुअी घटनाका वर्णन सुनकर राम कांप अुठा। अपनी सारी दुर्दशाके कारणीभूत बापकी कहानी सुनकर अुसकी आंखोंमें खून अुतर आया। मांकि दुःखकी कहानी सुनकर आंखोंमें आंसू भर आअे। अुसको मानो अब "मैं कौन हूँ असिका ज्ञान और भान हो गया।" अुसने अेक दुधमुंहे बच्चेकी तरह आंसू बहाते हुअे मांका हाथ अपने हाथमें लेकर अुसपर अपना दूसरा हाथ रखकर कहा—"मां! तू मुझपर भरोसा रख। बापूकी तरह मैं कभी नही करूंगा।" मांने अुसको छातीसे लगा लिया।

दूसरे दिन सुबह ही रामने अपनी नानीके चरण छुअे। मांने फिर अेक बार गले लगाकर अुसके गाल चूम लिअे। "जल्दी लौट आअूंगा, बच्ची!" कहकर चार दिनकी अुस परिचिता मजदूरनीका भी सम्मान करके वह रवाना हुआ। नाला पार कर भैरोडी गया और नानाके साथ देर तक बातें करता रहा। अुसने कहा—"मेरा अेक सहपाठी मद्रास जा रहा है। वह भी मेरे साथ मैट्रिक पास हुआ था। वह मुझे भी अपने साथ बुला रहा है। कहते हैं, वहां हमारे गांवके बहुतसे लोग रहते हैं।"

अपने नातीका साहस देखकर नारायण भैयाको बडा आनन्द हुआ। अुन्होंने आशीर्वाद देकर अुसके हाथमें तीस रुपये रखते हुअे कहा—"जा! अपनी मांको मत भूलना! वहां जाकर पत्र लिखा करना। मेरा हाथ भी तग है, फिर भी किसी कठिनाअीमें लिखना, जो कुछ भी किया जा सकता है, करूंगा। कुछ भी हो, अपनी पढाअी पूरी करना, अुसे अधूरी नही छोडना।"

दूसरे ही दिन वह मगलूर पहुंचा, किन्तु अपने मामाके घर नही गया। अपने रिश्तेदारोंमेंसे किसीके भी पास नहीं गया। अितना ही नहीं, अुनकी आंखोंसे ओझल ही रहा। और अपने अेक शिक्षकसे मिलकर अुनसे मद्रासके लिअे कुछ परिचय-पत्र लिअे, स्कूलसे प्रमाणपत्र लिया और दूसरे रोज ट्रेनसे मद्रासके लिअे रवाना हो गया।

अकाकी, विना किसीके परिचयके, कोडीका राम अब रामराव बनकर ट्रेनके जगलेसे गर्दन वाहर निकालकर चारो ओरकी प्रकृतिका सौंदर्य देख रहा था। दिन बीता। रात हुअी। यद्यपि वह गाडीमें लेटा हुआ था, किन्तु अुसका मन आसमानकी तरह शून्य था। सारा वातावरण नया था। भविष्य अनिश्चित था। दूसरे रोज सुबह मद्रासका रेलवे-स्टेशन आते ही अपना बिस्तरा बगलमें दबाकर नीचे अुतरा। हम्मालोंने अुसका बोझा लेना चाहा, किन्तु "मैं भी अेक हम्माल हूँ।" कहकर हँसता हुआ वह फाटक पर गया। टिकट देकर वाहर निकलते ही अुसके सामने समस्या आ खड़ी हुअी "कहाँ? किसके पास चले ?"

अिसमें शक नही, अुसके अेक मित्रने मद्रासका अपना पता दे दिया था। किन्तु "अगर वह मगलूरसे मद्रास न आया हो तो ?" सोच दांतोतले अँगुली दबाकर सामने आदमियोंसे भरी खचाखच ट्रामोको दौड़ती देखता हुआ पता नही कितनी देर तक खडा रहा।

: २४ :

पता नही राम कब तक रेलवे-स्टेशनके सामनेवाले गेटसे रास्ते पर आने-जानेवालोको अिस विचारसे देखता खडा रहा कि शायद कोअी परिचित व्यक्ति दिखाअी दे, किन्तु आखिर निराशा ही अुसके हाथ लगी। अुसने किसीसे पूछा—"क्या यहाँ कोअी धर्मशाला भी है ?"

अुस बेचारेने धर्मशाला दिखा दी। वह धर्मशालामें गया। धर्मशाला क्या अेक चिडियाघर ही था। यात्री, भिखारी, बेकार सब अुसमें भरे थे। अुन्हे देखकर अुसको घृणा-सी हो गअी। अुसके मनमें आने लगा, अिसमें रहने पर जेबमें जो चार पैसे और यह छोटासा बिस्तर है वह भी क्या सुरक्षित रहेगा ? किस पर भरोसा रखकर मै यहाँ रहूँ ? जब बाहर आता-जाता, तब अपनी जेबपर हाथ रखता।

दोपहर बीतकर शाम आअी। सुनी हुअी दो-चार सडकोमें चक्कर लगाने लगा। अपने शिक्षकके दिअे परिचय-पत्रोका अुपयोग करनेका भी प्रयास किया। परिचय-पत्र कालेज-प्रवेशके लिअे थे, रहने-खानेके लिअे नही।

आखिर निराश होकर "कालेज कहाँ है ?" पूछकर तिरुवल्लिक्केणीके समुद्र किनारे गया। वहाँ भी विशाल समुद्र बिछा हुआ था। अुसका सौंदर्य भी अपूर्व था। सामने रेतकी दरी भी बिछी थी। वहाँ जाकर खडे होते ही अपने गाँवके सुख-स्वप्न देखने लगा। किन्तु वहाँकी भीड, भिखारियोंके झुण्ड, मोटरोंकी दौडसे मनको कोअी शान्ति नही मिलती थी। मन अशान्त हो जाता था। यहाँ आ चुका था अिसलिअे प्रेसीडेन्सी कालेजके सामनेकी रेतीपर जा बैठा। अुसके मनमें आया, अगर नसीबमें है, तो कलसे यहीं अपने जीवनके, कुछ काल बितनेका मौका मिलेगा। यह सुखद स्वप्न अितना

आकर्षक था कि अुसे बाजारकी सारी अशान्ति भूल गयी। किन्तु, अिसी समय किसीने पीछेसे अुसके कंधेपर हाथ मारकर–कहा "राम !" वह चौंक पडा। शायद शेरके कूदनेपर भी अितना नहीं चौंकता।

"अरे, यहाँ कैसे आया ?"

वह घूमकर देखता है, तो अुसके मौसाजी थे। कृष्णवेणीका पति माधव अपने दो बच्चोंको साथ लेकर वहाँ घूमने आअे थे। मौसी और मौसाजी मद्रासमें होंगे अिसकी अुसे स्वप्नमें भी कल्पना नहीं थी। अपने रिश्तेदारोंका अेहसान नहीं चाहिअे, यह भावना भी अुसमें अति तीव्र थी। फिर भी अिस समय मौसाजीको देखकर अुसे अत्यन्त खुशी हुअी। अुसने अपने आनेकी सारी कहानी सुनाअी। अुसके बाद अुसने कहा–"अभी सिर रखनेकी जगह नहीं मिली अुसीको ढूंढ रहा हूँ।"

सुनकर माधव हँसे। "क्या तूने सोचा कि मौसीके घरमें पर्याप्त जगह नहीं मिलेगी अरे पागल! अगर दो पैसे खर्च कर अेक कार्ड लिख देता, तो मैं स्टेशनपर आ जाता। और सदाशिव भी कैसा प्राणी है? अुसने भी तुम्हारे आनेकी खबर नहीं दी!" माधव बाते करते-करते रामको मैलापुर तक ले गअे। वहाँ बच्चोंको घरपर छोडकर अुसने पूछा—"अब बोलो तुम्हारा सामान कहाँ है?"

दोनो धर्मशालामें गये। पर वहाँ ले जानेके लिअे क्या रखा था? अुसने जिस कमरेमें ताला लगाया था, वह कमरा खुला पडा था, और अंदरसे बिस्तरा छूमन्तर हो चुका था। रामका चेहरा सूख गया।

"अुसमें रुपअे तो नहीं थे!"—मौसाजी ने पूछा।

"जेबमें थे। बिस्तरा और पहननेके कपडे थे। बिना कपडोंके मैं क्या करूँगा।"—रामने अपना-सा मुँह बनाकर कहा।

अुसको यकायक परदेशका भान हुआ। मौसाजीने अुसके पीठपर हाथ फेरते हुअे अैसे कहा मानो कुछ हुआ ही नहीं। "देखो! मुझे दो पैसेका कार्ड न लिखनेका यह दण्ड है! समझे?" वे हँसे।

"जी!" रामने कहा।

जाते समय आन्ध्रनाडमें यहाँ कैसे बदली हुअी, यह कहानी कहते हुअे माधवराव रामको घर ले आअे। अुसके बाद अुन्होंने यह भी कहा–"पहलेमें

यहाँ अच्छा है। यहाँ अपने गाँवके लोग भी काफी देखनेको मिलते है।"

कृष्णवेणीने रामका स्वागत किया। खाना खानेके बाद अुसने पूछा—"राम! माँ और जीजी मगलूरमें अच्छी तरह है न!"

तब रामने सारी रामकहानी सुनाओ। सुनकर कृष्णवेणीने कहा—"हाँ! बापूके रहने तक सब ठीक था। अब क्या रहा वहाँ? जीजी गजबकी औरत है! वे तो किसी रेगिस्तानमें भी अपनी जिन्दगी बिता लेगी, किन्तु माँको अिस आयुमें वह गाँव कन्नानूरका महा जेल न हुआ, तो आश्चर्य ही होगा।"

दूसरे ही दिन रामके कपडे बन गये।—"आगे क्या?" का विचार होने लगा। माधवको १५० रु वेतन मिलता था, जिसपर चार-पाँच बच्चोका भार था। अुनसे कहाँ तक सहायता मिलेगी? फिर भी अुन्होने कहा—"यहाँ तुम्हे रहने खानेके लिअे किसी प्रकारकी दिक्कत नही होगी। और मगलूरसे थोडी-सी मदद मिलेगी तो आसानीसे बी अे कर लोगे!" अुनकी बात सुनकर राम चुप रहा। अुसने कुछ भी नही कहा।

जब कभी माधव अपने कार्यालयमें जाते, तब राम अपने परिचय-पत्रोका अुपयोग करता। अपने खर्चके लिअे चार पैसे कैसे कमाअे यही विचार दिमागमें चक्कर काटता रहता। अिन्ही बातोंके लिअे वह यत्र-तत्र घूमने लगा। आसानीसे कालेजमें प्रवेश मिल गया। फीस, किताबो आदिके लिअे घरको लिखनेकी आवश्यकता नहीं, अिस विचारसे वही मैलापुरमें मगलूरके लोगोंके यहाँ दो-चार ट्यूशन कर लिअे। छोटे बच्चोको लिखा पढाकर अुसने बीस पच्चीस रुपअे कमानेका निश्चय कर लिया। यह जानकर मौसाजीको भी खुशी हुअी, फिर भी अुन्होने अेक दिन पूछा—"राम! दूसरोको पढाकर तुम्हारी अपनी पढाअीका क्या होगा?"

सुनकर राम हँसा और चुप हो गया।

रामने दो महीने घर पत्र नही लिखा। अिसी बीचमें सदाशिवने माधवसे रामका मद्रासमें होनेकी बात जानकर बडे दुखसे रामको अेक पत्र लिखा। रामने अुसका भी अुत्तर नहीं दिया। किन्तु अुन्होने जो २० रुपअे भेजे थे, अुसे लौटाते समय अुसने माधवसे लिखवाया था—"भविष्यमें अपने लोगोसे कोअी सहायता लेनेकी अिच्छा नही है।"

कृष्णवेणीने पहले ही सारी बाते अपने पतिसे कह दी थीं, जिससे माधवके मनमें कोओी गलतफहमी नहीं हुअी। फिर भी अुन्होने कहा—"राम! कुछ भी हो, कोओी दिक्कत आअे तो अपनी मौसीसे मत छिपाना!"

अेक बार मौसाजीने अुससे पूछा—"राम! घर मांको पत्र लिखा है न!"

"नही!" रामने जवाब दिया।

माधव चुप रहे, किन्तु अुन्होने कृष्णवेणीसे अपनी बहनको अेक पत्र लिखनेको कहा, साथ ही अुन्होने अपनी पत्नी द्वारा यह भी जाननेकी कोशिश की कि घरसे तो अिसका दिल नहीं फटा है। और अुसमे कहा—"कुछ भी हो, मां कितनी चिन्तित होगी! मां आखिर मां है। तू अपनी बहनको लिखती रहना!"

कृष्णवेणीने अपनी बहनको भतीजेके बारेमें लिखा तो वहांसे जवाब आया—"राम हमें क्यो नही चिट्ठी लिखता?"

मौसीने वह पत्र वैसे ही रामके हाथमें दे दिया। वह हंसा! मौसीने प्यारसे पूछा—"राम! अैसा क्यो करता है, बेटा!"

जब अुसने बार-बार पूछा तो रामने कहा—"अगर तुम बुरा न मानो, तो कहूं!"

"क्या?"

"जब तक मै अपने पैरोपर नही खडा होअूंगा, अपन श्रमसे अपनी रोटी नही कमाअूंगा, तब तक मैं अुनको पत्र नही लिखूंगा। अब मै अुनको क्या लिखूं? दूसरोके अन्नपर पल रहा हूं? मौसी तुम ही सोचो मांने मगलूर क्यों छोडा?"

यह सुनकर कृष्णवेणीको बुरा लगा। अुसकी आंखें भर आअी—"राम! बेटा! मुझे भी तुमने ललिता मामी समझा?"

रामकी आंखोमें आंसू निकल आअे। "अैसा नही मौसी! मुझे यहां किसी प्रकारकी दिक्कत नहीं। जब मैं तुमसे बोलता हूं, लगता है मांसे बोल रहा हूं। किन्तु मगलूरमें जो अनुभव हुआ अुन्होंने ही मुझसे यह कहलवाया। औरोंके अेहसानमें रहना अच्छा नही!"

सुनकर कृष्णवेणीको भी अच्छा लगा। रामकी बुद्धि और आत्म-सम्मानको देखकर माधवको आश्चर्यके साथ खुशी भी हुअी।

कुछ दिनो बाद रामने अपनी मौसीके पास आकर कहा—"छोटी माँ! अगर गुस्सा न करो, तो कहूँ!"

"क्या है, बेटा!"

"क्या मै माँको कभी पत्र न लिखूँ?"

"कबका लिखना चाहिअे था। चार महीने हो गअे। अब तो लिखना ही चाहिअे!"

"तब लिखता हूँ! अब लिख सकता हूँ छोटी माँ! किन्तु बुरा न मानना। कलसे मै यहाँ खानेके लिअे नहीं आअूँगा! किसी होटलमें जाअूँगा। अब मुझे अेक ट्यूशनसे पच्चीस रुपअे मिलते है और दोसे दस-दस रुपअे। मेरा खाना-खर्च आसानीसे चल जायगा!"

कृष्णवेणीको बहुत दुःख हुआ। वह अुदास होकर बोली—"बेटा! अगर यही तेरा निश्चय है, तो मै क्या कहूँ! किन्तु अेक बात कहूँ। कमसे कम दिनमें अेक बार जरूर आया करो। परदेशमें बिना आत्मीय लोगोंसे नही रहना चाहिअे। अगर बुरा न मानो तो कमसे कम काफी पीनेके लिअे यहाँ आ जाया करो। नहीं तो सोनेके लिअे तो यही रहो! तुमने देखा न हमारे आनन्दको बिना तुम्हारे चैन नही!"

राम हँसा—"नही माँ! यही रहकर वहाँ खाअूँगा। अपनी कमाअीका खाता हूँ, यह आत्म-सन्तोष तो अनुभव करने दो। अब तक तुमने जो प्यार किया, वह किसीने नहीं किया। फिर भी मनकी यही अभिलाषा है!"

कृष्णवेणीके चार सालके बच्चेने कहीसे सुना और वह दौडता आया। आते ही अुसने कहा—"भैया! तू हमारे घर नही खाअेगा तो हम भी नही खाअेंगे!"

रामने अुसको गोदमें लेकर—प्यारसे कहा—"नही भैया!"

दूसरे दिन खानेके समय राम गायब था। देखकर माधवको आश्चर्य हुआ। पत्नीने बताया—"क्या करूँ? अुसकी अपनी जिद्द है, किन्तु वह बुरी भावनासे अैसा नही कर रहा है!"

अुस दिन रातको जब राम आया, आनन्द चीखता-चिल्लाता कह रहा था—"भैया घरमें नही खाता, तो हम भी नही खाते।"

अुसी दिन रामने अपनी माँ और नानीको लिखा था—"मेरे बारेमें कोअी चिन्ता करनेकी बात नहीं। मैं राजी-खुशीसे हूँ। बडे दिनकी छुट्टियोंमें नही आअूँगा, किन्तु पैसे बचाकर मअीकी छुट्टियोमें आअूँगा।" शामकी डाकसे ही अुसका पत्र गया। किन्तु यहाँ बच्चोके शोरने अुसे पागल कर दिया। रामके लाख प्रयत्न करनेपर भी बच्चोने अेक नही मानी। बच्चोकी अिस मनोव्यथामें माधव भी आकर शरीक हो गया। आखिर माधवने समस्याका हल बतलाते हुअे कहा—"राम! अब मैं भी निर्लज्ज होता हूँ। तू अपनी जिद्द रखनेके लिअे होटलमें खानेकी बात करता है या अपनी कमाअीकी रोटी खानेके लिअे?"

"आप अैसा क्यो कहते हैं? मेरी जिद्द और किस पर! आप पर या छोटी माँ पर? मौसाजी, क्या मैं अपनी जिद्दके लिअे अैसा कर रहा हूँ?"

"नही! तो तू होटलमें क्यो दण्ड भरता है?"

"वह दण्ड कैसा? मै वहाँ खानेके लिअे बारह रुपया महीना देता हूँ।"

"वही बारह रुपअे महीना हमें दे दो और यही खा लो!"

माधवको यह बात कहते समय लज्जा-सी हुअी, किन्तु समस्याका दूसरा हल नहीं था। अुसको यह भी महसूस हुआ कि यह मेरे अूपर अेक प्रकारका धब्बा है। रामको अपने ही घरमें पैसे देकर खाना बुरा लगा। किन्तु आनन्दके सामने अुसकी अेक भी नहीं चली। आखिर अुसे होटलके अेक दिनके खानेसे ही तृप्त होना पडा।

महीनेके आखिरमें माधवने अपनी पत्नीसे कहा—"कृष्णी! राम पैसे दे तो चुपचाप ले लेना। अुसको अकल नही है। जैसे वह दे वैसे ले लेना फिर जमा करके अपनी जीजीको भेज देना! हाँ, किन्तु लिख देना कि रामको अिसकी खबर न लगे! नही तो आफत हो जाअेगी!"

कृष्णवेणीको यह युक्ति अच्छी लगी। अुसने अपनी माँ और जीजीको यह सब खबर लिख भेजी। अपनी कसम दिलाकर लिखा—"मेरी सौगन्ध

है, जब तक राम यहाँ रहे, रामको अुसके दिअे रुपअे मैं आपको भेजती हूँ अिसे नही बतलाना !"

जिस दिन वह पत्र मिला, नागवेणी अपनी माँसे रामके गुणोकी भूरि-भूरि प्रशसा करते हुअे रो पडी। अरेरे! अिन गुणोको देखकर सुखी होना अुनके नसीबमें नही था!—अब प्रत्येक महीनेमें नागवेणीके खजानेमें बारह रुपअे जमा होने लगे। जैसे अुसको ससुर दीवारकी किसी बिलमें पैसे रखते थे, वैसे ही नागवेणीने भी दरवाजेके अूपर अेक कोनेमें पैसा रखना सीखा।

कुछ दिन तक नागवेणी रामके विषयमें बडे-बडे दिवास्वप्न देखती रही। जहाँ कही भी जाअे, अैसा लगता लडका सामने खडा है। अब वह रामकी प्रतीक्षामें अुदास रहने लगी। वह मद्रासमें कैसे पढता होगा? अब कितना बडा हो गया होगा? यही बाते सोचा करती थी। अिससे पहले कृष्णवेणी जीजीको कोअी पत्र शायद ही कभी लिखती, किन्तु जबसे राम अुसके पास रहने लगा, हर सप्ताहमें अेक पत्र लिखती। अुसको राम अपना ही लडका-सा लगता। जैसे माँ अपने-बच्चोकी प्रशसा करते नही अघाती वैसे ही कृष्णवेणी अपने पत्रोंमें रामकी अपूर्व प्रशसा करते नही थकती। रामके बारेमें अुसका अभिमान भी अपूर्व था। माधवको घरमें रहनेका समय बहुत कम मिलता। दफ्तरकी गुलामीमें ही अुसका दिनका समय जाता। फिर भी जब कभी पति-पत्नी अेक साथ मिलकर बातचीत करने बैठते, रामकी प्रशसाके चार शब्द जरूर आते। अुनके बच्चोंमें सबसे बडा रामचन्द्र, दूसरी लडकी जया, तीसरा सदानन्द और चौथा आनन्द! सबके सब "हमारे भैया हाथसे कब पुस्तक नीचे रखेंगे" अिसीकी राह देखते रहते! वे जानते थे कि रविवारको ट्यूशनसे छुट्टी होती है। सुबह होते ही वह अपने माँ-बापसे कहने लगते, "बाबूजी! हम आज भैयाके साथ बीच (समुद्र-तट) पर जाअेंगे" रामको भी अिस वानरसेनामें हनुमानजी बनकर खेलनेमें बडा आनन्द आता, और खासकर समुद्रके किनारे, जो कि अुसको प्राणोंसे भी प्यारा था। अिसमें शक नही कोडीकी भव्यता यहाँ नही है, वह अनन्तता यहाँ नही दिखती, फिर भी यह समुद्र ही है। वही अनन्त लहरे, वही धीवर और अुनकी नावे, वही विशाल सिकता-

घरमें जो हँसी और जोर-जोरसे बातें हो रही थीं अुसे सुनकर सूराकी बहू और बच्ची "अरे! छोटे मालिक आअे हैं!"—कहकर दौडी आअी। आते ही बच्चीने अपने अज्ञानका सुंदर प्रदर्शन करते हुअे पूछा—"बाबूजी! आप कब आअे? क्या मद्रास बडा गाँव है? हमारे हंगारकट्टेसे भी बडा?"

राम हँस पडा। अुसने "बच्ची! मद्रास क्या हमारी कोडीसे बडा थोडा ही है? वहाँ अितने लोग भी नहीं हैं। यही चार पाँच लाख लोग होंगे!"—कहकर समुद्रपर जानेकी बात कही।

यह सुनकर नानीने कहा—"बेटा! तेरा समुद्र भाग नहीं जाअेगा, शाम तक यहीं रहेगा। बाहर धूप तप रही है, जमीनपर पैर नहीं रखा जाता, अभी तू थककर आया है। जरा आराम कर, धूप अुतरनेके बाद समुद्रपर चलेंगे।"

राम हँसा। अुसने कहा—"हाँ नानी! जमीन तपकर तवा हो गअी है। जब मैं आ रहा था, नालेके किनारेपर अुगी घासपर पैर रखनेसे भी पैर जल रहे थे। और क्या कहूँ, हमारे तलावके किनारेकी रेत तो सचमुच जल रही था!"

"और तू अिसी समय समुद्र देखने जा रहा है!"

"नहीं तो क्या? नानी तुम क्या जानो? किसीने कहा हमारा कोडीका समुद्र मअीकी छुट्टियोंमें कुन्दापुर जानेवाला है। अुसके कुन्दापुर जानेके पहले ही अुसे अेक बार देख आना चाहिअे न!"

नानी हँसी—"बेटा! मुझे क्या बच्ची समझ रखा है-तूने?"

बच्ची अत्यन्त मन्त्र मुग्ध-सी होकर अुसकी बातें सुन रही थी। अुसने अपनी राय दी—"मूँछें आ जानेपर भी मालिकका बचपना नहीं गया!"

"हाँ बच्ची! क्या कहूँ! दाढी-मूँछें सफेद होने आअीं फिर भी बच्चेकी-सी बातें। आजकल कलियुगके बच्चोंकी बुद्धि ही अैसी होती है!"

अिन मृदु मधुर बातोंमें पापड बेलनेका काम वैसा ही रह गया। अब नागवेणीको अुसकी याद आअी और पापड बनाने बैठी, यह देखकर राम भी "मैं भी पापड बेल लेता हूँ!" कहकर चकला बेलन लेकर पापड बेलने लगा।

"तुम्हारे कालेजमें यह भी सिखाते है क्या ?"—माँने हँसकर पूछा।

"माँ। मद्रासके पापड अैसे पतले होते है कि बस मुँहमें डाला कि पानी। वहाँ कोडीवालोंके पापडकी तरह गोबरके अुपले नही पथते।"

"हाँ रे बाबा, तेरा मद्रास ही बडा अच्छा है।"

तब तक रामका पापड बेलना हो गया। अुसने बेलन, चकला अपने हाथ सब आटेमें सान लिअे। "माँ! कैसा है पापड ?" ....

"तेरे कालेजमें अैसे ही पापड बेलना सिखाते होंगे!"

"अरे! मद्रासमें हो आनेके बाद भी हमारे छोटे मालिकको पापड बनाना नही आता।"—बच्चीने अुसका मजाक अुडाया।

"हाँ बच्ची! मद्रासमें दोसेके आटेसे पापड बनाते है, अिससे नही!' रामने कहा।

"अैसा है मालकिन ?"—अुसने अपने बावलेपनका प्रदर्शन किया।

शाम तक नागवेणीने अपने बच्चेको दूसरी बार जलपान कराया। रामने अपनी नानीसे—"नानी आज तू रसोअी बना दे! मुझे माँके साथ समुद्रपर जानेकी अिच्छा है। मैं अुन बच्चोंके साथ रोज जाता था माँ, वे बच्चे कितने अच्छे हैं।"—कहकर माँके साथ समुद्रपर जानेके लिअे निकला। चलते समय "बच्ची हवा खानेके लिअे तू भी चलेगी!"—पूछा।

बच्चीने हँसते हुअे कहा—"मालिक! जिस दिन खानेके लिअे और कुछ नही मिलता, हम वही खाते है।"

सुनकर राम हँसा भी और अुदास भी हुआ। जाते समय अुसने बच्चीके घरकी हालत अपनी माँसे पूछी।

नागवेणीने कहा—' अुसे तो बच्चीने अभी तुझसे कहा ही!"

"अरेरे!"

सुनकर रामको बुरा लगा। वह अपनी माँके साथ सामनेवाली टेकरीपर चढा। चढते ही सामनेसे आती समुद्री हवाको देखकर चीख पडा!

"राम ! तुझे क्या पागलपन सवार हुआ है ! कहता है रोज वहाँके समुद्रपर जाता हूँ और........"

"हाँ माँ, रोज जाता हूँ। तो भी क्या हुआ? अुसमें अैसी शान कहाँ? वहाँ यह सौन्दर्य कहाँ?" अिसी आनन्दसे मैं चिल्ला अुठा। "माँ वहाँ अैसे चिल्लाअूँगा, तो लोग मुझे पागलखानेमें भेज देंगे ! शाम जहाँ हुअी, बस समुद्रके किनारे अितने लोग अिकट्ठे हो जाते हैं कि नीचेकी रेतीतक नहीं दिखाअी देती। यहाँ जैसी शान्ति वहाँ-कहाँ?"

"बेटा ! हमारा समुद्र वहाँसे अच्छा है न!"

"हमारा समुद्र कितना प्यारा है!"

"हाँ ! मद्रास जाकर तू खूब तमाशे सीख आया है!"

"छोटी माँ भी अैसा ही कहती है। वे कहती हैं—राम बडा बातूनी लडका है!"

"हाँ बेटा! जब तू मंगलूरमें था, तेरी जबान गूँगी-सी थी। अब खूब चलने लगी है।"

"हाँ माँ ! अिस साल मन भी बडा प्रसन्न रहता है। माँ ! तुम यहाँ कैसी हो?"

"तेरी याद छोड़ दी जाय तो सब ठीक है। अक्सर चाचा आकर पूछ-ताछ कर जाते हैं!"

"वक्त कैसे कटता है? फिडल बजाती है या नही?"

"कभी-कभी बजाती हूँ, बेटा ! फिर भी तू बहुत याद आता है। हाँ, बजाती हूँ! जब कभी बजाती हूँ, तब सुननेके लिअे बच्ची आती है। पूछती है 'अम्मा! वह 'टोय्-टोय्' क्या होता है?' सुनकर जब थक जाती है तो पूछती है 'अम्मा ! अिसके बजानेसे क्या लाभ?' अुसको क्या जवाब दूँ? कहती हूँ समय नहीं कटता, अिसीलिअे बजाती हूँ। फिडल बजाना छोड देनेपर तुगाके साथ खेलना। वह बछिया बेचारी अितनी प्यारी है कि आजकल रसोअी घरमें भी आती है, जब खाने बैठती हूँ तब भी आकर पीठसे

अपनी पीठ रगडती है, मेरी तकिया बन जाती है, चाटती है ! अिन मूक जानवरोंमें भी कितना प्यार है !"

"अुनमें जो प्यार है, वह हममें नही होता है, माँ !"

"सच है बेटा ! अुनमें जो प्यार होता है, वह मनुष्योंमें नही होता !"

अुनकी अिन बातोंने माँ-बेटेको समुद्रके किनारे तक पहुँचा दिया। दोनो किनारेपर मोती-सी चमकती सिकता-राशिपर बैठ गअे। रामने गला सूखने तक बाते कीं। दोनोको पता नही लगा, शाम कब हुअी। कौओंकी फौजने अुनके सिरपरसे अुडकर अपने घोंसलोकी ओर प्रयाण किया। फिर भी अुनको पता नहीं। दूरके रेगिस्तानसे, धूपमें सूखती मछलियोकी बदबूके नाकमें घुसनेपर भी अुनको खबर नही थी। किसी बातका अुनको पता नही था।

आखिर रात होनेपर मजबूर होकर, दोनो घर जानेके लिअे अुठे। नागवेणीने कहा—"गरमीके दिन हैं चाँदनी भी नही, रास्तेमें देखते चले!" गरमीके दिनोमें हवा खानेके लिअे रास्तेपर आ पडनेवाले साँपोंके डरको दिलमें बिठाकर दोनो घरकी ओर चले। बीचमें केतकीका वन आया, अुनमेंसे पापडकी सुगन्ध आने लगी। और रामने कहा—"माँ ! यहाँ पापडगन्धा साँप होगा !"

"यही क्यो बेटा ! वह हर कही रहता है !"

राम घरके तालाबपर आया। नागवेणी हाथ-पैर धोकर कुल्लाकर घरकी ओर गअी और राम गले भर पानीमें अुतरकर मुँहमें पानी भरकर घेरे बनानेमें समय बिताने लगा।

जब नागवेणीने आकर—"राम ! मालूम होता है, तूने मद्रासमें स्नान किया ही नहीं !"—कहा। राम पानीसे बाहर आया। बदन पोछकर कपडे बदले और खानेके लिअे बैठ गया। खाना हुआ। नानीने पूछा—"राम ! छौंके हुअे काजू कैसे थे ?"

"अ . . . काजू . . . किसने खाअे थे ?"—नानीकी बातपर रामने कहा।

माँ और नानी दोनो हँसी। "तुझे बात करते समय खानेका भी ध्यान नही रहता। पागल कही का! मैंने बच्चीमे कहकर काजू मँगवाकर पकाअे, सोचा अच्छी तरह खाअेगा। लेकिन तू तो बकासुरकी तरह निगल गया! जो मुँहमें भरा अुसकी भी याद नही तो.. ..."

"ओह! क्या अुन्हें मैंने खाया?"—रामने हँसकर कहा—"अच्छा जाने दो नानी। कल अैसे ही काजू पकाकर परोसना। हाँ! मगर परोसते समय कहना—'बेटा, ये काजू हैं!' तब मैं अुनका स्वाद कैसा है, कहूँगा!"

रातको खानेके बाद माँ-बेटा पुन. बाते करने लगे, किन्तु नानीको अुसमें कोअी रस नही आया। नानीने कहा—"राम! सारी बातें आज ही खतम कर देगा, तो कल क्या कहेगा?" फिर अुसने अपनी बेटीसे "नागू! तुझे भी क्या अकल नही है? बेचारा मद्राससे आया है। रास्तेका थका है। अुसको आराम करना चाहिअे। अुसे अच्छी तरह सुलाना छोड बातें करने बैठ गअी।"—कहकर अुसे डाँटा।

दोनो सोअे। फिर भी नानीके कानपर न जाअे अिस प्रकार गुन-गुन करते रहे। "तुझे कृष्णीके घर रहना अच्छा लगता है क्या?"—माँने पूछा।

"छोटी माँ, और मामीमें जमीन-आसमानका अन्तर है!" रामने कहा।

दोनो बाते करते थक गअे। दोनोने सोनेकी कोशिश की। मौन धारण किया, किन्तु घण्टा भर बीतनेपर भी दोनोंको नीद नहीं आअी।

"माँ!"

"हाँ बेटा!"

"नीद नहीं आअी?"

"नहीं! और आज शायद आना नही चाहती!"

"तब तो माँ चलो समुद्रपर चले! अच्छी ठण्डी-ठण्डी हवा है!"

"नही राम! माँको गुस्सा आअेगा!"

"माँको गुस्सा आअेगा! माँ तो गोर्र-गोर्र कर रही है! ताडके पत्तोंके मर्मरमें कुछ भी नही सुनाअी देगा। माँ! आज तेरा फिडल सुननेकी बडी अिच्छा हुअी है, माँ! चल!!"

मांने बेटेके पागलपनके सामने सिर झुका दिया। दोनो चुपचाप चोरकी तरह बाहर निकल पडे। पिछला टीला चढकर आगे बढे। अष्टमीका चांद अपनी टिमटिमाती चांदनीसे राह दिखाने लगा। अुसकी कच्ची चांदनी समुद्रके किनारे हाथी-दांतकी तलवारकी तरह पडी थी। नागवेणीने किनारेपर बैठकर अपने फिडलका स्वर जगाया। अुसका मन बागतोडे घोडेकी तरह अस्त-व्यस्त हो अुछल रहा था। बिना किसी अुद्देश्यके आंगनमें नाचनेवाले बछडे जैसी अुसकी हालत थी। रामने हंसकर मांके हाथसे फिडल अपने पास लेते हुअे कहा—"अितने साल होनेपर भी मेरी मांको फिडलका स्वर जमाना भी नही आता!" और फिडलके कान अैंठकर कमान तानते हुअे केवल दो ही हाथोमें अुन निर्जीव तन्तुओंसे अैसे स्वर निकाले कि दक्षिण कोडीसे अुत्तर कोडी तककी सारी जमीन थर्राने लगी! केकडेको सूंघकर "खाअूं या नही" यह विचार करनेवाले सियारकी आंखोकी तरह नागवेणीकी आंखें रामका चेहरा देखने लगी।

रामके हाथोंने समुद्रकी गर्जनाके साथ फिडलकी श्रुति लगाअी। रामके फिडलसे निकली नित्य नूतन स्वर-लहरियां हवाके नित्य-नूतन झोकोंके साथ समुद्रकी लहरियोंपर चढकर अुनके साथ नीचे अुतर, अुछलकूद करती हुअीं वातावरणमें भर गअीं। सारा वातावरण खिल गया। सुनकर मांके रोम-रोम मानो किसी अज्ञात आनन्दसे पुलकित हो गअे। आसमानमें पूरबकी ओर सुवर्ण खिला, फिर भी रामका हाथ नही रुका। अुसका हृदय अपनी अंगुलियोपर नाचता हुआ अुन निर्जीव तन्तुओसे सारे वातावरणमें ओत-प्रोत हो रहा था। सारे वातावरणमें कपनके साथ गुदगुदियां पैदा हो रही थी।

चावल कूटनेके लिअे अुठी बच्ची अपना चिर परिचित 'टुय-टुय!' सुनकर "नागवेणम्माको पागलपन लगा है क्या?" यह देखनेके लिअे अुसे 'टुय-टुय'के साथ वहां आअी और वहां अुसने मन्त्र-मुग्ध होकर बैठे माता-पुत्रको देखा। नागवेणी तो पत्थर बनी थी। राम पागल बना था। हवाके झोकोने अुसके हृदयको अुन्मत्त बना दिया था। हृदयने हाथोको अुभाडा था। वह दृश्य ही अपूर्व था! किन्तु बेचारी बच्ची! अुस महान् कलाका रस लेनेकी क्षमता अुसमें कहांसे आती। अुसने नागवेणीको सम्बोधित करते

हुअे कहा—"अम्मा ! तुम्हारे बच्चेको भी तुम्हारी तरह 'टुय-टुंय' करनेका पागलपन लगा है क्या ?"

पता नही अुसी क्षण अुसका ध्यान टूटा या रागालाप समाप्त हुआ, दोनोने आँखें खोलीं—"तू यहाँ क्यो आअी बच्ची ?"—रामने पूछा।

"तुम्हारे अिस 'टुय-टुय' में नीद किसको आअेगी ? न कोअी भजन है, न कोअी शायरी। केवल 'टुय-टुय' में कितना समय गवाअेगे। अम्मा ! मालूम होता है छोटे मालिकको भी नींद नही आती !"

अब नागवेणीको माँकी याद आअी। "राम, चलो घर चले !" अुसके मनमें आया कि राम फिडलमें अितना निपुण कब हुआ ! अुसे आश्चर्य हुआ। और "मद्रास जाकर तू अितना सीख गया यही बस है ! मगलूरम जो मै बजाती थी अुसे सुना है न !"—माँने कहा।

"मगलूरमें तू जो बजाती थी, अुसे चोरी-चोरी सुनता था, चोरी-चोरी बजाता भी था। आज भी अुसे चोरी-चोरी ही बजाता हूँ। न जाने क्यो लोगोंके सामने बजानेमें डर लगता है। आज अिस भिखारी बच्चीने मेरा रहस्य चुरा लिया !"—रामने कहा।

"ओह ! मैंने जो कहा, अुसपर छोटे मालिको गुस्सा आ गया ?"

"नही बच्ची ! यों ही कहा !"

दोनो घर गअे। नानी अभी सोअी थी। माँ-बेटे दोनो जैसे चोरी-चोरी गअे वैसे ही चुपचाप सो गअे। और जब वे अुठे तो जलती धूप दोनोको भून रही थी।

: २५ :

सुखके क्षण कैसे बीते अिसका भान ही नही होता । रामको, छुट्टीके दिन कैसे बीते अिसका पता नही लगा । मअी बीता, जून लगा, जेठकी वर्षा प्रारम्भ हुअी, तब मां-बेटेका वह सुख-स्वप्न टूटा ! रामको अब अिसी सप्ताहमें मद्रासके लिअे रवाना होना अनिवार्य था । सम्भव है अुसके कॉलेज शुरू होनमें चार दिनकी देरी हो, किन्तु जिन बच्चोको वह पढाता है, अुनका क्या होगा ? मगर वहां दूसरा लग गया तो आगे कैसे काम चलेगा ? अिसीलिअे राम जल्दी रवाना होना चाहता था । अिसी बीचमें अेक महान् योग घटित हुआ ।

अनेक सालोंके बाद, मानो युगोंके बाद भैयाका लडका राम घर आया है, यह सुनकर मन्दर्तिसे सुब्बी दौडी आअी । अपनी भाभी और अुसके लडकेको अुसने अिन दस वर्षोमें नही देखा था । कभी किसी दिन अुसने सुना था कि कोडीके घरो ताला लग गया है । अभी चार रोज पहले किसीने कहा कि अुसमें अब भाभी और अुसका लडका रहने लगे हैं । सुब्बीके ससार-सागरका भी ब ा विस्तार हो चुका था । अुसमें चढाव-अुतार भी कम नही आअे थे । अब वह कम नही, पूरे आठ बच्चोंकी मां थी । बच्चोंकी देख-भाल, घरका प्रबन्ध, अिन सब बातोंमें बेचारीको किसी कामके लिअे समय नही मिलता । बार-बार मायकेकी याद आती, किन्तु वहां था कौन ?

अपनी मांकी अन्त्येष्टि-क्रियाके समय वह आअी थी । किन्तु वह क्रिया तो ओराटाके घर हुअी । वहां वह ठीक तरह नही रह सकी थी, अिसलिअे अुसी दिन चली गअी । कुछ साल पहले लच्चा आया था, किन्तु अुसने अपनी बहनको देखनेका विचार भी नही किया । वह तो ओराटाका जो कुछ था, अुसे निकालनेके लिअे आया था । काम करके चला गया । बहनकी बात

जाननेकी भला अुसको क्या जरूरत ? आज भी कोडी आनेमें अुसके मनमें बहुत सकल्प-विकल्प चल रहे थे। भाभी बड़े घरकी लडकी है, भैयाके कारण अुसको गरीबीमें दिन काटने पड रहे है, पता नही अिन दिनो मुझे देखनेसे अुसके मनमें क्या आअे ? आखिर किसीने बातचीत नहीं की, तो बापका बनाया घर तो देख आअूंगी। अगर राम बडा हुआ है, तो अपने मातृ-कुलका खिला हुआ वश-वृक्ष देख सकूंगी, अिसी आशासे वह मन्दर्तिसे आअी। आते समय बच्चोको नही लाअी, जैसे ही वह नालेके पास आअी, राम नालेमें अुतर रहा था। अपनी जबानकी खुजलाहट मिटानेके लिअे योही सुब्बीने पूछा—"बेटा! अब अैतालके घरपर कौन रहते है।

"क्यो? मेरी मां!"

सुब्बीके पैर वहीं रुक गअे। अुसने बीच पानीमें खडे-खडे पूछा, "तू राम है क्या ? कितना बडा हो गया है रे! कहां जा रहा है ? बेटा! मैं तुझे ही देखने आअी हूं!"

बेचारा राम क्या जानता है कि वह कौन है! बचपनकी स्मृति कहांसे आती। फिर भी जो अपनेको अितने प्यारसे देखने आअी है, अुसका अनादर कैसे करे ? अिसी विचारसे कहा—"मद्रास जा रहा हूं। मां, छोटे नानाके घर जाकर वहांसे दोपहरकी मोटर पकडकर मगलूर जाना है। आप कौन हैं ?"

"तो क्या बेटा मेरा आना व्यर्थ जाअेगा ? मैं तो तेरी बुआ हूं! क्या मन्दर्तिकी बुआको भूल गया, राम!'

रामके चेहरेपर हास्य दौड़ गया। अुसका हृदय खिल अुठा। "ओह! आप सुब्बी बुआ हैं! मेरे भूलनेपर भी आप नहीं भूलीं। चलिअे!" कहकर वह अपना मद्रासका कार्यक्रम स्थगित करके बुआके साथ घर लौटा।

"बुआ, पता नही मैंने आपको कब देखा था!"

"तब जब तू पूरा बित्ता भरका भी नही था! अब तो मुझसे भी बडा हो गया है। अगर मां होती तो आकर देख जाती। भैयाने जब सबका हाथ छोडा, तो मैंने भी यहां आना छोड दिया। यहां कौन था, किसके लिअे आती! तेरी मां यहां कितने दिनसे रहती है ?"

राम रास्तेमें सब बाते करता, हँसता-हँसता हुआ अपनी बुआको घर ले आया। राम अैसे ही वापस लौट आया, यह देखकर नागवेणीको आश्चर्य हुआ, "बेटा, क्या कुछ भूल गया था?" माँने पूछा।

"बुआको!" रामने हँसकर कहा।

रामने अुस दिन अपनी बुआके मुँहसे अपने दादा और बापूकी बाते सुनी। आनन्दसे खिल अुठा, दुःखसे मुर्झा गया! दादाकी कअी बाते बार-बार सुनकर वह खिला। बुआ आते समय प्यारसे जो कटहलके पापड लाअी थी, और असके साथ बचपनके अुन पापडोकी याद भी, वह सब बाते सुनता हुआ राम कच्चे पापड ही खाने लगा। साथ-साथ अरी "बआ! आनेमें क्षण भर देर करती तो रामको बुआका दर्शन कैसे होता? और यह अमृतसे पापड कहाँ खानेको मिलते?"—कहकर हँसा।

सुब्वी रामको मन्दर्ति ले जानेका आग्रह करने लगी। रामका हृदय भी भर आया। रामकी विनय और कृतज्ञता, सुब्बी बुआका प्यार और वात्सल्य! यद्यपि समय नही था, तो भी अेक रातके लिअे मन्दर्ति जाना तै हुआ। राम अपनी बुआके साथ मन्दर्ति चला। वहाँ अुसने अपने फूफाजीको देखा, अुनके बच्चोको देखा, अुनके साथ बाते की। और दूसरे दिन "अगली बार छुट्टीमें जब आअूँगा, तो जरूर आपके यहाँ चन्द रोज रहूँगा!"—कहकर वहाँसे लौटकर फौरन मद्रासके लिअ रवाना हो गया।

अब रामके सारे रेल-प्रवासमें अुसकी आँखोंके सामने बुआ नाचती थी। अुसके पीछे-पीछे, अपने पिता लच्चाका वे कहाँ होंगे? यह विचार आता था। जब पिछली बार आया था, तब उसने सुना था कि वे विजयनगरमें हैं। उसके मनमें आता, "क्यो न उनको अेक बार देख आअूँ?"

जैसे-जैसे विचार-चक्र चल रहा था, साथ ही रेलचक्र भी चल रहे थे। दूसरे दिन वह आनदमे खेल रहा था, और तीसरे दिन अपने विद्यार्थियोको पढा रहा था।

+ + +

दूसरा साल, अिण्टरका साल था। पढाअी कडी थी। सितम्बरमें सिले-क्शनके दिन थे। पढ-पढकर आंखें लाल कर ली। आखिर परीक्षामें बैठनेका निश्चय हुआ। अगले तीन महीने कैसे बितायें। अुसने घर चिट्ठी लिखी—

"मां !

किसीसे कुछ पूछनेकी अिच्छा नहीं है। आज तो पढानेवाला भी मैं और पढनेवाला भी मैं, अैसी हालत है। परीक्षाके दिनोंमें दोनो काम कैसे हो सकते है ? अिन तीन महीनोंके तो ट्यूशनसे छुट्टी लेनी ही होगी। किन्तु अैसा किया, तो खाना कहांसे लायें ? मैं बडे सोचमें पडा हूं।"

अुसके मौसाजीको अिसका भान था। अुन्होने कहा—"राम! मार्च तक तुम ट्यूशन करना छोड दो। तुम्हें खर्चके लिअे जो लगेगा मैं दूंगा। हां अगर वह तुम्हे पसद नही है, तो आगे जब कमाने लगना तो लौटा देना।"

रामको कोअी दूसरा रास्ता नहीं दिखाअी दिया, किन्तु मौसाजीसे कर्जा लेना अच्छा नहीं लगा। वह सोच ही रहा था कि क्या किया जाय, तभी घरसे ५० रुपये आ गअे। मांने भेजे थे। रामने सोचा, यह कैसे संभव है ? मांके लिअे यह संभव नही था। शायद अुसने अपने चाचासे मांगा होगा। जैसे ही यह विचार आया अुसने मन-ही-मन कहा—"मांको मांगना पडा ! अिससे मैं मांगता तो क्या बुरा था ?"

दूसरे दिन ही अेक पत्र आया। अुसमें लिखा था।

"प्यारे बेटा !

तेरा भाग्य अच्छा है। कुछ ही दिन पहले घरकी पिछली दीवारमें खिडकी लगानेके लिअे, खोदते समय दीवारमेंसे सौ रुपअेकी अेक पोटरी मिली। यह तेरे दादाका काम है। कुछ भी हो समयपर मिले।"

रामको विश्वास नही हुआ। फिर भी रामने अपने दादाकी बात सुनी थी। अुसने सुना था— दादाकी अिस प्रकार छिपाअी रकममेंसे बापने अेक बार चुराया भी था। फिर भी दादाकी छिपाअी रकम मुझे मिलेगी, यह अुसके कल्पनाके बाहरकी बात थी।

कृष्णवेणीने भी यह पत्र पढा। अुसने कहा— "राम! कुछ भी हो। अब शान्त मनसे परीक्षाकी तैयारी कर। अब चिन्ता नहीं रही!"

पर अुसके मनमें शक था। क्या अैसा भी हो सकता है? अैसा ही है, तो घर गिरानेपर अमीर बना जा सकता है।

सच बात तो यह थी। राम हर महीने अपने खानेके बारह रुपअे कृष्णवेणीके हाथपर रखता था। कृष्णवेणी अुन्हें नागवेणीको भेज देती थी। वही कोडीसे लौट आअे थे। भेजते समय क्या कहे? नागवेणी जब अिसी विचारमें थी तो अुसको बच्चीकी कही बात याद आअी और नागवेणीने यही लिख दिया। अुसने तय किया था, जबतक राम बी० अे० नही होगा तबतक अुसको असली बात नही बतलाअेंगे।

अब राम दत्त-चित्त होकर पढने लगा। पढ़नेके जोशमें वह और सब भूल गया। दो-तीन महीनेमें परीक्षा भी खतम हो गअी। फिरसे वह ट्यूशनके पीछे लगा, किन्तु अब वह असभव-सा था। अपनी परीक्षाके बहाने अुसने विद्यार्थियोंका जो नुकसान किया था, अिससे अुनके सरक्षक नाराज थे। अुन्होने दूसरे शिक्षकको नियुक्त कर लिया था। केवल अेकने नही रखा था, अुसने रामको पुन. रख लिया। पन्द्रह दिनकी ट्यूशनके कुछ पैसे अुसके हाथमें आअे।

रामको घरसे पत्र आया। अुसमें लिखा था, घर आना। क्या वहाँ जानेकी अिच्छा नही थी, यह बात थोडे ही थी? वह तो घर जाना चाहता था, किन्तु पैसे कहाँसे आअें? आगे बी अे में पढना है। अधिक किताबोकी जरूरत होगी। अिसलिअे अुसने सोचा, छुट्टीके दिनमें अधिक काम करके कुछ कमा लूं। अुसका यही निश्चय था। बीचमें अगर हो सके, तो बापको देखनेकी भी अेक प्रकारकी अुत्सुकता थी। और माधव भी बहुत दिनोंसे अपने गाँव नही गअे थे। अुनके मनमें आया कि बीवी-बच्चोके साथ अेक बार गाँव देख आअें। रामने हँसते हुअे कहा— "आप सब गाँव जाअें, मैं यहाँ घरकी रखवाली करूँगा।"

यह सुनकर मौसीने कहा— "घरकी रखवाली करनेकी कोअी जरूरत नही। तुम भी हमारे साथ चलो! अेक आदमी अधिक होनेसे कोअी विशेष

खर्च नही बढेगा !"–किन्तु रामने निश्चय किया अिस दफा नही जाअेंगें।

कृष्णवेणी मगलूर गअी। माधवका घर अुडपीमें था। कृष्णवेणी मगलूरसे अुडपी गअी। वहाँ अुसकी माँ और जीजीको देखनेकी अिच्छा हुअी। वह अपने बच्चेको साथ लेकर कोडी गअी। माँ अपनी लडकीको देखकर नाती–नातिनियोंको देखकर बहुत खुश हुअी! नागवेणीको तो अपनी छोटी बहनको देखकर अत्यत आनन्द हुआ। आखिर अुसने "अरेरे! राम नहीं आया!"—कहकर आँसू बहाये। अपनी माँ और जीजीके सामने कृष्णवेणीने रामकी खूब प्रशसा की। हर बातपर वह 'राम अैसा है, राम वैसा है, कहकर अुसकी याद करती।—नागवेणीको लगा—"कच्ची अुम्रमें मेरा यह कष्ट अुठाना सार्थक हुआ।"

कृष्णवेणीने अेक बार जीजीसे पूछा–"जीजी! तूने फिडल सीखा था अुसका क्या हुआ?" नागवेणीने फिडल बजाया। सुनकर कृष्णवेणीने कहा–"जीजी! तू कितना अच्छा बजाती है! हमारी जया बारह सालकी हुअी। अगर कोअी फिडल सिखानेवाला हो, तो अुसकी भी सीखनेकी अिच्छा थी। वहाँ सीखनेमें अितने रुपये खर्च किये तो कैसे चलेगा? और बच्चोकी पढाअी, कपडे, दूध, घरका किराया, कितने ही खर्च हैं। अिस बार घर आनेके लिअे चार-पाँच सालसे थोडा-थोडा जमा कर रही थी।.. !"

कृष्णवेणीकी सारी बाते सुनकर नागवेणीने कहा–"क्यो? राम है न! अुसका फिडलका हाथ मुझसे दस गुना अच्छा है!" फिर पिछली बार जब वह आया था, अुस समयकी सारी-सारी बाते कह सुनाअी। कृष्णवेणीको सुनकर अत्यत आश्चर्य हुआ! अुसने कहा–"अुस चालाकने अबतक घरमें न यह बात कही न फिडल ही लाया! कभी अुसका गुनगुनाना भी नहीं सुना। पता नही ट्यूशन. ...कहकर कहाँ जाकर सीखता है!"

यह खबर माँसे बच्चोंके पास गअी। सुनकर बच्चोने कहा–"अरे चोर! हमारा भैया अितना धोखेबाज निकला! क्या भैयाको गाना आता है! जब हम पूछते, गानेको कहते, तो "मुझे नहीं आता!" कहता। अब अेक बार घर चलने दो।

रामने अपनी मअीकी छुट्टी वही मद्रासकी गर्मीमें बिताअी। वह पैसा जमा करनेके लिअे ट्यूशन ढूंढता रहा। अिस बार वह सगीतका शिक्षक

बना, तोता रटानेवाला मास्टरजी नही ! मौसाजीने अुसको आनेकी ट्रेनकी खबर दे दी थी, अिसलिअे अुस दिन सेंट्रल स्टेशनपर जाकर राम गाडीकी राह देखता हुआ खडा था। रामका मुंह देखते ही बच्चोंने शोर मचाया, "चालाक भैया ! फिडल !!"

अुस बेचारेको अिसका अर्थ नही मालूम हुआ, किन्तु रास्तेमें मौसीने रहस्य खोल दिया। घरमें आते ही आनन्दने सारा घर सिरपर अुठा लिया— "भैया, जब तक फिडल नही बजाओगे, मैं नही बोलूंगा, जा !" अुसने अपना ब्रह्मास्त्र चलाया, "भैया, फिडल नही बजाअेगा तो मैं नही खाअूंगा !" सबकी जिद्दके सामने रामकी अेक नही चली। आखिर अुसको किसीके घरमें लटकता फिडल लाकर आनन्दके सामने बजाना पडा। अुसका गाना सुनकर कृष्णवेणी चकित हो गअी। अुसने कहा—"राम ! बेटा तुझे समय मिलेगा ? मैं और किसीके लिअे नही कहती, जयाको तुझे जितना आता है, अुतना सिखा दे !"

सुनकर रामने मजाक करते हुअे कहा—"ठीक, सगीत सिखानेकी फीसमें खानेका खर्च निकल गया।"

जयाका फिडल क्लास चलने लगा। महीनेके बाद जब राम अपने खानेके पैसे मौसीको देने लगा, अुसने कहा—"ना रे ना, तूने अुस रोज क्या कहा था ?"

राम चिढा—"ना तुझे लेना ही पडेगा ! मै अब कमाता हूं !"

तब कृष्णवेणीने अुसका कान पकडकर प्यारसे कहा—"बेटा ! तेरी माँ और मुझमें क्या अन्तर है ?"

रामका मुंह मुर्झा गया। अुसको लगा, किस बुरी घडीमें मैंने वह मजाक किया ! अुसको दुख हुआ। अब कृष्णवेणी रामसे रुपये नही लेती थी, किन्तु नागवेणीको जो मासिक १२) रुपये पहले भेजती थी, वे वैसे ही भेजती रही।

अब बी अे. की पढाअी करनी थी। राम जो कुछ कमाता था अुसमें सारा खर्चा चलाना आसान नही था। वह कभी किसीसे पैसे नही मांगता था। वह यह भी जानता था, जब मैं घर लिखूंगा, तो दीवारके बिलमेंसे

पैसे नही निकलेगें। खाने-पीनेमें कोअी दिक्कत नहीं थी, किन्तु फीस, किताब आदिके लिअे वडी दिक्कत अुठानी पडती थी। फिर भी वह अपने मित्रोंके घर जाकर अुनकी किताबें लेकर पढ लिया करता। अेक-दो जगह जाकर सगीत सिखाकर भी कुछ न कुछ और कमा लेता।

दूसरे वर्ष भी मअीकी छुट्टीमें नागवेणी रामकी राह देखकर थक गअी। कभी-कभी अुसके मनमें आता था—"यह भी अुनकी तरह तो नहीं होगा!" किन्तु दिल नही मानता था। जैसा कि रामने लिखा था, अुसपर विश्वास कर अुसने लिख दिया, "अच्छा! वी० अे० करके ही घर आना!"

+ + +

मद्रासमें रामका चौथा वर्ष था। कोअी छुट्टीके दिन थे। रामके लिअे क्या छुट्टी, क्या बुट्टी। अुसके सिरपर तो वी०अे०का शनि सवार था। वस, पढना, पढना, पढना! जव तव वह अपने दो-चार मित्रोंके घरपर जाकर पढाअी करता। जो किताबें अपने पास नही थीं, अुनसे माँगकर पढता। अेक छुट्टीमें वह अपने पक्के मित्र राजमणि अैयरके पास गया। राजमणि अभी प्रकाशित सडरलेडकी 'अिडिया अिन वान्डेज' पढ रहा था। अितनी मोटी किताव देखकर रामने पूछा—"राजमणि! वह क्या है?" सुनकर वह वोला—"वावा! अिसे रातभरमें पढकर सुवह होनेतक लौटा देना है, अिसलिअे जल्दीमें हूँ।"

रामने सोचा, पाठच-पुस्तकोको छोडकर रात-दिन अेककर पढनेकी यह कौनसी पुस्तक है, देखें तो! रामकी अुत्सुकता वढी। रामने वह किताव हाथमें ली। वडी मोटी किताव थी। अेक विदेशीके द्वारा अपने देशके वारेमें लिखी पुस्तक। "अरे! जाने दो, अेक दिन मैंने अिसे पढ लिया तो अिसमें क्या विगड जाअेगा!" कहकर अुसने वह पुस्तक वगलमें दवा ली। देखकर राजमणि चौंक पडा। अुसने कहा, "अरे वावा! कृपा करके अिस कितावको तू वाहर मत ले जा! यह किताव जप्त है। जिस किसीके पास देखी जाअेगी, अुसको जेल जाना पडेगा। और मेरा और तुम्हारा वी० अे०, पता नहीं वेल्लूर हो या कडलूरमें!"

केवल अिन्कार किया जाता तो राम अुस किताबके लिअे जिद नहीं करता। जब जप्त कहा, तो अुसकी अुत्सुकताने जिदका रूप धारण कर लिया। वह जहाँ बैठा था, वही खतम करनेके विचारसे रातको चिराग बुझने तक पढता गया और किताब खतम कर बोला—"लो, अब जिसकी है अुसको दे दो।"

"कैसी है?"—राजमणिने पूछा।

"कैसी है क्या कहूँ। बाहरका अेक आदमी हमारी गुलामीके बारेमें रोता है और हमें वह गुलामी नही अखरती। पिजरेमें पडे शेरके बच्चेकी तरह हम पिजरेको ही अपना घर मान बैठे है।"

अुस दिनसे रामके मस्तिष्कमें बी० अे० के साथ भारत भी चक्कर काटने लगा। बातूनी मित्रोंके साथ अुसने पॉलिटिक्सपर बाते करना प्रारभ किया। अब वह अन्य किताबोंके साथ दैनिक "हिन्दू" का भी नियमित पाठक बन गया। अुसने अुसे 'अ' से लेकर 'ज्ञ' तक पढना प्रारम्भ किया। अिन्ही दिनोमें राष्ट्रीय वातावरण भी गरम हुआ था। अुन्नीससौ अिक्कीसमें वह बच्चा था, किन्तु अब तरुण था। अुस बचपनमें भी और बच्चोके साथ मिलकर अुसने कअी बार जो 'गांधी महाराज की जय!' का नारा लगाया था, अुसे वह भूल-सा गया था। आज अुसके तारुण्यमें देश-भक्तिका अुफान अुठा। अुसने सोचा, यद्यपि अभी मे तरुण हूँ केवल अपनी ही चिन्ता न कर अपने देशका भी विचार करना मेरा कर्तव्य है। वह समय ही अैसा ही था। अुन दिनो असख्य लोग तिरुवलिक्केणीके समुद्र किनारेपर प्रचण्ड जन-सभामें जाकर "अिन्किलाब जिन्दाबाद" के नारोसे विदेशी सरकारको हिलानेकी आशा रखते थे। राम भी देशभक्तिकी नशामें वहाँ जाने लगा। सत्यमूर्ति टी प्रकाशम् आदिके व्याख्यानोंसे रामने रौद्रावतार धारण किया।

म० गाधीजीका दाडी-मार्च प्रारम्भ हुआ। साबरमती भारतकी दिल्ली बनी। दाडी भारतका कुरुक्षेत्र बना। अेक गाधीके पीछे सैकडो, हजारों और लाखों लोग सत्याग्रहके युद्ध-क्षेत्रमें अुतरे। लोग सत्य, अहिंसा, चरखा और तकलीका मत्र जपने लगे, समुद्रका पानी लाकर नमक बनाने

लगे। राजमणि कहने लगा—"नमक-सत्याग्रहसे अब केवल अेक सप्ताहमें स्वराज्य मिल जाअेगा" अितनी जल्दी तो नही, किन्तु समग्र भारत नमकका साणिकट्ठे (कर्नाटकका सबसे बडा नमक बनानेका गाँव) बन गया, तो देशकी स्वतन्त्रता आसमानसे टपककर रहेगी। अिस विचारधाराको रामने स्वीकार किया।

आजकल वह रोज कालेजमें आते समय 'हिन्दू'का सपूर्ण पारायण करके आता। नियमित रूपसे नेताओके व्याख्यान सुनने जाता। कालेजकी छुट्टी होते ही वह खुली तौरसे नेताओंकी सभामें जाता, राजमणिकी तरह रात होनेपर लुक-छिपके नहीं। जब वह राजमणिसे मिलता, तो कहता—"राजमणि! यह कितने दुर्भाग्यकी बात है, हमारे देशको स्वतन्त्र होना चाहिअे, यह बात भी क्या चोरी चोरी सुननेकी है? सेडरलेंड जैसे विदेशीके हृदयमें जैसी वेदना है, वह हम भारतके बच्चोमें क्यो नहीं होनी चाहिअे?"

यह सुनकर राजमणिने कहा—"राम, तू स्वतन्त्र है। अपनी माँपर तेरा राज है। किन्तु मेरी तो परीक्षाकी फीस अपने बापके पाससे आती है। घरमें बीबी-बच्चे भी है। अुनके पेटपर पत्थर नही बाँध सकता।"

दूसरे ही दिन कालेजके अधिकारियोंने विद्यार्थियोको चेतावनी दी। राजनैतिक अवस्था विद्यार्थी अवस्था समाप्त होनेके बादकी चीज है, अिस वक्तकी नही। अपने कदम पर खडे होनेके बाद ही राजनैतिक आन्दोलनमें सम्मिलित होना चाहिअे। तुम्हारी पढ़ाअीके लिअे जब माँ-बाप पैसे खर्च करते हैं, तब राजनैतिक आन्दोलनमें पडना अुचित नही।"

कुछ दिनोंके बाद "जो सी-बीच (समुद्रतट) पर सभामें जाअेगा, अुसको बी अे के सिलेक्शन (बैठने) का विचार छोडना पडेगा।" कहकर नअी धमकी भी दी गअी। अुस दिनसे राजमणिने "हिन्दू" का पढ़ना छोड दिया।

किन्तु अुनसे प्रेरणा प्राप्त राम वैसा ही दृढ रहा। अिन बातोंने अुसमें और जोश भर दिया। अुसने कहना शुरू किया—"कालेजके बाहर यदि हम कुछ करें, तो अिनका क्या जाता है? हम कालेजमें पढ़ने आते हैं। कालेजको हमने अपनी आत्मा नही बेची है।"

तीन दिनके बाद अुसके प्रिय प्रोफेसरने ही अुसे बुलाकर कहा–"तुम जैसे बुद्धिमान् विद्यार्थीका अिस राजनैतिक वातावरणमें पडना देख मुझे आश्चर्य होता है। अरे! नमक पकाकर क्या कभी स्वराज्य मिल सकता है? अपना नमक अपने हाथसे बनानेवाले कअी देश आज गुलामीमें है!... पागल बनकर आजकी अिस आयु और अनुकूल परिस्थितिको खराब मत कर लो। जब तुम बडे हो जाओगे, बुद्धि पक्व हो जाअेगी, तब अगर तुम्हारा अनुभव तुम्हे अैसा करनेको कहे, तो करना। आज तो वह केवल आवेश है।"

प्रोफेसर साहबके प्रति अुसके हृदयमें बहुत आदर था। अुन्होंने जो कुछ कहा था, अुसे अिन्कार करनेकी यदि अुसमें हिम्मत नही थी तो स्वीकार करनेकी भी नही थी। आखिर अुसने "सर! मैं अिसपर विचार करूँगा!" कहकर प्रोफेसर साहबसे पिंड छुडाया। कुछ दिनोंके बाद समय पर बी अे का चुनाव (सिलेकशन) भी हुआ। राम भी राजमणिके साथ चुन लिया गया। अुसने फिलहाल राजनीतिका मुंह भी न देखनेका निश्चय कर लिया। किन्तु बडे दिनकी छुट्टियोंके आनेतक परिस्थिति बदल गअी। अब सत्याग्रह जेलखानेका सुखवास नही था, किन्तु लाठी-खानेकी समस्या थी। अेक दिन नमकका आन्दोलन देखने राम समुद्रपर गया किन्तु डरके मारे घर भाग आया। अुस दिन रातको अुसे नीद नही आअी। अुसके मस्तिष्कमें विचारोने तूफान मचा दिया—"क्या मैं अितना कायर हूँ? औरतें-बच्चे अिस स्वातन्त्र्य युद्धमें जब आगे बढ रहे है, तब मैं क्यों भाग आया? क्या पुलिसके क्रूर प्रहारके सामने मैं डर गया? मुझमें और राजमणिमें क्या अन्तर?"

दूसरे दिन अुसने स्वय सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। "कुछ भी हो आज मैं सत्याग्रह करूँगा!"— कहकर, सरकारके विरुद्ध जो द्वेष भीतर-भीतर अुबल रहा था, अुसको दबाते हुअे शान्तिमय अहिंसाके साथ नमक पकाने गया।

किसी देशभक्तने कहा— "जिन्होने पहलेसे नाम नहीं दिअे अुन्हें सत्याग्रहमें सम्मिलित नही होना चाहिअे!" फिर सत्याग्रहमें प्रवेश प्राप्त करनेकी अुम्मीदवारीमें और अेक दिन बीता। दूसरे रोज कालेज जानेके

समय कितावें नहीं नमककी मटकी अुसके हाथमें थी। पता नहीं अुसके वाद क्या हुआ। हजारों लोगोंके साथ वह भी चीखा चिल्लाया, "अिन्किलाव जिन्दावाद!" महात्मा गांधीकी जय!" अुसके वाद जव होशमें आया, तव अस्पतालमें था। सिरमें अेक सफेद पट्टी वँधी थी। जवर्दस्त दर्द हो रहा था।

दो-तीन दिन हुअे राम घर नहीं आया था, मौसी-मौसाजीके साथ वच्चे भैयाके लिअे परेशान थे। अुन दिनों वच्चे भी सत्याग्रहके अुत्साहसे अुवल रहे थे। पुलिसको देखते ही "गांधी महाराजकी जय!" कहने लगते। माधवके वच्चे भी अिसके अपवाद नहीं थे। दिनरात सत्याग्रहकी वाते चलती थी। अिससे कृष्णवेणीने कहा—"शायद सत्याग्रहमें तो नहीं गया!"

"दुत्! राम और सत्याग्रह! वह कभी नहीं जाअेगा। अवतक अुसने अैसी वाते नहीं कही!" माधवने कहा।

रामकी याद आनेपर अुसकी मेजपर देखा, तो वहां अेक कागजपर लिखा मिला। अुसपर लिखा था "विना आपकी अिजाजतके अेक गलती कर रहा हूँ! अिसलिअे क्षमा करें। मेरा मन राष्ट्रकी ओर दौड़ रहा है। वी० अे० के वहाने मातृभूमिका वंधन देखते नहीं वैठ सकता। आज मैं सत्याग्रहके लिअे जा रहा हूं। मेरे वारेमें कोअी चिन्ता नहीं करें!"

जव माधवने यह पढा, तो अुनका मन विकल हो अुठा। जिनके पास खानेके लिअे अन्न और पहननेके लिअे वस्त्र है, जिनको कलकी चिन्ता नहीं, अुन्हीं लोगोंके लिअे यह राजनीति है। अिस वेचारेको किसने यह सत्याग्रह और स्वतन्त्रताकी वीमारी लगा दी! दूसरे दिन कार्यालयसे छुट्टी लेकर अस्पतालोंमें तलाश करने लगा। जैसे जैसे सत्याग्रह तेज होता गया, अस्पताल ही जेलका दरवाजा वन गया था।

किन्तु माधवको अस्पतालमें जाकर रोगियोंकी सूची देखनेकी हिम्मत भी नहीं थी। "मैं सत्याग्रहियोंका रिश्तेदार हूँ" कहलानेका डर था। पता नहीं अिसकी मार कहांतक जाअे। अुस समय दीवार, रास्तेपरके लालटेनके खम्वे, सव सी० आअी० डी० का काम कर रहे थे। अैसी हालतमें माधवको

डरे लगे तो कोअी आश्चर्य नही । फिर भी अुन्होने वहांपर पडे लोगोको देखकर रामको ढूंढकर निकाला, और अुसके पास गअे। मौसाजीको देखकर वह धीरेसे अुठ बैठा । चोटके कारण अुसको बुखार आ रहा था । शरीर जितना गरम था, अुससे अधिक सरकारके बारेमें अुसका दिमाग गरम हुआ था । "राम ! हमसे अेक बात भी कहे बगैर चल दिया!"

'अगर आपसे कहता, तो आप कब आने देते !"

'हां ! जहां तुम्हारी जिन्दगी और मौतका सवाल है, वहां भला कैसे हम अपनी मजूरी देते ! क्या हममें हृदय नही ?"

" ... . . !!"

"--बेटा, यह सुनकर तुम्हारी मांकी क्या हालत होगी, यह भी तुमने सोचा ?"

राम चुप रहा । अुसने कोअी जवाब नहीं दिया । अिस आवेशमें अुसको अपनी मांकी याद थी या नही, यह कहना मुश्किल है । वैसे मांकी याद आअी तो भी अितनी नही कि अुसकी देशभक्तिका अुत्साह कम कर दे । अिस दर्द और आरामके दिनोमें वह विचार महत्वपूर्ण लगा । फिर भी वह चुप रहा । अुसने कुछ नही कहा ।

"बेटा ! अच्छे होनेपर घर चलोगे न !"

"देखें !"

"अगर तुम माफी मांग लोगे, तो तुम्हारी रिहाअी हो जाअेगी । अपनी परीक्षा तो दे डालो । अेक-दो महीनोंके लिअे अकेले तेरे कारण स्वराज्यका आना नहीं रुकेगा !"

"देशके साथ, मुझ जैसे व्यक्तियोके साथ, जो अन्याय अनाचार हो रहा है, अुसका आपको पता नही । मनुष्य केवल अपना पेट पालनेके लिअे न तो पैदा होता है और न जीता है !"

माधवने सोचा, अब अिससे बहस करना फिजूल है । अुन्होने सोचा, चार दिन बाद पुन अेक बार मुलाकात करेंगे, तो यह सीधे रास्तेपर आ जाअेगा । और चले गअे । चार दिनके बाद पुन अुससे मिले, तबतक रामको छह महीनेकी सजा सुनाकर वेल्लूर भेजा जा चुका था ।

सुनकर कृष्णवेणी घबरा गअी। लड़का परीक्षाकी तैयारी कर रहा है, परीक्षा होते ही घर आअेगा, अैसा सुन्दर सुख-स्वप्न देखनेवाली नागवेणीको अब क्या लिखें? अगर नागवेणीने पूछा---"तुमने अुसे कैसे जाने दिया" तो क्या जवाब देंगे? "अब तो अुसको सब लिख देना ही चाहिअे। अब बिना लिखे कैसे होगा?" यही सोचकर आखिर "रामकी कहानी अैसी हुअी!" कहकर सारा हाल जैसाका तैसा लिख दिया।

पत्र पढ़कर मानो नागवेणीके सिरपर आकाश टूट पड़ा। वह राष्ट्र-भक्तिकी कहानियाँ जानती थी, अुसने म० गांधीजीका नाम सुना था, अितना ही नहीं, अिन्ही दिनोंमें पुलिसका डर छोड़कर गाँवके धीवरोंने भी खुले आम नमक बनाया था और अब भी बनाते थे। औरोने तो प्रदर्शनके लिअे सत्याग्रह किया था, किन्तु कोडीवालोंको सत्याग्रह अन्नाग्रहका था! यह सब नागवेणीको हास्यास्पद लगता था। अैसी हालतमें रामका अिन्ही बातोंके लिअे जेल जाना अुसको बड़ा दु:खद लगा। खास करके अुसके जखमी होनेकी खबरने अुसके हृदयको और भी अुद्विग्न कर दिया। बी. अे. का अिम्तिहान खराबकर जेल जानेकी बातने अुसको बड़ा आघात पहुँचाया। आखिर अुसने अपनी माँसे कहा---"माँ, मालूम होता है, मेरे नसीबमें किसीसे सुख नहीं लिखा है। मैंने पता नहीं क्या पाप किया था, अिसीलिअे यह सब हो रहा है। अैसी हालतमें राम भी क्या सुख देगा?"

अुसका यह अत्यन्त कठोर फैसला था, किन्तु वस्तुस्थिति यही थी। वास्तविकताने अुसे यही फैसला करनेके लिअे बाध्य किया था।

यहाँ राम और अधिक देशभक्त बनकर देशभक्तिमे जलने लगा। अुन दिनों तो वेल्लूरका जेल खादीका बाजार बन गया था। जेलका अनुशासन भी नहीं था, जो बाजारमें होता है, वही धाधली थी, वही गड़बड़ी थी। वही चीखना-चिल्लाना था। अगर अिन देशभक्तोंके चीखने-चिल्लानेमे स्वराज्य मिलनेवाला होता, तो वे लोग जो रोज "गाँधी महाराजकी जय" और "अिन्कलाब जिन्दाबाद" चीखते थे, अुनसे कमसे कम दस बार स्वराज्य मिल गया होता। यहाँ अनेक गाँवोंके अनेक प्रकारके लोग थे। सब 'अिसी प्रकार जेलोंको भर दिया तो अगले साल तक ब्रिटिश सल्तनतका दिवाला निकल

जायगा।" कहते थे। बहुमतके सामने रामने भी अपना मस्तक झुका लिया था।

अिन कैदियोंसे जेलमें असंतोषकी नौबत आअी, किन्तु अुनको जो खाना मिलता था, अत्यत गरीव कुली लोगोंका भोजन अुससे अच्छा था। अिस बातसे कैदी और अुत्तेजित हुअे। बस "भूख हड़ताल" शुरू हुअी। अधिकारियोंका दिमाग जरा ठंडा हुआ। खानेकी चीजोंमें कुछ सुधार हुआ। अेक सत्याग्रही कैदी भोजनालयका अिन्चार्ज बना।

"हड़तालसे सारे विश्वको झुका सकते हैं।" कहनेवाले अेक कम्युनिस्ट युवकने यहीं कार्लमार्क्स, लेनिन और स्तालिनके सिद्धान्तोंका प्रचार प्रारम्भ कर दिया। राम बचपनसे ही गरीबीमें पला था, अिसलिअे अुसे गांधीवाद ही अच्छा लगा। वह सोचता किन्तु क्या करे? ये लोग अिस "सत्य अहिंसाको कैसे छोड़ेंगे?" कुछ लोगोंने स्वराज्य मिले तक सत्य अहिंसा सत्याग्रह अुसके बाद कम्युनिजम कहकर अपना निर्णय किया।

तरुण समाजका तर्क क्या है? आवेश। जहाँ आवेश है, अद्‌भुत कल्पना है, वहाँ युवकोंका चित्त रमता है। यही अुनका तर्क होता है, तेजसे तेज आवाज ही अुनको खींचती है। अैसी हालतमें रामके राजनैतिक विचारोंमें कैसे समानता आती?

खैर, अेकाअेक अेक दिन जेलके दरवाजे खुले। सत्याग्रहियोंको पकड़ते-पकड़ते जो थकसे गअे थे, अुन्हीं लोगोंने जेलका दरवाजा खोलकर कह दिया, "चाहे जहाँ चले जाओ। यह गांधी-अिर्विन समझौतेका परिणाम था।

रामने बेल्लूर बाजार देखा। न पहननेके दूसरे कपड़े थे, न घर आनेके लिअे जेबमें दमड़ी थी। जहाँ पकड़ा गया, वहाँ ले जाकर छोड़नेका भी ठीक प्रबन्ध नहीं था।

खैर, "सत्याग्रही" होनेके बूतेपर राम अपने अन्य कुछ मित्रोंके साथ बेल्लूरसे काटपाडी आया किन्तु आगे कहाँ? किस ओर चले? मद्रास या मंगलूर? दोनों ओरकी यात्रा बिना टिकट करनी थी। परीक्षाका तो खातमा ही हो चुका था, अब मद्रास जाकर क्या करना? जब वह जेलमें था, माँको खूब याद करता था। "पता नहीं माँ क्या कहेगी!" दिलमें अेक

अजीव किस्मका भय था। और मांको न देखे तीन साल हो चुके थे। आखिर वह मगलूरके लिअे रवाना हुआ।

ट्रेनमें भी वाग्युद्ध चलता ही था। जेलमे छूटे देशभक्त कह रहे थे—"चरखा चला चलाके लेगे स्वराज्य लेगे।" अुनका नारा था। सूतसे स्वराज्य अुनकी नजरोमें गांधी नामक आजनेय (हनुमान) लकेश्वर अिरविनसे अूपर वैठकर सधिकी वात चला रहा है। अव क्या, ब्रिटेनकी लकामें आग लगाना वाकी है। सर्वत्र कल्पना राज्यका साम्राज्य था। वडे-वडे स्वप्नोंको देख रहे थे। अुन्हीं स्वप्नोकी मालामें नअी-नअी साहित्यिक अुपमाओंका सृजन होता था। किन्तु पता नही अुस आंजनेयने रावणसे क्या कहा या आजनेय अथवा रावणका सवाद हुआ या नही, किन्तु कल मांके सामने क्या जवाव देंगे ? रामको तो यही चिन्ता थी।

आखिर राम मगलूर पहुँचा। ललिता मामीके घर न जा किसी होस्टलमें गया। वहां अिन्कार करनेपर भी कौन सुननेवाला था ? राम अव मद्राससे आया देशभक्त रामराव था। राम व्याख्याता वन गया था। अुसने अपूर्व आवेशके साथ अेक तेजस्वी व्याख्यान दे डाला। "भारतकी स्वतन्त्रता ही हमारा ध्येय है। गरीवोकी सेवा ही हमारा धर्म है।" वस व्याख्यान सुने हुअे लोगोने "गान्धी महाराजकी जय" के साथ "देशभक्त, श्री राम अेतालकी जय" भी कह डाली। रामने समझा वस हमारी भी जय हो गअी। रामके मस्तिष्कमें देशभक्तिका नशा चढा था। आसानीसे देशभक्त वननेका आनन्द मिला। गांवमें और दो व्याख्यान दे डाले और नेता वन गया।

दूसरे ही दिन सदाशिवके कानोतक "राम विजय" की वात पहुँची। वह अपने रामसे मिलने आया। राममे "राम! हमारे घर क्यो नही आअे ?" कहकर वह अुसे अपने घर ले गअे। वह रामकी सारी वातें पहले ही सुन चुके थे। अिस वार ललिता मामीने भी अुसका प्यारसे स्वागत किया। "राम! यहांसे घर जाअेगा या और कही दौरेपर जाना है ?" – मामीने पूछा। रामको मामीकी वातोंमे पुन मां की याद आअी। वहांसे राम सीधा अपने घर गया।

मावुकल आते ही वह मोटरसे अुतर पडा। वही पासमें छोटे नानाका घर था। वहाँ जानेमें अुसको लज्जाका अनुभव हुआ।—वह सीधा माँके पास चला गया। जैसे ही गाँवका दर्शन हुआ, मानो पैर मन-मन भारी होने लगे, नदी पार करनेपर तो पैरोमें जेलकी वेडी पड गअी! अुसने अेक बार अपने कपड़ोंकी ओर देखा। टोपी जेबमें रख ली। और खोअी हुअी चीज ढूंढनेवाले यात्रीकी तरह मेंडपरसे अपने घरकी ओर चला। अूपरसे रिमझिम वर्षा हो रही थी। बच्ची अपने बच्चोंके साथ धानकी क्यारीमें घास अुखाड रही थी। "अिस रिमझिम वर्षामें यह सफेद पोश बाबू कौन है?" यह सोचकर बच्चीने गर्दन अुठाअी। "कौन छोटे मालिक!"—अुसने कहा।

राम हँसा। "मालिक। तीन सालसे अपनी माँको अैसे ही छोड जाना क्या अच्छा है? बेचारीने अेक दिन भी सुख नही देखा। आप भी अपने बापकी तरह कर!" कहते हुअे अुसने अपने हृदयकी भावनाओंको व्यक्त किया।

रामको बच्चीकी बाते तीरकी तरह लगी। मद्रास जाते समय माँको दिया वचन, अुसने अब जो काम किया, अुससे पढाअी बेकार जानेकी बात अेक-अेक करके अुसकी आँखोंके सामने आअी। किन्तु बच्चीको कुछ न कुछ कहना जरूरी था—"माँ घरपर ही है न?"

अितना पूछकर वह आगे बढनाही चाहता था कि बच्चीने कहा, "जी! माँ घरपर ही है, आपकी नानीका स्वास्थ्य अच्छा नही है! उमर हो गअी है न। और कोअी बात नही"

अब रामके पैर तेज हुअे। मानो अुसको पख लग गअे और अुसका हृदय भी घरकी ओर झुका। राम आँगनमेंसे बरामदेमें गया। बरामदेमें नानी खभेके सहारे बैठी थी। अुसके फैलाअे हुअे पैरोमें सूजन आ गअी थी। रामको देखते ही अुसने कहा—"राम! तू आ गया बेटा! नागू देख तेरा बेटा राम आया! मैंने पहले ही कहा था न!"

रसोअीघरमें, गीली लकडी फूंकते-फूंकते थककर आँसू गिराते बैठी नागवेणी आँखें पोछती हुअी "माँ! क्या कहा?" कहकर बाहर आअी। राम सामने ही था, कहना क्या था?

तो हम भी सत्याग्रह करते। मैं भी नमक पकानेवाला ही था, किन्तु क्या करे पेटका सवाल जो था!"

आखिर दोनोका रास्ता अलग होनेका समय आया। तब अुन अधेड सज्जनने विदा लेते हुअे पूछा–"आज्ञा दीजिअे!" फिर बोले–"अरे! अितनी सब बातें की, किन्तु आपका शुभ-परिचय कर लेना तो भूल ही गया। आपसे यह भी नही पूछा; आप रहनेवाले कहाँके हैं?"

"मैं कोडीका हूँ!"

"कोडीका?" अुन्होंने आश्चर्य व्यक्त करते हुअे कहा–"कोडी किसके घरके?"

"राम अँताल मेरे दादा थे!"

"अत्तारी! तब तो तूने मुझे क्या समझा? अरे जो तेरी दादी थी न, वह मेरी बहन थी!... तब तू हमारी सत्याका पोता है!" कहकर वह मादप्पय्याका लड़का जनार्दन रामको पड़ुमुन्नूर ले गया। रामने लाख मिन्नतें की। नानीकी बीमारीका बहाना किया, पर सब व्यर्थ। आखिर "अगर आप कल हमारे घर आअेंगे तो मैं भी आपके यहाँ आनेको तैयार हूँ" कहकर राम अुनके साथ पड़ुमुन्नूर गया।

अपने घर जाते समय रास्तेपर जनार्दनने नागवेणीका लच्चाके ब्याहके बाद, लच्चाके नागवेणीके साथ अपने घर आनेकी कहानी कही। अुसके बाद लच्चाका खराब हो जाना, अुसका घर बेचना, अिससे अुनका और अपना सबंध ही टूट जाना आदि बातें सुनाअी। पड़ुमुन्नूरमें रामका अत्यन्त प्रेम और आदरसे स्वागत हुआ। शानभोगने घरपर जाते ही अपनी पत्नीसे "यह हमारा ही नाती है। हमारी सत्याका नाती राम अँताल!" कहकर खूब प्रशसा की। वह आज खूब खुश था।

अिसमें शक नही यहाँ अपनी दादीके मायकेमें अुसका खूब सत्कार हो रहा था, किन्तु रामका मन स्वस्थ नही था। वह सोच रहा था, नानी वहाँ तडप रही है और मैं यहाँ मौज अुडाता बैठूँ? शानभोगने अपना खाना समाप्त किया। अुसके बाद वे बोले–"हाँ बेटा! जब तुम्हारे बापू घरमें थे, तब अेक बार गया था। अुसके बाद वहाँ कदम नही रखा। किसलिअे

जाओें ? कौन है जो जाओें ? अुसने तो अपनी मांका श्राद्ध भी अपने घर न कर और किसी दूसरेके घर किया। तब तो अिच्छा रहते हुअे भी वहाँ नही जा सका। जानेको जी नही करता था। आज तेरे साथ चलता हूं।"—अुसका हाथ पकडकर कोडी जानेके लिअे अुठे।

तोन्से तक आते ही शानभोगने नाववालोको बुलाया। अुसके आते ही कहा-"बेल्ला ! चलो कोडी ले जाओ!" रामके 'ना-ना' कहनेपर भी फौरन दो कच्चे नारियल नीचे अुतारे गअे। नारियल तराशे गअे। भरे पेटके लिअे नारियलके पानीका अुपचार हुआ और वहांसे दोनो नावपर बैठकर कोडीके लिअे रवाना हुअे।

दोनो नावसे अुतरे। अैतालके आंगनमे प्रवेश किया। यह कौन आ रहे है ? यह देखनेके लिअे नागवेणीने माथेपर हाथ धरकर देखा, तो रामने पूछा—"मां बोल ये कौन है ?"

नागवेणीको अपनी किशोरावस्थाके पडुमुन्नूर प्रवासकी बात याद आओी। वह याद करने लगी। और रामने हँसकर कहा—"क्या वह... करती है। मां यह पडुमुन्नूरके है न ! बापूके मामा !! मेरी छोटी दादीके भैया और .. !" वह हँसा।

रामने नानीकी दवा और पथ्य-परहेजकी बात बताओी। और यह भी "डाक्टरने कहा है कोओी घबरानेकी बात नही है !" कहकर अुसने मेह-मानका आदर-सत्कार किया।

शानभोगने "दवाके लिअे आपको हर दूसरे दिन अुडपी जानेकी जरूरत नही। मैं अपने चपरासीको भेज दूंगा।" कहकर दवाका प्रबन्ध कर दिया।

रातका खाना खानेके बाद जनार्दन शानभोगने अपनी बहनका राम अैतालसे ब्याह होनेसे लेकर लच्चाके परदेश गमन तककी सारी बाते कह सुनाओीं। दूसरे दिन खा-पीकर वे पडुमुन्नूर चले गअे।

: २६ :

रामको अब अेक सालका वनवास था। अिस साल भला बी० अे० पास कैसे होता? अब अगस्त महीना चल रहा है। अगले साल ही कालेज जाना होगा। अबतक जो मेहनत-मजदूरी की थी, सिलेक्शन हुआ था, सब बेकार गया। अुसने सोचा, किसी न किसी तरह ये दिन घरमें ही काटना चाहिअे। नानीकी सेवा-शुश्रूषा करनी थी, माँसे दूर न जानेकी अिच्छा भी थी, साथ ही फिडलका अभ्यास करनेका विचार भी हुआ। रोज हगारकट्टेके बाजार जानेकी भी आदत बना ली थी। वहाँ किसीके घरमें 'हिन्दू' आता था। वहाँ जाकर अुसकी खबरें पढ आता था।

रोज "हिन्दू" पढता। जब कभी वहाँ समय मिलता, मौका मिलता, "हँसिया हथौडे" का तत्व-ज्ञान समझाता। हमारे देशकी गरीबी, बेकारी, और भुखमरी, हरिजनोंकी समस्या, कपडोंकी समस्या, चरखा और ग्रामोद्योग, हर बातके हर पहलूपर चर्चा होती। अुसके आयुके अेक और स्कूल मास्टर थे। अपनी पढाअी अधूरी छोडकर बैठे हुअे कुछ तरुण भी थे, यह सब रामकी चर्चा-क्लबके मेम्बर बन गअे। जिनमें सिर गरम होनेतक बहस होती। अेक दिन किसीने कहा—"गाधीजीने तो व्याख्यान देनेके लिअे नहीं कहा, कातनेके लिअे कहा है, ग्राम-सेवा करनेको कहा है, शराब-बन्दी, हरिजन-सेवाका कार्य बताया है! और हम वह सब यह छोडकर व्याख्यान देनेका काम करते हैं!"

दूसरेने कहा—"कुछ न कर केवल 'गाधी महाराजकी जय' कहनेसे क्या होगा? अिसीसे तो लडाअी ढीली पड गअी!"

रामने अपने चारो ओर देखा। अुसको अैसा लगा, किसीने अुसपर हंटर चलाया। किन्तु बहसमें वह सब बातें कहाँ आती? वहाँ केवल

दिमागकी खुरचन निकालनेका ही काम था ! आखिर रामने कहा—" अिसमें शक नही, हम वाक्शूर हैं, क्रियाशूर नही ! हम अपनी सारी ताकत बोलनेमें ही खर्च कर देते हैं। अब मैं आठ-दस महीनेके लिअे यहाँ हूँ। बोलिअे क्या किया जाय !"

"करना क्या है ? पहले काग्रेसका आफिस खोले। अुसके बाद कताअी-मडल बनाअेंगे। खादी फेरी है, मद्य-निषेधका काम है। अेक-अेक काम शुरू करे।"

बस अुसी दिन, अुसी समय, वही चरखा-सघकी स्थापना हुअी। दूसरे ही दिन काग्रेस कमेटी बनी। वहाँपर अेक खाली मकान था। अुसपर काग्रेस कमेटीका बोर्ड लटकाया गया। अुडपीसे चार-छह दर्जन तकलियाँ लाकर लोगोमें बाँट दी गअी।

अेक दिन राम हगारकट्टेसे आते समय रास्तेसे खेतोंमेंसे सूत कातता आया। यह देखकर बच्ची " मालिक ! यह क्या आप भी मछली पकडनेका जाल बुनने लगे !" कहकर हँसी।

"क्या कहा ?" कहकर रामने जो आधा सुना था वह पूरा सुनना चाहा। तब बच्चीने कहा—" सूत कातना शूद्रोंका काम है। मछली पकडनेका जाल बुननेके लिअे सूत कातना मागरेके बच्चोंका काम है..."

सुनकर राम हँसा—"अे पगली ! मैं जो करूँगा तू समझेगी कैसे ?"

नअी-नअी तकली थी। टिमटिमाती चिमनीके सामने बैठकर रातको भी कातता। यह देखकर नागवेणीने पूछा—"राम ! यह क्या है ?"

"माँ ! अब घरमें जितने कपडोंकी जरूरत होगी, अुसके लिअे यह गारटी है !"

माँ हँसी। अुसने कहा—"कुभकर्णके पेटके लिअे दमडीका दही। राम ! अिस तकलीके सूतसे जो कपडे बनेंगे, अुससे अपने घरके कपडे हो जाअें तो क्या कहना ?"

रामने तकलीका अर्थशास्त्र बतलाते हुअे कहा, "गाधीजी भी सूतसे स्वराज्य लेनेको कहते हैं !"

"पता नहीं क्या तेरा गाधी है और क्या है तेरा स्वराज्य ! तेरे दादा अिसीसे कातकर जनेअू बनाते थे। और जनेअू बनानेके लिअे भी दिन-रात अेक करनी पडती थी। दिन-रात अेक कर कातनेपर भी न अुनको स्वराज्य मिला, न अुनके लडको ही को ! आखिर जिस तकलीसे वह कातते थे, तेरे लिअे अुसका खिलौना बना दिया ! अब अुसीमे कातकर तू देशका अुद्धार करने निकला है !"

मांकी बात सुनकर रामने अुसे अेक घटेतक अुपदेश दिया। आखिर अुसने कहा– "मां ! कमसे-कम समय तो कटता है !" और हँसा।

"समयका खून करनेके लिये तेरे पास फिडल जो है !" मांने कहा।

कुछ दिन बीते चरखा-सघके सब सदस्योंने मिलकर दो पौंड सूत काता। अुसे बुननेके लिअे अुडपी दे आये। यह देखकर राम "तकली अिज मक्सेस !" (तकली ही कामवाली है।) कहकर चिल्ला अुठा। आज अुसको परमावधिका आनन्द मिला। अब अगला कार्यक्रम क्या है ? अिस-पर कांग्रेस कमेटीकी बैठकमें चर्चा होने लगी। अब हरिजन-सेवा-कार्य, मद्य-निषेध, और खादीकी फेरी ! सब अेक साथ करनेका निर्णय किया गया।

वहां अेक स्कूल मास्टर थे नागप्पाण्ण ! वे रामके पीछे-पीछे रहते थे। कहते थे "रामण्णा ! अगर यह मास्टरी न होती, तो मैं भी कांग्रेस-मेम्बर होता ! .. !

"अब क्यों मेम्बर नही होते ?"

"क्या कहूं ! हमारे बोर्डके प्रेसीडेण्टकी पहले ही से मुझपर नजर है। वह मेरे नामसे चिढता है। अैसा कुछ हुआ तो, वह पता नही मुझे कहां हेब्री, मुद्राडी, "ट्रान्सफर" कर देगा। फिर जूडी बुखारसे तिल्ली पकडकर मरना होगा।"

"तब आपसे कौनसा काम होगा !"—रामने पूछा।

"मैं आपसे ही कहता हूं। चुपचाप मद्य-निषेधके काममें आपके साथ रहूँगा !"

बस, अबसे शुक्रवारको बालूरका बाजार था, सोमवारको कोटका बाजार था। अिन दोनो बाजारोंमें कमसे कम पांच सौ पांच सौ कांग्रेस

मेम्बर बनानेका निश्चय किया गया। बाजारमें खडे रह राम और अुसके अन्य मित्रोने बडे तेजस्वी व्याख्यान दिअे। व्याख्यान देते समय भी तकलीसे सूत कातना जारी था। व्याख्यानके बाद मेम्बरशिपकी पुस्तक आगे आयी। अुसपर हस्ताक्षर करनेके लिअे हर कोअी आगे बढा। किन्तु, जब अुनको पता चला कि हस्ताक्षरके बाद चार आने देने होगे तो —

"चार आने! चार आनेमें दो गमछे आते हैं!"—किसीने कहा और किसीने कहा– 'चार आनेमें दो सेर खोपरेका तेल आअेगा।"

"अरे! दो बोतल मिट्टीका तेल मिलेगा! दो पायली चावल मिलेगा!" कहकर लोग वहाँसे खिसकने लगे।

राम भी अपना-सा मुँह लेकर केवल छह मेम्बर बनाकर घर आया।

दूसरे बाजारमें खादीकी बिक्री हुअी। खादीका भाव सुनकर लोग कहने लगे—"अरे! गाधी कपडोके दाम कम होगे अैसी आशा थी। यह तो किसीका दिवाला पिटवानेकी बात है!"

यह सुनकर राम अुद्विग्न हो गया। अुसने कहा—"तुम जो परदेशी कपडा खरीदते हो, अुसकी पाअी-पाअी देशके बाहर जाती है, देश गरीब होता है, भुखमरी बढती है। यदि यह कपडा खरीदोगे, तो अिसके लिअे दी गअी पाअी-पाअी देशमें ही रहेगी। भुखमरी मिटेगी!"

"हाँ, होगा! किन्तु हमारे बापने हमारे लिअे बडी जमीदारी नही छोड रखी है, जिसमेंसे हम अपने देशके गरीबोंकी भलाअी करे। जब दो आनमें अच्छा गमछा आता है, तब बारह आने देकर चार हाथका बोरा कौन ले?"

यह सुनकर किसीने कहा–"हाँ भाअी! यह खरीदकर कही हम ही भूखो न मर जाअें!"

खैर, दया-दाक्षिण्यके लिअे दो-चार मित्रोंके गलेमें खादीकी देश-भक्ति लटकाअी गअी। मास्टरने "कमसे कम घरमें तो पहन सकेगे।" कहकर खादीकी अेक धोती "अुधार" ली! अगले सालके अिन दिनों तक प्रतिमास अेक आना आधा आनेके हिसाबसे अुसकी वसूली चली।

तीन महीनेमें रामकी काग्रेस कमेटीकी अुपस्थिति कम होने लगी। अेक-अेक करके तकली भी लुप्त हो गअी। रामने "कोअी न आअे मैं तो आअूंगा ही।" का निर्णय किया। वह स्वय सेक्रेटरी बना। आगे बहुत दिनों तक अब क्या करे, विवेचनामें रहा। आखिर अुसने अपने गांवमें मद्य प्रतिबन्धका काम करनेका निश्चय किया। अिसके अलावा जब समय मिले तो घर-घरमें जाकर संगठन करनेका काम भी सोचा। अुसके प्रचार-कार्यका श्रीगणेश हुआ—अपनी बच्ची के घरसे। जब वह बच्चीके घर गया तब बच्चीके पतिने पूछा—"मालिक, कैसे आना हुआ ?"

अुसने गभीर होकर कहा—"मैं तुम्हारे मारीबलेके मछली पकडनेवाले लोगोको कुछ कहना चाहता हूँ। तुम अुन सबको अेक जगह अिकट्ठा करो। सभा होगी। यह देखो। शराबसे, सरकारको कितने पैसे-जाते हैं। ये सारी बाते तुम्हें जाननी चाहिअे। "

"अय्यो! अच्छी मछली जब पड जाती है अेक ही दिनमें पचास-पचास रुपयेकी शराब अुडती है!"—रामकी बात सुनकर कालूने कहा।

रामने आबकारीका अर्थशास्त्र समझाकर कहा— "अब तुमको शराब न पीनेकी कसम खानी चाहिअे।"

कालूको भी वह ठीक लगा। बच्चोने भी "मालिक! यही बात सौ-सौ दफा कहिअे।" कहकर अुसका साथ दिया। आगे कालूने कहा—"मारीबलेके लोग अैसे ही बुलानेसे नहीं आअेंगे। अगले सोमवारको कोडीके मारी बलेवालोने "अरमदेव" के सामने मैदानी नाटक करानेका निश्चय किया है। वहाँपर आप अेक अेक्चर (लेक्चर) . . दें। अुस समय आपकी बात सब सुनेगे। वहीं देवताके सामने सबको कसम खिलाअिअे। मारीबलेवालोंने तय किया, तो कोअी बडी बात नही।"

राम अपने घर आया।

सोमवार आनेमें देर नहीं लगी। अब तीन-तीन नाटक थे। पडुकेरे मणूर और कोडीके मारी बलेवालोंने अपनी-अपनी मनौतीका नाटक खेलनेका निश्चय किया था। आखिरी दिन "डबल प्रोग्राम" था। मारनकट्टे और मन्दर्तिकी मडलीमें स्पर्धा थी। रामको बचपनके मैदानी नाटककी जरा-जरा

सी याद थी। अब पुन नाटक देखनेकी अिच्छा हुअी। समय भी ठीक था। अुसी दिन अुसने हुगा्रकट्टेके मित्रोसे मिलकर विचार-विनिमय किया। राम ही अुन लोगोका नेता था। नाटकके रगस्थलपर टाँगनेके लिये बडे-बडे साअिनबोर्ड तैयार हुअे, "शराब न पी, शबरासुरका नाश करो!" "दारू पीना हराम है।" "मद्यका वध हो!" आदि। मारीवलेवालोने भी रगस्थल सजानेमें अिनके अिश्तहारोका अच्छा अुपयोग किया।

पहला खेल था मर्दतिवालोका। मर्दतिकी मडलीमें प्रख्यात विदूषक वेकप्पा रामकी सुब्वी बुआका असामी था। अिसमे रामअैतालके व्याख्यानको अुसका परम प्रोत्साहन प्राप्त था। नाटक शुरू हुआ। राम नाटक देखनेमें मग्न था। अिसी समय वेकप्पा हनुमानजीका स्वाग बनाकर आया। "देखो! देखो!! यादवकुलके पराक्रमी लोग भी शराब पीकर बरबाद हो रहे है। हे कृष्ण! अब किसी न किसीको अुनके अुद्धारके लिअे भेजो।" कहकर अुसने स्वय रामके व्याख्यानकी प्रस्तावना की। तब तीन देशभक्तोने दो घण्टे तक धुंआधार व्याख्यान दिअे। अुनकी भाषा, अुनका आवेश, अुनका बाते करनेका ढग वगैरह देखकर लोग चकित हुअे। जब राम व्याख्यान देने खडा हुआ, तब गाँवके लोगोने तालियोकी गडगडाहटसे अुसका स्वागत किया। वह अपना अस्तित्व ही भूल गया। जब अुसका व्याख्यान समाप्त हुआ, विदूषकने अुसके गलेमें फूलोंकी माला डाली और लोगोने जोर-जोरसे तालियाँ बजायी। अिस गाँवमें यह पहली बार "महात्मा गाधी महाराजकी जय!" का जयघोष हुआ था।

रामका व्याख्यान समाप्त होते ही पान चबाते कालू अुठ खडा हुआ, और रास्ता निकालते रगस्थलमें पहुँचकर बोला—"मालिकका अेच्चर सुनकर हमने भी जै कहा। किन्तु मालिकका कहना है मारीबलेवालोको शेंदी शराब छोडना चाहिअे। अुसके लिअे तुम क्या कहते हो?"

वह सवाल पूछकर ही चुप नही रहा। अुसने आगे कहा— "मैं आरम देवके सामने परतिग्या करता हूँ। आजसे अुसको नहीं छुअूंगा!"

बस अब क्या था? मारीबलेवाले चौधरी लोग अेक-अेक करके आगे आअे। अुनमें अपूर्व अुत्साह था। अुन्होंने कहा—"क्या हम सब लाश बने हैं? जब गाधीजी ही कहते हैं, तो क्या हम अुनसे बडे है?"

भराभर सौ-दो-सौ लोगोंने शराब न पीनेकी प्रतिज्ञा कर डाली।

दूसरे दिन पडुकेरेवालोंकी वारी थी। कौन किससे कम? अुन्होंने भी भराभर प्रतिज्ञा की। तीसरे दिन पीनेवालोंकी विलायत मणूर गाँवने जैसे शराब पीनेमें अपनी धाक जमाअी थी, वैसे ही शराब छोडनेकी प्रतिज्ञा करनेमें अपूर्व जोश दिखलाया। अुस दिन अतिम दिन था। अुन्होंने शराब छोडनेका नूतन अुत्साह भी अपूर्व दिखाया।

खेल खतम होनेके बाद घर जाते समय अपनी प्रतिज्ञा सार्थक करनेके लिअे काल, काड, गौली गोविन्द, वगैरह मारीवलेवालोंके मुखिया लोगोंने सिद्धू पुजारीके माडमें जो मटके बाँधे थे, अुन्हे डर्ला मार-मारकर तोड डाला। अुसी दिन शामको शराबकी दूकानमें जाकर वह जो मटके लाया था, अुन्हें समुद्रमें अुंडेल दिया। यह सब देखकर सिद्धु पुजारी घबडाया। ब्रह्मावर जाकर पुलिस चौकीमें रपट लिखवा आया।

दूसरे ही दिन लाल पगडीवाले अुस गाँवके अिर्द-गिर्दके गाँवोंमें भी पूछ-ताछ करनेका ताडव करने लगे। जहाँ देखो वहाँ कानाफूसी होने लगी। हगारकट्टेकी कांग्रेसमें जान आ गअी। दिनमें चार-चार मीटिंगें होने लगी। यह कहनेकी जरूरत नही होगी, कि अैसे समय नागण्ण मास्टर जैसे लोग अुस गाँवमें भी नही थे। किन्तु राम "मैंने अेक महान कार्य किया। अिस अिलाकेके मद्यराक्षसको मार भगाया।" अिस गौरवको अनुभव करने लगा।

अुस गाँवमें भी पुलिस चार-आठ बार आअी। जो मिला अुसको बुलाकर डाँटा। सिद्धू पुजारीको कलका डर था। बेचारेको किसीका नाम लेनेकी हिम्मत नही थी। यद्यपि नुकसान पूरा नही हुआ और न व्यापार बढा, किन्तु बिना बिके पडी हुअी शराबको ग्राहक ही मिलता। लाल पगडी-वालोंके सम्मानमें दूकानमें पडी, सड रही शराब काम आअी।

विलायतमें राअुडटेबल कान्फरेन्स होनेका निर्णय हुआ। तरुण लोगोंमें विश्वास होने लगा कि महात्माजी विलायतसे स्वराज्य तोडकर लाअेंगे, अेक बार स्वराज्य मिलते ही आगे "हसिया हथौडा हमारा आदर्श होगा" रामने तय किया। आखिर गोलमेज परिषदके नामसे राष्ट्रीय आन्दोलन गोल

हुआ। महाप्रलय करने निकले सत्याग्रही अपने-अपने घर चले। चरखे भी ताकपर रख दिये गये। प्रभात-फेरियाँ भी रुक गयी। राष्ट्रीय गाने भी भूले जाने लगे।

किन्तु रामको गाँवकी अेक घटना अनुकूल मिल गयी। जब वह गरीबोंका सरदार बनकर खडा हुआ तो कोडीमें अेक नमक काड अुठ खडा हुआ। "कोडीके किसी सकुमरकाल नामक व्यक्तिने नमक बनाकर बेचा, अिसलिअे अुसपर केस चलाया गया है।" अैसी अेक रपट हगारकट्टे कांग्रेस कमेटीमें दाखिल हुअी। दूसरे ही दिन सकुने नहीं, किन्तु तोन्सेके पुट्टु मोगवीरने नमक बनाया, पर बेचा नही। पुलिसने झूठे गवाह खडे कर अुसपर मुकदमा चलाया, अैसी खबर आअी।

यह सुनते ही राम "अभिमन्यु" बनकर "माँ! बिना तोन्से गये गत्यतर नहीं!" कहता परसा हुआ खाना छोडकर पुट्टू मोगेरके पीछे तोन्से गया। अुसने आठ-आठ आँसू बहाकर "मुझे मारा, पीटा, अैसा हुआ वैसा हुआ" कहते हुअे सारा महाभारत कह सुनाया। अब राम अुस अनाथ पुट्टूकी ढाल बना।

हँगारकट्टेके कांग्रेस-भवनमें अेक गुप्त महासभा हुअी। अुसमें न जाने क्या क्या निश्चय किया गया। किसीने कहा—"महात्मा गान्धीजीको पत्र लिखो।" किसीने कलेक्टरको लिखनेकी बात कही। पता नही कहाँ क्या हुआ! मअीमें जब राम मद्रास जानेका विचार कर रहा था, पुलिस पुट्टूको लिअे रामके घर आअी। पुट्टूने रामकी ओर अिशारा करके "मैंने अिनको अेक बोरा नमक बेचा है!"—कहा। रामको काटो तो खून नही। अुसके आश्चर्य और दु:खका अन्त नही था। पुट्टू निर्दोष है, समझकर वह पुट्टूकी सहायताके लिअे दिनरात अेक कर रहा था और पुट्टू अपने मुँहसे अपना अपराध कबूल करता हुआ अुसको भी अपने काममें शामिल कर रहा था। अिसपर पुलिसने रामको धमकाकर कहा—"हम अभी तुमपर केस चलाते है!"

तब रामने भी "मैंने जेल देखा है! और मैं यह भी जानता हूँ, कि तुम्हारी सरकार ही झूठपर खडी है।" कहकर पुलिसको और भडकाया।

अब क्या था ? आबकारी केसके साथ राजद्रोहका भी मुकद्दमा दायर होने लगा। रामके बी० अे० का क्या होगा ? खैर आखिर सारी बाते पडुमुन्नूरके शानभोगके कानोमे गअी। अुन्होंने आगपर पानी डालकर जैसे-तैसे शान्त किया। अुसके बाद शानभोगने रामके घर आकर रामको समझाते हुअे कहा– "राम ! बेटा अब तुमने हमारे गाँववालोंकी कीमत समझी ! जिसकी सहायताके लिअे तू गया था, वही तुझे फँसा रहा था ! तू पढा-लिखा है, किन्तु तेरा अनुभव कुछ भी नही। अैसे लोगोंको साथमें लेकर स्वराज्य नही मिलनेका !! कलियुगमें परोपकार जैसा पाप नहीं !"

कुछ भी हो, रामकी अुज्वल देश-भक्तिको पुट्टूकी चालाकीने झकझोर दिया। राम "अैसे लोगोकी सहायता करनेसे आत्महत्या करना अच्छा है !" कहकर चुप हो गया।

अिस घटनाके बाद रामने हंगारकट्टे कांग्रेस-कमेटीका मुँहतक नही देखा। अुसने अपनी माँसे "माँ ! मद्रास जाकर बी० अे० कर आगेके बारेमें मार्ग देखूँगा"—कहा। माँको रामके अिस पागलपनके दूर होनेकी बडी खुशी हुअी। नागवेणीने रामको "राम ! बेटा ! मद्रास जानेके पूर्व तू अेक बार अपनी बुआके पास हो आ। पता नही वह कैसी है। तूने पिछली बार कहा था--"अगली बार जब आअूँगा तो आपके घर आअूँगा, किन्तु नौ मास हो गअे तूने अुसका मुँह भी नहीं देखा !" कहकर मर्दात्ति भेजा।

जब राम वहाँ कुछ दिन रहकर लौटा तो घरमें अेक और मुसीबत खडी थी, जिसके साथ गाँवपर भी अेक बडी आफत आ पडी थी। घरकी मुसीबत नजदीकका दर्द था। अुसकी नानीने बिस्तरा पकडा था। नारायण मैया अुसे देखकर— "पता नही अबकी भाभी क्या करती हैं !" कह गअे थे। गाँवकी आफत यह थी कि गाँवके मारीबलेवालोंने पेटभर शराब पीकर बडा भारी दंगा किया था। अुस मारपीटमें कअी लोग जख्मी होकर पुलिसके पंजेमें फँसे थे। यह रामके महाराक्षसपर विजय प्राप्त करनेके केवल छह मासके अन्दर ही हुआ। अिन सब बातोंको देखकर रामका मस्तिष्क सुन्नसा हो गया।

अगले अेक-दो दिनोमें कृष्णवेणीको भी तार दिया गया। मगलूरसे सदाशिव और अुसके भाअी भी दौडे आअे। सबके लिअे माँकी सेवा ही

बडा काम हो गया था। आखिर नदी पारकर दवा लानेकी तकलीफसे बचनेकी बात कहकर अुसको अैरोडी लाया गया। राम कोडीसे अैरोडी जाकर नानीके बिस्तरेके पास बैठा। वही रोज अुडपी जाकर दवा ले आता। आखिर जैसा कि नागवेणीने कहा-"भला मौतके अूपर कौनसी दवा चलेगी!" वही हुआ। जो वह अेक बार बेहोश हुअी तो फिर होशमें नही आअी।

नानीके दिन पूरे होते ही रामने मांसे कहा—"मां, अब तू क्या करेगी। मैं मद्रास चला। तू क्या कोडीमें अकेली रहेगी। नानीके लिअे जो रुपये मिलते थे, वे अब नही मिलेंगे। अब हमारे दिन कैसे कटेंगे?"

नारायण मैयाने नागवेणीको "नागू, तू यही रह!"—कहकर कितना ही आग्रह किया, पर वह नही मानी। कृष्णवेणीने भी जीजीको मद्रास आनेका आग्रह किया। किन्तु वह कोडी गअी और राम "मां! अिस बार निश्चित ही बी अे करके आअूंगा। अुसके बाद कही नौकरी देखकर तुझे अपने साथ ले जाअूंगा।" कहकर अपनी मौसीके साथ चला गया।

जुलाअीकी गर्मीमे राम पुन तिरुवलीक्केणीके समुद्र किनारेका मेह-मान बना। अुसने पुन बी अे की पढ़ाअी शुरू की। अिस बार अुसकी पाठ्यपुस्तकोंमें परिवर्तन हुआ था, अिसलिअे परिश्रम करना पडा। साथ ही पैसेके लिअे ट्यूशन करना था। पढना और पढाना दोनों काम कठिन हो रहे थे।

आते ही वह ट्यूशन ढूंढने लगा। पहलेके परिचित चार-पांच घरोंमें कोअी काम नही मिला। अुसके संगीत-शिक्षणके जो दो-चार मकान थे अुसमेंसे कुछ दूसरेको मिले थे। अब कृष्णवेणीकी जया ही अुसकी विद्या-र्थिनी रह गअी थी। अिसमें शक नही, चौदह वर्षकी जयाने बडी तत्परतासे संगीत सीखना प्रारम्भ किया। किन्तु जैसे ही अुसने संगीत सीखना शुरु किया था, राम सत्याग्रह कर जेल चला गया था। अिसलिअे दूसरेको बुलाकर अुसकी विद्याको आगे बढाना पडा। अबकी बार रामके आते ही माधवने कहा—"राम! क्या तू बी अे की पढाअीके साथ जयाको संगीत सिखा सकेगा? अपनी पढ़ाअीमें हर्ज करके अुसको सिखानेकी जरूरत नही।"

माधवने यह स्वय कहा था, किन्तु रामको केवल अपना ही स्वार्थ देखनेकी बात पसद नही आओ। अिसके अलावा अुसको अिस साल अपने भोजनका खर्च देना भी कठिन था। अैसी हालतमें थोडासा सिखानेका काम भी छोड दे, तो कैसे चलेगा ?

रामके पुन घर आनेसे बच्चोमें अपूर्व अुत्साह था। आनन्द कहा करता "भैया ! तुम घर छोडकर चले गअे थे, सो हमारा जी नही लगता था।" और जया भी "भैया ! तुम जैसा सिखाते हो, वैसा कोअी नही सिखाता !" कह अुसको सिखानेके लिअे प्रोत्साहन देती। वह कहती—"जब तुम बजाते हो, अैसा लगता है सुनती बैठी रहूँ, जब दूसरे सिखानेवाले बजाते हैं तो मनमें आता है कब खतम होगा !"

जयाके चौदह साल पूरे हो गअे थे। वह अब किशोरावस्थासे तारुण्यमें पदार्पण कर रही थी। जब देखो तब अुसके होठोपर मधुर मुस्कान छलकती रहती थी। अुसकी निष्कपट वृत्ति और बातोने रामको अपनी ओर आकर्षित किया। वह जयाकी बातें सुनकर यह नही कह सका कि "मुझे अपना अभ्यास करना है, मैं तुम्हे नही पढा सकूँगा !" रामको अब न केवल सगीत ही सिखाना पडता, बल्कि आठवी श्रेणीकी बीजगणित-ज्यामिति भी सिखानी पडती।

जब वह गाँवसे चला था, माँने रामको पचास रुपये दिअे थे। अिससे दो-तीन मास अुसको कोअी खास कठिनाओी नही हुअी। किन्तु आगे कालेजका खर्चा कम नही हो सकता था। "अब अैरोडी नानाको लिखू या मामाको ?" यह दस बार सोचकर भी मौन रहा। किसीसे ऋण लिअे बिना बी अे पूरा पढता नही दीख रहा था। आखिर अुसने मजबूर होकर कृष्णवेणीसे कहा—"छोटी माँ ! लगता है, अिस साल बडी कठिनाअीका सामना करना पडेगा। बी० अे० होने तक क्या किया जा सकेगा।"

'हाँ बेटा ! कुछ न कुछ करेगे। तू अिसके बारेमें मत सोच। तू अपना अभ्यास करे जा !"—कृष्णवेणीने कहा। अुसी दिन रातको माधवने रामसे कहा—"राम, तू रुपयोकी चिन्ता मत कर। मैं सब प्रबन्ध कर दूँगा। जब तू आसानीसे दे सकेगा, तब दे देना। अगर नहीं दे सका, तो अुसकी भी जरूरत

नही, किन्तु पिछली दफा जैसा किया वैसा न करना, परीक्षा पूरी कर लो, तो हमें वहुत खुशी होगी ।"

सुनकर राम प्रसन्न हुआ । सगीत सिखाकर ऋण पूरा करूँगा । वाकी आगे कभी दे दूंगा । अब यो ही रुपयोका रोना रोकर पढाओी पीछे छोडनेसे क्या लाभ ? वह डटकर परिश्रम करने लगा ।

भगवानकी कृपासे अुसकी वुद्धि तीव्र थी । कल्पना शक्ति भी वैसी ही थी । बी० अे० की पढाअीमे खास कठिनाअी नही हुअी । अैमे ही अप्रैल आया अुसने अपनी पढाअी खत्म कर मुक्तिकी साँस ली । परीक्षा भी हुअी । घर जानेके दिन आअे । "अब घर चले या यही रहकर कुछ काम देखें ?" यही अुसके सामने अेक समस्या थी । कुछ भी हो, किसी तरह माँको खुश रखना ही अुसके जीवनका अेक मात्र अुद्देश्य था ।

खैर, मद्राससे चलनेके पहले जहाँ-तहाँ, अेक-दो आवेदन-पत्र भेज दिअे । मद्रासकी अुस तपती धूपमें भी कुछ आफिसोंके दरवाजे खटखटाअे, किन्तु सारे ससारको आर्थिक मन्दीने दवोच रखा था, वह क्या मद्रासको छोडनेवाली थी ? जहाँ कही जाता, अेक ही जवाव मिलता था—' नो वेकन्सी !" (जगह नही) जहाँ कहीं देखा यही वोर्ड टगा मिलता । आखिर अेक जगह पन्द्रह रुपया मासिक की नौकरी मिलनेका आश्वासन मिला । अुसने सोचा बी० अे० तक पढनेके वाद भी क्या पन्द्रह रुपयेकी नौकरी करनी पडेगी ? अितना क्या मै अपने ट्यूशनसे नहीं कमा सकूँगा ? "

"कुछ भी हो बी०अे० का परिणाम तो निकल आने दो ।"—कहकर अुसने साथ ही साथ "बुक कीपिंग" आदि सीखकर ववअी जानेका निश्चय किया । वहाँ जहाँ देखो दक्षिण कन्नड जिला भरा पडा था ! अुसने दफ्तरोंके दरवाजा खटखटाना छोड घर जाना तय किया । अुस दिन अुसने जया, आनन्द आदि घरके सब बच्चोंको साथ लेकर पूर्वी समुद्रका अंतिम दर्शन किया । किनारेपर खूब खेलता रहा । और आखिर "मै कलकी ट्रेनसे जाअूँगा" कहा । यह खबर मौसी और मौसाजीके कानपर पडेगी, यह वह जानता था । अैसी खवर घरके वडो तक पहुँचानेका यही अच्छा मार्ग था ।

था। नागवेणीके मनमें होता था "बच्ची और अुसके बच्चोंके मुँहका अन्न छीनकर मैं खाती हूँ।" अिससे वह भरपेट खाती भी नही थी। ठीक न खानेसे सूखकर लकडी हो गअी थी। जिस दिन राम घरपर आया, अुस दिन घरमें चावलका दाना भी नही था। नागवेणीको दौडकर नरसिंह मैयाके घरसे चावल माँग लाना पडा, और वह भी रामसे छिपाकर! —

अिन दिनो अुसके मनमें अेक ही विचार आता था, अब राम कुछ न कुछ कमाअेगा। रातका खाना होनेके बाद दोनों नारियलके पत्तोकी चटाअीपर बैठकर बातचीत करने लगे। रामने कहा— "माँ! यह परीक्षाका भूत तो सवार हुआ। अब कामके लिअे "भवति भिक्षां देहि" कहकर नौकरी माँग रहा हूँ। तू बता, तेरे दिन कैसे कट रहे है! मद्रासमें लाख प्रयत्न किअे, कितने ही हाथ-पैर पटकनेपर भी वहाँ अेक पैसा नही कमा सका। कमाना तो दूर रहा, मौसाजीसे १५० रु० कर्ज लेना पडा।"

लडकेकी सब बाते सुनकर नागवेणीको कोअी बात छिपानेकी जरूरत नहीं मालूम पडी। अुसने कहना प्रारम्भ किया—"अब अैरोडीसे कोअी आशा करना व्यर्थ है। जैसे ही लडके बडे हुअे बापकी गद्दी सम्भाल ली। चाचाने निरुपाय होकर कालूको जो जमीन छह मुडी खडपर दी थी, अुसकी सात मुडी कर दी। बच्चीके घरवालोने तो केवल मजबूरीसे ही कबूल किया। वह कहता है "अिस साल तो मैं जमीन ले लेता हूँ, अगले साल भी यदि अैसे ही सात मुडी चावल देना पडा, तो मैं खेत छोड दूँगा!" अिस साल अुसने अभी-अभी नही कर दी है। बोवाअीके दिन बीत रहे हैं। मनमें आता है, क्या स्वय ही खेती करने लगूँ? किन्तु सब काम अकेले मुझसे होगा? मनमें अनेक प्रकारके संकल्प-विकल्प अुठते हैं. माँने अपनी गरीबीका रामायण सुनाया। अब रामको पता चला, कि हम कितने पानीमें हैं। अुसने अनुभव किया, अगर मैं जल्दी कमाने नहीं लगूँगा, तो माँके लिअे जीना भी आसान नही होगा। बच्चीपर खण्ड बढ़ानेकी बातसे अुसका सिर झुकसा गया। अुसकी साम्यवाद और पूजीवादके विरोधकी बाते, अनुपार्जित सम्पत्तिका सिद्धान्त सब रसातलको चला गया।

बेचारे अुस दिन रातको गरीबीका दर्द रोते सोअे। अिस बार माँ-बेटेमें पिछली बारकी तरह दिल खोलकर बातें भी नही हो पाअी। जो बाते हुअी, अुनमें आमोद-प्रमोद और सुख-सतोषकी जगह दुख-दर्द ही भरा था।

दूसरे दिन सुबह अुठते ही नागवेणीने अपने बेटेसे कहा–"बेटा! कलकी चिन्ता कल! पहले आजकी चिन्ता कर! जाकर कालूसे पूछकर देख, वह अिस साल हमारी जमीन जोतेगा या हमें ही जोतना पडेगा। बच्चीसे पूछ-पूछकर मैं थक गअी। वह भी बेचारी क्या करे? घरका मालिक तो अुसका पति है!"

रामको अच्छा काम मिला। जान-बूझकर खड बढ़ाना था। जिस खेतमें वे कुछ भी काम नही करते, अुस खेतमे तीन मुडी चावल और अधिक लेना था। क्यो? अपने स्वामित्वके बदले! अगर अैसा नही करते, तो घरमें माँ और वह रहा तो माँके साथ अुसको भी भूखो मरना पडता। यह सारी शान केवल बारह रुपये वार्षिकके लिअे थी। जब तक वह मद्रासमें पढता था, प्रतिमास अुससे दूना कमाता था और आज अितने थोडेसे पैसोंके लिअे अुसको अेक गरीबपर अन्याय करना था। यह क्यो? अुसका मन रोने लगा। बचपनसे जिसने शुद्ध जीवन बिताया था, अुसके लिअे यह दुखद बात थी।

अगर वह कालूके साथ कुछ निश्चय नही करता, तो सम्भव था खेती न वह करता न कालू, अिस तरह खेत वैसा ही पडा रहता और अुडपीके महाजनको पैसा हाथसे भरना पडता, जो कि अुसके हाथमे नही था। अिसलिअे मजबूर होकर वह चुपचाप कालूके पास गया। जाकर अुसने धीरेसे कालूसे औपचारिक बातचीत चलाते हुअे पूछा–"कालू! कैसा चल रहा है?"

कालू बातसे पैर पकडकर बैठा था। अुसका अठारह सालका अेक लडका अुसके पैर मल रहा था। अुसने कहा–"मालिक, अैसे ही हूं! मौतकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ और क्या?" और अुसके बाद अुसने अपने ससारकी रामकहानी शुरू की। अुसके सामने राम क्या कहता?

अितनेमे बच्ची आअी। अुसने अपने पतिसे कहा, "तुम मालिकको अुनकी जमीनके बारेमें कुछ न कुछ निश्चित कह दो। अिस साल तुम जमीन

जोतोगे या छोड दोगे ? शायद मालिक यही पूछने आये होंगे। और तुम चुगीवालेके सामने अपना रोना रोनेका हाल कर रहे हो।"

वच्चीने अपने पतिको डाँटा। यह देखकर रामने भी—"यों ही विना वोअे खेत पडा रहेगा और हमें अुडपीके महाजनको वेकारका जुर्माना देना पडेगा, अिसलिअे आया।"—कहकर अपने आनेका कारण वताया।

यह सुनकर कालूने कहा—"मालिक! हमपर आपके अनेक अुपकार हैं। आपके घरकी सव हालत मैं जानता हूँ। मैं भी आजकी अिस हालतमें खेती कर सकूँगा, अिसका मुझे विश्वास नही। आप देख रहे हैं, मेरी हालत और घरके वच्चे भी अिस लायक नहीं। अैसी हालतमें खडका चावल वढेगा, तो कर्जा करके आपका खण्ड अदा करना पडेगा! क्या आप यह पसन्द करेंगे?"

राम अपना-सा मुँह लेकर घर चला। आते ही अपनी माँसे कहा—"माँ! तीन मुट्ठी चावलमे भला हमारा जीवन कैसे चलेगा? और अगर वह जमीन नही जोते, तो हमारे पास अिस साल खेती करनेका क्या साधन है? तूने जो वात कही, वह सुनकर अैरोडीसे कुछ लेने-माँगनेकी हिम्मत ही नहीं पडती। जाने दो, जमीन वच्चीको ही दे दें! और पुराने खड पर ही दे दें!"

नागवेणीका भी यही विचार था। आखिर अुन्होने गरीवीकी वीमारी अपने लिअे रख ली।

राम घर आयेगा, अिस विचारसे नागवेणीने नरसिंह मैयाके घरसे थोडासा चावल ला रखा था। अुसके आने तक अुसमेंसे रोजका आधा पाव भी नही निकाला था। अव रोज पावभर चावल निकालकर गंजी पकाने लगी। नमक-मिर्च तो घरमें ही था। नमक सत्याग्रह वह अपने लाभके लिअे कवसे करती आअी थी। वच्चीसे अुसने पूरवके गाँवसे खटाअी मँगवा रखी थी। छह महीनेसे अधिक हो गया अुसने गुडका मुँह नही देखा था।

राम मद्रासमें कृष्णवेणीके घर सुरस भोजन करनेका आदी था। घरका यह सुदामा-भोजन अुसके गलेसे नीचे नहीं अुतरता था। हाँ, वेल्लूर जेलमें जो परीक्षा दी थी, यह अिस साल काम आअी। किन्तु, अपनी माँका फटे

कपड़ोमें घूमना अुसको अच्छा नही लगा। चार दिनके बाद अुसने मद्राससे लाअे फिडलके तार जब मांको दिअे, तो अुसने कहा—"बेटा! अिसकी जगह तू साडी ले आता, तो कितना अच्छा होता! फिडलके तार टूटे छह माससे अधिक हो गया, किन्तु जहाँ खानेको नही वहाँ सगीत कैसा!" यह सुनकर "बेटा मांका मान भी नही रख सकता!" यह सोच अुसका हृदय रोने लगा।

अिस बार राम जो घर आया तो घरसे बाहर नही गया। केवल रातके समय फिडलका "टुय-टुय" सुनकर बच्ची समझती थी कि मालिक घरपर हैं। रामको और कही नही तो समुद्रपर जानेकी अिच्छा होती। किन्तु मांके साथ जानेकी अिच्छा थी, और दिनको बाहर जाते समय पहनने लायक कपडे अुसकी मांके पास नहीं थे। अैसी हालतमें वह दिनभर घरमें ही बैठा रहता। रात होनेपर मांको साथ लेकर समुद्रपर जाता, वहाँ घूमकर वापस चला आता।

वैशाख मासकी गर्मी, शान्त समुद्र, निष्कलक आकाश, यह सब देखकर राम कहता—"हमारे यहाँका समुद्र कभी अितना अुदास नही होता था।" तो माँ जवाब देती—"अिस साल वर्षा ऋतु देरसे शुरू होगी!" दोनोंमें किसीको अधिक बोलनेकी अिच्छा नही होती। जो अधिक कुछ बातचीत हुअी तो यही कि कभी-कभी राम कहता—"माँ! बापू कहाँ हैं, अिसका भी कुछ पता है? अेक बार देखनेको जी करता है!"

"देखकर कौनसा भाग्य खुलनेवाला है?"—माँ कहती।

मांका यह अुत्तर सुनकर रामकी अिच्छा भी विलीन हो जाती। दोनों देरतक बैठकर लौट आते। गर्मीमें वैसे ही बरामदेपर पडकर करवटें बदलते रहते!

रोज मांके साथ ही साथ, रसोअीघर, भडारघर, गोठ, स्नानघर, सर्वत्र आने-जानेवाले रामको घरमें, कितना चावल है यह जाननेमें देर नही लगी। अुसने वह चावल खत्म होनेसे पहले ही अपना भावी कार्य तय करनेका विचार किया।

अेक दिन रामने अेकाअेक मांसे पूछा—"माँ, तूने अेक बार दीवारके बिलमेंसे रुपये मिले, लिखा था न! वह किस दीवारका बिल था? बुआ

भी कहा करती थी,दादा दीवारमें विल बनाकर अुसमें रुपये रखा करते थे।गरीबी के जिस अकालमें अुसी विलमेंसे कुछ निकल आनेका सपना देख रहा हूँ।"

नागवेणी हँसी। अुसने कहा—"वेटा! कृष्णवेणीको जो रुपये तू देता था, वही यहाँ आ जाते थे। अुसने कहा था, रामको यह मालूम नही होना चाहिअे। अिसीलिअे अैसा लिखा था।"

यह सुनकर राम हँस पडा, साथ ही निराश भी हुआ। दूसरे ही क्षण अुसने कहा—"माँ! छोटी माँ और ललिता मामीमें कितना अन्तर है! अुन्होने कभी किसी वातमें मेरे और अपने वच्चोंमें कोअी भेदभाव नही किया। जब मैं यहाँके लिये निकला तो अुन्होने वार-वार आग्रह करके कहा था, जीजीसे अेक वार यहाँ आनेको कहो!"

"वेटा! अुसको भगवानने ही अैसी वुद्धि दी है। अगर सब अेकसे हों, तो भला ससार कैसे चले?"

"माँ! मेरा नौकरी ढूँढनेका काम आसानीसे हो जायगा, अैसा नही लगता। आखिर सगीतके पाठ पढाकर भी मासिक दस-पन्द्रह रुपये कमा सकूँगा, किन्तु जब तक मैं कोअी रास्ता नही पकडूँ, तब तक क्या तू यही रह सकेगी? मैं रहकर क्या कर सकूँगा? अिस गाँवमें मैं क्या कमा सकूँगा?"

"वेटा, यहाँ कुछ भी नही है!"

"अिसलिअे कहता हूँ, तू छोटी माँके पास जाकर चार दिन रहे, तो मैं निश्चित हो कुछ हाथ-पैर मारूँ! अुनको भी खुशी होगी।"

"हाँ वेटा! यह अच्छा है। किन्तु जब तक तू कुछ कमा कर मुझे अपने पास न ले जाय, तब तक यह जगह छोडनेकी अिच्छा नही।"—नागवेणीने कहा। माँकी वात सुनकर राम पुन गूँगा बन गया।

दूसरे दिन यों ही समय काटनेके लिअे नरसिंह भैयाके घर गया। नरसिंह भैया अुम्रमें रामसे काफी वडा था। अुनको अपना घर, जमीन, मान-मर्यादा, यहाँ और बेंगलूरकी आमदनी सब ठीक थी। अुन्होंने रामको देखते ही प्रेम और आदरसे अुसको वुलाकर सम्मान किया। अुसके वाद "वेटा! आजकल क्या करता है? कहाँ है?" आदि कुशल-समाचार जाननेके वाद अुन्होंने हँसकर कहा—"राम, हमने सुना है कि फिडल अच्छी वजाते हो। तो क्या हम जो अपने ही घरके लोग हैं, अुन्हे नहीं सुनाओगे?"

"क्यो नही ? किन्तु अुसमें सुनने जैसा कुछ है ही नही !" रामने नम्रतापूर्वक कहा।

"अब गांवमें कितने दिन तक रहोगे ? क्या करनेका विचार है?"—नरसिंह मैयाने पूछा। रामने भी कोअी बात नही छिपाअी। अुसने आकाशकी ओर हाथ अुठाया।

"मनमें अेक बात आअी है, अुसे कहता हूँ। पता नही तुम क्या समझोगे ? तुम तो पढे-लिखे आदमी ठहरे। अगर बुरा न मानो, तो कहूँ। अुसपर सोचकर देखो !" अिस प्रकार प्रस्तावना कर आखिर नरसिंहमैयाने कहा—"बेंगलूरमें मेरे भाअीका अेक होटल है। वहाँ मेरा भाअी जनार्दन रहता है। अुस होटलमें बडे-बडे लोग आते-जाते रहते हैं। जनार्दनका कहना है, कोअी अंग्रेजी जाननेवाला मैनेजर होता, तो अच्छा होता। तुम तो अपने ही हो। अगर तुम कबूल करो, तो वहाँ रहनेका खर्च देकर मासिक तीस रुपये मिल जाअेंगे। अगर तुम अिसे अपनी मान-मर्यादाके विरुद्ध समझो, तो मुझे कुछ नही कहना। अगर ठीक समझो, तो मुझे भी खुशी होगी !"

राम सोचमें पड गया। यह विचार अुसके लिअे नया था। अुसके लिअे कुछ न कुछ काम करना अत्यावश्यक था। किन्तु "क्या होटलमें नौकरी करे .. ।" अिसका कोअी निर्णय नही कर पाया।

अुस दिन रातको रामको वही खानेका न्योता मिला। रातको रामका फिडल भी बजा। नरसिंहमैया चार गांवका पानी पिअे हुअे थे। अुन्होने दुनिया देखी थी। बंगलूर और मैसूर जैसे शहरोमें रहे थे। फिर भी रामका फिडल-वादन अुनको अच्छा लगा। अुन्होने कहा—"राम ! तुम्हारा हाथ अच्छा सधा है। जबतक यहाँ गांवमें हो, हमारी लक्ष्मीको थोड़ा संगीत सिखा दो तो अच्छा होगा। हम कुछ न कुछ देंगे। तुम्हारी माँकी आजकी हालतमें कुछ सहायता हो जाअेगी।"

यद्यपि नरसिंहमैयाकी बातोमें रामको बडप्पनकी गंध आयी, फिर भी अैतालके पोतेके प्रति जो प्यार था, वह अनुभव हुअे बिना नही रहा। अगर अुनमें पुराना कुलद्वेष रहा होता तो क्या माँको वहाँ चावल थोडे ही अुधार मिल सकते थे ?

रामको बी अे का परिणाम निकलने तक प्रतीक्षा करना आवश्यक था। तब तक गांवमें अपने संगीतका व्यापार करनेका निश्चय कर लक्ष्मीको संगीत सिखाना शुरू किया। माँका दिल भी कुछ हलकासा हुआ।

: २७ :

नरसिंह मैयाकी लडकी लक्ष्मी सगीत सीखने लगी थी। रामको भी अपने बी०अे०का परिणाम जानने तक कोअी न कोअी काम चाहिअे ही था। तबतक सब कुछ अनिश्चितसा था। अिससे वह अिस कामके लिअे राजी हो गया था। किन्तु अुसकी शिष्या कोकिलकंठी नही, गर्दभकंठी थी। परिणाम-स्वरूप अुसकी गानेमें न कोअी रुचि थी, न आशा ही। अिन सब बातोंको अुसके पितासे कहनेकी रामकी हिम्मत नही पडती थी। कहनेसे अुसकी पढाअी खतम हो जाती और रामको मिलनेवाले पाँच-सात रुपअे बन्द हो जाते।

महीने भरमें वह अिस अुभय-सकटसे मुक्त हुआ। अुसका बी० अे० का परिणाम निकला। अपनी कल्पनाके अनुसार वह पहली श्रेणीमें अुत्तीर्ण भी हुआ। मद्रासके मौसाजीने अुसको प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद और शुभकामना लिख भेजी। अुसके लिअे नौकरी ढूँढनेका प्रयत्न करनेकी बात भी लिखी। रामने अेक दिन अपनी माँसे "कुछ भी हो माँ, मैं यहाँ अपनी विद्यासे पेट नही भर सकूँगा। कही-न-कही बाहर जाना ही होगा। अैसे समय तू अकेली कैसे रहेगी? मुझे जैसे ही नौकरी मिली, हम दोनों अिकट्ठा रह सकेंगे।" कहकर दिनभर खूब सोचता रहा। अुसके सामने "आगे क्या?" की समस्या भूतकी तरह खडी डरा रही थी। अिन्ही दिनों नरसिंह मैयाने अुसे सगीत-शिक्षकके पाँच रुपअे अुसके हाथपर रखे। अुस समय अुसको भी बडी खुशी हुअी। अुसी दिन अुसने अपनी माँको नअी साडी ला दी। अुसने कहा—"माँ! कल शामको समुद्रपर घूमने चलेंगे!"

नागवेणीने अुसके सामने वे सब बातें कही, जो नरसिंह मैयाने कही थीं। अुसने कअी बार वेही बातें अुससे कही थीं। आज भी अुसने कहा—"राम! अुन्होने हमारे घर काम है, बेंगलूर जाओ! यही कहा न!"

सुनकर रामका मुँह सूख गया। अुसको अब क्या करना चाहिअे? सामने दूसरा रास्ता भी नही दीखता था। मद्रासमे जो जूतियाँ घिसाअी की, अुसका अनुभव अत्यंत निराशाजनक था। अिस गरीबीमें माँके दिलको जलानेकी अिच्छा कैसी होती? क्या होटलमें नौकरी करे? अिसके अलावा अुसने अपनी बुआके मुँहसे अपने दादा और शीनमैयाजीके बीच झगडा चला था, अुसका सारा महाभारत सुन लिया था। होटलकी कमाअीके प्रति दादाको कितना तिरस्कार था, यह भी वह जानता था। अुसको वह हीन अुद्योग-सा नही लगता था, किन्तु दादाका जिस कुलके साथ आखिरतक द्वेष रहा, अुसके घरमें नौकरी करना अुसको अच्छा नहीं लगता था।

अिसके साथ ही अुसमें लाभ भी क्या था? मासिक बीस रुपअे मिल सकते थे। अुससे आजकी समस्या हल हो सकती थी, किन्तु कलकी समस्या तो ज्यों की त्यो रहनेवाली थी। अुसमें तरक्कीके लिअे गुन्जाअिश नही थी। फिर भी जब आँखोके सामने चारों ओर घोर अंधेरा हो तब दूर टिमटिमानेवाले चिरागकी तरह वे बीस रुपअे ही आशाकी किरण थे। और बेंगलूरमें रहनेपर मद्रास भी नजदीक था। बेंगलूर भी बडा शहर था। दोनों जगहोंमें कोअी-न-कोअी नौकरी मिलनेकी संभावना भी थी। अिन्हीं विचारोंमें अुसने वह रात करवटें बदलते बिताअी।

दूसरे दिन शामको अुसने अपनी माँसे कहा—"माँ चल! कितने दिन हुअे तू शामको समुद्रपर नही गअी।"—कहकर माँको साथ ले वह समुद्रकी ओर गया। माँ-बेटेने धीरे-धीरे रेतीला टीला चढकर समुद्र किनारेपर पैर रखा। राम रास्तेपर छोटे बच्चोकी तरह पैरसे धूल अुडाता हुआ, हवासे अुडाअी धूलके वात-चक्र देखता चला। माँने कुछ नही कहा। लडका क्या कहेगा? अुसके मनमें क्या है? अिस प्रकारके तडपनेवाले जीवनका अंत कब होगा? यही विचार अुसके सामने नृत्य कर रहे थे। दूर समुद्रमें अुठकर गिरनेवाली तरंगें दीखती थीं। अेक तरंग दूसरेको गिरातीथी, दूसरी तीसरेको निगलती थीं।

समुद्र पास था। अुस रोज सूर्य अेक हलकेसे बादलमें फँसनेसे हतप्रभ होकर मानो अपना अस्तित्व भी खो चुका था। आकाशमें बादल थे, किन्तु घने नहीं थे। आकाश वर्णहीन था। शायद हवाके द्वारा बादलोंके अुडाये जानेसे अैसा था। कबकी नीचे अुतरी सूर्यकी किरणोंको बादल आकाशके अूपर तक लेकर फैल रहे थे। आकाश लाल हुआ, नारंगी हुआ, बैंगनी हुआ, और आखिर बिना किसी सौंदर्यके कालासा पड गया। राम अपने पैर जमाकर बैठ गया। माँ अपने लडकेके पास समुद्रके किनारेकी ओर मुंह करके बैठी थी। राम वहीं पडी सीप अुठाकर रेतीमें न जाने क्या-क्या लिख रहा था। अुसकी बचपनकी वह चेष्टा पुन अुसकी अँगुलियोंको नचाती थी। नागवेणी अपना मुंह झुकाअे दूर जानेवाले जहाजका पाल देख रही थी। दोनों मौन थे। आखिर माँने अिस लम्बे समयके मौनको भग करते हुअे कहा, "अिस बदरगाहपर जहाज, मचवा आना सब बन्द हो गया है। हिसाबसे अिन चार-छह दिनोंमें वर्षाका प्रारम्भ हो जाना चाहिअे। अिस बार धानकी क्यारियोंको पर्याप्त पानी नहीं मिला। कम-से-कम अब भी ठीक वर्षा होती तो अच्छा।"

"हाँ......"

"पता नही अिस साल व्यापार भी कम होगा क्या? वैसे तो दिन-ब-दिन हमारे हंगारकट्टेका व्यापार कम होता जा रहा है और अिस नदी-मुखसे जानेवाले जहाज, मचवे आदि भी कम होते जा रहे हैं।"

"आँ... क्या . कहा?" माँकी बात सुनकर अब राम अपनी चित्र-समाधिसे जगा।"

माँने पुन. अुसी बातको दुहराया। तब अुसने कहा—"हाँ, होगा। यहाँ बन्दरगाहपर भी बखारोंके दरवाजे बन्द ही दीखते हैं। कहते हैं, हमारे दादाके जमानेमें अिस बन्दरगाहपर खूब व्यापार था।"

"अुतनी दूरकी क्यों! जब हम अपने बचपनमें मगलूरसे घर आते थे, तो हगारकट्टेके बन्दरगाहपर खडे जहाज और नावे गिननेमें घण्टों लग जाते थे!"

"अब अुतने जहाज नहीं दीखते। हाँ, कभी-कभी पांच-सात जहाज आते हैं।"

"वह जाने दो, बेटा ! हमें नरसिंह भैयाको कोअी अुत्तर देना चाहिअे ना ! अुसके लिअे क्या सोचा ?"

"हाँ, माँ ! मुझे तो तुरत दूसरा रास्ता नही दिखाअी देता। किन्तु बीस रुपयोंसे क्या बनेगा ? अगर तुम भी चलोगी, तो किसी तरह दिन काट सकूँगा।"

"बेटा ! पहले तू अकेला जाकर कुछ रोज वहाँ रहकर देख ! शायद तुझे दूसरी नौकरी भी मिल सके। अुसके बाद तू चाहे, तो मैं आ जाअूँगी !"

"तू चाहे तो अिसका मतलब माँ ! क्या माँ मुझे नही चाहिअे ?"

"अैसा नही बेटा ! बिना तेरे मैं कसे रहती हूँ, यह केवल मैं जानती हूँ, दूसरा भगवान जानता है। किन्तु जिसे कभी देखा नही, जहाँ गअे नही, अैसी जगह दोनोका साथ जाना ठीक नही ? कही वह काम तुझे अच्छा नही लगा, तो कितना कष्ट होगा ?"

"हाँ, यह सब ठीक है, फिर भी बुलाना चाहो कहा तो........ "

"राम ! यहाँके कष्टोंके जाननेपर भी, तू जानता है, तेरे दादा मरते समय यह घर बनवाकर मरे ! मरते समय मैं ही अुनके सामने थी। अुनके मनकी अभिलाषा कैसी थी, वह सब मैं जानती हूँ। जब अुसे छोड जानेकी बात सामने आती है, तो दिल रोता है। अैसा लगता है, हमारा दुर्दैव कैसा है ! ..फिर भी आखिर भगवानकी वही अिच्छा है, तो कौन क्या कर सकता है ?"

माँकी बात सुनकर रामने कहा-"माँ ! अिन सब बातोंके लिअे भगवान क्या करेगा ?"

"हाँ ! हर बातके लिअे अुसको कोसनेसे क्या होगा ? किन्तु वह सब अपने हाथकी बात भी नहीं है।" दोनो अिस प्रकार बातें कर ही रहे थे कि खूब हवा चलने लगी। किनारेपरसे रेती अुडकर अुनकी आँख-नाकमें जाने लगी। आकाशमें बादल जमने लगे। नागवेणीने कहा—"पता नही, बेटा ! यह हवा किस आँधी-पानीकी खबर ला रही है। चलो, घर चले। मालूम होता है आजसे वर्षा प्रारम्भ हो रही है !"

दोनो जल्दी-जल्दी घरकी ओर चले। यद्यपि रात अधिक नही हुअी थी, तो भी अन्धेरा बहुत था। नारियलके पेड महुअर सुननेवाले नागकी तरह डुल रहे थे। आँख खोलकर अुस रेतीले टीलेपर चढ़ना अुनके लिअे असम्भवसा था। जैसे-तैसे दौडकर घरमें आ घुसे। आंधीके पीछे बिजली चमकी। बस, बादल गरजे, वर्षा और आंधीने अन्धेरेको कँपा दिया। घरमें पैर रखते ही नागवेणी "अरेरे! जहाजवाले पता नही बीच समुद्रमें क्या करते होंगे? पता नहीं बेचारोंको कहाँ जाना था, अगर हँगारकट्टे पहुँचते तो अच्छा था।"—कहकर अनजान जहाजवालोंकी फिकर करने लगी।

अिसके बाद बहुत देरतक दोनो अैसे आंधी-तूफानमें होनेवाले आघात, जहाजोंका डूबना, नदीमुखमें होनेवाला मछलियोंका भयंकर तांडव, अुनके लिअे आनेवाली मुसीबत, आदि पर बातें करते रहे।

रातभर नागवेणीको बार-बार आज देखे अुस अकेले जहाजका ही विचार आता रहा। रातभर वर्षा होती रही, हवा भी नहीं रुकी, और सोनेवालोंको भी नींद नही आअी। मध्यरात्रिमें नागवेणी अुठी। और "राम! गोठमें जाकर देखती हूँ गंगा-तुंगा सोअी हैं या नहीं, पिछली बार गोठपर नअी घास भी नही डाली थी। शायद अिस साल टपकता हो।"—कहकर हवामें चिराग नही टिकेगा, अिस विचारसे चमकनेवाली बिजलीके प्रकाशमें ही बाहर निकल पडी। "मैं भी आता हूँ माँ!" कहकर राम भी अुसके पीछे चला। आँगनमेंसे गोठ तक पहुँचनेमें दोनों आधे भीग गअे। वहाँपर क्षणिक चमकनेवाली बिजलीके प्रकाशमें क्या देखते हैं कि गोठका छप्पर भिखारीके कपडोंकी तरह सब फटा हुआ है। 'वर्षा सब बाहर और पानी सब अन्दर" वाला किस्सा था! गाय-बछडे सब भीगते काँपते खडे थे। नागवेणीकी आहट पाते ही, मानो दयाकी भीख माँग रहे हों, अुन्होंने "अम्बा!' किया। "जाने दो! कल सवेरे गोबर अुठा लेंगे!" कहकर नागवेणीने अुन्हे लाकर घरके बरामदेमें बाँधा। नागवेणीने गायकी रस्सी पकडी और रामने बछियाँ की। अुसके बाद भीगे हुअे माँ-बेटे अपना तन-बदन पोछकर, ओढनेके लिअे पर्याप्त कपडे न होनेके कारण काँपते हुअे सो गअे।

किन्तु नागवेणी गोठका ही विचार कर रही थी। अुसने कहा—"बेटा, अिस साल अगर गोठ नही छाअी गअी तो वह जमीन खराब हो जायेगी। किन्तु छानेके लिअे घास कहांसे आयेगी? घास खेती करनेपर ही तो मिलेगी?"

"मां! सूराके घर क्या घास नहीं होगी? अुनसे अुधार ले लेंगे? क्या अुधार नही देंगे?"

'अिस साल खड नहीं बढाअेंगे, शायद अिसलिअे दें! किन्तु आजकी वर्षा ही वर्षा-ऋतुका "श्रीगणेश" हो, तो कैसे छवाया जाअेगा?"

बची हुअी रात नीदमें किसी तरह कटी। मां बेटेके अुठनेपर भी गगा तुगा नही अुठीं। अुनको वहांसे खोलकर गोठमें बांधनेकी हालत भी नहीं थी। रातकी अुस वर्षासे गांवभर पानी ही पानी था। तलावके मेंढक जोर-शोरसे वरुण-सूक्त कह रहे थे और वर्षा भी वैसे ही जारी थी। नागवेणीकी कल्पनानुसार अुसी रोज वर्षाऋतुने प्रवेश किया।

अब नागवेणीकी अुत्सुकता बढ गअी थी। वह दिनरात अपनी गोठकी बात सोचने लगी। घरके नारियलके सोगोको बुनकर चटाअी बनाने लगी। फिर भी घास बिलकुल सड गअी थी। अुसको अुतारकर नअी घास डलवानी थी। नागवेणीको चिन्ता थी कि कही दीवार न गिर जाय, क्योंकि वर्षा रुकती हो नही थी। अैन वक्तपर कौन काम करने आअेगा? सूरके लडके कालूने तो बिछौना पकड़ लिया था। वात रोगके कारण अुससे कुछ भी नही बनता था। अुसके लडके खेत जोतनेका काम करते थे। बच्चीने पांच सौ गांठ घास लाकर आंगनमें डाल दी थी। किन्तु वह भींगकर गीली हो रही थी। अिस हालतमें राम ही अूपर चढ़ा। अुसने वर्षामें ही अपने ज्ञानके अनुसार नारियलके सोगोकी चटाअियां बांधीं। नागवेणीने घासकी गांठें अूपर फेंकीं। रामने अुन्हें छा दिया! छतका रूप भी देखने लायक था! फिर भी रूप-रगसे क्या होता है? पानी अन्दर न आया तो ठीक कहकर दोनोने सन्तोषकी सांस ली।

नागवेणीने नरसिंह भैयाके घर जाकर रामके लिअे बन्ध किया। बेंगलूर जानेके लिअे भी रुपये चाहिअे थे। अिसके लिअे पेशगी मिली।

बेंगलूरमें भाओीको लिखकर आवश्यक प्रवन्ध किया गया। चार-आठ दिन होते ही रामने मांके चरण छुओ। नागवेणी अुसका माथा चूमकर आशीर्वाद देते हुओ रो पडी। रामने बार-बार आग्रहके साथ कहा—"मां! तुझे जो कुछ खर्चाके लिओ पैसे लगेंगे, प्रतिमास अुन्हे यही नरसिंह मैयासे ले लेना। वे मेरे वेतनमेंसे वहां काट लेंगे। अगर तू यहां भूखो रहेगी तो मेरे सिरकी सौगंध!" और मांसे आंसुओंसे भरी आंखोसे विदा ले वर्षामें भीगते हुओ गांव छोडा। अुसकी नन्हीसी बिस्तरिया मोटरपर चढनेतक भीगकर चूने लगी थी।

अब पुन नागवेणीने अेकान्त राग आलापना शुरू किया। रोज वह रामके पत्रकी राह देखती। जिस दिन राम बेंगलूर पहुँचा अुसी दिन अुसने पत्र लिखा। अुसमें लिखा था—"मै सुखपूर्वक यहां आ पहुँचा। खुश हूँ!"

अिसके बाद अनेक दिन तक अुसके पत्रोमें अपने बारेमें केवल क्षेम समाचारके साथ अपनी मांके कुशल समाचार जाननेकी अुत्सुकता रहती। वैसे ही प्रश्न रहते। वह भी अपने लडकेको सब कुछ लिख देती। बेंगलूर पहुँचते ही पहले पत्रमें अुसने "मां,तुझे यहां बुला लेनेके दिन जल्दी आवे"कहकर भगवानसे प्रार्थना की थी, किन्तु आगे किसी पत्रमें अैसा नही लिखा था। कुछ दिनके बाद अुसने लिखा, "मां! तुमने नरसिंह मैयासे अेक मुडी चावल लिया, यह सुनकर बडी खुशी हुओी। किन्तु नगद रकम क्यो नही ली। यहां मेरा खाना-पीना होटलमें ही होता है। अुसके लिओ कोओी कष्ट नही। केवल तेरे पत्रके टिकटके लिओ थोडेसे पैसे लगते हैं। दूसरा कोओी खर्च नही है। यदि सम्भव हुआ तो, मौसाजीसे अुधार लिओ रुपयोको वापस करनेका प्रयत्न करता हूँ!" अुसके मनमें था कि जबतक यह कर्जा अदा नहीं होता, तब तक जीवन बितानेका कोओी अर्थ नही।

किन्तु जैसे-जैसे बेंगलूरका अनुभव बढता गया, मांको बेंगलूरमें लाकर अलग रहनेका अुत्साह मंद पडता गया। अुसके पत्रोमें यह बात नही दिखाओी पडती थी, किन्तु अुसका मन वैसे ही सोचा करता था। वह सोचता था, मासिक अठारह-बीस रुपयोमे क्या होगा? नागवेणी तो अपने प्रत्येक पत्रमें लडकेका समाचार जानना चाहती थी। प्रत्येक पत्रमें "तू कब आओगा?

वहाँ कैसे है ?" अैसे ही प्रश्न पूछा करती, किन्तु जानेकी अिच्छा-आकांक्षा अुसने कभी नही दिखलाअी ।

आखिर छह महीनेके वाद रामने अेक पत्रमें लिखा—"माँ, तुझे वुलाकर साथ रह दिन वितानेकी तीव्र अिच्छा है । वह समय कव आअेगा, अिसीकी प्रतीक्षामें दिन विता रहा हूँ । किन्तु तेरे आनेपर भी यहाँकी नरक-यातना नही छूटेगी । गरीवी यहाँपर भी हमारा पीछा करेगी । और घरमें हम कितनी देर साथ रह सकेंगे ? सुवह पाँच वजेसे होटलकी कुर्सीपर जाकर वैठता हूँ, तो वारह वजेतक वही वैठा रहना पडता है । वारह वजे खाना खानेके वाद आधा-अेक घण्टा विश्राम ले पुन होटलमें गया, तो रातको ग्यारह वजे ही कुर्सी छोडना पडती है । अुसके वाद जाकर सो जाना । अैसी हालतमें तेरे साथ होनेपर भी क्या वैठकर तुझसे वोलनेके लिअे समय मिलेगा ? तव गाँवका सुखद वातावरण और अपना घर छोडकर यहाँ किसी कोनेमें आ पडनेसे क्या मिलेगा ? मैं ही सालमें अेकाध वार आकर तेरे पास आठ-दस दिन रह जाया करूँगा । यही अच्छा लगता है ।"

और अेक वार नअी नौकरीके अपने प्रयासके वारेमें लिखा था—"यहाँ आनेसे अनेक लोगोंका परिचय तो हुआ । होटलमें आनेवाले अनेक वडे-वडे लोगोंके साथ अच्छे सम्वन्ध हो गअे हैं । अेक-दो आदमियोंसे अत्यन्त निकट संवध स्थापित होनेसे नौकरीके वारेमे भी पूछा । सव जवानी आशा-भरोसा देते हैं, अपने प्रभावकी गौरव-गाथा सुनाते हैं, किन्तु काम कोअी नही वनता । मैंने भी यहाँ कम प्रयत्न नहीं किया । जहाँ कही कोअी जगह खाली है सुना कि अर्जी लिखनेका काम करता हूँ, किन्तु डाकके टिकट पैसे खर्च कर डालनेके अलावा कोअी लाभ नही हुआ । हर जगहपर सिफारिश चाहिअे । वसीलेके विना काम नही चलता और भला हम जैसोंको सिरपर अुठाकर गद्दीपर वैठनेवाले कहाँ है ? मद्राससे भी निराशाजनक पत्र आते हैं । अिस सालके आखिरमें मद्रासका कर्जा वेबाक़ हो जाअेगा । अुस वोझेके सिरपरसे अुतरते ही अेक वार वम्वअी जाकर प्रयत्न करना चाहता हूँ । वडा शहर है । वहाँ हमारे यहाँके लोग भी वहुत हैं । वहाँ वेतन भी अच्छा मिलता है ।

और अेक रोजकी कहानीको पत्रमें लिखा था । सुवह अुठकर वैठा हूँ । अेक वार कुर्सी चिपकी तो, रुपये गिनना और विल काटना ही दिन भरका

काम है। दो-दो घण्टे बाद जनार्दन भैया आकर रुपयोंके नोट अुठाकर दूसरी सदूकचीमे रखते है। मुझे आअे छह मास हो गअे अब भी अुनका रुपया गिननेका ढग और मुझे देखनेका ढग आदि देखकर अैसा लगता है, मानो अिन्होने चोरके हाथमें चाबीका गुच्छा थमा दिया है। अैसी हालतमें पता नहीं, अिन्होंने मुझे यहाँ क्यो बिठाया। मुझे अैसा लगता है अिनमेंसे किसीको अग्रेजी नही आती, और सामने अेक बी० अे० तक पढे-लिखे सज्जनने अपना होटल खोल दिया है। अनेक विद्यार्थी और बाबू लोग वहीं आते है। वे अुनसे अंग्रेजीमें बोलते हैं अिससे अुस होटलका गौरव बढ़ गया है अिसीलिअे अिन्होंने अपने होटलका गौरव बढानेके लिअे मुझे यहाँ बिठा दिया है, किन्तु विश्वास कहाँसे आअे? आखिर पैसोकी बात है न?

यह विचार आनेपर तो अैसा लगता है मुझे यहाँ अेक चोरकी तरह बैठना पडता है। सो क्यो? अुनके बीस रुपयोके लिअे। और भी अेक मजाककी बात बताता हूँ। बीस रुपये भी प्रतिमास ठीक हिसाबसे नही मिलते। रोज हिसाब देखकर जो खोटे और घिसे पैसे आते हैं, वे मेरे नाम लिखकर मेरे वेतनमें काट लिअे जाते है। हमारे ग्राहक भी कुछ कम नही। शामके समय बडी भीड रहती है। अैसे समय दस आँखें हों तो भी ग्राहक अपनी चालाकीसे अैसे सिक्के डाल ही जाते हं। अुस समय तो गिनकर पैसे लेना भी मुश्किल होता है।

वैसे अेक-दो जगह सगीतकी ट्यूशन ढूंढनेकी बहुत कोशिश की वह भी बेकार। हमारे यहाँ आनेवालोमें अेक-दो सगीतज्ञ भी हैं। अुनके मुंहसे अेक भी अच्छी बात सुननेमें नहीं आती। तेरे गुरुजीने तुझे क्या कहा था? अिसके अलावा भी यहाँ सीखनेवालोंसे सिखानेवाले ही अधिक हैं, तब भला मेरी दाल क्या गलेगी?

रामको अेक ही बातकी खुशी थी, और वह थी, मांको अब खाने-कपडेकी तगी नहीं है। अिस वर्षके आखिर तक रामने बाकीके सौ रुपये अपने मौसाजीको भेज दिअे। रुपये मिलते ही अुन्होंने डाँटकर अेक पत्र लिखा। अुसमें लिखा था—"तुम्हे पैसे देनेकी क्या अुतावली पडी है? हमने कब तुमसे मांगा था? अैसी हालतमें भी तुमने पैसे भेज दिअे, तो क्या तुमने मुझे सूद-

सौंप देंगे ।
लोग मारवाडी समझ रखा है या पठान ! किसीने तुमपर अवि ा होगा कि
किया, अिसलिअे क्या तुमने मुझे भी अैसा ही समझोगे ?" े लिखनेको

मौसाजीने खूब डांट-फटकार वताअी थी । रामको भी रही ।"
हुआ । अुसने मौसाजीको रिझानेके लिअे "घर जाते समय आपके ी वादा
दिन रहकर जाअूँगा !" आदि चिकनी-चुपडी चार वाते लिखी थी ।
डाकसे ही आनदका अेक लवा पत्र आया था । "हमें भूल गया राम मैय।

गरमीके दिन आअे । रामको होटलका काम विश्राम लेनेको लगा । अुसको यह काम अब अच्छा नही लगता था । अुसने गांव जानेवके सोची, किन्तु गांव जानेके लिअे रुपअे चाहिअे । विना अुसके गांव कैसे जाअेगा ? और जाकर गांवमें बैठा तो अेक महीनेका वेतन भी नही मिलेगा फिर अिसी चक्कीमें आकर पिसना पडेगा । और मांको यहाँ बुलाना भी ठीक नही लगता था । अुसने और अेक साल यहाँ रहनेके बाद नौकरी ढूंढनेके लिअे दो-अेक महीने बम्बअीमें जाना ही अुचित समझा ।

अिस बीचमें भला मां बेटेको देखनेकी अिच्छा कैसे रोक सकती ? अुसने "राम ! छुट्टी लेकर अेक बार गरमीमें घर आजा ! नही तो रुपअे-पैसेके विचारमें ही वाल सफेद हो जाअेंगे । जैसा नसीवमें है वैसा होगा !" वगैरह लिखकर अेक पत्र भेजा ।

अुसी सप्ताहमें अुसने अेक दूसरा पत्र लिखा । अुसमें लिखा था, "नरसिंह मैया पूछते है, अिस साल गरमीमें तुम्हारा लडका क्या करेगा ? अुन्होने कहा है, अगर गर्मीके दिनोमें वह यहाँ आअे, तो मुझे कोअी आपत्ति नही है ।"

नरसिंह मैयाने अपने भाअीको भी लिख दिया— 'अपने खर्चसे अुसे गांव भेज देना !"

यह देखकर रामको आश्चर्य हुआ । अुसने सोचा—"मेरी अीमानदारी देखकर, अुन सवने मुझे यह रियायत दी होगी । अुनको भी देखनेकी अिच्छा हो गअी होगी ।" यह सोचकर अुसको खुशी हुअी । साथ-साथ वेतन भी बीसका पच्चीस हो गया था । किन्तु अुसे सोलह घटेकी जगह बारह घटे काम करना पडता तो अधिक अच्छा लगता । आखिर होटलवालोने रामको गांव जानेके लिअे गिनकर बारह रुपअे दिअे और "अिससे अधिक

काम है। द हारे हिसावमें देंगे !" भी कहा । रामने अुस मासका वेतन न सदूकचीमे । था, न खर्च किया था। वह अुसके पास ही था । अिसलिअे ढग और ले कर वह घरको चला।

हाथमें चक्रके चलते ही होटलके मालिकका पत्र भी चला । नरसिंह भैयाने मुझे यह से कहा-"जनार्दनका पत्र आअे दो चार दिन हो गअे, किन्तु राम आती, यहाँ नही पहुँचा !"

खोल राम बेंगलूरसे सीधे गाँव नही आया। वह वहाँसे मद्रासके लिअे रवाना वोल था था। अपने कृतज्ञता और वात्सल्य प्रदर्शनसे अुसने माधवके घरको हो न्न किया। पुन अेक वार दो-चार रोज नौकरीके लिअे जूतियाँ चटकाअी और बेंगलूरसे चलनेके सप्ताह भर बाद घर पहुँचा। आँगनमेंसे ही "माँ !" कहकर चिल्लाते हुअे बच्चेकी तरह माँसे जा लिपटा।

रातको खानेके बाद जूठन अुठानेके लिअे वही आगे आया। बर्तन-सर्तन अेक कोनेमें पटककर "माँ ! बर्तन-सर्तन धोनेका काम कल ! सब कल !" छोटे बच्चेकी तरह "माँ ! देख यह चाँदनी। मं बेंगलूरसे आया हूं, अिसलिअे यह चाँदनी भी आअी है। चल मेरे साथ समुद्रपर ! वहाँ बैठकर खूब पेटभर बोलेंगे। हाँ, साथ ही फिडल भी ले चलेंगे !" कहते हुअे आग्रह करने लगा।

दोनों, हलके-हलके अुछलनेवाले हृदयसे चाँदनीमें चमकनेवाले अुस रेतीले सफेद टीलेपर आ खडे हुअे। हवा तेज नहीं थी, कि तु वातावरण शीतल था। नागवेणीने कहा-"यही रेतीमें बैठें, समुद्रतक नहीं जाअेंगे !"

राम भी अच्छा कहकर वही रुका। नागवेणी झट वही बैठ गअी। वह भी अपनी माँके पास बैठकर बोला—"आज खूब थक गअी है क्या ?"

अुसके बाद यहाँ-वहाँकी कुछ बाते हो लेनेके पश्चात् नागवेणीने अेक नया ही प्रसग छोडते हुअे कहा—"देख बेटा ! मं कुछ नही जानती। पता नही तू क्या समझेगा..... अुन्होंने जो बात कही मैं तो वही कहती हूं ! अेक दिन नरसिंह भैयाने मुझे अपने घरपर बुलाकर कहा—अुनके मनमें अपनी लक्ष्मीसे तेरा व्याह करनेकी है। वे कहते हैं पडोसका सम्बन्ध है, अेक दूसरेको अच्छी तरह जानते हैं। अिसके अलावा अुन्होंने यह भी कहा

हमारे तीन-चार होटल हैं। अुनमेंसे अेककी मालिकी रामको सौंप देंगे। अगर वह चाहे तो नफेका आधा हमें दें। अुसे अैसा नही समझना होगा कि मैं अुनके घर नौकरी कर रहा हूँ। अुन्होने सारी बाते कहकर तुझे लिखनेको कहा था। किन्तु तेरे आनेके बाद ही सब कहना अच्छा समझ मैं चुप रही।"

सुनकर राम हँस पडा। अुसने पूछा--"माँ! तुमने तो कोअी वादा नही किया न!"

"नही।"

"अिस विषयमें तेरी क्या राय है?"

"अगर तुझे वह लडकी पसद है, तो मुझे आपत्ति नही। गाँवके स्कूलमें थोडासा पढी है। आज नही तो कल तेरा व्याह करना ही है। और भला हम जैसे गरीबोको कौन लडकी देगा? किन्तु व्याह करनेवाला तू है न! तेरी अिच्छा, तेरी खुशी समझनेके पहले मैंने कोअी जवाब देना अच्छा नहीं समझा।"

"माँ! लडकीकी बात रहने दो। किन्तु क्या अुनके होटल, और साझीदारी, अिन सब बातोंके लिअे मैं व्याह करूँ? कल हमारी लडकीके कारण ही वह बडा हुआ!" यह सुननेकी भी नौबत आअेगी। रही होटलकी मालिकीकी बात। अुससे जिनके नसीबमें है, अुनको कुछ मिलेगा, किन्तु अेक मिनिट फुरसत न देनवाले अुसके कामसे मैं अुकता गया हूँ। वहाँ जानेके बाद मैंने दो-तीन बार भी हाथमें फिडल नही पकडा।"

रामकी बात सुनकर माँने कहा--"तो जाने दे! तू तो अुस लडकीको पढाता ही था। अुसके बारेमें तेरी क्या राय है? वैसे रूप तो साधारण ही है।"

अुसके पास न तो कोअी विशेष बुद्धि है न समझ, न कोअी अुसमें खास गुण है, न किसी प्रकारका सस्कार। अुसकी कोअी बाते जो अुसने अपने बडोसे कही थीं, मैंने सुनी है। नित्य नअे गहने और नअे कपडोंके लिअे मरती रहती है। अुन्होंने भी अुस लडकीके अूपर सेरो गहने लाद रखे हैं। दर्जनो साडियाँ भर रखी हैं! हम सपनेमें भी अुसकी अिस प्रकारकी माँगको बर्दाश्त नही कर सकते। और अगर कही अुसके मनके किसी कोनेमें "हम बडे और ये गरीब हैं का भाव रहा, तो अुसका न मेरे प्रति कोअी आदर-भाव होगा न तेरे प्रति!"

"वेटा ! तेरी वात सही है। किन्तु क्या तू व्याह ही नही करना चाहता ? अगर और कोअी अच्छा रिश्ता आया तव ?......"

"माँ ! तू भी पागल है ! जव हम दोनो अपने खाने-कपडेका प्रवन्ध कर लेंगे, तव कही तीसरे प्राणीका वोझ अुठानेका विचार करेंगे। जिसको मासिक वीस रुपये कमानेके लिअे सोलह घण्टे काम करना पडता है, अुसका व्याह क्यो ? अैसे व्याहसे सुख मिलेगा ?"

दोनोने यह विषय वही छोड दिया। रामने माँसे फिडल वजानेका आग्रह किया। माँने धीरेसे फिडल अुठाकर पुराना राग गाया। कुछ भी करे, फिडलके तार तो वजानेवालेके हृदयकी वेदना-यातनाओका रोना रोते थे। प्रत्येक गाना वजाकर ठडी आह भरना ही नागवेणीको क्या काम था। अुसके जीवनमें सर्वव्यापी अुदासीने अक्षय-वृक्षकी तरह जीवनके हर पहलूमें अपनी जड जमाअी थी।

दोनोंने वहाँ वाते कीं, वजाया, गाया, आखिर जव झपकियाँ आने लगीं, तो घरपर आकर सो गअे। दूसरे ही दिन रामने पूछा—"माँ! पिछले साल मैंने जो गोठ छवाया था, वह रहा या वैसे ही अुड गया !"

"तेरी छवाअी ! वह जैसे-तैसे करके रही, किन्तु अिस साल तो पूरी छत ही अुखाडनी पडेगी। घास, मडल और वाँस सारा नया ही लगाना होगा। कम-से-कम दस-पन्द्रह रुपयोंका खर्च है। दस-पन्द्रह रुपयोका खर्चा देखकर दिल धक-धक करता है। क्या करें ? खर्च किअे विना हो नही सकता ?"

माँसे यह सारी वाते सुनकर रामने पूछा—"आजकल हमारी गगा कितना दूध देती है ?"

"गगा-तुगा दोनो सूख गयी हैं। यद्यपि आज दूध नहीं देतीं, किन्तु दो महीनेमें दोनो दूध देने लग जाअेगी। किन्तु दूध पीनेके लिअे तव तू कहाँ रहेगा ? मनमें आता है, दोनोमेंसे अेकको वेच डालें तो अच्छा होगा!"

दोपहरका खाना हो जानेके वाद नागवेणी मैयाके घर गअी। वहाँ जाकर लम्वी-चौडी प्रस्तावनाके वाद "नहीं !" न कहते हुअे अुसने "राम अभी व्याहका विचार नहीं रखता !" कहा और नरसिंह मैयासे अुसके

हितोपदेश सुनाते हुअे बोला—"आपको पता नही लच्चा क्यों खराब हुआ ? मैंने सुना है, ठीक अुम्रमें व्याह नही करनेमे अुसकी यह हालत हुअी। अब क्या रामकी अुम्र नही हुअी है ? मुझे लगता है, अिसकी भी आयु बाअीस-तेअीस सालकी हो गअी होगी। बच्चे नही जानते, यही व्याहकी अुम्र है। अब व्याह नही करेगा, तो कब करेगा ? जब लडके बढकर अधेड हो जाते है, तब मांगनेपर भी कोअी लडकी नही देता। मुझे भी क्यो फिकर है ? हमारी लक्ष्मीकी अुम्र भी बहुत नही। भगवानकी कृपासे घरका भी अच्छा नाम है। लडकीपर सोना भी खूब है। कही न कही रिश्ता तो हो ही जाअेगा, किन्तु आपको अपने लडकेका और असको भी अपना हित देखना चाहिअे।"

नागवेणी अुदास भावमे घर आअी। घरपर आते ही अुसने रामको सारी बातें बताअी। अुसके बाद रामने भी दो-चार बार अपने मालिकके दर्शन किअे। अुस समय लक्ष्मीने भी अपने पसेरी भर गहने पहनकर रामके सामने अुनका प्रदर्शन किया। अिससे अधिक कुछ भी नही हुआ।

रामके गांव आअे पद्रह दिन बीत चुके थे। अब सप्ताह भरमें बेंगलूर जाना था। अब वह अुसीपर विचार करने लगा। अिसी बीचमें अुसने गोठका काम कर डाला। मांके लिअे आवश्यक कपडे भी बनवा दिअे। जल्दी-जल्दी ही अेक दिन अपनी बुआके घर हो आया। अेक रातके लिअे पडुमुन्नूर शानभागके घर भी हो आया। शानभागने काम-धामकी बात पूछनेकी जगह—"राम ! हमें अपने व्याहका पायस कब खिलाओगे ?" ही पूछा।

रामने भी हँसकर कहा—"हम अब रोज ही पायस खाते हैं। व्याह करनेके बाद घरमें आनेवाली अुस बेचारीको पायस खिलाना ही बाकी रहा!"

"अिसका अर्थ ?"

"आंसुओंका पायस !!"

शानभाग भी हँसे—"क्या राम तुम्हें अच्छी नौकरी मिलनेका कोअी चान्स नही ? बी० अे० तक पढनेके बाद भी आखिर नरसिहमैयाके होटलमें ही काम करना पडा !"

और साथ-ही-साथ दशहरेके प्रदर्शनका मोह तो था ही, वहाँ हो आया। अेक वार वह चित्रकला-विभागमें भी चलते-चलते हो आया था। अब अुसे और अेक वार देखने गया। अुस रोज सुबहसे शाम तक पागलकी तरह वही घूमता रहा। अेक-दो सुन्दर चित्र देखकर अुसको अपने बचपनके चित्र-राज्यके सपने याद आने लगे। अुसके मनमें आया, क्यों न मैं चित्रकला सीखूं? बचपनमें घरकी दीवारसे लेकर समुद्रके किनारे तक लिखे अपने अनेक चित्र अुसके सामने घूमने लगे। प्रदर्शनमें रखे चित्रोंमें अेक भी समुद्रका चित्र नहीं था। अुसके मनमें आया––"अगर मैंने चित्रकला सीखी होती, तो मैं समुद्रका चित्र खींचता। किसीने समुद्रका चित्र क्यों नहीं खींचा?"

अुस दिन रातको वह वही चित्र-राज्यका सपना देखता रहा। दूसरे दिन वह होटलके मैनेजरके साथ घूमने निकला। होटलके मैनेजरको घोड़ोंके रेसकी सनक थी। वह रामको भी "रेस-कोर्स देखेंगे!" कहकर वहाँ ले गया। अच्छा घोड़ोंका दौड़ना देख ले, अिसी विचारसे अबतक न देखे अेक नअे खेलको देखने वह घुड़दौड़के मैदानमें गया। किन्तु टिकटके लिअे पैसा खर्च कर घुड़दौड़ देखनेकी अुसकी अिच्छा नहीं थी। बाहर हरियालीसे पूर्ण सुन्दर टीलेपर चढ़कर अुसने रेस देखा। अुस घुड़दौड़ने यद्यपि अुसके मनपर कोअी प्रभाव नहीं डाला, फिर भी लोगोंकी वह भीड़, मोटरोंकी दौड़-धूप, देखनेवालोंका अुत्साह आदिने अुसके मनको अवश्य प्रभावित किया।

घुड़दौड़ खतम हुअी। होटलका मैनेजर बाहर आया। अुसने दस रुपअे खोअे थे, अिसलिअे मुंह लटकाअे धीरे-धीरे जिन्दा लाश-सा बाहर निकला। राम अुसीकी राह देख रहा था। अुसके साथ दूसरा अेक बूढ़ा-सा मनुष्य था। रामका अुस बूढ़े आदमीसे परिचय नहीं था और न अुस बूढ़ेका राममे। बाहर आते ही मैनेजर साहबने अुस बूढ़ेसे पूछा––"पता है यह कौन है?" साथ-साथ अुसने रामसे भी "राम! अिनको जानते हो? यह तो तुम्हारे गाँवके ही हैं!"

"मुझे अपने गाँवका ही ठीक-ठीक पता नहीं। मैं भी तो गाँवके बाहर ही पला हूँ!"––रामने कहा।

"अरे! यह तो तुम्हारे टोले-मुहल्लेके ही हैं!"

फिर भी राम मूक रहा। वह कुछ भी नही समझ सका।

तब अुसने अुस बूढ़ेके साथ पहेली बुझाना शुरू किया। "आप भी अिन्हें नही जानते ? आप तो बडे हैं। आपने अिन्हे देखा होगा!"

अैसा लगा वह जान-बूझकर कुछ-न-कुछ छिपा रहा हैं। अुसने कहा—"राम! अेक जमानेमें अिनका "ग्रेट दर्बार रेस्टोरां" नामसे बडा भारी होटल चलता था। अुन दिनोमें मै भी वही काम करता था।"

रामको गाँवके बडोकी कही हुअी कुछ बाते याद आ गअी। अुसने अेक बार अुस वृद्ध पुरुषका चेहरा देखा। "ओह! ये तो हमारे मालिकके छोटे भैया हैं! ओराटा भैया ना!"

"हाँ ठीक है!"

"ये कौन हैं ?" वह बूढा भला अितना पूछे बिना कैसे रहता ? अुसने पूछा-- और मैनेजर साहबने सिर हिलाकर कहा--"वह आपके मित्रके लडके है! राम अैतालके पोते!"

यह सुनकर अुसे आश्चर्य हुआ, और "हमारे लच्चाने अिनको बडा होनेपर देखा भी नही होगा"--ओराटाने कहा।

तब मैनेजरने कहा--"राम! तुम्हारे पिताजी अिन्हींके घरमें रहते हैं। वे वातके कारण महीनेमें वीस दिन बिस्तरेपर पडे रहते है। अिसलिअे बाहर घूमने नही जाते। क्या तुम जाकर अुनको देख नही आओगे ?"

अब रामको पता चला कि मेरे बापका अज्ञातवास अिसी नगरीमें चल रहा है। अुसको बापको देखनेका स्मरण भी नही था। अिसलिअे देख लेना चाहिअेका विचार मनमें आया। अेकदम "जाअूँगा।" न कहकर अुसने कहा--"कल सुबह देखेंगे।"

"क्या तुम अब बाजार नहीं चलोगे ?"

"नही, यही थोडी देर बैठूंगा।"--मैनेजरके सवालका रामने जवाब दिया। मैनेजर केशव, ओरटाके साथ चला गया।

राम, ओराटाको अपनी आँखोंसे ओझल होने तक देखता रहा। अुसने अपनी बुआ और मांसे ओराटाका पूरा अितिहास सुन रखा था। अुनके परम

मित्र अपने पिताका भी पूरा अितिहास वह जानता था। किन्तु अुसके मनमें अेक ही विचार घूम रहा था—"देखनेके लिअे चले या नही। अगर मैं गया और माँको पता चल गया, तो वह क्या सोचेगी?" यही अुसके लिअे बड़ा प्रश्न था। कितने ही समय तक वह घासके तिनकोंको नाखूनसे तोड़ते, दाँतोंमें चबाते वहीं बैठा रहा। मनमें आ रहा था—"कुछ भी हो बापको देखना चाहिअे? कहते हैं, पाँच वर्षकी अुम्रमें अेक बार देखा था, किन्तु मुझे अुनका कुछ भी स्मरण नहीं। अब अेक बार और क्यों न देख लूँ?"

शामको देर करके वह अपने होटलमें गया। मैनेजरको रात दस बजे तक वहाँ बैठना अनिवार्य था। अुसने कहा—"होटल बन्द करके चलेंगे।"

"तब तक तो वे सो जाअेंगे!"

"अुनके लिअे तो रात और दिनमें कोअी खास अंतर नहीं!"—मैनेजरने जवाब दिया।

यह सुनकर रामके मनमें फिर अेक बार महा मंथन प्रारम्भ हुआ। न अुससे वहाँ बैठा रहा जा सकता था, न अुठा जा सकता था।

: २८ :

मैसूरके श्रीराम पेठके अेक कोनेमे अेक छोटा-सा मकान था। अुसकी छत बडी नीची थी। घरके अन्दरसे अेक मोमवत्तीका प्रकाश टिमटिमा था। शहर भरमें बिजली आअी थी, किन्तु यहांके निवासियोने अुसे अपने मुहल्लेसे दूर रखा था। घरमें केवल दो प्राणी थे, जिनमेंसे अेक अपने दुखनेवाले पैरको पसारकर दीवारके सहारे बैठा था। वह बीडीका टुकडा चबा रहा था। अुसके सामने अुसी शानसे ओरटा मैया बैठा था। दोनोंकी अुम्र लगभग पचास सालकी होगी, किन्तु दीखते थे सत्तर-पचहत्तर सालके बूढे जैसे पके हुअे सफेद बाल, अुदास निस्तेज आंखोंके सामने अुभडी गालकी हड्डियां! दोनोके अिर्द-गिर्द कअी युगोका कूडा जमा था! पान सुपारी और बीडीके गदे टुकडोंसे वह कमरा सजाया गया था, अुन दोनोके बीच खेल भी बडे जोरसे चल रहा था। दोनो अपना-अपना पैर हिलाते, मुंहसे बीडीका धुंवा अुगलते, हां - हूं, अैसे स्वरोंसे बातें करते शाही शानसे हाथके ताशोको धीरे-धीरे जमीनपर डाल रहे थे। अिसी समय बाहर किसीने दरवाजा खटखटाया। लच्चाने कहा--"मालूम होता है, कोअी महापुरुष आया!" और ओरटाने वहींसे, "चले आओ अदर!"--कहकर अुसका स्वागत किया।

मैनेजर केशव और अुसके पीछे-पीछे थे। रामने भी दबे पैरो अदर प्रवेश किया। "हूं!" ओरटाने केशवका स्वागत कर अपना खेल आगे बढाया। खेल खतम होनेतक दोनोने आअे हुअे लोगोका समाचार पूछना आवश्यक नहीं समझा। खेलमें समाधिस्थ अुन दोनो महापुरुषोने बाजी खतम होनेपर ताश मिलाते समय ही बोलना अुचित समझा। तबतक कुछ भी हो, वे हिलनेवाले

प्राणी नहीं थे। केशव यह जानता था, अिसलिअे "राम, तुम यहीं रहो
ही मेरा अेक मित्र है। अुसके पास हो आता हूँ।"—कहकर अुसने
ली। राम विना पलक मारे अपने वाप और अुनके दोस्तको देखता
आखिर खेल खतम हुआ, और "अच्छा और अेक खेल खेलें!" व
ताश फेंटने लगे। वात चलनेकी जगह खेल ही आगे चला। ओरट
वार "केशव चला गया" कहकर चुप हो गया। वस, फिर और खेल शुरू
राम मुश्किलमें पडा। न अुससे वहाँ वैठा जाता था, न वहाँसे चला जाता
अवतक वह खडा-खडा तपस्या कर रहा था। केशव भी जल्दी नहीं अ
अभी आता होगा अिसी विचारसे, वह खडा रहा, किन्तु यह स्थिति क
रहेगी? अिसका कोअी अन्दाजा नहीं था। कितना ही सोचनेपर भी
समझमें नहीं आया। आखिर अुसने ओरटासे पूछा—"भैयाजी! वापू अ
नहीं आअे हैं क्या? कव तक आअेंगे?"

ओरटाने अेक वार पीछे देखकर विकट हास्यके साथ कहा—"अ
यहाँ खेलनेवालेको तूने क्या समझा?" ओरटाका यह प्रश्न सुनकर वह
अुठा। अुसका दिल रोने लगा। अुसने देखा, यह रूप मेरे पिताका है, कि
अुसका विश्वास ही नहीं हुआ। क्या यही अुस राम भैतालके पुत्र
वुआके चेहरेपर जो लक्षण थे, जो सौम्य रेखाअें थी, जो कान्ति
अुसमेंसे अेक भी यहाँ नहीं थी।

आखिर वापसे वात किअे विना जाना अच्छा नहीं, अिस विचारसे
वहीं वैठ गया। अुनका खेल खतम हुआ। तव लच्चान ओरटासे "वह
कहता है? अवतक कहाँ रहा? क्या कर रहा है?" वगैरह अप्रत्यक्ष
पूछकर सव जान लिया। सीधे न वोलनेकी यह शैली रामके लिअे अस
थी। अुसने "वेंगलूरमें आअे मुझे आठ रोज हुअे। वेंगलूरमें ही रहत
और अव जाता हूँ!" कहकर फौरन वहाँसे प्रस्थान कर दिय
अुसने केशवकी भी प्रतीक्षा नहीं की। अुसका हृदय क्रोधसे जल
था। मैं अैसे विचित्र प्राणीका लडका हूँ। अिस विचारसे अु
आँखोंमें पानी भर आया। वापसे मिलनेके लिअे आअे लडकेसे अिस
वोलनेका भी कोअी ढंग है? यह कैसा ढंग! कैसा वडप्प

कुछ भी हो अुसके समझमें नही आया । अुसने वहाँ ठहरकर केशवकी प्रतीक्षा करना ठीक नही समझा । वह सीधा होटलकी ओर चल पडा । सुवह तक केशवके दर्शन नही हुअे । सुवह होते ही अुसने केशवसे रातकी सव वात कह दी । केशवने कहा--" अिन्ही वातोंमें अुनका सव कुछ वरवाद हुआ । आज यहाँ तो कल मद्रास और परसो पूना । अैसे ही चलता रहता है, अिन लोगोका कारोवार ? पता नही पैसा कहाँसे आता है, क्या करते हैं, जीवन कैसे चलता है यह सव आश्चर्यकी वात है ।"

अेक-दो दिन रहकर रामने सगीत-सभाका सगीत सुनना चाहा था, किन्तु पहले दिन रातको जो वात हुअी, अुससे अुसने मैसूरसे चल देना ही अच्छा समझा और बेंगलूरके लिअे रवाना हो गया ।

रामके आते ही जनार्दनमय्याने "सफर कैसा रहा । वहाँ क्या क्या देखा ?" आदि पूछा । अुसकी कही सब बाते सुनकर अुन्होंने पूछा—' क्या हमारे होटलमें गअे थे ? वहाँ केशव कैसा काम करता है ? दूकानमें बैठता है या मटरगश्ती करता है ?"

' मेरे रहते समय दूकानमें थे ।"

" किसीसे मैंने सुना है कि वह घुडदौडमें जाता है । अगर वह घुडदौडमें जानेवाला है, तो अुसपर विश्वास करना हमारे लिअे कठिन होगा । अुसपर नजर रखना जरूरी है ।"

सुनकर रामने कोअी जवाब नही दिया ।

किन्तु मालिक चुप नही रहा । अुन्होंने कहा—"क्यो, वोलते क्यों नही ? तुम्हारी अुसके वारेमें क्या राय है ? देखो राम, तुम्हारा बाप और हमारा ओरटा अिन्हीं बातोंमें बरबाद हुअे । नही तो अुनका होटल वडा अच्छा चल रहा था । और यह केशव पहले अुन्ही लोगोंके साथ था । आज भी मैंने सुना है, अुन लोगोके साथ अिसका सम्बन्ध है । आजकल दोनों मैसूरमें ही हैं । अैसी हालतमें केशव पर विश्वास करना ठीक नही ।"

रामको केशवके वारेमें शक था । अुसकी आँखोंके सामने ही वह घुडदौड गया था । और लौटते समय ओरटाके साथ वाहर आया था । यह सव वह जानता था । फिर पूछे हुअे प्रश्नका सही अुत्तर क्यों न देना

चाहिअे ? अुसने अपने बापकी भेंटकी बात बतानेके बहाने सब बाते कह डाली ।

अिसके बाद वह अपने रोजके काममे लग गया । मांको मैसूर-यात्राकी बातें लिखी । बापकी बात लिखनेमें अुसको बडी लज्जाका अनुभव हुआ, अिसलिअे अुसने अुसे लिखा ही नही ।

अेकाध सप्ताहके अन्दर ही नरसिंहमैयाने जनार्दनके अेक पत्रके अुत्तरमें जवाब लिखा—"रामको मसूर भेज दो । मैसूरके होटलकी जिम्मेदारी अुसपर रहे तो अच्छा । केशवको अपने पास बुला लो । अगर अुसकी घुडदौड और जुअेकी आदत नही छूटती तो अुसको अलग करना ही अच्छा होगा ।"

दो-चार रोजके बाद रामके नाम नागवेणीका अेक पत्र आया । अुसमें लिखा था—"नरसिंहमैयासे मुझे पता चला कि तू अपने बापको देखनेके लिअे गया था। अुसके बारेमें मुझे क्यों नही लिखा ? क्यों गया ? वहाँ क्या हुआ ?"

रामको बडी लज्जा हुअी । मांसे बात न छिपानेके विचारसे अुसने सारी बाते लिख दी ।

किन्तु राम मैसूरकी जिम्मेदारी लेनेके लिअे तैयार नही हुआ । अुसने कहा—"मै वहांकी जिम्मेदारी लेना नहीं चाहता । यहाँ यदि पैसा कम अधिक हुआ, तो देखनेके लिअे आप हैं । वहांकी सारी जिम्मेदारी मुझपर होगी । वह मुझे पसन्द नही । कल मुझे बुरी बात सुननी पड़ेगी । अिसके अलावा मेरा और केशवका दो दिनका परिचय है । अुसको निकालनेकी बदनामी भी मुझपर आअेगी ।"

यह सुनकर जनार्दन भी चुप रह गया । अुसने कहा—"जाने दो मैं ही अेकाध सप्ताह वहाँ हो आता हूँ ।" और वह स्वय वहाँ गया । जानेपर केशवको निकालना ही पडा । फिर तो खाली जगहपर रामके लिअे जाना अनिवार्य-सा हो गया ।

रामको यह दूसरा काम जरा भी पसन्द नही था । अिसी बीच जब अुसका मालिक मैसूरका होटल देखने गया, तब और अेक आशाजनक घटना घटी । वह जिस होटलका व्यवस्थापक था, अुसके सामने दूसरा होटल था । अुसके सुशिक्षित मालिकको रामके बारेमें बहुत-सी जानकारी प्राप्त हुअी ।

बहुतसे लोगोने अुसके सामने रामकी प्रशसा की थी। अुस होटलका मालिक स्वय बी० अे० था। जब अुसने रामके बारेमें सुना तो स्वाभाविक ही रामके प्रति अुसकी सहानुभूति पैदा हो गअी, और समान स्वार्थ तो था ही, अुसने धीरेसे रामके कानमें अपने विचारोकी भनक डाल दी। रामके खाने रहनेका अच्छा प्रबध करनेके साथ-ही-साथ मासिक तीस रुपअे देनेके लिअे तैयार था। दूसरे स्वय सुशिक्षित होनेके कारण अुसके पास रहनेसे अधिक अिज्जतसे रहनेकी सम्भावना थी। जब रामने यह बात सुनी, तो वह हँसा। अधिक वेतनके मोहने रामको आकर्षित नही किया। घरका सम्बन्ध भी तो था। कुछ भी हो नरसिह भैया अुसके पडोसी थे। समय कुसमय वहाँ अुसकी माँके काम आ जा सकते थे। अुसने सोचा, अगर मैं पाँच रुपयेके लोभसे सामने-वाले दूकानदारके पास चला गया, तो गाँवमें माँके लिअे जो तिनकेका आधार है, वह टूट जाअेगा। अिसी विचारसे वह अपनी अिच्छाके विरुद्ध मैसूर जानेके लिअे तैयार हो गया।

वह काम अुसके लिअे नया नही था। बेगलूरमें जो काम था, वही यहाँ करना था। "शुचिभवन रेस्टोराँ" की सब जिम्मेदारी अुसपर थी। जिन दिनो मैसूरमें बाहरके अधिक यात्री आते हैं, अुन्हे छोड दें, तो वहाँ अधिक भीड नही थी। फिर भी कही आने-जानेका समय नही मिलता था। पूरी जिम्मेदारी अुसीपर जो थी!

अिसमें शक नही अुसने यह काम सभाल लिया, किन्तु अुसको सतोष नही था। होटलकी कुर्सी ही अुसकी राजगद्दी थी, पर अुसको चैन नही था। तो भी वह कभी अखबार पढता, तो कभी रास्तेपर आने-जानेवालोको देखता अपना समय बिताता। और कुछ नही तो गल्लेके पैसे गिननेका काम तो था ही!

जिस दिन अुसने दूकानकी जिम्मेदारी ली, अुसी दिन अेक नअी भूल हुअी। शामको ठीक पाँच बजेके घण्टेके साथ लच्चा सेठ खाँसते हुअे दूकानमें आअे। रामने अुनको नही देखा यह बात नही, किन्तु पिछली बात ताजी थी, अिसलिअे अुसने न अुनसे बात की न अुनका आदर-सत्कार किया। कुछ देरके बाद लच्चा सेठ अपना शामका जलपान समाप्त कर शाही ठाटसे बाहर गअे। अुसका "आर्डर" लिअे लडकेने पुकारा—"अेक आदमी दो आना!"

यही अुसका जवानी त्रिल था। लच्चा सेठने रामके सामने जाकर अुसके गल्लेपर रखे चिरागसे अपना सिगरेट जलाया और विना कुछ कहे-सुने त्रिलके पैसे दिअे विना ही वाहर चल दिअे। रामको हँसी आ गअी। अुसने चुपचाप अपने हिसावमें 'दो आने' लिख लिअे। अिस प्रकार जलपानके पैसे दिअे विना वापके जानेकी विचत्रिता, नरसिंह मैयाको वरवाद करनेके लिअे अुसके भाअीसे मिलकर अुसके होटलके सामने अपना "दिल्ली-दरवार" चलाकर स्वयं वरवाद हो जाना और पुन मैयाकी दूकानमें ही आकर जलपान करना, सव अुसे वडा आश्चर्यजनक प्रतीत हुआ।

दूसरे दिन सुवह पुन. लच्चा सेठ आअे। पुन "दो आने" का विल हुआ। अिसी तरह दो-चार रोज वीते। यह रोजका नियम वन गया। रामने सोचा, यह तो मेरे मासिक पच्चीस रुपयोके वेतनमें कम-से-कम साढे सात रुपयोंकी कैंची है। आखिर जनम देनेवाले वापने अितना भी अुपकार नहीं किया, तो कैसे होगा ? अुसको हँसी आ गअी। अुसने वैसे ही मांको भी लिख दिया। मांने जवावमें लिखा—"जवतक रस है तवकत निचोडनेवाले कोल्हूमें कैसी दया और कैसी माया।"

अुसका यह जवाव आनेतक और अेक घटना घटी। अेक दिन लच्चा सेठ अपने मित्र ओरटा अेण्ड कम्पनीके साथ वहां पधारे। पांच-सात आदमी थे। सवके सव अेक जातिके थे। ओरटाने मुंह मांगी चीजोंका आर्डर दिया। जलपान होते ही सिगारेट मँगाअे गअे। अेक पाकेट आया। आवा फुंक जानेतक सव वही गप हांकते वैठे रहे, अुसके वाद वैसे ही धुवां अुडाते वाहर चले गअे। विलकी आवाज आअी "सवा रुपया।"

ओरटा अुम दलका नेता था। ओरटा अिशारा करके नीचे अुतरा। अुनके पीछे जो लोग थे, सव रामको देखकर नीचे अुतरे। कुछ ही दिनोंमें अुस सवा रुपयेके साथ दस वारह आने और हो गअे। अुस दिनकी रात रामने वडी परेशानीमे वितायी। तडपती मांके लिअे मैं यहां गुलामी करता हूं, और मांका हिस्सा यहां निर्दय पशुओको देना पड रहा है। अुसने तय किया "कलसे केवल वापके लिअे, वह भी अेक सीमाके अन्दर ही खर्च वहन करूंगा, नही तो मुझे कठोर होना ही पडेगा।" अिन आठ दिनोंमें ही वापका

मुंह देखनेकी लालसा खतम होकर अुसके स्थानपर अेक प्रकारकी घृणा पैदा हो गअी।

दूसरे दिन सुबह दूसरे ही ढगसे अिसका अन्त हुआ। लच्चा सेठ ओरटाके साथ सुबह होटलमें आअे। अपना सिगरेटका महायज्ञ समाप्त कर "छह आना" कर बाहर निकले। जब बिना पैसे दिअे अुन्होने दरवाजेके बाहर पैर रखा, तो रामने सिर झुकाकर कहा—"छह आने!'

रामके अुस नोटिसका कोअी प्रभाव नहीं पडा। जब दोनो अनसुनी कर बाहर निकल गअे, तो रामने जोरसे नौकरोंको बुलाकर कहा–"जाओ अुनको बुलाओ, अुन्होंने पैसे नही दिअे।"

जीवनमें पहली बार अुसकी आँखें लाल हुअी। ध्वनिमें गरज थी। यह देख नौकरोंने घबडाकर अुन दोनोको बुलाया। ओरटाने अिसे अपना अपमान समझकर सबके सामने अकाड-ताडव करते हुअे "यह देखा आपने! अिसीको कलियुग कहते हैं। यह हैं अिस लौंडेका बाप! बापको घूंटभर काफी पिला दिया तो अुसके लिअे रोककर पैसे मांगता है! तभी तो दुनियाकी यह हालत है।" कहकर रामका मजाक अुडाया।

ओरटा और लच्चाकी शखध्वनि सुन दूकानमें बैठे सब लोगोंने रामकी ओर देखा। सब हैरान थे। अुनके समझमें कुछ भी नहीं आया। रामने अुन गुण्डोसे बोलनेमें कोअी प्रयोजन न जानकर होटलके नौकरोको चेतातनी दी "अिन दोनोको कोअी चीज मत दो! अगर आअें, तो कह दो आपको यहाँ कुछ भी नही मिलेगा।"

यह सुनकर ओरटाने कहा—"बेटा! अब तेरा जन्म सार्थक हुआ।"

लोगोने आपसमें कानाफूसी करनी शुरू की "ओह, आखिर लच्चा सेठ रामका बाप है!" जो नही जानते थे वे भी यह बात जान गअे। रामने अिसमें अपना अपमान समझा। रात भर अुसको नीद नही आअी। अुसके सामने अेक समस्या थी, "कल क्या होगा?"

ठीक है जिसने अपने जीवनमें लज्जाको त्यागा है, वह चाहे जिसकी अिज्जतपर हमला कर सकता है। वह सुबह अुठा। आज ये दुष्ट मेरी अिज्जत-पर कैसे हमला करेंगे, अिसीकी प्रतीक्षामें था। सात बजे, आठ बजे, साढे

आठ, पौने नौ और नौ ! रामकी नजर घडीकी सुओीपर लगी थी। किन्तु पिछले दिनके महाभारतके बाद शायद अुन दोनों महापुरुषोने अुस दूकानमें न आनेका प्रण किया होगा, जानकर रामने सुखकी साँस ली। अुसने शामको अिस दो आनेके महायुद्धके बारेमें माँको चिट्ठी लिखी। आखिरमें लिखा था—"माँ ! सब लोगोंके सामने मुझे अुस महापुरुषका लडका कहलानेकी कोओी जरूरत नही थी। किन्तु जनम देनेवाले बापका वह अधिकार कौन छीन सकता था ?"

अुसी समय राम-लच्चा-युद्धकी रिपोर्ट होटलके किसी टेबल या कुर्सीने बेंगलूर लिख दी। बेंगलूरसे मालिक दौडे आओे। किन्तु जब अुन्होने देखा, रामने बापका जुर्माना अपने हिसाबमें लिख रखा है, दूकानके खातेमें नही चढाया, अथवा अलिखित हिसाबमें नही डाला, तो वह बहुत खुश हुआ। अुसने मुक्तकण्ठसे रामकी ओीमानदारीकी सराहना की। अुसने कहा—"कुछ भी हो, राम अपने बापकी तरह नही है। वह विश्वासपात्र है। हम अुसपर निश्चिन्त होकर विश्वास कर सकते हैं।"

जनार्दन भैया बेंगलूर लौट गया। वह सतुष्ट था। किन्तु राम असतुष्ट था। अुसको अिस पेशेसे ही असतोष था। यह बिना आरामकी गुलामी थी, बिना मिठासका श्रम था। अिसके अलावा और कितने दिनों माँको छोडकर दूर रहनेकी भी चिन्ता थी। आजकलके पत्रोमें नागवेणी लिख रही थी—"बेटा ! न जाने क्यो आजकल मुझे अिस मकानकी छाया स्वर्गसे भी महान लगती है। जब तक तेरे दादाका स्मरण होता रहेगा, मैं अिस मकानको नही छोडनेकी। वे अपने लडकेका विश्वास नही कर सकते थे, फिर भी अुन्होंने मरते समय मुझपर विश्वास किया था। अिस जीवनमें और कोओी पुरुषार्थ न कर सकनेपर भी अुनका ऋण, अुनका प्रेम और अुनका विश्वास नही खोअूंगी। अुन्होंने जो घर मेरे हाथमें सौंपा था, मरते दम तक अुस घरमें रह पाअूँ तो भी बहुत है। अिससे अधिक मैं कर ही क्या सकती हूँ !"

रामको बम्बओी जानेकी अिच्छा प्रबल हुओी। नवम्बर महीना था। सोचा "जैसे ही दिसम्बर महीना आअेगा चल दूंगा। हाथमें करीब सौ रुपये

है। वहाँ कोशिश करके देखूँगा। अगर नौकरी मिली, अच्छा वेतन मिला, तो माँको किसी तरह समझा सकूँगा।" अिसी विचारसे वह क्षण-क्षण गिनने लगा।

दिसम्बर तक सौ रुपयोका अिकट्ठा होना भी सम्भव नहीं था। माँको भी तो थोडा-थोडा भेजना था? किन्तु अुसने अपनी तीव्र अिच्छानुसार बम्बअीका जाना तय कर लिया। सबसे कठिन बात मालिकसे छुट्टी लेनी थी। "मैं जल्दी यहाँसे बम्बअी जाना चाहता हूँ" यह बात अुसने माँ और नरसिंह मैयाको लिखी। नरसिंह मैयाने अपने भाअीको लिख दिया। मैयाका पत्र मिलते ही जनार्दन मैया बेंगलूरसे दौडा आया। आकर अुसने पूछा—"राम! तुम क्यों जा रहे हो? खाना और रहनेके अतिरिक्त हम जो पच्चीस रुपया मासिक देते हैं वह क्या कम है? तुम चले जाओगे, तो हम अितनी जल्दी किसको ढूँढेंगे? तुम्हारे भरोसे हमने केशवको भी निकाल दिया!" रामने समझाते हुअे कहा—"अिस प्रकारका काम, जिसमें मुझे शान्ति नहीं, मुझसे होना असम्भव है। माँको अपने साथ रख सकूँ, यही सोचकर मैं दौड-धूप कर रहा हूँ। आपसे मुझे कोअी शिकायत नहीं।"

बडे दिनकी छुट्टियोंमें यात्रा करनेवाली भीडमें वह भी अेक था! रेल्वेमें तिल रखनेके लिअे जगह नहीं थी, फिर भी वह अुसमें घुसकर बैठ गया और बिना यहाँ-वहाँ बदन हिलाअे किसी तरह बम्बअी पहुँच गया। मैसूरसे चलनेमे पहले अुसने माधवको लिखकर अुनसे परिचय-पत्र प्राप्त कर लिये थे। जैसे ही वह बम्बअी शहरके अन्दर दाखिल हुआ, अुसको अैसा लगा, मैं किसी जंगलमें आ पडा हूँ। किन्तु अुस शहरके बडे-बडे मकानों, मन्दिरों, रास्तों और भीड आदिको देखकर अुसको लगा, यह मद्राससे बडा है। अुसने सोचा बम्बअीमें आकर जीना मेरे लिअे वैसा ही है, जैसे हमारे यहाँ समुद्र किनारेपर पडा अेक रेतका कण! अुसको अपनी अल्पताका भान हुआ, किन्तु अिससे वह निराश नहीं हुआ। अितने लोगोंको खाना-कपडा देनेवाला शहर क्या अुस अकेलेको रोटी नहीं देगा? हमारे यहाँके कितने ही लोग यहाँ रहते हैं!

मैसूरसे आनेवाले रामकी प्रतीक्षामें दादर स्टेशनपर मारुति खडा था। अेक दूसरेका परिचय नहीं था, किन्तु अुनमें दूरका कोअी रिश्ता था। वह

रिश्ता खून या जातिका नही वल्कि स्नेहका रिश्ता था। अथवा यों कहिअे आर्थिक रिश्ता था। माधव मद्रासमें जिस कम्पनीमें काम कर रहे थे, अुसी कम्पनीका अेक आफिस वम्वअीमे था। मारुति वम्वअीके आफिसमें काम करता था। मारुति और माधव दोनो कन्नड जिलेके रहनेवाले हैं। माधवने मारुतिको रामके वारेमें पत्र लिखा था, अिसीलिअे मारुति अपने मित्रके मित्रका स्वागत करनेके लिअे दादर स्टेशनपर प्रतीक्षा कर रहा था।

मारुति अुसको अपने कमरेमें ले चला। दोनो माटुगाकी ओर चले। अेक मजदूर रामकी चीजें अुठाअे हुअे था। माटुगामें अेक मकानके कअी मजिले चढकर आखिर दोनों अेक छोटेसे कमरेके सामने आकर रुक गअे। दरवाजा खोला गया। अन्दर रामके घरके वरामदेकी आधी भी जगह नहीं थी। अुसीमें रसोअीघर, स्नानघर और दफ्तर था। दोनो अन्दर गअे। रामको वैठनेके लिअे कहते हुअे मारुतिने कहा– "आजकल मेरी घरवाली यहां नही है। वह मायके गअी है। मेरे अेक लडका है। पत्नीके महीने पूरे हुअे, वह प्रसवके लिअे अपने वापके घर चली गअी। हम होटलसे डब्बा मँगवाते हे। आप विना सकोचके हमारे साथ भोजन कर लीजिअे।"

मारुतिकी वातोमें न किसी प्रकारका वडप्पन था, न किसी प्रकारका पराया भाव। रामको कुछ दिन रहनेके लिअे अपना घर-सा मिला, सोचा— खर्चा वांट लिया तो आसानीसे मैं कुछ दिन यहां रह सकूंगा। और अुसे खुशी हुअी। छोटा-सा होनेपर भी अिस स्वच्छ मकानमें जैसे मारुतिने जीना सीखा, वैसे ही राम भी सीखने लगा। दूसरे दिनसे सुवह दस वजे तक राम और मारुति साथ रहते, फिर शामको मिलते। मारुतिका जीवन भी अुनके कमरेकी तरह तग था। केवल घरसे आफिस और आफिससे घर, यही अुसके जीवनकी व्यापकता थी। मारुतिका वडा लडका कृष्णवेणीके आनन्द जैसा था। वह वही वम्वअीमें पढने जाता था। अिससे जव वाप और वेटा दोनों घरमें नही रहते तव रामको ही घर सँभालना पडता।

मारुतिको रामका वम्वअी आनेका कारण माधवसे पहले ही ज्ञात हो गया था। अिससे अुसने अेक दिन सुवहके समय कहा—"मेरा यहां अधिक परिचय नही है। दिनभर आफिस और घरमें वीतता है। छुट्टीके दिनोमें

कभी अेक-दो मित्रोसे मिलता हूं। और समय यहांके अिस जन-सागरमें रहता हूं, यही खुशी है। तुम अेक काम करो। अिसी बिल्डिगके अेक कमरेमें हमारे जिलेके कुछ दोस्त रहते है। अुनमेंसे कुछ अपने-अपने काममें लगे है, कुछ बेकार हैं, किन्तु अुसमें कोअी कुटुम्बबद्ध नही है। अुन लोगोके साथ अगर तुम भी जरा घूमो-फिरो, तो अच्छा होगा। वे तुम्हारी मदद कर सकेंगे!"

रामने कुछ नही कहा। अुसका काम केवल सुननेका था। नया शहर था। वह कुछ भी नही जानता था। नौकरी ढूंढने आया था, नसीबका अिम्तिहान लेना था।

अुसी दिन रातको मारुति अुसको अूपरकी मजिलपर ले गया। वहां अेक कमरेपर बोर्ड टगा था "फ्रेन्ड्स् रूम" जो मानो साम्यवादियोका दफ्तर था।

सासारिक (विवाहित) मारुतिके कमरे और ससाररहित अिन फ्रेंडसके कमरेका अन्तर स्पष्ट दीख रहा था। अुनका "फ्रेड्स् रूम" केवल चार दीवारोंसे घिरा था, बस नही तो वह पूरा चिडियाखाना था। जब राम मारुतिके साथ वहां पहुंचा, तब पांच-सात आदमियोमेंसे तीन-चार बिस्तरा बिछाकर लेट गअे थे। दो सज्जन राजनीतिक बहसमें लगे थे। अेक सज्जन गाते थे और अेक सिगारका धुवां अुडाते सडकपर दौडनेवाली मोटरों और आदमियोको गिन रहे थे। "हल्लो!" अुसमेंसे अेकने मारुतिको देखकर कहा—मारुति अन्दर गया। अुन्होंने रामका परिचय कराते हुअे कहा—"शकरराव! ये हमारे जिलेके रहनेवाले है। फर्स्ट क्लास बी अे. हैं। अिनके मौसाजी मेरे दोस्त हैं। अिससे हम दोनोंमें दोस्ती हो गअी। बेचारे नौकरी ढूंढनेके लिअे आअे है। देखो तुम्हारे अूपर यह स्पेशल ड्यूटी है!"

शकरराव लेटे हुअे थे। मारुतिने बात करना शुरू किया और शकररावने वैसे ही लेटे-लेटे सिगार जलाया। मारुतिके सामने सिगरेट धरकर अुनका स्वागत करते वह अुनकी बातें सुनने लगा। रामके बारेमें जो बातें कहनी थीं वह कह लेनेके बाद मारुतिने पूछा—"क्या तुम्हारे पद्मनाभको कोअी नौकरी मिली? वह तो मित्सुअीके पास गया था न!"

"हाँ ! अुसको तो वे चालीससे अधिक पगार देना नही चाहते !"—शकररावने कहा ।

"वह तो ग्रेज्यूअेट है न !"

"अरे आज ग्रेज्यूअेटके बापको भी यही मिलता है ! आजकल बम्बअी भी मद्रास हो गया है ।"

यह सुनकर मारुतिने रामके बारेमें कहा--"देखो ! यह है बेचारा गरीब घरका । बडी आशासे आया है । मैंने अुसको कोअी बडा आश्वासन नही दिया है, किन्तु हमें पूरा प्रयत्न करना चाहिअे !"

अुस दिन यही बाते खतम हुअी । अुसके बाद अिनकी गुडनाअिट हुअी । राम जब मारुतिके साथ जानेके लिअे निकला, तो शंकररावने पूछा--"आपका शुभ नाम ?"

"राम !"

"ह्वाट् राम ? नोन्सेन्स ! रामराव कहो ! चाहे तो राम अंताल भी कह सकते है !! अच्छा रामरावजी रोज आते रहिअेगा !"

अुस दिनसे राम रामराव बनकर जब कभी समय मिलता वहाँ जाने लगा, और थोडे ही समयमें 'फ्रेंडस्-रूम' का अेक सदस्य बन गया । मारुतिकी घरवालीके आनेपर तो वह अुन्हीमेंसे अेक हो गया ।

यह सब मिलकर खुशी-खुशीसे दिन बितानेवाले प्राणी थे । सबके सब तरुण थे, अपनी पढाअी खतम कर नौकरी ढूँढनेके लिअे आअे थे, नौकरी ढूँढ रहे थे । अुनमेंसे तीन-चार अस्थाअी तौरपर काम करते थे । कुछ लोग पन्द्रह रोजमें अपना काम बदल-बदल कर देखते थे । कुछ लोग "जो घूम रहे हैं यही अेक लाभ है" कहनेवाले थे । किन्तु सब अेक बातमें सहमत थे—"बिना पूंजीवाद खतम हुअे दुनियाका कल्याण नही ।" यही अुनका सामूहिक लक्ष्य-सा था ।

रातके समय बिडला, टाटा, बजाज, वालचन्द, हासन अिन सबको गालियाँ देना भी अिन लोगोंका नित्यका प्रोग्राम था । दूसरे दिन सुबह आवेदन-पत्र लेकर "करीम भाअीके यहाँ नौकरी है क्या ?" मित्सुअीके

दफ्तरमें "किलिक्निक्स ?" "आर्मी अेडनेवी ?" आदिके दफ्तरोंके दरवाजे खटखटाते। व्यापारियोंकी सस्थाअें बैंक, अिन्शुरन्स कम्पनियाँ हर कही जाकर नौकरीकी तलाश करते। चार दिनकी नौकरी हो, अुसके लिअे भी "अरे, जपानी नौकरी है, अितना ही नया अनुभव सही" कहकर प्रयत्न करते। वहाँके आठो आदमी तीन डब्बे लाकर खाते थे अिसीलिअे देखनेमें यह ३।८ मनुष्यसे दीखते थे। खानेसे अधिक सब ये सामूहिक रूपसे चाय-काफी बनाकर पीते थे। यही अुनका मास्को ढगका सामूहिक रसोअी-घर था। अुन लोगोकी अेक ही "विलासिता" सिगारेट थी। अुन सबका खयाल था कि बम्बअीकी आबोहवाके लिअे यह अत्यन्त आवश्यक है।

अुनकी पोशाक दर्शनीय थी। अिस मामलेमें वे अेक दूसरेपर अपना प्रभाव और वर्चस्व डालना चाहते थे। दिनभर पूरे सूटमें रहते, रात हुअी कि कुरता-पैजामामें आ जाते, सबने पठानी पैजामा सिलवाअे थे। दूसरे दिन आफिसका समय होते ही अपने बूट, हैट, कोट, पैंट सबको ब्रश करने लगते और टीपटाप बनकर दफ्तरोकी देहली घिसते! सोते समय तो वे पूरे जेलके कैदीकी ही पोशाक पहन लेते। फिर भी सुखसे दिन बिता रहे थे। वह सुख केवल अन्नसे नही बल्कि बातोंसे मिलता था। ससार भरसे पूजीवादके खतम होनेके बाद होनेवाले स्वर्णयुग या स्वर्ग-युगके सपने देखकर वे खुश थे। यह स्वर्ण-युग या स्वर्णयुगका सपना केवल दिनभर चलती बातोका परिणाम था। अुन लोगोंसे मिलजुलकर अेक हो जानेमें रामको देर नही लगी। बेकारीमें दिन बितानेवाले किसी भी युवकको बम्बअीमें भाअी बननेके लिअे तीन सप्ताहसे अधिक समयकी जरूरत नही होती। राम तो यहाँ आनेसे पहले ही बन चुका था।

अेक-दो सप्ताहमें ही रामने शकररावके साथ कअी दफ्तरके बोर्ड देख डाले। शकररावने अेक दिन अपने मित्र रामरावसे कहा—"मिस्टर-रामराव! बम्बअीमें अगर यह रेल-ट्राम, बस न होते तो अिसी खर्चमें तीन महीने बिता सकते थे। हर समय 'नो वेकन्सी' (जगह नही) या 'सौरी-प्लीज' (अफसोस) सुननेके लिअे अिस ट्रामवे कम्पनीको चार आना जुर्माना देना पडता है। प्रतिमास करीब साढे सात-आठ रुपअे यह दरिद्र सगीत

सुननेमें व्यय करने पडते हैं । मुझे यही मासिक बीस रुपयोकी गेरन्टी हो तो मैं सदा-सर्वदा अैसे ही बम्बओीमें रहनेके लिअे तैयार हूँ, किन्तु ज अिसी बीचमें आठ रुपअे ट्राम खा जाती है, तो काम कैसे चलेगा ?'

शकरराव बम्बओीके लिअे पुराना पापी है । वह सात सालसे यह रहता है । अिन सात सालोमें आधेसे अधिक दिन अुसने अिसी प्रका बेकारीमें बिताअे हैं । आफिसके अन्दर काम करते समय जो पैसे कमाता वह बेकारीके दिनमें खर्च करता । अिस "फ्रेन्डस् रूम" की गुटमें अितन अनुभवी कोअी दूसरा नही ।

शकरराव अबतक जहाँसे भी निराश लौटा था वहाँ रामरावको ले जाता था। जहाँसे वह झगडकर निकला था, वहाँ भी ले जाता था रामरावने भी बम्बओी आनेके बाद जो बूट-पैंट आदि खरीदे थे, अुन्हें पहनकर बडी श्रद्धासे अलग-अलग सस्थाओंको दर्शन देता, और वही 'नो वेकन्सी' या 'सारी क्लोज' का सुश्राव्य सगीत सुन घर आता था।

शकररावको अब केवल सिनेमा-क्षेत्रमें "होप" (आशा) थी। अुसे दिनभर सिनेरियो लिखना, अुनको सिनेमा-कम्पनियोंको भेजना, वहाँकी वापसी स्वीकार करना, यही काम था। अेक-दो बार अुसीकी कहानियोंको चुराकर बनाअे गअे फिल्मोंको देखकर वह खूब चिढ़ा भी। अुसके पास बम्बओी, कलकत्ता आदि नगरोकी सभी फिल्म-अेक्ट्रेसोंसे व्यक्तिगत पत्र आते रहते। अुन लोगोंको शकररावने अपनी तसवीरे भी भेजी हैं। वह कहता सब अभिनेत्रियोने मेरे साथ काम करना पसन्द किया, किन्तु केवल डाअिरेक्टर अुसे पसन्द नही करता। अुसका दुख यही है कि अुसकी योग्यता जाननेवाला कोअी दिग्दर्शक नही मिलता।

अगर 'फ्रेंडस्-रूम'वालेके हाथमें अधिकार आया, अुसको स्वराज्य मिला, तो फासी चढाअे जानेवालोकी सूचीमें सब केपिटलिस्टोंके साथ सिनेमा दिग्दर्शकोंका नाम भी लिखा जाना अेकमतसे स्वीकृत हुआ समझें। किन्तु पाँच-पाँच छह-छह हजार वेतन पानेवाली सिनेमा अभिनेत्रियोंका क्या किया जाय? अिस बारेमें वीर तरुण अबतक निर्णय नही कर पाअे थे। अिसमें सन्देह नही कि अितना अधिक वेतन खाकर वे भी पूरी केपिटलिस्ट हुअी

हैं ! किन्तु स्त्रियोंपर कैसे हाथ अुठाया जाय ? यह तो सर्वथा अनुचित है। अिसलिअे कोअी निर्णय नही कर पाअे थे। अिसके अलावा वे भी अिनकी तरह अविवाहित होनेसे अुनके बारेमें सोचते समय अधिक ध्यान देना आवश्यक समझते थे।

रामको यह 'फ्रेंड्स्-रूम' जीवनकी अनेक प्रकारकी विरक्तियोका अेक सागर-सा लगता था। वहाँकी आत्यन्तिक लघुता, बेकारी आदि सब तरुणायीके अुत्साहको निराश करनेवाली बेकारीके परिणाम थे। रामके ध्यानमें यह सब बाते आनेमें देर नही लगी।

राम अपनी सादी पोशाकमें ही अिस कमरेमें सर्वप्रथम आया था। किन्तु नौकरीका शिकार खेलनेके लिअे सूट-बूटकी अत्यन्त आवश्यकता है, अिसका निर्णय हो जानेपर अुसने अुन्हे बनवाया। यह सब बननेमें तीन दिन लगे। अुन्हें पहनकर शर्माता हुआ राम जब शकररावको पूछता 'फ्रेंड्स्-रूम'में आया तो वहाँ ठहाका मचा—"रामु ! आय् अेम् सॉरी, रामराव, अिस लिवासमें आप पूरे सिनेमा स्टारसे लगते हैं ! ही स्टार ! आपको निश्चित वही चान्स मिलेगा। अरे हमारी अैसी 'पर्सनलिटी' होती, तो कबके मिस् सुवर्णादिवीके गलेमें बाँहे डाल चुके होते !"

मिश्रोने बलैया ली। "किन्तु मिस्टर रामराव, रूपके साथ-साथ अेक और योग्यता आवश्यक है ! आपको तराना आना चाहिअे !"

अिस "तराना" का अर्थ ही रामकी समझमें नही आया। रामने पूछा--"यह तराना क्या है ?"

"तर .र र .ना ! म्यूजिक, रामराव प्लस म्यूजिक—सिनेमा स्टार !"—गगाधरने कहा।

वह फ्रेंड्स्-रूमका सिनेमा था। रामने अपने सगीत-ज्ञानके प्रदर्शनका वह समय ठीक नहीं समझा। वह चुप रहा।

अुसके बाद गगाधर रोज "आज अन्धेरी जा ! आज मलाड और आज यहाँ और कल वहाँ" कहने लगा। गगाधर अुसे स्टुडियोके पते और जानकारी देने लगा। जिस दिन गगाधरके अुत्साहमें कोअी ज्वार आता, तो वह आधी जली सिगरेटको चबाते-चबाते "तुमने मुझको प्रेम सिखाया !"

गाता। बीच-बीचमें सीनेमा-जगत्के खास-खास और गुप्त समाचार देनेवाला भी वही था। अुसने कहा—"मिस्टर! आज नअी खबर है। वह ब्लडी बगर मिस चन्द्रकान्ता चार बच्चोकी माँ है! अरे वही! जिसने मेरे पत्रोका ठीक जवाब भी नही दिया था! अितना ही नहीं, मैंने जो अपना फोटो भेजा था अुसके अुत्तरमें, सामान्य अेटीकेट पालते हुअे अुसने अपना फोटो भी नही भेजा!"

जब वह खास नअी खबर देता, तो सबके सब अुसकी निराशामें सम्मिलित होकर अुसको सात्वना देते।

अेक दिन, आकर अुसने कहा—"मिस्टर शकरराव, गुड न्यूज टु डे!" वह गुड-न्यूज (सुसमाचार) क्या था? "जिस डर्टी डायरेक्टर नखोरामने शकररावको सिनेरियो लेकर छह बार अन्धेरी बुलाया था, अुसकी सेन्ट्रल आर्ट प्रोडक्शन कम्पनी लिक्विडेशन (दिवाला) में चली गअी। अगर मेरी सुनी बात सही है,तो बम्बअीकी सभी प्राडयूसिग कम्पनियाँ बीस सालके अन्दर खतम हो जायेंगी, और अेक भी केपिटलिस्ट ब्लडी फूल नही रहेगा!!"

अैसी मीठी मधुर बातें यहाँ राजकीय तत्वोका बाना पहनकर सिगरेटस्के धुअेंकी तरह अुडती थीं। बीच-बीचमें "बजाओ प्रेमकी बसरिया!" जैसे गाने गगाधरकी जबानसे प्रवाहित होते रहते!

अेक बार बोलते-बोलते शकरराव और गगाधरको पता नही कहाँकी स्फूर्ति आ गअी। गगाधरकी आवाज अच्छी सुरीली थी, किन्तु अुसका कोअी रूप नही, यह अुसकी अपनी राय नही, बल्कि केपिटलिस्ट सिनेमा डायरेक्टरोंकी राय थी! अिससे शकरने अपनी बातोकी आडमें कहा—"गगाधरके गलेपर रामरावका चेहरा होता, तो हमारे 'फ्रेंड्स्-रूम' को मासिक दो हजार रुपअे मिलते, और हमारे कमरेके प्रत्येक व्यक्तिको मासिक दो सौ पचास औसत वेतन मिलता!"

रामको अिसका अर्थ ही समझमें नही आया। अुसने पूछा—"क्या है?"

"अरे! गगाधरका गला सुन्दर है, तुम्हारा रूप सुन्दर है। दोनोंको मिला देनेपर सिनेमा स्टार बन जाता है!"

"तो क्या मेरे पास गला नहीं है?"

"अरे यार ! तुम्हारा गला लेकर क्या करना है ? अुसे क्या फाँसी लगानी है ? सिनेमाके लिअे तराना-कंठ चाहिअे ! हमारे गंगाधरकी तरह तरानाका गला ! वह है तुम्हारे पास ? क्या तुम्हें संगीत आता है ? सिनेमाके लिअे "तुमने मुझको प्रेम सिखाया !" करने आना चाहिअे ! तभी सिनेमाकी बात करो !"

सबके सब ठठाकर हँस पडे। राम भी जरा हँसा। "मैं गा सकता हूँ, किन्तु तराना नहीं ! सिनेमाके घोडोंके प्रेमके लिअे क्या तरानाकी ही आवश्यकता होती है !"—रामने कहा।

सुनकर शंकररावको आश्चर्य हुआ। "क्या रामरावको संगीत भी आता है ? किस ढंगका ? तमिलका "तरननना" या गवैयोंका "रेनानाना" . .?

गंगाधरने कहा—"वेल् रामराव ! क्या तुम सिंगिंग करते हो ? तुम्हारा कैसा संगीत है ? विडमाशय यूये यूये येड यूय . यूयेड ड ! यही है क्या ?

"मेरा ही अपना खास संगीत है। मुझे जवानी संगीतसे फिडल-संगीत अधिक आता है, किन्तु 'तुमने मुझको प्रेम सिखाया !' मैं नहीं बजा सकता !"

रामने पहलेसे सिनेमा-संगीतपर ध्यान नहीं दिया था। अुसकी भावनाकी गहराअी शास्त्रीय संगीतकी घिसघिसमें भी सन्तुष्ट नहीं होती थी। फिर क्या वह अिस प्रेमके तरानोंमें सन्तुष्ट होनेवाली थी ?

अुस दिन शामको अुसकी बातोंकी परीक्षा हुअी। 'फ्रेंड्स्-रूम'के प्रत्येक व्यक्ति रामसे गानेका आग्रह करने लगा। शंकररावका अुत्साह तो अपूर्व था। वह कहता—"अगर रामको संगीत आता है, तो यहीं 'कम्युनिस्ट स्कूल आफ म्यूजिक' शुरू कर देंगे।" अुस दिन अुन्होंने सारे माटुंगाको छानकर रातको दस बजनेके बाद कहींसे अेक फिडल प्राप्त किया। अुसे रामके हाथमें दिया गया। रामके हाथमें फिडल आनेसे क्षण भर पहले गंगाधरने अपना निश्चित निर्णय दे दिया—"संगीतमें फिडल-वीणा जैसे वाद्योंके लिअे यत्किंचित् भी स्थान नहीं। ये बजते नहीं, रोते हैं। ये संगीतकी प्रगतिके नहीं, प्रतिक्रियाके साधन हैं ! अिन प्रतिक्रियात्मक वाद्योंके लिअे प्रगति प्रधान संगीतमें क्या स्थान है ?"

गगाधर अुस 'फ्रेंड-रूम'का महान कलाकार था। वह वैसा ही "आर्ट क्रिटिक" (कलाका आलोचक) भी था। अुसका पूर्ण विश्वास था कि अुसका वह 'फ्रेंड्स्-रूम' ही पेरिस है। वह स्वय अिस महानगरका सर्वप्रथम कला-विवेचक है। अुसके किसी निर्णयमें किसी प्रकारकी सशयात्मक वृत्ति नही रहती थी। निश्चय, निश्चय है। अुसमें सकल्प-विकल्प और अनुमानका क्या काम? वह जो कुछ कहता था, सर्वज्ञकी तरह निश्चयात्मक रूपसे कहता था।

अुसने अपना निर्णय दिया, रामके सामने फिडल आया। राम हँस रहा था। गगाधरके व्याख्यान और निर्णय अुसके कानोंको बडे मधुर लगते थे। अुसमें अुसका मनोविनोद हो रहा था। अुसकी बातोंमें कोअी तथ्य हो या न हो, भ्रम अवश्य होता!

रामने हँसते हुअे फिडल हाथमें लिया। अुसके कान अैंठे, अेक-दो बार कमानको तारोंपर नचाया। बस, अुसके हाथ नृत्य करने लगे। अुसने हाथ नचाअे, खीचे, बढाअे। अुसके हाथका वह नृत्य ही अत्यन्त मनोहर था। वह फिडल फिडल नही रहा, सितार बना, सितार नही रहा, जलतरग बना! नही वह कुछ भी नही, और सब कुछ है, अिसी भ्रममें राम अुससे खेल रहा था।

अुसके मित्र अत्यन्त विचित्र भावसे हँसते हुअे अुसकी मर्कट-चेष्टा देख रहे थे। धीरे-धीरे अुन निर्जीव तारोंने शहदकी बूंदोंकी तरह मीठा मधुर नाद सारे वातावरणमें माधुर्य घोलने लगा। वह अूँचेसे गिरनेवाले छोटे प्रपातकी तरह, खिमककर पत्थरपर गिरते हुअे अुछलनेवाले तुषारोकी तरह अुछलकर हँसने लगा, वही बढती हुअी तरगोंकी तरह वातावरणमें ओतप्रोत हो गया। पर्वतके छोटेसे कोनेसे टपककर छलकते हुअे, अपने दोनों तटोंके बन्धन तोड-कर बहनेवाली नदीकी तरह, वह सगीत प्रवाह अुन निर्जीव तारोमें न समानेसे छलककर सारे वातावरणमें ओतप्रोत हो रहा था।

चारो ओर फैलकर सर्वव्यापी हो, अुछलकर हँसनेवाला वह सगीत-प्रवाह वैसे ही बिन्दुमें सिन्धु समानेकी तरह अेकाअेक रुक भी गया। तब कैदमें फँसे होजके पानीकी तरह अुसकी आवाज धीमी होकर शान्त हो गयी। हास्यका गर्भ मानो किसी दर्दके पंजेमें फँससा गया था। राम अपनी अर्धोन्मीलित आँखोसे फिडलकी कमान देख रहा था।

दूसरे ही क्षण मानो अुसका हाथ क्रोधसे कॉप अुठा। दर्दमें फँसी वेदनाअें मुक्त होकर व्यक्त हो गअी। भडकी हुअी आग जैसे अपनी जलती अनन्त जिव्हाओसे ससारको चाट जाती है, वैसे ही अुसकी राग लहरे असख्य मुखसे वातावरणमें व्याप्त हो गअी। महान स्फोट होनेके बाद जीवनको निगलनेवाली मौतकी तरह अेक ही अेक आलाप अुन सबको आत्मसातकर आकाश तक गूँज अुठा।

राम बजाना बन्दकर वहाँसे जा अपने कमरेमें सो गया। अुसके मित्र अुसके लिअे देर तक गूँगे बने बैठे रहे। मानो अुनकी चेतना ही किसीने छीन ली थी। वे निर्जीव पुतले बने थे। कुछ देरके बाद अुसके कुछ मित्र अुसको खोजनेके लिअे निकले। यद्यपि मारुति बैठकर पढ रहा था, लेकिन राम अपने बिस्तरेपर सो गया था।

अुस दिन रामका सगीत सुननेवाळोमेंसे किसीने अुसके बारेमें कुछ नही कहा। "मैंने अबतक अैसा सगीत नही सुना। वह तो हमारे जीवनका छलकनेवाला विकट हास्य था!"—शकररावने दो दिन बाद यह कहा।

अिस घटनाके बाद कभी गगाधरने रामके सामने "तुमने मुझको" नही गाया। रामकी आहट पा फ्रेंडस् सर्कलके फ्रेंडस् गगाधरको देखकर "तुमने हमको श्याम दिखाया!" कहते हुअे सगीतके अकालका भान अवश्य कराते थे।

अुसके बाद कअी दिनतक "राम! फिर कब अपना सगीत सुनाओगे?" पूछनेवाले मित्रोंसे वह "मुझे स्फूर्ति आअेगी तब" कह देता था। मित्रोंको भी यह बोध हो चुका था कि वह बुलावेपर आनेवाला सगीत नही है और अब अुस कमरेवालोंकी निगाहोमें अगर कोअी गौरवास्पद व्यक्ति था तो वह केवल राम था!

फिर भी क्या किसीके गौरवसे बेकारीकी समस्या हल होगी? अुसके सामने मान-सम्मानका सवाल नही रोटीका सवाल था। दो महीने बीत चुके थे। घरसे लाअी पूंजी आधी भी नही रह गअी थी। दिन कैसे कटेंगे? शकररावने अुसे सगीतकी ट्यूशन करनेकी सलाह दी। और रामने हँसकर कहा—"तुमने मुझको" युगमें भला मेरे सगीतकी कीमत ही क्या है? और गवैयोका शास्त्रीय सगीत भी मुझे कहाँ आता है?

:२१:

तीन महीने वीत चुके थे। रामकी जेब खाली होने आअी थी। महीने खिसकते जा रहे थे, नौकरीका कही पता नही था। अिसी तरह दिन बीतते गअे तो विना रोटीके रास्तेपर भूखो मरनेकी नौबत आअे अिसके सिवा चारा ही क्या था?

अिन्ही विचारोंसे वह शहर भर भटकता, थककर अुदास भावसे चौपाटीपर जा बैठता। यहांका किनारा मद्रासकी तरह नही है। यहांके समुद्रने शहर भरकी गदगी अुठाकर अपना स्वाभाविक सौन्दर्य खो दिया है। शहरमे घुसे समुद्रमें अपना स्वाभाविक अुफान और तूफान, अुमग और अुत्साह भी नही। वह तो वर्षाके जोरसे मथे तालावकी तरह था, किन्तु अुसके किनारेपर बैठे जन-समुदायमें अनत अुल्लास था, अपूर्व अुमगें थी, वह मानो अपने अुल्लाससे नाचता था। आनेवाले, जानेवाले खानेवाले, अमीर और गरीव, वम्बअीके सभी श्रेणीके लोग वहाँ थे। अिसी परिस्थितिमें राम अुस शक्तिहीन निस्सत्व समुद्रकी तरगे गिनते बैठा था।

वह सोच रहा था। विना कमाअे यहाँ रहना असम्भव-सा है। आखिर अुसने सगीतके ट्यूशन करनेका विचार किया। महीना भर हुआ, अुसने मांको पत्र नही लिखा था। अब अुसको क्या लिखें, किसकी आशा अुसमें पैदा करूं? वह देख रहा था, अुसके फ्रेड्स्-रूमके मित्र साल दो सालसे वम्बअीमें जूतियाँ घिस रहे थे। अैसी हालतमें भला अेक-दो महीनोमें क्या बनेगा? अुसके मित्र अपनी-अपनी बात बताकर कहते थे–"हमारी हालत देखो। कमसे कम सालभर तुम्हें यहाँ रहना होगा।"

आते समय अुसने नही सोचा था– "घरका खाकर आफिसके दरवाजे खटखटानेमें अितने दिन लगेंगे।" जो नही सोचा था अुसका प्रत्यक्ष अनुभव

हो रहा था। अेक बार मनमें आया क्यो न यही जहाजपर बैठकर सीधे गाँव चला जाअूँ ? अभी तो वापस लौटनेके लिअे पैसे है। आगे वे भी नही रहे तो ...

देर तक विचार कर अपने वासेपर जानेके लिअे अुठा। रास्तेपर किसी विज्ञापनने अुसका मन खीच लिया। अुसको पढकर मालूम हुआ, अगले सप्ताह बम्बअीमें अेक चित्रकला प्रदर्शन होनेवाला है। मैसूरके प्रदर्शनने अुसको कअी दिनतक अेक प्रकारके मोहमें डुबोअे रखा था। अब अिसे देखकर ही अुसने यहाँसे घर जानेका तय किया। सप्ताह समाप्त होनेतक सहनशीलताकी मूर्ति बन अप्रैलकी पहिली तारीखकी प्रतीक्षा करने लगा। वही प्रदर्शनीके अुद्‌घाटनका दिन था।

क्या वह दिन आअे बिना थोडा ही रहेगा ? प्रदर्शनका आरम्भ होते ही राम प्रदर्शन देखने गया। वहाँके नगर-भवनमें सभी कलाकारोकी कृतियाँ रखी गअी थी। अुस दिन दोपहरके बारह बजे राम वहाँ गया। शाम तक वही रहा। सीमित रुपअे पैसे होनेपर भी अुसने तीन दिन तक घटों लगाकर वह प्रदर्शन देखा। अुसके मनमें आया था, मैंने चित्रकलाका अभ्यास क्यों छोड दिया ? अिसी विचारसे पागल-सा प्रदर्शन-भवनसे बाहर आते समय अुसने अनजाने ही किसी-न-किसी कला-भवनमें जानेका निश्चय-सा किया। अुसके मनमे आया कि दो-तीन साल अिसका अभ्यास करे ! किन्तु अुसके लिअे वहाँ साधन और सहूलियत कहाँ थी ? और अुतना धैर्य भी नही रहा था। अुसके सामने तो लक्ष्य था केवल माँको सुखी रखना।

तीन दिन तक अिन्हीं विचारोंका बोझ अुठाअे वह माटुगाके सभी गण्यमान्य लोगोके घर जाकर बाहर आता रहा। शहरके बडे-बडे आफिसमें नौकरी माँगकर थक गया था, अब घर जाकर ' सगीत शिक्षककी आवश्यकता है क्या ?" पूछने लगा। यही अुसका काम-सा बन गया था। पता नही पहले किसीने अिस प्रकार काम ढूँढा है या नही, ! किन्तु अुसका अेक सप्ताहका परिश्रम बेकार नही गया। अेक सज्जनने कहा—"अगले रविवारको आअिअेगा। आपका गायन और वादन देखकर कहेंगे !" तबसे अेक दिनके लिअे कहीसे फिडल प्राप्त करनेकी दौड-धूप करनी पडी।

ओर खीचा था। वह चित्र "मेडम् नोवा"का था। रामको अुसीसे चित्रकला सीखनेकी अिच्छा हुअी। अुसने शंकररावसे अपनी अिच्छा प्रकट की। शकरराव तो बम्बअीकी डिरेक्टरी था। वह सब रास्ते जानता था–किस रास्तेपर कौन आफिस है, कौन सिनेमा है, कौन होटल है, और स्टुडिओ—सबका वह चलता-फिरता विश्वकोश था। अुसने "हार्नबी रोडके किसी लेनमें कहीं अुसका स्टुडिओ है।" कहकर अुसका पता दिया। अुसके बाद अुसने कहा–"शायद वह यहूदी है। अुसको फीस देकर तुम कैसे सीखोगे ?"

राम निराश नही हुआ। दो दिनतक हार्नबी रोडकी सभी गलियोंमें भटककर अुसने स्टुडिओ ढूंढ निकाला। "नोवा स्टुडिओ!" का बोर्ड अुसकी आँखोने देखा। पैर जीनेपर चढे। अूपर जाकर दरवाजा धीरेसे खटखटाया। अन्दरसे आवाज आअी— "यस्!" कुछ ही मिनिटोंमें अेक अधेड स्त्री अुसके सामने आअी। दरवाजा खोलकर अुसने पूछा–"कैसे आअे ?"

रामने अपनी अिच्छा बतलाते हुअे कहा–"मैंने टाअुन हालमें आपका "दरिद्रताका गान" नामक सुन्दर चित्र देखा था। देखकर पागल हो गया था!"

सुनकर नोवाने कहा–"मैं विद्यार्थियोको नहीं लेती। लेनेपर भी मेरी फीस बहुत है। बम्बअी बडा शहर है। हर बातमें यहाँ अत्यन्त स्पर्धा चलती है। अेकसे अेक बडे चित्रकार हैं। आप और किसीसे सीख सकेंगे!"

सुनकर रामने कुछ नही कहा।

"अच्छा, आप जा सकते हैं।"—नोवाने कहा।

"क्या आप मेरी अेक बात सुनेगी ?"

वह हँसी—"क्या ?"

रामने अत्यन्त निरुत्साह हो कहा–"मैं अेक कलाप्रेमी हूँ। मैं फिडल बजाना जानता हूँ। अगर मेरी सेवासे सतुष्ट हो तो . . !"

"क्या अिंडियन म्यूजिक ?"

"जी!"

"कौनसी पद्धति ? मुझे आपके भारतीय सगीतमें बडा रस आता है। अच्छा सुनेंगे!"

"कभी अेक बार आकर सुनाअूँगा। अगर आपको पसद आया, तो पुन. आअूँगा। प्रदर्शनमें आपके अुस चित्रको छोड अन्य किसी चित्रने मेरे हृदयको नही हिलाया।"

वह कुछ भी नही बोली। चुपचाप अन्दर जाकर अपना वायोलिन ले आअी। "मैं भी अिसकी अभ्यासी हूँ। अगर आपको यह पसद आये, तो आप बजा सकते हैं।"

रामने हाथमे फिडल लिया। नोवाका चेहरा देखकर ही अुसका हाथ काँप अुठा। अुसका हृदय भी हिल-सा गया। आँखें झुकाकर अुसने बजाना शुरू किया। अुसकी चिरसचित भावनाअें अँगुलियोंसे तारोमें प्रवेश कर बोलने लगी। अब वह फिडल बजता नही बोलता था। क्षणभरमें स्टुडियो के कोने-कोनेमें रामकी मनोकामनाअें अपना राग अलापने लगी। नोवा अुसकी अगुलियोंका नृत्य देखती ही रही। जैसे फिडल पर अुसकी अगुलियाँ नाचती थीं, वैसे ही अुसके चेहरे पर मनोभाव नाचते थे। राम बजाता जाता था और नोवा प्रेम और वात्सल्यसे अिस कलाकारके हावभाव देखती जाती थी। अेक कलाकारने दूसरे कलाकारका हृदय देख लिया। दोनो हृदयोने मित्रता स्वीकार की। रामका फिडल मौन हुआ। फिडल नीचे रखकर वह जानेके लिअे तैयार हुआ। "अब जाअूँ न!"—रामने पूछा।

"आप महान कलाकार हैं!"—नोवाने विनयसे कहा—"आपकी जब अिच्छा हो, चले आवे। जितनी देर बैठना चाहें बैठें। जब जो चाहें पूछ ले! मुझे जो आता है, वह सब बताअूँगी। आशा है, बदलेमें मुझे भी आपकी कला सुनने-देखनेको मिलेगी।"

अुस दिनसे राम नोवाका भक्त बन गया। नोवा रामकी माँ बनी। अुसने रामसे सगीत सीखा नही, किन्तु वह जो बजाता अुसे कान देकर सुनती थी। अुसके जानेके बाद वैसा ही बजानेका प्रयास करती। अुसको अपने पश्चिमी हाथोंसे पूर्वीय ध्वनियोका निर्माण न कर सकनेका भय था। फिर भी वह अपनी शकाअें रामसे पूछ लेती। रामसे अुस विषयमें चर्चा करती। अिस प्रकार दोनो परस्पर सहयोगसे कलाकी साधना करने लगे।

रामका अभ्यास-क्रम बडा विचित्र था। वह नोवाकी पालतू बिल्लीकी तरह चुपचाप स्टुडियोमें आता। नोवाकी ओरसे स्वागत शब्द निकलने तक

वही किसी कोनेमें चुपचाप खडा रहता। नोवाका स्टुडिओ, घर सब वही था। वहाँ जो दूसरा प्राणी रहता था, वह था अुसका पिता ! दोनों हिटलरके वर्णद्वेषकी वलि थे। वहाँसे भागकर वेचारे वम्वअीकी शरणमें आअे थे, शान्त मनसे भारतमें मेहमान वन गअे थे। राम अुसको चित्रण करते समय देखता था। अुसके निर्माण किअे चित्र, स्केच तथा अन्य सामग्री देखता था। किताबोंका अवलोकन करता था। "आपको जैसा आता है, वैसे अंकित कीजिअे।" नोवा अुससे कहती और वह अंकित करने लगता। तब वह मांकी ममताके साथ कहती—"अैसे नहीं अैसे यहाँ यह रंग अच्छा नहीं होगा, यह लो!"

अुसने जान लिया था चित्र-सृष्टिके लिअे आवश्यक हृदय अिस तरुणके पास है। अिसमें प्रतिभा है!

अेक दिन दोनों वातें कर रहे थे। अुसने रामके गृह-जीवनके वारेमें पूछा। रामने यहूदियोंकी रामकहानी सुनकर आँसू वहाअे थे। सोचता था— अुन्होंने जो कष्ट अुठाअे, अुसके सामने हमारा कष्ट क्या है? फिर भी नोवाके सामने अुसने अपनी माका जीवन सविस्तर सुन्दर रंगोंमें चित्रित किया। अुसने प्रयत्नपूर्वक, विचारपूर्वक, श्रद्धासे अुसे अुज्ज्वल वनाकर दिखाया। अुसके वाद मानो कोअी वालक मांको अपनी सम्पत्ति दिखा रहा हो, अिस भावनासे अुसने कहा—"हमारा घर समुद्रके किनारेपर है। अेक ओर समुद्र और दूसरी ओर समुद्रमें डूवनेके लिअे दौडनेवाली नदी!"

समुद्रकी वातें करते समय वह कहा करता था—"वम्वअीके समुद्रको देखकर मुझे अत्यन्त दुःख होता है! अिसको देखकर अेक प्रकारका दर्द होता है।" अुस दिन वातें करते-करते अुसने सामने पडा फिडल अुठाया। अुसे अेक दिन रातको समुद्रके किनारेपर मांके साथ वजाया हुआ राग याद आया। अुसी स्मरणसे अुसने वजाना शुरू किया। पता नहीं वह कितनी देर तक वजाता वैठा रहा। वाहर गया हुआ नोवाका पिता भी आ वैठा। अुसको आया देखकर रामने फिडल रख दिया। अुसके फिडल रखते ही नोवाने पूछा—"आपके घरके सामनेवाला समुद्र अितना अच्छा है!"

अुस दिन वह अेक अनिर्वचनीय स्वर्गीय आनन्द अनुभव करती थी। अुसने रामसे कहा—"राम! अेक वार अपने मित्रोंको वुलाना चाहती हूँ! क्या तुम अुनके सामने वजाओगे?"

"मुझे क्या आता है कि मैं अुनके सामने बजाअूं? जैसे मेरे चित्र है, वैसा ही मेरा सगीत है! मानो किण्डर गार्टनका प्रदर्शन है!"

रामकी बात सुनकर वह हँसी। अुसने अपने मित्रोंको रामका फिडल सुनानेका तय किया।

अगले रविवारको अपने जैसे ही अन्य यहूदी मित्रोको अुसने बुलाया। सब हिटलरके वर्णद्वेषके शिकार थे। सारेके सारे अपना घर-बार छोडकर शरणार्थी बनकर बम्बअीमें आअे थे। नोवाने अपने अुन युरोपीय मित्रोको रामसे परिचय कराया। रामको भी अुन लोगोका परिचय प्राप्त हुआ। अेक बार राम अुन सबके सामने बजाने बैठा। अुस दिन वहाँ अिकट्ठे हुअे यहूदियोंको देखकर अुसका मन दूसरी ही ओर चला गया। अुनका दुःख महान् सागर बनकर अुसे डुबो रहा था। अुसी प्रेरणासे अुसका फिडल बोलने लगा। वह यहूदियोंकी दुःखगाथा गाने लगा। देश-देशान्तरसे भूख, दुःख, अपमान आदिकी वेदनाओंसे भुने हुअे यहूदियोको अुसके फिडलने मोहित कर लिया। अुनको लगा, रामका संगीत अुनके हृदयका रोना है। अुसकी प्रत्येक लहरियोमें, अुसके फिडलके प्रत्येक शब्दोमें, अुन बेचारोकी वेदना यातनाओका दर्शन हो रहा था। वे सब आपसमें कानाफूसी करने लगे "अद्भुत है!" नोवाको अुस रोज अिस नअी खोजपर अत्यत हर्ष हुआ।

महीनेके बाद महीने सरक गअे। रामकी आमदनी नही बढी। पहले जो दो घरोमें सगीत पढाने जाता था अुसके तीन नही हुअे। अेक-दो बार अुसने प्रयत्न भी किया। नअे नही मिले अितने ही नही, जो मिले थे, वे भी कोअी आसानीसे निभते जैसे नही मालूम होते थे। क्योंकि शिवानद राय और अुडपीराय दोनो अेक ही जातिके थे। पहले वही शिक्षकको सिखाते थे, अुसके बाद वैसा ही बच्चोको सिखानेके लिअे कहते थे।

अुडपीराय तो परम वैष्णव थे। वह "बच्चोको भगवानके चार भजन सिखाअिअे" कहते थे। पूर्व पुण्यसे माँके सीखते समय अुसने कान देकर सुना था। सुब्रायके मुंहसे सुने कुछ भजन अुसको याद थे। वही वह सिखाता था। फिर भी सप्ताहमे अेक भजन सिखाना पडता था। बेचारा भजनोकी अितनी पूंजी कहाँसे लाता? अुसको लगा, जल्दी ही पूंजी खतम हो जानेपर मेरा दिवाला निकल जाअेगा।

और शिवानन्द राय सप्ताहके दो पाठोंमें "लडकीको यह राग सिखाओ, वह राग सिखाओ" कहते थे। पता नहीं अुनको सगीत आता था भी, हाँ रागोका नाम अवश्य जानते थे। अुसमें भी अत्यत अपूर्व राग ही वह चुनते थे। राम अुसे गाता, तो अच्छा, नही तो वह भी अेक आफत थी! फिर भी "केवल राग या गाना ही सगीतका विषय है।" यह राम नही मानता था। रामके सब सब राग और आलाप अुसकी अपनी सृष्टि-पर खडे किअे गअे थे। वही अुसका स्रष्टा था। अिसके लिअे अुसे घरमें वैठकर स्वय अभ्यास करना पडता था। तभी वह अुनका पाया मजबूत कर सकता था। यह ढग अुमको पसद नहीं था। किन्तु मासिक बाओीस रुपयोके लिअे अुसे अपनी अिच्छाके विरुद्ध चलना पडता था।

वह अपनी आमदनीमेंसे मासिक पांच रुपये अपनी मांको भेजता था। यहाँ अुसका, खाना, कपडे, ड्राअिग, पेपर, ब्रश, रग सब मुफ्तमें नही आता था। अव वह सपूर्णतया 'फ्रेंड-रूम' का मेम्बर वन गया था। मारुतिकी पत्नी आ गअी थी। वहाँ वैठनेके लिअे भी जगह नहीं थी, अिसलिअे वह अधिक-से-अधिक समय अपने मित्रोके साथ विताता था। वह जब अुस कमरेमें रहता, गगाधरकी जबानमें मानो ताला लग जाता था। वह वेचारा कहाँ तक सहन करता?

गगाधरने किसी स्नो अेजन्सीका काम लेकर दो-चार महीना मौज किया। वह वम्बअी सूबेमें चक्कर काट आया। मासिक पचास रुपयेकी नौकरी पाकर खूब अुछला। किन्तु पर्याप्त ग्राहक और पते पाते ही कम्पनीने अुसे अलगकर दिया। अुसके वाद ही फ़ौरन टौयलेट व्यवसाय भी वुर्जुवा होनेसे, साम्यवादमें अुसके लिअे स्थान न होनेका निर्णय किया गया।

दिन सरकते गअे, वम्बअीकी जमीन गरम होकर आखिर वर्षा शुरू हुअी। जून आते ही वेचारेको अेक-दो कौर खाना कम करके छाता लेना पडा। महीनाभर चाय पीना छोडकर छाता लिया। अुसके जीवनकी अेक-अेक आवश्यकता अेक-अेक प्रकारके त्यागकी मांग करती थी। फिर भी 'फ्रेंडस् रूम' में सम्मिलित होनेपर वह अुन्हींकी तरह अुल्लासों और अुमगोंसे भरा रहता। आजकल अुसको अुनकी तम्वाकू और धुंअेंको सहनेकी आदत हो

गओी थी, अिससे सिरमें दर्द नही होता था। प्रथम तो वह अुसे अत्यन्त कष्टसे सहन कर पाता था।

गगाधर अुसे देखकर "मि० रामराव, सिगार न पीनेवाला आर्टिस्ट भी किस कामका ?" कहकर अुसकी मजाक अुडाता। रामको भी पता नही सिगरेटकी भूख लगती थी या नही ! किन्तु जो रोटीकी भूख ही ठीक तरह नही मिटा सकता, वह भला सिगरेटकी भूखको कैसे मिटाता ? सिगरेट क्या मुफ्त आती है? वह भी असकी जेवसे अपना हिस्सा मांगे, तो अुस तग जेवका कौन-सा हिस्सा देगा ? अिसी डरसे अुसने अिन सव आकर्षणोंसे अपनेको बहुत दूर रखा।

वर्षा ऋतु आगे बढती गओी। अुसीके अनुसार दुनियामें मनुष्योकी अुम्र भी आगे बढ़ती गओी। अुडपीरायकी लडकी भी वड़ी हुओी। अुडपी-रायको अिसका भान हुआ। तभी अुन्होंने अुसका व्याह भी कर दिया। रामको व्याहका न्यौता आया। व्याहके दिनका फलाहार ही रामके लिअे अुस घरका अन्तिम फलाहार था। अुस दिन घर आते समय अुसका चेहरा मुर्झाया आ था। रामको देखकर शकररावने पूछा—"आज स्टुडियो नही गअे क्या ?"

रामने जवाव दिया—"व्याहका अर्थ सगीतकी मृत्यु है !" अगली वात अुसको कहनेकी जरूरत नही थी। अब अुसको और कोओी काम ढूंढना चाहिअे।

"तब तो और कही काम ढूंढना चाहिअे न ?"—शकररावने कहा।

"विना ढूंढे जीवननैया कैसे पार लगेगी। ख़ैर, अिस वर्षा ऋतुके आखिर तक अथवा सालके आखिर तक यहाँ रहूँगा। अिसके आगे मेरे लिअे बम्बओीका रहना खतम हो गया !"

"बस ! अितनेमें निराश हो गअे ? क्या चित्रकलाका अभ्यास छोड दोगे ? अरे, यह बुजुर्वा शहर है। अच्छी तरह चित्रकला आअेगी, तो जीवन-नय्या चलानेमें कठिनाओी नही होगी। किसी मिल-मालिककी तस्वीर खींच दोगे, तो पांच सौ रुपअे हाथमें आ जाअेंगे। तब हमारी तरह दस-पन्द्रह गिननेकी जरूरत नही रहेगी !"

"अुसीके लिअे क्या मैं कलाकी अुपासना करता हूँ अुसके लिअे नही सीखा। जैसे सगीत-कलासे अिस शहर हल नही होता, वैसे ही चित्र-कलासे भी नही होता। मालकिनका जीवन भी जैसे-तैसे चलता है। सचमुच अुस है। अिस शहरके लोगोको मुफ्तकी या सस्ती कला चाहिअे लगाकर पाँच-सात रुपअे लेनेवाला कलाकार चाहिअे।" " ही मार्ग दिखाती है। किसी प्रदर्शनमे आकर अेकाध राजा- सौ रुपअे देकर अेकाध चित्र ले लिया तो अिससे क्या होगा? क्या दशा?"

गगाधर रसिक सुग्रीव है। अुसने कहा—"राजा-महारा सुन्दर तरुण स्त्रियोका नग्न चित्र ही चाहिअे। वैसे चित्रोंके कला प्रेमी बनते है।"

"हाँ . यह भी ठीक है। . खैर, मैं बम्बअीसे तृप्त अगर भूखो मरना ही है, तो यहाँ मरनेंसे घरमें मरना क्या बुरा? भूखो मरनेमें क्या अधिक गौरव है?"

"मि० रामराव! तुम कुछ भी नही समझते! हम पच्च बाद पैदा हुअे। पिछली पीढीमें पैदा होते तो आज हम मजेसे रहते समयके मैट्रिकवाले आज छह सौ-आठ सौ वेतन पा रहे है! अब होनेपर भी तीस-चालीस मिलना मुश्किल है!"

गगाधरकी दृष्टिमें "केवल सिनेमा आर्टकी कीमत आज रह गअी किन्तु चार-छह सालमें जब बोलशेविज्म आअेगा . ये डायरेक्टर स्टार..... सब मटियामेट हो जाअेंगे . ...वह कहता।" शकरराव मे जर्नलिज्म (सम्पादन-कला) सीखना ही सबसे अच्छा होगा। अेकाध जर्नल शुरू करके बम्बअीकी अिन सिनेमा तारिकाओको अपनी कलम डालना चाहता हूँ!

"अिनके लिअे अलग पत्रिका नि[illegible] जरूरत है! कितनी ही पत्रिकाअें है! अच्छी तरह [illegible] र-गर्भित करनेसे भला कौन नहीं छापेगा?"

"अरे रामराव ! तुम अभी बच्चे हो ! पता नही मेरी सर्विस कितनी हुअी ? मैंने पत्र-पत्रिकाओमें भी लिखा है। वह सब कूडेकी टोकरीमे ही गया। अगर वे सब अिस तरहकी आलोचनाअें प्रकाशित करने लगें, तो भला अुनको सिनेमाके विज्ञापन कैसे मिलेगे ?"

रामको अब पर्याप्त नागरिक-प्रपचका अनुभव हो चुका था। अैसी बातोपर वह भी हँस देता था। किन्तु अब अुसका विश्वास हो गया था, कि मेरे जीवनकालमे समाजवादी व्यवस्था नही प्रारम्भ होनेकी। अुसका समाजवाद पहले हँगारकट्टेके काँग्रेस-आफिसमें अब 'फ्रेंडस् रूम'में जिन्दा है, किन्तु अुसकी हवा बाहर समाजमें फैलेगी, आँधी बनकर बुर्जुवा समाजको ढा देगी, यह विश्वास अुसके मनसे खतम हो चुका था।

वर्षाकालमे नागवेणीके पत्र बार-बार आते रहते थे। अुसकी अेक ही रटन थी। बेटा, अब घरपर आ जा ! गाँवोंके चारो ओर कअी स्कूल है। वहाँ क्या तू शिक्षक नही बन सकता ? बी अे पास होनेपर क्या पन्द्रह रुपअे नही मिलेगे ? यही सुखसे रह सकते हैं। दूर कही अपरिचित लोगोंके सामने भूखों मरनेमें क्या अधिक प्रसन्नता होती है ? यहाँ हम हैं, अपनी गरीबी है ! अगर भूखों मरना ही है तो अपने ही घरमें क्यों न मरे ?

रामकी ट्यूशनका अेक घर समाप्त हुआ। अुसकी जगह दूसरा मिलना आसान नहीं था। और क्या शिवानन्दरायकी लडकीका ब्याह नही होगा ? रामके मनमें अिसी प्रकारके विचार आते थे। अुसने क्रिसमस (बडा दिन) को बम्बअीके जीवनके अन्तिम दिन मान लिया, और अपना चित्रकलाका अध्ययन पूरा करनेका अिरादा कर लिया। अिसी बीच गाँव लौटनेके लिअे धन भी अिकट्ठा करना था। साथ ही सम्भव हो सका, तो माँके साथ चार दिन निश्चिन्त बितानेका प्रबध भी कर लेना था ! किन्तु अुसकी सोची आखिरी कल्पना अेक स्वप्नमात्र थी।

जीवनके अिस कठिन कालमें माँके अेक पत्रने अुसको अत्यन्त प्रफुल्लितकर दिया। अेक दिन अुसको अपनी माँका अेक पत्र मिला। अुस पत्रमें वर्षाकालकी मुसीबत और आघातका रोना था। अुसमें लिखा था, वर्षाकी झड़ियोंसे हमारे देवघरके बरामदेकी दीवारे गिर गअी हैं। हमारे

पूर्वजोने घरकी छत खपरैलकी वनवाओी, किन्तु देवघर घासका ही रखा। मैं यही सोच रही थी कि छप्पर चूकर अुसकी दीवारे गिर पड़ीं।

अिस पत्रके दूसरे ही दिन रामके हाथमें और अेक पत्र पडा। वह नियमित रूपसे पन्द्रह रोजमें अेक पत्र लिखती थी। अव दूसरे दिन ही आये अिस पत्रको देखकर राम चकरा गया, किन्तु यह पिछले पत्रोकी तरह नही था। अिसमें अुसकी कल्पनासे वाहरके शुभ समाचार थे। अुसने स्वप्नमें भी अैसी वात नही सोची थी। अुसमें लिखा था—"गिरी दीवारकी मिट्टी मैं खुद अुठा रही थी। अुसी मिट्टीमें अेक छोटा सा डव्वा मिला। अुसमें रानीके सिरके पचास पवन थे। यह तुम्हारे दादाका ही काम था। विना अुनके और कौन अैसा करेगा भला?" अितना लिखकर आगे लिखा था। "वेटा राम! अव भला वहाँ क्यों परेशानी अुठा रहा है? यही आ जा! थोडीसी जमीन लेकर यही खेती करेगे और खुशीसे रहेगे।"

राम अपने जीवनमें अिस स्वप्नके साम्राज्यमें जितना प्रफुल्लित हुआ, अुतना कभी नही हुआ था। रातको अुसने स्वप्नमें देखा "न केवल देवघर किन्तु सारा घर गिर गया, अुसकी प्रत्येक दीवारमेंसे अैसे ही डव्वे निकले, जिससे अुसने वम्वओीमें ही शानसे रहना शुरू किया। वह अव मोटरपर वम्वओीकी सैर कर रहा है, अगर यकायक अुसकी मोटरके सामने कोओी न आ जाता, तो पता नही अुसका सुखस्वप्न और क्या-क्या दिखाता! अुसकी मोटरके सामने कोओी आ खडा हुआ और गगाधर "जादू हा, जादू हा - जादू" कहते विस्तरेपरसे अुठ बैठा!

राम लजा गया। रामको सदेह हुआ—"आखिर माँका वह पत्र भी तो स्वप्न नही।" फिर अेक वार अुसने जेवमें ठूंसा हुआ पत्र निकालकर पढा। पढकर अुसका हृदय अुछलने लगा। रोमरोम खुशीके गीत गाने लगे। अुस रविवारको अुसने अपने फ्रेंडस्-रूमके मित्रोको चाय देनेकी वात कही। अिसके लिअे अुसने कुछ अुधार भी किया और अपने साम्यवादी मित्रोको खुश किया।

अुसके दूसरे दिनसे अुसका अेक पैर स्टुडियोकी ओर वढ़ता तो दूसरा घरकी ओर। अुसकी अेक आँख नोवा माँको देखना चाहती थी, तो दूसरी

नागवेणी मांको। अेक दिन अुसने बडे दुखसे अपनी नोवा मांसे कहा–"अब में महीने भरसे अधिक यहां नही रहूंगा। अगले महीनेमें अपनी मांके पास चला जाअूंगा। अुसको देखे बिना बहुत दिन हो गअे... ।"

"फिर तुम बम्बअी आओगे न? तुम्हें चित्रकलामें रस आता है। अुसमें तुम्हारा हृदय खिलता है। किन्तु आरम्भमें तुम्हे पैसे नही मिलेंगे।"—नोवाने कहा।

"अिसीलिअे तो में गांव जा रहा रहा हूं। मेरी मां, और मेरा वह समुद्र! बस अुन्हीसे मुझे सतोष मिलता है। यहां आपने कलाकी ओर देखनेकी आंखें दी। सृष्टिके सौंदर्यको महसूस करनेका हृदय दिया। अब मै वहां जाकर अिसका अभ्यास करूंगा। कलाकी अुपासना करूंगा।"

अिसके बाद वह क्रिसमस तक जितनी बार वहां जा सका, गया। घंटोंतक वहां बैठकर चित्रण करता। अिससे अधिक अुसने नोवाके चित्र विषयोंके चुनावका अध्ययन किया। जानेसे दो-चार रोज पहले रामने नोवासे पूछा–"आपको तो समुद्रसे बडा प्रेम है, किन्तु आपने समुद्रका चित्र अेक भी नही चित्रित किया, यह क्यों?"

"हम समुद्रके किनारे नही रहते। हम पैदा हुअे और बढे पर्वतीय प्रदेशमें। हां, आजकल समुद्र कुछ नजदीक हुआ है। वहां भला समुद्र कहांसे आता?"—नोवाने कहा।

"यहांका समुद्र मेरे गांवका समुद्र नहीं है। बचपनमें अुसीकी लहरे मेरी लोरियां थीं। अुसका गाना हमारे घरतक सुनाअी देता था। यहांका वह शान्त समुद्र देखकर अैसा लगता है कि अिसने अपना कुछ खो दिया है। अैसा लगता है अिसके पास हमारे गांवके समुद्रकी तरह आत्मा नही है।"

"तब वहांसे मेरे लिअे अेक समुद्रका चित्र चित्रित कर भेजोगे?

"यही मेरी लालसा है!"

"राम! तुम्हारा यह देश कितना सुन्दर है! किन्तु सबको गरीबीकी निराशामें जीना पडता है।"

"हाँ ! किन्तु आपके देशमें क्या हुआ ? वहाँ गरीबीकी निराशा तो नही है। पर वर्णद्वेषकी आग है ! आप सबको अुसीमें जलना पडा। वही आप लोगोंके लिअे मौतसा हो गया न !"

"हाँ ! बेटा !! नही तो भला। हमें क्यो यहाँ बम्बअीमें आना पडता ....!! राम, यहाँ बैठकर रोज वहाँके अुन सुन्दर जगलोंका स्वप्न देखती रहती हूँ ! कोअी भी देश हो, कितना ही सुन्दर हो, किन्तु अपने जन्मस्थानकी सुषमा अुसमें नहीं आ सकती !"

"मुझे भी अैसा ही लगता है !"

× × × ×

क्रिसमसमें लोगोसे भरा "नेत्रावति" जहाज लोगोंसे भरा "प्रिन्सेस डाक" पर आ खडा हुआ। फ्रेंडस्-रूमके सब मित्र रामको विदा करने आअे थ। शंकररावने अुसका हाथ पकडकर कहा—"अगर यहाँ कोअी चान्स मिला, तो तुम्हे लिखूँगा !"

यह सुनकर गगाधरने कहा—"रामराव ! तुमने सिनेमा स्टुडिओकी ओर कदम न बढाकर नोवा स्टुडिओकी ओर कदम बढाया, यह तुम्हारी ही गलती थी।"

अितनेमें रामने आँखोंसे अिशारा करके कहा— "नोवा वहाँ आ रही है !" नोवाने अेक छोटा-सा चित्र अुसको स्मरणके रूपमें दिया और कहा— "यह हमारे घरका पिछला पहाड है!" साथ ही स्टीमर बोल अुठा। नोवाका चेहरा देखकर रामकी आँखोमें आँसू भर आअे। मनमें आया—"पता नही अपना गाँव छोडकर यहाँ आअी नोवा माँ अपने गाँवके लिअे कितनी व्यथित रहती होगी !"

आखिर नोवाने "तुम्हारा वादा तुम्हारा समुद्र.." कहकर अुसको पुन स्मरण दिलाया।

"अच्छा ! मैं नही भूलूँगा।"

राम यह कह ही रहा था, कि जहाजने बंबअी छोड दिया।

: ३० :

प्रात कालका समय, समुद्रका किनारा, और पासवाले जगलपर पतली-पतली ओस फैल रही थी। मकर मासकी ठडी हवासे लोगोके दांत कटकटा रहे थे। आकाशमें अब भी चन्द्रबिम्ब था, अैतालके बाग और अिर्दगिर्दके जगलमें पक्षी अपना मधुर गान कर रहे थे। अेक पतला कपडा पहने सोअी नागवेणी जगी। अुसने रामको जगाकर कहा—"राम! पूरबमें सोना चमका! तम्बाकूके खेतमें पानी डालना है न!"

रातभर राम अपनी मांसे बातचीत करते बैठा रहा। अुसके बाद फिडल बजानेमें और रात बीत गअी। वह बेचारा पौ फटते समय कैसे अुठेगा? नागवेणीकी पुरानी आदत थी, अिसलिअे वह अुठ बैठी। अुसने लडकेको जगाया। "आं! क्या हुआ मां!" कहकर राम भी आखिर अुठा। दोनो घरके पश्चिमके खेतमें गअे। सामने सर्वत्र ओस पडी थी। वहांसे समुद्र आधा ही दीखता था, किन्तु अुसका अुदय-राग सुनाअी देता था। दोनो खेतमें गअे। अुन्होने नअी-नअी तम्बाकूकी खेती की थी। अुसके चारों ओर कांटे डालकर बांध बांधा था। वही पानीका गढ़ा भी बना रखा था। राम और नागवेणी पानी खींचकर अेक-अेक घडा पानी तमाखूके पेडोंमें डालने लगे। जैसे-जैसे काम करते गअे, वैसे-वैसे कलेजा कँपानेवाली ठडक भी कम होती गअी। अब शरीरमें अुष्णता आ गअी थी। रामने गमछेको अपनी दादीकी तरह सिरमें बांधा। सिचाअीका काम होने तक सूर्यने आकाशमें चारो तरफ फैले कुहरेको काटकर फेंक दिया। तम्बाकूके पत्तोपर पडी ओस धूपमें पिघलकर जमीनपर टपटप टपकती थी। बागमें अेक ओर पानी खीचनेका काम खतम कर नागवेणीने पूछा—"बेटा! आज थोडा-सा पालक अुखाडूं क्या?"

"क्या आज पालककी जेवनार है ?"

"और क्या है, बेटा ? अगर चाहो तो कच्चे खीरे हैं। कहो तो अुनका सासम बनाअूं ।"

"माँ ! अुन कच्चे खीरोंको क्यों तोड़ें ?"

माँने पालक अुखाडी । अुसके बाद बोली—"राम बेटा, अब मैं घर जाती हूँ । और तुम ? आकर नहाओ और खाकर "

"माँ ! आज रविवार है । स्कूल नही है । मैं समुद्रपर होकर आता हूँ । मेरा चित्र आधा बना है। अुसे कब पूरा करूँगा ? कब बम्बअी भेजूंगा ? घरमें आअे तो तीन साल पूरे हो गअे ।"

यह कहकर राम समुद्रकी रेतीमें घोडेकी तरह दौडा । किनारा आते ही बच्चोकी तरह वहीं बैठ गया । वह समुद्रका अवलोकन करने लगा। प्रातःकालकी सूर्य-किरणे, अुछलकर गिरनेवाली बडी-बडी लहरे, अुछलनेवाले अुनके तुषारों, और किनारेपर फैलनेवाले फेनको चूमती हुअी कभी नारगी तो कभी स्वर्ण, तो कभी और किसी रगमें रग रही थीं । प्रातःकालकी कोमल किरणोकी सुन्दर तूलिका समुद्रके सौंदर्य और सुषमाको अनन्त गुना अधिक मनोरम बना रही थी । समुद्रकी प्रत्येक लहरका वह हास्य और नृत्य, वह मूर्च्छना और मुस्कान, वह रग और रूप, रामके हृदयपर अकित होता था । और रामको अँगुलियाँ किनारेपर अुसकी प्रतिकृति अुतारनेका प्रयास कर रही थी ।

धूप तेज होकर, पीठ और सिर गरम होने तक वह वैसे ही बैठा रहा । अुसी समय कधेपर जाल डाले मोगवीर चेन्ना अुस रास्ते आया । अुसने "कौन मास्टर जी ! आज स्कूलमें छुट्टी है क्या ?" कहकर मानो रामको जगा दिया ।

"चेन्ना ! आज केवल मारीबले ही है, स्कूल नही है ।"

"मास्टर जी ! महीना भर हुआ मारीबलेको भी छुट्टी मिल चुकी है । पर बँगे मछलियाँ आती ही नही ।"

"अरे चेन्ना ! तुम्हे क्या बँगे मछली ही चाहिअे ? वे नही तो हुँदी मछली तो पकडनेको हैं ही ।"

"वाह मास्टरजी ! हदी मछली खाअेंगे तो मर जाअेंगे। अच्छा ये सब बाते रहने दीजिअे। आप यह बताअिये, हमारा लडका पढनेमें कैसा है? न कुछ लिखता है, न पढता है।...हाँ, जरा लिखना-पढना आ जाअे, बस, मुझे तो काला अक्षर भैंस बराबर होनेसे क्या कहूँ कितना पछतावा होता है।"

"वह न आना ही अच्छा है चेन्ना ! हमारे बापूको वह आता था, तभी दादाकी सारी मिलकियत अुडपीके महाजनके पेटमें चली गअी !"

"किन्तु, सुना है अुसे आप वापस लेनेवाले हैं।"

"देगा-तब न लेंगे ! और हमारे हाथमें कुछ हुआ तब न !"

"भगवान चलाता है सब ! अिस साल आपकी तम्बाकूकी फसल बहुत अच्छी है। मैंने आपका खेत देखा है। मैंने जो मछलियोका खाद दिया था, वह कैसा रहा?"

"चेन्ना ! तेरा दिया खाद अितना अच्छा निकला कि मुझे लगता है तेरा ही खाद बनाकर खेतमें डाले, वह तो कितना अच्छा होगा।"

"मास्टरजी ! आपकी तारीफका क्या कहना ! मास्टरजी ! आप अपने घरमें वह फिडलो या कुछ 'टुय-टुय' बजाते हैं, अुसे मैंने सीखा तो क्या मुझे भी बजाना आअेगा ?"

"अरे चेन्ना ! तुझ जैसोंको वह सीखनेके पहले ही आ जाअेगा ? जाने दे ! हम तुम अेक ठेकेका व्यापार करे। मैं तुझे फिडल सिखाता हूँ, और तू मुझे मछलियोका जाल डालना सिखा दे !"

"मजाक तो मास्टरजीकी जबानपर है !"

अुन दोनोंकी हँसी-मजाक हो ही रही थी कि लँगडाती-लँगडाती बच्ची वहाँ आ पहुँची। रामने पूछा—"बच्ची ! तुम्हारी मोटर यहाँ कैसे आअी ? मैंने कल जो दवा दी थी, वह लगाअी या नही ?"

"मास्टरजी ! वह कहने है अदरका जहर जानेके पहले पैर अच्छा नही होगा और आप कहते हैं पैरमें दवा लगा लो !"

"चेन्ना ! में तो अिस बच्चीके पतिको नया काम देनेका सोच रहा था। जैसे तुम फिडल बजानेवाले हो न, वैसे ही मैं अिस कालूको अस्पतालका डाक्टर बनाना चाहता हूँ !"

अुसके बाद अुसने कहा—"बच्चीके पैरमें मोच आओी थी, मैंने दवा ला दी। यह पगली अबतक अुसे लगाती ही नही। क्योंकि अुसके घरवालेने अुससे कहा है कि अन्दरका जहर सब बाहर आ जाना चाहिअे।" मजाक करते हुअे फिर अुसने कहा—"अितना जहर पेटमें रखकर तू बची कैसी?"

चेन्नाने "अरी पगली! मास्टर साहबने अुतनी दूर जाकर तुझे दवा ला दी। चुपचाप पैरमें लगा लेनेकी जगह कुत्तेकी तरह अपनी ही हांकती है! मागवीरके बच्चोकी अिसी शानसे तो समुद्रमें बैगे मछलियोका आना बंद हुआ!"—कहकर अुसको फटकारा।

रामने भी "हाँ चेन्ना! तभी तो हमारे बागकी सब्जीमें कीडे लगे!"—कहकर परिहास किया।

सुनकर चेन्ना हँसा। बच्चीने कहा—"आपकी माँने आपको जल्दी बुलाया है। मर्दत्तिसे आपकी बुआ बच्चोके साथ आओी है।"

"कौन सुब्बी बुआ!"—राम अुछल पडा।

"देखो मास्टरजी! मैं गरीब हूँ, और मूरख भी। मेरी बातोपर गुस्सा मत करना। आपकी बुआके साथ अुनकी दो-तीन लडकियाँ भी आओी हैं। बुआकी लडकीसे व्याह नही करना चाहिअे, अैसा शास्त्रमें भी नहीं लिखा है! दूसरा रिश्ता ढूँढनेकी जरूरत ही क्या है? आपका व्याह भी हो जाना चाहिअे अब। नही तो नागू माँको कब तक रसोओी बनाकर आपको खिलाना पडेगा? और कितने दिन अुनको कष्ट देते रहेंगे!"

"अरी बच्ची! अिसीलिअे मैंने बुआको कहला भेजा था। मैंने कहला भेजा था, रसोओी बनानेके लिअे हमें अेक लडकी चाहिअे। महीनेमें तीन रुपअे वेतन देंगे!"

"अच्छा! ये लडकियाँ रसोओी बनाने आओी हैं! और महीनेमें तीन रुपअे वेतन! अरे बापरे! अितनी तनखाह!"

"वह भी बच्ची मूखी तनखाह! अुनको रोज खानेके लिअे अुडपीके मठमें जानेको कह रखा है!"

"अितनी अुमर हुओी, फिर भी मास्टरजीका बचपन नही गया!" बच्ची अपना निर्णय दे ही रही थी, और राम कबका घरको भाग चुका था।

जाते-जाते अुसने कहा—"बच्ची ! अपनी मोटरको धीरे-धीरे आने दे, मैं जाता हूँ !"

राम घर पहुँचा। बुआ अुसीके स्वागतके लिअे प्रतीक्षा कर रही थी। "ओ बुआ !" रामने दरवाजेसे ही पुकारा।

बुआने रामको "क्या राम ! तुझे भी कितना घमड हो गया है ! घरमें आअे तीन साल हुअे और अेक बार भी हमारे घर नहीं आया ! तुझे देखनेके लिअे मुझे ही तेरे पास आना पडा ! अिन बच्चोंने भी जिद पकडी। सबको ले आअी ! सोचा सालिग्रामका मेला भी देख आअेंगे।"

सुब्बीके तीन बच्चे आअे थे। बडे दो घरमें थे। यहाँ जो आअे थे, अुनमें सबसे वडी पार्वती अुसका तो ब्याह हो चुका था। दूसरी दस सालकी बच्ची जानकी, और अुसका छोटा भाअी रामकृष्ण। जानकीको देखकर रामने कहा—"अरे ! मेरी बीबी भी आ गअी ! अब तो मुझे स्कूल जाते समय जेबमें डालकर ले जानेके लिअे अेक बीबी भी मिल गअी। कुछ भी हो, कहनेके लिअे अेक बीबी भी तो है !" कहकर हँस पडा।

सुनकर बुआने कहा—"राम ! तुझे सभी खेल है। हर बातका मजाक और तमाशा करना ही तू जानता है। और कितने दिनो माँको थकाअेगा ? आखिर ब्याह करके अुस बेचारीका कष्ट तो कम कर ! मैं आअी थी . . .। हाँ, मेरी लडकी तो बदकिस्मतीसे तेरे लिअे छोटी है !"

"अरी बुआ ! छोटी है तो क्या हुआ ? रसोअी तो करेगी ? आखिर ब्याह तो अिसीलिअे है ?"

"दुत् ! अरे तेरा यह बचपन कब जाअेगा ? क्या स्कूलमें जाकर यही सिखाता है, बातूनी कहीं का !"

"और क्या मेरी बुआ ! कोडीके सब लडके अब अैसे ही बातूनी हो गअे हैं ! सबको तेरे रामकी हवा लग गअी है न !"

अितनेमें नागवेणी आ गअी। अुसको देखते ही रामने पूछा—"माँ ! बुआको कुछ जलपान कराया ?"

"नहीं बेटा ! मूंग पकानेको रखा है। ये तो मन्दशक्तिवाले हैं !"

"हाँ माँ ! अुम गाँवके लोगोंको अब भी काफी गरम करती है !"

"पागल ! क्या घरमें काफीके बीज बोअे हुअे है !"

"काफी बनानेके लिअे क्या काफीके बीज बोने ही चाहिअे ? गांधी काफी तो है ना ?"

स्कूल बन्द होनेसे रामने अपने समयको गप हांकनेमें ही लगा रखा था। नागवेणीने रसोअी की। अब तक न बुआ नहाने गअी थी न राम ! नागवेणीने बाहर आकर डांटते हुअे कहा— "आज किसीको खाने-पीनेका विचार ही नही है क्या ?"

अुसके डांटनेपर दोनो अुठकर नहाने गअे। तालावपरसे नहाकर आअे। नागवेणीने सबको खाना खिलाया। सबने पलधा सुडका ! मेहमान आअे थे, किन्तु अिससे कुछ न अधिक जमा था, न कम ! वही रोजका खाना था। हां, बाते कुछ अधिक थी।

दोपहरका खाना हुआ। आरामसे नागवेणी सुब्बीसे बातें करने बैठी। अिसी समय रामने आकर "बुआ ! अुडपी जाता हूं, आधी रात तक आ जाअूंगा। नही तो पौ फटनेके समय तो आअूंगा ही। खेती सिंचाअीके लिअे तैयार है !"—कहते हुअे प्रस्थान भी कर दिया। अुसके जाते समय नागवेणीने कहा—"बेटा ! पड्डुमुन्नूरके शानभागको साथ ले जाना। अुनका और अुस महाजनकी सुनते हैं, खूब पटती है।"

"अच्छा !" कहकर राम पड्डुमुन्नूरको प्रस्थान कर गया। अुसको वहांसे अुडपी जाना था।

अुसके जानेके बाद नागवेणी और सुब्बी अपनी दुःख-सुखकी बातें करने लगी। नागवेणीने दीवारका गिरना, अुसमेंसे धनका मिलना, अुसके बाद रामका आना, रामका खेती करना, और स्कूलमें रामका दस रुपअे मासिकपर मास्टरी करना, सारी बातें अुसने सुब्बीको सुना दी। फिर भी अुसने कहा—"रामका काम स्थाअी नही है। अुसके लिअे ट्रेनिंगकी आवश्यकता है। रामका यह सब करनेका विचार नहीं। अगर यह कायम-पट्टेकी जमीन वे बेचनेके लिअे तैयार हो गअे तो राम कहता है, यही खेती-किसानी करेंगे। मास्टरी जितने दिन चल रही है अुतने ही दिन। नही तो अिसे छोड देना है।"

"अुनको कितने रुपअे देने होगे ?"—सुब्बीने पूछा ।

"पडुमुन्नूरको शानभागने हमारी हालत देखकर घरके पासवाला खेत डेढ़ हजारमें दिलानेका प्रबन्ध कर देनेका वादा किया है। फिर भी पासमें अुतनी नगद रकम नही है। अिस साल तमाखू अच्छी हुअी है। अैसा ही भाव रहा तो किसी तरह अिज्जतके साथ दिन कट सकेगे। मैंने बाबाकी आज्ञाका अुल्लघन किया था, अगर किसी तरह अिसे पुन खरीदा जा सका, तो अुसका प्रायश्चित्त हो जाअेगा और हम भी बिना किसीके अेहसानके गुजारा कर सकेगे।"

सुब्बीने मन-ही-मन बापकी जमीन पुन अुनके परिवारको मिलनेके लिअे शालिग्रामके नरसिंहकी मनौती मानी। आणेगुड्डके सिद्धिविनायकको भी पचखाद्यकी मनौती मान ली। और बोली—"साथ ही सिद्धू पुजारीका बाग भी मिल जाता, तो अच्छा होता। किन्तु रकम कहाँसे आअेगी ? घरके आसपासवाली जमीनकी खेती खुद ही की, तो खण्डमें देनेका चावल तो बचेगा ? खुद खेती करनेपर तीस-चालीस मुडी चावल घर आअेगा ?"

"अुनको कहाँ काफी होता है सुब्बी! अिसीलिअे तो रामने घरके बाडेके पिछले बागमें काजू लगाअे हैं। पहाडकी तीन अेकड जमीनमें केवल काजू ही लगाया है न, अब पेड बढे हैं। दो-अेक सालके बाद फलने लगेंगे। अुनके अतिरिक्त दो अेकड पहलेके लगे पेड है! अिससे किसीको कष्ट तो है नही! जलावनकी आसानी होगी। किन्तु तमाखूकी खेती ?—हाय राम! कडी मेहनत माँगती है। पता है, यह अितनेसे पौधे कितना पानी पीते हैं? अेक दिन भी पानी देनेमें नही चूकना चाहिअे। किन्तु अिसमें जो लाभ है, वह और किसीमें नही है।"

"तू अितना पानी खीच लेती है ?"

"बडी माँकी तरह मुझसे मेहनत नही होती, किन्तु वैसे मै भी काम करती हूँ। नहीं तो घरमें दो आदमियोंकी रसोअी पकानेमें क्या सारा दिन कटता ?"—नागवेणीने कहा।

सुब्बीने रातके समय फिर अेक बार अपने बापके दिनोंका वर्णन किया। अुसने पारोती, सरसोती और सत्याने धरतीपर जो पसीना बहाया

था, अुसका वर्णन किया। साथ-साथ "हमारी मन्दर्तिमें भी क्या दिनभर कम काम करना पडता है ? अितना काम करनेपर भी किसी तरह जैसे-तैसे जी रहे हैं। हाँ, किसीके पास कुछ माँगने-करनेकी जरूरत नही पडती। अुधार-वधार लेनेकी जरूरत नही पडती। अिज्जतसे दिन कटते हैं !"— कहकर अपने ससार (गृहस्थी) का भी नक्शा खीच दिया।

वातें चलती ही रहीं। वातोंसे वातें फूटती रही। अुनका जीवन ही महाकाव्य था। आखिर वातो-वातोंमें सुव्वीने कहा—"नागवेणी ! अव रामकी अुमर क्या है ? चौवीस सालसे अधिक ? अव भी अुसका व्याह क्यों नही करती ? कोअी अच्छी लडकी नही देगा क्या अुसे ?"

"मैं अुसके सामने यह वात नही कह सकती। मैं जानती हूँ, वह क्या कहेगा ? मेरी ओरसे यह वात अुठानेपर वह कहेगा–"माँ ! दो आदमियोको भी जो अन्न पर्याप्त नही, अुससे तीन आदमियोको कैसे खिलाअेगी ? और कल वच्चे पैदा होने लगे, तो अुनको क्या खिलाओगी ?"

"तू भी अैसी ही है न, जैसे 'वहे वयार पीठ वैसे ही कीजै।' कितने दिन वह अैसे रहेगा, क्यो अुसको तपस्या कराती है ? गाँवमें गरीव लोग व्याह करके अपना ससार नही चलाते क्या ? गरीवी-अमीरी क्या अपने हाथकी वात है ? योग्य आयुमें योग्य वात होनी ही चाहिअे !"

"हाँ ! वात तो सही है, किन्तु मुझसे कुछ कहा नही जाता। हाँ, यह जमीन और घर हमारे हाथमें आनेपर घरमें वहू आती तो अच्छा लगता। कुछ भी हो, मुझे जो कष्ट अुठाने पडे, वह अुस वेचारीको नही अुठाने पडेंगे। अिसमें शक नही गरीवी है, फिर भी किसी-न-किसी तरह अिज्जतके साथ रह सकेंगे, किन्तु रामसे व्याहकी वात कहनेकी हिम्मत मुझमें नही है !"

सुव्वीने कहा–"मैं रामको यही कहने आअी थी। अगर वह तैयार है, तो हमारे खानदानमें ही अेक अच्छी लडकी है। अुसको व्याह कर सकते हैं। वे रहनेवाले व्रह्मावरके हैं। किसी प्रकारका झझट नहीं, अुनको केवल दो लडकियाँ हैं, और दो-ढाअी सौ मुडीकी जमीन है। पहली लडकीका व्याह हो चुका है। दूसरी लड़कीकी अुम्र है सोलह साल। गाँवके स्कूलमें कुछ पढी भी है तुम भी अुसे कुछ कहो . हमारे "अुनकी" और व्रह्मावरवालोंकी

अच्छी पटती है। अुनकी रिश्तेदारी भी है। मैंने अुनके जरिअे रामकी जन्म-पत्रिका भी दिलवाअी थी। कहते हैं, दोनोकी पत्रिका अच्छी मिलती है।"

यह सुनकर नागवेणीने कहा—"सुब्बी ! तुम्हारी बाते सुनकर मुझे भी यह सम्बन्ध करनेकी अिच्छा होती है। किन्तु रामसे कौन कहे ? अुसका मन बदलना बडा कठिन है। यहाँकी यह मास्टरी बनी रहती तो अच्छा था। गाँवमें मासिक दस रुपये क्या कम है ? पर यह काम अधिक दिन रहेगा अैसा नही लगता। कहते हैं, अुसके लिअे ट्रेनिगकी जरूरत है। और राम कहता है अब पढ़ना खतम !"

पता नही अुस रातको अुनमें क्या-क्या बाते हुअीं। बोलते-बोलते अुन दोनोको जो नीद लगी, तो सुबह रामके "माँ !" कहकर जगानेपर ही खुली। पड्डुमुन्नूरसे रातको राम चल पडा था और पौ फटनेसे जरा पहले अुसने आँगनमें आकर पुकारा- "माँ।"

अुस दिन तम्बाकूके खेतमें पानी देनेमें नागवेणीके साथ सुब्बी और अुसकी बडी लडकी भी लग गअी थी। राम और नागवेणीके लाख मना करनेपर भी कौन सुनता है ? खेतमें पानी देनेकी जल्दीमें अेक घडेका सहार हो गया। सीचते-सीचते रामने माँको अपने कामकी रिपोर्ट भी दे डाली। अुसने कहा—"पड्डुमुन्नूरके शानभागका अुनपर बडा प्रभाव है। अुनके कहनेसे वह जायदाद वापस लौटानेपर राजी तो हो गअे, किन्तु कहने लगे कि डेढ हजारमें अेक दमडी भी कम नही होगी, पर हाँ, कुछ जमीनका टुकडा और बढाने पर राजी हो गअे हैं। साढ़े-तीन मुडीका खेत, घरके पासवाला बाग, घर, अिसके अलावा अुपाध्यायकी खेतीसे लगी पाँच अेकड जमीन भी देनेके लिअे तैयार हैं !"

"जगह तो खूब होगी, बेटा ! पर अुसमें है क्या ? जगली केतकीके चार पेड भी नही है !"

"अब कुछ नही है, माँ ! किन्तु पाँच अेकड जमीनमें कुछ नहीं काजू ही लगा दिअे, तो भी पाँच साल बाद सालमें पच्चीस मुडी काजू हो जाअेंगे। क्या वह कम है ? अुसके लिअे हमें खर्च भी क्या करना है ? जगलसे काट लाना ! और अिर्दगिर्दकी मिट्टी जमाकर बाँध बाँधना ही है ना !

आज काजूका जो भाव है, वह क्या चावल जैसा है ?"--कहकर रामने माँको समझाया ।

खेतमें सिचाओीका काम खतम हुआ । अब रामका मन कम पडनेवाले दो सो रुपयोपर दौड़ रहा था । अगर तम्वाकूका अच्छा भाव आया, तो डेढ सौ रुपये और मिल जाअेंगे, आखिर पैसेके लिअे अबतक जो व्यवहार हुआ है, अुसमें ढिलाओी न करना ही अुसने अच्छा समझा । और जो थोडी-सी रकम कम पड रही थी अुसे मौसाजीसे अुधार लेनेका निश्चय किया ।

राम भी अब खुश था । वह अपनी बुआसे खुशी-खुशी बातें कर रहा था। अुसमें नया अुल्लास और नओी-नओी अुमगें स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी। फिर भी बुआको भी व्याहकी बात कहनेकी हिम्मत नही हुओी। वह गाँव जानेके लिअे निकली। जाते समय अुसने अितना ही कहा--"राम ! जायदादकी बात ठीक हो जाने दे । मैं अगले महीने आअूँगी, तब सब बात कहूँगी।"

गाँवके दूसरे लोगोंने अपनी तम्बाकूकी कटाओी शुरू की । रामने भी नागवेणीकी सहायतासे कटाओी शुरू करनेके लिअे घरके आँगनमें तमाखू रखनेका मण्डवा डाला। स्कूलकी छुट्टी होनेके बाद शामके समय माँके साथ काम करने लगा । मण्डवा तैयार होते ही 'तमाखूकी कटाओी शुरू हुओी। दोनोंने तम्बाकू काटकर अुसकी गठरी बांध मण्डवेमें लटकाओी। रामने देखा,-"मैं जो तम्वाकूका बीज लाया था, वह अच्छा निकला।"अपने आँगनमें मण्डवेसे लटकनेवाली छोटी-छोटी तम्बाकूकी गठरियाँ देखकर अुसे जान पडा कि वास्तवमें श्रम सार्थक हुआ । पिछले सालसे अिस सालके पत्ते अच्छे हैं। अगर माँगवीर चोन्ताने यह देखा होता, तो अपनी मछलीकी खादका महत्व जरूर सुनाता ।

मण्डवेमें तम्बाकू बाँधी-ही थी, कि मुहम्मद बारी आ पहुँचा। मुहम्मदबारी अुस बाजारका तम्बाकूका व्यापारी था । अुसने रामसे कहा— "मास्टरजी ! अैसे ही ठेका कर लीजिअे। कहिअे, अिस तम्बाकूका क्या दाम दें ? न मोल-तोल है, न भाव-ताव ! जैसे लाटरी डालते हैं, वैसे ही आँखोंके अन्दाज पर व्यापार करता हूँ !"

अुन दिनों तम्बाकूका भाव जरा तेज था। अिसीसे मुहम्मद बारीकी हिम्मत बढी हुअी थी। राम हँसा। रामने कहा—"बारी साहब! आपकी बात हमें मजूर है। आप भाव बताअिये। वही लाटरीका भाव!"

"डेढ सौ रुपये!"—बारीने कहा। वह मण्डवा देखकर वजनका अन्दाज लगा चुका था। अुसने अिसी व्यापारमें बाल सफेद किये थे। राम भी अब चार गाँव घूमा-फिरा था। अुसने भी दुनिया देखी थी। सोचा, 'बारीने डेढ सौ रुपये कहे हैं। अिसका अर्थ है अिसकी कीमत अधिक है!" अिसीलिअे रामने "ढाअी सौ रुपये" कहे। सुनकर बारी चला गया। रामको डेढ सौ रुपयेमें देनेपर नुकसान नही था। घरपर आया गाहक छोडना अुसने अच्छा नही समझा, परन्तु वह चुप रहा।

शामको बारीने औरोंसे मास्टरजीकी तम्बाकू दो सौमें लेनेकी बात कही। दूसरोके द्वारा दो सौमें पुछवाया। राम भी तैयार हो गया।

रोज भाव बढ रहा था अिसीलिअे बारी दूसरे रोज ही आकर दो सौ रुपये दे गया। सप्ताह भरके बाद तम्बाकू तौली गअी। बारीको विश्वास हुआ कि नुकसान नहीं है। नागवेणीके मनमें था, शायद ढाअी सौमें ही जाती। फिर भी रामने कहा—"माँ! बाजारमें भाव तेज था तभी तो दो सौमें ले गया, नहीं तो अुसके दाम डेढ सौ ही थे। पिछले साल केवल अेक सौ बीस ही मिले थे!"

दो सौ रुपये हाथमें आते ही रामने राम मैतालकी जायदाद वापस लेनेका प्रयत्न शुरू कर दिया और सप्ताहके अन्दर ही अपने दादाकी पित्रार्जित जायदादका मालिक बन गया। जिस दिन रामने अपने नामपर अुसे लिखवाया, अुस दिन नागवेणीका अुल्लास अकथनीय था। बीस वर्ष पूर्व अुसके पतिने अुडपी कहकर ब्रह्मावर ले जा वहाँ अुसके नामकी जायदादको अुसीके हाथसे अपने नामपर लिखवा ली थी। अुसके महीने भर ही बाद वह जायदाद हाथमे चली गअी। अुसके चाचाने, किसी तरह अुसी स्थानपर, मालिकसे मजदूर बनकर ही सही, अुनके रहनेका प्रबन्ध कर दिया। मालिकको ही अुसे पट्टेपर लिखवा लेना पडा! किन्तु वह धरती भाग्यमें बदी थी।

जिस धरतीपर अुसके पुरखाओंने पसीना वहाया था, जिस धरतीको अुसने पतिकी वातोंमें आकर खो दिया था, अुसको पुन पा लिया, तव भला अुसे प्रसन्नता क्यो न होती ?

राम भी अत्यन्न प्रसन्न था। माँने लडकेकी अिसी प्रसन्नताके क्षणमें अुसके व्याहकी वात अुठानेकी सोची। आजकल कहकर वह अुसी क्षणकी राह देख रही थी। आज अुसकी चिरसचिन अभिलाषा भी पूरी हो गअी थी। सिर छिपानेको घर मिल चुका था। लाटरी व्यापारसे अुसको किसीसे कर्जा लेनेकी जरूरत भी नही पडी। किन्तु रामको भला कहाँ आराम था ? अव तम्वाकूमें पानी देनेका काम वन्द था। तम्वाकू वोने और कुछ फसल तैयार करनेका भी काम नही था। नागवेणी वही धानकी क्यारीके पास साग-सब्जीकी वाडी लगाना चाहती थी। रामने कहा—"माँ! अिस साल साग-सब्जीकी चिन्ता मत करो! यही आँगनमें कुछ लगा लेंगे।"

"वेटा! आँगनमें कुछ हरी भाजी तैयार नहीं की तो रोज-रोज केवल भात खाकर जी अुकता जाअेगा।"

"अैसा नही है, माँ! वह जो नअी जमीन मिली है, वह आठ अेकडसे कम नही। वह कुछ वजर-सी है, फिर भी कुछको जोतकर मेरा विचार अुसमेंसे तीन-चार मुडीका खेत वनानेका है।"

"वेटा! अैसी जमीनमें धान क्या पकेगा ? वहाँ तो तेरा विचार काजू लगानेका था न, क्या वह वदल गया ?"

"माँ! जहाँ धान होता है, वहाँसे धान अुपजाया जाय, तो ठीक होगा! किन्तु, मै अेकड भर जमीनमें तम्वाकू वोना चाहता हूँ। अुसके लिअे कुछ मजूर लगाने पडेंगे, तो भी कोअी वात नही। धानके लिअे जो तपना-खपना है, वही मेहनत अगर अुसके लिअे करें तो क्या हर्ज ? जो जमीन रेतीली होनेसे खेतीके लायक नही वहाँ काजू वोअेंगे, सुरूनका जगल लगाअेंगे।"

रामने अपने तीन महीनेका वेतन अुस रेतीली जमीनमें डाल दिया। रेतकी टेकडी हटाकर वहाँ समतल मैदान वना दिया। जव समय मिलता, खुद मिट्टी अुठाता। वर्षा प्रारम्भ होनेतक कमसे-कम दो अेकड जमीनको खेती लायक वनानेकी अुसकी जिद्द थी। वर्षा शुरू होते ही रेतका वजन दूना

हो जानेवाला था, अिसीलिअे अुसने न केवल मजदूर लगाअे बल्कि जब समय मिला, खुद मजदूर बनकर धूपमें काम किया। शाम और चाँदनी रातमें नया खेत ही रामका घर हो गया था। खेत आधा ही तैयार हुआ था कि अुसने मोगवीर चेन्नाको बुलाया और कहा--"चेन्ना! तेरे लडकेको ठीकसे अँग्रेजी सिखाना मेरा काम है। तू सौ डेढ सौ टोकरी मछलीकी खाद हमारे लिअे ला दे। अिस साल यहाँ भी मैं तम्बाकू पैदा करना चाहता हूँ।"

सुनकर चेन्नाने कहा--"मास्टर जी! आप अँग्रेजी सीखकर भी मिट्टीमें खेलते हैं, मिट्टी ढोते हैं! तब हम किसानोंके बच्चोको अुस अँग्रेजीकी क्या जरूरत? वैसे तो शाम होते ही हमारे मोगवीरके बच्चे हमेशा अँग्रेजी ही बोलते हैं।"

"शराब पीकर न! चेन्ना! मोगवीरके बच्चे अगर शराब पीना छोड दें, तो तुम्हारे लिअे किस बातकी कमी रहेगी?"

"हाँ! आप अपने अुस गाँधी अेच्चर (लेच्चर) को भूल गअे क्या? अुसे सुनकर हमने क्या पीना नहीं छोड दिया था?"

"हाँ! बोतल पीना छोडकर अब घडे पीने लगे। यही न मेरे गाँधी-अेच्चरका नतीजा हुआ!"

"मै तो कहता हूँ! अगर पेटमें थोडी-सी शराब नही पडेगी, तो हमारा जीवन सूख जायगा। अुसमें जो शक्ति है, वह भैंसके दूधमें भी नही।...किन्तु अिस साल जालमें कुछ नहीं आया। अिससे न शराब मिलती है, न शेंदी! अिस साल जो अच्छी मछली पडी, तो हम मारीबलेवालोने अेक मैंदानी नाटककी मनौती कर डाली। अब अमावस जानेके बाद देखना चाहिअे, क्या होता है। अभी तो कुछ भी नही। केवल जाल फैलाना और खीचना, अितना ही काम है। अेक जालमें दस टोकरी मछलियाँ भी नही आती! और मास्टरजी! अेक साल मछलियाँ पडती हैं, दूसरे साल नही! वे कहाँ जाती हैं?"

"तुम लोगोंके पेटमें!!"

"मास्टरजीकी हर बातमें हँसी, हर बातमे मजाक!" कहकर चेन्ना चला गया। शामके समय सूरज अुतरा और आकाश लाल हुआ। राम डूबते सूरजको देखने समुद्र-तटपर गया।

छुट्टीके समय बना-बनाकर समुद्रके चित्र टाँगे थे। चित्रित करते समयतक अुसका मन कहता—"अिसे नोवाको भेज देंगे।" खतम होनेके बाद कहता—"अरे! यह तो अैसा ही है। मैंने अपने समुद्रकी कितनी प्रशसा की थी! यह चित्र देखकर तो वह हँसेगी!"

वह सोचता था—"अिस समुद्रकी विशालता दिखलानेके लिअे यह कपडा कम ही पडेगा!" और अुसका मन पुन अुसी काममें सलग्न हो जाता।

"अगले महीने आअूँगी" कहकर गअी अुसकी बुआ दो महीने बाद भी नही आअी। आखिर अेक दिन वर्षप्रतिपदाके समय "राम रामा! शिव शिवा!!" करती वह आअी। जब वह थकी-मांदी आअी तो घरमें न राम था, न नागवेणी। बेचारी थकी-मांदी सुव्वी, अुनको ढूंढती हुअी होन्ने जंगलकी ओर गअी। वही होन्नेके बीज चुनती बच्ची भागती-दौडती सुव्वीके पास आअी और अुसने कहा—"मां-बेटा दोनो नअे खेतमें गअे हैं।" मजदूर अपना काम खतम कर चुके थे। अुनकी टोकरियाँ वही पडी थी। अुन्ही टोकरियोंके पास नागवेणी रामके साथ बैठी थी। रामके बदनमें खूब मिट्टी लगी थी। पसीना चूनेवाले शरीरमें लगी हुअी मिट्टीने मानो अुसे मिट्टीका पुतला ही बना दिया था। अुन दोनोको देखकर सुव्वीको आश्चर्य हुआ, और हँसी भी आअी। अुसने कहा—"अैसा लगता है तुम दोनोको हमारी बुआ... सरसोतीका . भूत लग गया है। अुसको भी वर्षा, गरमी, सरदी कुछका ख्याल नही था। बारह महीने अेकसे थे।"

"क्यो बुआ! तुम अब आअी? अगले महीना आना था! तुम्हारे घर तो मूँछ मरोडते बैठे रहने खडका चावल घरके बरामदेमें आ जाता है! यह कोडी गाँव है! जितना पसीना बहाओ अुतना ही कम!"

"हाँ बेटा! तुम्हारी बुआके घर जमीन खडपर चढाकर सब घरमे पैरपर पैर रखकर बैठे ही खाते हैं। अुनके पास बीस-पच्चीस कोर्जी चावल आता है न! हमारी शानके सामने मभ्रान्तोंकी शान भी फीकी पड जाती है।"

बुआकी बात सुनकर हँसता हुआ राम अुठ खडा हुआ। नागवेणीने टोकरियाँ अुठा ली। सुव्वीने अुन्हें अुसके हाथमे छीन लिया। और रामने कहा—"बुआ, चलो समुद्रपर!"

"पता नही अिस रामको समुद्रका क्या पागलपन लगा है। अरे, अुसे कल देखेगा, तो क्या विगड जाअेगा ? रात भरमें क्या पानी सब सूख जाअेगा ? तालावपर जाकर जरा नहा तो आ ! यही स्वाग भरकर क्या समुद्रपर जाना चाहिअे ?"

"हाँ बुआ ! मुझे अिस स्वागकी याद ही नही रही। कल तक समुद्र सूख गया तो ! दिमागमें अेक ही डर था न !"

"नागवेणी ! कलसे रामको प्यास लगे तब भी थोडासा समुद्रका पानी ला दिया करो !"—बुआने कहा।

तीनो हँसते हुअे लाल पडे आकाशकी ओर पीठ फेर कर घरकी ओर चले। घर तक पहुँचते-पहुँचते लाल आसमान काला होने लगा।

अुस दिन राम हँसता दुनिया भरकी वाते करता रहा। बुआ भी अपनी ग्रामीण भोलेपनसे रामके सवालोका जवाब देती रही। अुनकी वाते ससारकी परिक्रमा करते-करते मन्दर्तिके मैदानी-नाटकपर आ पहुँची। रामने पूछा—"बुआ ! अिस साल आपके मन्दर्तिवालोकी मण्डलीमें किसका पार्ट कैसा रहा ? हाँ ... और राक्षसका स्वाग किसने किया ? हमारे गाँवमें तो अबतक अेक भी खेल नही हुआ। मोगवीर चेन्ना कहता था, अिस बार अुनके मारीबलेमें मछली पडी, तो आसार देवके मन्दिरके सामने मन्दर्ति-वालोका अेक खेल कराअेंगे। और अुसका विश्वास है, अिस अमावसके बाद मछली पडेंगी।"

बुआको तो खेलकी बातोंकी नही पडी थी। अुसको तो ब्रह्मावरके नागप्पय्याकी लडकीके व्याहकी पडी थी। वह रामसे अुसके व्याहकी बात करना चाहती थी और राम बातोंकी दिशा ही बदल देता था। रातके बारह बजे, किन्तु अुनकी वाते नहीं खतम हुअी, और कामकी बात भी न हो पाअी।

प्रातःकाल होते ही तम्बाकूके खेतमें जो थोडीसी साग-सब्जी बची थी, अुसको पानी देनेकी रस्म अदा की। अुसके बाद नअे खेतमें जाकर मजदूरोंको वहाँका काम समझाकर घर आया। घर आते ही स्नान, और कोडीके स्कूलके लिअे दौडना। अुसके जानेके बाद बुआने कहा—"नागवेणी ! हमें कहाँ तक तुम्हारे जवाबकी प्रतीक्षा करनी पडेगी ? तुम ही अुससे कहो ! वहाँ

वे मुझपर दवाव डालते हैं। ब्रम्हावरवाले अुनसे पूछते हैं। मैं अुनको कुछ न कुछ वहाना बनाकर रोक रही हूँ। सौ-डेढ सौ मुडी जमीनवाली लडकी देखकर भला कौन अिन्कार करेगा ? अगर यह ना कहता है, तो दूसरे सौ लडके हाँ कहनेको तैयार हैं। अब तुम्ही वताओ मैं क्या करूँ ?"

नागवेणीको भला अुतने अुपजकी जमीन कम थोडे ही लगती। वह नागप्पय्याकी मृत्युके वाद अुनकी लडकियोंको मिलेगी। गरीवीमें अैसा रिस्ता होना वडा आधार था। पर रामको तैयार होना चाहिअे! अुसको लडकी देखकर आना चाहिअे। "अब अपनी जायदाद भी अपने हाथमें आ गअी है। शायद कवूल कर ले! अगर अैसे ही कुँवारा रहना अुसके मनमें होता तो भला जमीन और जायदादके लिअे अितना क्यों तडपता ? क्या यह सब केवल मेरे लिअे ही करता ?" नागवेणीके मनमें यही विचार आ रहे थे, किन्तु यह सुखीके प्रश्नका अुत्तर नही था। किसी-न-किसी तरह लडकेको व्याहके लिअे तैयार करना जरूरी है। अिसी विचारसे वह रामसे बातें करनेका समय ढूँढ रही थी।

शाम हुअी। स्कूलके लडके अपना-अपना वस्ता कधेपर डाल कर घर जाने लगे। राम भी अपने नअे खेतकी ओर गया। अुसने देखना चाहा—कितनी रेती ढोअी गअी ? चारो तरफ कितना वाँध वँध गया ? वर्षाके प्रारम्भ होनेके पहले यहाँ नदीका कीचड डलवाना अच्छा या मछलियोंका खाद ? यही वातें अुसके दिमागमें घूम रही थीं। घरमें अुसकी वुआ, माँकी जान खा रही थी। आखिरमें अुसने "मालूम होता है वह अपने खेतके साथ व्याह करेगा!" कहकर मजाक भी की।

शामका काम खतम हुआ। अैसे ही दो सप्ताह काम करनेसे अेकड भर खेत तैयार हो जाअेगा। अिस साल अितना ही पर्याप्त है। खेत तैयार करनेसे ही क्या सब काम हो गया ? अुसमें खाद डालना है न ? यही सोचते-विचारते वह घर आया। सामने अुसकी माँ झाडू लेकर खडी थी। अुसने अपनी माँसे पूछा—"कहाँ ?"

"नुक्के वागमें जाकर सूखा-फूला वुहार कर लाती हूँ!"—माँने जवाव दिया।

"बुआ कहाँ गअी ?"

"आज रातको अुनकी रसोअी है !"

"वाह ! तब तो माँ झाड़ू अेक ओर रख दे। बहुत दिनोंसे समुद्रकिनारे नही गअे। चलो समुद्रकिनारे चले ! खेतकी दौड़-धूपमें अबतक प्रसन्न मनसे वहाँ बैठना नहीं हुआ।"

दोनो समुद्रकी ओर गअे। पूरी शाम हो गअी थी। सामने आकाशमें अितने पक्षी अुड़ रहे थे मानो अुनसे आकाश काला पड गया था। समुद्री कौवोकी कांव-कांव बीच-बीचमें "कीव" करनेवाली चीलोंकी चीख ! यह सब देखकर रामने कहा—"माँ ! आज हमारे गाँवके मारीबलेवालोकी पाँचो अंगुलिया घीमें हे।"

"अैसा क्यों कहता है ?"

"माँ, सामने देखा न ! अुनके मारीबलेमें आज खूब मछली पडी होगी। नही तो आकाशमें अितने कौवे और चीलोका जमघट न होता ?... अरे ! चेन्नाका भविष्य सत्य निकला। वह कहता था, अमावसके बाद पड़ेंगी ! आज दूज है न !"

दोनो बाते करते हुअे समुद्रकिनारे गअे। दूरसे ही जाल खीचनेवाले मछुवे कोटेश्वरका रथ खीचनेकी तरह हो . हो कर रहे थे। अुस दिन शिकार ही शिकार था, जालमें अितनी मछलियाँ फँसी थी, कि जितनी खीची गअी, अुससे अधिक बाकी रह गअी ! अुन्हें देखनेको ही, आगे बढे और जैसे ही तडफती मछलियाँ आँखोंके सामने आअी, वह "छी ! मुझे भी क्या पागलपन सूझा, मे मछलियाँ देखने आअी !" कहती हुअी वह पीछे हट गअी। पर राम वहाँ गया, जहाँ सब काम कर रहे थे। वहाँ सारा कोडी गाँव अिकट्ठा हो गया था। सब कहते थे आजकी तरह वर्षभरमें कभी मछलियाँ नही पडीं। समय देखकर अुसी दिन ग्राहक भी वहाँ आ गअे। सबका विश्वास था, अुस दिनकी मछलियाँ छह-सात सौ में जाअेगी।

गाँवके शूद्रोका अुत्साह देखकर राम अपनी माँके पास आया। रामने आकर अपनी माँसे कहा—"माँ ! हमारी खेतीका व्यवसाय भी क्या कभी

अैसा होगा ? कुछ भी करे, अुसकी तो निश्चित सीमाअें है । वहां कभी बीसका दो सौ नही होगा ? अधिकसे अधिक बीसका पच्चीस हो ! और क्या ?"

"राम ! जैसे समुद्रका ज्वार भाटा है, वैसी ही मारीबलेकी बात !"

"मां, अिस साल मदत्तिवालोका मैदानी नाटक देखनेको मिलेगा ।"

"हां, शराबकी दुर्गन्धमें नाक पकडकर देखना होगा !"

"यह ठीक है ! हाथमें पैसे आअे, तो ये लोग घडोंसे शराब पीते हैं, नहीं तो अिन लोगोंके लिअे समुद्रका पानी ही अवलम्ब है ।"

"हां बेटा ! मारीबलेकी बाते रहने दे तू ! तेरी बुआ क्यो आअी है अब अिसपर विचार करना चाहिअे !"

"वह क्यो आअी है, अुसीको कहने दे न !"

"दुत्, चोर कहींका ! वह तो तेरे व्याहके बारेमें तुझसे पूछने आअी है ! कहती है ब्रह्मावरके नागप्पय्याकी अेक लडकी है । वह आठवी तक पढी है । घरके अच्छे हैं । लडकी भी देखने-सुननेमे अच्छी है । जन्मपत्रिका भी दिखाअी होगी !"

"हां ! मगर मां, अुस लडकीको तम्बाकूमें पानी देना आता है ?"— रामने हँसकर कहा ।

"राम ! मैं जब मगलूरसे यहां आअी, तब मुझे ही क्या आता था ? मगलूरमे खा-पीकर पडी रहती थी !"

"अिसीलिअे मैं कहता हूं । वहां जो सुखसे रहती है, अुसे यहां लाकर धूपमें सुखानेसे क्या लाभ ? हम सूख रहे हैं, वही क्या कम है ?"

"तो क्या बेटा ! तू अैसा ही रहेगा ? बिना कोअी आधारके भला आदमी कैसे जीअेगा ?"

"हां ..मनुष्य जीता है । जीनेवाला जीता है । अपना कोअी है अिस आधार पर या और किसी आधार पर ! "

"मैं अुसने क्या कहूं ?"

"कुछ भी कहो! कह दो, राम स्वयं मदत्ति आकर अेक दिन बातचीत करेगा ?"

"घरमें आभी बुआसे कुछ नही कहता, वह वहाँ जाकर क्या कहेगी ?"

"अभी मैं भी कुछ नही जानता। हाँ, जब मैं बोलूंगा तभी पता चलेगा।"

दोनो चाँद डूबनेतक वही बैठे रहे। यहाँ सुब्बी रसोअी पकाकर अुन दोनोंकी राह देखते-देखते थक गअी। आते ही नागवेणीने लडकेकी बात कही। तब सुब्बीने खाते समय रामसे पूछा—"राम, मदत्ति कब आवेगा ? सच-सच बता।"

"अेक दिनको आअूंगा तो हुआ न।"

"तू आवेगा! पर कब ? बाबा मुझे भी जवाब देना है! ब्याहके दिन हैं। अुसकी लडकी भी सयानी हो गअी। बेचारा परेशान है। कितने दिनतक वैसे ही रहेगा।",

"बुआ, मैंने कहा न मैं आअूंगा!"—कहकर ही अुसने टाल दिया।

सुब्बी अुदास हो गअी। अुसको कुछ निराशा भी हुअी। अुमके मनमें आया—"यह पागल अैसा क्यों करता है ? घर और जमीनके लिअे दिन-रात अेक करके मरता है, किन्तु चिराग जलानेवाली भी तो कोअी चाहिअे, अिसका क्या अिसको भान नही।" बेचारी जैसी आअी थी वैसी चली गअी। न अुसे निराशा हुअी, न कोअी आशा।

अगली पूर्णमासी आअी। दिन भरकी रेतीली जमीन तपने लगी। धूपसे जमीन तपकर तवा हो गअी। लोग वर्षाकी प्रतीक्षा करने लगे। अेक दिन शामको राम नअे खेतको देखकर समुद्रपर गया था। अुस समय अुसकी आँखोंके सामने ही खिसकते हुअे बादल आकर छा गअे। मानो समय दिनके समय रात हो गअी। तेज हवा चलने लगी। हवाके झोंकोंमें अुडे हुअे लहरोंके तुषार सौ गज आगे जाकर समुद्रके पूरवी किनारेके छोरको छूने लगे। फिर 'घर-घर' वर्षा पडने लगी। राम छाता नही लाया था। वर्षाके कारण वहाँसे दौडने लगा, और जाकर ताडके जगलमें अेक पेडके नीचे खडा हो गया।

हवामें झूलनेवाले ताडपत्रोंको देखकर कहीं अेकाध मेरे सिरपर न पडे, अिस डरसे बार-बार गर्दन अुठाकर अूपर देखते रहना ही अुसके लिअे अेक काम था।

खैर, वर्षा जिस गतिसे आअी थी, अुसी गतिमें रुक भी गअी। आधे घण्टेमें समुद्रमें अुफान आकर बहनेसे जितना पानी निकला, अुतना पानी बह गया। सामनेका जंगल मानो पानीसे भरा तालाब बन गया था। तालकी तरह दिखाअी देनेवाले पानीमें सध्याके लाल आकाश और शीर्षासन करते ताडवृक्षोंका प्रतिबिंब अद्भुत था। अेक ओर अुस शान्त छायाका खेल दिखाअी दे रहा था और दूसरी ओर पश्चिमी समुद्रमें तूफान आया था। अनंत लहरोंके रूपमें समुद्र मानो अपने ही आवेशमें अुछलकर गिर पडेगा। राम यहाँसे वहाँ, वहाँसे यहाँ दृष्टि घुमाकर पागल-सा प्रकृतिके शान्त और रौद्र रूपका दर्शन करनेमें लीन था।

रातको भी वह गूँगेकी तरह रहा। अुसकी आँखोंके सामने जहाँ-तहाँ खडा पानी ही पानी दिखाअी देता था, सर्वत्र वही दृश्य दीख रहा था। दूसरे दिन सुबह अुसने शामको देखे दृश्यको चित्रित करना प्रारम्भ किया। भूतकी तरह चार ताड-वृक्ष मानो आसमानको छूते खडे थे। अुसीके नीचे पैरोंके पास हँसनेवाले बादलोंको प्रतिबिंबित करनेवाला पानी था। अुस पार रेतीला टीला और सामने अुन्मत्त होकर हँसनेवाले भयानक समुद्रकी पर्वताकार लहरें थीं। अूपर आकाशमें सोना बिखेरनेवाले सूर्यकी स्वर्ण-रश्मियाँ थीं। खानेके लिअे माँके पुकारने तक रामकी तूलिका अुसी स्वप्नका साकार सृजन करती रही। खानेके लिअे बुलाने आअी नागवेणी अपने बेटेकी अुस नयनाभिराम कृतिको देखती पागलकी तरह वहीं खडी रही।

रामने काम पूरा कर लेनेके बाद कहा—"माँ! खाना बन गया? अब कितने बजे होंगे?" तब नागवेणीको होश आया। दोपहरी ढलने लगी थी। नागवेणीने रामको नहानेको कहा और खाना परोसा। स्नान कर राम खानेको बैठा, किन्तु अुसने अैसे खाया मानो स्वप्नमें खा रहा हो। खाना खाते-खाते अुसने कहा—"माँ! आज मेरा चित्र पूरा हुआ अिसे नोवा माँको भेज दूँगा!"

खाना समाप्त होते ही अुसने धोती बाँधकर कुर्ता पहन लिया और "माँ! अब अेक दो दिन घूम आता हूँ।" कहकर जानेके लिअे निकला।

"कहीं मन्दर्ति जा रहा है क्या ?" मांने मुस्कराते हुअे पूछा।

"वहीं हो तो वहीं ! कही भी हो, अिससे क्या ? आजसे गर्मीकी छुट्टियां शुरू हुअी हैं। कही घूम आता हूँ।.. जाना तो चाहता हूं, पर आज चाहे लौट भी आअूं !"—रामने कहा।

नागवेणी अपने लडकेके पागलपनसे अपरिचित नहीं थी। अुसने कहा—"अच्छा !"

राम सीधे कोडीके नदीमुखको पार करके पडुमुन्नूर पहुँचा। शानभागने रामका हार्दिक स्वागत किया। "स्वागत तो हुआ। किन्तु आपके साथ अेक और काम है। क्या आप मेरे साथ ब्रह्मावर तक चलेंगे ?"

"रजिस्टरी कराना है क्या ? और कौनसी जायदाद ले ली ?"—अुन्होंने पूछा।

"वह सब जाते समय कहूँगा।"—रामने अुत्तर दिया।

"चलो !" शानभाग अुठ खडे हुअे। दोनों बातचीत करते ब्रह्मावरके नागप्पय्याके घर गअे। दरवाजा ढकेलते ही रामने वहां आंगनमें झाड़ू देनेवाली सरस्वतीको देखा। अपने घर आअे मेहमानोंको देखकर वह अपने हाथकी झाड़ू वहीं छोड अेक ओर खिसकती अन्दर चली गअी। जाते-जाते शानभागने पूछा—"तुम्हारे बापू कहां हैं ?"

"जी, वहीं बरामदेमें बैठे हैं !"—अुसने कहा।

दोनो अन्दर गअे। शानभाग और नागप्पय्याका पुराना परिचय था, अिससे नागप्पय्याने विनोदसे पूछा—"कहिअे शानभागजी ! आज अपने ग्रामको छोडकर अिस ग्रामको कैसे पवित्र किया ?" साथ ही राम भी था। रामका परिचय न होनेसे अुन्होंने शानभागसे पूछा—"ये कौन हैं ? कहां जा रहे हैं ? जलपानके लिअे कुछ लाअूं ?"

यह सब सुनकर शानभागने भी विनोदसे कहा—"वह सब पीछे। नागप्पय्या अेक संख्या तो बोलो !"

"सात !"—नागप्पय्याने कहा।

"ओह ! तब पक्की हो गअी बात !"

"मैं पूछता हूँ ये सज्जन कौन हैं ? तो तुम कहते हो पक्की हो गअी बात। क्या बात पक्की हो गअी !"

"और क्या ? लडकेने लडकी देख ली। और अगली बात पक्की हो गअी !"

"क्या मजाक कर रहे हो तुम ?"

"नागप्पय्या ! यह कोडीके राम अैतालका पोता रामराव है ! अैसे तो मेरा भी नाती-पोता है। आप जानते हैं हमारी सत्याका यह पोता है !"

"ओहो . ...आअिअे ! विराजिअे ! कितने दिनसे... "

नागप्पय्याने जल्दी-जल्दी चटाअी बिछाअी, और शानभाग भी "अरे यही हिसाब-किताब कर डाले !"—कहकर रामसे कहने लगे—"बेटा राम ! अिनकी और हमारी बडी पुरानी दोस्ती है। तुम्हारी बुआका कहा स्थान यहीं है। लडकीको तुमने देख लिया। अब केवल ब्याहका मुहूर्त देखना बाकी है !"

सुनकर नागप्पय्याको मालूम हुआ आसमान ही हाथमें चला आया। अन्दर जाकर अपनी पत्नीको सारी रिपोर्ट देकर वे बाहर आअे। आगतुकोंका काफी, पापड, वडी आदिसे सत्कार हुआ। जलपानके समय ही नागप्पय्याने कहा—"शानभाग ! पत्रिका अैसी मिलती है, मानो भगवानने अिन दोनोंको अिसीलिअे बनाया हो !"

अिसके बाद नागप्पय्याने अपनी लडकीको बुलाकर कहा—"सरस्वती, काफी ले आ, बेटी !"

अुस बेचारीको अिन बातोंकी आदत-सी हो गअी थी। वह अपनी रेशमी साडी पहनकर अंचल ठीक कर सिर झुकाअे काफी ले आअी।

रामने हँसकर कहा—"अरे ! तब जो ड्रेस देखी वही अच्छी थी। अिस ड्रेसमें देखता तो डर जाता !"

"तब ? तब कब देखा था ?"—नागप्पय्याने विस्मित होकर पूछा।